विक्रमादित्य वीरगाथा

पुस्तक ४

राष्ट्रीय बेस्टसेलर श्रृंखला

नरकाग्नि का क्रोध

शत्रुजीत नाथ

VIKRAMADITYA VEERGATHA

BOOK 4

THE WRATH OF THE HELLFIRES

NATIONAL BESTSELLING SERIES

SHATRUJEET NATH

JAICO PUBLISHING HOUSE

Ahmedabad Bangalore Bhopal Chennai
Delhi Hyderabad Kolkata Lucknow Mumbai

जैको पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित, ए-2 जैश चैंबर्स, 7-ए सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 001,
Jaicopub@Jaicobooks.com, www.Jaicobooks.com
© Shatrujeet Nath
विक्रमादित्य वीरगथा: पुस्तक 4
नरक की आग का प्रकोप
ISBN 978-93-90166-57-2
जैको पर पहली छाप: 2020
इस पुस्तक का कोई भी भाग प्रकाशकों से लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली शामिल है, पुनरुत्पादित या उपयोग नहीं किया जा सकता है।

को

Santhosh Gopalan.

मेरे दोस्त, तुम्हें शान्ति मिले।

प्रमुख पात्रों की सूची
(वर्णमाला क्रम में)

इंसानों

अवंती का साम्राज्य

आत्रेया	मलावा का व्यापारी
Ajanya	शाही सेना के कमांडर
अमरा सिम्हा	अवंती के पार्षद
अंगामित्रा	संसप्तकों का कप्तान
Aparupa	आत्रेय की पुत्री
अतुल्यत	उदयपुरी के गैरीसन कमांडर
रेखा	महल का लोहार
ब्रिच्छा	शंकु के पिता
Dhanavantri	अवंती के सलाहकार और शाही चिकित्सक
द्विया	अपारूपा का साथी
Ghatakarpara	अवंती के पार्षद; विक्रमादित्य और वररुचि के भतीजे
ग्रीष्मा	डाकू; दंडका वन से भागा हुआ
देवदार	शाही सेना का कप्तान
कालिदास	अवंती के पूर्व पार्षद
Kshapanaka	अवंती के पार्षद; रानी विशाखा की बहन
भूख	अवंती के महल में चिकित्सक
Mahendraditya	अवंती के दिवंगत राजा; विक्रमादित्य, वररुचि और प्रलुपि के पिता

Mithyamayi	Vismaya's niece; maid to Pralupi
मदर ओरेकल	शंकु की दादी; घुमंतू जनजाति की मुखिया
Pralupi	विक्रमादित्य की बहन; घटकर्परा की माँ
पुल्यामा	शाही सेना का कप्तान
Satyaveda	मलावा प्रांत के राज्यपाल
शंकु	अवंती की पार्षद; मदर ओरेकल की पोती
Sharamana	मुसिली के गैरीसन कमांडर
सुहासा	शाही सेना के कमांडर
Upashruti	विक्रमादित्य और प्रलूपी की माता; महेंद्रादित्य की द्वितीय पत्नी
Ushantha	वररुचि की माता; महेंद्रदित्य की प्रथम पत्नी
प्रारंभिक हमीहिरा	अवंती के पार्षद
बुनकरों	अवंती के पार्षद; विक्रमादित्य के सौतेले भाई
Vetala Bhatta	अवंती के मुख्य सलाहकार; शाही शिक्षक
विक्रमादित्य	अवंती का राजा
Vishakha	विक्रमादित्य की पत्नी; क्षपणक की बहन
विस्मया	महल के रक्षकों का प्रमुख

मगध साम्राज्य

Ambalu	Kikata spy
Ashrava	मगध के पार्षद
अस्माबिंदु	मगध के पार्षद
भास्कर	मगध के पार्षद
Daipayana	मगध सेना का सेनापति
दिगंता	मगध के पार्षद
कपिला	दिवंगत राजा सिद्धसेना के दूसरे पुत्र
सम्मेलन	मगध सेना में सेनापति
Shoorasena	मगध का राजा; दिवंगत राजा सिद्धसेना का बड़ा पुत्र
Siddhasena	मगध के दिवंगत राजा
अच्छा	मगध के पार्षद

वाट्स का साम्राज्य

Chandravardhan	वत्सा का राजा; अवंती का सहयोगी
Himavardhan	चंद्रवर्धन के भाई; घटकर्पर के पिता
पीयूषा	शशिवर्धन का अंगरक्षक
Shashivardhan	चंद्रवर्धन का पुत्र
जीविका	पेट के पार्षद

कोसला साम्राज्य

अधीपा	कोसला की सेना का सेनापति
भूमिपाला	कोसला का राजा; अवंती का सहयोगी
गायकेतु	घुमंतू संगीतकार
चौखटा	कोसला का दरबारी
डोरी	कोसला का दरबारी
पल्लव	कोसला के दूत और पार्षद

मत्स्य साम्राज्य

एड्रियन	कासवती के गैरीसन कमांडर
केले	मत्स्य का राजा; अवंती का सहयोगी

अनार्ता फेडरेशन

Yugandhara	अनार्ता संघ का प्रमुख; अवंती का सहयोगी

वांगा गणराज्य

Bhadraka	सरदार बनो
Sudasan	वांगा गणराज्य के चांसलर

हूण और शक वंश

आब्ज़ा	Saka chieftain
हिल्स	Huna shaman
गाउर थ्राखा	कालिदास का हूण नाम
Khash'i Dur	हूणों का प्रमुख

नोरहान	साका ट्रैकर
ज़ो एरामी	दिवंगत हूण सरदार; कालिदास के पिता

देवता

एग्नी	अप्सरा और अग्नि-प्रेतों की मुखिया
Brihaspati	देवों के शाही पादरी
Gandharvasena	देव को
इंद्र	देवों के स्वामी; देवलोक के राजा
जयंत	इंद्र के पुत्र
मन्यु	देवलोक का महल रक्षक
प्रतिनिधित्व करना	देव को
नारदा	देवलोक का दूत और इंद्र का सलाहकार
Shachi	इंद्र की पत्नी; जयंत की माता
अश्विन	नासत्य और दसरा के नेतृत्व में देवलोक की विशिष्ट घुड़सवार सेना
मरुत	दिति के सात पुत्र
Urvashi	देवलोक की अप्सरा और इंद्र की प्रेमिका

असुरों

आदेश	asura general; son of Shukracharya
Chandasura	asura general; son of Shukracharya

कहना	जादूगरनी और असुरों की कुलमाता
Hiranyaksha	असुरों के स्वामी; पाताल लोक के राजा
Hiranyakashipu	असुरों के स्वामी; हिरण्यक्ष और होलिका के बड़े भाई
मलाईदार	पाताल की चुड़ैल रानी
लायुशी	पौरव का राक्षस और सेवक
Paurava	असुर और नरक की आग का पहला धारक
Shukracharya	असुरों का महापुजारी
पोशाक	हलाहला का चोर

अन्य

अही	सर्प-ड्रैगन
वेतन	घोलमास्टर; बॉर्डरवर्ल्ड का स्वामी
Kashyapa	देवों और असुरों के ऋषि और जनक
क्योंकि	यक्षों का स्वामी
Shalivahana	दानवों के स्वामी
शिव	सर्वज्ञानी
Takshaka	नागों का स्वामी
त्रिभानु	किन्नरों का स्वामी

भारतीय शब्दावली (वर्णमाला क्रम में)

पढ़ना	अगरवुड का तेल
angavastram	धड़ को ढकने के लिए एक स्टोल या हल्का शॉल
अप्सरा	हिंदू धर्म में एक सुंदर, अलौकिक स्त्री।
आर्यन	महानता का स्वामी; साथ ही, संबोधन का एक रूप
अशोक	वर्षावन का पेड़
ashtapada	एक प्राचीन भारतीय बोर्ड गेम
badi-maa	बड़ी माँ; संबोधन का एक रूप
हिट	बेर; भारतीय बेर
बियर	एक बड़ा ड्रम
चक्रम	एक फेंकने वाला हथियार, जो आकार में वृत्ताकार होता है
शुभ प्रभात	मैगनोलिया
चतुरंग	एक प्राचीन भारतीय रणनीति खेल; शतरंज का पूर्वज
कारण	एक प्राचीन भारतीय बोर्ड गेम; लूडो का पूर्ववर्ती रूप
चिलम	पारंपरिक भारतीय मिट्टी का पाइप
churail	एक पौराणिक प्राणी जो मानव स्त्री से मिलता-जुलता है

danava	हिंदू धर्म में एक पौराणिक जाति
डंडा	एक छड़ी
गॉडफादर	देवदार की एक प्रजाति
धोती	पुरुषों का पारंपरिक परिधान
ekashringa	गैंडा
अगर	कैनबिस
घाट	किसी पवित्र नदी जैसे जल निकाय की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ
गोपरसा	लोबान
gurudev	स्वामी या शिक्षक; साथ ही, संबोधन का एक रूप
जामुन	काला बेर; जावा बेर
कश्यु	आयुर्वेदिक औषधि
कतरी	एक मुट्ठी खंजर
किन्नरा	वैदिक भारत की एक पौराणिक जनजाति
ठंडा	कोयल
क्षीरा	पारंपरिक भारतीय चावल की खीर
महान शिक्षक	गुरु या शिक्षक; साथ ही, संबोधन का एक रूप
mahashilakantaka	एक ट्रेबुचेट या गुलेल

mahisha	भैंस
माँ	मामा
मंडल	हिंदू धर्म में ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करने वाला एक आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक प्रतीक
manjishtha	भारतीय मजीठ
नगा	वैदिक भारत की एक पौराणिक जनजाति
नाना	दादा या बूढ़ा व्यक्ति; साथ ही, संबोधन का एक रूप
निशिगंधा	रजनीगंधा
parijata	मूंगा चमेली
peepal	पवित्र अंजीर का पेड़
pranaam	अभिवादन
राज-गुरु	शाही शिक्षक; साथ ही, संबोधन का एक रूप
राक्षस	हिंदू धर्म में एक पौराणिक मानवाकार प्राणी
rani-maa	राजमाता
रोटी	भारतीय रोटी
rudrapushpa	हिबिस्कुस
रुद्र वीणा	एक भारतीय तार वाद्य यंत्र
सम्राट	सम्राट या अधिपति

samsaptaka	पौराणिक योद्धाओं की एक जनजाति
saptaparni	शैतान का पेड़
सोम	वैदिक अनुष्ठान पेय
suryayantra	एक हेलियोग्राफ
डफ	पान; सुपारी और पान के पत्तों से बना व्यंजन
tilaka	हिंदुओं द्वारा माथे पर लगाया जाने वाला चिह्न
लड्डू	तिल और गुड़ से बनी मिठाई
डांटना	एक लंबी तलवार जिसका ब्लेड लचीला और चाबुक जैसा होता है
uttariya	शरीर के ऊपरी हिस्से पर लिपटा हुआ स्कार्फ जैसा वस्त्र
डॉक्टर / वैद्यनाथ	चिकित्सक; साथ ही, एक सम्मानसूचक उपाधि और संबोधन का एक रूप।
vajra / vajrayudha	वज्र; इंद्र का पसंदीदा हथियार
vajranaga	भिक्षु की खाल
सब्ज़ियाँ	एक पौराणिक जानवर
यक्ष	हिंदू धर्म में एक पौराणिक आत्मा
yashtimadhu	लीकोरिस

अंतर्वस्तु

प्रमुख पात्रों की सूची
भारतीय शब्दावली
शिकार करना
संकल्प
षड्यंत्र
निराशाओं
अल्टीमेटम
बॉर्डरवर्ल्ड
लाश
प्रतिनिधित्व करना
भाई
आक्रमण करना
बचाव
सीमांत
Shashivardhan
Janasthana
Hiranyakashipu
गिद्धों
फैसले
कालिदास
Shalivahana
अही
नरक की आग
विफलताओं

नष्ट करनेवाला
त्याग करना
क्षमा
उपसंहार

शिकार करना

नदी के किनारे बनी जली हुई इमारत के खंडहरों के भीतर दुबका हुआ, वह इंतजार करता और देखता रहा, एक सुविधाजनक स्थान से दूसरे सुविधाजनक स्थान पर सरकता रहा, और पास आते हुए पुरुषों की अस्त-व्यस्त पंक्ति को बारीकी से देखता रहा।

ढोल बजना बंद हो जाने के बाद, जंगल में एक गहरी खामोशी छा गई थी, जिसे केवल नदी के उस पार से आती हुई कोयल की प्रेम भरी पुकार और ऊपर छज्जों और शाखाओं से गिरती बारिश की बूंदों की आवाज़ ही तोड़ रही थी। जंगल में, घास पर आदमियों के कदमों की हल्की आहट, लापरवाही से पैर रखने पर टहनी के टूटने की आवाज़ और उसके बाद दबी हुई गाली से सन्नाटा कभी-कभार टूटता था। इस प्रकार, लगभग दो दर्जन आदमियों का शिकार दल अपने शिकार की तलाश में आगे बढ़ता रहा।

उसने देखा कि शिकारी झाड़ियों के बीच से एक संकरे अर्धवृत्त में आ रहे हैं, उनके धनुष आधे खींचे हुए थे, तीर धनुष पर लगे हुए थे और जमीन की ओर ताने हुए थे, भाले अचानक हमले की तैयारी में एक कोण पर रखे हुए थे। जाल लिए हुए आदमी

उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, शिकार के प्रकट होते ही अपना जाल बिछाने के लिए तैयार। ढोल बजाने वाले पीछे थे, उनके ढोल शांत थे। सूअर को घेर लिया गया था। उनका काम पूरा हो चुका था।

उसने बेखबर शिकारियों को पास आते देखा। फिर उसने एक फैसला लिया।

वह विशालकाय आदमी। समूह का सबसे विशालकाय आदमी, अब तक का सबसे विशालकाय आदमी जिसे उसने कभी देखा था। लंबे हैंडल वाली कुल्हाड़ी और ऊँची चोटी में बंधे बालों वाला।

यही वह आदमी था जिसे वह चाहता था।

अपनी मोटी, जालीदार उंगलियों के बीच दोनों तलवारों को कसकर पकड़े हुए, वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, जंगली सूअर ने चौकी के अंदर शरण ली है।"

"क्या ट्रैकर निश्चित हैं?"

शिकारी इतने करीब थे कि उनकी आवाजें गिरी हुई ईंटों और शहतीरों के ढेर तक पहुंच रही थीं।

“जी हां, माननीय न्यायाधीश।”

"क्या यह विडंबनापूर्ण नहीं है कि एक जंगली सूअर हूना सूअरों के बैरक को छिपने की जगह के रूप में चुने?"

इन शब्दों पर हंसी की एक छोटी सी लहर दौड़ गई। आदमियों की हंसी सुनकर, उसने मलबे के ढेर के पीछे से झाँका और देखा कि बोलने वाला कोई और नहीं बल्कि चोटी वाला विशालकाय आदमी था। उस आदमी ने मुस्कुराते हुए फिर कहा, "अब समय आ गया है कि इन बैरकों से सूअरों को फिर से बाहर निकाल दिया जाए।"

और भी मुस्कानें और दाँतों की झलक। शिकारियों में से एक ने उस आदमी को संबोधित किया जो उस विशालकाय व्यक्ति के बगल में खड़ा था।

"क्या हम प्रवेश करें, महोदय?"

उस आदमी ने सिर हिलाया, और एक संकेत मिलते ही, शिकारियों का दल हथियारों और जालों के साथ तैयार होकर किले के टूटे-फूटे द्वार की ओर बढ़ने लगा।

जज साहब।

वे दो शब्द उस विशालकाय व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि उसके साथी के लिए कहे गए थे। उत्सुक होकर, उसने नए सिरे से उस व्यक्ति की ओर ध्यान दिया।

वह आदमी उस विशालकाय व्यक्ति जितना लंबा या चौड़ा नहीं था, फिर भी उसके कंधों की बनावट और उसके हाव-भाव में एक अलग ही दबदबा था। उसके सिर पर काले, कंधे तक लंबे बाल थे, जो उसकी मजबूत गर्दन पर टिके थे, और उसका जबड़ा दृढ़ था जो उसकी तराशी हुई ठुड्डी पर समाप्त होता था। जिस सहजता से वह अपनी पुरानी, भारी तलवार को थामे हुए था, वह उसकी सुगठित, मांसपेशियों से भरी भुजाओं में छिपी ताकत को दर्शाता था।

यह एक पल के लिए रुक गया। उस आदमी में करिश्मा था। शायद उसे भी चुनौती दी जानी चाहिए, न कि केवल उस विशालकाय को।

जंगली सूअर इमारत के बाईं ओर भाग गया और रसोई और बाहरी कमरों के आसपास उगी झाड़ियों में शरण लेने लगा, जहाँ कभी सैनिकों की टुकड़ियों को भोजन कराने के लिए गड्ढों और भट्टियों में आग जलती थी। सैनिक अब मर चुके थे और जा चुके थे, अपने पीछे एक ऐसा खालीपन छोड़ गए थे जिसे प्रकृति धीरे-धीरे भर रही थी। लगभग हर जगह घुटनों तक ऊँची घास उग आई थी, लताएँ दीवारों और छतों पर फैल गई थीं, जबकि घोंसले, जाले और कोकून इस वीरान किले के कोनों और दरारों को सजा रहे थे।

जैसे ही शिकारी टूटे-फूटे द्वार से अंदर घुसे, उसने प्राचीन मंत्रों का जाप करना शुरू कर दिया, जिससे परिसर में मायावी स्थान खुल गए—ऐसे स्थान जिनमें शिकारी बिना सोचे-समझे प्रवेश कर गए, ऐसे स्थान जो उन्हें उस विशालकाय प्राणी और उसके शाही साथी से दूर ले गए। एक के बाद एक मंत्रों का जाप करते हुए, उसने शिकारियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँट दिया, और प्रत्येक समूह को अलग-अलग दिशाओं में धकेल दिया। जब उसे यह तसल्ली हो गई कि उसके लक्ष्य पूरी तरह से अलग-थलग पड़ गए हैं, तो उसने उन दोनों आदमियों को खंडहरों के भीतर और गहराई में खींचना शुरू कर दिया।

"मैं इस जगह को कभी नहीं भूल सकता।" ये शब्द उस विशालकाय व्यक्ति की नहीं, बल्कि दूसरे व्यक्ति की आवाज़ में गूंज रहे थे। उसकी आवाज़ में उदासी का भाव था। "यहीं पर वराहमिहिर ने अपना पैर खोया था।"

"जो लोग उस दिन यहाँ नहीं थे, उन्हें भी वह लड़ाई याद है," उस दैत्य ने उत्तर दिया। "लोग कहते हैं कि तुम ऐसे लड़े जैसे तुम पर कोई भूत सवार हो। सचमुच, उस दोपहर तुमने कितने हूणों को मार गिराया था?"

"मैं गिनती नहीं कर रहा था। वैसे भी सब कुछ धुंधला सा है। घात लगाकर किए गए हमले में हमारे कुछ सैनिक मारे गए थे; हमारी संख्या बहुत कम थी। और फिर वराहमिहिर को मार गिराया गया। अगर मैंने पीछे हटने का संकेत दिया होता, तो सैनिकों का मनोबल टूट जाता। एकमात्र विकल्प यही था कि हार न मानें और लड़ते रहें।" एक पल का विराम। "इसके अलावा, वराहमिहिर के साथ जो किया गया था, उसे बिना बदला लिए जाने देने का तो सवाल ही नहीं था।"

उस विशालकाय व्यक्ति की ओर से गहरी, गंभीर चुप्पी छाई हुई थी। कदमों की आहट नजदीक आती जा रही थी।

इसने एक और जादू कर दिया, एक फुसफुसाहट जो लहरों की तरह फैलती हुई दोनों पुरुषों को घेर लिया। न तो किसी ने कुछ सुना और न ही कुछ महसूस किया। अभी तक नहीं।

"तुमने तो ज़बरदस्त बदला लिया," उस विशालकाय ने अंत में कहा। "लोग आज भी पवित्र क्षिप्रा के हुनाओं के खून से लाल हो जाने की बात करते हैं।"

"एक बार खून बह जाए तो यह कहना नामुमकिन है कि किसका खून है। सब कुछ बस लाल ही लाल होता है।" उस आदमी के शब्दों में दर्द का एक अंश था जो ठंडी हवा में गूंज रहा था। "मैं तो यही चाहूंगा कि—"

बीच वाक्य में रुककर, वह आदमी चारों ओर देखने लगा, उसकी भौंहें हैरानी से तन गईं। वह विशालकाय भी रुक गया और सहज ही अपनी कुल्हाड़ी को और कसकर पकड़ लिया, सतर्क होते हुए उसने अपनी आँखें बाएँ से दाएँ घुमाईं।

"ये क्या है? यहाँ क्या हो रहा है?"

उन्हें पता भी नहीं चला और उनके आसपास का वातावरण पूरी तरह बदल गया था। कुछ क्षण पहले वे उलटे-पुल्टे फर्नीचर, फेंके गए कवच और हथियारों, और ढही हुई छत से गिरे मलबे के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहे थे, लेकिन अचानक वे खुद को एक खुले आंगन में पा गए, जो पूरी तरह साफ-सुथरा था और चिकने बलुआ पत्थर से बना था। आंगन की परिधि में एक चौड़ा, छायादार बरामदा फैला हुआ था, जहाँ अलंकृत बलुआ पत्थर के खंभे गंभीर शांति में खड़े थे। आंगन

के बीचोंबीच पॉलिश किए हुए पीतल का एक भारी कलश रखा था, जिसमें निशिगंधा का पौधा खिला हुआ था। चमकीले नीले आकाश से सूर्य की रोशनी आंगन में फैल रही थी।

"कहाँ हैं...?" दैत्य रुका और अपने कंधे के ऊपर से देखा। "क्या यही वह रास्ता है जिससे हम आए थे?"

दूसरे व्यक्ति ने उस दरवाजे की ओर देखा जिससे उन्हें आंगन में जाना चाहिए था। दरवाजे के दूसरी ओर जो कुछ भी था, वह अब घोर अंधेरे में डूबा हुआ था।

"मुझे याद नहीं आ रहा कि मैं कब अंदर आया..." वह हिचकिचाया। "और वो आदमी... कहाँ हैं..."

अपने हथियार उठाते हुए, दोनों आदमी एक-दूसरे के करीब आ गए और आंगन में किसी भी खतरे की आशंका को देखते हुए चारों ओर नज़र घुमाने लगे। सूरज की रोशनी से बरामदा छाया में डूबा हुआ था, जिससे अंदर तक देखना उनके लिए मुश्किल हो रहा था।

"क्या यह सच है?" उस दैत्य ने पूछा। उसने जवाब का इंतजार नहीं किया। "अब हम क्या करें?"

एक गहरी सांस लेते हुए, वह बरामदे की छाया से बाहर निकल आया।

हम यहां से निकल जाते हैं।

"कैसे?"

"जिस तरह से हम अंदर आए थे, मुझे लगता है—"

वह एक खंभे के पीछे से निकलकर धूप में आ गया। दूसरे आदमी की नज़र उस पर पड़ी। उसने बेहतर देखने के लिए अपना सिर झटका और उनकी आँखें मिल गईं।

"-आप कौन हैं?"

"हूँ, क्या?" दैत्य घूम गया। अब दो जोड़ी आँखें उसे घूर रही थीं।

"तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो?"

वह अपने टेढ़े-मेढ़े, पतले पैरों पर दर्द से लंगड़ाते हुए आंगन में आया। उसने एक छोटी, दयनीय मुस्कान दी, जिसमें कुछ दांत गायब थे। हानिरहित, चापलूसी भरी। सैनिकों ने अपने हथियार थोड़े से नीचे कर लिए, उनके कंधे थोड़े ढीले पड़ गए।

यह मन ही मन मुस्कुराया। उनका विश्वास जीतो, उनका विश्वास जीतो...

“मैं एक दोस्त हूँ। मेरा कोई दुर्भावना नहीं है।” उसकी आवाज़ बूढ़ी और कर्कश थी, मानो लंबे समय तक इस्तेमाल न होने के कारण।

“यह जगह क्या है?” उस दैत्य ने पूछा। “क्या तुम जानते हो...?”

“तुम अपने पीछे क्या छिपा रहे हो?” दूसरे ने तीखी आवाज में बीच में ही टोकते हुए कहा। “अपने हाथ दिखाओ। अभी!”

उसके हाथ हिले और तलवारें दिखाई देने लगीं। वे अभी भी म्यान में थीं।

“तुम हमसे ये तलवारें क्यों छिपा रहे थे?” उन आदमियों ने रक्षात्मक मुद्रा अपना ली थी। “तुम कौन हो? बोलो।”

“ये तुम्हारे लिए हैं।” पीले पड़ चुके दांतों के बीच से ये शब्द सीटी की तरह निकले। उसने अपनी दुबली-पतली, मुरझाई हुई भुजाएँ फैलाईं और तलवारें, पहले मूठ की तरफ से, उन आदमियों को भेंट कर दीं। “उपहार।”

“हमें उनकी ज़रूरत नहीं है,” उस दैत्य ने उत्तर दिया, उसकी नज़रें आँगन में इधर-उधर घूम रही थीं, किसी नए खतरे के संकेत तलाशते हुए। “मेरे पास मेरी कुल्हाड़ी है और मेरे भाई के पास एक तलवार है जो शायद मौत की सबसे प्रिय साथी है।”

मैं अब भी चाहूंगा कि ये आपके पास रहें।

उस दैत्य के साथी ने तलवारों पर नज़र डाली। बिना किसी अलंकरण के लोहे के मूठ ठोस और भारी लग रहे थे। पुरानी म्यानें भूरे रंग की जानवरों की खाल से बनी थीं। उसने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा। "क्यों?"

उसके पेट में क्रोध की लहर दौड़ गई। धैर्य रखो, धैर्य रखो...

"कृपया इन्हें ले लीजिए।"

अब भी संशय में डूबे उस व्यक्ति ने एक तलवार उठाई और सावधानीपूर्वक उसे हाथ में तौलते हुए कहा। उसने आभार व्यक्त करते हुए हल्के से सिर हिलाया। तुरंत ही उसने दूसरी तलवार दानव की ओर लहराई, मानो उसे तलवार लेने के लिए कह रहा हो। दानव अनिच्छा से ही सही, तलवार ले गया।

वहाँ!

उसकी आँखें आशा से चमक रही थीं, और उसने खुशी से अपनी जीभ चटकाई। "अच्छा। अब तुम इनसे मुझसे लड़ सकते हो।"

दोनों व्यक्तियों ने कुछ क्षण के लिए उसे नीचे देखा, फिर एक दूसरे को हैरानी भरी नजरों से देखा।

"क्या यह कोई मज़ाक है?" उस दैत्य ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "हम तुम्हारे जैसे कमज़ोर बूढ़े आदमी से नहीं लड़ रहे हैं।"

"तुम्हें करना ही पड़ेगा। यही एकमात्र रास्ता है," उसने विरोध जताया।

"यह तो कतई बेतुका है, नानी," दूसरे आदमी ने तर्क दिया। "हमें बताओ कि तुम असल में क्या चाहती हो—"

उसने अपना मुंह चौड़ा खोला और कर्कश आवाज में गुर्राया, "मुझसे लड़ो।"

इससे पहले कि दोनों आदमी कुछ प्रतिक्रिया दे पाते, यह तेज़ी से बदल गया, पलक झपकते ही इसका आकार बढ़ता और बदलता चला गया। इसमें मांस और हड्डियाँ बढ़ गईं, इसकी ऊँचाई दोगुनी और मोटाई लगभग चार गुना हो गई, जिससे यह आदमियों से दो हाथ लंबा हो गया। इसके धड़ और अंगों पर मोटी पपड़ियों का कवच उग आया था, और इसका लार टपकता मुँह अचानक नुकीले दाँतों से भर गया था जिन्हें इसने आदमियों पर तान दिया। इसके हाथ में लोहे की लंबी कीलों से जड़ा एक गदा था।

"मुझसे लड़ो," वह फिर गुर्राया, उसकी दुर्गंधयुक्त सांसें आदमियों के चेहरों पर गर्म लग रही थीं। पहले वाले बूढ़े आदमी का अब कुछ भी बाकी नहीं बचा था।

अगर वे दोनों आदमी चौंके भी तो उन्होंने इसे ज़ाहिर नहीं किया। वे दोनों अपनी जगह पर डटे रहे और चुनौती भरे अंदाज़ में उसे घूरते रहे। वह मन ही मन मुस्कुराया। यह एक अच्छा संकेत था।

उस दैत्य ने तलवार एक तरफ फेंक दी और अपनी कुल्हाड़ी उठा ली। उसका साथी भी ऐसा ही करने वाला था कि तभी उसने फिर से बात की।

"मैंने तुम्हें जो तलवारें दी हैं, उनका इस्तेमाल करो।"

"नहीं," दूसरे आदमी ने इनकार कर दिया। उसने तलवार और म्यान को बलुआ पत्थर पर फेंक दिया और अपनी तलवार के चमड़े से बने हैंडल को कसकर पकड़ लिया, युद्ध के लिए तैयार।

"मेरी तलवारें। वरना तुम्हारे साथ आए हुए लोग बेवजह मर जाएंगे।" उसने दरवाजे की ओर सिर हिलाते हुए इशारा किया। "अभी करो।"

उन आदमियों ने तिरछी निगाहों से एक-दूसरे को देखा और खतरे की गंभीरता का आकलन किया। संक्षिप्त सहमति में सिर हिलाते हुए, उन्होंने उस प्राणी को घृणा से देखा जो छोटी, लाल आँखों से उन्हें घूर रहा था। धीरे-धीरे, उन्होंने अपने हथियार ज़मीन पर रख दिए और म्यान में रखी तलवारें उठा लीं।

जल्दी करो, इन्हें बाहर निकालो।

उसकी आवाज़ से क्रोधित होकर, उस दैत्य ने अपनी तलवार को म्यान से बाहर खींच लिया। सूरज की रोशनी तुरंत ही तलवार की चिकनी सतह पर पड़ी और चमक उठी, जो उसके फीके मूठ से बिलकुल अलग थी।

"बस याद रखना कि तुमने ही यह सब चाहा था," उस दैत्य ने दांत पीसते हुए कहा। पीछे हटते हुए, उसने अपने साथी से दूरी बना ली और चारों ओर घूम गया, जिससे अचानक उस प्राणी को दो तरफ से हमले से खुद को बचाना पड़ा।

यह अच्छा है, उसने विशालकाय को देखते हुए मन ही मन सोचा।

या यूं कहें कि, दैत्य के हाथों में तलवार को देखना।

उसने तलवार को हवा में लहराते और चीरते हुए देखा। उसने तलवार की धार पर सूरज की रोशनी की चमक देखी। उसने ठंडी, सपाट धातु की फीकी सी चमक देखी। और उसके सीने में निराशा उमड़ उठी।

नहीं, वह विशालकाय व्यक्ति नहीं था।

वह मुड़कर दूसरे आदमी की ओर देखने लगा, जिसने अभी तक दूसरी तलवार नहीं निकाली थी। उसने गुर्राते हुए अधीरता से अपना सिर हिलाया। उस आदमी ने तलवार को म्यान से बाहर निकाला और उसे लहराते हुए अपनी कलाई की ताकत से उसे धातु तक पहुँचा दिया। उसका आधा मुड़ा हुआ शरीर हमले और बचाव के लिए पूरी तरह से तैयार था, तलवार की नोक उस प्राणी की ओर उठी हुई थी।

उसने उस आदमी को देखा। और उसने तलवार की चाप को भी देखा—जो अचानक गर्मी से जगमगा उठी।

वह आश्चर्य और अविश्वास से पलकें झपकाने लगा।

ध्यान से देखने पर, उसने धातु पर छोटी-छोटी लपटों को देखा। लगभग तुरंत ही, तलवार नारंगी, फिर लाल हो गई, और फिर किनारों से सफेद-गर्म होकर जलने लगी। इस बीच, लपटें ब्लेड को लगातार चाटती रहीं, और हर पल के साथ उनकी तीव्रता बढ़ती जा रही थी।

"सावधान रहो, भाई," विशालकाय व्यक्ति की आवाज घबराहट से ऊंची हो गई। "मुझे तो यह जादू-टोना लग रहा है।"

राहत की आह भरते हुए उसने नुकीली गदा छोड़ दी और घुटनों के बल बैठ गया। उसका पूरा शरीर धंस गया, और जितनी तेज़ी से वह उस भयानक और विशालकाय जीव में बदला था, उतनी ही तेज़ी से वह वापस काले रंग की त्वचा वाले, मध्यम कद के, सिर पर छोटे-छोटे मुड़े हुए सींगों वाले शरीर में बदल गया। वह घुटनों के बल बैठा रहा, शांत भाव से, जलती हुई तलवार पकड़े हुए आदमी को घूरता रहा। उस आदमी ने अपनी नज़र तलवार से हटाकर उस जीव पर डाली, उसकी भौंहें आश्चर्य और अविश्वास से तन गईं।

"तुम कौन हो?" उसने विस्मय भरी आवाज में पूछा। "तुम कौन हो, आर्यमन?"

"मैं अवंती का राजा विक्रमादित्य हूँ," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया। "और वह मेरा मित्र और भाई कालिदास है। तुम कौन हो, और इन सब बातों का क्या अर्थ है?"

"हे महाराज, मैं वर्षों से आपकी ही तलाश कर रहा था," उसने उत्तर दिया। "आप ही वह हैं जिन्हें नरक की अग्नि धारण करने का सौभाग्य प्राप्त है।"

"नरक की आग?" राजा ने जलती हुई तलवार की ओर देखा। "तुम्हारा मतलब इस चीज़ से है?"

"यह और वह वाली।" उसने दानव के हाथ में मौजूद तलवार की ओर इशारा करते हुए कहा, "इन्हें स्वीकार करो, क्योंकि ये तुम्हारी ही हैं।"

कालिदास ने अपने हाथ में पकड़ी तलवार का निरीक्षण किया। फिर विक्रमादित्य के पास जाकर उन्होंने तलवार उन्हें सौंप दी। तलवार के हाथ बदलते ही उसमें भी आग लग गई और वह राजा के दूसरे हाथ में मौजूद तलवार की तरह जलने लगी। विक्रमादित्य और कालिदास ने एक-दूसरे को आश्चर्य भरी नजरों से देखा।

"तुमने अभी तक हमें यह नहीं बताया कि तुम कौन हो," कालिदास ने कहा।

"मैं दानव लायुषि हूँ, जो महान असुर पौरव की दासी हूँ, जो नरक की अग्नियों के प्रथम धारक हैं।" उस प्राणी की दृष्टि विक्रमादित्य पर पड़ी। "मैं अपने स्वामी के आदेशानुसार तुम्हें खोज रही थी। ये तलवारें उनकी थीं। अब ये तुम्हारी हैं।"

"मुझे समझ नहीं आ रहा," विक्रमादित्य ने हैरानी से भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "तुम्हारा स्वामी कौन है, और मुझे उसकी तलवारें क्यों दी जानी हैं?"

"क्योंकि आप इसके योग्य हैं, हे महाराज। लेकिन मैंने अपनी बात ठीक से नहीं समझाई," लायुशी ने सिर झुकाया। "क्षमा कीजिए। मैं आपको नरक की आग के बारे में सब कुछ बताता हूँ..."

संकल्प

रेगिस्तान की ज़मीन से घोड़ों के खुरों की लगातार गड़गड़ाहट एक अंतर्धारा की तरह उठती रहती थी, और उड़ती धूल शुष्क हवा में एक पर्दे की तरह छाई रहती थी, जिससे मुन्ह एक धुंध में लिपटा रहता था। यह धुंध सुबह की धूप की तीव्रता को कम कर देती थी, लेकिन दिन की गर्मी को कम नहीं करती थी। बल्कि, यह धुंध गर्मी को रोक लेती थी, जबकि धूल आँखों और नाक में जलन पैदा करके असुविधा को और बढ़ा देती थी। हुना जनजाति के लोग, जिनकी संख्या अब अकेले मुन्ह में ही सात हज़ार से अधिक हो गई थी, लगभग हर समय अपने चेहरे को स्कार्फ और शॉल से ढके रहते थे।

इन कबीले के लगभग तीन दर्जन लोग, जिनमें श्योर और योद्धा शामिल थे, अपने घोड़ों पर सवार होकर या ढीले घेरे में खड़े होकर, अपने लंबे भालों पर झुककर कालिदास को देख रहे थे। जिस व्यक्ति को वे सब आदरपूर्वक महक कहकर पुकारते थे, वह रेत पर बिछी चटाई पर पैर मोड़कर बैठा था। उसने अपने बालों का गुच्छा एक हाथ में कसकर पकड़ रखा था, और जैसे ही हूण आश्चर्य और जिज्ञासा से गर्दन उठाकर देखने लगे, उसने एक तेज कटार से अपनी चोटी को काट डाला। कटे हुए बालों को एक तरफ रखकर, कालिदास ने अपना सिर मुंडवाना जारी रखा,

बालों के गुच्छे काटते हुए, और फिर अपने सिर के बाल तब तक मुंडवाते रहे जब तक कि सिर पर एक भी बाल न रह जाए।

खबर फैल गई और देखने वालों की भीड़ बढ़ती गई, यहाँ तक कि लगभग सौ आँखें कालिदास को देख रही थीं जब उन्होंने अपने कटे हुए बालों को सफेद कपड़े के एक चौकोर टुकड़े में समेटा, जिसे उन्होंने मोड़कर अपने सामने रेत पर बनी एक छोटी सी चिता पर रख दिया। हूणों ने चुपचाप देखा कि कालिदास ने अपने सिर और नंगे कंधों पर जल छिड़ककर खुद को शुद्ध किया, फिर खड़े होकर चिता के तीन चक्कर लगाए और दही से मथा हुआ घी लकड़ियों के ढेर पर डाला। पानी से भरा एक मिट्टी का बर्तन अपने कंधे पर रखकर, उन्होंने चिता के चक्कर लगाना फिर शुरू किया, फिर बर्तन को लुढ़काकर पीछे जमीन पर तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने चिता में मशाल जलाई, और जैसे ही लकड़ी और घी जलने लगे, उन्होंने सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर अंतिम बार चिता के चारों ओर चक्कर लगाया।

कालिदास लगभग अपना अनुष्ठान पूरा कर चुके थे कि खशी दुर दर्शकों के घेरे को चीरते हुए अंदर आ गए, उनके साथ तीन अन्य शक्तिशाली जनजातियों के श्योर भी थे। चारों श्योर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे जब तक कि कालिदास ने स्नान करके अनुष्ठान पूरा नहीं कर लिया, और जब विशालकाय कालिदास उनके पास आए और प्रणाम किया, तभी खशी दुर ने भी अपना सिर झुकाया।

"तो, आपने... इसे कैसे कहते हैं... अंतिम संस्कार कर दिया?" तेज धूप से उसकी आँखें सिकुड़ गईं।

"लगभग कर लिया है," कालिदास ने आग की ओर देखा। आग स्थिर रूप से जल रही थी और उससे बस थोड़ा-थोड़ा धुआँ निकल रहा था। "ठंडा होने पर मैं राख इकट्ठा कर लूँगा।"

"क्या तुम हर युद्ध से पहले ऐसा करते हो, थ्रा'आखा? क्या तुम अपने अंतिम संस्कार स्वयं करते हो?"

"नहीं। हम ऐसा उस दिन करते हैं जब हम संसप्तक बनते हैं, उस दिन हम अपनी कोई कीमती चीज जलाते हैं, जीवन से अपने लगाव को नष्ट करने के प्रतीक के रूप में। हम जो जलाते हैं वह हमारे सांसारिक शरीर का भी प्रतीक होता है।"

और तुम शपथ लेते हो कि युद्ध से कभी पराजित होकर नहीं लौटोगे।

“हम मृत्यु शपथ लेते हैं,” कालिदास ने सिर हिलाते हुए अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा। “युद्धक्षेत्र से विजयी होकर या मृत होकर लौटने का वचन। इसीलिए ये अंतिम संस्कार किए जाते हैं। इन्हें संपन्न करके हम मृत्यु के भय को अपने मन से मिटा देते हैं। संसप्तक तो युद्ध में जाते समय ही मृत होते हैं।”

खाशी दुर ने सहमति में सिर हिलाया। "अभी क्यों?" उसने बलि की अग्नि की ओर इशारा करते हुए कहा। "मेरा मतलब है, फिर से आज ही क्यों?"

“दिन ढलने से पहले हम अपने घोड़ों पर सवार होकर पूरब की ओर चल पड़ेंगे।” कालिदास ने मुड़कर देखा, लेकिन उड़ती धूल ने दूर क्षितिज को धुंधला कर दिया था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। विशालकाय की निगाहें धूल के पर्दे के पार एक बिंदु पर टिकी रहीं, जहाँ से पर्वत शुरू होते थे। “आगे आने वाले युद्ध हमारी क्षमताओं की पूरी परीक्षा लेंगे। मुझे नहीं पता कि उन युद्धों का परिणाम क्या होगा, लेकिन एक बात निश्चित है। मैं हार मानकर नहीं जीऊंगा। मेरे लिए हमेशा जीत या मृत्यु ही होगी। यह,” आग की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, “उस प्रतिज्ञा की पुष्टि है।”

इसके बाद जो मौन आया, उसमें एक बुजुर्ग श्योर आगे झुका और खाशी दुर के कान में कुछ फुसफुसाया, साथ ही तिरछी निगाहों से कालिदास को देखता रहा। कालिदास ने उनकी बात सुनने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सका। हूण सरदार ने नाखुशी से सिर हिलाया। दो कदम और आगे बढ़कर उसने विशालकाय सरदार के कंधे पर धीरे से हाथ रखा।

"पुरुषों के बीच इस बारे में चर्चा हो रही है," उसने रहस्यमय ढंग से, अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा।

“किस तरह की बात?” कालिदास ने खशी दुर की ओर तिरछी नज़र से देखा।

“पुरुष आपका सम्मान करते हैं, और सिर्फ इसलिए नहीं कि आप ज़ो एरामी के पुत्र हैं। वे स्वयं योद्धा हैं, और वे आपमें छिपे योद्धा को स्पष्ट रूप से पहचानते हैं। आपने उन्हें प्रेरित किया है, और उन्हें विश्वास है कि आप उन्हें समृद्धि की भूमि की ओर ले जाएंगे। फिर भी...” श्योर ने अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी कर ली। “फिर भी, वे आपके द्वारा किए जाने वाले अनुष्ठानों के बारे में सोचते हैं। वे आपको अंतिम संस्कार करते हुए देखते हैं; वे आपको अवंती में सीखी हुई परंपराओं का पालन करते हुए देखते हैं। और वे पूछते हैं कि आपने अभी तक रेगिस्तान की परंपराओं, रीति-रिवाजों और संस्कृति को क्यों नहीं अपनाया है।”

"और इस प्रकार, वे मेरी वफादारी पर सवाल उठाते हैं।" कालिदास ने अपने चारों ओर मौजूद चेहरों को देखा, और अंततः उनकी निगाहें खाशी दुर के साथ आए तीन श्योरों पर टिक गईं। "वे सोचते हैं कि क्या मैं इतना सच्चा हूण हूँ कि मुझ पर भरोसा किया जा सके।"

कालिदास ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी और अपनी कमर पर बंधी कटार की ओर हाथ बढ़ाया।

"ऐसा नहीं है कि हमें तुम पर भरोसा नहीं है, थ्राखा..."

इससे पहले कि मुखिया अपनी बात पूरी कर पाता, कालिदास ने कटार निकाली और इतनी ऊंची आवाज में बोला कि सब लोग उसे सुन सकें।

"माँ मैं दुज़'उर लुक याहे। मा ले'आ कू'ब क़ुर्र हेई ज़ुही आ'ले।"

मैं इन अनंत रेत का पुत्र हूं, और मैं आपके मन में मौजूद सभी संदेहों को दूर कर दूंगा।

कालिदास चिता के पास गए, जो धीरे-धीरे ढहने लगी थी और पुरानी लकड़ियों के टुकड़े धीरे-धीरे अंगारों में बदल रहे थे। आग के पास घुटने टेककर, उस विशालकाय योद्धा ने कटार की नोक को लपटों के ऊपर रखा। हूण लगभग हिले भी नहीं, उनकी निगाहें कालिदास पर टिकी हुई थीं। पूरा रेगिस्तान अचानक सन्नाटे में डूब गया।

कटार की नोक काली पड़ गई और उसमें से धुआं निकलने लगा। कालिदास उठ खड़े हुए और कटार को ऊपर उठाते हुए धीरे-धीरे घूमने लगे ताकि सभी उन्हें देख सकें।

"उरुग हा," उसने घोषणा की। "मुझे नहीं पता कि क्या करना है।"

देखो, मैं अब हिज़ पहनूंगा।

कालिदास ने तलवार की नोक अपने माथे पर रखी और एक झटके में नीचे की ओर वार करते हुए एक गहरा घाव कर दिया जो लगभग उनकी भौहों के मिलन बिंदु तक पहुँच गया। घाव से उत्पन्न तीव्र दर्द कालिदास के मन में गूंज उठा, तभी कबीले के लोगों ने अपने भाले आकाश की ओर उठा लिए, उन्हें हिलाते हुए और एक साथ हूण युद्धघोष करते हुए दहाड़ लगाई।

हर कोई खूबसूरत है। हर शरीर खूबसूरत है। हर आत्मा खूबसूरत है।

तलवार उठाओ। तूफान खड़ा करो। युद्ध छेड़ो।

चीखें तालाब में उठने वाली लहरों की तरह बाहर की ओर फैल गईं, मुन्ह और उसके आसपास के इलाकों में गूंजती रहीं; और मानो जवाब में, रेगिस्तान की दिशा से एक खोखली, भूखी चीख निकली - एक ऐसी चीख जिसमें कुछ दर्द, कुछ क्रोध और कुछ पागलपन था।

वे लोग लगातार युद्धघोष करते रहे।

हर कोई खूबसूरत है। हर शरीर खूबसूरत है। हर आत्मा खूबसूरत है।

घाव से खून रिसकर कालिदास की नाक की हड्डी पर बहने लगा। जैसे ही खून की पहली बूँदें नाक से टपक कर उनके पैर की उंगलियों पर पड़ीं, उस विशालकाय ने दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए रेगिस्तान के पश्चिमी छोर की ओर रुख किया, जहाँ दो याह'ब्रे किसी भयानक सपने की तरह मंडरा रहे थे, धूल उड़ाते हुए हूना बस्ती की ओर दौड़ रहे थे, काले बादलों और बिजली जैसी सफेद चमक से भरे अपने चौड़े मुँह से चीखते हुए।

"कुल'आ ग्वेदे'र। कुल'आ महेक। कुल'आ क़'उल्ट," कालिदास ने गंभीर स्वर में स्वयं से बुदबुदाया।

***

आकाश में गरज की आवाज गूंजी, जिससे युवा कप्तान के शब्द सुनाई नहीं दिए।

"वो क्या था?" वराहमिहिर ने अपनी बैसाखी पर झुकते हुए पूछा। उन्होंने नाटकीय अंदाज़ में एक कान सेनापति की ओर घुमाया। "ज़ोर से बोलो, पुत्र। तुम अवंती के सिपाही हो, कहीं भूल तो नहीं गए। अपने शब्दों में थोड़ा जोश भरो।"

"जी हां, पार्षद जी।" पुल्यामा का चेहरा थोड़ा लाल हो गया, क्योंकि उन्हें एहसास हो गया था कि इस बातचीत ने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। छावनी के द्वार पर खड़े संतरी शुरू से ही सुन रहे थे, और अब परिसर के चारों ओर से भी सैनिक उनकी ओर देख रहे थे। "मुझे... मुझे आपके आने की सूचना नहीं दी गई थी।"

"ठीक है। लेकिन अब हम यहाँ हैं। आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं?"

मैं कर सकता हूँ... मैं अंदर पूछूंगा कि... क्या आप कर सकते हैं..."

"हम अवंती के पार्षद हैं, सेनापति," वराहमिहिर ने बीच में ही टोकते हुए अपना अंगूठा अपनी ओर और फिर अपने दाहिनी ओर खड़े धनवंतरी की ओर इशारा

किया। “आप जिस भी काम के बारे में हमसे पूछना चाह रहे हैं, वह हम बखूबी कर सकते हैं।”

“हम कोई बड़ी मांग नहीं कर रहे हैं,” धनवंतरी ने पहली बार नरम और शांत लहजे में कहा। “हम पार्षद वरारुचि से मिलने आए हैं। हमें उनके पास ले चलिए।”

पुल्यामा ने अनिश्चितता से अपने होंठ चाटे। "अगर आप यहाँ थोड़ी देर रुकेंगे तो..."

“इसकी आवश्यकता नहीं होगी, कप्तान।” भारी आवाज़ छावनी परिसर के उस पार से आई, और वराहमिहिर और धनवंतरी ने मुड़कर देखा तो कमांडर सुहासा का हट्टा-कट्टा शरीर उनकी ओर आ रहा था, उनका सिर हल्की-हल्की बारिश से बचने के लिए झुका हुआ था। “सलाहकारों को प्रणाम,” कमांडर ने छोटे से प्रणाम के साथ कहा। पुल्यमा से उन्होंने आगे कहा, “मैं उनकी देखभाल करूँगा।” सलाहकारों को एक और प्रणाम करते हुए उन्होंने कहा, “इधर आइए।”

वराहमिहिर ने सेनापति को कठोर निगाहों से देखा, लेकिन कुछ और कहने से पहले ही धनवंतरी ने सिर हिला दिया। सुहासा मुड़ा और गीले मैदान में आगे बढ़ गया, और राजचिकित्सक को अपने पीछे आते देख वराहमिहिर के पास उनके पीछे लंगड़ाते हुए चलने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वे घास के टीले पर चढ़े और बरामदे की शरण में पहुँचे, तभी हल्की बूंदा-बांदी तेज बारिश में बदल गई और गरज के साथ ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी।

"बिल्कुल सही समय पर," सुहासा ने राहत की सांस लेते हुए अपनी बड़ी, सफेद मूंछों से बारिश की छोटी-छोटी बूंदों को झाड़ा और मूसलाधार बारिश की ओर देखा।

"अगर वहाँ के कप्तान की चलती तो ऐसा नहीं होता," वराहमिहिर ने अपने चेचक के दाग वाले चेहरे और सफेद बालों से नमी पोंछते हुए कहा।

“उस आदमी को छोड़ दीजिए, पार्षद,” कमांडर ने जवाब दिया। “आपका आगमन अचानक हुआ है, और बेचारा इससे निपटने का तरीका नहीं जानता था।”

“भगवान न करे, कोई बड़ी घटना उसे अचानक चौंका दे।” अपनी बैसाखी को हिलाते हुए, वराहमिहिर ने सेनापति का सामना किया। “क्या सम्राट के विरुद्ध विद्रोह के लिए आप इसी तरह के सैनिकों का नेतृत्व कर रहे हैं?”

यदि वराहमिहिर ने धनवंतरी को झिझकते हुए देखा भी तो उन्होंने उसे अनदेखा कर दिया। वहीं सुहासा ने भी उकसावे में आने से इनकार कर दिया।

उन्होंने शांत भाव से कहा, "चलिए मैं आपको पार्षद वरारुची के पास ले चलता हूँ।"

उनके आगमन की खबर वरारुचि तक पहुँच चुकी थी, इसलिए उन्होंने अपने आगंतुकों का स्वागत सीढ़ियों के शीर्ष पर, उस कमरे के बाहर बने चबूतरे पर किया जो उनके अस्थायी सभा कक्ष के रूप में इस्तेमाल होता था। उन्होंने उनका शिष्टाचारपूर्वक स्वागत किया, लेकिन उस समय पुराने सौहार्द के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्हें अपने कक्ष में ले जाते हुए, उन्होंने सुहासा की ओर सिर झुकाकर यह संकेत दिया कि वे एकांत चाहते हैं।

जब उनके मेहमान आराम से बैठ गए, तो उन्होंने पूछा, "क्या मैं आपको थोड़ी छाछ दे सकता हूँ?"

“क्या आप हमें यह समझा सकते हैं कि आखिर हो क्या रहा है?” वराहमिहिर ने बिना भूमिका बनाए सीधे मुद्दे पर बात शुरू की। आगे झुककर उन्होंने वरारुचि की आँखों में देखा और पूछा, “हम इस हालत में कैसे पहुँच गए?”

वररुची अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गए और अपनी मूंछों को सहलाते हुए अपने साथी पार्षदों का जायजा लेने लगे। "क्या उसने तुम्हें मुझसे बात करने के लिए भेजा है?"

“क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? क्या इससे कुछ बदलेगा?”

"वह है?"

वराहमिहिर और धनवंतरी ने एक-दूसरे की ओर देखा। वराहमिहिर ने उत्तर दिया, "नहीं। सम्राट आपसे तब तक संवाद नहीं करेंगे जब तक..."

“जब तक मैं अपनी मांगें वापस नहीं ले लेता,” वरारुची ने सिर हिलाया। “मुझे पता है। महल से मुझे जो संदेश मिला था, उसमें यही आधिकारिक शर्तें थीं।” उसके होठों पर एक हल्की मुस्कान थी। “तो फिर आप यहाँ बैठकर मुझसे बात क्यों कर रहे हैं?”

"क्योंकि हम सम्राट नहीं हैं। और क्योंकि हम इस पूरे मामले में खोई हुई समझ को वापस लाने की कोशिश करना चाहते हैं।"

शब्द हवा में लटके रहे। बाहर, बारिश इतनी तेज़ हो रही थी कि गरज की आवाज़ भी दब गई।

"तुम ऐसा क्या जानना चाहते हो जो तुम्हें पहले से नहीं पता?" वररुची ने अंत में पूछा।

"क्यों... अपने भाई को सिंहासन छोड़ने के लिए क्यों कह रहे हो? उसे इस तरह कोने में क्यों धकेल रहे हो?"

"क्या वह मेरा भाई है?" वरारुची ने मेज के उस पार बैठे पुरुषों पर अपनी निगाहें गड़ा दीं।

वराहमिहिर अपनी सीट पर थोड़ा हिले। यह हलचल बहुत मामूली थी, लेकिन वररुचि ने इसे देख लिया और मुस्कुरा दिए।

"तुम जानते हो कि तुम जो कर रहे हो वह राजद्रोह के बराबर है," वराहमिहिर ने कहा। "तुम सिंहासन के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हो..."

"मैं मानता हूँ कि सामान्य परिस्थितियों में यह राजद्रोह होता।" वरारुचि उठे और एक स्टैंड की ओर गए जहाँ मिट्टी का एक घड़ा चार मिट्टी के गिलासों के बगल में रखा था। "पर यह राजद्रोह नहीं है क्योंकि मैं सिंहासन के विरुद्ध कोई षड्यंत्र नहीं रच रहा हूँ, बल्कि इसे आदित्य वंश का दावा करने वाले एक धोखेबाज से बचा रहा हूँ। मैं अवंती के मुकुट और सिंहासन की रक्षा कर रहा हूँ।" एक छोटा सा विराम। "छाछ?"

धनवंतरी और वराहमिहिर ने सिर हिलाया। वररुचि ने अपने लिए एक गिलास भरा और अपनी सीट पर लौट गए।

"धोखेबाज?" अब धनवंतरी की बारी थी, जो अपना भारी शरीर मेज पर टिकाकर वरारुचि के चेहरे को निहारने लगा। "मुझे याद है विक्रम एक छोटा बच्चा था, जो आपके और बूढ़े राजा के बीच चलता था, राजा और आपके हाथों का सहारा लेकर। जब भी वह लड़खड़ाता, आप और राजा उसके हाथ पकड़कर उसे संभाल लेते, ताकि वह गिर न जाए। इस तरह आप दोनों उस पर प्यार बरसाते थे। बाद में, जब महेंद्रादित्य मर रहे थे, उन्होंने आप दोनों को अपनी एक-एक तलवार दी और अवंती की रक्षा का दायित्व आप दोनों को सौंप दिया। जो आपके और राजा के असीम प्रेम में पला-बढ़ा हो, वह कैसे धोखेबाज हो सकता है? जिसे अवंती की रक्षा का दायित्व सौंपा गया हो—एक ऐसा दायित्व जिसे उसने पूरे दिल से स्वीकार किया हो—उसे धोखेबाज कैसे कहा जा सकता है?"

"वो तब की बात है, जब हममें से किसी को भी सही-गलत का ज्ञान नहीं था। आज वो सच जानता है, फिर भी उसे स्वीकार नहीं करता। यही उसे धोखेबाज साबित करता है।" वरारुचि के होंठ कड़वाहट से सिकुड़ गए। "और ये सब किसलिए? सिर्फ़ महारानी माँ की इज़्ज़त को तार-तार होने से बचाने के लिए? महारानी माँ की इज़्ज़त सच से ज़्यादा ज़रूरी है; क्या सम्राट का अपने लोगों को यही संदेश है?"

"अगर वह महारानी माँ—अपनी माँ—की रक्षा करता है, तो यह केवल उस वचन के कारण है जो उसने राजा महेंद्रदित्य की मृत्यु से पहले उनसे किया था," धनवंतरी ने उत्तर दिया। "विक्रम ने राजा को वचन दिया था कि वह किसी भी कीमत पर महारानी माँ के सम्मान की रक्षा करेगा।"

वररुचि ने चिकित्सक से वराहमिहिर की ओर देखा। "पिताजी से किए गए इस वादे का कोई गवाह था क्या?" ये शब्द सुनकर उनके चेहरे पर व्यंग्यात्मक मुस्कान आ गई। "या हमें सम्राट की बात पर ही विश्वास कर लेना चाहिए?"

"क्या आपका तात्पर्य यह है कि विक्रम झूठ बोल रहा है?" वराहमिहिर ने पूछा।

वररुची ने छाछ की एक घूंट ली और कंधे उचकाते हुए कहा, "वादा करना एक सुविधाजनक बात है।"

"तो फिर, क्या उसके लिए यह ज़्यादा सुविधाजनक नहीं होगा कि वह महारानी माँ को सामने लाकर यह कहलवा दे कि महेंद्रदित्य उसके पिता हैं और वह जन्म से आदित्य है? इसमें कोई शर्म की बात नहीं है।" वराहमिहिर ने वररुचि को यह बात सोचने दी। "क्या यही सब तुम नहीं चाहते, यही सब स्पष्टीकरण तुम चाहते हो? क्या तुम्हें नहीं दिखता कि वह कितनी आसानी से तुम्हें यह सब दे सकता है, वररुचि? सोचो, सोचो।"

"कोई भी धोखेबाज इस तरह का मौका हाथ से जाने नहीं देगा," चिकित्सक ने बुदबुदाते हुए कहा।

"बिल्कुल," वराहमिहिर ने सिर हिलाया। "विक्रम एक ही चाल से, एक ही छल से इस विवाद को सुलझा सकते हैं, फिर भी वे ऐसा नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि विक्रम झूठ का सहारा नहीं लेंगे। आप भूल गए हैं कि सत्य आपके भाई का सम्मान का सिद्धांत है।"

और फिर भी वह इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करेगा कि वह महेंद्रदित्य का पुत्र नहीं है...

"क्योंकि वह अपने वचन से बंधा हुआ है, वरारुचि," धनवंतरी ने झुंझलाहट में कहा।

वररुची अनिच्छा से चुप हो गया।

"इन सब की क्या ज़रूरत थी?" वराहमिहिर ने हाथ हिलाते हुए कहा, उनका इशारा चौकी और विद्रोह की ओर था। "तुम आकर उससे या हममें से किसी से भी बात कर सकते थे।"

"मैं आया, और मुझे ठुकरा दिया गया।" वरारुचि ने सिर हिलाया। "ज़रा सोचिए। मुझे एक बार भी घटकरपारा के अपहरण की सूचना नहीं दी गई। क्यों?"

"जब उदयपुरी से घटाकरपारा के लापता होने की खबर सबसे पहले आई, तो हमने आपको सूचित करने पर विचार किया था," चिकित्सक ने कहा। "उस समय हमें वास्तव में पता नहीं था कि राजकुमार के साथ क्या हुआ है, क्या वह किसी वास्तविक खतरे में हैं। चूंकि आप बड़ी मां से मिलने गए थे, इसलिए सम्राट ने आपको परेशान न करना ही बेहतर समझा। उन्होंने अनुमान लगाया कि आप अपनी यात्रा बीच में ही रोककर महल वापस आ जाएंगे—और आप ऐसा ही करते। वह चाहते थे कि आप बड़ी मां के साथ समय बिताएं। बाद में, जब हमें अपहरण के बारे में पता चला, तो आपके पास संदेश लेकर एक दूत भेजा गया—"

"कोई भी घुड़सवार कभी मेरे पास नहीं आया," वरारुची ने अपना सिर जोर से हिलाते हुए कहा।

"शंकु ने ही उस घुड़सवार को भेजा था। आप उससे पूछ सकते हैं, लेकिन वह कहीं दंडक में है, दानवों के गढ़ की ओर जा रही है।"

वररुचि ने कंधे उचकाकर जवाब दिया। वराहमिहिर ने कुछ क्षण उन्हें देखा और फिर बोले, "विरोध का यही तुम्हारा तरीका है? अवंती के अस्तित्व को इतने खतरे होने पर, जब एकजुट रहना सबसे ज़रूरी है, तब विद्रोह का झंडा उठाकर सैनिकों को उनके राजा के विरुद्ध भड़काना?"

"आप मुझे यहाँ कुछ ज़्यादा ही श्रेय दे रहे हैं, पार्षद जी। सम्राट के विरुद्ध सैनिकों को भड़काने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उन्होंने अपने कार्यों से पहले ही सैनिकों का विश्वास खो दिया है। साथ ही, अवंती पर मंडरा रहे खतरे ने भी सम्राट को कालिदास को उनकी प्रजा के पास लौटने देने से नहीं रोका।" वरारुचि ने

वराहमिहिर को घूरकर देखा। “अवंती की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी शीर्ष से शुरू होती है, तो फिर मुझसे ही क्यों सवाल किए जा रहे हैं?”

वराहमिहिर ने कहा, "हम कालिदास और हूणों से निपटेंगे, लेकिन इसके लिए हमें एकजुट रहना होगा।"

“मुझे खेद है कि इससे मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता।” वरारुची ने अपनी कुर्सी पीछे धकेली और उठ खड़े हुए। उनके खड़े होने के तरीके में एक दृढ़ता थी, उन्होंने अपनी बाहें मोड़ लीं और नीचे देखने लगे, जिसे अन्य दो पार्षदों ने भी महसूस किया।

“इस बारे में आपका विचार बदलने के लिए क्या करना होगा?” धनवंतरी ने पूछा।

“आप पहले से ही जानते हैं। महारानी माँ को इंद्र के आरोपों का खंडन करते हुए एक बयान जारी करना चाहिए और विक्रमादित्य के वंश के मामले को स्पष्ट करना चाहिए।”

आगंतुक खड़े हो गए। द्वार पर पहुंचकर वराहमिहिर ने आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा।

"मुझे उम्मीद है कि यह पागलपन बहुत देर होने से पहले ही खत्म हो जाएगा और हम सभी को इसका पछतावा नहीं होगा," उसने लंगड़ाते हुए बाहर निकलने से पहले कहा।

वररुची ने उदास चेहरे के साथ पार्षदों को जाते हुए देखा।

***

दो प्रचंड बिजली के झटके, तीव्र गति से और क्रोध से भरे हुए, खाई में गिरे, एक दूसरे का इतनी तेज़ी से पीछा कर रहे थे मानो वे युद्ध में हों। इंद्र, जो एक ऊँची खिड़की से टिके हुए थे, उनके गिरने का तब तक पीछा करते रहे जब तक कि दोनों खाई के गहरे अंधेरे में समा नहीं गए, और केवल ओजोन की चटकती गंध ही रह गई। पल भर में, महल में गड़गड़ाहट हुई, चारों ओर की ऊँची चट्टानों से गूंजती हुई, जिससे क्रिस्टल की छत के दीपक अपनी जंजीरों में कांपने लगे और नारद सिहर उठे। हालांकि, इंद्र ने पलक भी नहीं झपकाई और वापस चट्टानों के ऊपर, अमरावती के ऊपर, मेरु पर्वत की दिशा में देखने लगे, जो बारिश के घने कोहरे में ओझल हो गया था।

"गरुड़ अभी तक यहाँ क्यों नहीं आया?" उसने गुस्से से गुर्राते हुए कहा, उसकी नीली आँखों के ऊपर झुंझलाहट साफ झलक रही थी। "मातली को हमें कुछ जानकारी, कुछ प्रगति की खबर भेजनी चाहिए थी।"

"शायद बताने लायक कोई प्रगति नहीं है—"

"कोई प्रगति नहीं हुई?" अपने कंधे के ऊपर से देखते हुए, देवराज ने अपनी कठोर दृष्टि नारद पर टिका दी। फिर धीरे से मुड़कर, वे हॉल की ओर मुड़े और उनकी निगाहें राजनयिक पर टिक गईं। "मातली सदियों से मानव राजा के महल में है। उर्वशी भी। किसी न किसी ने तो कुछ न कुछ पता लगाया ही होगा, है ना?" उन्होंने अपने सामने खड़े चारों चेहरों को घूरकर देखा। "है ना? वरना उन दोनों का क्या फायदा?"

इंद्र अपनी एड़ी पर घूमे और खिड़की से बाहर देखने लगे, जहाँ अब मूसलाधार बारिश हो रही थी, चट्टानों के ऊपर से बहती हुई पुलों को तिरछे पार करते हुए नीचे आँगन में पहुँच रही थी। नारद ने अपने आस-पास के लोगों पर एक नज़र डाली, उनकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की, लेकिन तीनों के चेहरे भावहीन थे।

"गरुड़ को मताली को काम में तेजी लाने का निर्देश दिए चार दिन से अधिक हो गए हैं। और अब तक हमें क्या मिला? कुछ नहीं," इंद्र ने बारिश की तेज आवाज के बीच तीखे स्वर में कहा। "भगवान ही जाने इन तीन दिनों में शुक्राचार्य क्या कर रहे थे।" वे फिर से हॉल की ओर मुड़े और जोर-जोर से हाथ हिलाते हुए बोले, "असुर उज्जैन पर हमला करने ही वाले हैं—हो सकता है कि जब हम यहाँ खड़े होकर बातें करके अपना समय बर्बाद कर रहे हों, तब वे हमला कर रहे हों। मताली की आखिरी रिपोर्ट में लिखा था कि मानव राजा के पास अपने शहर की रक्षा के लिए केवल तीन सलाहकार बचे हैं, जिनमें से एक बैसाखी के सहारे चलने वाला अपाहिज है। विक्रमादित्य इतने असुरक्षित हैं! नहीं... नहीं..." उन्होंने गुस्से में अपना सिर हिलाया। "मताली और उर्वशी का यह इंतजार काम नहीं आएगा। अगर हमें हलाहल में असुरों से पहले पहुंचना है, तो हमें अभी चलना होगा। तक्षक। त्रिभानु..." उन्होंने नारद के बगल में खड़े दो लोगों की ओर देखा। आपको उज्जैन के लिए रवाना होना होगा।

"जैसा आप चाहें, देवों के स्वामी," किन्नरों के राजा त्रिभानु ने कहा।

"तुरंत," इंद्र ने आदेशात्मक लहजे में कहा।

नागों के राजा तक्षक ने अपना सिर झुकाया। "जी हां, मेरे मित्र," उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, उनके शब्द अजीबोगरीब गूंज के साथ सुनाई दिए, मानो एक ही समय में कई भाषाओं द्वारा बोले गए हों।

दोनों स्वामी जाने ही वाले थे कि नारद ने बात की।

"क्या यह विवेकपूर्ण होगा, मेरे स्वामी?" उसने पूछा, यह महसूस करते हुए कि तक्षक, त्रिभानु और दरबारी बृहस्पति की निगाहें उस पर टिकी हुई हैं।

"यहाँ बैठकर असुरों को वीषाद का खंजर हासिल करने से रोकने के बजाय कुछ न करना कहीं अधिक बुद्धिमानी भरा काम है," इंद्र ने कहा। देव ने कूटनीतिज्ञ को परखते हुए ठंडी मुस्कान के साथ कहा, "लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तुम निष्क्रियता के पक्ष में क्यों तर्क दे रहे हो? क्या यह मानव राजा का भय है, या केवल तूफान ही तुम्हें घबरा रहा है? या शायद तुम्हें बहादुर नागों और किन्नरों पर भरोसा नहीं है।"

"हे प्रभु, मुझे नागों और किन्नरों के शौर्य पर ज़रा भी संदेह नहीं है," नारद ने तक्षक और त्रिभानु को प्रणाम करते हुए कहा। "इन दोनों ने अतीत में असुरों के विरुद्ध अनगिनत युद्धों में हमारी सहायता करके अपनी विश्वसनीयता सिद्ध की है। फिर भी, विक्रमादित्य से मुझे चिंता है, भले ही उसकी स्थिति पहले से काफ़ी कमज़ोर हो गई हो। क्यों? क्योंकि यह तथ्य नहीं बदलता कि वह अब भी नरक की अग्नि तलवारें धारण किए हुए है, और हमें यह भी नहीं पता कि मातली ने उन दो तलवारों से उत्पन्न खतरे को बेअसर करने का कोई उपाय खोज लिया है या नहीं।"

नारद ने अपने बगल में नाग और किन्नर स्वामियों को तनावग्रस्त होते हुए देखा, जबकि इंद्र के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। "इसके अलावा, महाराज," राजनयिक ने अपने प्राप्त लाभ का फायदा उठाते हुए कहा, "यदि हम उज्जैन की रक्षा पंक्ति को तोड़ भी देते हैं, तो अगर मातली को कटार के ठिकाने का पता नहीं चलता है तो हमें क्या लाभ होगा? हलाहल असुरक्षित पड़ा रहेगा, और असुर उसे संयोगवश पा सकते हैं और उस पर अपना अधिकार जमा सकते हैं।" वह रुका। "क्या आपने स्वयं जयंत को जल्दबाजी में अंदर घुसने के खतरों के बारे में चेतावनी नहीं दी थी जब उसने लापरवाही से अहि को उज्जैन बुलाया था?"

"मुझे उस नासमझ की याद मत दिलाओ," इंद्र ने झुंझलाहट में हाथ हिलाते हुए कहा। वह उस मेज की ओर बढ़ा जिस पर ठंडे पानी से भरे एक बर्तन में सोमा से

लबालब भरा एक जग रखा था। उसने अपने लिए एक कप डाला और उस गहरे लाल रंग के तरल को देखते हुए सोचने लगा।

नारद ने त्रिभानु और तक्षक का सावधानीपूर्वक अवलोकन किया। त्रिभानु एक लंबा, चौड़े सीने वाला सेंटॉर था, जिसकी पीठ पर घने बाल थे। किन्नर के निचले शरीर और बगल का आवरण उसके बालों और छोटी, सलीके से कटी दाढ़ी के समान काले रंग का था। उसने सोने की बालियाँ पहनी हुई थीं, जबकि उसकी भुजाएँ सोने के कंगनों से सजी थीं। उसके चारों पैरों में खुरों के ठीक ऊपर छोटी-छोटी चाँदी की घंटियाँ बंधी थीं। उसका सुंदर चेहरा भावहीन था, क्योंकि वह इंद्र के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। नाग बिल्कुल अलग था, जिसकी पहचान एक मानवाकार शरीर से निकले हुए कांटेदार और सींग वाले साँप के सिर से होती थी। किन्नर जितना लंबा या सुगठित न होते हुए भी, तक्षक छोटे, शक्तिशाली पैरों पर खड़ा था, जबकि उसके लंबे, मांसल हाथ लगभग उसके घुटनों तक पहुँचते थे, और पैर की उंगलियाँ और हाथ की उंगलियाँ मुड़े हुए पंजों में समाप्त होती थीं। उसके शरीर पर चमकदार हरे-काले शल्क थे, जबकि उसकी छोटी थूथन के पीछे की आंखें काली और मोती जैसी थीं, जो नारद और इंद्र के बीच बारी-बारी से बदलती रहती थीं। नाग की एक पतली पूंछ थी जो उसके पीछे ज़मीन पर घिसटती थी, और प्रतीक्षा में धीरे-धीरे फड़फड़ाती रहती थी।

नारद की बातों में सत्य निहित है।

बृहस्पति खेमे से मिले अप्रत्याशित समर्थन को देखकर राजनयिक की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं।

"हे प्रभु, मेरा सुझाव है कि हम धैर्य रखें और मताली और उर्वशी को कुछ समय दें," नारद ने दरबारी की बात को पकड़ते हुए कहा। "हमें मताली पर भरोसा रखना चाहिए कि वह हमें हलाहल तक पहुँचने का रास्ता दिखाएगी।"

इंद्र ने मुंह बनाया और खिड़की से बाहर देखा। बारिश इतनी तेज़ थी कि अमरावती के शिखर नज़र से ओझल हो गए थे, और चट्टानें भी धुंधली परछाईं मात्र रह गई थीं। देवताओं के स्वामी ने आशा भरी नज़रों से मेरु की ओर देखा, फिर सिर हिलाकर वापस मुड़े और एक ही घूंट में सोमा पी गए।

"ठीक है, हम अभी उज्जैन पर हमला नहीं करेंगे," उसने नारद को घूरते हुए कहा, मानो उसे फिर से आपत्ति करने की चुनौती दे रहा हो। "लेकिन नाग और किन्नर

सेनाएँ शहर के जितना हो सके करीब पहुँच जाएँगी, ताकि मातली से सूचना मिलते ही हम हमला कर सकें। अगर हमें शिकारी की तरह धैर्य रखना ही पड़े, तो कम से कम अपने शिकार के करीब तो रहें ताकि जल्दी और कुशलता से उसे मार सकें।"

नारद ने अपने राजा के निर्णय को स्वीकार करते हुए सिर झुकाया।

तक्षक और त्रिभानु ने भी प्रणाम किया। वे बिना कुछ कहे हॉल से बाहर जाने के लिए मुड़े; एक अपने छोटे, खुरदुरे पैरों पर चुपचाप खड़ा रहा, जबकि दूसरे के खुर संगमरमर के फर्श पर चांदी की घंटियों की मधुर ध्वनि के साथ ताल मिलाते हुए तेज़ी से टकराए। वे दरवाज़े तक आधे रास्ते ही पहुँचे थे कि इंद्र ने पीछे से उन्हें पुकारा।

"विक्रमादित्य को मेरे पास जीवित लाओ। मैं उसे यहाँ हाथ-पैर बंधे हुए, दया की भीख मांगते हुए देखना चाहता हूँ। यह मेरी उतनी ही तीव्र इच्छा है जितनी वीषाद के खंजर की।"

***

उज्जैनी के सभा कक्ष में व्याप्त शांति में झील में गिरती हल्की बारिश की बूँदों की आवाज़ घुली हुई थी, जिससे कमरे में एक नरम, नींद भरी खामोशी छाई हुई थी। सुबह का तूफान थम चुका था और पूरब में बादल धीरे-धीरे छंटने लगे थे। चार दीपक अभी भी दीवारों में बने खांचों में जल रहे थे, जिससे कक्ष रोशन था, जबकि पाँचवाँ दीपक सभा की मेज पर रखा था, जो विक्रमादित्य के पास ताड़ के पत्तों पर लिखी पांडुलिपियों के ढेर को रोशन कर रहा था।

सम्राट के अलावा कक्ष में एक और व्यक्ति मौजूद था, एक बूढ़ा आदमी जिसका चेहरा धूप में तपा हुआ था और हाथ बड़े और खुरदुरे थे। वह मेज के चरणों में सम्मानपूर्वक हाथ जोड़कर खड़ा था। विक्रमादित्य मेज के शीर्ष पर अपनी सीट से उस व्यक्ति का अवलोकन कर रहे थे, उनकी आँखें सौम्य थीं लेकिन पूछताछ में दृढ़ थीं।

"क्या तुम्हें लगता है कि तुम यह कर सकते हो?" उसने पूछा।

"बिल्कुल," उस आदमी ने जवाब दिया, फिर रुक गया। "लेकिन क्या आप सचमुच यह करवाना चाहते हैं, सम्राट? राज्य में पहले से ही लोहे की कमी है..."

"मुझे पता है," विक्रमादित्य ने शांत स्वर में कहा, उनका चेहरा छाया में था।

“माफ़ कीजिए, लेकिन मेरा इरादा बिलकुल भी अपमानजनक होने का नहीं था, सम्राट।” वह व्यक्ति हिचकिचाया, अचानक घबरा गया। “बस... मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।”

“मैं भी यही जानता हूँ, बरिसा।” सम्राट ने उस व्यक्ति के डर को दूर करने के लिए मुस्कुराते हुए कहा, “तुम्हें अवंती की परवाह है, और यह तुम्हारे शब्दों में झलकता है। और महल के मुख्य लोहार के रूप में तुम्हारे काम में भी। तुम्हारे द्वारा बनाई गई तलवारें, भाले और कुल्हाड़ियाँ वर्षों से अवंती के गौरव को बनाए रखती आई हैं। तुम्हारा काम और तुम्हारे शब्द दोनों ही बेदाग हैं।”

“आप बड़े दयालु हैं, महाराज,” उस व्यक्ति ने राहत की सांस लेते हुए कहा। “बिल्कुल अपने पिता की तरह।”

महेंद्रदित्य का नाम सुनते ही विक्रमदित्य के होठों पर मुस्कान फीकी पड़ गई, लेकिन तुरंत संभलते हुए उन्होंने कहा, "इस काम के लिए मैं सिर्फ तुम पर ही भरोसा कर सकता हूँ, बरिशा।" उन्होंने उस आदमी की ओर एक भौंह उठाकर पूछा, "तो...?"

“मैं उन्हें बना दूंगा, सम्राट।”

"जितना जल्दी हो सके।"

लोहार ने सिर हिलाया।

“और यह सब तुम्हें अकेले ही करना होगा, इसमें किसी और को शामिल नहीं करना है। न कोई सहायक, न कोई प्रशिक्षु, न कोई शिष्य। इसकी बात हम दोनों के अलावा किसी और को नहीं पता होनी चाहिए। इसके बारे में सिर्फ हम दोनों को ही पता होगा—तुम्हें और मुझे। क्या मेरी बात स्पष्ट है?”

“बिल्कुल स्पष्ट है, सम्राट। मैं सावधान रहूंगा। आपको मेरा वचन है।”

राजा ने मेज पर रखे एक बंडल की ओर इशारा किया, जो मोटे जूट के कपड़े में सुरक्षित रूप से लिपटा हुआ था। "मुझे लगा कि आपको किसी संदर्भ की आवश्यकता हो सकती है।"

“इससे मदद मिलेगी, महाराज।” बरिसा आगे बढ़ी और बंडल उठा लिया। “मैं इसे आज शाम तक लौटा दूंगी, सम्राट।”

“बहुत बढ़िया। आप जा सकते हैं।”

उस व्यक्ति ने झुककर प्रणाम किया और कमरे से बाहर निकल गया।

लोहार के लिए दरवाजा बंद होते ही विक्रमादित्य मेज पर रखे ताड़ के पत्तों के ढेर की ओर मुड़े, जिन पर सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिकों की तैनाती की विस्तृत सूचियाँ लिखी हुई थीं। सम्राट ने इन सूचियों का मिलान ताड़ के पत्तों के अन्य सेटों से किया, जिन पर सैनिकों के लिए राशन का विवरण था, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि किसी भी राजमहल के क्लर्क की लापरवाही के कारण अवंती में किसी भी रेजिमेंट या चौकी में भोजन की कमी न हो। सामान्यतः यह आचार्य या अमर सिंह का कर्तव्य होता था, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में राजा ने यह जिम्मेदारी स्वयं संभाल ली थी।

कुछ देर बाद बारिश पूरी तरह थम गई और हल्की धूप निकलने लगी, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। पत्तों के बीच से नज़र उठाकर सम्राट ने देखा कि धनवंतरी और वराहमिहिर अंदर आ गए हैं और उन्हें प्रणाम कर रहे हैं।

"विस्मया ने अभी-अभी हमें बताया कि आप मिलना चाहते हैं," वराहमिहिर ने कहा। "क्या सच में?"

"जी हां।" विक्रमादित्य ने नोट्स बनाने के लिए इस्तेमाल की जा रही कलम को एक तरफ रख दिया। "कुछ ऐसा हुआ है जो मैं आपसे साझा करना चाहता हूं।"

राजा ने मेज के एक तरफ लुढ़की हुई एक पांडुलिपि उठाई। "यह लो," उसने उसे लहराते हुए कहा।

धनवंतरी ने आगे आकर विक्रमादित्य से वह पांडुलिपि ले ली। उसे खोलकर उन्होंने उसकी सामग्री को तेजी से पढ़ा, और अंत तक पहुँचते-पहुँचते उनका चेहरा गंभीर हो गया।

"यह क्या है?" वराहमिहिर ने पूछा।

विक्रमादित्य ने कहा, "अनर्तों की ओर से, प्रधान युगंधरा की ओर से एक औपचारिक संदेश।"

"उन्हें कालिदास के प्रस्थान के बारे में जानकारी है," चिकित्सक ने शास्त्र से नज़रें उठाते हुए समझाया। "वे जानना चाहते हैं कि जब हूण सिंधुवर्त पर आक्रमण करेंगे, तो इस मामले पर अवंती का आधिकारिक रुख क्या होगा। उन्हें इस बात की चिंता है कि अवंती ने कालिदास के बारे में अपना रुख स्पष्ट नहीं किया है।"

वराहमिहिर ने अपनी बैसाखी पर थोड़ा संतुलन बनाया और मुँह बनाया। "सिंधुवर्त के अन्य राज्य भी जल्द ही जवाब माँगने लगेंगे," उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा। उन्होंने उस लेख की ओर इशारा करते हुए पूछा, "यह कब आया?"

"आज सुबह," सम्राट ने कहा। "मैंने तुरंत सूचना भेजी, लेकिन क्षपणक कहीं बाहर शहर खाली कराने की निगरानी कर रहे हैं, और आप दोनों वहाँ नहीं थे।" वे रुके और पार्षदों की ओर उत्सुकता से देखा। "आप कहाँ थे?"

वराहमिहिर ने धनवंतरी पर एक नजर डाली। "हम मुसिली की चौकी पर उतरे थे।"

कक्ष में सन्नाटा छा गया, राजा अचंभित होकर सलाहकारों को घूरने लगा। अंत में उसने पूछा, "क्यों?"

"किसी को तो बोलना ही था, विक्रम।" वराहमिहिर लंगड़ाते हुए एक कुर्सी तक गए और अचानक थककर बैठ गए। "किसी को तो बातचीत शुरू करनी ही थी।"

फिर सन्नाटा छा गया। धनवंतरी भी बैठ गए और उन्होंने वह लेख अपने सामने रख दिया।

"और? क्या बातचीत से कोई फायदा हुआ?" विक्रमादित्य ने पूछा। मेज पर कोहनियाँ टिकाकर, उन्होंने उंगलियाँ मोड़ीं और वराहमिहिर को देखते हुए अपनी उंगलियों के जोड़ों को चटकाया।

"हां और ना," बूढ़े पार्षद ने आह भरी। "ना, इस मायने में कि वरारुची जिद्दी है और तर्क को नहीं मानता। बिल्कुल तुम्हारी तरह," उन्होंने तुरंत जोड़ा।

सम्राट भावहीन बने रहे।

"लेकिन यह यात्रा पूरी तरह से व्यर्थ भी नहीं थी," वराहमिहिर ने आगे कहा। अपने सामने बैठे चिकित्सक की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "हमने कुछ बातें समझ लीं।"

"कैसा?"

उदाहरण के लिए, वररुचि चाहे कुछ भी कहें, उनकी समस्या का कालिदास और हूणों से बहुत कम संबंध है।

विक्रमादित्य की भौहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं।

"मुझे लगता है कि इस बात को समझने के लिए हमें शुरुआत से ही शुरू करना होगा," धनवंतरी ने कहा।

सिर हिलाकर, वराहमिहिर अपनी कुर्सी पर बैठ गए और अपनी यात्रा का ब्योरा देने लगे, साथ ही उन्होंने वरारुचि से हुई अपनी और धनवंतरी की बातचीत भी बताने लगे। चिकित्सक ने उन सभी बातों को स्पष्ट किया जो वराहमिहिर बताना भूल

गए थे, और जल्द ही सम्राट को मुसिली में उस सुबह घटी सभी घटनाओं की पूरी जानकारी मिल गई।

"उनकी सारी ऊर्जा महारानी माँ द्वारा मेरे वंश के बारे में फैली भ्रांतियों को दूर करने पर केंद्रित है," सलाहकारों के चले जाने के बाद विक्रमादित्य ने धीरे-धीरे कहा। "उनका एकमात्र उद्देश्य, उनका जुनून यही है।"

पार्षदों ने सहमति में सिर हिलाया।

"क्यों?" राजा ने पूरी तरह से हैरान होकर पूछा। "क्या उसके लिए और कुछ मायने नहीं रखता?"

वराहमिहिर ने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद इसलिए क्योंकि वह जानता है कि यह तुम्हारी कमजोरी है। उसने तुम्हें और महारानी माँ को फंसा लिया है, और तुम झूठ बोलकर इस स्थिति से बाहर नहीं निकल पाओगी। उसने तुम दोनों को वहीं फंसा लिया है जहाँ सबसे ज्यादा दर्द होता है।"

"लेकिन क्यों?" विक्रमादित्य ने सिर हिलाते हुए फिर पूछा। "महारानी के प्रति यह आसक्ति क्यों? मैं समझ सकता हूँ कि कालिदास को उज्जैन छोड़ने देने पर उन्हें गुस्सा आया होगा, उन्हें दुख और विश्वासघात का एहसास हुआ होगा। कालिदास के प्रति द्वेष तो समझ में आता है, लेकिन महारानी के प्रति नहीं।"

"लेकिन यह कालिदास और हूणों के बारे में नहीं है," धनवंतरी ने दृढ़ता से कहा।

तीनों व्यक्ति वरारुची की पहेली को सुलझाने में जुटे रहे, जिसके चलते सन्नाटा गहराता चला गया।

"यह कालिदास और हूणों के बारे में नहीं है, फिर भी वरारुचि का समर्थन करने वाले लोग ऐसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह सब उसी के बारे में है—क्योंकि यही उनके लिए मायने रखता है।" विक्रमादित्य ने अपने सलाहकारों की ओर अर्थपूर्ण ढंग से देखा। "इन लोगों की चिंताओं का समाधान हो जाने पर, जब उन्हें यह आश्वासन मिल जाएगा कि महल कालिदास और हूणों का सामना करने के लिए तैयार और सक्षम है, तब क्या होगा? वरारुचि का क्या होगा? क्या ये लोग तब भी मेरी इस मांग का समर्थन करने को तैयार होंगे कि मैं राजा पद छोड़ दूं? क्या तब उन्हें इस बात की भी परवाह होगी कि मैं राजा महेंद्रादित्य का पुत्र हूं या नहीं?"

धनवंतरी ने तिरछी निगाहों से वराहमिहिर को देखा। "विक्रमा, तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?"

सम्राट ने अपनी पीठ सीधी की और गर्दन में आई अकड़न दूर करने के लिए उसे फैलाया। उन्होंने उत्तर दिया, "मेरी योजना बहुत सरल है। हमारा पहला काम शाही सेना के असंतुष्ट गुटों का समर्थन वापस जीतना है—वे गुट जो वररुचि के भाषणों में बह गए हैं, और वे गुट जो अभी भी उनके प्रभाव में आ सकते हैं। हम सैनिकों से संपर्क करेंगे और उन्हें बताएंगे कि उनकी चिंताएं जायज़ हैं, और महल इन चिंताओं से अवगत है। फिर हम सैनिकों को आश्वस्त करेंगे कि महल कभी भी उनके जीवन से खिलवाड़ नहीं करेगा, और अवंती की अखंडता की रक्षा आक्रमणकारियों से करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।"

"क्या आप चाहते हैं कि इस आशय के संदेश अवंती के सभी सैन्य छावनियों को भेजे जाएं?"

"बाद में, हाँ। लेकिन उससे पहले, मैं उज्जैन और उसके आसपास के सभी गैरीसन के कमांडरों और कप्तानों को व्यक्तिगत रूप से संबोधित करना चाहता हूँ। शाही सेना के कमांडरों के साथ-साथ यहाँ मौजूद सभी सीमा रक्षक इकाइयों के कमांडरों को भी। नगर रक्षक दल के कप्तानों को भी शामिल करें। और समसप्तक डिवीजनों के कप्तानों को भी। मैं हर उस इकाई प्रमुख से बात करूँगा जिसका काम अवंती की रक्षा करना है।"

आप यह कब करना चाहते हैं?

विक्रमादित्य अपनी सीट से उठते हुए बोले, "कल सुबह सबसे पहले।" उनके कंधे सीधे थे और आँखें काम पर टिकी थीं। "अगर कोई संदेश भेजना ज़रूरी है, तो उसमें देरी क्यों करें?"

"और यह संदेश जो हम भेजेंगे... मेरा मानना है कि लगभग इसी तरह का एक संदेश युगंधरा के उत्तर में अनर्तों को भी भेजा जाएगा?" वराहमिहिर ने पूछा।

"अनर्तों को। और विराटपुरी, कौशांबी, श्रावस्ती और महिष्मती को। हमारे सभी सहयोगी जान लें कि अवंती कहाँ खड़ी है—सीमा पर दृढ़ और अटल, सिंधुवर्त और अवंती के सिंहासन के लिए सभी चुनौतियों को दूर रखने के लिए तैयार।"

"सभी चुनौतियों का सामना करने का मौका—यह मुझे अच्छा लगा।" वराहमिहिर मुस्कुराए और विक्रमादित्य की ओर एक हल्की, समझदारी भरी मुस्कान के साथ देखा। "विक्रमा, तुम्हारी यह योजना अच्छी है।"

सम्राट ने पार्षद को बस घूरकर देखा, उनके चेहरे पर भावहीनता छाई हुई थी और उन्हें समझना असंभव था।

***

बरगद का पेड़ बहुत लंबे समय से सूख चुका था।

यह विशाल मैदान के बीचोंबीच खड़ा था, सूखी और धूल भरी मिट्टी में इतनी गहराई तक धंसा हुआ था कि हिलना असंभव था। इसका मुड़ा हुआ तना और जड़ें इस तरह जम गई थीं कि दिति की सबसे शक्तिशाली संतानों के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद भी कोई कुल्हाड़ी इसे गिरा नहीं पाई थी। प्राचीन काल में दानवों ने इसे जीवन-वृक्ष मानकर पूजा की थी, लेकिन उनके गुजरने के साथ ही यह वृक्ष मुरझा गया, मानो उनके पतन का शोक मना रहा हो, फिर भी विजयी असुरों के सामने झुकने से इनकार कर रहा हो।

शुक्राचार्य वृक्ष के पास खड़े होकर, उसके तने पर हाथ फेरते हुए और हथेली से पुरानी लकड़ी की उभरी हुई आकृतियों को महसूस करते हुए धीरे से मुस्कुराए। असुरों ने दानवों के प्रतिरोध के प्रतीक बरगद के वृक्ष को उखाड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया था, लेकिन वे असफल रहे थे। अब वही तिरस्कृत वृक्ष अंततः उनके काम आने वाला था, पाताल लोक और सीमालोक के बीच एक मार्ग का काम करने वाला था, जहाँ पिशाच स्वामी विक्रमादित्य की प्रतीक्षा में बैठा था और वीषाद के खंजर की रक्षा कर रहा था। वैसे, उस खंजर की रक्षा करने का उसे कोई अधिकार नहीं था।

अब समय आ गया था कि बेताल को उस अनावश्यक जिम्मेदारी से मुक्त किया जाए।

शुक्राचार्य ने वृक्ष से अपना ध्यान हटाकर मैदान की ओर देखा, जहाँ असुर सेना बरगद के चारों ओर एक विस्तृत घेरे में तैनात थी, उनके सींग धुंधली रोशनी में गर्व से लहरा रहे थे। योद्धा जोड़े में थे, और प्रत्येक जोड़े के असुरों ने अपनी तलवारों की नोकें एक-दूसरे के गले पर, जहाँ मुख्य धमनी स्थित होती है, सटा रखी थीं। उनकी भुजाएँ अकड़ी हुई थीं, आदेश मिलते ही वार करके मारने के लिए तैयार थीं, और वे एक-दूसरे को घूर रहे थे, मानो मृत्यु को आँखों में आँखें डालकर देख रहे हों। प्रत्येक असुर ने अपने खाली हाथ में एक नुकीला भाला पकड़ रखा था।

असुरों के घेरे से परे, मैदान में और आगे, पंद्रह विकृत युद्ध महिष भारी मचानों से जंजीरों में जकड़े खड़े थे। ये महिष सामान्य महिषों से मिलते-जुलते थे, लेकिन दो पैरों पर चलने वाले थे और उनके हाथ-पैर मनुष्यों जैसे थे। उनकी मोटी, मांसल गर्दन से निकले हुए बाइसन जैसे सिर उनके विशाल शरीर के अनुरूप बड़े, घुमावदार सींगों से सुशोभित थे। प्रत्येक युद्ध महिष के दोनों ओर लंबे भाले लिए असुर खड़े थे, जिनके भाले की नोकें जानवरों की गर्दन में धंसी हुई थीं। महिषों ने स्वयं चौड़ी दोधारी कुल्हाड़ियाँ पकड़ रखी थीं जो मैदान के अंधेरे में भी चमक रही थीं, कुल्हाड़ियों के हैंडल जंजीरों से उनकी कलाई से बंधे हुए थे। जानवर गुर्रा रहे थे और अपनी काली बाइसन जैसी आँखें घुमा रहे थे, अपने खुरों को पटक रहे थे और अधीरता और क्रोध में मचान पर जोर लगा रहे थे।

"क्या यही एकमात्र तरीका है, महागुरु?"

प्रधान पुरोहित ने अपनी बाईं ओर खड़ी होलिका की ओर देखा, जिसके साथ असुर स्वामी हिरण्याक्ष और कुछ असुर दरबारी भी थे। पाताल की डायन रानी उन असुर योद्धाओं और बरगद के वृक्ष को बड़े-बड़े विस्मय से देख रही थी, जिन्होंने उन्हें घेर रखा था।

"मृत्यु ही सीमावर्ती दुनिया का एकमात्र ज्ञात द्वार है," शुक्राचार्य ने उत्तर दिया। "यदि वे मरेंगे ही नहीं तो उन्हें अंदर जाने का रास्ता कैसे मिलेगा?"

"क्या मानव राजा भी सीमावर्ती लोक में प्रवेश करने से पहले मर जाता है?" हिरण्याक्ष ने पूछा। "क्या आप स्वयं भी यही यात्रा करने से पहले मर गए थे, महागुरु?"

शुक्राचार्य ने उत्तर देने से पहले कुछ क्षणों तक प्रश्नों पर विचार किया। "मानव राजा के बारे में मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। मुझे केवल इतना पता है कि आचार्य, जो उनके मुख्य सलाहकार हैं, उन्हें पार करने में सहायता करते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, हाँ, मुझे पिछली दोनों बार मरना पड़ा था।"

समूह और मैदान में सन्नाटा छा गया।

"और क्या यह संजीवनी मंत्र ही था जिसने आपको दोनों बार पुनर्जीवित किया, महागुरु?"

"जी हां। मंत्र की यही भूमिका होती है।"

"क्या यह मंत्र उन बहादुर असुरों को भी वापस ले आएगा, जब वे हलाहल को सुरक्षित करने में आपकी मदद कर देंगे? और महिषों को भी?"

शुक्राचार्य हिचकिचाए। "यह...यही मेरा विश्वास है। लेकिन सच कहूँ तो, मैंने पहले कभी इतने बड़े समूह पर संजीवनी मंत्र का उच्चारण नहीं किया है। मुझे मंत्र की शक्ति का अंदाजा नहीं है।"

समूह में फिर से सन्नाटा छा गया।

"पर जो भी हो जाए, मंत्र तुम्हारी रक्षा करता है, है ना?" होलिका ने आश्वासन के लिए मुख्य पुजारी की ओर उत्सुकता से देखा। "एक बार जब तुम्हें कटार मिल जाएगी, तो तुम वापस लौट आओगे।"

प्रधान पुजारी को सिर हिलाते देख उसने राहत की सांस ली। हिरण्यक्ष भी स्पष्ट रूप से शांत हो गया। "तो फिर अब और देर न करें," उसने कहा।

शुक्राचार्य आगे बढ़े। "पाताल के वीर योद्धाओं! हम हलाहल को अपने अधिकार में लेने के निर्णायक मोड़ पर हैं, और हलाहल को पाताल तक लाने का दायित्व आपके योग्य कंधों पर आ गया है। असुरों की आने वाली पीढ़ियाँ आज आप जो करने जा रहे हैं, उसके लिए सदा आपके ऋणी रहेंगी। अपनी तलवारें और भाले कसकर थामे रहो, क्योंकि जहाँ हम जा रहे हैं वहाँ इनकी आवश्यकता होगी। अब निडर होकर जाओ और बहादुरी से लड़ो। पाताल के लिए।"

"पाताल के लिए। असुरों की महिमा के लिए," असुर योद्धाओं ने एक-दूसरे से निगाहें हटाए बिना, अपनी तलवारों को अडिग रखते हुए, चिल्लाकर जवाब दिया।

हिरण्याक्ष ने गर्जना के शांत होने का इंतजार किया और फिर एक असुर सेवक को संकेत दिया, जिसने एक छोटा पीतल का घंटा बजाया। पेड़ के नीचे से एक भारी धातुई ध्वनि निकली और मैदान में गूंज उठी, जो असुर योद्धाओं के घेरे से होकर गुजरी, जो पहले से ही एक-दूसरे के गले में तलवारें घोंप रहे थे। उस ध्वनि ने मरते हुए असुरों के होठों से निकल रही कराहों और घुटन भरी आवाजों को दबा दिया, और यहां तक कि महिषों की क्रोधित गर्जना को भी शांत कर दिया, क्योंकि भाले उनकी गर्दन में धंस रहे थे। एक-एक करके, असुर सूखी धरती पर गिर पड़े, फिर भी उनके भाले और तलवारें उनके हाथों में थीं, जो अब उनके भाई-बहनों के खून से लथपथ थीं। और महिष अपने मचान में भारी-भरकम होकर गिर पड़े, धीरे-धीरे मरते हुए, उनके घावों से खून बह रहा था। जब तक घंटे की अंतिम गूंज मैदान की

खुली रेत में विलीन हो गई, तब तक मैदान में एक भी असुर योद्धा जीवित नहीं बचा था। जो बचा था वह शवों का एक भद्दा घेरा था, जो बेजान और झुके हुए थे।

शुक्राचार्य ने संतोषपूर्वक दृश्य का अवलोकन करते हुए कहा, "दिति के वीर पुत्र और पुत्रियाँ अपने रास्ते पर हैं। मुझे भी उनके पीछे जाना चाहिए।"

मैदान की ओर मुख किए हुए, प्रधान पुरोहित घुटनों के बल बैठ गए। एक हाथ से अपने लोहे के दंड को पकड़कर, उन्होंने दूसरे हाथ से अपने गले को ढकने वाली भूरे रंग की दाढ़ी को एक तरफ हटाया। शक्ति के लिए दस महाविद्याओं का आह्वान करते हुए, उन्होंने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया जिससे उनका गला पूरी तरह से दिखाई देने लगा। वे दूर के तारों को निहारते हुए प्रतीक्षा करते रहे, जब तक कि होलिका पीछे से उनके सामने एक तेज कटार हाथ में लिए हुए प्रकट नहीं हुईं। वह थोड़ी झिझकी और शुक्राचार्य को हल्के से आशंकित होकर देखने लगीं।

"करो," प्रधान पुजारी ने फुर्ती से सिर हिलाते हुए कहा। फिर उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं।

होलिका ने कटार शुक्राचार्य के गले पर रख दी। एक क्षण के लिए वह असमंजस में पड़ गई। फिर, कोमल, लचीली त्वचा पर तेज धार दबाते हुए, उसने कटार को जोर से बगल की ओर खींचा और महायाजक का गला चीर दिया।

षड्यंत्र

दूतों के हाथों में हल्दी-पीले रंग के झंडे शिथिल और हताश लटके हुए थे, कोसला का मोर-पंख वाला ध्वज कपड़े की तहों में मानो कहीं खो गया था। अजिरावती नदी

के पार से हल्की-सी हवा भी नहीं बह रही थी, श्रावस्ती की हवा सन्नाटे से भरी हुई थी और आशंकाओं से व्याकुल थी। राजा भूमिपाल एक चौड़ी सूती छतरी के नीचे खड़े होकर अपने सेनापतियों द्वारा एकत्रित सैनिकों का जायजा ले रहे थे।

"वो संख्याएँ क्या थीं?" उसने अधीपा से पूछा।

"महामहिम, हमारे पास तीन हजार पैदल सैनिक हैं," बूढ़े जनरल ने उत्तर दिया। "इसके अतिरिक्त, सौ घुड़सवारों की एक रेजिमेंट और तीरंदाज ब्रिगेड भी हैं। साथ ही, हमने सेवानिवृत्त सैनिकों की एक मिलिशिया भी तैयार की है जिसमें लगभग चार सौ सैनिक हैं।"

"हमारे पास तीन हज़ार से भी कम पैदल सैनिक हैं... और केवल एक तीरंदाज़ ब्रिगेड है, महाराज," कीर्तना ने अधीपा की ओर इशारा करते हुए स्पष्ट किया। "कुल मिलाकर कुछ सौ तीरंदाज़ हैं।"

अधीपा ने दरबारी को नाखुशी से घूरकर देखा।

"युद्ध में तथ्य मायने रखते हैं, अतिशयोक्ति नहीं," कीर्तना ने जनरल की ओर एक नजर घुमाते हुए कहा।

"युद्ध दृढ़ विश्वास के बल पर जीते जाते हैं, मेरे मित्र," अधीपा ने गुस्से से कहा। "एक सेना को असंभव परिस्थितियों से लड़ने और असंभव विजय प्राप्त करने के लिए तथ्यों और वास्तविकताओं की परवाह नहीं करनी चाहिए। एक सेना को हमेशा अपने वास्तविक आकार से कहीं अधिक बड़ा होना चाहिए।"

"हां, लेकिन तथ्यों को स्वीकार करते हुए—"

"ठीक है, बस करो," भूमिपाला ने बीच में टोकते हुए कहा। माथे पर आ रहे पसीने को पोंछते हुए उन्होंने अपने सामने खड़ी सेना को देखा और सैनिकों के झुके हुए कंधों को देखकर उनकी आँखों में कड़वाहट झलक रही थी। अधीपा चाहे कुछ भी कहें, उन्हें बस एक बुरी तरह से क्षीण सेना दिखाई दे रही थी—मुश्किल से साढ़े तीन हजार सैनिक—जो श्रावस्ती से मगध की सीमा की ओर रवाना होने से पहले ही हार का भाव लिए खड़ी थी।

"क्या आप पुरुषों को संबोधित करेंगी, माननीय?" अधीपा ने कुछ देर रुकने के बाद पूछा।

"जब वे सब मार्च करने के लिए तैयार हो जाएं," राजा ने सिर हिलाते हुए कहा। "उन्हें तितर-बितर कर दो।"

जैसे ही भूमिपाला महल की ओर वापस जाने लगा, सेनापति छत्र की छाया से बाहर निकला और अपने सेनापतियों को सैनिकों को प्रशिक्षण मैदान में वापस लाने का संकेत दिया। फिर वह अपने राजा के पीछे-पीछे महल की आरामदायक छाया में चला गया, जहाँ युवा दरबारी कद्रू एक लंबे, सांवले रंग के अजनबी के साथ खड़ा था।

"महामहिम, नमस्कार," काद्रू ने झुककर अभिवादन किया।

राजा ने सिर झुकाया और कद्रू लिए हुए व्यक्ति की ओर देखा। उस व्यक्ति ने तुरंत हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

"महामहिम," काद्रू ने कहा। "यह अंबालू है, किकाटा वंश का रत्न।"

"आपका दरबारी दयालु हृदय और वाक्पटु है," किकाता जनजाति के व्यक्ति ने काद्रू की ओर सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। "जी हां, मैं अम्बालू हूं, किकाता जनजाति का पुत्र। आपकी सेवा में तत्पर हूं।"

भूमिपाला ने अपने अतिथि की ओर देखते हुए कहा, "नमस्कार। मुझे खुशी है कि आप मिलने के लिए राजी हुए।"

"आप पार्षद पल्लवन का बदला चाहते हैं। हम सजाया और मगध में मारे गए अनगिनत अन्य भाइयों और बहनों का बदला चाहते हैं।" किकाटा ने अपने आस-पास के चेहरों को गौर से देखा। "एक साझा दुश्मन के खिलाफ सहयोग करने में ही फायदा है।"

कुछ देर बाद, वे सभी राजा के ऊपरी मंजिल के कक्ष में बैठे थे, जहाँ से अजिरवती नदी दिखाई देती थी। ताज़ा नींबू का रस, गुड़ और दालचीनी से मीठा किया हुआ, परोसा गया था, और जैसे ही भूमिपाल ने पेय का एक घूंट लिया, उसने अंबालू को गौर से देखा। उसे उम्मीद थी कि मगध में किकाटा प्रतिरोध का नेतृत्व कोई थोड़ा अधिक उम्र का व्यक्ति करेगा, जबकि अंबालू युवा था, शायद बीस वर्ष की आयु के आसपास। उसकी आँखें गहरी और उदास थीं, जो उसके कबीले की विशेषता थी, फिर भी वह युवावस्था की गति और सहजता से चलता था, उसके दुबले-पतले शरीर पर मांसपेशियाँ अच्छी तरह विकसित थीं।

"क्या आप गजकेतु के बारे में जानते हैं?" भूमिपाला ने अपनी घनी सफ़ेद-काली दाढ़ी में उंगलियां फेरते हुए पूछा। "वह संगीतकार?"

"राजा सिद्धसेना की हत्या और सजय की निर्दोषता के साक्षी," अंबालू ने सिर हिलाते हुए कहा। "दरबारी कद्रू ने हमें सब कुछ बताया।"

"कोसला मगध पर युद्ध की घोषणा करने ही वाला है, जबकि हमारी अधिकांश सेना सीमा पर सिंधुवर्त की रक्षा करते हुए बर्बर आक्रमण से लड़ रही है। हमारे पास चार हजार से भी कम सैनिक हैं।"

"जबकि मगध की सेना पांच गुना, शायद छह गुना बड़ी है," अंबालू ने अपनी बात समाप्त की।

राजा और उनके दरबारी असहज महसूस करने लगे।

"तुम्हारे प्रतिरोध दल में कितने लोग हैं?" भूमिपाला ने अंत में पूछा।

"दो सौ ढाई सौ के बीच।"

अंबालू ने राजा के अचरज से खुले मुंह को देखा। कोसलान परिषद ने संदेह भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा।

"यह तो नाममात्र की संख्या है," कीर्तना ने मुंह बनाते हुए अपनी टूटी हुई नाक खुजाई।

अंबालू कुछ पल चुप रहा। उसने कहा, "हमारे यहाँ एक पुरानी कहावत है: अगर हम सूरज की तरह चमक नहीं सकते, तो जुगनू की तरह तो जगमगा ही सकते हैं। क्योंकि प्रकाश का आकार नहीं, बल्कि उसका उद्देश्य ही अंधकार को दूर करता है।"

"तुम्हारे लोगों की बातों में ज्ञान और आशा है," भूमिपाला ने कहा। "लेकिन मगध की सेना के विशाल आकार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता—"

"तुम्हारे सैनिकों को जिस मगध सेना का सामना करना पड़ेगा, वह इतनी बड़ी नहीं होगी," अंबालू ने बीच में ही कहा। अपनी ओर आ रही हैरान निगाहों को देखकर उसने अपना खाली गिलास एक तरफ रख दिया। "तुम भूल रहे हो कि मगध ने वंगा गणराज्य पर कब्जा कर लिया है, और वंगा को अपने नियंत्रण में रखने के लिए शूरसेना को वहां सैनिकों की जरूरत है। दंडकभुक्ति में लोहे की खानों की रक्षा के लिए एक हजार से अधिक मगध सैनिक तैनात हैं, जबकि लगभग एक हजार सैनिक ताम्रलिप्ति में तैनात हैं। इसके अलावा, विद्रोहों को पनपने से रोकने के लिए गणराज्य की अठारह रियासतों में दो हजार सैनिक तैनात किए गए हैं। इसलिए, तुम्हारे पास पहले से ही चार हजार कम सैनिक होंगे।"

अधीपा, कीर्तन और कद्रू का चेहरा खिल उठा और उन्होंने अपने राजा की ओर देखा। भूमिपाला को लगा कि अचानक कमरे में हवा का झोंका चलने लगा है।

"अभी और भी कुछ है," किकाता ने उंगली उठाकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा। "अगर मैं पूछ सकूँ, तो आप मगध के विरुद्ध कब कार्रवाई करने की योजना बना रहे हैं?"

"शायद अगले कुछ दिनों में। जब भी सेना तैयार हो जाएगी," जनरल ने जवाब दिया।

"मैं थोड़ा विलंब करने का सुझाव दूंगा, क्योंकि मुझे सूचना मिली है कि मगध अब ओद्रा और कलिंग राज्यों पर आक्रमण करने की योजना बना रहा है।" राजा और उसके सैनिकों के चेहरों पर आश्चर्य देखकर अंबालू ने सिर हिलाया। "शूरसेना तोसाली और उत्तरा तोसाली के बंदरगाहों पर कब्जा करना चाहता है, ताकि वह सिंधुवर्त से आने-जाने वाले सभी व्यापार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर सके। अब, ओद्रा और कलिंग पर आक्रमण करने के लिए, वह वंगा से सैनिकों को जुटाएगा, लेकिन उसे मगध के ऐसे सैनिकों की भी आवश्यकता होगी जिन पर वह पूरी तरह से भरोसा कर सके। मेरा अनुमान है कि बारह से पंद्रह हजार सैनिक होंगे। एक बार शूरसेना का अभियान शुरू हो जाए, तो कोसल की सेनाओं और मगध में बची सेनाओं के बीच का अंतर बहुत कम हो जाएगा, समझे?"

भूमिपाला ने देखा और उसे जो देखा वह पसंद आया। "आपकी जानकारी कितनी विश्वसनीय है?"

"हमें अपने सूत्रों पर भरोसा है," जवाब रहस्यमय था। कुछ देर रुकने के बाद किकाटा ने कहा, "हम शूरासेना को अपनी योजनाओं पर शक करने का कोई मौका नहीं देंगे। ढोल-नगाड़े नहीं, युद्ध की घोषणा नहीं। उसे सोचने दो कि पार्षद पल्लवन की मृत्यु से कोसला ने सबक सीख लिया है। उसे सोचने दो कि कोसला पूरी तरह से खत्म हो चुका है। उस पर तब हमला करो जब उसे हमसे किसी भी तरह की उम्मीद न हो।"

"गजकेतु के यहाँ होने की खबर पहले ही सार्वजनिक हो चुकी है," कीर्तना ने कहा। "उसने जो कुछ देखा, उसकी बात फैल रही है और जल्द ही मगध तक पहुँच जाएगी। अब इसे दबाना बहुत देर हो चुकी है, और शूरसेना को पता चल जाएगा कि हमने खबर लीक की है।"

"इसके कुछ फायदे भी हो सकते हैं।" अंबालू ने भूमिपाला को ध्यान से देखा। "क्या आप जानते हैं कि पार्षद पल्लवन को शूरासेना के हाथों किसने धोखा दिया था, जो अंततः पार्षद की मौत के लिए जिम्मेदार था?"

राजा ने अपना सिर हिलाया। पल्लवन के बारे में किसी ने चुगली की होगी, यह ख्याल उनके मन में कभी आया ही नहीं था।

"दरबारी असमाबिंदु।"

"राजा सिद्धसेना के कानूनी सलाहकार?" भूमिपाला ने हैरानी से कहा। "ऐसा नहीं हो सकता। वह तो हमेशा सिद्धसेना के प्रति वफादार रहे..." उनकी आवाज धीमी पड़ गई, अविश्वास संदेह में बदल गया।

"अस्माबिंदु ने पार्षद और अपने ही साथियों उत्तम, दिगंता और भास्कर के साथ विश्वासघात किया। बाद में तीनों दरबारियों पर किकटों के साथ साजिश रचने का झूठा आरोप लगाया गया और उन्हें मृत्युदंड दे दिया गया।"

"अस्माबिंदु..." भूमिपाला ने फुसफुसाते हुए कहा, उसे यह बात समझने में मुश्किल हो रही थी। "क्यों?"

"महत्वाकांक्षा।" अंबालू ने इस शब्द को ऐसे थूका मानो यह सब कुछ बयां कर देता हो। "जब वांगा मगध शासन के अधीन आया, तो असमबिंदु ने वांगा का राज्यपाल बनने का सपना देखना शुरू कर दिया। इस पद के लिए कई उम्मीदवार थे, इसलिए असमबिंदु ने शूरासेना के प्रति अपनी वफादारी साबित करने और इनाम के तौर पर यह पद जीतने का फैसला किया। पार्षद पल्लवन उन चार लोगों में से एक थे जिन्हें असमबिंदु की महत्वाकांक्षा की कीमत चुकानी पड़ी।"

अधीपा ने क्रोध से कहा, "वह चूहा! जब यह सब खत्म हो जाएगा, तो हम उसे पल्लवन के खून का बदला ज़रूर लेंगे, उसे ज़िंदा जलाकर। तब तक, मुझे उम्मीद है कि राज्यपाल की कुर्सी, जिस पर उसकी बुरी नज़र थी, उसके लिए काँटों भरी साबित होगी।"

"सब कुछ करने के बावजूद, उसे पद नहीं मिला," युवा किकाता हँसते हुए बोला। "यह पद वांगा के सरदार भद्रका को मिल गया है, क्योंकि उसने मगध के प्रति अपनी वफादारी बदल ली थी। कहा जाता है कि भद्रका ने अन्य सरदारों के साथ विश्वासघात किया, जिससे वांगा का पतन शीघ्र हुआ।"

"कीड़े को यही मिलना चाहिए था," भूमिपाला ने अस्माबिंदु का जिक्र करते हुए गुर्राते हुए कहा।

"अस्माबिंदु बहुत परेशान हैं। जाहिर तौर पर, पार्षद पल्लवन और अन्य लोगों को सौंपना वांगा का राज्यपाल बनने के उनके सौदे का हिस्सा था, लेकिन अब जब शूरासेना इस सौदे का पालन नहीं कर रही है, तो असमाबिंदु बेहद गुस्से में हैं। वह इसे विश्वासघात मानते हैं।"

"धोखे का बदला धोखे से ही लिया जाएगा," कीर्तना ने संतुष्टि से सिर हिलाते हुए कहा।

"आप बात समझ नहीं रहे हैं," अंबालू ने आगे झुकते हुए और राजा और उसके आदमियों को घूरते हुए कहा। "मगध में, गिरिव्रज के हृदय में, एक ऐसा व्यक्ति है जो गजकेतु और राजा सिद्धसेन की मृत्यु के बारे में सच्चाई जानता है। इस व्यक्ति को शूरसेना से द्वेष है। यही वह व्यक्ति है जो हमारे काम आ सकता है।"

"क्या आपका मतलब यह है कि हम उस व्यक्ति से गठबंधन करें जिसके हाथों पर पल्लवन का खून लगा है?" अधीपा ने गुस्से से भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "बिल्कुल नहीं!"

"हम ऐसा नहीं कर सकते," काद्रू ने सहमति जताई।

"मैं यह नहीं कह रहा कि हम उसके मित्र बनें। उसने पार्षद पल्लवन का इस्तेमाल अपने मकसद को पूरा करने के लिए किया। हम उसका इस्तेमाल अपने मकसद को पूरा करने के लिए कर रहे हैं। अगर वह स्वेच्छा से शूरासेना के खिलाफ हो जाए, तो उसकी मदद करो। उसे मजबूत करो। उसे साधन और प्रोत्साहन दो।" अंबालू ने भूमिपाला की ओर विनती भरी निगाहों से देखा। "उसे शूरासेना को सत्ता से हटाने में आपकी मदद करने दो।"

राजा ने इस विचार पर गहराई से विचार किया और इसकी रूपरेखा उसे पसंद आई। "कैसे?" उसने सावधानी से पूछा।

"उससे संपर्क करो। उसे बताओ कि हम गजकेतु को उसके हवाले कर सकते हैं। वह गजकेतु का श्रेय ले सकता है, सच्चाई को सामने लाने का श्रेय। वह सिद्धसेना के वफादार आदमी की भूमिका निभा सकता है, जो अपने मारे गए राजा के लिए न्याय की मांग कर रहा है। वह मगध के लोगों का नायक बन सकता है। फिर वह इनाम के तौर पर जो चाहे मांग सकता है। कृतज्ञ राज्य उसे वह सब कुछ दे देगा।"

भूमिपाला ने अपने दरबारियों पर एक नज़र डाली, जो सभी बहुत दुखी लग रहे थे। "हम एक खलनायक को नायक बना रहे हैं," कीर्तना ने बुदबुदाते हुए कहा। "पल्लवन की आत्मा हमें माफ नहीं करेगी।"

भूमिपाला ने तर्क देते हुए कहा, "इस लड़ाई का उद्देश्य शूरसेना की योजनाओं को विफल करना है। हमें इस उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए।"

"किसी भी तरह के अनादर के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या हमारा उद्देश्य राजा सिद्धसेना और पल्लवन की मृत्यु का बदला लेना नहीं है?" कीर्तना ने अब भी व्याकुल होकर पूछा।

"हाँ, लेकिन जब तक हम शूरसेना को नहीं हरा देते, तब तक कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा," भूमिपाला ने उत्तर दिया। "इसके अलावा, शूरसेना का काम तमाम हो जाने के बाद हम अस्माबिंदु से बदला ले सकते हैं। बदला लेने के कई तरीके हैं। अस्माबिंदु को पकड़ने का तरीका हम बाद में ढूंढ लेंगे।"

अधीपा ने कहा, "जब तक उस नीच को उसके पापों की सज़ा मिल जाती है, मुझे किसी भी योजना से कोई आपत्ति नहीं है।" बाकी दोनों आदमियों ने अनिच्छा से सिर हिलाया, लेकिन राजा के वादे से उन्हें तसल्ली भी मिली।

भूमिपाला अपनी सीट पर सीधा होकर बैठ गया और अंबालू की ओर देखा। "आप इस पर क्या कार्रवाई करने का इरादा रखते हैं?"

"क्या गिरिवरजा में आपका कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे अस्माबिंदु से संपर्क स्थापित करने का कार्य सौंपा जा सके?"

मुझे अफसोस है कि ऐसा नहीं है। पल्लवन के वहां संपर्क थे, लेकिन ऐसा लगता है कि वे सभी मर चुके हैं।

"कोई बात नहीं। मेरे पास ऐसे लोग हैं जो ज़रूरी काम कर सकते हैं।" किकाता थोड़ी देर रुका। "इस बीच, भले ही ऐसी नौबत कभी न आए, फिर भी हम युद्ध की तैयारी जारी रखें।"

***

"उनका क्या मतलब है कि उन्होंने उसे नहीं देखा? किसी न किसी को तो उसे देखना ही चाहिए था।"

अमरा सिंह ने दुभाषिए को घूरकर देखा, फिर अपनी निगाहें अपने सामने और अंगामित्रा के सामने खड़े पाँच कांपते हुए शक किसानों पर डालीं। "एक सपाट और खुले रेगिस्तान में एक आदमी... उसे उन्होंने कैसे नहीं देखा?" अपनी कुल्हाड़ी को और कसकर पकड़ते हुए, उन्होंने उन आदमियों को गुस्से से देखा। "अगर उन्होंने उसे कहीं छिपा रखा है, तो उनसे कहो कि उसे सामने लाएं, वरना उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

"महामहिम, वे राजकुमार को कहाँ छिपा सकते हैं?" दुभाषिए ने पूछा।

पार्षद ने दुभाषिए पर एक नज़र डाली, लेकिन फिर मुँह फेर लिया, क्योंकि वह जानता था कि वह आदमी सही कह रहा है। सुनसान इलाके में उगे इस उबड़-खाबड़ साका गाँव में बिखरी हुई छह मिट्टी और घास-फूस की झोपड़ियों को देखकर ही स्पष्ट हो गया कि यहाँ किसी को भी बंदी बनाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। इसके अलावा, ये तो बस किसान और पत्थर के खनिक थे, जो रेगिस्तान की कठोरता से जूझते हुए अपने काम में लगे हुए थे।

फिर भी, अमारा सिम्हा ग्रामीणों की बात पर आसानी से विश्वास नहीं कर पा रहा था।

घटकरपारा की खोज को अब लगभग दो दिन हो चुके थे, और कीबार से पूर्व की ओर एक सीधी-सादी यात्रा के रूप में शुरू हुआ यह सफर, चिलचिलाती धूप में मरुस्थली के इस हिस्से में भटकते हुए एक अंतहीन और बेतरतीब खोज में बदल गया था। इन दो दिनों में वे नौ शक बस्तियों से गुज़रे थे—कोई भी कीबार जितनी बड़ी नहीं थी, और सभी की सुरक्षा कमज़ोर थी—लेकिन उन सभी बस्तियों के निवासियों को गंभीर धमकियाँ दिए जाने के बावजूद, किसी ने भी घटकरपारा की एक झलक भी देखने की बात स्वीकार नहीं की थी। अब, जैसे-जैसे दिन ढल रहा था, अमरा सिंह पर हताशा हावी होती जा रही थी।

"क्या हम आज रात यहीं बिताएंगे, महाराज?" दुभाषिए ने पूछा।

अमरा सिंह ने जवाब देने से पहले अंगामित्रा की ओर संक्षेप में देखा। "यहाँ से निकटतम बस्ती कितनी दूर है?"

दुभाषिए ने सवाल पूछा। तीन ग्रामीणों ने कुछ देर आपस में बहस की, फिर एकमत हुए। दुभाषिए ने कहा, "उत्तर की ओर लगभग आधे दिन की पैदल दूरी पर, लगभग बीस घरों वाला एक गाँव है। लेकिन पूर्व में गैज़ नाम का एक और गाँव है।

वह भी लगभग उतनी ही दूरी पर है, शायद थोड़ा ज़्यादा। वह काफ़ी बड़ा भी लगता है।"

पार्षद ने झुंझलाहट भरी आह भरी। अब उन्हें आगे कहाँ जाना चाहिए—उत्तर या पूर्व? इन दोनों गाँवों में से कौन सा गाँव घटकरपारा के रास्ते में पड़ने की अधिक संभावना थी—यदि वह वास्तव में इस रास्ते से आया था? और यदि राजकुमार पकड़े जाने से बचने के लिए बस्तियों से बचकर निकल रहा था तो क्या होगा? ऐसे में शकों में से कोई उसे कैसे देख पाता? और यदि उसने ऐसा किया था, तो राजकुमार अपना जीवन कैसे चला रहा था, उसे भोजन और पानी कहाँ से मिल रहा था? ये प्रश्न एक के बाद एक बढ़ते जा रहे थे और अमरा सिंह को लगातार परेशान कर रहे थे।

"हाँ, हमें आज रात यहीं बितानी होगी," उसने अंत में कहा। वह समझ गया था कि सैनिक बुरी तरह थक चुके हैं, और यद्यपि वह खोज जारी रखना चाहता था, आराम अत्यंत आवश्यक था, खासकर अगर आगे उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़े—जिसकी संभावना लगातार बढ़ती जा रही थी। किबार पर उनके हमले की खबरें प्रमुख साका सैन्य चौकियों तक पहुँच चुकी होंगी, जबकि साका बस्तियों में उनके दौरे की खबरें भी तेजी से फैल रही होंगी। अमारा सिम्हा को संदेह था कि साका युद्ध प्रमुखों ने कस्बों और गांवों में सैनिकों को तैनात करना और रक्षा व्यवस्था को मजबूत करना शुरू कर दिया होगा, जबकि साका खोज दलों द्वारा उनकी तलाश किए जाने की संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता था। उसने बाद में किबार के श्योर और दो बड़े साका गांवों के श्योरों को बंधक के रूप में अपने साथ लाया था, लेकिन उसे यह नहीं पता था कि उनमें से कोई इतना महत्वपूर्ण है कि उसे और उसके सैनिकों को सुरक्षित मार्ग की गारंटी दे सके। अमारा सिम्हा का मानना था कि अंततः, इस मामले का समाधान तलवारों से ही होगा। इसीलिए आराम आवश्यक था।

दुभाषिए ने भयभीत ग्रामीणों को निर्णय सुनाया—जिन्होंने सैनिकों के रहने और खाने का इंतजाम करने के लिए तुरंत कदम उठाए और अपने पास जो कुछ भी थोड़ा-बहुत था, उसे बाँट दिया ताकि किसी का गुस्सा उन पर न बरसे—अंगमित्र अपने आदमियों को रुकने की सूचना देने चला गया, और अमारा सिंह को एक झोपड़ी की छाँव में जाकर बैठने और थकान मिटाने के लिए पैर फैलाने के लिए छोड़ दिया। किबार में उसकी पीठ पर लगी चोट अभी भी दर्द कर रही थी, और वह

सोच रहा था कि क्या धूप की गर्मी में वह और बढ़ गई है। एक डरपोक छोटी लड़की उसके लिए पानी का एक छोटा सा बर्तन लाई, जिससे उसने अपने हाथों और चेहरे से धूल धोई।

मैंने अपने साथियों से कहा है कि हम सूर्योदय से दो घंटे पहले निकलेंगे।

पार्षद ने ऊपर देखा तो पाया कि अंगामित्रा वापस आ गई थी। "बहुत बढ़िया," उसने सिर हिलाकर जवाब दिया।

अपने घुटनों के बल बैठकर, संसप्तकों के सेनापति ने झोपड़ी की नींव से गिरे तीन मिट्टी के कंकड़ उठाए। एक कंकड़ को कुछ दूर फेंककर, उन्होंने दूसरे कंकड़ से पहले वाले को मारने की कोशिश की। निशाना चूक गया। उन्होंने तीसरा कंकड़ अपने लक्ष्य पर फेंका। फिर भी निशाना चूक गया। अंगामित्र ने अपने गाल फुलाकर हाथों से धूल झाड़ी और पैरों को मोड़कर जमीन पर बैठ गए। अमर सिंह ने देखा कि सेनापति की भुजाएँ गहरे रंग से धूप से झुलस गई थीं, जबकि उनके चेहरे की त्वचा खिंची हुई और लाल थी, गालों और नाक पर पपड़ी उतर रही थी। हवा की शुष्कता के कारण उनके होंठ फटे हुए थे। सलाहकार जानते थे कि उनका अपना चेहरा भी रेगिस्तान की धूप, हवा और अंतहीन धूल के संपर्क में आने से इतना ही खराब हो गया था।

"महाराज, आपके विचार से राजकुमार किस रास्ते गए होंगे?" संसप्तक ने पूछा।

अमरा सिम्हा ने एक कड़वी मुस्कान के साथ कमांडर की ओर देखा और कंधे उचका दिए।

"हमें यह भी नहीं पता कि वह हमारे आस-पास भी आया था या नहीं," उसने अंधेरे रेगिस्तान की ओर देखते हुए उत्तर दिया। वह सोच रहा था कि क्या वह विक्रमादित्य से किया अपना वादा पूरा करने में असफल रहेगा, जिसमें उसने घटकरपारा को उज्जैन सुरक्षित वापस लाने का वादा किया था। सलाहकार के मन में राजा के भतीजे की एक तस्वीर कौंध गई, जो कहीं मृत पड़ा था, औंधा रेत में धंसा हुआ। अमरा सिंह ने उस तस्वीर को झट से दूर किया और आह भरी। "हमें यह भी नहीं पता कि हम सही जगह खोज रहे हैं या नहीं।"

"तो हम उत्तर की ओर चलें या पूर्व की ओर?" अंगामित्रा ने पूछा। "उत्तर पास है," उन्होंने कहा।

पार्षद ने अपनी कमीज़ की तहों में हाथ डाला और एक सिक्का निकाला। "हमारी नियति हमें जहाँ भी ले जाए," उन्होंने उत्तर दिया। "सिक्का सीधा रहे, तो उत्तर दिशा। सिक्का उल्टा रहे, तो पूर्व दिशा।" उन्होंने सिक्के को हवा में उछाला।

दोनों व्यक्ति कांसे के उस टुकड़े को घूमते और ऊपर उठते हुए देख रहे थे। उन्होंने सिक्के को अपनी वक्रता के शीर्ष पर पहुँचते देखा, फिर गुरुत्वाकर्षण के कारण नीचे गिरते देखा। उन्होंने सिक्के को कठोर जमीन पर गिरते, एक बार उछलते और पलटते देखा। उन्होंने उसे धूल में धंसते हुए देखा।

अंगामित्रा सिक्के को देखने के लिए आगे झुका। "उल्टा रखा है। पूरब की ओर," उसने कहा। "गाइज़ की ओर।"

***

भविष्यवक्ता धीरे-धीरे बेंच पर बैठ गई, ताकि उसके अकड़े हुए जोड़ एक-एक करके सहज हो सकें। उसकी देखभाल के लिए तैनात महल के रक्षक ने उसे कंधों से पकड़कर सहारा दिया, हालांकि भविष्यवक्ता का मन कर रहा था कि वह उससे कहे कि अगर वह सचमुच मदद करना चाहता है, तो वह एक पालकी लाए ताकि वह घुमंतू जनजाति के साथ अपने पुराने, परिचित जीवन में लौट सके।

"माँ, क्या आप आराम से हैं?" उसने पूछा।

भविष्यवक्ता ने हाथ हिलाकर जवाब दिया, उसे अपनी ज़बान पर ज़रा भी भरोसा नहीं था, उसे डर था कि कहीं वह कुछ अभद्र और अनुचित न कह दे। वह आदमी तो बस अपना काम कर रहा था और वास्तव में विनम्र और शिष्ट व्यवहार कर रहा था। वह महल में अपने जीवन की झुंझलाहट का निशाना उसे नहीं बना सकती थी।

एक छोटी सी कपड़े की थैली निकालकर, देवी ने कुटी हुई सुपारी का एक हिस्सा अपनी हथेली में डाला। उन्होंने उसे कुशलता से अपने मुँह में डाला और चबाते हुए महल की विशाल झील को निहारा, जिसके पार उज्जैन झील फैली हुई थी और धीरे-धीरे अंधेरा होते आकाश में उसकी परछाईं दिख रही थी। सुबह के तूफान ने हवा को शुद्ध कर दिया था, इसलिए चमेली की खुशबू हवा में फैली हुई थी, हालाँकि देवी के बैठने वाले चबूतरे पर कोई फूल नहीं थे।

शहर में कहीं से मंदिर की घंटियाँ बजने लगीं, और किसी कारणवश, वे उसे अपनी बेटी शंकु की माँ की याद दिला गईं। भविष्यवक्ता ने कुछ देर सोचा और फिर

निष्कर्ष निकाला कि इन दिनों लगभग हर चीज़ उसे शंकु और उसकी माँ की याद दिलाती है; वह उन दोनों को बहुत याद करती है, शंकु को तो और भी ज़्यादा क्योंकि महल में आने के बाद से वे दोनों और भी करीब आ गई थीं। उज्जैन आने का यही एक अच्छा पहलू था। और अब वह भी अतीत की बात हो गई थी।

देवी माँ सोच रही थीं कि शंकु इस समय कहाँ होगी, दंडक वन में उसका क्या हाल होगा। जब वह लड़की उनके पास आई और कहा कि वह वनवास जा रही है, तो देवी घबरा गईं, उन्हें उस लड़की की चिंता सताने लगी और विक्रमादित्य से दानवों का ज़िक्र करने पर उन्हें खुद से घृणा होने लगी। उन्होंने अविवेकी आवेग में शंकु को जाने से रोकने के लिए एक अपशगुन गढ़ने का भी सोचा था, एक मनगढ़ंत कहानी कि अगर यात्रा रद्द नहीं की गई तो कोई विपत्ति आएगी। वह ऐसा कर सकती थीं। आखिर वह देवी थीं। लोग उनकी हर बात पर विश्वास कर लेते थे।

फिर, उसे अपनी पोती के साथ हुई पिछली बातचीत याद आ गई। पार्क की बेंच पर बैठे हुए, शंकु की इच्छा से गायब होने की क्षमता पर चर्चा करते हुए, उसने बच्ची को बताया था कि उन्हें अपने-अपने वरदानों का उपयोग करने की स्वतंत्रता है—उन्हें इनका सदुपयोग करने का विकल्प है। उन शब्दों को याद करते हुए, देवी ने अपनी आशंकाओं को दबाकर शंकु को आशीर्वाद दिया और उसे जनस्थान की खोज में अपने वरदान का उपयोग करने का निर्देश दिया।

फिर भी, उसे उस लड़की की चिंता सता रही थी। और वह उसे बहुत याद कर रही थी। इतना कि वह ब्रिच्छा से मिलने के बारे में सोच रही थी। मकड़ी के जालों को देखकर उसे पता चल गया था कि कालकोठरी में उसका दामाद कितना दुखी था, अपनी बेटी के जाने का शोक मना रहा था। वे दोनों एक जैसे थे, वह और बूढ़ा जेलर, आत्मीय आत्माएं, शंकु के प्रति प्रेम से बंधे अवशेष। शायद वे अपना दुख और चिंता बाँट सकें। शायद वह सम्राट को संदेश भेजकर उस आदमी से मिलने का अनुरोध कर सकती है, उसने महल की दीवारों से टकराती झील की लहरों को सुनते हुए मन ही मन सोचा। राजा सहर्ष सहमत हो जाएँगे।

मदर ओरेकल कुछ देर रुकी, अपने विचारों को स्थिर किया। उसने सुना।

वह पानी की हल्की आवाज सुन रही थी जो पत्थर की दीवारों से टकरा रही थी।

उसने सुना। कुछ और भी था...

उसने खुद को ऊपर उठाने की कोशिश की, लेकिन यह प्रयास उसके लिए बहुत अधिक था।

"युवक," उसने रक्षक को पुकारा। "जल्दी करो। मुझे खड़े होने में मदद करो।"

एक बार जब वह गार्ड के सहारे खड़ी हो गई, तो वह धीरे-धीरे छत के किनारे तक गई और मुंडेर पर झुक गई।

"सावधान रहो," गार्ड ने चिंता से भरी आवाज़ में कहा। "तुम गिर जाओगे—"

"चुप रहो-चुप रहो," भविष्यवक्ता ने हाथ से इशारा करते हुए कहा और भौंहें चढ़ा लीं।

रक्षक ने सिर झुकाए, ध्यान से सुनती हुई देवी माँ को देखा। उसने उत्सुकता से झील की ओर देखा। उसे बस गहरा, गंभीर पानी और दो मछलियों की धुंधली सी झलक दिखाई दी, जो अपनी पूंछ हिलाते हुए झील की गहराई में समा गईं।

"राजा को, और जो भी प्रभारी हो, उसे संदेश भेजो," भविष्यवक्ता ने कहा। "झील में एक शव है।"

"कहाँ?" गार्ड पानी के ऊपर झुक गया।

"सावधान रहो, वरना तुम ही गिर जाओगे," मदर ओरेकल ने गुस्से से कहा। "तुम्हें लाश दिखाई नहीं दे रही। वो नीचे नहीं है। वो झील में कहीं है। मैंने मछलियों को इसके बारे में बात करते सुना। वहाँ मुँह खोले खड़े मत रहो—जाओ किसी को इसके बारे में बताओ।"

कुछ देर बाद पहरेदार तीन आदमियों के साथ लौटा। उनमें से एक कद में छोटा, थोड़ी टेढ़ी नाक वाला और भूरे बालों वाला आदमी था। उसने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं विस्मया, महल के पहरेदारों का मुखिया हूँ। मैंने आपके बारे में सुना है, माँ, लेकिन हमारी मुलाकात नहीं हुई।"

उस महिला ने वही बात दोहराई जो वह पहले ही पहरेदार को बता चुकी थी। मुखिया ने उसके बोलने का इंतज़ार किया, फिर झुककर कहा, "हमें बताने के लिए धन्यवाद, माँ।" उसने उसे गौर से देखा। "यह किसका शव है?"

"मछलियों को कैसे पता चलेगा?" भविष्यवक्ता ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"हाँ," विस्मया ने सिर हिलाया। "क्या यह किसी इंसान का है?"

"हाँ। वरना मैं आपको परेशान क्यों करता?"

"क्या आप हमें यह बता पाएंगे कि हमें शव की तलाश कहां से शुरू करनी चाहिए?"

नहीं, मछली ने कुछ नहीं कहा।

"कोई बात नहीं, माँ। मैं पूरी झील की तलाशी करवा दूँगा।" वह रुका और गहरे बैंगनी रंग के आकाश की ओर देखा। "बाहर ठंड बढ़ रही है। क्या आप अपने कमरे तक मेरे साथ चलना चाहेंगी, माँ?"

देवी ने सिर हिलाया। रक्षक ने सहारा देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और वे चबूतरे से बाहर निकल गए।

विस्मया ने अपने साथ आए लोगों से कहा, "महल में सभी को शव के बारे में सूचित कर दो। और क्षिप्रा नदी पर मौजूद नाववालों को भी बता दो कि हमें झील में खोजबीन के लिए उनमें से कुछ की आवश्यकता होगी। वे कल सुबह से काम शुरू कर सकते हैं।"

"हमें कितने आदमियों की जरूरत होगी, मुखिया?" एक गार्ड ने पूछा।

"मुझे नहीं पता। पाँच, छह... इस आकार की झील में एक लाश ढूंढने के लिए कितने आदमियों की ज़रूरत होगी?" उसने कंधे उचकाते हुए कहा। "जितने भेज सकते हैं, भेज दें।"

विस्मया ने अपने साथियों की ओर पीठ फेर ली और गहरी सोच में डूबे हुए झील की ओर देखने लगे। ढलते सूरज की किरणें क्षण भर के लिए उनके चेहरे पर पड़ीं और उसकी चमक और छाया में, एक पल के लिए मताली के चेहरे के भाव उभर आए, जो काले पानी में गहरी निगाहों से घूर रहे थे।

***

सूर्यास्त के तुरंत बाद बारिश फिर से शुरू हो गई, सुबह के तूफान की तरह ही तेज और शोरगुल भरी, फिर धीरे-धीरे कम होती गई और हल्की फुहार में बदल गई जो अब वरारुची के कंधों पर पड़ रही थी जब वह छावनी का मैदान पार करके अपने क्वार्टर की ओर लौट रहा था। उसने उस शाम अपने साथियों के साथ भोजन करने का फैसला किया था, यह जानते हुए कि ऐसे कार्य भाईचारे और वफादारी के बंधन को मजबूत करते हैं, और लगभग आधा दर्जन बार शराब पीने, गाने और हंसी-मजाक करने के बाद, उसे एहसास हुआ कि उसने सही किया है। अब, शराब की

गर्माहट को अपने शरीर में महसूस करते हुए, वह संतुष्टि से मुस्कुराया और अपने कमरे की सीढ़ियाँ चढ़ गया।

उनकी मुस्कान और संतुष्टि उनके परिषद कक्ष के दरवाजे तक ठीक उसी तरह बनी रही।

जैसे ही वह द्वार के पास पहुँचा, कक्ष के अंदर से एक सिपाही बाहर निकला। उसके बाल गीले थे और खोपड़ी से चिपके हुए थे, और उसके कपड़े भीगे हुए थे जिन पर बारिश की बूँदें थीं। वरारुची को देखकर उसकी परेशान शक्ल राहत में बदल गई। मुख्य द्वार पर तैनात पहरेदारों में से एक के रूप में उसे पहचानते हुए, पार्षद ने आश्चर्य से उस व्यक्ति को देखा। सिपाही ने झुककर प्रणाम किया और वरारुची से बात करने से पहले कक्ष में एक नज़र डाली।

"माननीय महोदय, आपसे मिलने कोई आया है," उन्होंने धीमी आवाज में कहा।

कोई आगंतुक? इतनी रात को?

"माननीय न्यायाधीश, वह आपसे तुरंत मिलना चाहती थी। वह अपनी बात पर अड़ी हुई थी—"

वह?

"कौन है?" वरारुची ने दरवाजे के पास आते हुए पूछा। उसने गर्दन उठाकर अंदर देखा।

और आश्चर्य से उसकी भौहें ऊपर उठ गईं—जबकि उसकी आत्मा मुरझाकर उसके पैरों के पास फर्श पर गिर पड़ी, हताश और आनंदहीन।

"कैसे हो भाई?" प्रलूपी ने खिड़की से मुड़कर उसकी ओर देखते हुए पूछा। "अंदर आ जाओ। मुझे लगता है ये तुम्हारे कमरे हैं।"

वररुची ने सिपाही को सिर हिलाकर विदा किया। फिर वह दहलीज पार करके कमरे में दाखिल हुआ और दरवाजा बंद कर लिया।

"यह जगह तो बहुत अच्छी है," राजकुमारी ने चारों ओर एक पैनी नज़र डालते हुए कहा, कमरे को फर्श से छत तक ध्यान से देखते हुए, उन्होंने किले की उस साधारण वास्तुकला को गौर से देखा, जो महल की उस भव्यता से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी जिसकी प्रालूपी को आदत थी। "यह तो आपका अपना परिषद कक्ष है," उन्होंने वरारुची की ओर भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "बहुत आलीशान तो नहीं है, लेकिन मुझे लगता है यह अस्थायी है। महल वाले कक्ष से बस एक कदम दूर, है ना?"

वररुचि उसे घूर रहा था। प्रलूपी ने उसकी ओर देखा और हल्की सी मुस्कान दी। "ठीक है ना?"

"आप क्या चाहते हैं?" पार्षद ने पूछा।

"ओह, सीधे मुद्दे पर आती हो।" मुस्कुराते हुए राजकुमारी ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा, "ज्यादा बातूनी नहीं हो।"

"हम दोनों कभी ज्यादा बातूनी नहीं थे।"

"तुम्हारी बात सही है।" प्रलूपी घूमकर आई और एक कुर्सी पर बैठ गई। "क्या तुम नहीं बैठोगी?"

"मैं खड़ा रहना पसंद करता हूँ। दरअसल," वरारुची ने खिड़की की ओर देखते हुए कहा, "मुझे अब सोने जाना चाहिए। मेरा आज का दिन व्यस्त रहने वाला है, इसलिए अगर आप मुझे बता दें कि आप यहाँ किसलिए आए हैं, तो हम दोनों का काम जल्दी खत्म हो जाएगा। आप महल वापस जा सकते हैं और मैं सोने जा सकता हूँ।"

सलाहकार की बातों पर राजकुमारी के नथुने गुस्से से फूल गए और उसके होंठों पर पलटवार करने की आग भड़क उठी, लेकिन आखिरी क्षण में वह उसे रोक नहीं पाई। अपने गुस्से को दबाते हुए, प्रलूपी ने अपने शॉल की सिलवटों को ठीक किया और अपने कंधे से बारिश की कुछ बूँदें झाड़ने के बाद वरारुचि की ओर देखा।

"मैं यहां आपकी मदद के लिए हूं।"

वररुची ने अपने चेहरे पर हैरानी का भाव नहीं आने दिया। "किस तरह से?"

"विक्रमा के विरुद्ध आपके संघर्ष में।"

इस बार वरारुची अपनी सौतेली बहन को घूरने से खुद को रोक नहीं पाया।

"आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं?" प्रालुपी ने पार्षद को घूरकर देखा।

वररुचि के होठों पर एक कड़वी मुस्कान आ गई। "प्रलूपी, तुमने मुझसे कभी शिष्टाचार से बात नहीं की। पिछले दस सालों में तो हमारी बातचीत लगभग न के बराबर ही हुई है। हम तो मानो जीवन भर एक-दूसरे के लिए अजनबी ही रहे हैं। मुझे समझ नहीं आता कि तुम अचानक मेरी मदद क्यों करना चाहती हो।"

क्योंकि तुम मेरे भाई हो।

"और विक्रम नहीं है?" वरारुचि ने राजकुमारी के चेहरे को गौर से देखा।

प्रलूपी ने नाक सिकोड़ी और हाथ हिलाकर सवाल को टाल दिया। "वह किसी देवता का पुत्र है। तुम्हारे और मेरे जैसा नहीं। हमारा पिता एक ही है। हम खून के

रिश्ते से जुड़े हैं।”

वररुची ने सपाट लहजे में कहा, "तुम्हारी और उसकी मां एक ही है।"

“हमारे पिता को किसने धोखा दिया?” प्रालुपी ने घृणा से कहा। “उसकी तो गिनती भी नहीं होती।”

बारिश थोड़ी तेज़ हो गई थी, टाइलों वाली छत पर उसकी बूँदें गूँज रही थीं। पार्षद चुप रहा, सोचता रहा कि यह बारिश कहाँ से आ रही है और इसका क्या अंजाम होगा। अपने पूरे किशोरावस्था के दौरान, इस स्त्री ने उसे महल के एक हिस्से से ज़्यादा कभी कुछ नहीं समझा, एक ऐसा व्यक्ति जो उसकी चेतना के हाशिये पर ही रहता था क्योंकि वह उसके पिता के लिए और बाद में, महेंद्रादित्य की मृत्यु के बाद, उसके छोटे भाई के लिए कुछ मायने रखता था। घटकरपारा के जन्म के बाद, जब वरारुचि अपने भतीजे को देखने कौशांबी गए थे, तो प्रलूपी उनका अभिवादन करने के लिए बाहर तक नहीं आई थी; राजा चंद्रवर्धन ही वरारुचि को नवजात शिशु से मिलने और आशीर्वाद देने के लिए ले गए थे।

“आप मेरी मदद किस तरह करने का इरादा रखते हैं?” उसने पूछा।

“मुझे खुशी है कि हम आखिरकार उन मुद्दों पर बात कर रहे हैं जो मायने रखते हैं,” प्रालुपी ने कहा। “जो व्यक्ति दिन भर के काम के बाद जल्दी में था, वह अनावश्यक बातचीत में बहुत समय बर्बाद कर रहा था।”

वररुची ने अपने हाथ बांध लिए और इंतजार करने लगा।

"ठीक है, मैं तुम्हारे लिए यह कर सकता हूँ कि तुम्हें विक्रम पर फेंकने के लिए और अधिक गंदगी दे दूँ।"

पार्षद ने कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा है।"

“तुम विक्रम को बदनाम करना चाहते हो। तुम उसे अपमानित करना चाहते हो, उसका नाम मिट्टी में मिलाना चाहते हो, सबको दिखाना चाहते हो कि वह अवंती का राजा बनने के लायक नहीं है। तुम उसे उस सिंहासन से हटाना चाहते हो ताकि तुम खुद उस पर कब्जा कर सको—”

वररुची ने बीच में ही कड़े स्वर में कहा, "मुझे सिंहासन नहीं चाहिए।"

“ठीक है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन तुम विक्रम को अपमानित करना चाहते हो। मैं तुम्हें उसे और अपमानित करने का मौका देता हूँ।”

"कैसे?"

"एक और सार्वजनिक घोटाले के ज़रिए।" पार्षद के चेहरे पर हैरानी देखकर प्रलूपी ने धूर्त मुस्कान दी। "मैं विक्रम की प्रतिष्ठा की एक और परत को हटाने में आपकी मदद करूँगी, जो उन्हें जनता की नज़रों में सम्माननीय बनाती है और उनकी अजेयता को और बढ़ाती है। मैं परिषद के कम से कम एक और सदस्य को उनके खिलाफ कर दूँगी। भाई, इस छोटे से खेल के लिए सारी तैयारी हो चुकी है और खेल बहुत जल्द शुरू होगा। हमें बस विक्रम के जाल में फँसने का इंतज़ार करना है।"

अपने कानों पर विश्वास न कर पाने के कारण, वरारुचि अपनी बहन को घूरता रहा, यह सोचकर हैरान था कि उसने कौन सी धूर्त योजना बनाई है, और उसकी आँखों और शब्दों में व्याप्त द्वेष से स्तब्ध था। वह इस घृणा को समझ नहीं पा रहा था—यह अचानक कहाँ से आ गई? विक्रमादित्य ने ऐसा क्या किया था कि इस द्वेषी स्त्री की नाराजगी मोल ले ली?

"आपने कहा कि विक्रमा अपने एक और सलाहकार को खो देगा। कौन?"

"मुझे खुशी है कि तुम्हें जो सुन रहे हो वो पसंद आ रहा है," राजकुमारी ने अपने भाई की ओर शरारती मुस्कान के साथ कहा। "लगता है तुम सारी जानकारी जानने के लिए उत्सुक हो। सही समय आने पर सब कुछ पता चल जाएगा। धैर्य रखो।" वह थोड़ी देर रुकी और गहरी सांस ली। "तुम्हें पता है कि इस मदद की एक कीमत चुकानी पड़ेगी।"

बिल्कुल।

"तुम कहते हो कि तुम्हें सिंहासन नहीं चाहिए..." प्रलूपी ने वररुचि को तिरछी निगाहों से देखा और मुस्कुराते हुए कहा कि उसे विश्वास नहीं हो रहा। "ठीक है... लेकिन विक्रम के राजा न रहने के बाद, चाहे कोई भी सिंहासन पर बैठे, मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे यह वादा करो कि इसके बदले में मैं विक्रम के साथ जो करने वाली हूँ, वह तुम करोगे।"

वररुची इंतजार कर रहा था, उसे पता नहीं था कि आगे क्या होगा।

मैं चाहता हूं कि तुम घटाकरपारा को वत्स का अगला राजा बनने में मदद करो।

पार्षद इतना अचंभित हो गया कि एक पल के लिए उसकी सांसें रुक गईं।

"मैं कैसे कर सकता हूँ-"

"अरे, छोड़ो भी," प्रलूपी ने झुंझलाहट में हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। "तुम भाई लोग बहुत सवाल पूछते हो। खुद से सोचते ही नहीं। क्या मुझे तुम्हें हर छोटी-छोटी

बात बतानी पड़ेगी? चंद्रवर्धन को मनाने के कई तरीके हैं। ये अवंती है, और तुम इसके राजा बनोगे। बस कर दो भाई। जैसा मैंने कहा, मैं तुमसे वादा करती हूँ कि तुम्हें एक ऐसा घोटाला देखने को मिलेगा जो तुम्हें बहुत पसंद आएगा।"

वररुचि ज़मीन की ओर टकटकी लगाए सब कुछ समझने की कोशिश कर रहा था। वत्स के उत्तराधिकार का इस सब में क्या लेना-देना था? प्रलूपी कब से अपने बेटे के लिए ये बेतुकी महत्वाकांक्षाएँ पाल रही थी? और क्या विक्रमादित्य को उसी माँग को ठुकराने का दंड भुगतना पड़ेगा जो प्रलूपी ने उसके सामने रखी थी?

"काफी देर हो चुकी है, और कल आपका दिन व्यस्त रहेगा," राजकुमारी अचानक अपनी सीट से उठते हुए बोलीं। "मैं आपसे संपर्क में रहूंगी।" सलाहकार के पास से गुजरते हुए दरवाजे की ओर बढ़ते हुए उन्होंने आगे कहा, "विक्रमा का अपमान होना तय है। भाई, आपको बस अपना वादा निभाना है।"

दरवाजा बंद हो गया, और वरारुचि ने प्रलूपी के कदमों की आहट सीढ़ियों से नीचे जाते हुए सुनी, जो धीरे-धीरे मिटती चली गई। उसके बाद छाई खामोशी में, उसके शब्द उसके दिमाग में गूंजते रहे।

मैं चाहता हूं कि तुम घटाकरपारा को वत्स का अगला राजा बनने में मदद करो।

विक्रम की बेइज्जती तो तय है। भाई, तुम्हें बस अपना वादा निभाना है।

***

घने कोहरे ने असुर सेना को घेर लिया जब वे गीले, खुले दलदली मैदान से गुज़र रहे थे। शुक्राचार्य और असुर आगे-आगे थे, महिष युद्ध में सबसे पीछे थे। उनके भारी, खुरदरे पैर चूनेदार कीचड़ को इस तरह से रौंद रहे थे कि उनके पीछे एक गहरी, उबड़-खाबड़ लकीर बन रही थी। बीच-बीच में ऊपर से बारिश की बूँदें सिर और कंधों पर गिर रही थीं, हालाँकि ऊपर जो कुछ भी था वह कोहरे में दिखाई नहीं दे रहा था। कदमों की धीमी आवाज़ के अलावा, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। कोहरा इतना घना हो गया था कि महिषों के भालों की नुकीली आकृतियाँ और लहराते हुए सींग ही दिखाई दे रहे थे, जो बहते हुए सफेद कोहरे में दरारों से निकलते और लहराते हुए दिख रहे थे।

"क्या हम कहीं पास हैं, महागुरु?" मुख्य पुजारी के बगल में स्तंभ के आगे चल रहे असुरों में से एक ने अपने सामने लगे मोटे पर्दे में झाँकते हुए पूछा।

“मुझे नहीं पता,” शुक्राचार्य ने उत्तर दिया, उनके भीतर चिड़चिड़ाहट की भावना उमड़ रही थी।

बॉर्डरवर्ल्ड की सपाट, एकरसता और समरूपता के कारण वह उसे हमेशा से नापसंद था। और कोहरा—जो किसी कारणवश, इस बार विशेष रूप से घना था—किसी के सही ठिकाने का पता लगाना और भी मुश्किल बना रहा था। इस जगह का रास्ता खोजने में किसी को अनंत काल लग सकता था। और इस समय, मुख्य पुजारी की समस्या इस तथ्य से और भी बढ़ गई थी कि उसके साथ दो सौ असुर और पंद्रह महिषों की सेना थी जो पहले ही पाताल में मर चुके थे। उसे नहीं पता था कि संजीवनी मंत्र का प्रभाव इस सेना पर कब तक रहेगा, इसलिए यदि वे जल्दी से बेताल के किले में प्रवेश करने का रास्ता नहीं खोजते, तो मंत्र की शक्ति क्षीण होने की प्रबल संभावना थी, और उसके पास भी मरे हुए असुर और महिष रह जाते, जिन्हें घूलमास्टर के पिशाच चुपचाप ठिकाने लगा देते।

और तमाम प्रयासों के बावजूद वीशादा का खंजर भी हाथ नहीं लगा।

उन्होंने उम्मीद से भरे लहजे में कहा, "हम ज्यादा दूर नहीं हो सकते।"

वे कुछ देर और चलते रहे, बारिश की तीव्रता बढ़ती जा रही थी, मानो उनकी प्रगति का संकेत दे रही हो। उसी समय, रुक-रुक कर हल्की हवा चलने लगी, जो कोहरे को अपने साथ आगे बढ़ा रही थी। ठंड से शुक्राचार्य कंपकंपा उठे, लेकिन वे हवा के लिए आभारी थे। अगर यह हवा काफी देर तक चलती रही, तो शायद कोहरा छंट जाए और उन्हें बेहतर दिखाई दे सके।

मुझे कुछ गंध आ रही है।

प्रधान पुरोहित ने आश्चर्य से बोलने वाले असुर की ओर मुड़कर पूछा, "क्या बात है?"

“मुझे नहीं पता, महागुरु... लेकिन कुछ तो है...” असुर ने उस रहस्यमयी गंध को खोजने के लिए सूंघा।

शुक्राचार्य ने अपना दंड ऊँचा उठाते हुए पुकारा, “पाँच गिनते ही सब रुक जाओ। एक... दो...” कोहरे में लड़खड़ाती हुई सेना के लिए आपस में टकराए बिना, गिरे बिना और अपने ही हथियारों से घायल हुए बिना रुकने का यही एकमात्र तरीका था।

जब पूरी सेना रुक गई, तो प्रधान पुरोहित ने असुर की ओर मुड़कर पूछा, "क्या अभी भी वह गंध आ रही है?"

पास खड़े सभी असुरों ने अपनी नाकें हवा में उठाकर सूंघना शुरू कर दिया।

"वह चला गया," पहले असुर ने निराश होकर कहा। "मुझे पूरा यकीन है कि मैं कल्पना नहीं कर रहा था—"

हवा का रुख बदलते ही एक और असुर ने उत्साह से इशारा करते हुए कहा, "यह रहा। मैं इसे ढूंढ रहा हूँ।"

तीसरे व्यक्ति ने कहा, "कुछ जल रहा है। जलता हुआ मांस।"

"आग।" शुक्राचार्य की आँखों में राहत की चमक आ गई। "अंतिम संस्कार की चिता।"

असुरों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। यह खबर तेजी से स्तंभ के सबसे पीछे तक फैल गई और हवा में एक धीमी, उत्सुक फुसफुसाहट गूंजने लगी।

"यह गंध कहाँ से आ रही है?" प्रधान पुजारी ने पूछा।

एक असुर ने अपनी उंगली चाटी और उसे हवा में लहराते हुए कहा, "उस तरफ," और स्तंभ के बाईं ओर, थोड़ा पीछे की ओर इशारा किया।

कुछ ही सेकंड में, पूरी सेना मुड़कर उस दिशा में दौड़ने लगी जहाँ असुर ने इशारा किया था। जहाँ कुछ देर पहले वे थके और निराश दिख रहे थे, वहीं अब असुर ऊर्जा और दृढ़ संकल्प से भरे हुए थे, इस विश्वास के साथ आगे बढ़ रहे थे कि उनकी खोज अब पूरी होने वाली है। और सचमुच, कोहरे के बीच से, एक-एक करके, बॉर्डरवर्ल्ड की चिताएँ दिखाई देने लगीं, नारंगी रंग की जलती हुई और दूर-दूर तक फैली पंक्तियों में व्यवस्थित।

शुक्राचार्य जुलूस के सबसे आगे थे, तभी अचानक, किसी जादूगर के करतब की तरह, कोहरा छंट गया और पूरा श्मशान घाट दिखाई देने लगा। और मैदान के बीचोंबीच से विशाल बरगद का वृक्ष खड़ा था, जिसका तना कई दर्जन गज मोटा था, और चिताओं के ऊपर फैली उसकी विशाल छतरी मानो आकाश के नीचे आकाश का साक्षात विस्तार कर रही थी।

वह बरगद का पेड़ जो अंतहीन चिताओं के मैदान को थामे हुए है।

बीटाल, जो कि पिशाचों का सरदार है, का निवास स्थान।

"वीशादा का खंजर उस पेड़ के अंदर कहीं है," मुख्य पुरोहित ने चिल्लाते हुए इशारा किया। "जैसे ही महिषा उस पेड़ को गिरा देंगे, हलाहल हमारा हो जाएगा।"

सभी असुरों ने एक साथ अपने हथियार उठाए और सन्नाटे में चीख मारी। अगले ही पल, वे एक उग्र धारा में तब्दील होकर बरगद के वृक्ष की ओर दौड़ पड़े, युद्ध महिषा सबसे आगे थे, उनकी विशाल कुल्हाड़ियाँ बॉर्डरवर्ल्ड के धड़कते दिल को नष्ट करने के लिए उठी हुई थीं।

निराशाओं

आग की रोशनी में तलवारें चमकती हुई चापों की तरह लग रही थीं, जो हवा को बड़े-बड़े गोल घेरों में काट रही थीं, जबकि आठ नर्तकियों का समूह ढोल की थाप पर उछल-कूद और चक्कर लगा रहा था। आग, नर्तकियों की नारंगी पोशाकें, उनके चेहरे पर हल्दी का रंग; सब कुछ एक साथ मिलकर एक प्रभावशाली दृश्य बना रहा था, वेताला भट्टा की दृष्टि में यह पीले-नारंगी रंग का एक धुंधला सा नजारा था, जो लय और गति का एक बढ़ता हुआ प्रवाह था।

ढोल की थाप थम गई और धीरे-धीरे सन्नाटा छा गया। नर्तक एक-दूसरे से अलग हो गए और बाघों की तरह फुर्ती से अलाव से दूर हट गए, तलवारें खींची हुई थीं और ढालें ठुड्डी पर टिकी हुई थीं। एक बांसुरी बजने लगी, जो उत्साह से भरी हुई थी, और नर्तक आग के चारों ओर दबे पांव चलने लगे, एक-दूसरे को ध्यान से देखते हुए। फिर, आचार्य को पता भी नहीं चला कि ढोल पूरी ताकत से बजने लगे और नर्तक एक-दूसरे पर टूट पड़े। ढालें ज़ोरदार आवाज़ के साथ टकराईं, तलवारें इतनी ज़ोर से टकराईं कि चिंगारियां उड़ने लगीं। और अचानक चारों ओर आग लग गई, क्योंकि बाज़ीगरों का एक समूह आपस में लड़ रहे नर्तकों के बीच फुर्ती से घूम रहा

था, तलवारों से बचते हुए और कुशलता से आग की लपटों को उछालते और पकड़ते हुए।

आग और शराब का मिश्रण हुआ और उत्सव का माहौल उत्तरा तोसाली में फैल गया, जिससे पूरा शहर सफल फसल की खुशी में जगमगा उठा। हर जगह उल्लास का माहौल था, सिवाय उस एक मेज के जो बाकी दावतों से अलग रखी गई थी—वह औपचारिक मेज जहाँ वेताल भट्ट और कुलाधिपति सुदासन, रानी अभिरामी और राजा वीरयंका के साथ बैठे थे। वे सब नर्तकों, बाज़ीगरों और कवियों का आनंद लेने का दिखावा कर रहे थे, जबकि उनका ध्यान कहीं और ही था।

रानी के इशारे पर मेज के चारों ओर एक भारी पर्दा खींच दिया गया, जिससे दृश्य अवरुद्ध हो गया और शोर बंद हो गया, मानो मेज को बाकी सब चीजों से अलग कर दिया गया हो—और बाहर के आनंदमय उत्सव को राजनीति की गंदी वास्तविकताओं से अलग कर दिया गया हो, राजगुरु ने मन ही मन सोचा जैसे ही वह अपनी सीट पर सीधा बैठा। रानी ने सेवकों द्वारा सोमा के प्याले फिर से भरने का इंतजार किया, और जब वे केवल चार ही रह गए, तभी उन्होंने बोलना शुरू किया।

"मुझे यह समझने दीजिए," उसने सुदासन से आचार्य की ओर देखते हुए कहा, फिर कुलपति की ओर मुड़ गई। "मगध के शूरसेना ने वंगा गणराज्य पर आक्रमण किया है और वंगा की महान सभा के कई सदस्यों को मार डाला है।"

"सत्रह सदस्य, हे महारानी, जिनमें हमारी चार रियासतों के प्रमुख भी शामिल हैं," सुदासन ने कहा।

"जी," अभिरामी ने कहा, और उसके जबड़े के कसने से वेताला भट्टा समझ गए कि उसे यह व्यवधान पसंद नहीं आया। आचार्य ने अनुमान लगाया कि वह चालीस वर्ष की आयु के आसपास की एक गरिमामयी महिला थी, उसके बालों में हल्के भूरे बाल थे, और उसकी भूरी आँखों के आसपास की झुर्रियों में उसकी उम्र झलक रही थी। यदि उसका गंभीर और भावहीन व्यवहार न होता, तो वह देखने में बेहद आकर्षक होती।

"और शूरासेना के आदमी बाकी सरदारों की तलाश कर रहे हैं, इसीलिए आप हमारे दरबार में हैं।" रानी ने बगल में बैठे अपने भाई की ओर एक नज़र डाली। "सही कहा ना?"

"बिल्कुल, मेरी महारानी," चांसलर ने कहा।

“और आप, राजगुरु... यहाँ इसलिए हैं क्योंकि मगध ने वंगा की लौह खानों पर कब्जा कर लिया है और अब ताम्रलिप्ति बंदरगाह पर भी उसका नियंत्रण है।”

"जी हां, अच्छी रानी।"

“आपके यहाँ लोहे की कमी है, इसलिए आपके राजा चाहेंगे कि हम अपनी खानों से लोहा आपके साथ साझा करें—”

“व्यापार करो, महारानी जी। हिस्सा मत लो।” आचार्य को पता था कि यह हस्तक्षेप अप्रिय होगा, लेकिन यह अंतर स्पष्ट करना महत्वपूर्ण था।

“व्यापार, हाँ। लेकिन इसका मतलब इसे मुफ्त में देना ही होगा,” अभिरामी ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

"बदले में आप जो भी मूल्यवान वस्तु चाहें," वेतला भट्टा मुस्कुराईं, उम्मीद करते हुए कि उनकी मुस्कान अत्यधिक उत्सुक या उत्साहित न लगे।

“लेकिन हमें कुछ चाहिए ही नहीं।” अभिरामी ने फिर वीरयंका की ओर मुड़कर पूछा, “है क्या?”

राजा ने कंधे उचकाए और सिर हिलाया। आचार्य को पता चल गया था कि वह अपनी बहन से कुछ साल छोटा था। दोनों की नाक लंबी, माथा चौड़ा और गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। वीरयंका की घनी, सलीके से संवारी हुई काली दाढ़ी भी थी।

रानी ने कहा, "आप यह भी चाहेंगे कि हम व्यापार के लिए अपने बंदरगाह आपके लिए खोल दें।"

"अवंती को, और आपकी अनुमति से, सिंधुवर्त के शेष राज्यों को भी।"

अभिरामी ने शराब का एक घूंट पीकर अपने होंठ गीले किए और कुछ पल के लिए मेज पर कोहनी टिकाकर, उंगलियां जोड़कर बैठी रही। ढोल बजना बंद हो गया था, लेकिन उल्लास की आवाज़ें हल्की फुसफुसाहट के रूप में आ रही थीं, जिनके बीच-बीच में ठहाकों की गूंज सुनाई दे रही थी।

“राजगुरु, आपकी इच्छा को लेकर कोई भ्रम नहीं है,” उसने अंत में कहा। “पर आप...” उसने चिंता भरी भौंहों के साथ सुदासन की ओर मुड़ते हुए कहा। “आप हमसे क्या चाहते हैं? मेरा मतलब... क्या आप सैन्य सहायता चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं कि हम मगध को पराजित करके वंगा को पुनः प्राप्त करने में आपकी मदद करें? आप वास्तव में क्या चाहते हैं?”

कुलाधिपति ने वेताला भट्टा की ओर देखा और अपने होंठ चाटे। "सच कहूँ तो, महारानी जी, हम तो बस राजनीतिक शरण की तलाश में थे। जब हमने आपके बंदरगाह पर अपने जहाज़ खड़े किए थे, तब हमारी बस यही इच्छा थी।" सुदासन रुका और अभिरामी से वीरयंका की ओर नई आशा के साथ देखा। "लेकिन अगर आप शूरसेना के विरुद्ध सैन्य अभियान का समर्थन करने और सत्ता से बेदखल करने को तैयार हैं—"

"और हम ऐसा क्यों करेंगे?" अभिरामी ने चांसलर की ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे... पता नहीं..." सुदासन चौंककर बुदबुदाया। "आपने... अभी-अभी तो यही कहा था..."

आचार्य को हताशा में अपना सिर पीटने का मन कर रहा था। कुलाधिपति अपने लिए ही सब कुछ बर्बाद कर रहा था, और अगर उसने सावधानी नहीं बरती तो वह सिंधुवर्त में बाकी सभी के लिए भी सब कुछ बर्बाद कर देगा।

रानी ने तीखे लहजे में कहा, "हमने ऐसा नहीं कहा। मैंने तो सिर्फ पूछा था।"

"जी हाँ... महारानी जी, जी हाँ।" सुदासन ने खुद को शांत करने के लिए सोमा का एक घूंट लिया। "जी हाँ... शरण ठीक है। बिलकुल ठीक है। अगर आप हमें यह अनुमति दे दें तो—"

और हम ऐसा क्यों करेंगे?

कुलाधिपति ने अभिरामी की ओर पलकें झपकाईं, फिर वीरयंका और राजगुरु को निहारते हुए देखा, मानो कुछ समझ ही न पा रहे हों। अंत में उन्होंने कहा, "वंगा के प्रमुख और मैं, रानी और राजा, बहुत आशा के साथ यहाँ आए हैं। कृपया हमें वापस न भेजें।"

"अगर हम आपको शरण देते हैं, तो शूरासेना की नाराज़गी तो निश्चित ही होगी," अभिरामी ने कहा। "हम ऐसा क्यों चाहेंगे? मगध ने हमारा कोई नुकसान नहीं किया है, तो हम उसके रास्ते में क्यों पड़ना चाहेंगे? हम ऐसे विवाद में क्यों पड़ें जिसका हमसे कोई लेना-देना नहीं है?" उसने अपने भाई की ओर देखा, जिसने सहमति में सिर हिलाया।

"यही बात आप पर भी लागू होती है," उसने वेताला भट्टा की ओर मुड़ते हुए कहा। "जब हम आपको लोहा मुहैया कराते हैं और आपके लिए नए व्यापार मार्ग खोलते

हैं, तो हम मगध के विरुद्ध आपका साथ दे रहे होते हैं। क्यों? जब यह मामला हमसे संबंधित ही नहीं है, तो हमें किसी का पक्ष क्यों लेना चाहिए?”

"कई बार, सही का साथ देना ज़रूरी होता है, भले ही इसमें व्यक्तिगत रूप से कुछ भी दांव पर न लगा हो," वेताला भट्टा ने धीमी आवाज़ में कहा। "कभी-कभी, किसी का पक्ष न लेना ही सबसे बड़ी गलती साबित हो सकती है।"

“राजगुरु सही कह रहे हैं,” सुदासन ने गंभीरता से आगे झुकते हुए कहा, मानो एक पल के लिए शिष्टाचार भूल गए हों। “हम वांगा में सिंधुवर्त से जुड़े मामलों में कभी किसी का पक्ष नहीं लेते थे। हमारा मानना था कि जब तक हम सबको अकेला छोड़ देंगे, सब हमें अकेला छोड़ देंगे। देखो, इसका क्या अंजाम हुआ है वांगा का, रानी जी। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप वही गलती न दोहराएँ।”

अभिरामी और वीरयंका ने एक-दूसरे को गंभीर निगाहों से देखा।

“इसके अलावा, हमारी या यहां के माननीय कुलपति की सहायता न करके, क्या आप पहले से ही एक पक्ष का साथ नहीं दे रहे हैं?” राजगुरु ने पूछा।

वीरयंका ने पहली बार बोलते हुए कहा, "हम सीधे तौर पर युद्ध के पीछे नहीं भागते," लेकिन उन्होंने सवाल को पूरी तरह से टाल दिया।

वेताला भट्ट ने राजा की ओर देखकर हल्की सी मुस्कान दी। “युद्ध कोई शिकार नहीं है जिसे कोई भी अपनी मर्जी से पकड़ सके। युद्ध एक शिकारी है जो अपनी इच्छा से हमारा शिकार करता है।”

भाई-बहन ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा। आचार्य सोचने लगे कि उनके मन में क्या चल रहा है, मदद करने में इतनी हिचकिचाहट क्यों है। काश उनके पास उनका भाला होता और कुछ एकांत होता ताकि वे उनके विचारों को समझ सकें और यह पता लगा सकें कि उनके भीतर क्या छिपा है और कौन सी चाबी घुमानी है। उन्होंने फैसला किया कि उनके पास इसके लिए न तो समय है और न ही धैर्य।

“मैंने देखा कि तुम तलवारों के साथ अपना खूबसूरत नृत्य करती हो,” उसने पर्दे की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या तुम इन हथियारों का इस्तेमाल सिर्फ इसी काम के लिए करोगी?”

“मेरी राय में, हमने अपनी बात काफी स्पष्ट कर दी है,” अभिरामी ने ठंडे लहजे में कहा, अपना प्याला एक तरफ धकेलते हुए और अचानक उठते हुए। वीरयंका भी

खड़ा हो गया, और राजगुरु यह देखकर प्रसन्न हुए कि दाढ़ी के नीचे उसका चेहरा अचानक लाल हो गया था। यहाँ आग पूरी तरह बुझी नहीं थी। आशा बाकी थी।

अभिरामी आचार्य को घूरती रही। "शुभ रात्रि। मुझे लगता है कि हम सुबह आपसे नहीं मिलेंगे।"

"आपकी अनुमति से, मैं शायद बहुत जल्दी निकल जाऊंगा," वेताला भट्टा ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

अभिरामी मुँह फेर रही थी तभी सुदासन ने काँपती हुई आवाज़ में उससे पूछा, "मेरा और वांगा के बचे हुए सरदारों का क्या होगा?"

"आप यहां एक सप्ताह तक रह सकते हैं।" रानी ने चांसलर की ओर देखा। "आपको राशन का स्टॉक करने और अपने जहाजों को दोबारा रवाना होने के लिए तैयार करने में इतना ही समय लगेगा।"

***

युद्ध महिषाओं की शक्ति से प्रेरित होकर, कुल्हाड़ियाँ वृक्ष में गहराई तक धंस गईं, हर जोरदार प्रहार के साथ लकड़ी और छाल के मोटे टुकड़े निकालती गईं। कुल्हाड़ियाँ बार-बार गिरती रहीं, और हर वार पर बेताल को वृक्ष हिलता हुआ महसूस हुआ, हालाँकि वह जानता था कि यह केवल उसका वहम था। लेकिन वृक्ष की रक्षा करने की कोशिश कर रहे और बुरी तरह असफल हो रहे पिशाचों की चीखों में कुछ भी काल्पनिक नहीं था। पिशाचों ने असुर सेना पर हमला किया, लेकिन उनके भालों से ही मारे गए, और बरगद के चारों ओर की ज़मीन उनके पतले और चीरे हुए शरीरों से तेज़ी से भरती जा रही थी, जिनमें से कुछ मांस और हड्डियाँ थीं, और कुछ निराकार आत्मा।

बेताल ने सेवक पिशाच का हाथ छोड़ दिया और अपनी आँखें खोलीं, जिससे खोखले स्थानों में लाल रोशनी के बिंदु फिर से दिखाई देने लगे। उसने बाहर, चिताओं के मैदान में जो कुछ हो रहा था, उसे इतना देख लिया था कि वह असुर सेना के खतरे को पहचान सके। और इस सेना के इरादे के बारे में उसके सारे संदेह उस क्षण दूर हो गए जब उसने देखा कि असुर सेना का नेतृत्व कौन कर रहा है।

Guru Shukracharya, the asura high priest himself.

बेताल ने कटार पर नज़र डाली। वह उसकी हथेली में आसानी से समा जाती थी और उसका वज़न न के बराबर था। ओब्सीडियन से बनी मूठ वाला एक साधारण सा हथियार, जो देखने में इतना साधारण और महत्वहीन था कि उस पर किसी का ध्यान भी नहीं जाना चाहिए था। फिर भी, बेताल को महसूस हो रहा था कि असुरों के हमले के परिणामों पर विचार करते हुए, कटार का बोझ उस पर और बॉर्डरवर्ल्ड पर कितना गहरा है।

"घोलमास्टर, यह पेड़ महिषाओं की कुल्हाड़ियों का ज्यादा देर तक सामना नहीं कर पाएगा," सेवक घोल ने कहा। "महिषाओं की संख्या एक दर्जन से अधिक है।"

"असुरों की सेना कितनी बड़ी है?" बेताल ने पूछा।

"लगभग दो सौ। हम उनकी ताकत और उनकी तलवारों का मुकाबला नहीं कर सकते। हम उन्हें ज्यादा देर तक रोक नहीं सकते।"

बीटाल ने सिर हिलाया, उसके जलते बालों से आग की लपटें निकलकर ज़मीन पर गिर पड़ीं। ये पिशाच न तो स्वभाव से योद्धा थे और न ही प्रशिक्षण से। और यहाँ कभी भी पहरेदारों की ज़रूरत नहीं पड़ी थी; बॉर्डरवर्ल्ड में कभी भी ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसकी रक्षा करने या जिसे चुराने लायक समझा जाए। अब तक।

"क्या हम उन्हें वह नहीं दे सकते जिसके लिए वे यहां आए हैं?" दूसरे पिशाच ने कहा।

बेताल ने कटार पर अपनी उंगलियां कस लीं। "बिना वादा तोड़े नहीं।"

"तो फिर हम पेड़ को कैसे बचाएंगे, घूलमास्टर?" पहले घूल ने घबराते हुए पूछा। "हमें क्या करना चाहिए?"

करने को केवल एक काम था।

"अभी मुझे अकेला छोड़ दो। लेकिन मुझे जानकारी देते रहना।"

जब बेताल अकेला था, तो उसने अपनी मुट्ठी खोली और कटार पर नज़र डाली। अब जब असुर उसके दरवाज़े पर आ चुके थे, तो उसे उनका आना, उनकी बेरहमी, कटार पाने के लालच में किसी भी हद तक जाना, सब कुछ साफ़-साफ़ याद था। यही सीमावर्ती दुनिया थी, हर चीज़ का भविष्य, जहाँ सब कुछ पहले ही घटित हो चुका था। बस, हमेशा की तरह, उसे नहीं पता था कि इसके बाद क्या होगा; क्या असुर जीतेंगे, क्या वह पेड़ को बचा पाएगा, क्या वह मानव राजा से किया वादा निभा

पाएगा। घटनाएँ घटित होने के बाद उसे याद आ जाएगा। लेकिन तब तक शायद बहुत देर हो चुकी होगी।

बेताल ने कटार को अपनी धंसी हुई आँखों के सामने उठाया और उसकी चिकनी, स्याही जैसी काली मूठ को देखा। वह उसके अपारदर्शी केंद्र से प्रकाश निकलने का इंतज़ार कर रहा था। और प्रकाश निकला भी, एक मोहक, घूमता हुआ इंद्रधनुषी रंग, नीले रंग पर सोने और चांदी के छोटे-छोटे बिंदु बिखरे हुए थे।

विनाश का प्रकाश।

करने को केवल एक काम था।

अपनी आंखें बंद करके, घोलमास्टर ने अपना कंकालनुमा चेहरा ऊपर उठाया और फुसफुसाने लगा।

हे बुद्धिमान राजा... सीमावर्ती जगत खतरे में है... कटार खतरे में है... मुझे डर है कि मैं अपना वादा पूरा नहीं कर पाऊंगा... और मुझे डर है कि मेरी इस विफलता में, आप भी सर्वज्ञ ईश्वर से किया अपना वादा पूरा नहीं कर पाएंगे... मेरे पास आइए, हे बुद्धिमान राजा... आइए और कटार वापस ले जाइए... मुझे इसके दायित्व से मुक्त कीजिए, क्योंकि मैं इसे और नहीं रख सकता... आइए, ताकि सीमावर्ती जगत बच सके... आइए, ताकि हलाहला बच सके... क्या आप मुझे सुन रहे हैं, राजा?... आइए... आइए...

बेताल रुककर सुनने लगा, उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया। फिर उसने दोबारा फुसफुसाते हुए अपनी विनती दोहराई और विक्रमादित्य को पुकारा। विक्रमादित्य ने फिर ध्यान से सुना, इस बार अधिक देर तक।

अंततः, उसने व्यर्थ ही अपना सिर हिलाते हुए अपनी आँखें खोलीं।

मानव राजा सुन नहीं रहा था। मानव राजा सो नहीं रहा था।

बेताल ने चिंता भरी आह भरते हुए कटार की ओर देखा। अगर राजा जल्दी नहीं सोए, तो वह उन तक नहीं पहुँच पाएगा और हलाहल पर मंडरा रहे खतरे के बारे में उन्हें चेतावनी नहीं दे पाएगा।

और वह पेड़ और बॉर्डरवर्ल्ड को बचाने में सक्षम नहीं होगा।

***

विक्रमदित्य ने घुटनों तक ढके हल्के कंबल को एक झटके से हटाते हुए आह भरी और बिस्तर पर उठकर बैठ गए। वे अपने शयनकक्ष के अर्ध-अंधेरे में घूर रहे थे। उन्होंने पलकें झपकाईं और थकान महसूस करते हुए अपनी हथेलियों से अपनी आँखें छुपीं, लेकिन उन्हें नींद नहीं आ रही थी। वे करवटें बदलते हुए लेटे रहे, उनका मन विचारों के भंवर में फंसा हुआ था, उनकी निरंतर बकबक उन्हें जगाए रख रही थी। थका हुआ और निराश होकर, उन्होंने अब अपने पैर बिस्तर से नीचे लटका दिए, यह नहीं जानते हुए कि आगे क्या करें। एक हल्की शॉल उठाकर अपने कंधों पर लपेटकर वे बगल की बालकनी में चले गए, जहाँ एक ताज़ी हवा ने उन्हें अपने आलिंगन में ले लिया और उनके बालों से खेलने लगी।

रात ढल चुकी थी और महल में सन्नाटा पसरा हुआ था, केवल पहरेदार ही अपने-अपने काम में लगे हुए थे। झील के उस पार उज्जैन भी शांत थी, सम्राट की निगाहों के सामने ही उसकी बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं। रात के पक्षियों की चहचहाहट और हूटिंग भी सुनाई नहीं दे रही थी, और पश्चिम क्षितिज पर चमकती बिजली की गड़गड़ाहट भी गायब थी। विक्रमादित्य ने गहरी साँस लेते हुए मन ही मन सोचा कि उनके दिमाग को छोड़कर हर जगह सन्नाटा छाया हुआ है, और वे चाहते थे कि हवा उनके मन से उन सभी बातों को मिटा दे जो उन्हें सोने नहीं दे रही थीं।

झील के ऊपर से एक पक्षी का तेज़ी से उड़ना, मानो किसी शिकार की तलाश में मंडराती परछाई, राजा को उनके विचारों से बाहर ले आया। उन्होंने पक्षी के उड़ने के रास्ते का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन वह पहले ही अंधेरे में खो चुका था। झील की ओर देखते हुए और उसकी सतह पर उठती शांत लहरों की कल्पना करते हुए, विक्रमादित्य का मन उस मृत शरीर की ओर लौट गया जो कहीं झील की गहराई में पड़ा था। विस्मया ने ही देवी ओरेकल का संदेश परिषद को दिया था, और उन्होंने महल के प्रत्येक सदस्य की कुशलतापूर्वक गिनती भी की थी, जिसमें पहरेदार और महल के कर्मचारी भी शामिल थे। कोई भी लापता या गुमशुदा नहीं पाया गया था, जिससे झील में पड़े शव का रहस्य और भी गहरा गया था।

सम्राट सोच ही रहे थे कि आने वाली तलाशी में क्या चौंकाने वाली बात सामने आएगी, तभी उन्होंने अपने शयनकक्ष का दरवाजा धीरे से खुलते सुना। किसी सहज प्रवृत्ति से सतर्क होकर राजा सतर्क हो गए और एक कदम पीछे हटकर पर्दे की

आड़ में छिप गए। फिर उन्होंने सावधानी से कमरे में झाँका और अंधेरे में घुसपैठिए को ढूँढ़ने लगे।

घुसपैठिए को ढूंढने की कोई जरूरत नहीं थी।

शयनकक्ष का दरवाजा पूरी तरह खुला हुआ था और दीर्घा से रोशनी अंदर आ रही थी। सोने के उस आयताकार फ्रेम में एक स्त्री की पतली आकृति उभर रही थी, दीपक की रोशनी उसके एक नंगे कंधे पर धीरे से पड़ रही थी और उसकी एक बाली चमक रही थी। विक्रमादित्य ने हैरानी से भौंहें चढ़ाईं, तभी चंपा की मादक खुशबू कमरे में फैल गई और धीरे-धीरे बालकनी तक आ गई।

"मेरे राजा?" उस स्त्री ने मधुर गीत गाती चिड़िया की आवाज में पुकारा।

“कौन है?” विक्रमादित्य ने पूछा। उसने वह आवाज़ पहले भी सुनी थी, लेकिन उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था कि किसकी है।

“मिथ्यामयी, महाराज। राजकुमारी प्रलूपी की दासी।”

अब उसे वह आवाज याद आ गई। सम्राट शयनकक्ष में दाखिल हुआ। "क्या बात है?"

नौकरानी भी कमरे में दाखिल हुई, उसके पायल की मधुर झंकार सुनाई दी। “राजकुमारी आपसे मिलना चाहती हैं, महाराज। अपने कक्ष में।”

“रात के इस समय?”

"जी हां, माननीय।"

“सच में?” विक्रमादित्य ने उस आकृति को ध्यान से देखा, उसे बेहतर ढंग से देखने की कोशिश कर रहा था। अगर वह दीपक जला लेता तो शायद मदद मिलती, लेकिन उसके पैर मानो एक ही जगह पर जकड़े हुए थे। उसकी आँखें भी उस सुडौल आकृति से हटने को तैयार नहीं थीं, मानो उसे डर हो कि जब तक वे वापस देखेंगी, वह जा चुकी होगी। “क्या बात है?”

“राजकुमारी ने कुछ नहीं कहा, महाराज।” दासी के हाथ नर्तकी की तरह सुंदर थे, और राजा मंत्रमुग्ध होकर उसे देखते रहे। “उन्होंने बस इतना कहा कि यह एक महत्वपूर्ण मामला है।”

चंपा के फूलों की सुगंध से विक्रमादित्य को चक्कर आने लगा था। वह फंसा हुआ महसूस कर रहा था। वह सोच नहीं पा रहा था। "उसे बता देना कि मैं उससे थोड़ी देर में मिलूंगा," उसने हांफते हुए कहा।

नौकरानी मुड़कर कमरे से चली गई, और सम्राट को गहरे गम का एहसास हुआ। शयनकक्ष की परछाइयाँ उसके चारों ओर मंडराने लगीं, और उसके हृदय पर गहरा बोझ सा आ गया। उसे किसी के आलिंगन और सांत्वना की तीव्र आवश्यकता महसूस हुई। यहाँ तक कि बाहर दीर्घा की रोशनी भी कुछ फीकी सी लगने लगी, मानो शोक के कारण उसकी चमक फीकी पड़ गई हो।

निराशा के बादल को दूर भगाने के लिए सिर हिलाते हुए विक्रमादित्य एक छोटे से फव्वारे के पास गए और ठंडे पानी से अपना चेहरा धोया। तौलिये से खुद को सुखाते हुए, उनका ध्यान प्रलूपी की अचानक और बेताब मुलाकात की मांग पर गया, उन्हें पूरा यकीन था कि इसका संबंध घटकर्परा और वत्स के सिंहासन से है। उन्होंने सोचा कि बुलावा अनसुना करना और प्रलूपी की नाराज़गी का सामना सुबह करना बेहतर होता, लेकिन उस समय, जब दासी मंद रोशनी में खड़ी थी, सोचना भी मुश्किल लग रहा था। और अब बहुत देर हो चुकी थी, सिवाय अपनी बहन से मिलने जाने के।

जब वह प्रलूपी के घर के दरवाजे पर पहुंचा, तो दरवाजा बंद था। राजा ने दो बार दरवाजा खटखटाया, फिर उसे धक्का देकर खोला और प्रतीक्षालय में प्रवेश किया।

"बहन, तुम मुझसे मिलना चाहती थी?" उसने पुकारा।

कोई जवाब नहीं मिला। बाईं ओर का दरवाजा खोलकर सम्राट ने सजी-धजी बालकनी में प्रवेश किया, जो श्रीविजया से लाए गए तीन कपड़े के लालटेन से जगमगा रही थी। वे छोटे से तालाब की ओर जाने वाले पत्थर के रास्ते पर चलते रहे, झरने की मधुर ध्वनि सुनते हुए और यह उम्मीद करते हुए कि प्रलूपी किसी पत्थर की बेंच या सागौन के झूले पर बैठी होगी। लेकिन ऊपर पिंजरों में बंद पक्षियों के अलावा बालकनी खाली थी।

"बहन?" उसने एक बार फिर यह सुनिश्चित करने के लिए पुकारा।

कुछ नहीं।

विक्रमादित्य को लगा कि प्रलूपी अपने शयनकक्ष में है—शायद सो रही होगी, उनके मन में आशा और राहत दोनों उमड़ रही थीं—वे वापस मुड़ने ही वाले थे कि उन्हें चंपक की खुशबू आई। उसी क्षण, पायल की झंकार उनके कानों में पड़ी और राजा समझ गए कि दासी प्रकट हो गई है।

सम्राट मुड़े और एक पल के लिए उर्वशी के दर्शन से चकित रह गए। अप्सरा बालकनियों में, प्रवेश कक्ष की ओर आधे रास्ते पर, लालटेन की रोशनी में नहा रही

थीं, एक हाथ कमर पर और दूसरा हाथ आराम से बगल में लटका हुआ था। उनके बालों में चंपक के फूल लगे थे और आँखों में काजल लगा था—उनकी आँखें शर्म और निर्भीक इच्छा के मिश्रण से राजा को परख रही थीं, उन्हें चुनौती दे रही थीं और उनकी नसों में रक्त की गति तेज कर रही थीं।

"राजकुमारी कहाँ है?" उसने पूछा, शब्द उसके होंठों पर मुश्किल से उभर पा रहे थे।

"वह यहाँ नहीं है, मेरे राजा।"

अब उन आकर्षक होठों पर एक शरारती मुस्कान थी। विक्रमादित्य को लगा कि नौकरानी पूरी तरह गायब हो गई है। अब जो बचा था, वह एक रहस्यमयी महिला थी।

मुझे लगा कि वह मुझसे मिलना चाहती है।

"उसने नहीं किया। मैंने किया।"

अप्सरा सम्राट की ओर बढ़ी, कोमल प्रकाश ने उसके कूल्हों के हिलने-डुलने को और भी तीव्र कर दिया, जिससे उसके स्तनों और पेट की सुडौल रेखाओं पर छाया पड़ रही थी। जब वह सम्राट से एक हाथ की दूरी पर पहुँची, तो वह रुक गई, उसका सिर थोड़ा झुका हुआ था, ठुड्डी ऊपर उठी हुई थी, और गर्दन कामुकता से झुकी हुई थी।

"क्या मेरी बहन को इसके बारे में पता है?" विक्रमादित्य ने आंखें सिकोड़ते हुए पूछा।

उर्वशी ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उनके बीच की दूरी कम करते हुए, उन्होंने विक्रमादित्य के चेहरे की ओर हाथ बढ़ाया और अपनी उंगली से उनकी दाढ़ी की रूपरेखा को हल्के से छुआ। "क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?" उन्होंने पलकें झपकाते हुए पूछा। वातावरण चंपक की सुगंध से भरा हुआ था।

"तुम कौन हो?" राजा ने पीछे हटते हुए पूछा।

उर्वशी मुस्कुराई और तुरंत फिर से दूरी कम कर ली। "महाराज, आप मुझे जो चाहें बना लें," उसने फुसफुसाते हुए सम्राट के गले में अपनी बाहें डाल दीं और उन्हें अपने करीब खींच लिया। उसने खुद को उनसे सटा लिया, उसकी कोमलता स्पर्श के लिए तरस रही थी, उसकी सांसें विक्रमादित्य के होठों पर शहद की तरह लग रही थीं। "मैं आपकी हर इच्छा पूरी कर सकती हूँ।"

राजा और अप्सरा के चारों ओर रात थम सी गई, मानो सब कुछ ठहर सा गया हो, जब उर्वशी वासना से भरी हुई राजा के शरीर में विलीन हो गई और उसके होंठ राजा के होंठों को छू गए।

"मुझे वह प्यार बनने दो जिसकी तुम्हें चाहत है," उसने आह भरते हुए अपने दिल की भावनाओं को शब्दों में उड़ेल दिया।

सम्राट ने अप्सरा की कलाई पकड़कर धीरे से अपना हाथ उससे छुड़ाया। उन्होंने कहा, "यह संभव नहीं है।"

“क्यों?” उर्वशी ने हिरनी जैसी आँखों से राजा की ओर देखा, उसका हाथ तेज़ी से विक्रमादित्य के हाथ में चला गया और उसकी उंगलियाँ उससे गुंथ गईं। “चलिए मैं आपको दिखाती हूँ,” उसने मोहक मुस्कान के साथ कहा और उसे झूले की ओर खींच लिया। “आइए।”

“नहीं।” सम्राट ने विरोध किया। “मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ चलो।”

उर्वशी ने अपने होंठ दबाए, उसकी आँखों में उत्साह की झलक थी। "मुझे जहाँ चाहो ले जाओ, मेरे महाराज," उसने शरारती हंसी हंसते हुए कहा।

विक्रमादित्य बालकनी से बाहर निकले, अप्सरा उनके पीछे-पीछे चल रही थी। वे दो गलियारे पार करके दो सीढ़ियाँ उतरकर एक दरवाजे पर पहुँचे। सम्राट ने हल्के से दस्तक दी, और दरवाजा थोड़ा सा खुला, जिससे एक दासी का नींद में डूबा चेहरा दिखाई दिया।

"महामहिम," नौकरानी ने झुककर कहा और दरवाजा खोल दिया।

अंदर कदम रखते हुए राजा ने उर्वशी को इशारा किया, "आओ।"

उर्वशी ने स्वयं को एक शयनकक्ष में पाया। कमरे में एक अकेला दीपक जल रहा था, और उसकी रोशनी में उसने लेस के पर्दों से ढका एक बड़ा पलंग देखा। उस पर एक पीली और दुबली-पतली स्त्री लेटी हुई थी, जो अपने सामने खाली निगाहों से घूर रही थी। एक वृद्ध महिला जल्दी से उठी और सम्राट को मौन प्रणाम किया।

विक्रमादित्य ने महिला कर्मचारी और नौकरानी से कहा, "मैं अकेला रहना चाहता हूँ।"

वह बिस्तर के पास जाने से पहले दरवाजे के पूरी तरह बंद होने का इंतजार करता रहा। उर्वशी पीछे हट गई, अचानक उसका खुद पर से नियंत्रण खत्म हो गया, उसे खुद पर भरोसा नहीं रहा।

"आओ," सम्राट ने फिर से विनम्रतापूर्वक इशारा किया।

अप्सरा पलंग के पास गई और उस स्त्री को नीचे देखा, जिसने उन दोनों में से किसी को भी न देखा हो। वह सुंदर तो थी, लेकिन उसकी त्वचा पर मृत्यु का साया था, और उसकी निगाहें मानो किसी गहरी खाई में, किसी गहरे भूमिगत तहखाने की गहराई में देख रही हों। उर्वशी अनजाने में ही कांप उठी।

"यह विशाखा है, अवंती की रानी, मेरे जीवन का प्रकाश," विक्रमादित्य ने कहा। "पिछले दो वर्षों से, जब से वह घोड़े से गिरी है, तब से उसकी यही हालत है। वह बस यहीं लेटी रहती है और घूरती रहती है। मुझे नहीं पता कि वह क्या सोच रही है, उसके मन में क्या चल रहा है—अगर वह इस स्थिति में देख और सोच भी सकती है तो।" राजा रानी को देखने के लिए रुके, और उस मौन क्षण में, अप्सरा ने विक्रमादित्य के संयम के भीतर छिपे दर्द को महसूस किया। "कुछ समय के लिए वह ठीक हो गई थी, लेकिन फिर से गिर गई और वैसी ही हो गई जैसी आप उसे अब देख रहे हैं।"

"मुझे बताओ..." उसने उर्वशी की ओर मुड़कर कहा, "...क्या तुम वो हो सकती हो? वो अकेली स्त्री जिसे मैंने कभी प्यार किया है—वो प्यार जिसकी मुझे चाह है? वो जो न बोलेगी, न सुनेगी जब मैं उसे बताऊंगा कि मैं उससे प्यार करता हूँ?"

सम्राट ने उर्वशी की कोहनी को ज़ोर से पकड़कर उसे बिस्तर के पास खींच लिया। "क्या तुम उसकी जगह होना चाहोगी, इस तरह दिन-रात, पूरे हफ्ते, पूरे साल लेटे रहना चाहोगी?" उसने गुस्से से उसकी काजल लगी आँखों में घूरते हुए पूछा। उर्वशी सहम गई और दूर हटने की कोशिश की, लेकिन राजा ने उसका हाथ कसकर पकड़े रखा और उसे जाने नहीं दिया। "क्या तुम इसके लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार हो? नहीं, तुम नहीं होगी। फिर भी, मैं इसी से प्यार करता हूँ," उसने पीड़ा से विशाखा की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा। "मैं इसी को अपनी बाहों में लेना चाहता हूँ, इसी को रात-रात भर लोरी सुनाकर सुलाना चाहता हूँ।"

उर्वशी के शरीर में एक सिहरन दौड़ गई और विक्रमादित्य तक पहुँच गई। सम्राट ने पलकें झपकाईं और अप्सरा का हाथ छोड़ दिया। उन्होंने गहरी साँस ली और खुद को संभाला। उनके अगले शब्द अधिक सौम्य और क्षमाशील थे। "तुमने कहा था कि तुम मेरी इच्छा के अनुसार, मेरे मनचाहे रूप में ढल सकती हो। नहीं, मिथ्यामयी। हमें प्रेम के लिए इस तरह नहीं बदलना चाहिए; यह प्रेम नहीं रहेगा। बल्कि प्रेम ही है

जो हमें बदलता है, रूपांतरित करता है, हमें हमारे वर्तमान स्वरूप से बेहतर बनाता है। जब तुम इस अंतर को समझ जाओगी, तब तुम प्रेम को समझ जाओगी। अब जाओ। सोने के लिए अभी रात का कुछ समय बाकी है।"

उर्वशी बिना कुछ कहे दरवाजे की ओर चल पड़ी। विक्रमादित्य ने आह भरते हुए विशाखा की ओर मुड़कर उसके पास बैठ गए और धीरे से उसका एक हाथ अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने हाथ को अपने होठों तक ले जाकर चूमा और फिर रानी के चेहरे की ओर देखते हुए उसे अपने गाल से लगा लिया।

जब राजा की आंख से एक आंसू गिरा और विशाखा के हाथ पर लुढ़क गया, तो विशाखा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, क्योंकि आंसू के निशान उसकी त्वचा पर दुख की गीली लकीर छोड़ गए।

सम्राट अपनी पीड़ा में इतना डूबा हुआ था कि उसने ध्यान नहीं दिया कि उर्वशी क्षण भर के लिए दरवाजे पर रुकी और पीछे मुड़कर उसे देखा, जो विशाखा के पास बैठा था, उसका हाथ पकड़े हुए था, उसका सिर झुका हुआ था और उसके कंधे झुके हुए थे।

अप्सरा ने कुछ क्षण राजा और रानी को देखा। और फिर वह गायब हो गई।

***

मेरी पुकार सुनो, सम्राट... असुर कटार लेने आए हैं... मैं अब इसकी रक्षा नहीं कर सकता... आओ और सीमावर्ती दुनिया को विनाश से बचाओ, महाराज... हलाहल को वापस ले आओ... मुझे आपकी मदद चाहिए, सम्राट विक्रमादित्य... क्या आप मुझे सुन रहे हैं?... महाराज...?

घूलमास्टर रुक गया और प्रतिक्रिया सुनने के लिए कान लगाने लगा। कोई प्रतिक्रिया नहीं थी।

उसने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं और बढ़ती हुई हताशा में फुसफुसाने लगा।

सम्राट विक्रमादित्य... आपको मेरी बात सुननी चाहिए... हलाहल खतरे में है...

"महिषाओं ने पेड़ का लगभग एक चौथाई हिस्सा काट दिया है, घोलमास्टर।"

बेताल ने अपनी आँखें खोलीं और वहाँ मौजूद पिशाचों को घूरने लगा। वह खुद देखना चाहता था, लेकिन उसमें ऐसा करने का साहस नहीं था। उसे पूरा यकीन था

कि वे दोनों पिशाच यह सब मनगढ़ंत कहानी नहीं बना रहे होंगे।

"और हमने असुरों की तलवारों और भालों से अपने बहुत से भाइयों को खो दिया है। उनसे लड़ना व्यर्थ है।"

"घोलमास्टर, आपको उनसे इस पागलपन को रोकने के लिए विनती करनी होगी। शायद इससे फायदा हो जाए।"

"ऐसा नहीं होगा," बेताल ने बेबसी और लाचारी महसूस करते हुए जवाब दिया। "वे यहाँ बातचीत करने नहीं आए हैं। वे किसी की विनती सुनने नहीं आए हैं। वे दया दिखाने नहीं आए हैं। वे यहाँ खंजर लेने आए हैं, और जब तक उन्हें वह मिल नहीं जाता, वे यहाँ से नहीं जाएंगे।"

हम पेड़ को गिरने नहीं दे सकते।

बीटाल ने नाखुशी से सिर हिलाया।

"क्या मानव राजा हमारी मदद के लिए नहीं आ रहा है?" एक पिशाच ने पूछा।

"पता नहीं क्यों, मानव राजा सो नहीं रहा है," बेताल ने कहा।

दोनों सेवक पिशाचों ने बेताल की ओर निराशा भरी नजरों से देखा।

"पेड़ को बचाने का एक ही तरीका है—मुझे और खंजर को इसकी सुरक्षा छोड़नी होगी," अंत में घूलमास्टर ने कहा। "अगर खंजर पेड़ के अंदर नहीं है, तो उसे काटने का क्या फायदा?"

लेकिन अगर आप पेड़ की सुरक्षा छोड़कर बाहर निकलेंगे, तो खंजर कैसे सुरक्षित रहेगा?

"पेड़ और बॉर्डरवर्ल्ड की रक्षा के लिए हमें यह जोखिम उठाना ही पड़ेगा," बीटाल ने जवाब दिया। वह कुछ देर सोच-विचार में रुका। "लेकिन मेरे पास एक ऐसा उपाय है जिससे शायद हमें कुछ समय मिल जाए।"

अल्टीमेटम

सूरज अभी क्षितिज से निकला ही था, इसलिए छावनी की इमारतों की छायाएँ ज़मीन पर अभी भी लंबी थीं, जिससे केंद्रीय छावनी के भीतरी आँगन में इकट्ठा हुए सैनिकों को पर्याप्त छाया मिल रही थी। कुल मिलाकर लगभग चालीस सैनिक थे, जिनमें शाही सेना, सीमा रक्षक और नगर सुरक्षा बल के कमांडर और कप्तान, साथ ही चार समसप्तक कप्तान शामिल थे। सैनिक छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा होकर आपस में बातचीत कर रहे थे, और कभी-कभी आँगन के दूसरी ओर बैठे दूसरे समूह में किसी परिचित को आवाज़ दे रहे थे। माहौल दोस्ताना था, लेकिन साथ ही घबराहट और थोड़ी सी सतर्कता भी झलक रही थी, जिस तरह से सैनिक बार-बार आँगन की ओर जाने वाले मुख्य द्वार की ओर देख रहे थे।

आँगन के एक कोने में, एक विशाल नीम के पेड़ के तने के पास, मताली अकेले खड़े होकर झुकी आँखों से सैनिकों को देख रहे थे। ये वही लोग थे जिन्हें अश्विनी, नाग और किन्नर सेनाएँ, तक्षक और त्रिभानु के नेतृत्व में, उनके स्वामी के आदेश पर इस शहर को तहस-नहस करने आएँगी, और इस हमले का सामना करना पड़ेगा। एक समूह में हंसी फूट पड़ी तो मताली मन ही मन मुस्कुराए। जब अवंती के शव जमा होने लगेंगे तो यह हंसी हंसी जैसी नहीं रहेगी। उन्हें लगभग इन सैनिकों पर दया आ रही थी।

"विस्मया, मेरी दोस्त। बहुत समय हो गया है..."

मताली ने मुड़कर देखा तो नगर रक्षक दल के कप्तान का चांदी का पदक धारण किए एक व्यक्ति लंबे-लंबे कदमों से उसकी ओर आ रहा था। उस व्यक्ति के चौड़े, काले चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान थी और उसकी बाहें फैली हुई थीं, मानो वह मताली को गले लगाने के लिए तैयार हो। देव को यह नहीं पता था कि वह व्यक्ति कौन है, लेकिन स्पष्ट था कि वह विस्मया का कोई बहुत प्रिय मित्र था। मताली ने अपने चेहरे पर एक बनावटी मुस्कान लाने की कोशिश की, लेकिन तब तक वह उस व्यक्ति के आलिंगन में खो चुका था।

"कैसे हो?" कप्तान ने मताली को कंधों से पकड़ते हुए, थोड़ा सा ही छोड़ा और उसके चेहरे की ओर मुस्कुराते हुए कहा, "देखो तो ज़रा—महल के रक्षकों के प्रमुख बन गए हो, है ना?" उसने मताली के कंधों पर गर्व से थपथपाया और फिर आखिरकार उसे छोड़ दिया। "मैंने लावा में हुई नियुक्ति के बारे में सुना। यह पदक तुम पर जंच रहा है। सच में, तुम इसके हकदार हो।"

"धन्यवाद, मेरे मित्र। आप कैसे हैं?" कप्तान की बात सुनकर मताली ने तुरंत पूछा, "आप उज्जैन कब लौटे?"

"दो दिन पहले।" वह रुका, उसका चेहरा उदास हो गया और आवाज़ धीमी हो गई। "मेरे जाने के बाद से बहुत कुछ हो चुका है। पार्षद कालिदास चले गए, पार्षद वररुचि... खैर... और आधे शहर को खाली करा दिया गया है। यकीन करना मुश्किल है कि ये सब सच में हो रहा है।" वह रुका, फिर उसका चेहरा खिल उठा। "खैर, कम से कम आप महल के रक्षकों के प्रमुख तो हैं। यही एक अच्छी बात है जो इस सब में सामने आई है।"

मताली ने सिर झुकाया और मुस्कुराया, लेकिन कुछ नहीं बोला। वह चाहता था कि कप्तान उसे अकेला छोड़ दे। वह आदमी विस्मया को अच्छी तरह जानता था, और मताली को डर था कि लंबी बातचीत से विस्मया के जीवन के बारे में उसकी अनभिज्ञता उजागर हो जाएगी, जिससे कप्तान उसके बारे में सोचने लगेगा और उसे शक होने लगेगा। वह बस यही चाहता था कि कोई चीज़ उस आदमी का ध्यान भटका दे, उसे वहाँ से भगा दे...

"तुम बहुत चुप हो," उस आदमी ने अचानक कहा। "क्या बात है? क्या तुम्हें अपने पुराने दोस्त को देखकर खुशी नहीं हो रही?"

"क्या? नहीं, बिल्कुल मैं हूँ। बस इन सब बातों में मेरा ध्यान थोड़ा भटक गया है..." देव ने आंगन की ओर इशारा करते हुए हाथ हिलाया।

"हाँ, सम्राट की सुरक्षा की देखरेख करना। मैं समझ गया। इसीलिए तो आप यहाँ हैं।"

"दरअसल नहीं," मताली ने उत्तर दिया। "सम्राट अवंती की रक्षा के लिए जिम्मेदार प्रत्येक सैन्य प्रभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को संबोधित करना चाहते हैं। मैं महल रक्षकों का प्रतिनिधित्व करता हूँ।"

"ओह, बिल्कुल।" कप्तान ने मुंह फेर लिया, लेकिन लगभग तुरंत ही वापस मुड़ गए। "मैंने सुना है कि आपकी एक भतीजी शहर आई है?" उन्होंने मताली की ओर देखा। "मुझे नहीं पता था कि आपकी कोई भतीजी है।"

"मुझे भी नहीं पता था," मताली हँसते हुए बोले और अपनी सफ़ेद दाढ़ी खुजलाई।

"वह कहां से आई थी?"

"विश्वपुरी," मताली ने कहा और इससे ज्यादा कुछ भी बताने से इनकार कर दिया।

"मैं समझ गया।" कप्तान ने हैरानी से नज़रें फेर लीं। मताली ने मन ही मन बड़बड़ाया। यह ठीक नहीं चल रहा था।

"ये भतीजी... उसका नाम क्या है?" उस आदमी में मक्खी जैसी दृढ़ता थी।

"मिथ्यामयी," देवता ने संक्षिप्त स्वर में कहा और मुँह फेर लिया। उन्हें आशा थी कि उनकी यह रूखी बात इस बातचीत को जल्द समाप्त कर देगी।

"मिथ्यामयी।" कप्तान ने कुछ सोचा और धीरे से सिर हिलाया। "मुझे बताया गया है कि वह अब राजकुमारी प्रलूपी की दासी है?"

"हम्म।" मताली ने उस आदमी की तीखी निगाहों से बचने की कोशिश की।

"अच्छा है।" कप्तान ने संतुष्टि से सिर हिलाया। फिर बोला, "तुम्हें किसी दिन दोपहर के भोजन के लिए घर आना चाहिए। धीरा तुम्हारे बारे में पूछ रही थी।" उसने मताली की ओर मुस्कुराते हुए कहा।

विषय में अचानक आए बदलाव से आश्चर्यचकित होकर, देवता ने राहत की सांस ली। "मैं करूँगा। धीरा कैसी है?" उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वे किसके बारे में पूछ रहे हैं।

"वह ठीक है। हमारे अगले बच्चे की उम्मीद कर रही है।" अपनी बात को बेहतर ढंग से समझाने के लिए उस आदमी ने अपने पेट के निचले हिस्से के पास हवा में

एक काल्पनिक उभार बनाया, फिर मताली की ओर चार उंगलियां हिलाईं।

"बहुत बढ़िया। और हाँ, बधाई हो।"

कप्तान ने मुस्कुराते हुए धन्यवाद कहा, फिर दरवाजे की ओर इशारा किया। "सम्राट का पता... आप महल में हैं। आप शायद जानती होंगी कि वे क्या कहना चाहते हैं।" उन्होंने मताली की ओर आशा भरी नजरों से देखा।

"मुझे नहीं पता," देव ने उत्तर दिया। "सचमुच।"

कप्तान ने फिर सिर हिलाया, फिर थोड़ा और करीब आकर फुसफुसाते हुए कहा, "क्या आपको लगता है कि इंद्र ने सम्राट के पिता के बारे में जो कहा वह सच है? क्या वह सच है कि सम्राट इंद्र का पोता है?"

दरवाजे पर अचानक हुई हलचल ने मताली को जवाब देने से बचा लिया। गैरीसन के दो कमांडर अंदर आए और चिल्लाते हुए सबको अनुशासित पंक्तियों में खड़े होने का आदेश दिया, क्योंकि राजा किसी भी क्षण आने वाले थे। पैरों की अफरा-तफरी मच गई और कप्तान मताली को हाथ हिलाकर अपनी टुकड़ियों की ओर निकल गया। महल के रक्षकों में से केवल वही वहाँ मौजूद था, इसलिए देव पेड़ के नीचे खड़ा रहा।

सम्राट द्वार से अंदर आए और राजा की कमर पर बंधी तलवारों को देखकर मताली की आंखें चौड़ी हो गईं। तलवारों के हैंडल सादे थे और म्यान बहुत पुराने चमड़े के बने थे। उन्होंने इन दोनों तलवारों के बारे में इतना सुना था कि वे उन्हें सही पहचान सकें—और आंगन में फैली फुसफुसाहट से यह भी स्पष्ट था कि अवंती की रक्षा के लिए तैनात सैनिकों ने भी उन्हें पहचान लिया था।

"चुप रहो," कमांडरों में से एक ने आदेश दिया। "सम्राट अब बोलेंगे।"

जब सभी सैनिको के शांत होने का इंतज़ार कर रहे थे, तब मताली ने विक्रमादित्य को देखा। राजा पैर फैलाकर, पीठ सीधी और सीना फुलाकर, बाँहें कमर पर रखकर, तलवारों के हैंडल के ठीक बगल में हल्के से हाथों को टिकाए खड़े थे। उनमें आत्मविश्वास झलक रहा था, मानो उन्होंने जीवन की विपत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली हो। फिर भी, उनके सामने खड़े सैनिकों की पंक्तियों को देखते हुए उनकी आँखें थकी हुई और उदास लग रही थीं, हालाँकि बोलते समय उनका लहजा दोस्ताना और सहज था। उनके शब्द भी सिंहासन के पूर्ण अधिकार को दर्शाने के लिए सावधानीपूर्वक चुने गए थे।

"अवंती के वीर योद्धाओं," उन्होंने बोलना शुरू किया। "मुझे आपसे एक रहस्य साझा करना है, जो मैंने आज तक किसी को नहीं बताया।" कुछ देर रुककर उन्होंने कहा, "जब भी मैं आपको देखता हूँ, मेरा सीना गर्व से फूल जाता है। क्योंकि आपमें मुझे अवंती के लिए इतना गहरा प्रेम दिखाई देता है कि धरती भी उससे समृद्ध और सुगंधित है, और आने वाली पीढ़ियों को अपने उपहार लौटाती रहेगी। और जब मैं आपको देखता हूँ, तो मेरे मन में अपार राहत और आनंद की लहर दौड़ जाती है। क्योंकि आपमें मुझे अवंती का भविष्य दिखाई देता है, जो हर खतरे से सुरक्षित है, तूफ़ान में भी मज़बूती से जड़ जमाए बरगद के पेड़ की तरह दृढ़ और आश्वस्त है। आप योद्धा इस भूमि को कभी नुकसान नहीं पहुँचने देंगे; यही है अवंती के प्रति आपका प्रेम।"

इसीलिए आज मेरे सामने ऐसे चेहरे हैं जिन पर संदेह और अनिश्चितता के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। और क्यों न हों? आप इस भूमि से बहुत प्रेम करते हैं; इसके भविष्य को लेकर भयभीत होना स्वाभाविक है। भय इसलिए नहीं कि कोई शत्रु हम पर आक्रमण करने की धमकी दे रहा है। शत्रु हमें विचलित नहीं करते। शत्रुओं से निपटना हम जानते हैं। भय इसलिए है क्योंकि हमारे ही किसी व्यक्ति ने पाला बदल लिया है, और हम अपनों से कैसे लड़ें, यह हमें नहीं पता। इसलिए, आपके संदेहों को देखकर मेरा दिल चिंता से भर उठता है।

"परन्तु अब हृदय को शांत करने और सभी शंकाओं को दूर करने का समय है। क्योंकि शंका करने की क्या बात? जब हमारा कोई अपना पाला बदल लेता है, तो वह हमारा नहीं रहता। वह शत्रु बन जाता है। और जैसा कि मैंने कहा, शत्रुओं का कोई महत्व नहीं—हम उनसे निपटने का तरीका भली-भांति जानते हैं।" सम्राट ने अपने हाथ जोड़कर तलवारों की मूठों पर रखे। एक ही झटके में, दोनों तलवारें म्यान से बाहर निकल आईं, और आँगन की खामोशी में तलवारों की तीखी झनझनाहट गूंज उठी।

"हम अपने दुश्मनों से - उनमें से हर एक से - ठीक उसी तरह निपटेंगे जिस तरह हमें सिखाया गया है।"

सम्राट ने तलवारों को अपने शरीर से दूर रखा, और मताली मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा, तलवारों की धारें तीव्र होकर आग की लपटों में घिर गईं। आंगन में हल्की सिसकियां और फुसफुसाहटें गूंज उठीं, लेकिन मताली नरक की आग को देखने में

इतना मग्न था कि उसने ध्यान ही नहीं दिया। उसने अपने होंठ चाटे, दिति की उन रचनाओं पर आश्चर्य करते हुए, जो देवताओं को घुटने टेकने पर मजबूर कर देने के लिए बनाई गई थीं। देवताओं के लिए सौभाग्य की बात यह थी कि अब तक कोई भी असुर इन तलवारों को चलाकर उनमें समाहित दुष्ट शक्तियों को आह्वान नहीं कर पाया था, लेकिन अब यह मनुष्य... मताली ने विक्रमादित्य को प्रशंसा भरी नजरों से देखा। वह शब्दों की शक्ति जानता था। वह अपने हाथों में पकड़े हथियारों की शक्ति भी जानता था। सैनिक उसके वश में थे।

"कुछ लोगों में यह भावना है—जो पूरी तरह से अवंती के कल्याण के प्रति प्रेम और चिंता से उपजी है—कि महल ने पार्षद कालिदास को उज्जैनी छोड़ने देकर गलती की है। कि पार्षद का हमारी शक्तियों का गहन ज्ञान युद्ध में हमारे विरुद्ध कार्य करेगा। अवंती के योद्धाओं..." सम्राट ने अपनी आवाज बुलंद की और साथ ही नरक की अग्नियों को कंधे तक उठा लिया। मानो जवाब में, लपटें तलवारों की पूरी लंबाई में फैल गईं। "...मैं पूछता हूँ, कौन सा गहन ज्ञान इन तलवारों को रोक सकता है? और कौन सा गहन ज्ञान आप में से किसी एक को रोक सकता है, जो सिंधुवर्त के सबसे बहादुर और वीर योद्धा हैं? हमारी शक्ति हमारा आत्मविश्वास है, और हमारा विश्वास असीम है। इसीलिए महल को पार्षद कालिदास के कार्यों से भय नहीं है। इसीलिए अवंती को भेदा नहीं जा सकेगा।"

विक्रमादित्य ने नरक की एक अग्नि को अपने सिर के ऊपर उठाकर आकाश की ओर कर दिया। उन्होंने गरजते हुए कहा, "मैं वचन देता हूँ कि समय आने पर हम अवंती के विरुद्ध उठने वाले हर हाथ को कुचल देंगे। हम पुरानी मित्रता को उसी युद्धक्षेत्र में दफ़न कर देंगे जहाँ हम अपने शत्रुओं की महत्वाकांक्षाओं को दफ़न करेंगे। हम अवंती हैं। हम स्वयं सूर्य हैं। हमें देखोगे तो जल जाओगे।"

"आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो..."

पुरुषों के बीच अनायास ही नारा गूंजने लगा, जिसकी तीव्रता और स्वर बढ़ता गया, क्योंकि उन्होंने अपनी मुट्ठियां हवा में लहराईं और चप्पल पहने हुए पैरों से आंगन के पत्थरों पर थपथपाहट की।

"आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो..."

शब्दों की तीव्रता बढ़ती गई और वे ध्वनि की एक प्रचंड धारा में बदल गए, जिसने आंगन को भर दिया और चौकी से बाहर निकलकर सड़कों पर फैल गई और सभी

को अपनी लहर में बहा ले गई।

आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो...”

इससे पहले कि उसे इसका एहसास भी होता, मताली का दिल मंत्रोच्चार की लय के साथ धड़कने लगा था।

***

उर्वशी ने अनमने ढंग से अपनी उंगलियाँ अपने बालों में फिराईं और सुगंधित तेल को कोमल और लंबे स्ट्रोक में फैलाया। उसके पैर पतले टखनों तक पानी में डूबे हुए थे। वह स्नानघर की सीढ़ियों पर, हल्की धूप में बैठी थी, उसकी उत्तरीय पोशाक का किनारा पानी में लहरा रहा था और उसकी आँखें कहीं टकटकी लगाए हुए थीं। स्नानघर के हरे-भूरे रंग के बीच सफेद और आकर्षक ढंग से उड़ती हुई एक चिड़िया भी अप्सरा को उसके विचारों से विचलित नहीं कर पाई।

क्या तुम वो हो सकती हो, वो अकेली औरत जिससे मैंने कभी प्यार किया है?

उर्वशी के मन में सम्राट की वह छवि फिर से उभर आई, जिसमें वह अपनी रानी के बगल में बैठे उनका हाथ पकड़े हुए थे।

मैंने आज तक सिर्फ एक ही महिला से प्रेम किया है...

जब वह फर्न से सजी और अनोखी लालटेनों से जगमगाती उस बालकनी पर कदम रखी, तो उसे अपने मिशन के परिणाम का पूरा यकीन था। वह एक अप्सरा थी। वह एक अप्सरा से कहीं बढ़कर थी—वह उर्वशी थी, देवलोक में सबसे अधिक आकर्षक अप्सरा, जिसकी शायद ही कोई प्रतिद्वंदी थी। वह प्रेम की कला में निपुण थी। हर देवता उस पर मोहित था। वह अप्रतिरोध्य थी।

फिर भी, विक्रमादित्य ने उसका विरोध किया था।

उस महिला के लिए जो बिस्तर पर पड़ी थी, मानो मर चुकी हो।

मैंने आज तक सिर्फ एक ही महिला से प्रेम किया है...

यह कैसे संभव था? वह एक पुरुष थे, और उससे भी बढ़कर, वह एक राजा थे। वह जितनी चाहें उतनी स्त्रियों से प्रेम कर सकते थे। देवलोक में उन्हें यही सिखाया गया था, जहाँ अप्सराओं की केवल एक ही भूमिका होती थी—देवों को उनसे प्रेम करने देना। भला कौन सा पुरुष केवल एक ही स्त्री से प्रेम कर सकता है?

वह व्यक्ति जो महिलाओं को केवल वासना की वस्तु से कहीं अधिक समझता है, जो महिलाओं का सम्मान करता है।

यह विचार अचानक आया, जिससे अप्सरा चौंक गई और अपने विचारों से बाहर आ गई। यह एक नया विचार था, जो उसके मन में पहले कभी नहीं आया था। लेकिन क्या यह संभव भी था, क्या ऐसे पुरुष सचमुच मौजूद हो सकते थे? यह धारणा इतनी अजीब थी कि उर्वशी ने भौंहें चढ़ा लीं और इसे खारिज करने के लिए तैयार हो गई।

फिर उसे कुछ याद आया।

यह वही दिन था जब वह इंद्र और गंधर्वसेना के साथ उज्जैन आई थी, वही दिन जब इंद्र ने विक्रमादित्य को उनके असली पिता के बारे में सच्चाई बताई थी। इंद्र के महल की ओर बढ़ते हुए मार्ग को विक्रमादित्य ने रोक दिया था, और उज्जैन की गलियों में देवता और मानव राजा के बीच शब्दों का युद्ध छिड़ गया था। उज्जैन के नागरिकों के सामने ही इंद्र ने गंधर्वसेना के रहस्य को बताकर सम्राट को स्तब्ध कर दिया था। लेकिन जब विक्रमादित्य ने देवताओं के दावों को खारिज करते हुए कहा कि महेंद्रादित्य ही उनके पिता हैं, तो इंद्र ने मामले को सुलझाने का एक तरीका सुझाया था।

आइए हम दोनों इस बात पर सहमत हों कि आपकी माता का वचन ही अंतिम होगा। आइए हम महारानी उपश्रुति से पूछें कि आपके पिता कौन हैं—उनके मृत पति, राजा महेंद्रदित्य, जैसा कि आप दावा करते हैं, या मेरे पुत्र, गंधर्वसेना, जैसा कि मैं जोर देकर कहता हूँ।

उर्वशी को अच्छी तरह याद था कि वह रथ के ढके हुए डिब्बे में बैठी थी और उस सुबह सड़क पर छाई खामोशी को सुन रही थी, जब इंद्र की चुनौती सबके कानों में गूंज रही थी।

और उसे विक्रमादित्य का उत्तर याद आ गया।

मैं अपनी माँ का अपमान नहीं करूँगा, सिर्फ़ इसलिए कि कोई आकर मेरे पिता होने पर सवाल उठा रहा है। मैं तुम्हें मेरी माँ को उनके लोगों के सामने अपमानित नहीं करने दूँगा। मुझे नहीं पता कि तुम देवलोक में अपनी महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करते हो, लेकिन अवंती में हमारी महिलाओं की गरिमा और सम्मान सर्वोपरि है...

वह उस तरह का आदमी था जो जीवन भर केवल एक ही महिला से प्यार कर सकता था।

"तुम यहाँ हो।" इस आवाज़ से उर्वशी चौंक गई। उसने मुड़कर देखा तो महल की एक दासी स्नानघर की सीढ़ियों के ऊपर खड़ी थी, जो बहुत नाराज़ लग रही थी। "राजकुमारी बहुत गुस्से में हैं और तुम्हें बुला रही हैं। जल्दी आओ।"

नौकरानी ने जवाब का इंतजार किए बिना मुड़कर चली गई।

अप्सरा ने आह भरी। उर्वशी जानती थी कि प्रलूपी आमतौर पर देर से उठती थी, लेकिन आज कुछ अलग था। वह यह भी जानती थी कि उसे बेहतर तैयारी करनी चाहिए थी। बस उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे करे।

जब वह अंततः प्रलूपी के शयनकक्ष का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुई, तो अप्सरा ने राजकुमारी को कमरे में बेचैनी से इधर-उधर घूमते देखा। उसकी घबराहट भरी ऊर्जा उसके कसे हुए शरीर और भीगी हुई मुट्ठियों में मुश्किल से समा पा रही थी। उर्वशी ने फर्श पर पड़े कपड़ों के ढेर को देखा, जो कुचले हुए, गीले और कीचड़ से सने हुए थे।

"राजकुमारी, नमस्कार।"

प्रलूपी ने टहलना बंद कर दिया और कमर पर हाथ रखकर उर्वशी को घूरते हुए बोली, "तुम कहाँ थीं?"

मैं नहा रहा था—

"क्या तुम जल्दी नहीं आ सकते थे? तुम्हें पता है मुझे देर से आना कितना नापसंद है।"

"माफ़ कीजिए राजकुमारी। मैं—"

"बस करो," प्रलूपी ने हथेली फैलाकर कहा। "मुझे इस बारे में और बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं बस इतना चाहती हूँ कि जब मैं तुम्हें बुलाऊँ तो तुम जल्दी आ जाओ, बस।"

फिर, मानो इन सब बातों का कोई महत्व ही न हो, राजकुमारी का व्यवहार बदल गया और उसकी आँखें उत्साह से चमक उठीं। "तो," उसने दोस्ताना लहजे में पूछा, "कैसा रहा?"

उर्वशी हिचकिचाई, सोच रही थी कि यह बात कैसे कहे, उसे यह भी नहीं पता था कि क्या प्रतिक्रिया होगी। प्रलूपी ने अप्सरा की ओर उत्सुकता से देखा, उसकी आँखें

आशा से चमक रही थीं और वह प्रोत्साहन में अपना सिर हिला रही थी। "तो?"

"सम्राट ने मना कर दिया।"

"अस्वीकार कर दिया?" प्रलूपी अचंभित रह गई। "क्या अस्वीकार कर दिया?"

"राजकुमारी, सम्राट ने मेरी पेशकश को अस्वीकार कर दिया।"

"ओह।" प्रलूपी की आँखें सिकुड़ गईं, और ऊँची खिड़कियों से आती धूप की गर्माहट के बावजूद, वातावरण में ठंडक सी महसूस होने लगी। प्रलूपी एक मेज के पास गई और अपने लिए एक गिलास पानी डाला। उसने पानी पिया और फिर उर्वशी की ओर देखा।

"मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ एकदम सही तरीके से तैयार किया था, फिर भी तुम नाकाम रहीं।" वह तिरस्कार से रुकी। "अगर तुम्हारी सुंदरता किसी काम की नहीं है, तो तुम मेरे लिए लगभग बेकार हो, मिथ्यामयी। अगर तुम किसी पुरुष को अपने वश में नहीं कर सकतीं, तो कहीं और काम ढूंढ लो।" राजकुमारी ने अप्सरा की ओर पीठ फेर ली। "अपने चाचा को बता देना कि मुझे तुम्हारी सेवाओं की ज़रूरत नहीं होगी—"

"राजकुमारी, कृपया प्रतीक्षा करें।"

उर्वशी ने हड़बड़ी में प्रलूपी की ओर कदम बढ़ाया, उसका मन बेचैन था। हलाहल का पता लगाए बिना वह महल नहीं छोड़ सकती थी। वह मताली को क्या बताती? कि वह राजा को रिझाने में नाकाम रही और राजकुमारी ने इसी वजह से उसे महल से निकाल दिया? और इंद्र उस पर बहुत क्रोधित होंगे कि वह मानव राजा के इतने करीब आकर भी नाकाम रही...

"कृपा करके मुझे विदा मत कीजिए, राजकुमारी," उर्वशी ने हाथ जोड़कर विनती की। "मैं... मैं फिर से कोशिश करूंगी। सम्राट के साथ। मैं वादा करती हूं।"

प्रलूपी ने अप्सरा को देर तक निहारते हुए कहा, "तुम्हें पहले से कहीं अधिक मेहनत करनी होगी।"

"जी राजकुमारी," अप्सरा ने राहत की सांस लेते हुए उत्तर दिया। "कृपया मुझ पर भरोसा कीजिए।"

प्रलूपी मुड़ी और खिड़की की ओर चल पड़ी। "मेरे नहाने के लिए सब कुछ तैयार कर दो। और ये गीले कपड़े हटा दो।"

उर्वशी कपड़ों का ढेर लेकर जा रही थी तभी राजकुमारी ने उसे आवाज दी।

“मेरे पास अनंत समय नहीं है, जिसका अर्थ है कि आपके पास भी अनंत समय नहीं है। आपके पास राजा पर अपना जादू चलाने के लिए दो दिन हैं। सिर्फ दो दिन।”

अप्सरा कक्ष से बाहर निकल गई, वह अब भी सोच रही थी कि राजकुमारी क्या कर रही है, अपनी दासी से अपने ही भाई को बहकाने की बात उसके लिए इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी। उसने सोचा कि यह उसका कोई लेना-देना नहीं है। वह बस राजकुमारी द्वारा राजा के करीब आने का दिए गए अवसर के लिए आभारी थी।

एक ऐसा राजा जो उससे पहले मिले सभी राजाओं से बिल्कुल अलग था, नेक होने के साथ-साथ दयालु भी...

उर्वशी ने सिर हिलाते हुए खुद को याद दिलाया, "दो दिन। वीषाद के खंजर का पता लगाने के लिए दो दिन।"

***

वह घने कोहरे में से होकर निकल पड़ा, घने और सघन कोहरे के सबसे निचले हिस्सों में रहने की पूरी कोशिश कर रहा था, इस बात से सचेत था कि उसके जलते हुए बाल आसानी से उसका पीछा कर रहे असुरों के सामने उसकी पहचान उजागर कर सकते हैं। वह कोहरे से बचता और सरकता हुआ लगातार पेड़ से दूर हटता रहा, फिर भी बीच-बीच में खुद को प्रकट करता रहा ताकि असुर उसका पीछा करने में रुचि बनाए रखें।

बरगद के पेड़ से भाग निकलना एक दर्दनाक अनुभव था और यह पिशाचों के भारी बलिदान के कारण ही संभव हो पाया था। पिशाच बड़ी संख्या में पेड़ पर आ गए थे और असुरों और महिषों को घेर लिया था। वे लड़ते हुए बड़ी संख्या में मारे गए, लेकिन हमलावर सेना पर उनका कोई खास असर नहीं हुआ, फिर भी उन्होंने उन्हें इतनी देर तक विचलित कर दिया कि पिशाच सरदार पेड़ से निकलकर कोहरे में शरण ले सके। इतने सारे पिशाचों के मारे जाने और पेड़ के बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाने के बाद, बीटाल को एहसास हुआ कि बॉर्डरवर्ल्ड की संरचना में एक मौलिक परिवर्तन आ गया है, और यह अब कभी भी पहले जैसा नहीं रहेगा।

"इसमें तुम्हारा क्या फायदा है, घोलमास्टर?"

दलदल के ऊपर से एक आवाज आई, निराकार, चुभने वाली और चुनौती भरी, मानो उसके अपने ही विचारों की प्रतिध्वनि हो।

"आज आपने जो कुछ भी खोया है, उसके बदले में आपको क्या मिलेगा?"

बेताल ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, वह घने कोहरे की चादर में लिपट गया।

"उस मानव राजा ने तुम्हें ऐसा क्या दिया है कि तुम उसके लिए इतना कुछ सहने को तैयार हो?"

मौन।

"तुम्हें इस बात की परवाह क्यों है कि खंजर किसके पास है? हमें दे दो, हम शांति से चले जाएंगे। यह मेरा वादा है।"

बेताल बाईं ओर मुड़ा ताकि वह पेड़ की ओर वापस आ सके। वह इतना दूर नहीं जाना चाहता था कि वह जल्दी वापस न लौट सके।

"मुझे पता है तुम अंदर हो, बेताल। मुझे पता है तुम मुझे सुन सकते हो।"

दूर क्षितिज पर, बेताल ने असुरों के एक समूह को कोहरे में उसकी तलाश करते हुए देखा। वह सोचने लगा कि क्या उसे थोड़ा सा अपना रूप प्रकट कर देना चाहिए।

"ठीक है, मैं आपको एक प्रस्ताव देता हूँ। हमें कटार सौंप दीजिए, और आप और आपके पिशाच पाताल लोक में आकर रह सकते हैं। कैसा रहेगा? नहीं? ठीक है, अगर यह काफी नहीं है, तो एक और बात सुनिए, इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता।" एक विराम। "कटार के बदले, आप अमरावती में रह सकते हैं। भला कौन ऐसा नहीं चाहेगा? ओह... आप सोच रहे होंगे कि मैं यह वादा कैसे कर सकता हूँ? यकीन मानिए, कटार मिलने के बाद, सारा देवलोक हमारा होगा, हम जो चाहें कर सकते हैं।"

बेताल कोहरे में मंडरा रहा था। उसकी हथेली में कटार भारी लग रही थी।

"क्या कहते हो? अमरावती के बदले खंजर? सोचो ज़रा। असुर अपने वचन से पीछे नहीं हटेंगे। मैं, शुक्राचार्य, तुम्हें यह आश्वासन देता हूँ।"

स्वयं महागुरु, उस पिशाच को एहसास हुआ। उसे यह बात पहले ही समझ लेनी चाहिए थी।

बेताल वहां से हट गया। वह शुक्राचार्य के सामने अपनी पहचान प्रकट नहीं करना चाहता था।

कुछ देर बाद फिर से आवाज आई।

"क्या आपने मेरी कही बात पर गौर किया?"

घोलमास्टर ने यह देखने की कोशिश की कि आवाज कहाँ से आ रही है।

"सहमत होने का यह आपका आखिरी मौका है।" अब उनकी आवाज़ में अधीरता झलक रही थी।

"क्या तुम वहाँ हो? बिल्कुल, तुम वहाँ हो।" आवाज़ भयावह हो गई। "बहुत चालाक हो, मुझे कहना पड़ेगा।"

वेतन तनाव में है।

"कोहरे में छुपी तलवार लेकर, तुम्हें ढूंढना मुश्किल होगा। लुका-छिपी के इस खेल में हमें थका रहे हो।" शुक्राचार्य मुस्कुराए। "समझ रहे हो, बड़ी चतुराई से। इस तरह हमारे साथ खेल रहे हो।"

अचानक आवाज गुस्से वाली हो गई। बहुत गुस्से वाली।

"अब हम एक अलग खेल खेलते हैं। पाताल में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं, अमरावती में भी कोई जगह नहीं। वे सौदे रद्द। अब तुम अपनी इकलौती जगह बचाने के लिए खंजर सौंप दोगे।"

बेताल को लगा जैसे कोहरा उसे जकड़ रहा हो, ठंडा और भयावह।

"मैं महिषाओं को आदेश दे रहा हूँ कि वे तुम्हारे पेड़, तुम्हारे घर को काटना शुरू कर दें। वे तब तक नहीं रुकेंगे जब तक तुम मुझे खंजर सौंप नहीं देते, हे पिशाच स्वामी।"

शुक्राचार्य ने कुछ देर रुककर बेताल की कल्पना पर अपने विचार केंद्रित करने का समय दिया।

"नया सौदा। छुरी के बदले तुम्हारा पेड़।"

दलदल पर सन्नाटा छा गया। बेताल बहते कोहरे में अकेला और पूरी तरह से असहाय खड़ा था।

***

"यह किसका शव हो सकता है?" क्षपणक ने खिड़की से बाहर झुककर उस आदमी को पानी में छप-छप करते हुए देखने के लिए पूछा।

"यह तो बिलकुल रहस्य है," विक्रमादित्य ने उत्तर दिया और उसके साथ झील में बैठे नाविकों की ओर देखने लगा। उनमें से एक दर्जन नाविक सुबह से ही पानी में खोजबीन कर रहे थे और झील के दक्षिणी छोर का लगभग पूरा चक्कर लगाने के बाद भी उन्हें कुछ नहीं मिला था।

क्षपनाका ने कहा, "यहाँ किसी शरीर का होना समझ में नहीं आता। क्या भविष्यवाणी गलत हो सकती है?"

"हम जानते हैं कि वह कभी नहीं होती।"

वे वापस नाविकों को पानी में गोता लगाते और गायब होते हुए देखने लगे।

"निकासी का काम कैसा चल रहा है?" सम्राट ने पूछा।

"काफी अच्छा। हमने शहर के आधे से ज्यादा हिस्से को खाली कराने में कामयाबी हासिल कर ली है।"

"कोई प्रतिरोध?"

"कुछ तो होंगे ही," क्षपणका ने राजा की ओर देखते हुए कहा। "लेकिन हम इसे यथासंभव सावधानी और संवेदनशीलता से संभाल रहे हैं।" उसने झील के उस पार उज्जैनी की ओर देखा। "उनमें से कुछ तो बहुत अड़ियल हैं। उत्तरी भाग में एक विधवा स्त्री है। उसके पति की मृत्यु देव घुड़सवारों के हमले में हुई थी। ऐसा लगता है कि वह नगर रक्षक दल में सैनिक था। वह अपना घर छोड़ने से इनकार करती है; वह कहती है कि वह वहीं मरना पसंद करेगी जहाँ उसका पति रहता था और सेवा करता था। वह अपने इलाके में अकेली बची है। बाकी सब लोग जा चुके हैं।"

"उसे रहने दो, उस पर दबाव मत डालो," विक्रमादित्य ने कहा। "लेकिन यह सुनिश्चित करो कि नगर रक्षक दल का कोई सदस्य उस पर नज़र रखे। और यह निर्देश दे दो कि यदि नगर पर हमला हो, तो उसे महल तक पहुँचा दिया जाए। वह भूलभुलैया में शरण ले सकती है।"

क्षपणका ने राजा को विचारपूर्वक सिर हिलाकर सहमति दी। "फिर पूर्वी भाग में ये दो परिवार हैं। दोनों ही जगह खाली करने से इनकार कर रहे हैं..." उसने गला साफ किया, "...वे इस बात पर अड़े हैं कि वे ऐसे व्यक्ति के आदेशों का पालन नहीं करेंगे जो... जो अवंती का राजा बनने के योग्य नहीं है।"

विक्रमादित्य ने क्षपणक की ओर देखा, फिर मुँह फेर लिया।

पार्षद ने कहा, "मैंने पूछताछ की। दोनों मकान मुसिली के छावनी प्रमुख कमांडर शरमाना से संबंधित परिवारों के हैं। शरमाना, वरारुची का दाहिना हाथ था।"

"पूर्वी भाग में कहाँ?"

"पुराने पशु बाजार के पास।" क्षपनाका ने उड़ती हुई मक्खी को भगाते हुए कहा, "हमें इनके बारे में क्या करना चाहिए?"

"कुछ नहीं," सम्राट ने उत्तर दिया। "उन पर भी नजर रखना।"

इससे पहले कि क्षपणक कुछ और कह पाते, सभा कक्ष का दरवाजा खुला और वराहमिहिर और धनवंतरी अंदर आए। विक्रमादित्य को देखते ही वराहमिहिर के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान आ गई।

"यहाँ आते समय मैं केंद्रीय छावनी के पास से गुज़रा और अपने कुछ इंजीनियरों से मिलने के लिए रुका," उसने लंगड़ाते हुए तेज़ी से कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। "वहाँ का माहौल बेहद खुशनुमा है। आपका भाषण कमाल का असर कर गया है। हर तरफ़ बस आपके भाषण की ही चर्चा हो रही है—और हाँ, नरक की आग की भी।" वराहमिहिर राजा के पास आया और उत्साह से उसके कंधे पर थपथपाया। "सैनिकों से सीधे बात करना कितना शानदार विचार था। आपने उनका दिल जीत लिया है, विक्रम। अब देखिए यहाँ से खबर कैसे फैलती है।"

सम्राट ने थकी हुई मुस्कान दी लेकिन कुछ नहीं कहा।

"ये लीजिए," धनवंतरी ने एक छोटी टोकरी आगे बढ़ाते हुए कहा। "मदारी ने इन्हें बनाया है। मैंने सोचा कुछ साथ ले आऊं।"

"यह क्या है?" वराहमिहिर ने पूछा।

चिकित्सक के उत्तर देने से पहले ही क्षपणका ने टोकरी पर से कपड़ा हटा दिया। "तिल के लड्डू!" उसने कहा। "मुझे ये बहुत पसंद हैं।"

"मदारी इन्हें बहुत अच्छे से बनाता है," वराहमिहिर ने कहा और खुद दो पीस ले लिए।

मुझे पता है कि आप उन्हें प्यार करते हैं।

"दोपहर के भोजन से ठीक पहले इन्हें खाना अच्छा विचार नहीं है," क्षपनाका ने मुस्कुराते हुए कहा और खुद भी दो-तीन पीस ले लिए।

"क्या अवसर है?" विक्रमादित्य ने एक तिल मुंह में डालते हुए पूछा, और तिल और गुड़ के स्वाद के घुलने का इंतजार करने लगा। "हम्म... स्वादिष्ट।"

"यह अवसर सुबह के भव्य भाषण का है," वराहमिहिर मुस्कुराए। फिर गंभीर होते हुए उन्होंने पूछा, "आपने वह भाषण तो लिख नहीं लिया होगा, है ना?"

"नहीं, हालांकि मैंने कल रात कुछ नोट्स जरूर बनाए थे।"

"अफसोस की बात है। लेकिन हम अभी भी उन नोट्स का इस्तेमाल अनार्ता को संदेश का मसौदा तैयार करने के लिए कर सकते हैं—"

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं होगी," धनवंतरी ने बीच में ही कहा। "मैंने महल के एक मुंशी को भाषण सुनने के लिए भेजा था, इसलिए हमने उसका अधिकांश भाग रिकॉर्ड कर लिया है।"

"उत्कृष्ट," वराहमिहिर ने संतुष्टि से अपने हाथ मलते हुए कहा।

विक्रमादित्य पास ही पड़ी एक कुर्सी पर गए और उस पर बैठ गए।

क्षपनाका ने अपने अंगूठे से गुड़ चाटते हुए कहा, "तुम थकी हुई लग रही हो। क्या तुम ठीक हो?"

मैं ठीक हूँ। बस बात ये है कि मैं कल रात बिल्कुल भी नहीं सोया।

"क्यों?" वराहमिहिर ने विक्रमादित्य की ओर नीचे देखा।

"बहुत सारी बातें," सम्राट ने सिर हिलाते हुए कहा। "ज़्यादातर विचार ही हैं, जो मुझे सोने नहीं देते।"

"किस बारे में विचार?"

"खैर, विशाखा तो है," राजा ने गहरी सांस ली। उन्होंने धनवंतरी की ओर एक संक्षिप्त दृष्टि डाली, जबकि क्षपणक खिड़की से बाहर देख रहा था। वराहमिहिर ने विक्रमादित्य के कंधे पर हाथ रखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

"फिर घटकरपारा और अमर सिंह हैं। अमर सिंह के उदयपुरी छोड़कर रेगिस्तान में जाने के बाद से उनसे या उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली है। मैं प्रलूपी को क्या बताऊँ? आखिर वह उनकी माँ हैं, और उन्हें सीमा पर भेजना मेरा ही फैसला था। फिर दंडक में शंकु है..."

"शंकु बलवान है," क्षपणक ने जवाब दिया। "वह अपना ख्याल अच्छे से रख सकती है। उसे आपकी ज़रूरत है कि आप उस पर भरोसा करें, उसकी चिंता न करें। और

जहाँ तक घटकरपारा की बात है, अमर सिंह ने उसे वापस लाने का वादा किया है, और वह उसे वापस लाएगा।"

विक्रमादित्य ने आह भरते हुए कहा, "मैं भी खुद से यही कहता हूँ। असल में मुझे उज्जैन और यहाँ की जनता की सबसे ज़्यादा चिंता है। कुछ लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है; कुछ ने अपनी आजीविका खो दी है। मुझे डर है कि और भी लोग दोनों खोने वाले हैं, और यह जानकर मुझे बहुत दुख होता है कि इस सारी अनिश्चितता का कारण मैं ही हूँ। हलाहल की रक्षा करने के मेरे निर्णय में उनका कोई हाथ नहीं था, फिर भी वे उस निर्णय की कीमत चुका रहे हैं। यह कितना अन्यायपूर्ण है। भला कौन सा राजा अपनी प्रजा के साथ ऐसा करेगा?"

"तुमने हलाहल के मामले में जो उचित किया, वही किया, और अब तुम अपनी प्रजा के लिए जो उचित है वही कर रहे हो," धनवंतरी राजा के सामने बैठ गया और उसके चेहरे की ओर देखते हुए बोला, "राजा होने के नाते, तुम्हें हमेशा विपरीत परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना होगा और कारण-परिणाम को संतुलित करना होगा। यही राजा का कर्तव्य है, यही ताज का भार है। इसे स्वीकार करो, विक्रम।"

"हाँ।" सम्राट के होठों पर एक हल्की सी मुस्कान आई। "यह मत भूलो कि आज सुबह ही मैंने अपने सबसे पुराने दोस्त, अपने सबसे करीबी के खिलाफ जंग का ऐलान किया है। और ऐसा करके मैंने जनमत को अपने पक्ष में कर लिया है ताकि मैं अपने भाई से सत्ता छीन सकूँ, जिसके लिए मेरे मन में सिर्फ प्यार और सम्मान था। एक सुबह के अच्छे काम में मैंने एक दोस्त और एक भाई को खो दिया है," उन्होंने अपनी छाती पर हाथ मारा जहाँ उनका दिल धड़क रहा था। "राजा का यही हाल होता है, मैं समझता हूँ।" गर्दन फैलाते हुए वे मुस्कुराए। "बस कभी-कभी राजा होना थोड़ा थका देने वाला हो जाता है।"

"राजा बनने का कोई इलाज तो मेरे पास अभी तक नहीं है," धनवंतरी ने धीरे से हंसते हुए कहा, "लेकिन मैं तुम्हारी थकान दूर करने के लिए कुछ दे सकता हूँ। कुछ ऐसा जिससे तुम्हें नींद आ जाएगी।"

विक्रमादित्य ने अपनी पलकें मलते हुए कहा, "इस समय नींद एक सुखद उपहार होगी।"

***

"राजगुरु, आने के लिए धन्यवाद। और अगर कल हम थोड़े असभ्य लगे हों तो हमें क्षमा कर दीजिएगा।"

"अगर मैंने अनजाने में कोई सीमा पार कर दी हो तो मुझे भी क्षमा कर दीजिए, रानी और राजा।"

राजसी दीवान पर बैठे वीरयंका और अभिरामी ने सिर हिलाया। रानी ने कहा, "बैठ जाइए, राजगुरु।"

आचार्य ने प्रणाम किया और सुदासन और छह अन्य व्यक्तियों के ठीक सामने तिरछी दिशा में अपनी सीट पर बैठ गए, जिन्हें उन्होंने वांगा के शेष प्रमुख समझा। उनकी निगाहें कुलाधिपति से मिलीं और दोनों ने मौन अभिवादन करते हुए एक-दूसरे को सिर हिलाया। अभिरामी अपने भाई और कुछ सलाहकारों से परामर्श कर रही थीं, इसलिए वेताल भट्ट को कक्ष का अवलोकन करने का अवसर मिला, जो हवादार, सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ था और उत्तरा तोसाली का भीतरी दृश्य प्रस्तुत करता था। जहाँ वे बैठे थे, वहाँ से राजगुरु धान की बालियों से लदी बैलगाड़ियों को शहर के अन्न भंडारों की ओर जाते हुए देख सकते थे, जबकि महल के पास, मछुआरिनें सुबह की पकड़ी गई मछलियों को चौड़ी टोकरियों में बाजार ले जा रही थीं, जिनके पीछे शोर मचाते कौवे मंडरा रहे थे जो महिलाओं के ध्यान न देने पर मछलियों को छीनने की कोशिश कर रहे थे।

“मुझे लगता है कि आप जानते हैं कि यह किस बारे में है, राजगुरु। क्या आपको इसके बारे में जानकारी दी गई है?”

“आपने मुझे लाने के लिए जिन लोगों को भेजा था, उनसे मुझे मोटा-मोटा अंदाजा तो हो गया है, लेकिन मुझे पूरी जानकारी नहीं है,” आचार्य ने अभिरामी की ओर देखते हुए कहा। “मैंने जो समझा है, उससे लगता है कि आपको ओड्रा पर मगध के हमले की योजना की सूचना मिली है?”

आचार्य और उनके सैनिक दल सूर्योदय होते ही महल से निकल गए थे और लगभग तीन घंटे से रास्ते में थे, तभी कुछ घुड़सवारों ने उन्हें पकड़ लिया। घुड़सवारों ने राजगुरु को बताया कि रानी अभिरामी को ओद्रा पर आक्रमण करने की मगध की साजिश का पता चल गया है, इसलिए उन्होंने आचार्य से तुरंत महल लौटने का अनुरोध किया है। आचार्य को सीधे राजकक्ष ले जाया गया, जहाँ वे चर्चा करने बैठे।

"जी हां, जाहिर तौर पर, ओड्रा पर आक्रमण की योजनाएँ काफी उन्नत चरण में हैं," अभिरामी ने कहा। "हमें जो रिपोर्ट मिली है, उससे यही पता चला है।"

आचार्य ने पूछा, "ये योजनाएँ वास्तव में कितनी उन्नत हैं?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि मगध की सेना हजारों की संख्या में ताम्रलिप्ति पहुँचने लगी है, और वांगा के जहाजों को युद्ध के लिए तैयार किया जा रहा है। हमें बताया गया है कि वांगा के पास लगभग तीस समुद्री यात्रा के लिए उपयुक्त जहाज हैं।"

अभिरामी ने पुष्टि के लिए सुदासन की ओर देखा। सुदासन ने सिर हिलाया लेकिन तुरंत कहा, "ये युद्धपोत नहीं हैं, बल्कि व्यापारिक पोत हैं, महारानी जी।"

लेकिन वे सैनिकों को तो ले जा सकते हैं, है ना?

सुदासन और उसके सरदारों ने सिर हिलाया।

"अगर मैं पूछूं तो, आपको यह रिपोर्ट कैसे मिली?" वेताला भट्टा ने पूछा। "जहां तक मुझे पता है, वांगा में आपके कोई जासूस नहीं हैं..."

"हमें इस साजिश के बारे में एक व्यापारिक जहाज से पता चला जो कल शाम उत्तरा तोसाली में आकर रुका था," वीरयंका ने सुदासन और सरदारों की ओर देखते हुए कहा।

"व्यापारिक जहाज?" आचार्य ने आश्चर्य से पूछा। "कहां से?"

"वांगा।"

"वंगा?" वेताल भट्ट ने हैरानी से पलकें झपकाईं और सुदासन को घूरते हुए कहा, "लेकिन ओद्रा वंगा के साथ व्यापार नहीं करता, तो फिर व्यापारिक जहाज उत्तरा तोसाली में क्या कर रहा था?"

"हम किसी के साथ व्यापार नहीं करते," अभिरामी ने बात सुधारते हुए कहा। "ऐसा लगता है कि जहाज दक्षिणी राज्यों में से किसी एक के लिए जा रहा था, लेकिन उसमें पीने का पानी कम हो रहा था। इसलिए वह यहाँ पानी भरवाने आया था।" कुछ देर रुककर उसने आगे कहा, "हम ऐसी छूट देते हैं।"

राजगुरु ने सुदासन की ओर देखा। "कुलपति जी, जहाज के चालक दल और कप्तान ने मगध युद्ध की योजनाओं के बारे में और क्या कहा?"

"हम उनसे मिल भी नहीं पाए," सुदासन ने दुख भरे स्वर में कहा। छह वांगा सरदारों ने सिर हिलाया, मानो वे बेहद निराश दिख रहे हों। "जब तक हमें पता चला कि वे यहाँ हैं, तब तक जहाज जा चुका था।"

“मुझे समझ नहीं आ रहा।” आचार्य ने सुदासन से अभिरामी की ओर देखा। “इसे जाने की अनुमति क्यों दी गई?”

“घाट के संचालकों को निर्देश दिया गया है कि वे आने वाले जहाजों को लंबे समय तक रुकने की अनुमति न दें,” अभिरामी ने थोड़ी खेद भरी आवाज में कहा। “पीने का पानी जहाज पर ले जाने के बाद, जहाज को लंगरगाह से निकलने के लिए प्रोत्साहित किया गया होगा।”

"तो फिर मगध योजना की खबर महल तक कैसे पहुंची?"

“जहाज पर सवार किसी व्यक्ति ने गोदी में तैनात एक गार्ड को इसके बारे में बताया,” वीरयंका ने कहा। “गार्ड ने अपने कप्तान को सूचित किया, जिसने यह खबर हम तक पहुंचाई।”

"और जब तक यहां कोई प्रतिक्रिया दे पाता, तब तक बहुत देर हो चुकी थी," वेतला भट्टा ने कमरे के काले ग्रेनाइट के फर्श को घूरते हुए, गहरी सोच में डूबे हुए, धीमी आवाज़ में कहा।

“राज-गुरु, आपने कल जो कहा था कि युद्ध एक शिकारी है जो हमारा पीछा करता है, वह बिल्कुल सही था,” अभिरामी ने कहा। “हमने हर संभव प्रयास किया है कि किसी के रास्ते में न आएं और किसी से झगड़ा न करें, फिर भी हम देखते हैं कि हम हमेशा टकराव से बच नहीं सकते। आपने यह भी सही कहा था कि हमें सत्य का साथ देना चाहिए; आक्रमण के खतरे ने ही हमें आपके शब्दों की सार्थकता का एहसास कराया है। क्षमा करें। हम जल्द ही इसकी भरपाई कर लेंगे।” वह सुदासन की ओर मुड़ी। “मैं और मेरा भाई कलिंग और ओड्रा के द्वार आपके और वंगा के सरदारों के लिए खोलते हैं। आप जब तक चाहें यहां रह सकते हैं।”

सुदासन और सरदार खड़े हो गए, हाथ जोड़कर कृतज्ञतापूर्वक सिर झुकाया। "महाराज और रानी, आपका हार्दिक धन्यवाद," चांसलर की आवाज राहत से कांप रही थी। "हम आपके ऋणी हैं, और आशा करते हैं कि हम आपका आभार व्यक्त कर सकेंगे।"

अभिरामी ने सिर हिलाया और आचार्य की ओर मुड़ी। “राजगुरु जी, आपके प्रति कृतज्ञता के प्रतीक स्वरूप हम अवंती को वरदान देने के लिए तैयार हैं...” वेतला भट्टा को अनसुना देखकर वह रुक गई। “राजगुरु जी... क्या... सब ठीक है?”

आचार्य ने सिर उठाया और रानी को निहारने के बाद सुदासन की ओर मुड़े। "मेरा एक प्रश्न है। वांगा से आने वाले जहाज पीढ़ियों से इन समुद्रों में यात्रा करते आ रहे हैं। तो, जब कोई व्यापारिक जहाज ताम्रलिप्ति से दक्षिणी राज्यों के लिए रवाना होता है, तो क्या यात्रा के बीच में पीने का पानी खत्म हो जाना आम बात है?"

सुदासन ने कुछ देर तक राजगुरु को गौर से देखा, फिर अपने सरदारों की ओर नज़र डाली। अंत में उन्होंने कहा, "ऐसा होने की संभावना बहुत कम है। हमारे सेनापतियों को भोजन और पानी की आवश्यक मात्रा का सटीक अनुमान है। वे इसमें शायद ही कभी गलती करते हैं, और इसके अलावा, राशनिंग बहुत सख्त है। आखिरकार, यह जीवन और मृत्यु का मामला है।"

"तो, वांगन के जहाज पर इस तरह की पानी की कमी नहीं हो सकती थी?" राजगुरु उत्सुकता से आगे झुके।

"कमी तो कभी भी हो सकती है," एक प्रमुख अधिकारी ने जवाब दिया। "शायद कोई दुर्घटना हो जाए। बजट की भी एक सीमा होती है।"

"जी हाँ, यह सच है," आचार्य ने स्वीकार किया। "लेकिन यह जहाज दक्षिणी राज्यों की ओर जा रहा था, जिसका मतलब है कि यह ताम्रलिप्ति में अपनी यात्रा के आरंभ के करीब था। अपने गंतव्य से एक चौथाई से भी कम दूरी पर, घर के इतने करीब उन्हें पानी की कमी क्यों होगी? यह तो बजट की बहुत बड़ी गड़बड़ी होगी, है ना?"

"राजगुरु, आपका मतलब क्या है?" अभिरामी ने पूछा।

"राजगुरु की बात समझ में आ गई," सुदासन ने परेशान होकर कहा। "और अगर जहाज में पानी कम भी हो रहा होता, तो वे इतना रास्ता भटककर उत्तरा तोसाली क्यों आते, जो ताम्रलिप्ति के लगभग पश्चिम में है? अपने रास्ते पर चलते रहना और तोसाली जाना कहीं ज़्यादा समझदारी भरा होता, जो दक्षिण में, जहाज के गंतव्य की दिशा में ही स्थित है। उत्तरा तोसाली आकर पानी भरवाना कोई मायने नहीं रखता।"

"मुझे अब भी इसका मतलब समझ नहीं आ रहा," अभिरामी ने थोड़ी चिड़चिड़ाहट के साथ कहा।

"महारानी, बात सीधी-सी है," वेताला भट्टा ने कहा। "वंगा से एक जहाज यहाँ आता है, कथित तौर पर पीने का पानी भरने के लिए। उस जहाज पर सवार किसी व्यक्ति ने चुपके से आपके पहरेदार को ताम्रलिप्ति में आयोजित होने वाले मगध आक्रमण की सूचना दे दी, जिसमें वांगा जहाजों का बेड़ा शामिल था। इससे पहले कि उस

मुखबिर से साजिश के बारे में और पूछताछ की जा सके, जहाज उत्तरा तोसाली से रवाना हो गया। कुलाधिपति और मैंने अभी जो चर्चा की, उससे स्पष्ट है कि उस जहाज में पानी की कमी यहाँ आने का सिर्फ एक बहाना था, ताकि आक्रमण की सूचना वहाँ पहुँचाई जा सके।"

"किसी ने हमें आक्रमण की आशंका से अवगत कराने के लिए विशेष प्रयास किया," वीरयंका ने कहा। "इसमें क्या गलत है? हम इसके लिए उनके आभारी हैं।"

आचार्य ने पूछा, "अगर वह व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, आपका भला कर रहा था, तो इतनी गोपनीयता की क्या आवश्यकता थी?"

"क्योंकि उसे अपनी जान का खतरा है," सरदारों में से एक ने कहा। "तुम भूल जाते हो कि वांगा मगध के शासन के अधीन है, और ताम्रलिप्ति में हर जगह गद्दार मौजूद हैं।"

बाकी सरदारों ने सहमति में सिर हिलाया और धीरे से कुछ बुदबुदाया।

"हर जगह गद्दार हैं, फिर भी इस आक्रमण की खबर ओड्रा को देने के लिए पूरे जहाज और उसके चालक दल को खतरे में डाला जा रहा है?" वेताला भट्ट ने सरदारों की ओर चतुराई से देखा। "आप वांगा को अच्छी तरह जानते हैं—वांगा में कौन ऐसा है जिसे ओड्रा के भाग्य की इतनी परवाह है कि वह खुद को इतनी मुसीबत और खतरे में डाले? आपके छोड़े हुए वांगा में कौन ओड्रा के बारे में चिंतित होगा? राजा और रानी का वांगा में यह असाधारण और साधन संपन्न शुभचिंतक कौन है?"

सरदारों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"आप सही कह रहे हैं, राजगुरु," सुदासन ने कहा। "वंगा में अब कोई ऐसा व्यक्ति नहीं बचा है जो सद्भावना से ऐसा काम करे। ओड्रा के लिए तो बिल्कुल नहीं।"

"इसका क्या मतलब है?" अभिरामी ने घबराकर पूछा।

राजगुरु ने कहा, "इसका मतलब यह है कि यह रिपोर्ट झूठ है।"

अभिरामी और वीरयंका ने हैरानी से पूछा, "तो, मगध की हम पर हमला करने की कोई योजना नहीं है?"

"ओह, बिल्कुल है। यह रिपोर्ट इसकी पुष्टि करती है।"

रानी ने आचार्य को ऐसे देखा मानो उनका दिमाग खराब हो गया हो। "आपने अभी कहा कि रिपोर्ट झूठी थी—"

"मगध द्वारा ओद्रा पर समुद्र के रास्ते आक्रमण करने की खबर झूठ है, यह एक सुनियोजित भ्रामक जानकारी है जिसका उद्देश्य आपको नौसैनिक हमले की आशंका में डालना और उसके लिए तैयारी करवाना है। ओद्रा पर वास्तविक आक्रमण पश्चिम से, ऋक्षा पर्वतमाला के दर्रों से होकर, ज़मीन के रास्ते होगा।"

कमरा इतना शांत हो गया कि पास ही कहीं तालाब में नहाते बच्चों की हंसी की आवाज सन्नाटे में गूंज रही थी।

"चलिए, इसके पीछे का तर्क समझिए," वेताला भट्ट ने आगे कहा। "कुलपति ने स्वयं कहा है कि वांगन के सभी जहाज व्यापारिक जहाज हैं, जो युद्ध के लिए उपयुक्त नहीं हैं। आपकी श्रेष्ठ नौसेना के सामने ये जहाज निराधार साबित होंगे, महारानी जी। इसके अलावा, मगध के सैनिकों को नौकायन का कोई अनुभव नहीं है। वे समुद्र का सामना नहीं कर सकते और समुद्री यात्रा के अंत में लड़ने की स्थिति में नहीं होंगे। मगध की सेना थल सेना है और शूरसेना इसे कभी किसी और तरीके से इस्तेमाल नहीं करेंगे।"

उसने बात को समझने के लिए कुछ देर रुककर कहा, "समुद्र को भूल जाओ। ओड्रा की रक्षा के लिए ज़मीन पर तैयारी करो।"

***

कोहरा।

हर तरफ घना कोहरा छाया हुआ है। कोहरे के घने गुच्छे छाए हुए हैं। मानो कोहरे के पर्दे हों।

और उस धुंध में, एक आवाज़। धुंधली, कमजोर, दूर से आती हुई।

...क्या तुम मुझे सुन रहे हो... आना ही होगा... समय समाप्त हो रहा है... बचाने में देर हो रही है...

वह आवाज जानी-पहचानी सी लग रही थी। मानो बहुत पहले की हो। और वह आवाज लगातार आ रही थी।

...कृपया आइए... केवल आप ही आ सकते हैं... यह आखिरी मौका है...

और फिर अचानक, कोहरे में से एक चेहरा दिखाई दिया। धुंध का एक धुंधलापन, किसी प्रेत की तरह, किसी भूत की तरह।

किसी भूत की तरह।

एक ऐसा चेहरा जिसे उसने पहले भी देखा था। बहुत समय पहले का एक चेहरा।

...भागते हुए... क्या तुम मुझे सुन रहे हो...

और फिर वही चेहरा। कंकालनुमा, नुकीले दांतों और तीखे दाँतों वाला, धँसी हुई आँखें, उनकी गहराई में लाल रोशनी के बिंदु जल रहे थे। और बाल आग की लपटों में लिपटे हुए थे। या यूँ कहें, आग की लपटों से बने बाल।

वेतन।

महाराज, मेरी बात सुनिए... आखिरकार, आखिरकार... आपको अभी आना होगा... हलाहल सुरक्षित नहीं है... असुरों ने सीमावर्ती दुनिया पर हमला कर दिया है... अभी आइए और हमें बचाइए... हमें आपकी आवश्यकता है... देरी करने का समय नहीं है... अभी आइए... वृक्ष खतरे में है...

कोहरा छंटने लगा। चेहरा धुंधला पड़ने लगा। और सब कुछ अंधेरा हो गया।

और फिर जैसे ही विक्रमादित्य ने पलकें झपकाईं और चौंककर जाग गए, उनकी आंखों में दिन का उजाला भर आया।

धनवंतरी द्वारा दी गई नींद लाने वाली दवा के असर से जूझते हुए, वह उठने की कोशिश कर रहा था। उसने एक पल के लिए अपने सपने के बारे में सोचा। और धीरे-धीरे, भ्रम की स्थिति से बाहर निकलते हुए, उसे अहसास हुआ। यह सपना नहीं था। बेताल ने उससे संपर्क किया था। सीमावर्ती दुनिया खतरे में थी। वीशादा का खंजर खतरे में था। उसे बचाव के लिए बुलाया गया था।

सम्राट बिस्तर से उछलकर उठा और दरवाजे की ओर तीन लंबे कदम बढ़ाए ही था कि अचानक उस भयावह स्थिति का अहसास उस पर बिजली की तरह टूट पड़ा। वह जम गया।

There was no Vetala Bhatta in Ujjayini.

और आचार्य के बिना, वह बॉर्डरवर्ल्ड में प्रवेश नहीं कर सकता था।

बॉर्डरवर्ल्ड

अपनी भौंह से पसीने की एक बूंद झाड़ते हुए, अमारा सिम्हा ने धीरे-धीरे अपनी ओर बढ़ते हुए लोगों के छोटे से जुलूस को ध्यान से देखा। आगे बढ़ते हुए दल के पीछे गाइज़ गाँव की सीमा बताने वाला लकड़ी का बाड़ा था, जिसके आसपास की हवा दोपहर की भीषण गर्मी में झिलमिला रही थी और विकृत हो रही थी, मानो आँखों को धोखा दे रही हो।

"कितने?" पार्षद ने तेज धूप से अपनी आंखों को बचाते हुए पूछा।

"कहना मुश्किल है," अंगामित्रा ने अमरा सिंह के बाईं ओर घोड़े पर सवार होकर कहा। "एक दर्जन?"

"तो, वे हमारी शर्तों पर सहमत हो गए हैं," अमारा सिम्हा ने कहा।

"जब तक कि यह कोई चाल न हो।" अंगामित्र ने किलेबंदी की पूरी लंबाई पर अपनी निगाहें दौड़ाईं, यह देखने के लिए कि कहीं कोई आदमी हमले के संकेत की प्रतीक्षा में तो नहीं बैठा है—कहीं लापरवाही से निकला हुआ भाला, कहीं कोई उत्सुकता से ऊपर उठता हुआ सिर।

"तो हम उनसे इसका बदला लेंगे।" अमर सिंह ने अपनी ढाल को और कसकर पकड़ा और गर्दन व कंधे हिलाते हुए उसे ऊपर उठाया। उनके पीछे, संसप्तक अपने घोड़ों की पीठ पर सीधे खड़े हो गए और अपने कंधे तन गए।

यात्रा में आधा दिन लग गया था, और जैसे ही गाँव क्षितिज पर एक धब्बे से अलग दिखने लगा, यह स्पष्ट हो गया कि वह स्थान विशाल, घनी आबादी वाला और

संभवतः पर्याप्त रूप से सुरक्षित था। अवंती के योद्धाओं ने निष्कर्ष निकाला कि गाँव पर आक्रमण करना एक विकल्प तो था, लेकिन दिन दहाड़े सीधा हमला करना उचित नहीं था और इससे संभवतः कुछ जानें चली जातीं, जो इस समय उनके लिए असहनीय थीं। रात होने में अभी कई घंटे बाकी थे, और घटाकरपारा को खोजने का समय तेज़ी से बीत रहा था, इसलिए अमरा सिंह ने कूटनीति का सहारा लेने का निर्णय लिया।

अपने साथ बंधक बनाकर लाए गए एक श्योर को गैज़ गाँव के मुखिया के लिए एक संदेश देकर भेजा गया था। संदेश सीधा-सादा था। वे राजकुमार की तलाश कर रहे थे और गाँव पर हमला करने का उनका कोई इरादा नहीं था। अगर राजकुमार गैज़ में थे, तो उन्हें बिना किसी सवाल के उनके हवाले कर दिया जाए। अगर वे वहाँ नहीं थे, तो उनके बारे में कोई भी जानकारी स्वागत योग्य थी। उन्हें भोजन और पानी भी चाहिए था, जिसके बाद वे रवाना हो जाएँगे। गाँव के पास अमारा सिंह के प्रस्ताव का जवाब देने के लिए एक घंटे का समय था, अन्यथा उन पर हमला कर दिया जाएगा।

अमरा सिम्हा ने गाँव से सद्भावना के प्रतीक के रूप में अपने दस लोगों को भेजने की भी मांग की थी। उन्होंने वादा किया था कि विश्वासघात न होने पर उन दस ग्रामीणों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा। यदि विश्वासघात हुआ, तो सबसे पहले उन्हीं दस लोगों को मौत की सजा दी जाएगी।

अब वह समूह और करीब आ गया था। अंगामित्रा ने कहा, "हथियारों का कोई निशान नहीं है, जब तक कि उन्हें चतुराई से छिपाया न गया हो। वे ग्रामीण प्रतीत होते हैं।"

“हमने जिसे भेजा था, वह उनके साथ है,” पार्षद के दाहिनी ओर से दुभाषिया ने कहा। “वह हमारा संदेश पहुंचाने में कामयाब रहा।”

समूह अवंती से आए घुड़सवारों के इंतज़ार करने की जगह से कुछ दूरी पर रुक गया। एक व्यक्ति आगे बढ़ा, उसके साथ वह श्योर भी था जो गैज़ तक संदेश लेकर आया था। अमारा सिंह ने उस व्यक्ति के आने का अवलोकन किया, उसकी संयमित चाल, उसकी सफ़ेद दाढ़ी और उसकी तिरछी आँखों में झलकती थकी हुई समझदारी को देखा। जब वह इतनी नज़दीक आ गया कि उसकी आवाज़ सुनाई दे, तो वह रुक गया। श्योर ने उसके कान में कुछ कहा। उस व्यक्ति ने गंभीरता से

अमारा सिंह से लेकर दुभाषिए की ओर देखा। थोड़ा झुककर, उसने अंत में साका भाषा में उनसे बात की।

"महामहिम, मैं गैज़ का आब्ज़ा हूँ, जो राजकुमार है," उस व्यक्ति के बोलने के बाद दुभाषिए ने कहा। "उसका कहना है कि राजकुमार गाँव में नहीं है, लेकिन हम गाँव की तलाशी लेने और अपनी संतुष्टि के अनुसार जाँच करने के लिए स्वतंत्र हैं। वह यह भी कहता है कि उनके पास जो भी भोजन और पानी है, वह सहर्ष साझा करने को तैयार है और गैज़ में आपका व्यक्तिगत रूप से स्वागत करता है। उसकी बस यही विनती है कि हम अपने वचन का पालन करें और यह सुनिश्चित करें कि उसके गाँव और उसके लोगों को कोई नुकसान न पहुँचे।"

पार्षद ने किलेबंदी के पीछे बसे लगभग चालीस घरों को देखा, जो रेगिस्तान के बीचोंबीच बने हुए थे। उन्होंने धैर्यपूर्वक खड़े होकर बातचीत सुन रहे फटेहाल ग्रामीणों की कतार पर एक नज़र डाली। अंत में, उन्होंने उनके मुखिया की आँखों में सीधे देखा।

"उसे बता देना कि अमरा सिंह अपने वचन से कभी पीछे नहीं हटता," उसने दुभाषिए से कहा। "उसके आतिथ्य सत्कार के लिए उसे धन्यवाद देना, लेकिन उसे यह भी बता देना कि मैं छल-कपट बर्दाश्त नहीं करता। अगर उसने हमें धोखा दिया, तो वह मरेगा, उसके लोग मरेंगे। उसे बता देना कि हमने राजकुमार के लिए किबार को ध्वस्त कर दिया है, कि हम इस विकट भूमि पर केवल राजकुमार के लिए ही भटक रहे हैं। राजकुमार ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है, और हम उसे ढूंढ निकालेंगे, चाहे इसके लिए हमें लाशों के पहाड़ को पार करना पड़े।"

कुछ देर बाद, अमारा सिंह, अंगामित्र और दुभाषिया एक छोटी मेज पर बैठकर चुकंदर और दाल के साथ उबले हुए चावल का भोजन कर रहे थे। उनके सामने मुखिया आब्ज़ा बैठे थे, उनकी गोद में लगभग दो साल का बच्चा—उनका पोता—था। बच्चा खुले मुँह से अमारा सिंह को बड़े चाव से देख रहा था। आब्ज़ा की पत्नी और दो बेटियाँ उनकी सेवा कर रही थीं, जबकि उनका किशोर बेटा सम्मानपूर्वक दरवाजे के पास खड़ा था। अवंती से आए बाकी लोगों के लिए पास के एक हॉल में भोजन की व्यवस्था की जा रही थी।

गाँव में रक्षा के लिए तीस से अधिक पुरुष नहीं थे, बाकी लोग युद्ध के आह्वान पर पूर्व की ओर धीमी गति से बढ़ते हुए गाँव में शामिल होने के लिए निकल चुके थे।

गाँव में प्रवेश करते ही पार्षद को यह स्पष्ट हो गया था कि गैज़ के लोगों में लड़ने की कोई इच्छा नहीं थी; ग्रामीण अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किसी भी मांग को मानने को तैयार थे। घटाकरपारा की खोज तेज़ी से, सभी के सहयोग से की गई थी और उसमें कुछ भी नहीं मिला।

आब्ज़ा मेज के उस पार झुककर दुभाषिए से बात करने लगी।

"शाह, राजकुमार की खोज में हमें शुभकामनाएँ देता है, महोदय।"

“उन्हें मेरा धन्यवाद कहना,” अमारा सिम्हा ने सिर हिलाया। खाना चबाते हुए पार्षद ने मुखिया के बारे में ध्यान से सोचा। फिर वह दुभाषिए की ओर मुड़ा। “मुझे एक बात बताइए... उन्होंने खुद को उन दस ग्रामीणों में से एक के रूप में पेश किया जिन्हें हमने मांगा था। वह इस जगह के मुखिया हैं। उन्होंने खुद को खतरे में क्यों डाला? उन्होंने हम पर भरोसा क्यों किया कि हम अपना वादा निभाएंगे?”

दुभाषिया और शर्मीले व्यक्ति ने आपस में बातचीत की। अमारा सिम्हा ने मुखिया को मुस्कुराते हुए देखा।

"उनका कहना है कि हमारा विश्वास जीतने के लिए वे इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे।"

पार्षद के आश्चर्य और अविश्वास को देखकर दुभाषिए ने सिर हिलाया। “साथ ही, गैज़ का कल्याण उन्हीं के कंधों पर है। यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है जिसे वे किसी और को नहीं सौंप सकते। ऐसा लगता है कि किबार में हमने जो तबाही मचाई है, उसकी खबर पूरे रेगिस्तान में फैल गई है, और खासकर आपके कारनामों की खूब चर्चा हो रही है।” दुभाषिए ने रुककर मुस्कुराते हुए कहा, “यहां तो लोगों ने आपको एक नाम भी दे दिया है—काज़ी किबार।”

"इसका क्या मतलब है?"

“किबार की भयावहता, महाराज।” दुभाषिया फिर मुस्कुराया। “सरदार का कहना है कि वह नहीं चाहता था कि उसके गाँव का भी वही हाल हो जो किबार का हुआ, इसीलिए वह आया। ताकि हम उस पर भरोसा कर सकें। वह जानता था कि उसकी जान को खतरा है, लेकिन उसने यह सब गाइज़ और उसके लोगों के लिए किया।”

अमारा सिम्हा ने मुखिया को आदरपूर्वक देखा। उन्होंने मुखिया की गोद में बैठे बच्चे को देखकर मुस्कुराया। बच्चे ने भी शर्माते हुए मुस्कुराकर जवाब दिया और अपने दादा की छाती में सिर छिपा लिया। एक व्यक्ति कमरे में आया, मुखिया के

पास घुटनों के बल बैठा और उसके कान में धीरे से कुछ बोला। अमारा सिम्हा ने देखा कि दुभाषिया आगे झुका, उसकी आँखों में अचानक एक चमक आ गई।

"क्या बात है?" पार्षद ने फुसफुसाते हुए जल्दबाजी में पूछा।

उनके पास कुछ खबर है।

आब्ज़ा और दुभाषिए ने आपस में बातचीत की, जिसमें नए आए व्यक्ति ने कुछ शब्द जोड़े। "गाँव में एक नमक व्यापारी आया हुआ है। लगता है कल सुबह रेगिस्तान में उसकी मुलाकात एक युवक से हुई। वह युवक भूखा था, इसलिए व्यापारी ने उसे कुछ खाना दिया। उसने युवक से पूछा कि वह कहाँ जा रहा है, लेकिन युवक ने कुछ नहीं बताया। लेकिन व्यापारी को पूरा यकीन है कि वह अवंती जा रहा था।"

"उसे इतना यकीन कैसे है?"

"वह व्यक्ति केवल अवंती भाषा बोल सकता था। उसे साका भाषा का एक भी शब्द समझ नहीं आता था।"

अमारा सिम्हा ने दुभाषिए को घूरकर देखा।

"एक युवक साका क्षेत्र के भीतरी इलाकों में घूम रहा है और अवंती भाषा बोलता है," अंगामित्रा की आँखें उत्साह से चमक उठीं। "महोदय, और कौन हो सकता है?"

"व्यापारी की मुलाकात इस युवक से कहाँ हुई थी?" पार्षद ने पूछा।

दुभाषिए ने एक बार फिर शर्मीले व्यक्ति से सलाह ली। "उत्तर-पूर्व की ओर एक दिन की घुड़सवारी।"

"आदमियों और घोड़ों को तैयार करो। हमें तुरंत निकलना होगा।"

आब्ज़ा ने दुभाषिए को उठने से रोक दिया। उन्होंने संयमित स्वर में बात की, और दुभाषिए ने उनकी बात सुनी, बीच-बीच में सिर हिलाते हुए प्रश्न भी पूछे।

"माननीय महोदय, मुखिया का कहना है कि यह दृश्य कल सुबह यहाँ से पूरे एक दिन की घुड़सवारी की दूरी पर देखा गया था। राजकुमार तब तक आगे बढ़ चुके होंगे।"

"तो क्या हुआ? वह पैदल है। हम घोड़ों पर हैं।"

"हाँ, लेकिन मुखिया ने पूछा है कि वहाँ पहुँचने के बाद हम राजकुमार को किस दिशा में खोजेंगे। राजकुमार अपनी इच्छा अनुसार किसी भी दिशा में जा सकता था।"

"क्या मुखिया के पास उन समस्याओं का कोई समाधान है जो वह खुद पैदा कर रहा है?" अमारा सिम्हा ने तीखे स्वर में कहा।

"माननीय न्यायाधीश, उनका सुझाव है कि हम एक ट्रैकर का उपयोग करें।"

"हमारे पास कोई ट्रैकर नहीं है," पार्षद ने गुस्से से कहा।

"लेकिन वह करता है, माननीय न्यायाधीश।"

अमारा सिम्हा ने पहले आब्ज़ा को घूरा, फिर दुभाषिए को। "कौन?"

"उनका बेटा, नोरहान।"

पार्षद ने शर्मीले लड़के की ओर देखा, जिसने दरवाजे के पास खड़े किशोर को देखकर सिर हिलाकर सहमति दी।

"प्रमुख का कहना है कि लड़का एक कुशल ट्रैकर है।"

"क्या वे इन अस्थिर रेत में लोगों का पता लगा सकते हैं?" अमारा सिम्हा ने आश्चर्य से पूछा।

"ऐसा प्रतीत होता है कि वे ऐसा कर सकते हैं, माननीय न्यायाधीश।"

"और मुखिया उसे हमें उधार देगा?" अमरा सिम्हा की आवाज उम्मीद से कांप रही थी।

"सरदार चाहता है कि हम लड़के का अच्छे से ख्याल रखें। और लड़का हमें केवल सीमा तक ही ले जाएगा, उससे आगे नहीं। सरदार हमसे एक पक्का वादा चाहता है।"

"जी हां, बिल्कुल। उन्हें बता दीजिए कि हम सहमत हैं। और उन्हें यह भी बता दीजिए कि मैं इसके लिए उनका आभारी हूं।" पार्षद ने सामने बैठे व्यक्ति की ओर कृतज्ञता भरी निगाहों से देखा। "धन्यवाद।" उन्होंने हाथ बढ़ाकर उस व्यक्ति का हाथ थाम लिया और उसे मजबूती से थाम लिया। "उन्हें बता दीजिए कि मैं उनका ऋणी हूं, और मुझे उम्मीद है कि मैं किसी दिन उनका एहसान चुकाने का कोई तरीका ढूंढ लूंगा।"

दुभाषिए ने अनुवाद किया। शर्मीली लड़की मुस्कुराई और पार्षद का हाथ गर्मजोशी से दबाते हुए जवाब दिया।

"शायद दोस्ती के जरिए," दुभाषिए ने कहा।

जैसे ही अमरा सिंह धूप में बाहर निकले और उस जगह की ओर चले जहाँ उनका घोड़ा बंधा हुआ था, वे भाईचारे की प्रकृति पर विचार करने लगे, जहाँ सबसे पुराने

दोस्त कट्टर दुश्मन बन सकते हैं, और सबसे बड़े दुश्मन किसी न किसी तरह दोस्त बन सकते हैं।

***

"राजगुरु की सहायता के बिना मैं यह कैसे कर पाऊंगा?"

विक्रमादित्य ने हताशा में अपने बालों में हाथ फेरा, समाधान खोजने की पूरी कोशिश की, लेकिन कार्य की असंभवता के अलावा कुछ और सोच नहीं पा रहा था।

"क्या घोलमास्टर ने बताया कि स्थिति कितनी खराब थी?" धनवंतरी ने पूछा।

राजा ने कंधे उचकाए। "उन्होंने बस इतना कहा कि अभी आ जाओ, क्योंकि पेड़ खतरे में है।" वह खिड़की के पास गए और आसमान की ओर देखते हुए गहरी सांस ली। फिर अपने सलाहकारों की ओर मुड़े। "मुझे किसी भी हालत में जाना ही होगा।"

"कैसे?" वराहमिहिर ने पूछा।

विक्रमादित्य के कंधे हार से झुक गए। वे सभा की मेज पर गए और बैठ गए, अपनी कोहनियों को मेज पर टिकाकर, ठुड्डी को हाथों पर रखकर, अपने सामने फैले हुए विस्तृत सूर्य-शिखर चित्र को निहारने लगे।

"हमें तो यह भी नहीं पता कि राजगुरु इस समय कहाँ हैं," क्षपणका ने कहा। "वे बहुत समय से बाहर हैं, इसलिए हो सकता है कि वे वापस आ रहे हों। शायद वे आज या कल यहाँ आ जाएँ।" उसने आशा भरी निगाहों से उन पुरुषों की ओर देखा।

"या शायद वह ऐसा नहीं करेगा," वराहमिहिर ने कहा।

क्षपणक का चेहरा उतर गया।

"आप सही कह रहे हैं," धनवंतरी ने सिर हिलाते हुए कहा। "आचार्य का इंतजार करने से कोई फायदा नहीं होगा।"

"लेकिन हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है," वराहमिहिर ने गंभीर स्वर में कहा, अपने लंबे, सफेद बालों को माथे से पीछे हटाकर एक छोटी सी जूड़ी में बांधते हुए। "हम इंतजार नहीं कर सकते, फिर भी हमें इंतजार करना ही होगा।"

चार आकृतियाँ, मूर्तियों की तरह बैठी या खड़ी, निष्क्रियता में जड़वत, सन्नाटा उनके झुके हुए कंधों पर भारी पड़ रहा है।

"हम इंतज़ार नहीं कर सकते।" विक्रमादित्य ने अपने हाथ परिषद की मेज पर सीधे रखे और उठ बैठे। "हम इंतज़ार नहीं करेंगे।"

सम्राट ने धीरे-धीरे, एक-एक करके अपने सलाहकारों की ओर देखा, और उनकी आँखों में एक बेचैन कर देने वाली स्पष्टता थी—एक दृढ़ता, एक संकल्प—जिससे उन्हें पता चल गया कि कुछ होने वाला है। अंत में उनकी निगाह धनवंतरी पर टिकी।

"तुम मुझे पार कराने में मदद करोगे।"

“मैं?” चिकित्सक सम्राट को मुंह खुला रखकर घूरने लगा।

क्षपणक और वराहमिहिर ने एक-दूसरे की ओर देखा।

“कैसे?” धनवंतरी ने हैरानी से पलकें झपकाईं।

विक्रमादित्य अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए। "बॉर्डरवर्ल्ड क्या है?"

पार्षदों ने एक-दूसरे की ओर देखा, यह सोचते हुए कि यह सब किस ओर जा रहा है।

“सीमालोक जीवितों की दुनिया—हमारी दुनिया—और मृतकों की दुनिया के बीच का स्थान है,” राजा ने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया। “और कोई आमतौर पर सीमालोक में कैसे जाता है? मृत्यु के द्वारा। इसी तरह चीजें हमारी दुनिया से मृतकों की दुनिया में जाती हैं।”

"मुझे यह पसंद नहीं है, विक्रम," क्षपनाका ने बात समझकर सिर हिलाते हुए कहा।

“मुझे अब भी समझ नहीं आया।” धनवंतरी की निगाहें क्षपणक से हटकर राजा पर टिक गईं।

क्षपणक मेज से उठा और घृणा से भरा हुआ खिड़की की ओर चला गया।

“अगर मुझे बॉर्डरवर्ल्ड में प्रवेश करना है, तो मुझे मरना होगा,” सम्राट ने कहा।

क्षपनाका ने खिड़की से गुस्से में कहा, "यह बहुत खतरनाक है। तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

विक्रमादित्य ने अपनी भाभी से आंखों से विनती करते हुए कहा, "हमारे पास कोई विकल्प नहीं है।"

“विक्रमा, तुम्हारी मृत्यु से भला क्या लाभ होगा?” चिकित्सक भयभीत होकर बोला। “एक बार मर गए तो मर ही जाओगे, फिर कभी वापस नहीं आओगे—”

क्षपनाका ने कड़े स्वर में कहा, "वह चाहता है कि तुम वापसी में उसकी मदद करो।"

“मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे आने-जाने में मदद करो,” राजा ने धनवंतरी की ओर उत्सुकता से देखते हुए सिर हिलाया।

"आप चाहते हैं कि मैं आपको मरने में सहायता करूं... और फिर आप चाहते हैं कि मैं आपको मृत्यु से पुनर्जीवित करूं?" चिकित्सक ने हैरानी से देखा, अंततः उसे बात समझ आ गई।

Vikramaditya nodded again.

"विक्रमा, ये कैसे मुमकिन है? मैं तो बस एक वैद्य हूँ। मैं लोगों का इलाज कर सकता हूँ। मैं उन्हें मौत से वापस ज़िंदा नहीं कर सकता।" अब धनवंतरी की बारी थी गुस्से से झुकने की। "और तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मरने में मदद करूँ? कैसे? मैं चाकू लेकर—"

मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे मरने में मदद करो। मैं चाहता हूं कि तुम मुझे मरने से बचाओ।

"कैसे?" चिकित्सक गरजते हुए बोला। "मुझे बताओ कैसे। अगर तुम खुद को मारते हो, तो तुम मर जाते हो। और अगर तुम नहीं मरे हो, तो तुम अभी भी इस दुनिया में जीवित हो। तुम सीमावर्ती दुनिया में नहीं हो।"

"ज़हर।"

राजा और अन्य दो सलाहकारों ने तीक्ष्णता से वराहमिहिर की ओर रुख किया।

"ज़हर धीरे-धीरे जान लेता है," बूढ़े पार्षद ने बताया। "किसी को ज़हर दिया जाए तो पीड़ित की जान जाने लगती है। ज़हर का विष देने पर पीड़ित फिर से जीवित हो उठता है। यह एक नाजुक स्थिति है, मौत के मुंह से वापस आने का नाटक चलता रहता है।"

"क्या तुम्हें पता भी है कि तुम क्या बोल रहे हो?" धनवंतरी ने चिढ़कर पूछा।

"आपने कहा कि आप चिकित्सक हैं, आप लोगों का इलाज करते हैं। किसी विषग्रस्त व्यक्ति का इलाज आप कैसे करेंगे?" वराहमिहिर कुछ देर रुके। "आपको बस यही प्रक्रिया बार-बार दोहराना होगा। विष, विषनाशक, विष, विषनाशक, ताकि विक्रमा खंजर को बचाने के लिए सीमावर्ती लोक में पर्याप्त समय तक रह सके।"

"आपकी बातों से ऐसा लग रहा है जैसे मैं इस तरह का काम हर रोज करता हूं," धनवंतरी ने कहा।

"लेकिन आप तो चिकित्सक हैं," विक्रमादित्य ने मेज के उस पार झुकते हुए कहा। "आपका काम जहर से निपटना है।" उन्होंने पार्षद की आँखों में देखा। "कृपया। यही एकमात्र उपाय है।"

धनवंतरी राजा को घूरता रहा। फिर उसने सिर हिलाकर एक गहरी साँस ली। "मुझे नहीं पता... उम्मीद है यह कारगर होगा।"

"अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम सब बर्बाद हो जाएंगे," सम्राट ने कहा। "इसलिए, आइए इसे सफल बनाएं।"

"अगर विशाखा जाग गई तो मैं उसे क्या बताऊँगा?"

विक्रमादित्य ने क्षपणका की ओर देखा। "उसे बता दो कि मैं वापस आऊंगा।"

क्षपणका ने आंसू रोकते हुए सिर हिलाया। विक्रमादित्य उठकर उसके पास गए। उन्होंने उसे कंधों से पकड़कर उसका चेहरा देखने के लिए झुकाया।

"मैं वापस आऊँगा।"

"मुझे भी आपके साथ चलने दीजिए," पार्षद ने प्रस्ताव रखा। "आप अकेले अंदर नहीं जा सकते। आपको असुरों से लड़ने में मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। आपको बेताल के पेड़ को बचाने में मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। आप—"

"नहीं, क्षपणक, तुम नहीं आ सकती," सम्राट ने नरमी से कहा। "अगर नगर को तुम्हारी ज़रूरत पड़ी, अगर यहाँ कोई संकट आ गया तो क्या होगा? तुम्हें सैनिकों का नेतृत्व करते हुए युद्ध में जाना होगा। नहीं, क्षपणक। तुम्हें यहीं रुककर उज्जैनी की रक्षा करनी होगी।" उसका सिर हिलाते देख विक्रमादित्य मुस्कुराए। "और अगर तुम मेरे साथ चली गईं और विशाखा जाग गई, तो उसे कौन यकीन दिलाएगा कि मैं वापस आऊंगा?"

पार्षद ने सिर हिलाया। फिर अचानक आवेग में आकर उसने राजा को गले लगा लिया। "अपना ख्याल रखना," उसने राजा को कसकर पकड़ते हुए फुसफुसाया। "विशाखा और मैं तुम्हारा इंतजार कर रही होंगी।"

वराहमिहिर ने कहा, "क्षपनाका की बात सही है। बॉर्डरवर्ल्ड में आपको शायद मदद की ज़रूरत पड़ेगी। किसी का साथ होना अच्छा रहेगा।"

"लेकिन कौन?" विक्रमादित्य ने आलिंगन से अलग होते हुए पूछा। "वहाँ खतरा हो सकता है, और मैं किसी की जान जोखिम में नहीं डालना चाहता—"

दरवाजे पर हल्की सी दस्तक ने सम्राट की प्रार्थना को बाधित कर दिया। जैसे ही सबने मुड़कर देखा, दरवाजा खुला और एक व्यक्ति अंदर आया।

महल के अंगरक्षकों का प्रमुख।

"हाँ, विस्मया?" वराहमिहिर ने पूछा।

प्रमुख ने झुककर प्रणाम किया। “महामहिम, मेरे दखल के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मैं अनजाने में बॉर्डरवर्ल्ड के बारे में यहाँ हो रही बातों को सुनने से खुद को रोक नहीं पाया—”

“तुम छुपकर बातें सुन रहे थे,” वराहमिहिर ने कहा।

“जी महाराज, मैं आया था, लेकिन मेरा कोई बुरा इरादा नहीं था। मैंने आपको और सम्राट को किसी के सम्राट के साथ सीमालोक जाने के बारे में बात करते सुना था। मैं सम्राट की सेवा में स्वयं को प्रस्तुत करने आया हूँ।” उन्होंने विक्रमादित्य की ओर सीधे देखा और फिर से प्रणाम किया। “मैं परामर्शदाता क्षपणक जितना कुशल योद्धा होने का दावा नहीं करता, लेकिन महाराज, मैं आपके मिशन में आपकी पूरी सहायता करूँगा। मैं जो कुछ भी हूँ, वह अवंती और उसके सिंहासन का ऋणी हूँ, इसलिए इस पुराने सैनिक को अपना ऋण चुकाने का अवसर प्रदान कीजिए, सम्राट।”

राजा और सलाहकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

“विस्मया, क्या तुम्हें पता भी है कि इसमें क्या-क्या शामिल है?” वराहमिहिर ने पूछा।

"चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े, अगर सम्राट इसे करने को तैयार हैं, तो मैं भी तैयार हूं।"

"ठीक है, आप काफी भरोसेमंद हैं, तो मुझे लगता है कि बात यहीं खत्म हो जाती है," वराहमिहिर ने कहा।

“क्या मतलब, मुझे दो लोगों को मरने से बचाना होगा?” धनवंतरी ने भयभीत होकर सलाहकार से राजा की ओर देखा।

"कुंजला से मदद मांगो," वराहमिहिर मुस्कुराया।

“तुम कर सकते हो, है ना?” विक्रमादित्य ने धनवंतरी की ओर गंभीरता से देखा।

“मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैं एक व्यक्ति को भी जीवित रख पाऊंगा या नहीं,” चिकित्सक ने उत्तर दिया। “लेकिन अगर मैं एक जीवन को जोखिम में डाल रहा हूं, तो दो जीवन को जोखिम में डालने में क्या हर्ज है?”

“मुझे तुम्हारा हौसला पसंद आया,” सम्राट ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर वह महल के रक्षकों के प्रमुख की ओर मुड़ा और पूछा, “क्या तुम्हें यकीन है कि तुम यह कर पाओगे?”

"सम्राट, मुझे किसी भी बात पर इतना यकीन कभी नहीं हुआ," उस आदमी ने जवाब दिया, उसके होठों के कोनों पर हल्की सी मुस्कान थी।

***

हर कदम पर अपने पैरों को गहरी, ढीली रेत से खींचकर निकालने के कारण उसके पैरों में दर्द हो रहा था। रेत में चलते-चलते पैर की उंगलियों में छाले पड़ गए थे, जिनसे उसके पैरों में दर्द हो रहा था। गर्म, शुष्क हवा में सांस लेने से उसकी नाक और फेफड़े झुलस गए थे, क्योंकि वह बस आगे बढ़ते रहने के लिए बहुत मेहनत कर रहा था। उसकी त्वचा लाल और पपड़ीदार हो गई थी, धूप की गर्मी से झुलस रही थी, और उसके बाल, जिन पर उसे कुछ समय पहले तक बहुत गर्व था, अब बिखरे हुए, खुरदुरे और रेत से भरे हुए थे।

लेकिन घटाकरपारा इन सब बातों के बारे में नहीं सोच रहा था, क्योंकि वह घुटनों के बल गिर पड़ा, कराह रहा था और अपने दागदार कुर्ते को पकड़ रहा था, उसकी उंगलियां कपड़े में धंस रही थीं।

वह सोच नहीं पा रहा था क्योंकि भूख से बेहाल होकर उसकी सोचने-समझने की शक्ति लगभग ठप हो चुकी थी। भूख उसके पेट से टुकड़ों में निकलती हुई पूरे शरीर में फैल रही थी, नसों को कुतर रही थी, हड्डियों के मज्जा को चबा रही थी और खोपड़ी के भीतरी हिस्सों तक अपना रास्ता बना रही थी। भूख ने राजकुमार के हर विचार को छलनी कर दिया था और उसकी तेज़ी से घटती हुई सारी ऊर्जा को खा रही थी। भूख घटकर्पा को अंदर से कच्चा खा रही थी।

जब वह कैद से भागा था—उसे याद नहीं था कि कितना समय बीत चुका है, क्योंकि उसे समय का कोई अंदाजा नहीं था—घटाकरपारा ने अपने साथ खाना न ले जाने की गलती की थी। अगर उसने भागने की योजना बेहतर बनाई होती, तो वह अपने बंधकों द्वारा दिए जा रहे भोजन में से कुछ बचा सकता था, या आजादी के लिए आखिरी दौड़ से पहले रसोई से कुछ चुरा सकता था। लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया, उसका एकमात्र इरादा बाहर निकलना था, उसने इतना नहीं सोचा कि उसे यह एहसास हो कि बिना भोजन के, मरुस्थली के बंजर इलाकों में उसकी मौत निश्चित थी।

पीछा करने वालों से बचने के लिए राजकुमार ने टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता अपनाया, कई बार तो वह पीछे भी हट गया। शुरुआत में तो यह एक अच्छा विचार लगा, लेकिन भागते समय ही रास्ता भटक जाने पर उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। सूर्य और तारों के अलावा उसके पास कोई मार्गदर्शक नहीं था, और समतल भूभाग में कोई निशान नहीं था, इसलिए पूर्व दिशा में सीधा चलना उसके लिए एक चुनौती बन गया। और इस दौरान उसकी भूख बढ़ती ही जा रही थी, और भूख बढ़ने के साथ-साथ वह और भी भ्रमित होता गया और अपने रास्ते में भटकता चला गया।

अपनी यात्राओं के दौरान राजकुमार को केवल एक बार दूर से कुछ लोगों का एक समूह दिखाई दिया था। वह यह नहीं बता सका कि वे शक योद्धा थे या किसान—या फिर शिकारियों का कोई दल जो उसकी तलाश में आया था—और वह यह जानने की इच्छा भी नहीं रखता था, इसलिए वह रेगिस्तान की ज़मीन पर लेट गया और उनके ओझल होने का इंतज़ार करने लगा। बाद में, दो बार उसने दूर से कुछ बस्तियों के संकेत देखे, और जहाँ उसने पकड़े जाने के डर से पहली बस्ती से किनारा कर लिया, वहीं दूसरी बस्ती रात होते-होते उससे ओझल हो गई। फिर भूख ने उसे जकड़ लिया, और घटाकरपारा को याद नहीं था कि वह कैसे जीवित रहा, जब तक कि तीन खच्चरों वाले एक आदमी ने उसे जगाकर अपनी तीन पकी हुई रोटियाँ और सूखे नींबू के अचार का एक टुकड़ा उसके साथ बाँट दिया। उस आदमी ने, जिसने खुद को नमक व्यापारी बताया था, राजकुमार के लिए दो अतिरिक्त रोटियाँ देने की कृपा की, जिन्हें घटाकरपारा ने छोटे-छोटे टुकड़ों में खाकर बचा लिया। लेकिन अब आखिरकार दोनों रोटियां खत्म हो चुकी थीं, और भूख, एक पागल कुत्ते की तरह उसके दिमाग में दहाड़ रही थी, वापस लौट आई थी।

राजकुमार रेत पर पेट के बल झुक गया, हाथ पेट पर रखे, माथा लगभग ज़मीन को छू रहा था, और वह काफी देर तक उसी तरह बैठा रहा। फिर, दांत पीसते हुए, उसने धीरे-धीरे अपना सिर उठाया, पलकें झपकाते हुए, जब तक कि वह सीधा खड़ा नहीं हो गया। वह लड़खड़ाता हुआ इधर-उधर हिलता रहा, फिर अपने गंदे बालों को माथे से हटाते हुए, उसने सीधे सामने देखा—रेगिस्तान के समतल मैदान से खड़ी ढलान पर उठते हुए धूसर पहाड़ों की श्रृंखला को।

अरबुदास।

और उनसे परे, सिंधुवर्त।

घाटकारपारा में भूख की एक और लहर दौड़ गई, और उसकी तीव्रता से वह लगभग लड़खड़ाकर रेत पर गिर पड़ा। लेकिन एक हाथ से खुद को संभालते हुए, वह फिर से उठ खड़ा हुआ।

उसने अपने होंठ चाटे। वे सूखे थे। उन्हें पानी की जरूरत थी।

पेट में उठ रही तीव्र पीड़ा को अनदेखा करते हुए, राजकुमार ने अपना हाथ फैलाया, हथेली खुली और मुड़ी हुई, आकाश की ओर इशारा करते हुए। उन्होंने धीरे-धीरे अपनी उंगलियाँ हिलाईं, और मानो किसी चमत्कार से, उनकी उंगलियों पर नमी की छोटी-छोटी बूँदें चमक उठीं। जैसे-जैसे घटकरपारा अपनी उंगलियाँ हिलाते रहे, हवा से और अधिक नमी टपकती गई, यहाँ तक कि उनकी उंगलियाँ पानी से भीग गईं। राजकुमार ने उस पानी को सावधानीपूर्वक अपनी हथेली में इकट्ठा किया—एक छोटा सा तालाब, एक मुँह भर से भी कम—और उसे अपने होठों से लगाया, पानी का स्वाद चखा, उसे अपनी जीभ और गले तक आने दिया। पानी खत्म होने के बाद, उन्होंने अपनी हथेली और उंगलियों को चूसकर सुखा लिया ताकि इतनी मेहनत से प्राप्त की गई कोई भी चीज व्यर्थ न जाए।

उसने एक बार फिर वही तरकीब आजमाई और इस बार थोड़ा और पानी निकालने में कामयाब रहा, रेगिस्तानी हवा से उसमें मौजूद थोड़ी सी नमी को निकालकर उसने अपनी प्यास बुझाई।

अपने होठों को चाटते हुए, उनमें हो रही जलन को महसूस करते हुए, राजकुमार ने पर्वत श्रृंखला की ओर देखा। धीरे-धीरे वह लड़खड़ाते हुए, संतुलन बनाते हुए खड़ा हुआ। अंत में वह चल पड़ा, भूख को भुलाकर, अपनी निगाहें अर्बुदास पर्वतमाला पर टिकाए हुए।

***

उज्जैनी की गलियों के किनारे बने सभी घर खंडहर बन चुके थे, काई से ढकी, टूटती दीवारों वाले खाली ढांचे और आँखों के गड्ढों की तरह खुली खिड़कियाँ। गलियाँ भी कुछ बेहतर नहीं थीं, गारा चटक रहा था और पैरों के नीचे से उखड़ रहा था, इसलिए मताली को विक्रमादित्य के पीछे भागते हुए संभलकर चलना पड़ा। वे गली के एक चौराहे पर पहुँचे जहाँ बहुत पहले आए तूफान में एक पीपल का पेड़ गिर गया था; उसने उनका रास्ता रोक दिया, जिससे उन्हें उस पर से चढ़कर जाना पड़ा।

दूसरी ओर शहर की केंद्रीय चौकी थी, और मताली ने वहाँ से गुजरते हुए उत्सुकता से उसे देखा; चौकी आग से झुलस गई थी और मोटी, काली कालिख से ढकी हुई थी। वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था, जिससे उनके कदमों की आवाज गूँज रही थी। देवता को यह बात समझ में आई कि पूरा शहर शांत था, और महल से निकलकर टूटे हुए रास्ते को पार करने के बाद से उन्होंने एक भी प्राणी, एक भी जीवित प्राणी नहीं देखा था।

"सूरज में कुछ गड़बड़ है," सम्राट ने आकाश की ओर चिंता भरी नजर डालते हुए कहा।

मताली के लिए सूर्य में सब कुछ गड़बड़ था। एक तो वह उसे बिना आँखों में चकाचौंध हुए देख सकता था। दूसरा, उस पर काले धब्बे थे, जो किसी अशुभ चंद्रमा की तरह दिखते थे। और ज़ाहिर है, उससे कोई गर्मी नहीं निकलती थी—वास्तव में, मताली को पूरा यकीन था कि यह सूर्य शहर पर ठंडक फैला रहा था।

विक्रमादित्य ने चिंता से चारों ओर देखते हुए कहा, "इतना अंधेरा नहीं होना चाहिए।"

मताली को कुछ भी पता नहीं था, क्योंकि वह पहली बार बॉर्डरवर्ल्ड में कदम रख रहा था। "क्या यहाँ आमतौर पर ज़्यादा रोशनी रहती है, महाराज?" उसने पास आकर पूछा।

"हम्म," राजा ने उत्तर दिया। "पहले तो हमेशा ज़्यादा रोशनी रहती थी, लेकिन आज हर तरफ़ अंधेरा छाया हुआ है।" उसने फिर से सूर्य की ओर देखा, जो ठीक उसके सिर के ऊपर था। नाखुशी से सिर हिलाते हुए उसने अपनी चाल तेज़ कर दी और अचानक देव से दूरी बना ली।

मताली सम्राट को देखकर उसकी धूर्तता पर आश्चर्यचकित रह गया। देवलोक या पाताल में किसी को भी यह शक नहीं था कि मानव राजा पिशाच स्वामी को जानता है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि न तो देवताओं और न ही असुरों ने वीषाद के खंजर के सीमालोक में होने की कल्पना की थी। इंद्र ने अश्विनों और मरुतों को - और अब खुद को और उर्वशी को - हलाहल की खोज के लिए महल भेजा था, जबकि वह शुरू से ही पिशाच स्वामी की हिरासत में था। असुरों के लिए भी कहानी कुछ अलग नहीं थी - बस अब उन्हें किसी तरह खंजर के ठिकाने का पता चल गया था और वे उसे लेने आए थे।

सभा कक्ष में हो रही बातचीत को सुनकर और कटार के स्थान का पता चलने पर, देवता की पहली प्रतिक्रिया इंद्र को सूचित करने की थी। लेकिन मताली को शीघ्र ही अहसास हो गया कि इससे कोई खास मदद नहीं मिलेगी क्योंकि असुर पहले ही सीमालोक में पहुँच चुके थे—शायद हलाहल पर कब्ज़ा करने के करीब भी थे—जबकि इंद्र को वहाँ तक पहुँचने का रास्ता खोजने में समय लगेगा। फिर, विक्रमादित्य द्वारा कटार को बचाने के लिए सीमालोक में प्रवेश करने की इच्छा व्यक्त करने पर, मताली ने तुरंत निर्णय लिया कि वह किसी तरह राजा के साथ जाएगा और पहला अवसर मिलते ही कटार चुरा लेगा।

उज्जैनी का पश्चिमी द्वार, जो कब्ज़ों से उखड़ा हुआ था और बाकी सब चीज़ों की तरह जर्जर हालत में था, नज़र आने पर देवता ने अपनी चालें सोचनी शुरू कर दीं। वह सोच रहा था कि कब सम्राट को हलाहल से मुक्त करने और खुद को सम्राट से छुटकारा दिलाने का सही समय आएगा। उसने राजा की कमर पर लटकती दो पुरानी लोहे की तलवारों को देखा और मन ही मन मुस्कुराया; भले ही वह नरक की आग का स्वामी हो, लेकिन असुरों से आमना-सामना होने पर सम्राट को एक भयानक झटका लगने वाला था। क्योंकि जिसने भी राजा को ये तलवारें दी थीं—उसे याद आया कि वह राक्षसी लायुषि थी—उसने जाहिर तौर पर उसे यह बताना भूल गया था कि ये तलवारें दिति के बच्चों पर काम नहीं करतीं।

"विस्मया, जल्दी करो," सम्राट ने पश्चिमी द्वार की छाया में छिपते हुए पीछे मुड़कर पुकारा।

“जी हां, मेरे राजा,” मताली ने गति बढ़ाते हुए कहा।

जैसे ही वह द्वार से निकलकर स्नान घाट की टूटी सीढ़ियों पर पहुँचा, देवता ने देखा कि विक्रमादित्य दो सीढ़ियाँ नीचे खड़े होकर क्षिप्रा नदी के शांत, स्थिर जल को निहार रहे थे, और नदी के किनारे लगे टेढ़े-मेढ़े पेड़ों को देख रहे थे। राजा की निगाहों का पीछा करते हुए, मताली ने दूर-दूर तक फैले ग्रामीण इलाकों में अंधेरा छाते देखा, छाया के पर्दे पूरे परिदृश्य पर छा गए, और हर तरफ उदासी छा गई।

“चलो,” सम्राट झल्लाते हुए सीढ़ियों से नीचे भागा। “उम्मीद है कि बहुत देर नहीं हुई है।”

***

काला रथ बेरोक-टोक टाइलों पर सरपट दौड़ता हुआ तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह अपने रास्ते में खड़ी नक्काशीदार सफेद हाथी की मूर्ति से टकरा नहीं गया। रथ ने आसानी से हाथी को एक तरफ धकेल दिया, और रथ को चलाने वाले हाथ ने आगे बढ़कर गिरे हुए हाथी को टाइल से उठा लिया।

"मैं तो बिल्कुल ही चूक गया था," हिरण्याक्ष ने झुंझलाहट में अपनी जांघ पर हाथ मारते हुए कराहते हुए कहा।

“ध्यान केंद्रित करो, भाई,” होलिका ने विजयी मुस्कान के साथ जीती हुई हाथी की मूर्ति को एक छोटे से लाख के डिब्बे में रख दिया। डिब्बे को हिलाते हुए उसने कहा, “मैंने तुम्हारे लगभग सभी मुख्य मोहरे ले लिए हैं, इसलिए अब तुम्हारे राजा के पतन में ज्यादा समय नहीं लगेगा।”

असुर स्वामी ने एक गहरी साँस ली और भौंहें सिकोड़ते हुए अपने और होलिका के बीच बिछे चतुरंग बोर्ड को देखा। होलिका के काले मोहरे उसकी सफेद मोहरों से कहीं अधिक थे, और उसके अधिकांश मोहरे कम मूल्य के पैदल सैनिक थे। अपने राजा की रक्षा के लिए केवल एक घोड़ा और रानी बचे थे, और होलिका की भविष्यवाणी के अनुसार अंत निकट था। "मैं कभी इतना बुरा नहीं खेलता," उसने गुस्से से कहा। "शायद इसलिए क्योंकि मेरा ध्यान महागुरु और सीमावर्ती लोक पर केंद्रित है।"

होलिका ने जवाब में कहा, "बहाने, बहाने। चलो, अपनी चाल चलो।"

हिरण्याक्ष ठुड्डी पर हाथ रखकर नीचे झुक गया और अपने राजा को संकट से निकालने की योजना बनाने लगा। दूर से आती शापित पाताल गंगा की धीमी गर्जना के अलावा, सभाघर में सन्नाटा छाया हुआ था। असुर स्वामी ने अंततः रक्षात्मक चाल चली, लेकिन अगले ही पल होलिका के घुड़सवारों के पार्श्व आक्रमण में उसका एक और सैनिक शहीद हो गया।

“अरे नहीं!” हिरण्यक्ष ने खेदपूर्वक अपना माथा रगड़ते हुए कहा।

"तुम इससे बेहतर कर सकते हो, भाई।"

हिरण्याक्ष और होलिका चौंककर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। एक साथ, वे दरवाजे की ओर मुड़े, उनकी आँखें आशा से चमक रही थीं और चेहरे मुस्कान से दमक रहे थे।

दरवाजे के पास खड़े उस व्यक्ति को देखकर, जो स्नेह से मुस्कुराते हुए उनकी ओर देख रहा था, वे सब एक साथ चिल्लाए, "भाई!"

अपना खेल छोड़कर भाई-बहन उठ खड़े हुए, तभी हिरण्यकशिपु आगे बढ़ा और अपने भाई-बहनों को बाहों में भर लिया।

"आपको वापस पाकर बहुत खुशी हुई," होलिका ने उत्साह से कहा। "महागुरु ने हमें आपके आने की उम्मीद करने को कहा था।"

"क्या तुम्हारी तपस्या फलदायी रही?" हिरण्याक्ष ने अपने भाई की ओर देखते हुए पूछा, जो उससे आधा हाथ लंबा और थोड़ा चौड़ा भी था। उसका गठीला शरीर काले रंग का था, जबकि उसके बाल और दाढ़ी सुनहरे थे। यह विरोधाभास इतना आकर्षक और असंगत था कि उसके सिर पर उगे बड़े-बड़े सींगों को लगभग नज़रअंदाज़ किया जा सकता था।

"तपस्या अच्छी रही," हिरण्यकशिपु ने उत्तर दिया। वह चतुरंग बोर्ड देखने के लिए आगे बढ़ा। "लगता है आज तुम्हारा दिन अच्छा नहीं है," उसने अपने भाई की ओर मुड़कर मुस्कुराते हुए कहा।

"नहीं," हिरण्यक्ष ने मुँह बनाते हुए कहा। फिर, खुद भी मुस्कुराते हुए उसने कहा, "लेकिन आज जैसे दिन में भी, मैं तुम्हें आँखें बंद करके भी हरा सकता हूँ।"

"चतुरंगा में, हाँ। चौसर में नहीं।"

हिरण्याक्ष ने विरोध किया, "चौसर कोई वास्तविक खेल नहीं है, भाई।"

"क्या तुम ऐसा इसलिए कहते हो क्योंकि तुम इसमें बहुत बुरे हो?" हिरण्यकशिपु ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"अरे भाई," हिरण्यक्ष ने कहा। "पासे फेंकने से जुड़ी किसी भी चीज़ को खेल कैसे कहा जा सकता है? खेल रणनीति, प्रतिद्वंद्वी को मात देने की बुद्धि और केवल अपनी सूझबूझ के दम पर जीवित रहने के बारे में होते हैं। चतुरंग खिलाड़ियों को यही सब प्रदान करता है। खेल में पासे का एक जोड़ा आते ही, आप उसमें भाग्य को शामिल कर लेते हैं, और चौसर जैसे भाग्य के खेल किसी खिलाड़ी के कौशल की निष्पक्ष परीक्षा नहीं हो सकते।"

"मेरी राय में, पासे फेंकने वाले खेल इसलिए श्रेष्ठ हैं क्योंकि उनमें संयोग का तत्व अंतर्निहित होता है," सबसे बड़े भाई ने हंसते हुए कहा। "एक ऐसा तत्व जिस पर खिलाड़ी का कोई नियंत्रण नहीं होता।"

"इससे वे श्रेष्ठ कैसे हो जाते हैं?"

"क्योंकि ये जीवन की वास्तविकता को दर्शाते हैं, भाई। हम हर परिस्थिति के लिए योजना और तैयारी कर सकते हैं, लेकिन जीवन हमेशा कुछ ऐसा सामने ला खड़ा करता है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की होती। आप एक खिलाड़ी के कौशल की निष्पक्ष परीक्षा की बात करते हैं, लेकिन जीवन अप्रत्याशित है, जीवन अन्यायपूर्ण है। फिर भी हम दिन-प्रतिदिन खेल खेलते हैं, अपनी किस्मत को चुनौती देते हैं और उसे मात देते हैं, बाधाओं को पार करते हुए जीत हासिल करते हैं। यही चौसर है। पासा चाहे जैसे भी गिरे, खिलाड़ी को भाग्य को हराने की योजना बनानी ही पड़ती है, जो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है।"

"Hmmm..." Hiranyaksha bit his lip, pondering.

"लेकिन अभी के लिए बस इतना ही," हिरण्यकशिपु ने अपने भाई के कंधे पर थपथपाते हुए कहा। होलिका की ओर मुड़कर उसने पूछा, "मेरी अनुपस्थिति में क्या हो रहा है? और महागुरु कहाँ हैं?"

"भाई, तुम्हें बताने के लिए बहुत कुछ है," होलिका ने उत्तर दिया। "महागुरु सीमावर्ती लोक में हैं।"

"Borderworld?" Hiranyakashipu stared. "Why?"

वह हमारे लिए वीशादा का खंजर लेने गया है।

हिरण्यकशिपु की आँखें फटी रह गईं। "हलाहल? सीमावर्ती दुनिया में?"

"और हाँ, तुम्हें देवलोक जाकर अहि को जगाने के मंत्र लाने हैं," हिरण्याक्ष ने मुस्कुराते हुए कहा।

***

पहला वार महिषा गिरने के कुछ ही मिनटों के भीतर दूसरा वार महिषा भी गिर पड़ा। और तीसरा लगभग अगले ही क्षण अपनी कुल्हाड़ी गिराकर पेड़ से लड़खड़ाते हुए दूर चला गया।

शुक्राचार्य दहशत में आ गए जब उन्होंने देखा कि महिषा अपना गला पकड़ रहा है, हांफ रहा है और सांस लेने के लिए संघर्ष कर रहा है, संजीवनी मंत्र का प्रभाव कम होने के साथ ही उसके फेफड़ों से हवा निकल रही है। महिषा हांफते हुए एक दयनीय कराह के साथ बाहर निकला, फिर उसकी आंखें ऊपर की ओर घूम गईं

और वह अन्य दो मृत महिषाओं के साथ जमीन पर गिर पड़ा, उसके गिरने के प्रभाव से जमीन हिल गई।

प्रधान पुरोहित ने शेष महिषों पर सरसरी नज़र डाली। वे स्वस्थ और सक्षम प्रतीत हो रहे थे, बरगद के तने पर ज़ोरदार प्रहार कर रहे थे और अपनी कुल्हाड़ियों को लकड़ी में गहराई तक धंसा रहे थे। शुक्राचार्य को थोड़ी राहत मिली और उन्होंने असुर सेना की ओर देखा—और जैसे ही उन्होंने दो असुरों को ज़मीन पर गिरते देखा, उनकी चिंता फिर से उमड़ आई। वे हांफ रहे थे और दम तोड़ कर चीख रहे थे, क्योंकि पाताल में मंत्र का प्रभाव समाप्त हो गया था।

"तेज़, तेज़," उसने महिषाओं को उकसाते हुए कहा और अब तक हुए नुकसान का जायज़ा लिया। जहाँ तक वह देख पा रहा था, उन्होंने पेड़ के तने को काटकर लगभग आधा कर दिया था, लेकिन अभी भी बहुत सारा पेड़ काटना बाकी था और काम करने के लिए महिषाओं की संख्या भी कम थी। "तेज़," उसने फिर चिल्लाकर महिषाओं को और तेज़ी से काम करने के लिए प्रेरित किया।

अपनी एड़ी पर घूमते हुए, वह एक असुर के पास गया। "अब तक हमने कितने असुर योद्धा खो दिए हैं?"

"दो दर्जन से ज़्यादा," उसने उत्तर दिया, और शुक्राचार्य ने उसकी आँखों में अनिश्चितता और भय देखा। "और कितनी देर... उक... आह..." उसने महापुजारी का कंधा पकड़ लिया, उसकी आँखें बेजान हो गईं, और फिर वह गिर पड़ी, शुक्राचार्य के अंगवस्त्रम को भी अपने साथ खींच ले गई। वह एक पल के लिए ज़मीन पर तड़पती रही, और फिर शांत हो गई। महापुजारी धीरे से पीछे हटे, झुके और उसके बेजान हाथों से अपना अंगवस्त्रम छुड़ाया। उसे अपने कंधों पर लपेटकर, उन्होंने अपना दंड पकड़ा और कोहरे में आगे बढ़ गए।

"बेताल, तुम कहाँ हो?" वह गुस्से से चीख उठा, उसकी एक आँख गुस्से से लाल हो रही थी। वह कोहरे में घोलमास्टर को ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर बेतहाशा देखने लगा। "बस बहुत हो गया। मुझे अभी खंजर दो।"

उसे जवाब में सिर्फ सन्नाटा मिला।

"यह खंजर तुम्हारे किसी काम का नहीं है, हे भूत-प्रेत के स्वामी। इसे मुझे दे दो और मैं शांति से चला जाऊंगा।"

उसने इंतजार किया। कुछ नहीं हुआ।

"मैं तुम्हें और बॉर्डरवर्ल्ड को नष्ट कर दूंगा, मैं मानव राजा और उसके राज्य को नष्ट कर दूंगा, मैं खंजर के लिए सब कुछ नष्ट कर दूंगा, क्या तुम मुझे सुन रहे हो?" शुक्राचार्य ने कोहरे में हाथ-पैर पटकते हुए चिल्लाया। "मुझे वह दे दो जो मैं चाहता हूँ, और सब कुछ बच जाएगा, घोलमास्टर। जिद्दी मत बनो। मानव राजा पर एक एहसान करो। उसे और उसकी प्रजा को बचाओ।"

प्रधान पुजारी जवाब की प्रतीक्षा करता रहा, पर जब कोई जवाब नहीं आया, तो उसने क्रोध में आकर डंडे को गीली मिट्टी में गाड़ दिया। "ठीक है, जैसा चाहो वैसा करो," वह दहाड़ा। "मैं तब तक नहीं रुकूंगा जब तक मैं तुम्हारा घर जड़ से उखाड़ न दूं, पिशाच स्वामी। तुम्हें अपनी मूर्खता का फल भुगतना पड़ेगा।"

शुक्राचार्य मुड़े और पेड़ की ओर वापस चलने लगे। "जल्दी करो," उन्होंने पुकारा। "इसे गिरा दो।"

महिषाओं ने अपने प्रयास दोगुने कर दिए और अधिक क्रोध के साथ पेड़ पर हमला किया, लेकिन उसी समय, एक और महिषा मुड़ा और लड़खड़ाते हुए कोहरे में गिर पड़ा, उसका दम घुट रहा था और वह कराह रहा था।

अब तक चार महिषा मर चुके थे। शुक्राचार्य ने घबराकर अपनी दाढ़ी में उंगलियां फिराईं, यह सोचते हुए कि क्या बचे हुए महिषा बरगद को गिराने के लिए काफी समय तक जीवित रह पाएंगे। उन्हें यकीन नहीं था, इसलिए वे असुरों की ओर चल पड़े।

"जाओ और महिषों की मदद करो," उसने आदेश दिया। "अपनी तलवारों का प्रयोग करो, अपने भालों का प्रयोग करो, जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसका प्रयोग करो, लेकिन उस शापित वृक्ष को गिरा दो। जाओ, जाओ..."

लाश

"राजगुरु, क्या आप वाकई कुछ और दिनों तक हमारे आतिथ्य का आनंद नहीं लेना चाहेंगे?" वीरयंका ने पूछा, तभी महल के एक सेवक ने सागौन की छोटी मेज पर चावल के क्षीर के तीन कटोरे रख दिए। एक कटोरा उठाकर आचार्य को भेंट करते हुए कलिंग के राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, "हमें एहसास है कि हमने पहले थोड़ा कम आतिथ्य सत्कार किया था, इसलिए हम इसकी भरपाई करना चाहते हैं।"

"हे महाराज, आपकी मेहमाननवाज़ी में कोई कमी नहीं थी," वेतला भट्ट ने क्षीर स्वीकार करते हुए कहा। उन्होंने एक चम्मच क्षीर चखा और प्रशंसा में सिर हिलाया। "आपका यह प्रस्ताव, इस स्वादिष्ट क्षीर की तरह, अत्यंत लुभावना है, और मैं इस सुंदर भूमि को और अधिक देखना चाहता हूँ। लेकिन मैं उज्जैन से बहुत लंबे समय से दूर रहा हूँ, और मुझे डर है कि मेरे राजा और उनकी परिषद को मेरी तत्काल आवश्यकता हो सकती है। इसलिए, भारी मन से, मैं आपसे विदा लेता हूँ।"

वीरयंका ने अपना सिर झुकाया। राजा और रानी, साथ ही अवंती और वंगा से आए उनके अतिथि, एक निजी चबूतरे पर, फ्रैंगिपानी और पारिजात की लताओं से सजे एक भव्य भोज का आनंद ले रहे थे। रानी अभिरामी, सुदासन और अन्य वंगा सरदारों से बातचीत कर रही थीं, जबकि वीरयंका और आचार्य एक छोटे से तालाब के किनारे बैठे थे, जहाँ दो बड़ी कैटफ़िश शांत भाव से चक्कर लगा रही थीं।

"राजगुरु, आपके हमारे पास आने से हमें कितनी खुशी हुई है, यह हम शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते," राजा ने कहा। "हम आपके आभारी हैं।"

"राजगुरु जी, हम आपके आभारी हैं, यह केवल धन्यवाद से कहीं अधिक है," पार्षद के उत्तर देने से पहले ही अभिरामी उनके पास पहुँच गई। उसने बारीक बुने हुए बाँस के पत्तों से बना एक पत्र आगे बढ़ाया। "यह एक छोटी सी भेंट है, हमें उम्मीद है कि यह आपके द्वारा हमारे लिए किए गए कार्य की भरपाई कर देगी।"

"धन्यवाद, मेरी रानी," वेतला भट्टा ने झुककर पत्र स्वीकार किया।

"राजगुरु, आप इसे आराम से पढ़ सकते हैं, लेकिन संक्षेप में, यह एक शाही अनुमति है जो अवंती को ओद्रा के साथ लोहे का व्यापार करने का अधिकार देती है," अभिरामी ने आगे कहा। "यह अवंती और उसके सहयोगियों को श्रीभोज और

श्रीविजया राज्यों के साथ व्यापार करने के लिए तोसाली और उत्तरा तोसाली बंदरगाहों का उपयोग करने की स्वतंत्रता भी प्रदान करती है।"

"धन्यवाद," आचार्य ने फिर से सिर झुकाया।

"इसके अलावा, मैंने पहले ही अपने खानों में सवारों को यह निर्देश देकर भेज दिया है कि वे दस खच्चरों पर लौह अयस्क लादकर तैयार रखें ताकि आप उन्हें अपने साथ उज्जैन वापस ले जा सकें। जब तक आप खानों के पास पहुंचेंगे, खच्चर आपका इंतजार कर रहे होंगे, राजगुरु।"

"आप अत्यंत दयालु हैं, महारानी जी," पार्षद ने तीसरी बार झुककर अभिवादन किया। "यह मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक है, और अवंती इसके लिए आभारी है।"

"हम समझते हैं कि आपको अयस्क की तत्काल आवश्यकता हो सकती है," अभिरामी ने उत्तर दिया। "मुझे उम्मीद है कि हम जो भेज रहे हैं वह फिलहाल पर्याप्त होगा।"

वेतला भट्ट ने सिर हिलाया। खाली कटोरा एक तरफ रखकर उन्होंने भाई-बहन की ओर देखा। "क्या आपको पूरा यकीन है कि आप मगध से आने वाले खतरे का अकेले सामना करने में सक्षम हैं?"

रानी ने कहा, "ओद्रा के पास लगभग पाँच हज़ार सैनिकों की सेना है। कलिंग के पास उससे लगभग सात हज़ार अधिक सैनिक हैं। इस प्रकार इस शहर की रक्षा के लिए बारह हज़ार सैनिक होंगे।"

"मैंने अपनी सेना को पहले ही बुलावा भेज दिया है," वीरयंका ने कहा। "मेरे सैनिक आठ-नौ दिनों में यहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए जब शूरसेना की सेना ऋक्ष पर्वतमाला पर चढ़ाई करेगी, तो हम तैयार रहेंगे। उत्तरा तोसली मगध के हाथ नहीं लगेगी।"

"यह शहर तो सुरक्षित हो सकता है, लेकिन ओद्रा के ग्रामीण इलाकों का क्या होगा?" आचार्य ने पूछा। "अगर मगध की सेना पहले ओद्रा के छोटे कस्बों और गांवों को लूटने और उन पर अत्याचार करने का फैसला करती है, ताकि आपकी सेना को खुले मैदान में बाहर निकाला जा सके, तो आपके सैनिक शहर से बाहर के लोगों की रक्षा कैसे करेंगे?"

"राजगुरु जी, मगध की सेना ओद्रा के ग्रामीण इलाकों को तबाह करने में समय क्यों बर्बाद करेगी, जबकि वे सीधे यहाँ आ सकते थे?" अभिरामी ने जवाब दिया। "मगध को लगता है कि हम समुद्र से हमले की उम्मीद कर रहे हैं, इसलिए वे उत्तरा

तोसाली पर ज़मीन से हमला करने में जल्दबाजी करेंगे। ग्रामीण इलाकों पर हमला करने से केवल खतरे की घंटी बजेगी, जिससे हमें ज़मीनी हमले की चेतावनी मिल जाएगी और हमें उचित बचाव करने का समय मिल जाएगा।"

वेताला भट्टा के चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान खिल उठी। उन्होंने अभिरामी की ओर उत्सुकता से देखते हुए कहा, "तुम युद्ध रणनीति से भलीभांति परिचित हो। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि ओद्रा और कलिंग की युद्ध में न जाने की अनिच्छा का गहरा संबंध युद्धकला के तुम्हारे गहन ज्ञान से है।"

भाई-बहन ने एक-दूसरे की तरफ देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।

आचार्य ने कहा, "मुझे अब चलना चाहिए। अपने राजा विक्रमादित्य की ओर से, मैं अवंती के साथ गठबंधन करने के लिए आपका फिर से धन्यवाद करता हूँ। और मुझे आशा है कि यह एक ऐसी मित्रता की शुरुआत है जो आपके और हमारे आकाश में सूर्य के उदय और अस्त होने तक कायम रहेगी।"

"हमें भी यही आशा है," अभिरामी ने कहा। "उस पत्र में सम्राट को हमारे दरबार में आने का निमंत्रण भी है। हमें उनकी मेजबानी करने में गर्व होगा।"

"और आप भी उनके साथ चल सकते हैं, राजगुरु," वीरयंका ने मुस्कुराते हुए कहा। "इस भूमि के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए, और मेरी अपनी भूमि के उन दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए जिन्हें न देख पाने का आपको अफसोस है।"

"जी हां," पार्षद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "मैं आपको आश्वस्त करता हूं कि सम्राट जल्द से जल्द ओड्रा और कलिंग का दौरा करेंगे। और मैं यह भी कह सकता हूं कि सम्राट भी आपका स्वागत करने में प्रसन्न होंगे—हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है, हालांकि मेरा मानना है कि आने वाले युद्ध में जीत हासिल करने तक इंतजार करना बेहतर होगा।"

"राजगुरु, हम दोनों अपने-अपने युद्ध जीतें," वीरयंका ने अचानक गंभीर स्वर में कहा।

"और आशा है कि हम दोनों एक-दूसरे को अपने युद्ध जीतने में मदद करेंगे," वेतला भट्टा ने झुककर कहा।

***

कमरे के बीचोंबीच जल रहे बड़े कोयले के अंगीठी और दो छोटी अंगीठियों की संयुक्त गर्मी से कक्ष में असहनीय उमस पैदा हो रही थी। गर्म पानी से भरा एक पीतल का कड़ाहा बड़ी अंगीठी के ऊपर रखा था, जबकि छोटी अंगीठियों पर छोटे-छोटे बर्तन रखे थे जिनमें उबलता पानी खौल रहा था। पहले बर्तन में विषैले वज्रनाग पौधे की जड़ें भरी थीं, जबकि दूसरे में वज्रनाग के प्रभाव को कम करने के लिए जड़ों और जड़ी-बूटियों का एक रहस्यमय मिश्रण था। बाकी फर्श पर जड़ों और जड़ी-बूटियों के ढेर लगे थे, जबकि एक अन्य पीतल के बर्तन में उथले पानी में एक दर्जन से अधिक जोंक रेंग रही थीं।

“एक खिड़की खोल दो,” धनवंतरी ने जड़ी-बूटियों के ढेर से बचते हुए पुकारा और विक्रमादित्य की ओर दौड़ पड़ा, जो पलंग पर पीठ के बल लेटे हुए एकदम शांत थे। “सिर्फ एक,” वैद्य ने राजा की कलाई पकड़कर उनकी नब्ज़ जाँचते हुए कहा। “हम नहीं चाहते कि बहुत ज़्यादा ठंडी हवा अंदर आए।”

जब एक कनिष्ठ चिकित्सक ने उनके निर्देशों का पालन किया, तो धनवंतरी ने सम्राट का हाथ छोड़ दिया और दरबार के सहायक चिकित्सक कुंजला के पास चले गए। कुंजला, मताली के बगल में बैठ गए, जो फर्श पर बिछी हुई चटाई पर लेटी हुई थीं।

“वह कैसा है?” धनवंतरी ने पूछा।

“उनकी नाड़ी स्थिर है,” कुंजला ने उत्तर दिया। उन्होंने देवता की आंख खोली और अंदर देखा। “हालांकि, पुतलियां फैल रही हैं।”

"थोड़ी देर में उसे विषनाशक की थोड़ी मात्रा दे दें।"

धनवंतरी मुड़े और वराहमिहिर और क्षपणक के पास आए, जो दरवाजे के पास खड़े होकर, चिकित्सकों को अंगीठियों और उन दो लोगों के बीच आते-जाते देख रहे थे जिन्हें मृत्यु के द्वार से बचाया जा रहा था।

“क्या वे ठीक हैं?” वराहमिहिर ने पूछा।

"फिलहाल तो हां," चिकित्सक ने अपने गोल-मटोल चेहरे से पसीने की एक हल्की बूंद पोंछते हुए उत्तर दिया।

"और क्या वे बॉर्डरवर्ल्ड में प्रवेश कर चुके हैं?"

“मुझे कुछ पता नहीं,” धनवंतरी ने हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। “मुझे नहीं पता कि यह कैसे काम करता है। मुझे यह भी नहीं पता कि इसका कोई फायदा होगा या

नहीं।”

वराहमिहिर ने सिर हिलाया, उन्हें क्षपणक की चिंतित निगाहें दिखाई दे रही थीं। “विक्रम को पूरा यकीन था कि यह कारगर होगा। वह पहले भी ऐसी स्थिति से गुजर चुके हैं, इसलिए उन्हें पता होगा।”

चिकित्सक ने जवाब में एक लंबी आह भरी।

“मेरे मित्र, कोई बात तुम्हें परेशान कर रही है,” वराहमिहिर ने धनवंतरी को उत्सुकता से देखते हुए पूछा। “क्या बात है?”

“मेरे मन में यह विचार आया... हमें कैसे पता चलेगा कि सम्राट कब वापस आने के लिए तैयार हैं? और अगर हमें नहीं पता, तो हम उन दोनों को जहर और उसके इलाज के बीच इसी स्थिति में रखेंगे, भले ही वे होश में आना चाहें।”

वराहमिहिर और क्षपणक ने भय से आँखें फाड़कर एक-दूसरे को देखा। "तुम्हें अभी यह ख्याल आ रहा है?" वराहमिहिर ने हैरानी से चिकित्सक की ओर देखा।

“मुझसे यह उम्मीद तो नहीं की जा सकती कि मैं हर बात सोच लूँ, है ना?” धनवंतरी ने बचाव करते हुए कहा। “ज़हर का विचार तो तुम्हारा ही था। तुम इस समस्या के बारे में भी सोच सकते थे, लेकिन तुमने नहीं सोचा।”

अब आह भरने की बारी वराहमिहिर की थी।

क्षपणक ने कहा, “राजगुरु को विक्रम को वापस लाने का तरीका पता है। शायद विक्रम लौटने के लिए तैयार होने पर कोई संकेत देता हो।”

“शायद, लेकिन अगर हमें इसे पहचानना ही नहीं आता, तो इससे कोई खास मदद नहीं मिलेगी,” धनवंतरी ने नाखुशी से नज़रें फेर लीं। “काश आचार्य अभी यहीं आ जाते—”

"सम्राट की साँसें सामान्य नहीं हैं, वैद्यनाथ।"

राजा के पलंग के पास खड़े कनिष्ठ चिकित्सक की ओर सभी लोग अचानक मुड़ गए।

"पहरेदारों के मुखिया पर नज़र रखो," धनवंतरी ने कुंजला से कहा और विक्रमादित्य के पास दौड़ पड़ा, उसके ठीक पीछे अन्य दो पार्षद भी थे।

धनवंतरी सम्राट के ऊपर झुके, जो पीले पड़ गए थे और उनकी सांसें उथली और अनियमित थीं। राजा की नब्ज़ जाँचते हुए उन्होंने झल्लाकर कहा, "जल्दी करो, ज़हर का असर दूर करो।"

एक कनिष्ठ चिकित्सक ने एक कटोरे में जड़ी-बूटियों से बने काढ़े की दो माप डाली। वह कटोरा धनवंतरी के पास लाया ही था कि राजा बिस्तर पर कांपने लगे, एक पल के लिए उनकी आंखें चौड़ी हो गईं और वे हांफने लगे, फिर वे तकिए पर गिर पड़े और एक क्षीण बेहोशी की हालत में चले गए।

***

विक्रमादित्य को लगा जैसे उनके पैर लड़खड़ा रहे हों और एक पल के लिए उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

वह हाथों और घुटनों के बल गिर पड़ा, उसकी हथेलियों के नीचे ज़मीन नम और ठंडी थी। वह कुछ पल वहीं रुका रहा, सिर नीचे किए, गहरी साँसें लेता रहा और मतली और चक्कर से जूझता रहा, जबकि उसके चारों ओर, ऊपर घने कोहरे से बरगद के विशाल पत्ते धीरे-धीरे नीचे गिर रहे थे।

“मेरे राजा, क्या आप ठीक हैं?”

सम्राट को महसूस हुआ कि देव उनके बगल में झुके हुए हैं। उन्होंने भारी स्वर में सिर हिलाया।

“मेरा हाथ थाम लो, सम्राट।”

विक्रमादित्य ने अपनी दृष्टि साफ़ करने के लिए पलकें झपकाईं। फिर, मताली के सहारे, वह अपने पैरों पर वापस खड़ा हुआ, उसे अभी भी दलदल थोड़ा हिलता हुआ महसूस हो रहा था, मानो वह पानी पर तैर रहा हो।

"क्या आप अब बेहतर महसूस कर रहे हैं, माननीय न्यायाधीश?"

राजा ने सिर हिलाया। शरीर का हिलना-डुलना बंद हो गया था, मतली भी कम हो गई थी। उसने देवता का हाथ छोड़ दिया। "तुम्हारा क्या हाल है?" उसने पूछा।

मैं ठीक हूँ, मेरे राजा।

तो अब हमें और देर नहीं करनी चाहिए। चलिए आगे बढ़ते हैं।

वे फिर से कोहरे में चलने लगे, जो अब पहले की तरह सफेद नहीं था। धुंध में एक धुंधला धूसर रंग समा गया था, मानो बॉर्डरवर्ल्ड में प्रकाश के मंद होने से मेल खाता हो, और दलदल की हवा भी भारी और कर्कश हो गई थी, जिससे चलना बहुत मुश्किल लग रहा था, मानो वे अदृश्य पर्दों को धकेलते हुए आगे बढ़ रहे हों।

और पत्ते गिरने लगे थे। बहुत तेज़ी से नहीं, बल्कि एक के बाद एक लगातार। चौड़े, हरे पत्ते, अभी भी ताज़े और अपनी पूरी खूबसूरती में, लेकिन गिर रहे थे। जैसे पहले कभी नहीं गिरे थे।

बॉर्डरवर्ल्ड बदल रहा था।

विक्रमादित्य ने अपनी गति तेज कर दी और साथ ही नरक की आग से भरी तलवारों को म्यान से बाहर निकाल लिया। देखते ही देखते तलवारों में आग लग गई, छोटी-छोटी लपटें सतहों को छूती हुई किनारों पर झिलमिलाने लगीं।

"क्या हम करीब हैं, महाराज?" देव ने पीछे से उत्सुकतापूर्वक फुसफुसाते हुए पूछा।

"यह कहना मुश्किल है। इस बार सब कुछ अलग है।" सम्राट ने कोहरे में झाँका। "मुझे रास्ता तो पता है, लेकिन... पर मुझे वह मिल नहीं रहा।"

वे थोड़ी दूर और चले, फिर विक्रमादित्य रुक गए और चारों ओर देखने लगे। उन्हें एहसास हुआ कि वे रास्ता भटक गए हैं, क्योंकि रास्ता ही गायब हो चुका था।

"यह तो विचित्र है," उसने हताशा में सिर हिलाते हुए, लगभग खुद से ही कहा।

उसके बगल में खड़े मताली ने कुछ नहीं कहा।

बॉर्डरवर्ल्ड बदल रहा था, और राजा को एहसास हुआ कि उसे जल्द ही इसके बारे में कुछ करना होगा। उसे कोई न कोई समाधान ढूंढना ही होगा।

"एक ही रास्ता बचा है," विक्रमादित्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। "इसमें जोखिम तो है, लेकिन यह एक ऐसा मौका है जिसे हमें लेना ही होगा।" ऊँची आवाज़ में उन्होंने कोहरे में पुकारा।

"मैं तुम्हारी पुकार का जवाब देने आया हूँ, घूलमास्टर। क्या तुम वहाँ हो? क्या तुम मुझे सुन सकते हो?"

***

नाविक झील के पूर्वी हिस्से में, गहरे पानी में था। बाकी लोगों के साथ वह सुबह और दोपहर भर पानी में अंदर-बाहर आता-जाता रहा था, और अब वह थक चुका था। वह चाहता था कि सूरज जल्दी डूब जाए, ताकि खोज खत्म हो सके और वह अपनी नई दुल्हन के पास घर जा सके। अपनी सुंदर पत्नी और घर पहुँचने पर वे क्या

करेंगे, इस ख्याल ने नाविक का ध्यान भटका दिया, इसलिए वह झील के किनारे उगने वाले जलीय खरपतवारों के घने झुंड को लगभग नज़रअंदाज़ कर गया।

इसका मतलब यह था कि वह झाड़ियों में फंसी और डूबी हुई उस चीज को देखने से लगभग चूक गया था। लगभग।

नाव चलाने वाले ने तिरछी नज़र से झाड़ियों को देखते हुए तैरकर पास गया और लंबी, पतली डंडियों को हटाकर देखने लगा—और तुरंत ही उसकी नज़र शव पर पड़ी। मुड़कर उसने पानी में पैर मारकर उसे दूर धकेला और पानी से बाहर आ गया। आँखों से पानी पोंछते हुए उसने दो उंगलियाँ मुँह में डालीं और दूसरे नाव चलाने वालों का ध्यान खींचने के लिए ज़ोर से सीटी बजाई।

"यह क्या है?" उनके नेता ने पूछा।

"मुझे मिल गया," नाविक ने विजय की भावना से भरी आवाज में उत्तर दिया, मानो उसने कोई बड़ी मछली पकड़ी हो। "यहाँ नीचे।"

दो और तैराक नीचे आए और उन्होंने शव को झाड़ियों से निकालने में उसकी मदद की। शव को एक नाव पर उठाया गया, जिसे फिर उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ शव को किनारे पर उतारा जा सके। तब तक यह खबर फैल चुकी थी और पहरेदारों और महल के कर्मचारियों सहित एक बड़ी भीड़ शव को नाव से आते देखने के लिए जमा हो गई थी। जब अंततः शव को नाव से उतारा गया और महल के पुल के पास एक घाट पर रखा गया, तो सभी ने गर्दनें उठाकर शव को देखा।

महल के कुछ पहरेदार शव तक पहुँचने के लिए रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। शव एक मोटी लता से कसकर बंधा हुआ था, उसका सिर और चेहरा एक गहरे, दागदार कपड़े से ढका हुआ था जिसे जूट की रस्सी से गर्दन के चारों ओर कसकर बांधा गया था। शव ने एक सादी सूती धोती पहनी हुई थी और पानी में रहने के कारण उसका रंग पीला पड़ गया था। यह स्पष्ट था कि शव एक पुरुष का था, इसके अलावा और कुछ भी ऐसा नहीं था जिससे यह पता लगाया जा सके कि वह कौन हो सकता है।

वरिष्ठ गार्डों में से एक ने आदेश दिया, "बेलों को हटाओ और कपड़े को खोलो।"

बेलें तो आसानी से खुल गईं, लेकिन जूट की रस्सी पानी सोखकर कस गई थी, जिससे गांठें खोलना मुश्किल हो गया। लेकिन आखिरकार नाविक गांठों को खोलने में कामयाब हो गया और कपड़ा छुड़ा लिया। उसने लाश के सिर से कपड़ा खींचा

और डर के मारे पीछे हट गया, कपड़ा उसके हाथ से छूट गया और वह लाश से दूर हट गया, उसके गले में पित्त उमड़ आया और उसे उल्टी आने लगी।

वह अकेला नहीं था। महल के पहरेदारों से लेकर अन्य नाविकों तक, हर कोई शव से पीछे हट गया, पहले तो उनकी आँखें चौड़ी हो गईं, फिर सदमे और भय से उन्होंने तुरंत अपनी निगाहें हटा लीं। चारों ओर मौजूद दर्शक घृणा से हांफने लगे, कराहने लगे और अपने मुंह और नाक ढक लिए, इस उम्मीद में मुंह फेर लिया कि वे जो कुछ अभी-अभी देखा था उसे भुला सकें।

वह वस्तु जिसे पानी से बाहर निकाला गया था। शव।

***

शुक्राचार्य विशाल बरगद के सामने जमीन पर चहलकदमी कर रहे थे, अपने डंडे को एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलते हुए, वृक्ष की ओर चिंता भरी निगाहों से देखते हुए, उसके क्षुद्र तने को निहार रहे थे। यद्यपि तना काफी पतला हो गया था, फिर भी वह बरगद को सहारा देने के लिए पर्याप्त मजबूत था, और महायाजक के लिए अत्यंत निराशा की बात यह थी कि महिषों द्वारा उसे गिराए जाने का कोई आसार नहीं था।

क्योंकि महिषों की संख्या भी घटकर पंद्रह से पाँच हो गई थी।

ये पाँचों भी पल-पल कमजोर होते जा रहे थे, उनकी कुल्हाड़ियों के वार लकड़ी पर मुश्किल से ही निशान बना पा रहे थे, उनकी साँसें फूल रही थीं। प्रधान पुरोहित जानता था कि उनका हर वार आखिरी हो सकता है। और उसकी असुर सेना का हाल भी कुछ बेहतर नहीं था, अब उनकी संख्या तीस से ज़्यादा नहीं थी, एक बिखरा हुआ समूह तलवारों और भालों से पेड़ पर वार करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नाकाम हो रहा था।

अचानक, प्रधान पुरोहित की नज़र में, बॉर्डरवर्ल्ड पर पूरा हमला एक खराब योजना के रूप में सामने आया—और इसके लिए वह खुद के अलावा किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकता था। उसने गुस्से में खुद से पूछा, उसने दोगुने युद्ध महिषा क्यों नहीं लाए? उसने यह क्यों सोचा कि केवल पंद्रह ही काफी होंगे? और जब वह बेताल से बातचीत कर रहा था, तब उसने महिषाओं को पेड़ काटना क्यों बंद करने

दिया? वे अनमोल क्षण जब महिषा अभी भी संजीवनी मंत्र के प्रभाव में थे, उसके भाग्य और उसके संभावित भाग्य के बीच अंतर पैदा कर सकते थे।

उसने एक बार फिर पेड़ की ओर देखा, और वहाँ एक और महिषा गिर पड़ा, बिना किसी कराह के, जैसे ही प्रकाश गायब हुआ, वह ठंडी सी ज़मीन पर धंस गया। चार महिषा बचे थे। शुक्राचार्य ने मन ही मन आह भरी, हालाँकि यह निराशा की एक सिसकी जैसी निकली। उसे पाताल लौटना होगा और एक और सेना जुटानी होगी, एक और हमले की योजना बनानी होगी, लेकिन वह यह करेगा चाहे यह उसका अंतिम काम ही क्यों न हो। क्रोध से भरते हुए उसने निश्चय किया कि वह बेताल को उसकी गुस्ताखी का बदला चुकाएगा। वह हलाहल पर कब्ज़ा करेगा और सीमावर्ती दुनिया को नष्ट कर देगा।

पेड़ पर आखिरी बार एकटक देखते हुए, प्रधान पुजारी ने फैसला किया कि बेहतर यही होगा कि वह इन लोगों को उनके हाल पर छोड़ दे—वैसे भी इनमें से कोई भी यहाँ से बाहर की यात्रा में जीवित नहीं बचेगा—और पाताल वापस लौट जाए। जितनी जल्दी वह वापस लौटेगा, उतनी जल्दी वह अगली सेना के साथ आकर उस काम को पूरा कर सकेगा जो इन लोगों ने शुरू किया था। निराशा भरे चेहरे के साथ, उसने अपना अंगवस्त्रम कंधे पर डाला और कोहरे में चल पड़ा।

हालांकि, उसने अभी दस कदम भी नहीं उठाए थे कि उसे कुछ आवाज सुनाई दी और वह रुक गया।

उसने सुना।

पहले तो बरगद के पत्तों के जमीन पर गिरने की हल्की सी आवाज के अलावा और कुछ नहीं था।

फिर हवा की दिशा बदल गई और उसने उसे दोबारा सुना।

"...क्या आप हैं? मैं आ गया हूँ..."

वह उस आवाज को पहचानता था।

"...मुझे जवाब दो, घोलमास्टर..."

उसे वह आवाज़ याद थी। उस आवाज़ ने उसे उज्जैन छोड़ने के लिए एक रात का समय और अवंती से निकलने के लिए दो दिन का समय दिया था। और उस आवाज़ ने उसे फिर कभी अवंती में कदम रखने से मना कर दिया था।

मानव राजा यहाँ कटार वापस लेने आया था।

शुक्राचार्य मुड़े और वृक्ष की ओर दौड़े। “रुको,” उन्होंने असुरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ हिलाते हुए चिल्लाया। “रुको।”

असुरों और महिषों ने वृक्ष पर अपना आक्रमण रोक दिया।

“उस पेड़ को भूल जाओ,” महायाजक फुफकारा। “मनुष्यों का राजा बेताल से मिलने और हलाहल को अपने साथ वापस ले जाने आया है। उसे रोकना होगा। मेरे साथ आओ।”

असुर और महिषों ने वृक्ष की ओर पीठ कर ली और शुक्राचार्य के पीछे-पीछे कोहरे में चले गए।

***

“माननीय महोदय, एक घुड़सवार अभी-अभी पलावी की चौकी से लौटा है।”

“हम्म?” वरारुची ने सिर हिलाया लेकिन ऊपर नहीं देखा, बल्कि अपनी कमीज में फटे हुए हिस्से को सिलने में लगा रहा।

“खबर अच्छी नहीं है,” शरमाना ने बताया। “वहाँ के कमांडर का कहना है कि वे सम्राट के इस्तीफे की हमारी मांग का समर्थन नहीं करेंगे। माननीय महोदय, आज सुबह से यह दूसरी चौकी है जिसने अपने वादे से मुकर गई है।”

पार्षद ने सुई को कपड़े में से गुज़ारा, रेशम के धागे को कसते हुए और फटे हुए हिस्से को एक साथ जोड़ते हुए। "और वे एक ही कारण बताते हैं?" उसने अंत में शरमाना की ओर देखते हुए पूछा।

“हां,” कमांडर ने उत्तर दिया।

वररुचि ने सिर हिलाया और सिलाई करने लगी। "देखते हैं सुहासा और अजन्या लावा और अश्वपुरी की टुकड़ियों का समर्थन हासिल करने में कैसे सफल होते हैं।"

“लावा एक बहुत बड़ी सैन्य चौकी है,” शरमाना ने सहमति जताते हुए कहा। “उन्हें अपने पक्ष में लाना एक बड़ी उपलब्धि होगी। कमांडर अजन्या के वहां करीबी संपर्क हैं; वह बहुत आत्मविश्वास से भरे हुए लग रहे थे।”

“दो दिन पहले की बात है,” वरारुचि ने कमांडर को ध्यान से देखते हुए कहा, “जब सम्राट ने शहर की चौकी पर सैनिकों को संबोधित नहीं किया था। आज सुबह से सब कुछ बदल गया है। सारी पुरानी धारणाएँ अचानक बदल गई हैं।”

शरमाना ने सिर हिलाया और कुछ कहने के लिए मुंह खोला, लेकिन आखिरी क्षण में अपना इरादा बदल दिया। पार्षद ने उसकी झिझक को भांप लिया और पूछताछ भरे लहजे में अपनी भौहें उठा लीं।

"मैंने बाहर कुछ आदमियों को बात करते सुना।" शरमाना थोड़ी देर रुकी। "वे सब एक ही बात कह रहे थे। सम्राट ने सीमा पर बर्बरों से लड़ने की कसम खाई है, सम्राट ने हम पर भरोसा जताया है... वही सब आम बातें।"

"इसलिए?"

"तो..." कमांडर हिचकिचाया, "...कुछ नहीं, महाराज। मैं तो बस इतना कह रहा था कि यहाँ के सैनिक भी बहक रहे हैं।"

सैनिकों का प्रभावित होना तय था। विक्रमादित्य विभिन्न सेनापतियों और संरक्षकों को महल में बुलाकर भाषण दे सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। एक अचूक रणनीति अपनाते हुए, उन्होंने केंद्रीय छावनी में ही उन्हें संबोधित किया। वे सैनिकों के पास गए। महल ने उनसे संपर्क साधा। और सभी के अनुसार, यह एक शानदार भाषण था, जिसमें कालिदास को शत्रु बताया गया था, और नरक की अग्नियों ने मनोबल बढ़ाने और समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वरारुचि समझ गए थे कि यह महज़ एक भाषण नहीं था; यह जनमत को प्रभावित करने के लिए रचा गया एक सुनियोजित प्रदर्शन था।

"तो, सम्राट बर्बरों से लड़ने का इरादा रखते हैं। यह अच्छी बात है। लेकिन इस तथ्य का क्या कि सम्राट राजा महेंद्रदित्य के पुत्र नहीं हैं?" सलाहकार ने शरमाना को घूरकर देखा। "महारानी का क्या?"

"पुरुषों को कोई परवाह नहीं है, माननीय न्यायाधीश।"

वररुची ने कमांडर की ओर पलकें झपकाईं, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी बात बीच में ही काट दी गई है, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उस आदमी ने अभी-अभी क्या कहा है।

"पुरुष नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन चाहते हैं। पुरुष यह आश्वासन चाहते हैं कि वे महत्वपूर्ण हैं, कि उनकी देखभाल की जाएगी।" शरमाना कुछ देर रुका। "महामहिम, राजा महेंद्रदित्य का पुत्र न होना उनके लिए कोई मायने नहीं रखता।"

सुई और कुर्ता एक तरफ रखकर, वरारुचि खिड़की से बाहर देखने लगा। सूरज क्षितिज की ओर बढ़ रहा था, जिसे ठीक बाहर उग रहे जामुन के पेड़ की शाखाओं

ने चीर दिया था।

"मुझे आगे की किसी भी जानकारी से अवगत कराते रहना," उसने शरमाना से कहा।

अकेले होते ही वरारुचि उठे और खिड़की के पास गए। बाहर झुककर उन्होंने पास ही रखे दो जामुन तोड़ लिए। उन्हें जामुन वैसे तो पसंद नहीं थे, लेकिन उन्होंने उन्हें अचानक ही तोड़ लिया था, इसलिए उन्होंने एक जामुन मुंह में डाला और उसका रस चखा, जो उनकी जीभ पर खट्टा लग रहा था।

माननीय न्यायाधीश महोदय, पुरुषों को कोई परवाह नहीं है।

अब जबकि शरमाना ने इसे स्पष्ट शब्दों में कह दिया था, वरारुचि ने सच्चाई को उसके वास्तविक रूप में देखा—और उस सुबह से लेकर अब तक जो कुछ भी हुआ था, उसने केवल उस सच्चाई को और पुष्ट किया।

वरारुचि ने निराशा और अविश्वास से जामुन चूसा। उसे कभी यह ख्याल नहीं आया था कि विक्रमादित्य का महेंद्रादित्य का पुत्र न होना अवंती के सैनिकों के लिए इतना बड़ा मुद्दा न हो, जिसके लिए न्याय की आवश्यकता हो। लेकिन विक्रमादित्य सैनिकों को और उनकी भावनाओं को समझ गया था, जिसके कारण केंद्रीय चौकी में भाषण दिया गया था। विक्रमादित्य ने उसे पूरी तरह से मात दे दी थी, और सबसे ज्यादा चुभने वाली बात यह थी कि सैनिकों को गलत समझने के कारण वह आने वाली मुसीबतों को देख भी नहीं पाया था। वरारुचि ने हताशा में जामुन थूक दिया।

दूसरे जामुन को देखकर और उसे न खाने का फैसला करते हुए, पार्षद अपने अगले कदम के बारे में सोचने लगा। अगर सैनिक सम्राट की बातों से प्रभावित हो रहे थे, तो उन्हें रोकना उसके बस की बात नहीं थी। जब विक्रमादित्य ने उनके गहरे डर को दूर कर दिया था और असंतोष की कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी, तो वह उनसे क्या कहता? और अगर सम्राट के पितृसत्तात्मक रवैये से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था, तो उसके पास बात करने के लिए कुछ खास बचा ही नहीं था। इसका मतलब था कि अब उसे प्रलूपी की विक्रमादित्य के लिए बनाई गई योजना पर निर्भर रहना होगा और उम्मीद करनी होगी कि वह योजना उतनी ही बड़ी हो जितनी उसने वादा किया था।

उसने घोटाले का वादा किया था। उसने अपमान का वादा किया था। उसने कहा था कि एक और सलाहकार विक्रमादित्य का साथ छोड़ देगा। उसने यह भी कहा था

कि बदले में वह घटकर्परा को वत्स का राजा बनाना चाहती है। यही सौदा था, यही उसकी शर्तें थीं।

वररुचि ने आह भरी, और दिल ही दिल में चाहा कि उसे अपनी बहन की मदद न लेनी पड़े। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि वो घटकर्परा को वत्स का राजा कैसे बनाएगा, सबको कैसे समझाएगा, लेकिन अगर ऐसा नहीं हो सकता तो उसे ये करना ही पड़ेगा...

पार्षद ने अपना सिर हिलाया और जामुन को ज़ोर से ऊपर उछाल दिया। उसे पेड़ों के बीच से उड़ते हुए झाड़ियों में गायब होते देख, उसके मन में एक निराशाजनक अनुभूति हुई कि चाहे कुछ भी हो जाए, इस बाज़ी में अब उसकी जीत संभव नहीं थी।

***

एक पहरेदार दरवाजे से अंदर घुस आया, धक्का-मुक्की करते हुए क्षपनाका के पास पहुंचा और उन्हें झुककर प्रणाम किया। "महामहिम, बाहर महल का एक पहरेदार है।"

“ठीक है...” क्षपनाका ने उम्मीद भरी निगाहों से गार्ड की ओर देखा।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, उनके पास एक संदेश है।"

“मेरे लिए?”

“खैर, यह महल के रक्षकों के प्रमुख के लिए था,” सैनिक ने कुंजला की देखरेख में लेटी हुई मताली की ओर एक नज़र डालते हुए कहा। “लेकिन चूंकि वह नहीं आ सकते—”

पार्षद ने कहा, "मैं यहां व्यस्त हूं।"

"माननीय न्यायाधीश महोदय, उन्हें झील में शव मिल गया है।"

क्षपणक ने उस व्यक्ति की ओर देखा और सिर हिलाया।

बाहर एक युवा गार्ड इंतजार कर रहा था। पार्षद को देखकर उसने झुककर अभिवादन किया।

"यह किसका शव है?" क्षपणक ने पूछा। अंदर जलते अंगारों की गर्मी के बाद, गैलरी में बाहर का वातावरण काफी ठंडा लग रहा था।

“मुझे नहीं पता, माननीय न्यायाधीश। मुझे तो बस मुखिया को संदेश पहुंचाने के लिए कहा गया था।”

“कोई बात नहीं। क्या आपको पता है कि शव कहाँ है?”

"पुल के पास, माननीय न्यायाधीश।"

मैं इसका ध्यान रखूंगा।

शव को ढूंढने में कोई समस्या नहीं हुई। पार्षद को बस महल के कर्मचारियों की चहल-पहल का अनुसरण करना था, और देखते ही देखते उसने पुल के एक किनारे पर लोगों की भीड़ देख ली। वह भीड़ के पास पहुंची, और उसके आने से लोगों की बातचीत थम सी गई। उसके लिए रास्ता साफ हो गया, और वह लगभग उस किनारे पर पहुंच ही गई थी कि एक वरिष्ठ गार्ड आगे बढ़ा और झुककर प्रणाम किया।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, मुझे क्षमा करें, लेकिन मैं आपको शव देखने की सलाह नहीं दूंगा।"

“क्यों?” क्षपणक ने आँखें सिकोड़ते हुए पूछा। “यह किसका है?”

"हमें पता नहीं।"

मुझे इसे देखने दो।

"जैसा आप चाहें, महोदय।"

वह आदमी एक तरफ हट गया और क्षपनाका पुल के किनारे तक चलकर नीचे घाट की ओर देखने लगी।

सामने का दृश्य देखकर वह सहम गई, उसका पेट विरोध में मचल उठा।

उसने पलकें झपकाईं और खुद को गहरी सांस लेने के लिए मजबूर किया, अपनी घबराहट को काबू में रखते हुए। बड़ी मुश्किल से उसने एक बार फिर लाश को देखा।

गर्दन से नीचे का भाग किसी भी ऐसे पुरुष शव जैसा दिखता था जिसे पानी से निकाला गया हो—रबर जैसी सफेद त्वचा जिस पर मछली के काटने के छोटे-छोटे निशान थे, और धूप में धीरे-धीरे फूलता हुआ पेट। गर्दन से नीचे का भाग बस एक और मृत शरीर था।

गर्दन से ऊपर का हिस्सा तो मानो एक भयानक सपना सच हो गया था।

लाश के चेहरे और सिर से सारी त्वचा और ऊतक हटा दिए गए थे, जिससे केवल गुलाबी-सफेद मांस की एक पतली परत बची थी, जो खोपड़ी से इतनी चिपकी हुई

थी कि नीचे की हड्डी की संरचना दिखाई दे रही थी। पलकें भी छील दी गई थीं, जिससे लाश की आंखें खुली और घूरती हुई लग रही थीं—यहां भी, पुतलियां और निशान दोनों गायब थे, मानो उन्हें नोच कर निकाल दिया गया हो, जिससे केवल खाली सफेद भाग ही दिखाई दे रहा था। चेहरे के निचले हिस्से पर एक भयानक घूरती हुई मुस्कान थी, कटे हुए होंठों से दांत और मसूड़े नंगे दिखाई दे रहे थे, जबकि लाश की नाक और कान कच्चे मांस में धंसे हुए छोटे-छोटे छेद मात्र थे। यह भयावह दृश्य गले पर समाप्त हुआ, जिसे फाड़कर स्वरयंत्र को खाली कर दिया गया था।

क्षपणक को ऐसा लगा मानो किसी ने—या किसी चीज़ ने?—उस अभागे व्यक्ति का चेहरा नोच डाला हो। लेकिन वह कौन था?

जिस तरह का चेहरा उसकी ओर घूर रहा था, उसे देखकर कुछ भी जानना असंभव था।

पार्षद को यह बात खटकने लगी कि झील से शव को निकालने के लिए इतनी मेहनत करने के बावजूद भी इसका रहस्य पूरी तरह से सुलझा नहीं था।

प्रतिनिधित्व करना

मताली को यह समझने में कुछ क्षण लगे कि कोहरे में वाकई कोई आकृति थी और वह उनकी ओर बढ़ रही थी। अपनी तलवार पर पकड़ मजबूत करते हुए और खुद को संभालते हुए, देव ने सम्राट पर एक नज़र डाली। राजा ने भी इसे देख लिया था और वह सतर्क हो गया था, हालांकि वह थोड़ा लड़खड़ा रहा था, मानो नशे में हो,

और अपनी दृष्टि साफ करने के लिए बार-बार पलकें झपका रहा था। दलदल में फैली ठंड के बावजूद, सम्राट के माथे पर पसीना आ रहा था, और मताली ने अपनी गर्दन के पीछे पसीने की एक बूँद बहते हुए महसूस की।

धुंध में धुंधली और अस्पष्ट सी आकृति उभरी, जब तक कि देवता को उसके चारों ओर अग्नि का एक अजीब सा घेरा दिखाई नहीं दिया। लगभग उसी क्षण, उन्होंने महसूस किया कि राजा उनके बगल में आराम से लेट गए हैं।

विक्रमादित्य ने राहत की सांस लेते हुए कहा, "बेताल," और नरक की आग को नीचे करके आती हुई आकृति की ओर कदम बढ़ाया।

तलवार पर अपनी पकड़ बनाए रखते हुए, मताली उनके पीछे-पीछे गया, कोहरा छंटने और बेताल के स्पष्ट रूप से दिखाई देने पर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। उसने पहले केवल घूलमास्टर के बारे में सुना था, और वह भी हमेशा संक्षिप्त रूप से, इसलिए वह उस ज्वलंत बालों वाले प्रेत को देखने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था जो अब उनके सामने खड़ा था, अनंतता के गहरे काले छिद्रों जैसी आँखों से उसे घूर रहा था।

"यह कौन है, राजा?" घोलमास्टर ने पूछा, उसकी आंखें अब लाल धब्बों से चमक रही थीं।

“मेरे महल के रक्षकों का मुखिया,” राजा ने उत्तर दिया। “उस पर भरोसा किया जा सकता है।”

“तो यह अच्छी बात है,” बेताल ने जवाब दिया।

औपचारिकताओं में समय बर्बाद किए बिना, उस पिशाच ने सम्राट की ओर हाथ बढ़ाया... और मताली ने उसकी हड्डियों से बनी मुट्ठी से निकले हुए खंजर की धार देखी। उसकी आँखें चमक उठीं।

वह खंजर जिसने तीनों लोकों को चौथे लोक—सीमावर्ती लोक—में टकराने के लिए प्रेरित किया था।

"मुझे खेद है कि मैं इसे आपके लिए और अधिक समय तक नहीं रख सका, बुद्धिमान राजा," घोलमास्टर ने कहा।

देव की निगाह खंजर पर टिकी हुई थी, जिसका अमूल्य ओब्सीडियन मूठ मुश्किल से ही दिखाई दे रहा था क्योंकि ब्लेड एक हाथ से दूसरे हाथ में जा रहा था।

"और मुझे खेद है कि मैंने तुम पर और बॉर्डरवर्ल्ड पर यह विपत्ति लाई," राजा ने चारों ओर छाए घने कोहरे और धीरे-धीरे गिरते पत्तों को देखते हुए उत्तर दिया। "मुझे खंजर यहाँ लाना ही नहीं चाहिए था। मुझे डर है कि इस अवसर पर मेरी बुद्धिमत्ता विफल हो गई, घूलमास्टर।"

"यही होना तय था, पिछली बार भी यही हुआ था," बेताल ने उत्तर दिया। "लेकिन अब जाओ, इससे पहले कि असुर हमें ढूंढ लें।"

मताली को अपने सीने में तेज दर्द महसूस हुआ, इतना तेज कि तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर गई, और उसने अपनी पसलियों को पकड़कर झुक गया।

"विस्मया," राजा पहले से ही उसके पास थे। उन्होंने नरक की अग्नियों में से एक को म्यान में रख लिया था और देव को कंधे से पकड़े हुए थे। "क्या तुम ठीक हो?"

दर्द कम हो गया। मताली ने सिर हिलाकर तलवार उठाने के लिए झुका। सीधा होते हुए वह सोचने लगा कि क्या उसे अभी हमला करना चाहिए। सम्राट ठीक उसके बगल में खड़ा था, खुला और बेखबर, और वह आसानी से अपनी तलवार राजा पर चलाकर उसे मार सकता था। लेकिन घोलमास्टर एक समस्या थी—उसे नहीं पता था कि बॉर्डरवर्ल्ड का स्वामी उसे रोकने के लिए क्या कर सकता है। और अगर वह घोल को चकमा देकर निकल भी जाता, तो अकेले कोहरे से बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाता। उसे एहसास हुआ कि उसे राजा का कुछ और समय तक साथ रहना होगा।

"मैं ठीक हूँ, महाराज," उसने कहा, और सोचने लगा कि खंजर कहाँ है। तभी उसने उसे राजा की कमरबंद में छिपा हुआ देखा।

"तुम्हें जाना चाहिए," बेताल ने कहा। उसकी आवाज़ में जल्दबाज़ी थी।

"धन्यवाद, मित्र," विक्रमादित्य ने घोलमास्टर की ओर एक बार सिर हिलाते हुए कहा।

बेताल कोहरे में गायब होते देख मताली विक्रमादित्य के पीछे चलने के लिए मुड़ गई। वे मुश्किल से चार कदम ही चले थे कि एक तीखी आवाज ने उन्हें पुकारा।

तो, हम फिर मिलेंगे।

मताली ने दाईं ओर देखा, जहाँ धुंध की पतली चादर में एक छोटा सा व्यक्ति खड़ा था।

Guru Shukracharya.

और उसके ठीक दो कदम पीछे भाले लिए नौ या दस धुंधली आकृतियाँ थीं।

देवता की पहली प्रतिक्रिया घबराहट की थी। यदि मुख्य पुरोहित ने उसका वेश पहचान लिया और विक्रमादित्य के सामने उसकी असली पहचान प्रकट कर दी, तो उसकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।

"उम्मीद है, यह आखिरी बार होगा," विक्रमादित्य ने म्यान में रखी नरक अग्नि तलवार को बाहर निकालते हुए और महायाजक की ओर मुख करते हुए उत्तर दिया।

शुक्राचार्य ने दोनों तलवारों को देखकर मुस्कुराया, जिनकी सतहों पर धीमी लपटें जल रही थीं। "ये यहाँ तुम्हारे किसी काम की नहीं हैं।"

राजा ने महायाजक को घूरकर देखा, लेकिन इससे पहले कि दोनों कुछ कह पाते, सम्राट के पैर अचानक लड़खड़ा गए और वह गिर पड़े। शुक्राचार्य की आँखों में जिज्ञासा की एक चमक आ गई और उन्होंने अपने पीछे खड़े लोगों की ओर इशारा किया।

असुरों को आगे बढ़ते देख, मताली विक्रमादित्य के पास उछल पड़ा, उसकी तलवार ऊपर उठी हुई थी, जिसकी नोक शुक्राचार्य से लेकर पीछे खड़े असुरों तक एक तीखा चाप बना रही थी। “पीछे हटो,” उसने दांत पीसते हुए दहाड़ा, उसके सीने में दर्द और भी तीव्र हो गया था। “पीछे हटो।”

"कृपया ऐसा मत करो।"

मताली ने एक नज़र डाली तो पाया कि भूत-प्रेत का स्वामी लौट आया था और कोहरे में उदास खड़ा था। "राजा को शांति से विदा होने दो," बेताल ने विनती भरे स्वर में कहा, लेकिन शुक्राचार्य ने उसे गुस्से से घूरकर बीच में ही रोक दिया।

“तुम्हें मौके मिले थे, घोलमास्टर,” उसने गुस्से से कहा, “लेकिन तुमने उन्हें गंवा दिया। मैं तुमसे बाद में निपटूंगा।” मुख्य पुजारी ने उत्सुकता से मताली की ओर देखा। “तुम कौन हो? तुम सलाहकारों में से एक नहीं हो।”

"पीछे हट जाओ," देव ने कर्कश स्वर में कहा, इस बात के लिए आभारी था कि उसे पहचाना नहीं गया था।

शुक्राचार्य का ध्यान फिर राजा की ओर गया। “अवंती में हमारी शुरुआत अच्छी रही थी, याद है?” उन्होंने कहा। “हम इसे भी उसी तरह समाप्त कर सकते हैं। हम

मित्र बने भी रह सकते हैं। मुझे कटार दे दीजिए, और यह सबके लिए सुखद अंत होगा।"

विक्रमादित्य अभी भी हांफ रहे थे, हालांकि वे सीधे खड़े होने में कामयाब हो गए थे। अब उन्होंने घने कोहरे और उड़ते पत्तों के बीच से महायाजक की ओर देखा। एक गहरी सांस लेकर वे सीधे खड़े हुए। "क्या तुम्हें याद है, उस शाम महल में उज्जैन छोड़ने से पहले मैंने तुमसे जो आखिरी शब्द कहे थे?" उन्होंने महायाजक को याद करने का समय देने के लिए कुछ देर रुककर कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि अगर हमारी मुलाकात फिर कभी हुई, तो वह सौहार्दपूर्ण नहीं होगी।" सम्राट की आवाज गुस्से से भर उठी। "तुम सीमावर्ती लोक में आकर मेरे मित्र के घर को अपवित्र करते हो और मुझसे मित्रता की उम्मीद करते हो? कभी नहीं। हम कभी मित्र नहीं बनेंगे, और तुम्हें मुझसे कभी कटार नहीं मिलेगी।"

प्रधान पुरोहित की आँखें निराशा से भर उठीं। "तो हम शत्रुओं की तरह लड़ेंगे," उसने गुर्राते हुए असुरों को हमला करने का इशारा किया।

मताली ने देखा कि एक असुर अचानक ज़मीन पर गिर पड़ा, लेकिन इससे पहले कि वह इस पर और कुछ सोच पाता, बाकी नौ असुर उस पर और मानव राजा पर टूट पड़े। देवता ने अपनी तलवार उठाई, और असुर दस कदम ही दूर थे कि एक और असुर लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा। तभी विक्रमादित्य उनके सामने कूद पड़े, सीधे दौड़ते हुए असुरों के रास्ते में, उनके हाथ में नरक की आग जल रही थी और वे चट्टान की तरह स्थिर थे।

राजा ने पहले भाले के वार को रोक दिया, फिर एड़ी घुमाकर अपनी कोहनी से भाला चलाने वाले की गर्दन पर वार किया और श्वास नली को कुचल दिया। उन्होंने दूसरे असुर का सीना चीर दिया, फिर तीसरे असुर के भाले से बचते हुए, असुर के लड़खड़ाने और गिरते ही उसकी गर्दन में भाला घोंप दिया। इसके बाद, जब दो भाले एक साथ उनकी ओर आए, तो सम्राट नीचे झुक गए और उनके नीचे छिप गए, और नरक की आग से हमलावरों के पेट पर वार करते हुए, पहले अंदर की ओर, फिर बाहर की ओर वार किया, जिससे असुरों की आंतें बाहर निकल आईं और वे आश्चर्य से एक-दूसरे को घूरते रह गए।

राजा की फुर्ती और उसके जवाबी हमले की क्रूरता से अभिभूत मताली, विचलित होकर देखता रहा और इसी वजह से वह अपनी ओर बढ़ते असुर को लगभग देख

ही नहीं पाया। असुर लगभग उस पर आ ही गया था, भाला उसकी छाती पर लग रहा था, तभी उसने अपनी तलवार से हमले को रोक दिया। मताली ने भाले को पकड़कर जोर से झटका दिया और जैसे ही असुर का संतुलन बिगड़ा, देव ने अपनी तलवार असुर की पसलियों के बीच से निकाल दी। दो और असुर उस पर हमला करने आए, मताली ने पहले असुर को वार करने का नाटक करके मार गिराया, फिर घूमकर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। चौथे असुर से निपटने के लिए मुड़ते ही उसने देखा कि वह पहले ही नरक की आग से घायल हो चुकी थी।

मताली को फिर से चक्कर आने लगे। चक्कर के थमने का इंतजार करते हुए उसने देखा कि विक्रमादित्य कोहरे में कुछ खोजते हुए आगे बढ़ रहा है।

"तुम कहाँ हो?" सम्राट ने पुकारा। "कायरों की तरह छिपने के बजाय सामने आओ।"

मताली ने चारों ओर देखा तो पाया कि शुक्राचार्य गायब हो गए थे। "वह कहाँ गए?" देवता ने विक्रमादित्य के पीछे चलते हुए बेताल से पूछा।

"एक पल पहले वह यहाँ था, अगले ही पल वह चला गया," घोलमास्टर ने जवाब दिया।

"तुम भाग्यशाली हो कि मेरे तुम्हें ढूंढने से पहले ही असुर सेना का अधिकांश हिस्सा मर चुका था," महापुजारी की आवाज कोहरे से निकली, जिसमें घोर घृणा झलक रही थी। "वरना, इसका अंजाम बहुत अलग होता।"

मताली सम्राट के पास पहुंचा और वे दोनों खड़े होकर कोहरे को देखने लगे।

"जो हो सकता था और जो हुआ है, वे दो बिल्कुल अलग बातें हैं," सम्राट ने उत्तर दिया। "हारने वाले अक्सर उसी में सुकून पाते हैं।"

"यह अच्छी बात है कि आप इसे विजय मान रहे हैं, महाराज," शुक्राचार्य की आवाज़ में व्यंग्य था। "मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अवंती लौट जाएँ और इस विजय के क्षण का भरपूर आनंद लें, जितना हो सके इसका लुत्फ़ उठाएँ—क्योंकि यह आपके इस दुखमय जीवन की अंतिम विजय होगी।"

"मेरी जीत तब तक पूरी नहीं होगी जब तक मैं उन लोगों से हिसाब नहीं चुका लेता जिन्होंने बॉर्डरवर्ल्ड और मेरे राज्य को तबाह किया है। इसकी कीमत चुकानी होगी, और यह कीमत वसूल की जाएगी।" विक्रमादित्य रुक गए। दर्द से कराहते हुए

उन्होंने अपना पेट पकड़ लिया। "क्या तुम मुझे सुन रहे हो? या तुम पहले ही वापस वहीं भाग गए हो जहाँ से आए थे?"

कोहरे से कोई जवाब नहीं आया। सन्नाटा केवल गिरते पत्तों की सरसराहट से भरा हुआ था।

"मुझे लगता है वह चला गया है," मताली ने फुसफुसाते हुए कहा।

विक्रमादित्य ने नरक की आग को म्यान में रखते हुए बेताल की ओर मुड़कर सिर हिलाया। पिशाच सरदार कोहरे में गायब हो गया।

"हमें यहाँ से निकलना होगा।" खुद को आश्वस्त करने के लिए कटार को थपथपाते हुए, सम्राट मृत असुरों के ऊपर से कदम रखते हुए आगे बढ़ने लगा।

***

कुंजाला ने मताली की ओर झुकते हुए कहा, "मुखिया का दिल बहुत तेजी से धड़क रहा है। ऐसा लगता है कि दवा का असर खत्म हो गया है।"

"अगली खुराक में यष्टिमधु की मात्रा बढ़ा दें," धनवंतरी ने विक्रमादित्य की ओर मुड़ने से पहले निर्देश दिए। विक्रमादित्य उठे और जड़ी-बूटियों के ढेर के पास गए, जहाँ से उन्होंने पाँच गहरे लाल रंग के पत्ते तोड़े। पत्तों को तांबे के मूसल में डालकर, वे सम्राट के पास लौट आए।

"वह कैसा है?" वराहमिहिर ने पूछा।

"उसकी हालत बार-बार बिगड़ रही है," धनवंतरी ने frowning हुए जवाब दिया। "उसकी हृदय गति लगातार गिर रही है।"

वराहमिहिर ने देखा कि चिकित्सक ने मूसल से कुचली हुई पत्तियों को निकाला और उन्हें हल्दी के पानी के कटोरे में मिलाया, जो तुरंत खून के रंग का लाल हो गया।

"क्या आपको नहीं लगता कि वे दोनों बहुत लंबे समय से अनुपस्थित हैं?" वराहमिहिर ने धनवंतरी की ओर देखते हुए कहा। "मेरा मतलब है कि राजगुरु के साथ तो ऐसा कभी नहीं था—"

"मैं राजगुरु नहीं हूँ। मुझसे ये सवाल मत पूछो," चिकित्सक ने झल्लाकर कहा। उनका चेहरा तुरंत नरम पड़ गया और उन्होंने अपने दोस्त की ओर देखा। "मुझे

पता है तुम चिंतित हो। मैं भी हूँ। लेकिन हमें बस धैर्य रखना होगा और उम्मीद करनी होगी कि सब ठीक हो जाएगा।”

वराहमिहिर ने धनवंतरी के कंधे को हल्के से थपथपाते हुए कहा, "तुम सही हो। और तुम अपनी पूरी कोशिश कर रहे हो, जो मेरी कोशिश से कहीं ज़्यादा है।"

धनवंतरी ने अपने बनाए मिश्रण में मलमल का एक छोटा सा टुकड़ा भिगोया। फिर उसने धीरे-धीरे कपड़े को विक्रमादित्य के होठों पर निचोड़ा, ताकि तरल धीरे-धीरे, बूंद-बूंद करके अंदर जाए।

***

जब तक नाव क्षिप्रा नदी के तेलयुक्त, काले-हरे पानी में आधे रास्ते तक पहुँच चुकी थी, मताली के सीने में ऐंठन इतनी तीव्र और लगातार हो रही थी कि उसे चप्पू चलाने पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो रही थी। उसे अपने सामने मौजूद दूसरे महत्वपूर्ण कार्य पर भी ध्यान केंद्रित करने में परेशानी हो रही थी—अपने पीछे बैठे उस व्यक्ति से हलाहला लेना, जो दूसरे चप्पू से जूझ रहा था।

देवताओं ने असुरों से युद्ध करते समय विक्रमादित्य की गति और निपुणता देखी थी, उन्होंने इतनी तेज़ी से असुरों का वध किया था कि युद्ध शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गया था। बेशक, जैसा कि शुक्राचार्य ने संकेत दिया था, यदि असुरों की संख्या अधिक होती, तो युद्ध का परिणाम बिल्कुल अलग होता। मुट्ठी भर असुरों से लड़ना और अकेले ही असुरों के पूरे समूह का सामना करना एक ही बात नहीं थी, खासकर तब जब दिति के बच्चों का मुकाबला करने के लिए चुड़ैलों को नहीं बुलाया जा सकता था। फिर भी, सम्राट एक कुशल योद्धा थे, जो खतरों पर तुरंत प्रतिक्रिया देते थे, इसलिए कटार को सावधानी से रखना आवश्यक था।

उसके पास अप्रत्याशित हमला करने का मौका था। और, ज़ाहिर है, राजा का पूरा भरोसा भी।

“विस्मया, तुम ठीक नहीं लग रही हो,” सम्राट ने कहा।

“मैं ठीक हूँ, मेरे राजा,” देव ने धीमी आवाज़ में कहा।

“अच्छा। बस पकड़े रहो और छोड़ना मत। हम पल भर में महल में वापस आ जाएंगे।”

दर्द से कराहते हुए मताली ने ऊपर देखा तो उज्जैनी की प्राचीरें करीब आती नज़र आईं। उसने सोचा, शायद तट पर पहुँचते ही हमला करना सबसे अच्छा होगा। वह नाव से उतरकर ज़मीन पर पहुँचने वाला पहला व्यक्ति होगा, तो शायद वह चप्पू का इस्तेमाल कर सके।

उसके सीने में तेज दर्द हुआ, जिससे उसके विचारों का सिलसिला टूट गया।

दर्द कम हो गया और उसकी दृष्टि साफ हो गई, तभी नाव घाट से टकरा गई। सड़ी हुई पतवार पकड़े हुए मताली नाव से उतरने के लिए खड़ा हुआ, लेकिन तुरंत ही उसे मतली होने लगी और वह जोर-जोर से उल्टी करने लगा। उसे इसके बाद क्या हुआ, कुछ याद नहीं रहा, जब तक कि उसे होश नहीं आया और उसने देखा कि राजा उसे कंधों से पकड़े हुए शहर के द्वार की ओर आखिरी कुछ सीढ़ियाँ चढ़ा रहा है।

हलाहल जीतने का यही सबसे अच्छा मौका समझते हुए, देवता ने अपनी तलवार उठाने की कोशिश की, लेकिन यह देखकर वह भयभीत हो गया कि उसका हाथ सुन्न और पूरी तरह से गतिहीन था। उसने दूसरे हाथ से भी कोशिश की, लेकिन वह भी नहीं हिला। उसने सम्राट की ओर हैरानी से देखा।

मैं अपने हाथों को हिला नहीं सकता।

जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, मताली को लगा कि उनके पैरों में सुन्नपन आ गया है। अगले ही पल, उनके घुटने लड़खड़ा गए और वे लड़खड़ाकर गिर पड़े, केवल विक्रमादित्य के हाथों ने ही उन्हें ज़मीन पर गिरने से रोका।

"सम्राट, मुझे अपने हाथों और पैरों में कोई संवेदना नहीं हो रही है," उसने कमजोर आवाज में कहा।

विक्रमादित्य दर्द से कराह उठे। उन्होंने देवता को सीढ़ियों पर उतारा और फिर हांफते हुए सीढ़ियों को निःसंकोच देखते हुए झुक गए। दर्द थम गया और उन्होंने देवता की ओर देखा।

"अब हम क्या करें?" मताली ने पूछा।

"हम जारी रखेंगे," राजा ने उत्तर दिया।

"मैं चल नहीं सकता, महाराज," देव की आवाज कांप उठी।

विक्रमादित्य ने सिर हिलाकर अपने हाथ देवता की भुजाओं के नीचे डाले और उन्हें ऊपर खींच लिया। जब दोनों सीधे खड़े हो गए, तो सम्राट झुके और मताली को

अपने कंधों पर उठा लिया।

"अब तुम ठीक हो?" उसने पूछा।

"जी हां, माननीय।"

भगवान को अपनी पीठ पर लिए विक्रमादित्य अंतिम सीढ़ी चढ़कर नगर में प्रवेश कर गए। राजा धीरे-धीरे पीछे मुड़े, दर्द या मतली से जूझते हुए बार-बार रुकते रहे। मताली को उनकी प्रगति का अस्पष्ट ही अंदाजा था क्योंकि वह गहरी बेहोशी की हालत में थे। और फिर, वे उस गिरे हुए पीपल के पेड़ के पास पहुँचे जिसने बाहर जाते समय उनका रास्ता रोक रखा था।

वह अब भी उनके रास्ते में रुकावट पैदा कर रहा था।

"मैं तुम्हें पकड़कर उस चीज़ के ऊपर से नहीं चढ़ सकता, इसलिए तुम्हें मुझे कसकर पकड़ना होगा," सम्राट ने मताली से कहा। "क्या तुम पकड़ सकते हो?"

"हम्म्फ," देवता ने सिर हिलाया और विक्रमादित्य की गर्दन और कंधों के चारों ओर अपनी बाहें लपेट लीं।

राजा विशाल तने पर चढ़ने लगा, छाल में पैर जमाने की जगह ढूंढता हुआ, अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करके खुद को ऊपर खींचने लगा। अचानक, वह दर्द से कराह उठा, और फिर, जैसे-जैसे दर्द बढ़ता गया, वह व्याकुलता से चीख उठा—और पेड़ के तने में बनी खांच पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।

वह फिसलकर गिर गया और मताली को भी अपने साथ गिरा दिया।

मताली पीठ के बल ज़मीन पर ज़ोर से गिरा, सम्राट का भार उसके ऊपर था। दर्द ने उसके शरीर को हिला दिया और उसके दिमाग को जकड़ लिया, और वह चीख उठा।

और पलकें झपकाईं।

और उसने दरबार के दूसरे चिकित्सक कुंजला का चेहरा देखा, जो उसे घूर रहा था।

"मुख्य चिकित्सक वापस आ गए हैं," चिकित्सक ने राहत भरी आवाज़ में किसी से कहा और फिर अपनी नज़रें वापस लौटाते हुए बोला, "हम चिंतित थे... आप कैसे हैं?"

मताली ने अपने हाथ अपने चेहरे के पास लाए और उन्हें ध्यान से देखा, अपनी बाहों और कलाई को सावधानीपूर्वक हिलाया और उंगलियों को मटकाया। उसने

अपना सिर उठाया और अपने पैरों को देखा, एक पैर को उठाया और मोड़ा, फिर दूसरे को।

"क्या हुआ?" कुंजला ने उसे ध्यान से देखते हुए पूछा। वराहमिहिर और दो कनिष्ठ चिकित्सक उसे देखने के लिए उत्सुकता से उसके चारों ओर जमा हो गए थे।

"वहाँ पर, मेरे हाथों और पैरों में कोई संवेदना नहीं बची थी," देव ने बताया। "लेकिन मैं ठीक लग रहा हूँ।" उन्होंने उठने की कोशिश की, लेकिन कुंजला ने अपना सिर हिलाया और उन्हें वापस चटाई पर धकेल दिया।

"तुम कमजोर हो। थोड़ा आराम करो।"

धनवंतरी चिंतित भाव से मताली की नजरों के सामने प्रकट हुए। उन्होंने पूछा, "सम्राट कहाँ हैं?"

"क्या वह वापस नहीं आया?" देव ने विक्रमादित्य के बिस्तर की ओर देखते हुए पूछा, जहाँ वह बेसुध पड़ा था। फिर वह आश्चर्य से धनवंतरी की ओर मुड़ा। "हम दोनों एक साथ गिरे, और फिर मैं यहाँ आ गया।"

"कहां गिरा?"

"उस पीपल के पेड़ के पास जो हमारा रास्ता रोक रहा था। वह पेड़ जो शहर की छावनी के पास था।"

धनवंतरी ने सिर हिलाया, स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाया। वह राजा के पलंग की ओर वापस भागा। लगभग सभी उसके पीछे-पीछे चले गए, इसलिए केवल वराहमिहिर ही उसके पास खड़ा रह गया।

"और वो खंजर?" पार्षद ने दबी आवाज़ में पूछा।

"हमें मिल गया। सम्राट के पास है।"

सिर हिलाकर वराहमिहिर लड़खड़ाते हुए विक्रमादित्य के पलंग की ओर बढ़े। मताली कुछ देर अकेले लेटे रहे।

"उसकी नब्ज़ बेहद धीमी है," उसने धनवंतरी को कहते सुना।

मताली उठ बैठा, फिर लड़खड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ। सम्राट के चारों ओर जमा हुए लोगों के पास जाकर उसने एक कंधे के ऊपर से झाँका और देखा कि राजा दीपक की रोशनी में मृत समान पीला पड़ा हुआ है। तभी देवता को यह एहसास हुआ कि शाम हो चुकी है, हालाँकि सूरज अभी पूरी तरह डूबा नहीं था।

"उन्हें कटार मिल गई है," वराहमिहिर ने धनवंतरी से कहा। "वह राजा के पास है।"

धनवंतरी ने सिर हिलाया। "मुझे उसकी नब्ज़ मुश्किल से महसूस हो रही है।" कुछ कहने के लिए वह कुंजला की ओर मुड़ा, तभी मताली बोली।

मैं वापस जाकर उसे ले आ सकता हूँ। मेरा मतलब है, उन्हें।

सबने उसकी ओर देखा। "मैं कर सकता हूँ। मैं वहाँ था, मुझे पता है सम्राट कहाँ है, उसे कहाँ ढूँढना है।" उसने वराहमिहिर से लेकर धनवंतरी तक देखा और उनसे उसे जाने देने की विनती की। वह हलाहल के इतने करीब था, और वह उसे सीमावर्ती लोक में नहीं छोड़ सकता था। उसे बस वापस जाना था, राजा को मारना था और कटार वापस लाना था। फिर, इस कमरे में किसी को पता चलने से पहले ही, वह चला जाएगा—

"यह बहुत खतरनाक है," धनवंतरी ने कहा। "मुझे नहीं पता कि तुम वापस कैसे आए—"

"वह जानता है कि विक्रम कहाँ है," वराहमिहिर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "अगर कोई राजा को वापस ला सकता है, तो वह यही है—"

"मैं अपने राजा को वहाँ नहीं छोड़ सकती। कृपया मुझे जाने दो।" कृपया मुझे जाने दो।

"सम्राट ने सांस लेना बंद कर दिया है।"

कनिष्ठ चिकित्सक की चीख सभी आवाजों से कहीं तेज़ थी, और उसके शब्दों ने कक्ष में सन्नाटा छा दिया। सबने राजा की ओर देखा। धनवंतरी झुके और विक्रमादित्य की नाक के नीचे उंगली रखकर उनकी सांसों का पता लगाने लगे। चिकित्सक की आंखें वराहमिहिर की ओर देखते ही चिंता से चौड़ी हो गईं।

मैंने उनसे कहा कि मैं यह नहीं कर सकती, यह बहुत खतरनाक है, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। उन्होंने बिल्कुल भी नहीं सुनी। और अब? अब मुझे इस बोझ के साथ पूरी जिंदगी जीनी पड़ेगी।

वराहमिहिर अविश्वास भरी निगाहों से राजा को घूरता रहा। मताली को ऐसा लगा मानो कमरे में मौजूद हर कोई सांस लेना बंद कर चुका हो।

धनवंतरी घुटनों के बल बैठ गया और सम्राट का एक हाथ अपने हाथ में लेकर कसकर पकड़ लिया। "विक्रमा, तुम ऐसे नहीं जा सकते," उसकी आवाज़ शोक से

कांप रही थी। "मैं क्षपणक को क्या बताऊँगा? वह विशाखा को क्या बताएगी? तुमने उससे वादा किया था कि तुम वापस आओगे। क्या तुम अपना वादा ऐसे निभाते हो? वापस आ जाओ, विक्रमा, वापस आ जाओ।"

चिकित्सक ने अपना सिर झुकाया और राजा का हाथ उनके माथे पर रखा, तभी उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मताली ने धनवंतरी को पीड़ा से विक्रमादित्य का हाथ दबाते हुए देखा और उसने गौर किया कि दोनों हाथों के बीच से एक गर्म, प्रज्वलित रोशनी निकलकर चिकित्सक की उंगलियों से सम्राट के हाथ पर फैल गई और वहाँ सूखी मिट्टी में पानी की तरह त्वचा में समा गई।

मताली ने धनवंतरी को रुचि से देखा, वहीं चिकित्सक अचानक सतर्क और चौकस हो गया, राजा के चेहरे को आशा भरी निगाहों से देखता रहा, उसकी आंखें चमक रही थीं।

"यह क्या है?" वराहमिहिर ने पूछा।

"कुछ तो हो रहा है," कुंजला ने कहा, और उसकी ओर देखते हुए, मताली ने अनुमान लगाया कि दूसरे चिकित्सक ने भी धनवंतरी से विक्रमादित्य की ओर प्रकाश को जाते हुए देखा था।

"लेकिन क्या?" वराहमिहिर ने बेहतर दृश्य प्राप्त करने के लिए आगे झुकते हुए फिर पूछा।

विक्रमादित्य को खांसी आई और उन्होंने अपनी आंखें खोलीं।

जैसे ही सभी ने राहत की सांस ली और हांफने लगे, मताली की निगाहें राजा के दूसरे हाथ पर पड़ीं, जो बिस्तर पर निष्क्रिय पड़ा था।

हाथ मुट्ठी की तरह बंद था, और मुट्ठी में एक खंजर था।

***

ऊपर पेड़ों के बीच आसमान अभी भी चमकीला नीला था, और सूरज की किरणें सबसे ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर पड़कर पत्तियों को सुनहरा रंग दे रही थीं। लेकिन जंगल के निचले हिस्से के पास, अंधेरा छाने लगा था, धुंधली हवाओं के साथ आठ यात्रियों की ओर गोधूलि बेला बढ़ रही थी। यात्रियों ने रात के लिए अपना डेरा डालना शुरू कर दिया था, डेरा डालने के लिए साफ की गई जगह के बीचोंबीच एक छोटी सी आग खुशी से जल रही थी।

ग्रीष्म ने एक छोटा सा मिट्टी का दीपक जलाया और उसे उठाकर खुले मैदान के किनारे एक पेड़ के पास ले गया। दीपक को पेड़ के तने के पास, ठंडी हवा से बचाते हुए, उसने हाथ जोड़कर एक लंबी और मौन प्रार्थना की। समूह के सैनिक बीच-बीच में उस बूढ़े डाकू को देखते रहे और नाराज़गी भरी निगाहें एक-दूसरे पर डालते रहे, लेकिन शंकु का ध्यान एक छोटी सी लकड़ी को दोनों सिरों से नुकीला बनाने पर केंद्रित था। चार सैनिक इन लकड़ियों को खुले मैदान के चारों ओर बेतरतीब ढंग से गाड़ रहे थे, जिससे घुसपैठियों के लिए एक घनी और कांटेदार कालीन बन गई थी। बाकी दो सैनिक रात के खाने की तैयारी कर रहे थे।

प्रार्थना से उठकर ग्रीष्मा लड़खड़ाते हुए वापस आग के पास बैठ गया और अपने हाथों को गर्म करने के लिए रगड़ने लगा। दंडक में दिन गर्म और उमस भरे होते थे, लेकिन रात होते ही तापमान गिर जाता था।

"बूढ़े आदमी, हमारी मदद करो," खंभों पर काम कर रहे सैनिकों में से एक ने डाकू को पुकारा। "तुम कोई राजा-महाराजा नहीं हो कि मेहनत से बच सको।"

ग्रीष्मा के होंठों पर एक अजीब सा भाव आया, लेकिन उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने सुना ही न हो।

"लेकिन वह बहुत मेहनत कर रहा है," एक अन्य सैनिक ने दबी हंसी के साथ कहा। "क्या तुम नहीं देख सकते कि वह हर शाम हमारे लिए कितनी लगन से वह दीपक जलाता है?"

हंसी और ठहाकों का दौर चलने के साथ ही ग्रीष्मा के चेहरे पर शिकन और गहरी हो गई।

"यह दीपक जंगल की आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए है, ताकि वे हम पर दया करें," उसने गुस्से से कहा। "इसी दीपक ने हमें इतने दिनों तक नुकसान से बचाए रखा है।"

सैनिकों ने सिर हिलाया और थोड़ा और हंसने लगे।

"जिन बातों को तुम नहीं समझते, उन पर मत हंसो," ग्रीष्मा ने गुस्से से कहा। "और मेरा काम तुम्हें दानवों के नगर का रास्ता दिखाना है। सम्राट ने तुम्हारे काम में मदद करने के बारे में कुछ नहीं कहा।"

कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया क्योंकि दोनों व्यक्ति तनावग्रस्त होकर एक-दूसरे को देखने लगे।

"तुम उसमें भी कुछ खास अच्छा काम नहीं कर रहे हो," आग के दूसरी तरफ से खाना परोस रहे सिपाही ने सपाट स्वर में कहा। "दंडका में प्रवेश किए हुए आज चौथा दिन है, और तुम्हारे खुद के कहने के अनुसार, तुम्हें पता ही नहीं है कि आगे किस तरफ जाना है।"

"और तुम बस अपने दीपक पर कीमती सरसों का तेल बर्बाद कर रहे हो," उसके साथी ने बीच में कहा।

"उनकी दया की भीख मांगने के बजाय, आप अपने वन के देवताओं को क्यों नहीं मना लेते कि वे हमें जनस्थान का रास्ता दिखाएं?" सूली पर खड़े लोगों में से एक ने सुझाव दिया।

"तुम मेरे देवताओं का अपमान करते हो," ग्रीष्मा क्रोधित होकर बोली। "वे तुम पर अपना प्रकोप बरसाएंगे—"

"बस करो," शंकु ने नुकीली कील से नज़रें उठाते हुए गुस्से से कहा। "सब लोग, बस करो।" उसने सैनिकों को तब तक घूरा जब तक वे आज्ञाकारी होकर चुप नहीं हो गए। फिर उसकी नज़र डाकू पर टिक गई।

"वे सही कह रहे हैं," उसने चाकू लिए सैनिकों की ओर इशारा करते हुए कहा। "तुमने अपनी उपस्थिति या अपनी अहमियत को साबित करने के लिए कुछ खास नहीं किया है। चार दिन हो गए, और तुम्हें अभी भी नहीं पता कि किस तरफ जाना है..."

"मैंने तुमसे कहा था, जंगल बदल गया है," ग्रीष्मा ने बचाव करते हुए धीरे से कहा। "पुराने रास्ते... अब वहाँ नहीं हैं। पेड़ हर जगह उग आए हैं, और मैं सचमुच..."

"पुराने रास्तों को ढूंढो। मुझे परवाह नहीं कि कैसे। बस उन्हें ढूंढो।"

डाकू ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं कैसे ढूंढ सकता हूँ—"

"अगर कल इस समय तक तुम कोई रास्ता नहीं खोज पाए, तो मैं इसे वन की आत्माओं का संकेत मानूंगा," शंकु ने कहा। "यह संकेत है कि वे हमसे बलिदान मांग रही हैं। मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि आत्माओं का आशीर्वाद पाने के लिए किसका बलिदान देना होगा। मुझे बताया गया है कि प्रिय भक्त हमेशा खास होता है।"

पार्षद ने अपना चाकू उठाया और फिर से नक्काशी करने लगी। ग्रीष्मा आग के ऊपर से उसे देखती रही, उसकी धमकी का मतलब समझ नहीं पा रही थी। खाना

बना रहे सैनिकों में से एक ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराया। "चाहे इधर से जाओ या उधर से, जनस्थान का रास्ता दिखाने की ज़िम्मेदारी तुम्हारी ही होगी," उस आदमी ने धीमी आवाज़ में कहा, हालाँकि शंकु ने उसे सुन लिया।

शंकु ने तिरछी नज़र से देखा कि बूढ़ा डाकू उठकर ज़मीन में खूंटे गाड़ रहे आदमियों के पास गया। जैसे ही वह उनकी मदद करने के लिए नीचे बैठा, शंकु के मन में यह ख्याल आया कि पायोष्णी नदी पार करने के बाद से उन्होंने कितनी कम उपलब्धि हासिल की है। जंगल में अपने दूसरे दिन के अंत तक यह स्पष्ट हो गया था कि अब कोई रास्ता बचा ही नहीं था, जंगल ने सब कुछ अपने कब्जे में ले लिया था। फिर भी, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, वे चारों ओर नज़र रखते हुए जनस्थान की दिशा का पता लगाने के लिए रास्ता खोज रहे थे।

ग्रीष्मा का रास्ता न मिलने का दावा शायद सच ही था, लेकिन शंकु को जल्द ही नतीजे चाहिए थे। वे दंडक वन के भीतर गहरे में थे और उनका राशन खत्म होने लगा था, हालांकि जंगल में इतना भोजन मौजूद था कि वे भूख से मर न जाएं। जंगल बेहद उमस भरा था और परजीवी कीड़े उन पर लगातार हमला कर रहे थे। सभी को कीड़ों के काटने और चकत्ते से तकलीफ हो रही थी और दो लोगों को बुखार भी हो गया था। लेकिन सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि उन्हें लगातार ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई उन्हें देख रहा हो—उनकी गर्दन के पिछले हिस्से में एक झुनझुनी सी हो रही थी, जिसका कारण समझ में नहीं आ रहा था। उनमें से किसी को नहीं पता था कि यह कोई शिकारी है या फिर ये आंखें उन्हीं जीवों की हैं जिनकी तलाश में वे आए थे, लेकिन हर गुजरते पल के साथ डर बढ़ता जा रहा था।

“मैंने सम्राट से कहा था कि यहाँ आना पागलपन है,” डाकू ने ज़मीन में एक खूंटी गाड़ते हुए बुदबुदाया। “ये खूंटियाँ अंधेरे में छिपी चीज़ों को नहीं रोक पाएंगी। वे हमारे पास आएँगी और हम एक-एक करके मरेंगे, जैसे मेरे आदमी मरे थे—”

"अपना मुंह बंद करो और चुपचाप काम करो," उनमें से एक आदमी ने चिढ़कर कहा और अपनी बांह पर बैठे एक कीड़े को भगा दिया।

ग्रीष्मा फिर से चिड़चिड़ी चुप्पी में डूब गई।

सिर उठाकर शंकु ने देखा कि सैनिक घबराकर आसपास के अंधेरे में घूर रहे थे। उसे एहसास हुआ कि उन्हें भी गर्दन में अचानक सिहरन महसूस हुई थी। उन्हें भी फिर से किसी की निगाहें अपने ऊपर महसूस हो रही थीं...

***

महल के सेवक गलियारों में दीपक जला रहे थे तभी मताली उनके पास से गुजरा, उसके कदमों में एक स्पष्ट अकड़ थी, होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। सीमावर्ती लोक की यात्रा से वह जल्दी ही उबर गया था, उस पर कोई स्पष्ट दुष्प्रभाव नहीं पड़ा था, और यद्यपि उसे राजा के साथ अकेले होने पर कटार न छीन पाने का अफसोस था, अब उसे उसका ठिकाना पता था। उसे बस इंद्र को संदेश भेजना था, और फिर आराम से बैठकर देव सेनाओं द्वारा उज्जैन पर आक्रमण शुरू करने का इंतजार करना था।

उसका इरादा था कि झील से मिली उस मूर्खतापूर्ण लाश का मामला सुलझते ही वह यह संदेश भेज देगा।

महल के रक्षकों के प्रमुख होने के नाते, महल की झील में पड़ा शव उनकी समस्या थी, इसीलिए सम्राट के साथ उनके लौटने की खबर मिलते ही उन्हें बुलाया गया था। इंद्र को संदेश देना उनकी प्राथमिकता थी, लेकिन कुछ समय तक यहाँ अपना दबदबा बनाए रखना उनके लिए ज़रूरी था, इसलिए शव को पहले रखा गया। ज़ाहिर है, वे अनभिज्ञता का नाटक करेंगे, शव की भयावहता देखकर स्तब्ध और भयभीत होने का दिखावा करेंगे। फिर, जब सभी इस बात पर सहमत हो जाएँगे कि यह बताना बिल्कुल असंभव है कि यह किसका शव है, तो वे आदेश देंगे कि शव को चुपचाप और गुमनाम तरीके से दाह संस्कार के लिए ले जाया जाए।

और यही विस्मया का औपचारिक अंत होगा। उनके जीवित रहते उन्हें याद करने वाला कोई नहीं था। उनके मरने के बाद भी उन्हें याद करने वाला कोई नहीं है।

यही एक मुख्य कारण था कि मताली ने महल में घुसपैठ करने के लिए विस्मया का रूप धारण करने का फैसला किया था। जी हाँ, उसका और विस्मया का शारीरिक गठन काफी हद तक मिलता-जुलता था, और विस्मया का महल में काफी दबदबा था, उसकी पदवी के कारण उसे लगभग हर जगह पहुँच प्राप्त थी। लेकिन महल के रक्षकों के पुराने प्रमुख के कोई करीबी रिश्तेदार न होने के कारण, अगर वह गलती

से कुछ ऐसा कह या कर देता जिससे उसकी पहचान उजागर हो जाती, तो किसी को पता भी नहीं चलता।

विस्मया की उसी रात मृत्यु हो गई थी और उसके शरीर को झील में बहा दिया गया था, क्योंकि वह एक अकेला व्यक्ति था।

क्षपणक के आदेशानुसार, शव को महल के छोटे आश्रमों में से एक में ले जाया गया था, ताकि वह लोगों की नज़रों से दूर रहे। मताली ने इसी आश्रम की ओर मुड़कर दरवाज़े के पर्दे हटाए और अंदर दाखिल हुए, जहाँ कुछ लोग मौजूद थे। उन्होंने देखा कि क्षपणक एक कनिष्ठ चिकित्सक से बात कर रहे थे, जबकि सात-आठ महल के रक्षक आपस में बातचीत कर रहे थे।

देवता ने क्षपणक को प्रणाम किया, जिन्होंने सिर हिलाकर उत्तर दिया। मातली शव के पास गईं, जो ज़मीन पर पुआल की चटाई पर पड़ा था, जिसका चेहरा और सिर सूती कपड़े से ढका हुआ था। देवता ने महल के पहरेदारों की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखी, लेकिन उन्होंने बस कंधे उचका दिए। मातली शव के पास बैठ गईं और कपड़ा हटाने के लिए हाथ बढ़ाया, तभी क्षपणक ने कुछ कहा।

"यह देखने में अच्छा नहीं लगेगा," उसने चेतावनी दी।

मताली यह बात जानता था। उस कपड़े के नीचे जो कुछ भी था, उसके लिए वही ज़िम्मेदार था। उसे ठीक-ठीक पता था कि क्या होने वाला है।

“कौन है, महोदया?” उसने उसकी ओर देखते हुए पूछा, उसका हाथ कपड़े के ऊपर मंडरा रहा था।

इसका कोई निश्चित तरीका नहीं है।

बेशक, ऐसा नहीं था। मताली ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था। क्रूरता के प्रति किसी प्रेम के कारण नहीं, बल्कि सरासर आवश्यकता के कारण; उसे अपने भेष बदलने के लिए उस आदमी के चेहरे और हाव-भाव—और उसकी आवाज़—की ज़रूरत थी।

देवता ने कपड़ा उठाया। जब पहरेदारों ने विकृत चेहरे को देखकर घृणा से गुर्राया, तो मताली ने भी नाराज होने का नाटक किया और कपड़ा वापस गिराकर अपनी नाक और मुंह ढक लिया।

“यह तो बहुत भयानक है, माननीय न्यायाधीश। हम यह कैसे जान पाएंगे कि यह कौन था?”

क्षपणक ने उत्तर दिया, “यही तो हमारी समस्या है। साथ ही, उसके साथ ऐसा किसने किया?”

जब देवता ने शव को हैरानी से घूरने का नाटक किया, तभी दरवाजे के पर्दे हटाए गए और कुंजला दो पहरेदारों के साथ अंदर आ गया। जैसे ही वैद्य मताली के पास पहुँचा, पहरेदार भी पास आकर उत्सुकता से शव को घूरने लगे।

क्षपनाका ने कहा, "हमें पहचान करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर हमें पता चल जाए कि यह कौन है, तो शायद हम यह पता लगा सकें कि यह किसने किया है।"

“यह मुश्किल होगा, लेकिन हमें कोशिश करनी ही होगी,” मताली ने उठते हुए सहमति जताई। यह मुश्किल नहीं, बल्कि नामुमकिन होगा। और इसीलिए, भविष्यवाणी द्वारा शव को सबके सामने लाने के बाद भी, उसे पकड़े जाने का ज़रा भी डर नहीं था।

"हम शरीर को संरक्षित करने का कोई तरीका ढूंढने की कोशिश कर रहे थे, वैद्यनाथ," क्षपनाका ने कनिष्ठ चिकित्सक कुंजला की ओर इशारा करते हुए कहा।

“यह शरीर की अवस्था पर निर्भर करता है,” चिकित्सक ने उत्तर दिया। पास में रखे एक दीपक को लेकर वह शव की जांच करने के लिए झुका।

सभी लोग चारों ओर जमा हो गए, और मताली ने अपने काम के प्रभाव का और करीब से अध्ययन करने का अवसर लिया। उसने चिकित्सकों को आपस में परामर्श करते देखा, और उसने संतुष्टि से सुना जब कुंजला ने क्षपणक को बताया कि शरीर पहले से ही सड़ रहा है, और इसे दो-तीन दिन से अधिक समय तक संरक्षित नहीं किया जा सकता। उसके बाद इसे नष्ट करना होगा।

“माननीय न्यायाधीश...माननीय न्यायाधीश...”

ये शब्द इतनी जोर से बोले गए थे कि सभी को सुनाई दे गए, इसलिए सभी लोग रुककर देखने लगे।

मताली ने देखा कि बोलने वाला कुंजला के साथ आए दो महल रक्षकों में से एक था। "जी?" उसने अपनी भौंहें उठाईं। "क्या बात है?"

“महाराज,” रक्षक ने देव की निगाहों से बचते हुए क्षपनाका की ओर देखा।

"बोलिए," पार्षद ने हाथ हिलाकर उस व्यक्ति को उकसाया।

"माननीय न्यायाधीश महोदय... मेरे मित्र को लगता है कि वह जानता है कि वह कौन है।"

सभी की निगाहें दूसरे गार्ड पर टिकी थीं, जो एक युवा व्यक्ति था और कमरे में मौजूद अधिकांश अन्य गार्डों की तुलना में पद में कनिष्ठ था।

क्षपणक ने पूछा, "यह कौन है?"

वह आदमी हिचकिचाया और घबराकर कमरे में इधर-उधर देखने लगा, लेकिन बड़े वाले ने उसे कोहनी से धक्का दिया।

"महामहिम," उस युवक ने अपने होंठ चाटते हुए और अपना हौसला जुटाते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यह शव महल के रक्षकों के प्रमुख विस्मया का है।"

कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। मताली घबरा गई और सावधानी से एक कदम पीछे हट गई।

"आपका मतलब उससे है, आपके प्रमुख विस्मया से?" देवता की ओर इशारा करते हुए, क्षपणक ने अविश्वास भरी निगाहों से रक्षक को देखा। "आप कह रहे हैं कि यह उसका शरीर है?"

बाकी पहरेदार दबे स्वर में हंसने लगे और एक-दूसरे को कोहनी मारने लगे, लेकिन बड़े पहरेदार ने अपना गला साफ किया।

"आप सभी कृपया उसकी बात सुनें।" उसने अपने छोटे साथी को प्रोत्साहन देते हुए सिर हिलाया।

"माननीय महोदय," गार्ड ने अपने ऊपर पड़ रही तिरस्कार भरी निगाहों की परवाह न करते हुए कहा। "अगर हम ध्यान से देखें, तो हमें पता चलेगा कि शव की छोटी उंगली का सिरा गायब है... इस हाथ की नहीं, दूसरे हाथ की, वहाँ।"

सभी लोग गर्दन झुकाकर या मुंह बनाकर देखने लगे।

मताली ने गुस्से में अपना बायां हाथ भींच लिया। उसने उंगली को नज़रअंदाज़ कर दिया था, और इसी वजह से उसकी पोल खुल गई थी। उसे एहसास हुआ कि उसे आदमी के सिर और चेहरे पर ही नहीं रुकना चाहिए था। उसे उसके पूरे शरीर को नंगा करके देखना चाहिए था। वह एक कदम और पीछे हट गया।

"विस्मया की छोटी उंगली का एक हिस्सा नहीं है," युवा गार्ड ने कहा। "उसने मुझे बताया कि बर्बरों के खिलाफ युद्ध में उसने वह उंगली खो दी थी। कुछ हफ्ते पहले

एक रात हम बर्बरों के बारे में बातें कर रहे थे, तभी उसने मुझे यह बात बताई। इसीलिए यह बात मुझे आज भी इतनी स्पष्ट रूप से याद है।"

"मुझे याद है," कुंजला ने धीरे से सिर हिलाया। "घाव में संक्रमण हो गया था, और अगर मैं सही हूँ तो धनवंतरी वैद्यनाथ ने उसका इलाज किया था और उसे ठीक कर दिया था।" कमरा अचानक गंभीर हो गया। शव का हाथ उठाकर कुंजला ने ठूंठ वाली उंगली की जाँच की। फिर उसने तीक्ष्ण दृष्टि से मताली की ओर देखा। "हमें अपना बायाँ हाथ दिखाओ।"

"महाराज, उसकी पाँचों उंगलियाँ पूरी हैं," देव ने युवा रक्षक को कहते सुना। "मैंने देखा था, और उसी से मुझे शरीर के बारे में यकीन हो गया।"

"क्या आप इसे समझाना चाहेंगी?" क्षपनाका ने मताली की ओर रुख किया और उसका हाथ उसकी तलवार की ओर बढ़ गया।

मताली ने पार्षद को हल्की सी मुस्कान दी, फिर युवा गार्ड पर गुस्से भरी नज़र डाली। इस दौरान वह लगातार दीवार की ओर पीछे हटता रहा।

"यहाँ से भागने का कोई रास्ता नहीं है।" क्षपनाका ने अपनी तलवार निकाली, और सभी पहरेदारों ने भी उसका अनुसरण किया, उनमें से तीन ने तुरंत निकास द्वार को अवरुद्ध कर दिया।

देवता तब तक पीछे हटता रहा जब तक उसकी पीठ दीवार से न लग गई। उसने फिर मुस्कुराया। फिर वह दीवार के आर-पार फिसलने और रिसने लगा।

"यह क्या है...?" पहरेदारों में से एक चीख उठा।

किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। सभी लोग वहीं जम गए, उनके जूतों के तलवे ज़मीन से चिपक गए।

मताली मुस्कुराया, सबके चेहरों पर दिख रहे हैरानी के भावों का आनंद लेते हुए। फिर, दीवार के आर-पार जाते हुए, वह एक बड़े, हवादार कमरे में पहुँच गया जहाँ महल के कपड़े सूखने के लिए टांगे गए थे।

क्षपनाका को चिल्लाते हुए सुना, "वह बगल वाले लॉन्ड्री में है। उसे बुलाओ।"

पैरों की हलचल मच गई, लेकिन देव पहले ही आगे बढ़ चुका था, लटकते कपड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए, कमरे के दूसरे छोर की ओर दौड़ पड़ा। कुछ दासियाँ उसे लड़खड़ाते हुए देखती रहीं, और उनके भावों से वह समझ गया कि वे आश्वस्त थीं कि महल के रक्षकों का मुखिया पागल हो गया है।

"पहरेदारों को सूचित करो," क्षपनाका ने पीछे से कहीं से चिल्लाकर कहा। "सभी निकास द्वार बंद कर दो और पुल को सील कर दो।"

मताली निर्देशों की बेतुकीपन पर हँस पड़ा। इंसानों ने इतना तो देख लिया था कि उन्हें पता था कि दरवाजे, फाटक और दीवारें उसे अपनी मनचाही जगह जाने से नहीं रोक सकतीं, फिर भी... उसे अपने पीछे कदमों की आहट सुनाई दी। कपड़े धोने के कमरे के अंत तक पहुँचकर वह रेंगता हुआ बाहर निकला और अनाज की बोरियों से भरे एक भंडारगृह में घुस गया। वह मुड़ा और बाईं ओर की दीवार से होते हुए एक खाली चबूतरे में चला गया, जिसे पार करने के बाद वह दाईं ओर एक बंद दरवाजे से होते हुए संगीत वाद्ययंत्रों से भरे एक पर्दे वाले कमरे में पहुँच गया। पीछा करने की आवाज़ें दूर होती जा रही थीं, उसे सुनते हुए वह कमरे को पार करके दूसरे कमरे में चला गया, जो उपयोग न होने के कारण अंधेरा और बदबूदार था।

अपने पीछा करने वालों से फिलहाल छुटकारा पाने के आश्वस्त होकर, देवता ने सांस लेने और स्थिति का जायजा लेने के लिए कुछ देर रुककर अपने असली रूप में लौटने का फैसला किया। इस समय महल में अजनबी होना विस्मया के हमशक्ल होने जितना जोखिम भरा नहीं था।

मताली समझ गया कि महल में इस तरह यूं ही इधर-उधर भटकने से कोई फायदा नहीं होगा। खोज अंतहीन चल सकती थी, और उसके पास समय नहीं था—इंद्र को एक संदेश पहुंचाना था। बेहतर यही था कि वह चुपचाप निकल जाए। बेशक, वह पहले हलाहल की खोज कर सकता था, लेकिन अलार्म बजने के बाद पहरेदार सतर्क हो गए होंगे, और विक्रमादित्य को भी चेतावनी मिल गई होगी। यह जोखिम लेने लायक नहीं था।

फिर भी, एक आखिरी काम बाकी था जिसे करना आवश्यक था।

मताली अंधेरे कमरे से निकलकर एक गैलरी में चला गया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है, वह मुड़ा और सम्राट के कक्षों की ओर चल पड़ा।

महल में अफरा-तफरी मची हुई थी, चारों ओर पहरेदारों की भरमार थी, इसलिए देवता को राजा के शयनकक्ष तक पहुँचने के लिए कई दीवारों और दरवाजों से होकर गुजरना पड़ा। कमरा खाली था, और मताली ने उस पर एक नज़र भी नहीं डाली, बल्कि सीधे बगल वाले कमरे में चले गए। दरवाजे से अंदर कदम रखते ही,

उन्होंने दीवार से सटी मेज को ढूँढा। शयनकक्ष में जल रहे दीपक से कमरे में हल्की रोशनी आ रही थी, लेकिन इतनी रोशनी मेज पर रखी चीज़ों को देखने के लिए पर्याप्त थी।

एक बुझी हुई पीतल की बत्ती। एक स्याही की दवात और कलमों का एक जोड़ा।

और कोई लंबी चीज, जो साटन के एक लंबे टुकड़े की तहों के भीतर छिपी हुई थी।

देवता मेज के पास गए और अपनी उंगलियों को महीन रेशमी कपड़े पर हल्के से फेरा। मुलायम कपड़े को हटाकर उन्होंने म्यान में रखी दो घुमावदार तलवारें दिखाईं। दोनों म्यानों से भारी मूठें बाहर निकली हुई थीं, जो पुराने जानवरों की खाल से बनी थीं।

हाँ।

मन ही मन मुस्कुराते हुए, मताली ने तलवार की म्यान उठाई और उसके वजन से आश्चर्यचकित रह गया। लोहे की सादी मूठ पर उंगलियां फेरते हुए, उसने दूसरी तलवार पर नजर डाली और पुष्टि की कि वह वास्तव में उसके हाथ में मौजूद तलवार की जुड़वां थी।

अचानक ही, देवता ने म्यान से तलवार निकाल ली। मन ही मन उसने सोचा, शायद वह भी इसके योग्य हो... उसने तलवार को ध्यान से देखा, उसे इधर-उधर घुमाकर देखा, मानो उसमें आग लग जाए। पर कुछ नहीं हुआ। धुंधली रोशनी में ठंडी धातु चमकती हुई दिखाई दी। एक गहरी साँस लेकर उसने तलवार को वापस म्यान में रख दिया। उसके हाथों में तो यह एक साधारण लोहे की तलवार थी। केवल विक्रमादित्य के हाथों में ही यह नरक की अग्नि में परिवर्तित हो सकती थी।

इसीलिए विक्रमादित्य से ये तलवारें छीनना अत्यंत आवश्यक था। इनके बिना दिति की चुड़ैलें इंद्र की सेनाओं को उज्जैन को तबाह करने से रोकने के लिए प्रकट नहीं हो सकती थीं। इनके बिना सम्राट नरक की अग्नियों का स्वामी नहीं रह जाता—वह अपने नगर और सर्वज्ञ ईश्वर से किए गए अपने वचन की रक्षा करने में असमर्थ हो जाता।

तलवारों को रेशमी कपड़े में जल्दी से लपेटकर और गठ्ठे को सीने से लगाकर मताली सम्राट के कक्ष से निकल गया। उसे अब वैषदा का खंजर न मिलने का उतना

अफसोस नहीं था—उसके पास नरक की अग्नि थी, जिससे खंजर को ढूंढने का काम काफी आसान हो जाएगा।

उन्हें पता था कि इंद्र उनसे प्रसन्न होंगे।

भाई

वे कह रहे हैं कि सम्राट लगभग मर ही गए थे, माननीय महोदय।

रानी उपश्रुति अपनी दासी को भय से देखती रहीं, उनके मन में उमड़ रहे भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे। अंततः, बड़े पीतल और टिन से बने दर्पण के सामने अपनी कुर्सी से उठकर, हाथ में गुलाब की लकड़ी की कंघी लिए, वह दरवाजे की ओर बढ़ीं। "मुझे उनसे मिलना ही है," उन्होंने किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित किए बिना कहा।

वह कुछ कदम चली और अचानक रुक गई, मानो उसे कुछ याद आ गया हो। उसका चेहरा उतर गया और वह अपने शयनकक्ष के बीचोंबीच रखे बड़े पलंग की ओर मुड़ी। मुलायम सूती रजाई की कई परतों पर लेटकर उसने अपना चेहरा एक बांह के मोड़ में छिपा लिया और सिसकियाँ लेने लगी।

“महारानी जी, क्या आप ठीक हैं?” दासी ने पूछा।

उपश्रुति ने सिर उठाए बिना ही सिर हिलाकर सहमति दी।

“अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए कुछ ला सकता हूँ—”

“मैं ठीक हूँ,” महारानी माँ ने रोते हुए चिल्लाते हुए नौकरानी को नम आँखों से घूरा, उनकी आँखों में लगा काजल बहने लगा था। “बस... बस मुझे अकेला छोड़ दो।”

दासी ने जल्दी से प्रणाम करके उपश्रुति को वहीं छोड़ दिया। उपश्रुति एक पतंगे के साथ अकेली रह गई जो खुली खिड़की से अंदर आ गया था और अब उस अकेले दीपक के चारों ओर तेज़ी से चक्कर लगा रहा था, मानो वह मरने की इच्छा से लौ के बेहद करीब उड़ रहा हो। रानी पलंग पर सिर झुकाए लेटी रही, इतनी शांत कि मानो सो रही हो, लेकिन उसके मन में विचारों की ऐसी अशांत हलचल थी जो उस आत्महत्या करने वाले पतंगे के पंखों की फड़फड़ाहट से भी तेज़ थी।

वे कह रहे हैं कि सम्राट लगभग मर ही गए थे।

उपश्रुति का मन उस रात की यादों में खो गया जब उनके बेटे की पहली बार मृत्यु हुई थी। एक दोपहर अचानक तेज बुखार चढ़ गया और अगले दिन शाम तक महल के सभी चिकित्सक युवा विक्रमादित्य को कोमा में जाने से बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। और फिर अचानक ही उन्होंने उपश्रुति को बताया कि उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा। महारानी माँ को याद आया कि कैसे वह खिड़की के बाहर लटकते अर्धचंद्र को देखकर विलाप कर रही थीं, जब राजा महेंद्रादित्य ने उन्हें अपनी बाहों में भर लिया और उन्हें दिलासा दिया, जबकि उनकी आँखों से बड़े-बड़े आँसू बह रहे थे। उन्हें वह निराशा और अकेलापन याद आया जिसने उन्हें अपनी ठंडी, निर्दयी पकड़ में जकड़ लिया था।

कुंजला के जल्दी से आकर उन्हें यह सूचना देने के बावजूद कि उनका बेटा चमत्कारिक रूप से जीवित हो गया है, उपश्रुति का वह निराशा और अकेलापन कभी दूर नहीं हुआ था, बल्कि एक डर का रूप धारण करके किसी दूर कोने में भूत की तरह मंडरा रहा था। और अब, इतने वर्षों बाद, डर की जगह निश्चितता ने ले ली थी, जब वह अपने इस शयनकक्ष में निराशा और अकेलेपन से जूझ रही थी, अकेली और अपने बेटे द्वारा त्यागी हुई—जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि वह शिव से किए गए वादे को पूरा करने के लिए सीमा लोक की यात्रा पर जाते समय लगभग मर ही गया था।

मैं आपकी रक्षा करूँगा, माँ। क्योंकि आप मेरी माँ हैं, और यह रिश्ता कभी नहीं बदल सकता। और इसलिए भी क्योंकि पिताजी यही चाहते थे। जब उन्होंने मुझे अपनी तलवार दी थी, तब मैंने उनसे वादा किया था कि मैं अपनी आखिरी साँस तक आपकी गरिमा बनाए रखूँगा। माँ, वे आपसे बहुत प्यार करते थे। मैं उनसे किया अपना वादा नहीं तोड़ूँगा।

विक्रमादित्य कभी अपना वादा नहीं तोड़ेंगे, वह जानती थी। उन्होंने उसकी गरिमा बनाए रखने का वादा किया था, और वे इसे निभाएंगे।

काश उसने महेंद्रदित्य से वादा किया होता कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह उससे प्यार करेगा। तब उसे उससे बात करनी पड़ती, उसके चुटकुलों पर वैसे ही हँसना पड़ता जैसे पहले हँसता था, या जब उसका मन करता तो रुद्र वीणा बजाकर सुनाता। तब वह उसे अपने जीवन से इस तरह नहीं निकाल पाता, जब भी मौका मिलता उससे बचता था, और जब मिलना ज़रूरी होता था तो उससे ज़्यादा बात नहीं करता था। वह उसके जीवन का केंद्र था, पूरी ज़िंदगी। उसने जो कुछ भी किया, उसके लिए किया। उपश्रुति यह सोचकर असहनीय दर्द से भर जाती थी कि आजकल उसे उसके जीवन के करीब आने की भी इजाज़त नहीं है।

फिर भी, वह जानती थी कि उसके बेटे का कोई दोष नहीं था। इसके विपरीत, वह पीड़ित था, उसकी हरकतों के परिणाम भुगत रहा था, उसकी गरिमा को बचाए रखने और अपने पितृत्व पर सवाल उठने से रोकने की कोशिश कर रहा था। वह वरारुचि के विद्रोह के बारे में जानती थी और न केवल अपने बेटे पर, बल्कि सिंहासन की सत्ता पर भी इसके प्रभाव को समझती थी। उसका अतीत आदित्य वंश के बेदाग शासन पर एक लंबी छाया डाल रहा था, और यह बोझ उसका बेटा ही उठा रहा था।

"...एक अतिथि, महोदय।"

उपश्रुति को लगा कि नौकरानी की आवाज दूर से आ रही है, जब तक कि उसे यह एहसास नहीं हुआ कि उसने अपना तकिया अपने सिर पर रखा हुआ है।

"क्या?" उसने नौकरानी की ओर चिढ़कर देखा। "क्या मैंने नहीं कहा था कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाए?"

"महारानी माँ, मुझे खेद है, लेकिन आपके यहाँ एक अतिथि हैं।"

"कौन है?" उपश्रुति ने उठकर दरवाजे की ओर झुकते हुए पूछा।

उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह जम सी गई।

दरवाजे पर खड़ी आकृति धुंधली थी, फिर भी महारानी माँ जानती थीं कि वह कौन है। उन्होंने उस आकृति को एक दशक से अधिक समय से नहीं देखा था, फिर भी वह पहचान गईं।

उपश्रुति ने मन ही मन सोचा, "मुझे इसका अंदाज़ा पहले ही हो जाना चाहिए था," और वह उठकर धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ी, उसे पता नहीं था कि आगे क्या होगा। वहाँ खड़ी महिला ने उस दिन से महल में कदम नहीं रखा था जब महेंद्रादित्य उपश्रुति को अपनी युवा दुल्हन बनाकर उज्जैन लौटे थे। उसने महल में आने से तब भी इनकार कर दिया था जब बर्बर लोग अवंती को तबाह कर रहे थे। उसने महल से और अपने पति की दूसरी पत्नी से दूर रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

फिर भी, वह अब महल के अंदर, अपने शयनकक्ष के प्रवेश द्वार पर खड़ी थी।

उशांता। महेंद्रदित्य की पहली पत्नी। वरारुचि की माता।

अंततः यहाँ स्पष्टीकरण मांगने, अपनी प्रतिद्वंदी को धूल चटाने और अपना बदला लेने के लिए आई हूँ।

***

विक्रमदित्य ने मन ही मन सोचा कि दासी की बड़ी-बड़ी बादामनुमा आंखें उसे और क्षपणक को घूर रही थीं, उनकी गहराई और सुंदरता में संदेह और आशंका की हल्की सी झलक थी, जो शायद उनके इरादे से कहीं अधिक प्रकट कर रही थी।

क्षपणक ने पूछा, "क्या आप मुझे एक बार फिर बता सकते हैं कि विस्मय का आपसे क्या संबंध है?"

“माननीय न्यायाधीश महोदय, वह मेरे चाचा हैं।”

“हमें वो मिल गया। लेकिन किस तरह से? मेरा मतलब है—”

“मेरी माँ उनकी बहन थीं... असल में उनकी चचेरी बहन थीं।” उर्वशी थोड़ी देर रुकी। “आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं, महाराज? यह सब किस बारे में है?”

विक्रमादित्य ने यूं ही मुड़कर देखा तो प्रलूपी बालकनी के दरवाजे पर खड़ी होकर बेचैन निगाहों से बातचीत देख रही थी। उसने एक पल के लिए सोचा कि उसकी बहन के चेहरे पर क्या भाव होंगे।

“तुम उज्जैन से नहीं हो,” क्षपणक ने अप्सरा के प्रश्नों को अनसुना करते हुए दृढ़ता से कहा।

“नहीं, मेरा जन्म और पालन-पोषण विश्वपुरी में हुआ था। मेरी माँ की शादी वहीं हुई थी।”

“उसने किस परिवार में शादी की?”

विक्रमादित्य को लगा कि उसने महिला को तनाव में देखा।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, मैं उनके बारे में बात नहीं करना चाहता। उन्होंने मेरी माँ और मेरे साथ बुरा बर्ताव किया था।"

"तुम्हें अचानक ये सब जानने की इतनी इच्छा क्यों हो रही है?" प्रलूपी ने चिढ़कर बीच में ही टोक दिया।

क्षपणक ने राजा की ओर देखा, जिन्होंने अपनी बहन को धैर्य रखने का इशारा किया। फिर उन्होंने सलाहकार को आगे बढ़ने के लिए सिर हिलाकर सहमति दी।

"तुम्हारी माँ अब कहाँ है?"

"माननीय न्यायाधीश, उनकी मृत्यु खराब स्वास्थ्य के कारण हुई। इसीलिए मैं यहां मां के पास आया हूं।"

और आपके पिता?

"वह भी अब इस दुनिया में नहीं रहे। माँ से पहले ही चले गए।" उर्वशी फिर रुक गई। "क्या कोई बात है? आप मुझसे ये सब क्यों पूछ रहे हैं?" उसकी नज़रें विक्रमादित्य की आँखों में गईं और एक पल के लिए ठहर गईं। सम्राट ने फिर से उनमें घबराहट का संकेत महसूस किया। "क्या... क्या माँ ठीक हैं?"

क्षपणक ने सम्राट की ओर एक बार फिर देखा। यही सबसे अहम बात थी, और उनकी समस्या का मूल भी: प्रलूपी की दासी के रूप में सेवा कर रही यह स्त्री कौन थी? क्या वह सचमुच महल के मृत रक्षक प्रमुख की भतीजी थी, जैसा कि वह दावा कर रही थी, या वह महल में चल रहे बड़े धोखे का एक और हिस्सा थी? किस विस्मय ने उसे महल में लाने और प्रलूपी की सेवा में लगाने में भूमिका निभाई थी—वह जिसे उन्होंने पानी से निकाला था, या वह जिसने स्वेच्छा से सम्राट के साथ सीमालोक जाने का फैसला किया था? क्षपणक और विक्रमादित्य यहाँ सच्चाई का पता लगाने आए थे, लेकिन वे जानते थे कि इस तक पहुँचना आसान नहीं होगा; एक भी गलत कदम संभावित उपद्रवी को सतर्क कर सकता था। उन्हें जवाब चाहिए थे, लेकिन इन्हें चतुराई से ही हासिल करना था।

"मिथ्यामयी," क्षपणक ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "अब तक तो आपने महल की झील में मिले शव के बारे में सुन ही लिया होगा। शायद आपको यह भी पता होगा कि शव को आज दोपहर झील से निकाला गया, बुरी तरह क्षत-विक्षत और लगभग

पहचान से परे।” परामर्शदाता कुछ देर रुका। दासी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। “खैर, शव की पहचान हो चुकी है। यह आपके मामा विस्मय का है।”

उर्वशी की आंखें हैरानी से चौड़ी हो गईं और उसने अपनी उंगलियां अपने मुंह पर रख लीं। "नहीं... ओह, नहीं।"

सम्राट को लगा कि महिला के चेहरे के भाव ठीक नहीं हैं—आश्चर्यचकित होने का अभी समय नहीं आया था। विस्मया नाम की नकलची कुछ समय पहले तक महल में सबको बेवकूफ बना रही थी, ऐसे में मिथ्यामयी को सबसे पहले आश्चर्य या उलझन होनी चाहिए थी। कहीं उसे पहले से ही सच्चाई का पता तो नहीं था...

“यह विस्मया कैसे हो सकता है?” प्रलूपी ने पूछा। “मैंने उसे आज सुबह ही देखा था—”

“हमें पूरा यकीन है कि यह वही है, बहन,” विक्रमादित्य ने प्रलूपी की प्रतिक्रिया देखकर प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। उसकी प्रतिक्रिया सही थी, नौकरानी की नहीं।

“मैं जानता हूँ कि यह बहुत कष्टदायक होगा,” क्षपणक ने आगे कहा, “लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। जितने दिन विस्मया का शरीर झील में था, उतने दिनों तक एक और विस्मया यहाँ महल में घूम रहा था और अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा था। इसका मतलब है कि कुछ समय से हमारे पास दो विस्मया थे—एक पानी में मृत, दूसरा यहाँ जीवित। मृत विस्मया, असली विस्मया था। जीवित विस्मया, उसका रूप धारण किए हुए था।”

उर्वशी की आंखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। "वह कहाँ है?"

“कौन?” सम्राट ने अचानक सतर्क होकर पूछा।

“वह... धोखेबाज?”

विक्रमादित्य ने अप्सरा को गौर से देखा। “जब उसका सामना हुआ, तो वह हमें चकमा देकर निकल गया, और अब वह महल से गायब हो गया प्रतीत होता है।”

"ओह..."

राजा को पूरा यकीन था कि राहत के मारे महिला के कंधे झुक गए थे।

“ओह...” उसने फिर कहा, अपना चेहरा हाथों में छिपाकर सिसकते हुए। “माँ...”

“बस करो।” प्रलूपी ने आगे बढ़कर अप्सरा को आलिंगन देते हुए अपनी बाहों में भर लिया। “उसने अपने चाचा को खो दिया है। उसे अकेला छोड़ दो और उसे परेशान करना बंद करो।”

उर्वशी ने कृतज्ञतापूर्वक राजकुमारी की ओर देखा, उसकी हिरणी जैसी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं।

विक्रमादित्य ने गला साफ किया। उन्होंने विनम्रता से कहा, "चूंकि विस्मया का उज्जैन में कोई अपना परिवार नहीं है, इसलिए उनके अंतिम संस्कार का दायित्व आप पर है। हम आपकी सहायता के लिए किसी को भेज देंगे। आप महल की सहानुभूति और समर्थन पर भरोसा रख सकते हैं।"

"धन्यवाद, महाराज," अप्सरा ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया।

क्षपणक और विक्रमादित्य लगभग द्वार पर ही पहुँच गए थे कि राजा रुक गए और पीछे मुड़कर देखा।

आपकी मां का नाम क्या था?

"करुण्य, महाराज," उर्वशी ने आँसुओं के बीच पलकें झपकाते हुए कहा।

और तुम्हारे पिता के?

अप्सरा एक पल के लिए झिझकी। "अय्यान।"

"अय्यान..." सम्राट कुछ सोच में डूबे हुए रुके। "पिताजी विश्वपुरी के एक अय्यान को जानते थे। अपने समय के सर्वश्रेष्ठ घोड़े की नाल बनाने वालों में से एक। क्या वे दोनों एक ही व्यक्ति हो सकते हैं?"

उर्वशी ने अपना सिर हिलाया।

"तुम्हारे पिता क्या करते थे?"

"वह... एक फल विक्रेता था।"

"हम्म... बिलकुल भी वैसा नहीं है।" इतना कहकर विक्रमादित्य प्रलूपी के कक्ष से निकल गए।

क्षपणका उसके बगल में बारह कदम तक चुपचाप खड़ी रही। अंत में उसने पूछा, "तुमने उसके बारे में क्या सोचा?" "कहना मुश्किल है—"

वह झूठ बोल रही है।

पार्षद ने अपने राजा को घूरकर देखा। "सचमुच? क्या आप निश्चित हैं?"

"लगभग।"

क्या आप समझाना चाहेंगे?

"अपने पिता के परिवार के बारे में बात करने में उसकी झिझक अजीब है। मैं समझती हूँ कि अगर परिवार में कलह रही हो तो यह दर्दनाक हो सकता है, लेकिन

मैं इस पर बाद में बात करूँगी। फिर, जब उसे पता चला कि शव विस्मया का है, तो उसे सदमा लगा, जबकि उसे विस्मया का शव होने की बेतुकी बात पर आश्चर्य होना चाहिए था। उसकी प्रतिक्रिया से लगता है कि उसे पहले से ही पता था कि यह विस्मया का शव है। और जब उसे धोखेबाज के बारे में बताया गया, तो उसे अपने मृत चाचा से ज़्यादा उस धोखेबाज में दिलचस्पी थी। अजीब है ना? साथ ही, वह यह जानने के लिए उत्सुक थी कि धोखेबाज कहाँ है, न कि यह कि वह उसके चाचा का रूप क्यों धारण कर रहा था—क्योंकि वह पहले से ही जानती है कि क्यों। अंत में, जब उससे उसकी माँ का नाम पूछा गया, तो उसने आसानी से जवाब दे दिया, लेकिन अपने पिता का नाम बताने में उसे कठिनाई हुई। क्यों? पहला नाम तो उसने पहले से तैयार कर रखा था, लेकिन दूसरा नाम उसे मनगढ़ंत बताना पड़ा। यह जानने के लिए, मैंने उससे घोड़े की नाल बनाने वाले अय्यान के बारे में पूछा।”

"वही जिसे बूढ़ा राजा जानता था," क्षपनाका ने सिर हिलाया।

“मुझे शक है कि पिताजी विश्वपुरी में किसी घोड़े की नाल बनाने वाले को जानते होंगे,” विक्रमादित्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। “यकीनन, अय्यान नाम का तो कोई नहीं। लेकिन मिथ्यामयी को यह बात नहीं पता। ज़ाहिर है, वह यह नहीं कह सकती कि वह वही अय्यान था, और जैसा कि उम्मीद थी, वह इससे इनकार करती है। लेकिन अब, जब मैं यूं ही उससे पूछता हूं कि उसके पिताजी क्या काम करते थे, तो वह फंस जाती है। उसे जवाब देना ही पड़ता है। इसलिए, वह उनके काम के बारे में मनगढ़ंत कहानी बना देती है।”

"फल व्यापारी," पार्षद ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

“विश्वपुरी को संदेश भेजो, उनसे कहो कि वे अय्यान नाम के एक फल व्यापारी को ढूंढें। वह पिछले पच्चीस वर्षों में जीवित रहा होगा। उसका विवाह करुणा नाम की महिला से हुआ था और उसकी कम से कम एक बेटी थी। चलो, विस्मया के परिवार, विशेषकर इस चचेरी बहन करुणा के बारे में भी पता लगाते हैं।” वे परिषद कक्ष के मोड़ पर पहुँच गए थे। “मेरा अनुमान है कि हमें अय्यान या उसकी पत्नी करुणा से मेल खाने वाला कोई नहीं मिलेगा। वे दोनों काल्पनिक पात्र हैं।”

"तो फिर नौकरानी को गिरफ्तार करके उससे पूछताछ क्यों नहीं की जाती?" क्षपनाका ने पूछा।

"क्योंकि हमें उससे कोई शिकायत नहीं है। मैंने अभी जो कुछ भी कहा है, वह सब अनुमान है, पूरी तरह से मेरे अवलोकन पर आधारित है। ऐसा कोई सबूत नहीं है कि उसने कुछ गलत किया है, या हमसे झूठ बोला है।" सम्राट थोड़ी देर रुके। "हालांकि मुझे यकीन है कि उसका कोई मकसद है।" उन्होंने क्षपणक की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे तुम्हें कुछ बताना है। आओ।"

परिषद कक्ष में प्रवेश करते ही विक्रमादित्य अपनी कुर्सी पर आगे की ओर झुक गए। "यह बात अपने तक ही रखना, लेकिन कल रात मिथ्यामयी ने मुझे बहकाने की कोशिश की।"

क्षपनाका सम्राट को घूरती रही, प्रलूपी के कक्ष में घटी घटनाओं का सार बताते हुए उसका क्रोध बढ़ता ही गया। जब तक उसने अपना वर्णन समाप्त किया, तब तक पार्षद का चेहरा क्रोध से लाल हो चुका था और उसने परिषद की मेज पर मुट्ठी भींच ली थी।

"कितनी हिम्मत है उसकी! उसकी ऐसी हरकत करने की हिम्मत कैसे हुई? तुमने पहले कुछ क्यों नहीं कहा?"

"मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं," विक्रमादित्य ने कहा। "मुझे नहीं पता था कि यह महल की दासी की नादानी थी या उसका कोई गहरा मकसद था। चूंकि कोई नुकसान नहीं हुआ था, इसलिए मैंने इस मामले को यहीं छोड़ दिया। लेकिन अब, मुझे संदेह हो रहा है..."

राजा और सलाहकार टिमटिमाते दीपक की रोशनी में चुपचाप बैठे थे, गहन चिंतन में डूबे हुए।

अंत में क्षपनाका ने कहा, "मेरा कहना है कि हमें उसे गिरफ्तार करके उससे पूछताछ करनी चाहिए।"

"ठोस सबूत के बिना, इसका कोई फायदा नहीं," सम्राट ने सिर हिलाते हुए जोर देकर कहा। "हमें उसे खुद को दोषी साबित करने का मौका देना होगा। बेहतर यही होगा कि वह सोचे कि उसने हमें बेवकूफ बनाया है; फिर शायद वह गलती कर बैठेगी और खुद को बेनकाब कर देगी। लेकिन यह सुनिश्चित करें कि उस पर कड़ी निगरानी रखी जाए। मैं उसके हर काम के बारे में जानना चाहता हूँ।"

***

ठंडे संगमरमर के फर्श पर हड्डियों के घिसटने और लुढ़कने की आवाज़ हिरण्याक्ष के कानों तक बार-बार पहुँच रही थी, जब वह पाताल गंगा से उठते कोहरे को निहार रहा था। उसकी बलिष्ठ भुजाएँ छाती से कसकर बंधी हुई थीं, और उसके घुमावदार मेढ़ों के नीचे उसका माथा सिकुड़ा हुआ और काँप रहा था, मानो वह किसी प्रचंड क्रोध को दबाने के लिए संघर्ष कर रहा हो—जो शुक्राचार्य के सीमालोक से लौटने के बाद से ही था।

हड्डियों को समेटकर फिर से नीचे फेंकने की आवाज़ सुनकर असुर स्वामी ने पीछे मुड़कर शुक्राचार्य की ओर देखा, जो घुटनों के बल बैठे थे और उनके सामने ज़मीन पर एक मंडल बना हुआ था। महापुजारी हड्डियों को पढ़ने में मग्न थे, हलाहल से संबंधित हर छोटी से छोटी बात को ध्यान से पढ़ते हुए वे गहरी भौंहें चढ़ाए बैठे थे और हर गूढ़ उत्तर को सही ढंग से समझने का प्रयास कर रहे थे। लौटने के बाद से उन्होंने शायद ही कोई शब्द बोला हो; व्याकुल और परेशान होकर वे सीधे हड्डियों के पास चले गए थे, हिरण्याक्ष और होलिका को बेसब्री से उनका इंतज़ार करते हुए छोड़कर।

"देवताओं ने हमसे पहले ही बढ़त हासिल कर ली है," प्रधान पुजारी ने मुंह बनाते हुए चुप्पी तोड़ी।

“उनके पास खंजर तो नहीं है ना?” होलिका की आवाज में घबराहट झलक रही थी, जब वह दूसरी खिड़की से मुड़कर महागुरु को देखने लगी।

“नहीं, कटार अभी भी विक्रमादित्य के पास है,” शुक्राचार्य ने हड्डियाँ समेटते हुए और खड़े होते हुए उत्तर दिया। “लेकिन देवता पहले से कहीं अधिक उसके करीब हैं।”

“महागुरु, उन्होंने यह कैसे कर दिखाया?” हिरण्याक्ष ने असंतोष से भौंहें चढ़ा लीं।

“इंद्र ने चतुर मताली और उर्वशी को राजा के महल में घुसपैठ करने के लिए भेजा। उनका भेष इतना अच्छा था कि विक्रमादित्य को ज़रा भी शक नहीं हुआ—यहाँ तक कि उन्होंने मताली को अनजाने में ही सीमालोक में खंजर वापस लाने में मदद के लिए बुला लिया।” शुक्राचार्य ने अविश्वास से अपनी दाढ़ी को उंगलियों से संवारा। “हलाहल देवता के हाथ की पहुँच में था, लेकिन एक पल के लिए भी राजा या मुझे इसका एहसास नहीं हुआ।”

"क्या ऐसा संभव है कि राजा ने हमारे खिलाफ देवताओं के साथ गठबंधन कर लिया हो?" असुर स्वामी की सुनहरी आंखें आशंका से सिकुड़ गईं।

"हड्डियों से मुझे पता चलता है कि मनुष्यों ने मताली का भेस पहचान लिया है, और देव महल से भाग गया है। इससे उनके बीच किसी भी गठबंधन की संभावना खत्म हो जाती है।"

"अप्सरा का क्या होगा?" होलिका ने पूछा।

"वह अभी भी महल में है। संभवतः, उसका भेस अभी भी बरकरार है।"

"यह तो चिंताजनक है," हिरण्यक्ष ने मुंह बनाते हुए कहा।

शुक्राचार्य ने सिर हिलाया। "मुझे इस बात की भी चिंता है कि तक्षक और त्रिभानु के नेतृत्व में नागों और किन्नरों की सेना अवंती पर हमला करने के लिए पूरी तरह तैयार है। वे राज्य के करीब हैं और किसी भी क्षण हमला कर सकते हैं।"

"मनुष्य नागों और किन्नरों का सामना करने में सक्षम होने चाहिए," हिरण्याक्ष ने आशा भरी निगाहों से प्रधान पुरोहित की ओर देखते हुए कहा। "राजा नरक की अग्नियों का स्वामी है, और उसकी परिषद में नौ मोती शामिल हैं..."

"सच है। लेकिन याद रखना कि नौ मोतियों की शक्ति काफी कम हो गई है, और मनुष्य बहुत कमजोर हो गए हैं। यह भी संभव है कि नाग और किन्नर केवल राजा का ध्यान भटकाने के लिए वहां मौजूद हों, ताकि उर्वशी कटार की खोज में स्वतंत्र हो सके।"

हिरण्याक्ष और होलिका ने एक-दूसरे को भयभीत होकर देखा। "हम देवताओं को जीतने नहीं दे सकते," डायन की रानी ने कहा।

"हम इतनी दूर हैं कि मनुष्यों की जीत की आशा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते," प्रधान पुजारी ने कहा। गुस्से से सिर हिलाते हुए और खेद से उन्होंने आगे कहा, "अगर मैं सीमावर्ती दुनिया में बड़ी सेना लेकर गया होता, तो ऐसा कभी नहीं होता। मैंने संजीवनी मंत्र की शक्ति का गलत अनुमान लगाया था, और विक्रमादित्य ठीक समय पर वहाँ पहुँच गए..."

"महागुरु, हमें बीते हुए कल पर पछतावा नहीं करना चाहिए," होलिका ने कहा। "इसके बजाय, हमें अपनी ऊर्जा आगे जो भी करने की आवश्यकता है, उसे करने में लगानी चाहिए।"

"आप सही कह रहे हैं," शुक्राचार्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। "हम एक झटके को अपने ऊपर हावी नहीं होने दे सकते।"

"हमें उज्जैन पर यथाशीघ्र आक्रमण करना चाहिए," हिरण्यक्ष ने कहा। "यदि देवता किसी कारणवश विलंब करते हैं, या उनकी योजनाएँ विफल हो जाती हैं, तो भी हम कटार को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।"

"जी हां," प्रधान पुरोहित ने सोच-विचार करते हुए कहा। "हिरण्यकशिपु का हमारे साथ होना आदर्श होता, परन्तु वह देवलोक की ओर अग्रसर है, इसलिए हम स्वयं ही यह कार्य करेंगे।" उन्होंने असुर स्वामी की ओर देखा। "व्यालों को तैयार करने और युद्ध के लिए तैयार करने का आदेश दीजिए। मैं अमरका और चंदासुर को प्रस्थान की तैयारी करने का आदेश देता हूं।"

***

दस कदम की दूरी पर खड़ी, और लगभग चार दशकों से पनप रही प्रतिद्वंद्विता और अविश्वास से अलग हुई, रानी उपश्रुति और उषांथा एक-दूसरे को घूर रही थीं। दीपक की टिमटिमाती रोशनी से शयनकक्ष का एक छोटा सा हिस्सा रोशन था, बाकी कमरा अथाह अंधेरे में डूबा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो महल थम गया हो, सारी आवाज़ें अचानक शांत हो गई हों, मानो उस पल के सम्मान में, जिसने मृत राजा की दोनों पत्नियों को एक साथ ला खड़ा किया था।

"आखिरकार," उपश्रुति ने आह भरी।

"अगर मुझे पहले पता होता तो मैं आ जाती," उशांत ने जवाब दिया। "जहां मैं रहती हूं, वहां खबरें पहुंचने में समय लगता है।"

उपश्रुति ने उशांत का आकलन करते हुए कुछ देर मौन धारण किया। "मुझे लगता है कि आप सच्चाई जानना चाहते हैं, कि इंद्र द्वारा लगाए गए आरोपों में कोई सच्चाई है या नहीं?" वह राजा की पहली पत्नी की ओर थके हुए स्वर में पीठ फेरकर खड़ी हो गईं।

"मैं यहाँ इसलिए नहीं आया हूँ। मैं विक्रम के लिए आया हूँ।"

रानी के माथे पर एक शिकन आ गई। उसने असमंजस में उषांथा की ओर पलकें झपकाईं।

“विक्रमा को जो कुछ सहना पड़ा, उसके लिए मुझे बहुत दुख हो रहा है,” उशांता ने आगे कहा। प्रकाश के करीब आकर उसने महारानी माँ को गौर से देखा। “क्या आपको यह एहसास नहीं है कि आपके कार्यों के कारण ही आपके पुत्र और इस राज्य पर यह संकट आया है?”

उपश्रुति ने उशांत को संदेह भरी नजरों से देखा। “विक्रमा की तुम्हें इतनी परवाह क्यों है? वह तो तुम्हारा बेटा भी नहीं है...”

उशांत ने रानी को दया भरी नजरों से देखा। "उपश्रुति, मुझे उम्मीद नहीं है कि तुम कभी इसे समझ पाओगी," उसने सिर हिलाते हुए कहा।

महारानी माँ मुड़ीं और अपने बिस्तर पर चली गईं। भारी मन से बैठते हुए उन्होंने गुलाब की लकड़ी की कंघी उठाई और अनमने ढंग से अपने बालों में फेरने लगीं, उनकी नज़रें दीपक पर टिकी हुई थीं। पतंगे के पंख जल गए थे और अब वह तेल में आधा डूबा हुआ धीरे-धीरे मर रहा था, छोटी-छोटी साँसें और साँसें भरते हुए उसकी जान निकल रही थी।

“काश हम भविष्य देख पाते और अपने कर्मों के परिणाम जान पाते,” उसने बेमन से कहा, मानो खुद से ही बात कर रही हो। “हम कितने समझदार और सावधान होते।” उपश्रुति ने उशांता की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू भरे थे, और अब जब वह बोली, तो उसकी आवाज़ धीमी थी। “मैं बस इतना ही कह सकती हूँ कि मुझे खेद है। अगर मुझे पता होता कि एक दिन राज्य इस तरह बिखर जाएगा, तो मैं कभी भी देवों के आकर्षण में नहीं पड़ती, कभी नहीं। मैंने राजा महेंद्रादित्य के साथ अन्याय किया, और इसी वजह से मेरे कुकर्म विक्रम और मुझे सता रहे हैं।”

उपश्रुति ने अपनी निगाहें अपने हाथों पर टिका दीं, जो उसकी गोद में निष्क्रिय और पराजित अवस्था में पड़े थे। उशांता की आँखों के कोने सिकुड़ गए और वह रानी की ओर एक और कदम बढ़ी। लेकिन खुद को रोकते हुए, वह सीधी खड़ी हो गई और उसकी आँखें कठोर हो गईं।

“यद्यपि तुमने महेंद्र के साथ घोर अन्याय किया, लेकिन जिन कार्यों का मैं जिक्र कर रही हूँ, वे देवता महेंद्र से संबंधित नहीं, बल्कि वररुचि के प्रति तुम्हारे व्यवहार से संबंधित हैं।” रानी को अचानक ऊपर की ओर देखते हुए देखकर उसने आगे कहा, “यदि उसने इतना कष्ट न सहा होता, तो वह कभी भी इस प्रकार विद्रोह न करता।”

उपश्रुति ने उस बुजुर्ग महिला को हैरानी से देखा। "कैसे...?" उसकी आवाज कांप रही थी और लड़खड़ा रही थी।

"उसने मुझे सब कुछ बता दिया।" उशांता रुकी और ठंडी निगाहों से घूरने लगी। "तुमने उसे हद से ज्यादा परेशान किया, और अब बेचारा विक्रम इसका खामियाजा भुगत रहा है।"

महारानी माँ के होंठ काँप उठे और एक आँसू अपनी बेड़ियों को तोड़कर उनके गालों पर बह गया। दूसरा आँसू भी तुरंत, दर्द से भरा हुआ, तेज़ी से बह निकला। उपश्रुति ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया, शर्म और दुख से उनका शरीर काँप उठा और उनके कंधे फड़कने लगे।

उशांत ने रानी की ओर देखा, उसका चेहरा भी दुःख और क्रोध से भरा हुआ था। "तुमने ऐसा क्यों किया, उपश्रुति? क्यों? मुझे बताओ कि वररुचि तुम्हारे इस बर्ताव का हकदार क्यों था? मेरे बेटे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था कि तुम उससे इतनी नफरत करती हो?"

उपश्रुति अपने हाथों में चेहरा छिपाकर रोने लगी। "मुझे... बहुत खेद है," वह सिसकते हुए बोली।

"लेकिन मैं जानना चाहती हूं कि ऐसा क्यों है," उशांत ने दृढ़ता से कहा।

मैं भी जानना चाहता हूं कि आपने क्या किया और क्यों किया।

उपश्रुति चौंक उठीं। उसी समय उशांता भी मुड़ीं। दोनों महिलाओं ने दरवाजे की ओर देखा—जहाँ विक्रमादित्य दहलीज पार करके दीपक की रोशनी में प्रवेश कर रहे थे।

सम्राट ने उषांथा को प्रणाम करते हुए हाथ जोड़े। उन्होंने कहा, "मुझे पता चला था कि आप महल में आई थीं, बड़ी माँ। मैं आपसे मिलने आया था। आपकी बातें सुनते-सुनते मैं यहाँ आ गया..."

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, उसने उपश्रुति के स्तब्ध, ऊपर की ओर उठे चेहरे को देखा। "बताइए, माँ। मैं सुन रहा हूँ।"

***

शहर के पूर्वी द्वार पर सात संतरी तैनात थे। वे सभी द्वार से सटे पत्थर के चबूतरे पर बैठे या टिके हुए थे, जो ऊपर की दीवारों पर बने पैदल मार्ग तक जाने वाली सीढ़ियों

का आधार था। सैनिक अष्टपदा का खेल खेलकर समय बिता रहे थे—पत्थर पर कोयले से खुरदरी रेखा खींची गई एक ग्रिड, जिसमें मोहरों की जगह कंकड़ का इस्तेमाल किया जाता था—लेकिन खेल बंद हो चुका था, और वे सभी अब गरमागरम बहस में मशगूल थे, उनके हथियार इधर-उधर लावारिस पड़े थे।

"मैं तुमसे कह रहा हूँ, बर्बरों का हमारे सामने कोई चांस नहीं है," उनमें से सबसे वरिष्ठ दिखने वाले, घनी भूरी दाढ़ी वाले, तमकबरे-तगड़े आदमी ने टिमटिमाती मशाल की रोशनी में आक्रामक आँखों से कहा। "क्या तुममें से किसी ने सम्राट के हाथों में नरक की आग देखी है? मैंने देखी है," उसने गर्व से अपनी छाती थपथपाई। "तुम देखोगे, सारे बर्बर जलकर राख हो जाएँगे। ज़िंदा जलकर।" उसने बर्बरों की जान लेने का तरीका दिखाने के लिए तेज़ी से उंगलियाँ चटकाईं।

"हां, लेकिन इस बार उनके पास पार्षद कालिदास हैं—" गार्डों में से एक ने बहस शुरू की, लेकिन वरिष्ठ व्यक्ति ने उसे चुप कराने के लिए हाथ हिलाया।

"हम्म... इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," उसने कहा। "तुमने आज सुबह शहर की छावनी में सम्राट की बातें सुनी ही होंगी, है ना? कोई कालिदास नरक की आग का सामना नहीं कर सकता।"

"पार्षद कालिदास ने एक राक्षस से कुश्ती की और उसे महल की झील में फेंक दिया," तीसरे संतरी ने याद दिलाया। "वह इतने शक्तिशाली हैं।"

"एह्ह..." नगर सुरक्षा बल के पुराने गार्ड ने कंधे उचकाते हुए धीमी सी आवाज में कहा।

"पार्षद वरारुची का क्या होगा?" एक चौथी आवाज़ ने हैरानी से पूछा। "जब बर्बर लोग आएंगे तो क्या वह हमारे साथ होगा या हमारे खिलाफ?"

"वह पार्षद कालिदास के खिलाफ हैं।"

लेकिन वह सम्राट के भी खिलाफ है—

"हां, लेकिन मैंने सुना है कि उन्हें समर्थन मिलना बंद हो गया है..."

वे लोग हूणों के साथ होने वाले आसन्न युद्ध पर बहस में इतने मशगूल थे कि उन्होंने शहर के द्वार के भीतर कुछ जगहों पर ज़मीन के हिलने-डुलने पर ध्यान ही नहीं दिया। पहरेदारों की इस बात के लिए उनकी तारीफ़ करनी होगी कि हलचल इतनी धीमी और अगोचर थी कि मिट्टी इतनी धीरे-धीरे हिल रही थी कि अंधेरे में उन्हें इसका पता लगाना नामुमकिन था, जब तक कि वे सीधे ज़मीन को घूरते न, जिसकी

उन्हें कोई ज़रूरत नहीं थी। इस तरह, उथल-पुथल जारी रही, ज़मीन के नीचे से एक गड्ढा सा ऊपर उठने लगा, और जैसे-जैसे ज़्यादा से ज़्यादा मिट्टी हटती गई, ज़मीन की सतह पर कुछ उभरता गया।

"जहां तक मुझे पता है, मुसिली की चौकी ही एकमात्र ऐसी चौकी है जो सम्राट के खिलाफ डटी हुई है।"

"आप सही कह रहे हैं। कुछ अन्य लोग शुरू में सहमत हो गए थे—"

जमीन के नीचे से एक हाथ हवा में उठा, उंगलियां मुड़ी हुई थीं और पकड़ बनाने के लिए पंजे की तरह तड़प रही थीं।

"सम्राट के भाषण ने ही फर्क पैदा किया—"

एक सींगदार सिर, जिसकी थूथन सांप जैसी थी, एक अन्य स्थान पर नीचे से निकला। एक तीसरा सिर कहीं और से प्रकट हुआ।

उनके सिरों की आंखें छोटी-छोटी थीं, बिल्कुल गोल और मशाल की रोशनी में तांबे जैसी चमक रही थीं। आंखें पहरेदारों को ध्यान से और बिना पलक झपकाए देख रही थीं।

दो और सिर ऊपरी मिट्टी से बाहर निकलने लगे।

मैं आपसे सहमत हूँ। सम्राट की नरक की आग से हम अजेय हैं—"

एक अनदेखे संकेत पर, पाँचों आँखें चौड़ी हो गईं। अगले ही पल, द्वार के पास की ज़मीन फट उठी और पाँच नाग योद्धा प्रेतों की तरह धरती से बाहर निकले, चारों ओर कीचड़ बिखेरते हुए, उनके लंबे, मांसल हाथों में चमकते हुए भयानक चाकू दिखाई दिए।

"मुझे लगता है कि पार्षद—" बोलने वाला गार्ड अचानक रुक गया, अंधेरे से भयानक नागों को निकलते देख उसकी आंखें फटी रह गईं।

"यह क्या है?" वह घबराकर चिल्लाया।

बाकी पहरेदारों ने प्रतिक्रिया देने में बहुत देर कर दी। वे अभी पलटकर देख ही रहे थे कि नाग उन पर टूट पड़े और वार करने लगे। जैसे ही पहरेदार अपने हथियार उठाने के लिए छटपटाने लगे, नागों के चाकू इतनी कुशलता से चल रहे थे कि पहरेदार अपनी ही चीखों में घुटते हुए मर रहे थे, इससे पहले कि वे कोई आवाज़ उठा पाते। मशाल की रोशनी में खून बिखर गया, दीवारों पर फैल गया, पत्थर के

फर्श पर छींटे पड़ गए, और अधूरे अष्टपदा खेल की कोयले की रेखाओं को धुंधला कर दिया। पहरेदार एक के बाद एक तेज़ी से गिरते चले गए।

यह कुछ ही क्षणों में समाप्त हो गया।

नागों ने अपने खून से सने चाकू म्यान में रख लिए।

जैसे ही उनमें से चार ने पहरेदारों के शवों को छिपाने का काम शुरू किया—शवों को चबूतरे पर उठाना, उन्हें सीढ़ियों में घसीटना और नज़रों से ओझल करना—पांचवें नाग ने बड़े फाटक में बने छोटे दरवाजे को धक्का देकर खोल दिया। बाहर कदम रखते ही वह अंधेरे में खड़ा हो गया, उसकी पूंछ उसके पीछे मिट्टी में फड़फड़ा रही थी। फिर, अपना सिर हवा में उठाकर, उसने एक ऐसी फुसफुसाहट में बात की जिसमें शब्द नहीं थे, बस सूखे पत्तों की सरसराहट और हवा की उदास आह थी।

और संभवतः हवा ही उस फुसफुसाहट को उज्जैन के पूर्वी द्वार से उजाड़ ग्रामीण इलाकों से होते हुए पेड़ों के एक झुरमुट तक ले आई, जहाँ तक्षक, मतली, त्रिभानु और कुछ अन्य किन्नरों के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। नाग स्वामी ने सिर झुकाकर सुना और फिर त्रिभानु की ओर मुड़ा।

"मेरे नागों ने नगर के द्वारों पर कब्जा कर लिया है," तक्षक के अपने शब्द धीमी आवाज़ में निकले। "तुम्हारी सेना को उज्जैन में प्रवेश करने से कोई नहीं रोक सकता।"

"धन्यवाद, मेरे मित्र," त्रिभानु ने क्षितिज की ओर मध्य में चमकते प्रकाश की ओर देखते हुए उत्तर दिया। सफेद घोड़े पर सवार मताली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "हमें चलना चाहिए।"

देवता ने नाग की ओर देखा। "मैं तुमसे थोड़ी देर में महल में मिलूंगा।"

जब मताली ने अपने घोड़े को मोड़ा तो तक्षक ने सिर हिलाकर सहमति दी।

त्रिभानु और उसके सेनापति मतली के पीछे-पीछे चले, किन्नर स्वामी के पैरों में बंधी घंटियाँ अँधेरे में मधुर झंकार रही थीं। जैसे ही समूह अँधेरे में विलीन हो गया, नाग ने उज्जैनी के प्रकाश के उस अंश की ओर देखा। वह अब यहाँ अपने कबीले का इकलौता सदस्य था—बाकी नाग सेना पहले ही गहरे जंगल में दफन हो चुकी थी, उसके संकेत की प्रतीक्षा कर रही थी... तक्षक के बाईं ओर से एक गड़गड़ाहट सुनाई दी, जो दक्षिण से आती हुई उस तक पहुँच गई और उसके विचारों को भंग कर

दिया। उसने मुड़कर देखा कि सेंटॉर की सेना जंगल से निकलकर तेज़ी से उज्जैनी की ओर बढ़ रही है।

खुरों की आवाज़ को शांत होने में कुछ समय लगा। जब किन्नरों की आवाज़ के अलावा ज़मीन में हल्की सी गड़गड़ाहट ही सुनाई दे रही थी, तब तक्षक झुककर अपने पैरों और नंगे हाथों से ज़मीन को ज़ोर-ज़ोर से खोदने लगा। वह मिट्टी को लात मारता, अपनी मज़बूत उंगलियों से उसे एक तरफ हटाता, तेज़ी से कीचड़ उछालता और गहरी सुरंग खोदता चला जाता, और देखते ही देखते वह आँखों से ओझल हो गया।

***

महारानी मां सिर झुकाए बैठी थीं, उनकी निगाहें उस गुलाब की लकड़ी की कंघी पर टिकी थीं जो अभी भी उनके हाथों में थी।

विक्रमादित्य ने उशांत की ओर क्षण भर के लिए देखा, उनके चेहरे पर पीड़ा झलक रही थी। उपश्रुति की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, "लेकिन क्यों, माँ? क्यों?"

"तुम्हारे लिए।" रानी की आवाज कांप रही थी। "मुझे तुम्हारे लिए डर लग रहा था।"

"मैं नहीं समझता।"

उपश्रुति एक पल के लिए चुप रही। फिर, बड़ी मुश्किल से उसने अपना सिर उठाकर उशांता की ओर देखा। "राजा हमेशा उसे ज़्यादा प्यार करते थे," उसने पलकें झपकाते हुए कहा, और महल में जीवन भर जिस बात से वह चुपचाप डरती रही थी, उसका सामना करने के लिए खुद को मजबूर किया। "मैंने जो कुछ भी किया, उससे यह नहीं बदला, इसलिए मुझे डर था कि वह मेरे बेटे से ज़्यादा उसके बेटे को प्यार करेंगे। कि उसका बेटा राजा बन जाएगा।"

सम्राट और उशांत ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा।

उशांता धीरे से रानी के पास बैठ गई। उसने उपश्रुति के कंधे पर हाथ रखा। उसने कोमल स्वर में कहा, "महेंद्र तुम्हें बहुत प्यार करता था। और महेंद्र को तुम्हारे विक्रम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं था। हाँ, वह वररुचि से भी प्रेम करता था। लेकिन एक राजा की तरह अपने सेनापति से, न कि एक पिता की तरह अपने पुत्र से। महेंद्र की दृष्टि में अवंती का केवल एक ही भावी राजा था। और वह मेरा पुत्र नहीं था।"

"माँ, अगर वरारुचि भी राजा होता तो क्या होता?" विक्रमादित्य कमर पर हाथ रखकर सिर हिलाते हुए खड़े रहे। "वह न्यायप्रिय है और अवंती से दिल से प्यार करता है। वह अपनी प्रजा के लिए एक अच्छा राजा बनता। आपके लिए यह इतना ज़रूरी क्यों था कि आपका बेटा राजा बने?" वे थोड़ी देर रुके। "कम से कम अब मुझे पता चल गया कि प्रलूपी को यह जुनून कहाँ से मिला।"

उसने उशंथा की ओर मुड़कर कहा, "और आप, बड़ी माँ... आपको इस सब के बारे में पहले से ही पता था? भाई किस तकलीफ से गुजर रहा था?"

मुझे काफी समय से पता है—

"आपने किसी को क्यों नहीं बताया? क्यों, बड़ी माँ?" राजा परछाइयों की ओर मुड़ा। "भाई ने यह बात आपके सिवा किसी से साझा नहीं की। क्यों? वह चुपचाप क्यों सहता रहा?"

तीनों आकृतियाँ अपनी-अपनी जगह पर स्थिर रहीं, बिना हिले-डुले, चिंतन में डूबी हुई थीं। हल्की हवा के झोंके से दीपक की लौ कांप रही थी, जिससे कमरे में परछाइयाँ हिलती-डुलती और धुंधली होती दिख रही थीं।

"भाई के क्रोध और नाराजगी का कारण अब स्पष्ट है," विक्रमादित्य ने अंत में कहा। "उसके साथ घोर अन्याय हुआ है; उसके साथ बहुत लंबे समय से अन्याय होता रहा है। महल को उससे माफी मांगनी चाहिए। मुझे भी उससे माफी मांगनी चाहिए।" वह महिलाओं की ओर मुड़ा। "मैं वरारुचि को महल वापस लाऊंगा, बड़ी माँ। मैं सब कुछ ठीक कर दूंगा।"

सम्राट दरवाजे की ओर बढ़ा, लेकिन उशांता के शब्दों ने उसे रोक दिया।

"विक्रमा, जाने से पहले जान लो कि मैं वरारुचि के लिए न्याय मांगने नहीं आई हूँ। मैं यहाँ सबके लिए सब कुछ ठीक करने आई हूँ। मैं वरारुचि के गुस्से को समझती हूँ। लेकिन मैं उसके उन कामों को अस्वीकार करती हूँ, जिनसे इस महल की बदनामी हुई है और उस राज्य का बँटवारा हुआ है जिसे उसके पिता ने बर्बरों से बचाने के लिए इतनी मेहनत की थी। हालाँकि वह मेरा बेटा है, विक्रमा, तुम भी मेरे लिए बेटे के समान हो। और एक माँ होने के नाते, मुझे अपने दोनों बेटों के साथ न्याय करना चाहिए। अब जाओ और उसे वापस ले आओ।"

एक हल्की सी सहमति देकर राजा आगे बढ़ गए, इसलिए उन्होंने उपश्रुति को उशांत के कंधे पर सिर रखकर रोते हुए नहीं देखा। उन्होंने उशांत को महारानी माँ

को बाहों में भरकर प्यार से गले लगाते हुए भी नहीं देखा।

सम्राट गैलरी पार कर रहे थे कि अचानक रुक गए। उनका चेहरा तनावग्रस्त हो गया और वे सुनने लगे।

कहीं घंटी बजने लगी थी। शहर की चेतावनी घंटियों में से एक।

वह दौड़ने लगा। एक मोड़ पर मुड़ते ही, उसने महल के दो रक्षकों को चिंतित और असमंजस में देखा, क्योंकि रात के सन्नाटे में घंटी बज रही थी।

“क्या आपको पता है कि यह किस बारे में है?” विक्रमादित्य ने पूछा।

“हम ऐसा नहीं करते, माननीय न्यायाधीश,” उनमें से एक ने उत्तर दिया।

“छोड़ो कोई बात नहीं,” सम्राट ने कहा। “सुनो, तुम्हें पता है क्या करना है? महल में मौजूद सभी लोगों को भूलभुलैया में ले जाओ। समझे?”

गार्डों ने सिर हिलाया।

मुझे आप दोनों पर पूरा भरोसा है कि आप यह काम कर लेंगे। जाइए।

राजा सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए आगे बढ़ गए, जबकि बाकी लोग तेज़ी से दौड़ने लगे। नीचे पहुँचकर उनकी मुलाकात क्षपणक से हुई।

"क्या हो रहा है?" उसने पूछा, और देखा कि अब बजने वाली घंटियों की संख्या बढ़ गई है।

"कोई अनुमान नहीं।"

वे नीचे गलियारे में देखने के लिए रेलिंग पर झुक गए। ठीक उसी क्षण, एक महल का रक्षक नगर सुरक्षा बल के एक कप्तान के साथ गलियारे में दाखिल हुआ।

“क्या हो रहा है?” घंटियों के शोर के बीच अपनी बात सुनाने के लिए विक्रमादित्य चिल्लाया।

"महामहिम, पूर्वी द्वार पर घुड़सवार तैनात हैं," कप्तान ने उत्तर दिया।

“कौन से घुड़सवार?” क्षपणक ने राजा की ओर एक नज़र डालते हुए पूछा। “वे जो पिछली बार आए थे? वे जो दो भागों में बंट गए थे...?”

कप्तान ने सिर हिलाया। "ये दिखने में आधे घोड़े और आधे इंसान हैं—और दोनों से कहीं ज़्यादा बड़े हैं।"

क्षपणक ने आश्चर्य भरी निगाहों से विक्रमादित्य की ओर देखा।

“हमें उन्हें द्वार के पार नहीं जाने देना चाहिए,” सम्राट ने पार्षद को सिर हिलाकर सहमति दी।

“महामहिम, वे...” कप्तान हिचकिचाया। “घुड़सवार पहले ही शहर में प्रवेश कर चुके हैं।”

राजा की निगाहें सेनापति को भेद गईं। "कैसे?" यह सवाल तीर की तरह निकला।

“द्वारों से होकर,” कप्तान ने कहा। “पूर्वी द्वार किसी तरह खुला हुआ था...”

विक्रमादित्य ने क्षपणक की ओर देखा और फिर सिर हिलाया। सलाहकार सीढ़ियों से नीचे भागा और सेनापति और महल के रक्षकों को निर्देश देता हुआ चिल्लाने लगा। इस बीच, राजा महल पार करके अपने कक्षों की ओर बढ़ा और मन ही मन सोचने लगा कि वरारुचि को थोड़ा और इंतजार करना होगा। अपने कक्ष में प्रवेश करते ही वह प्रतीक्षालय में गया और उसका दरवाजा खोल दिया।

उसकी नजर मेज पर पड़ी और वह रुक गया।

वह घूरता रहा।

मेज पर पीतल का एक दीपक, एक स्याही की बोतल और कलमों का एक जोड़ा रखा था।

बस यही बात थी। इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

जहां उसने तलवारें छोड़ी थीं, वहां वे साटन के कपड़े की तहों में सावधानीपूर्वक लपेटी हुई नहीं थीं।

घंटियों की बढ़ती हुई आवाज सुनकर सम्राट की आंखें कठोर हो गईं, जब उन्हें एहसास हुआ कि दोनों तलवारों के साथ क्या हुआ था।

आक्रमण करना

भाले ने सिपाही की छाती पर इतनी ज़ोर से वार किया कि वह ज़मीन से उछलकर चार गज पीछे जा गिरा, जिससे गिरने पर उसका दाहिना कंधा अपनी जगह से हट गया। दर्द से चीखने से पहले ही भाला फिर नीचे आया, उसका ब्लेड उसकी खुली गर्दन पर लगा और बिजली की तेज़ी से वार करते हुए उसे और उसकी चीख को एक ही झटके में बुझा दिया। बीच हवा में भाले को पलटकर, त्रिभानु ने उस सिपाही के ऊपर से छलांग लगाई जिसे उसने अभी-अभी मारा था और पहरेदार के अगले सिपाही पर झपटा, उसकी हंसली के नीचे उसे जकड़ लिया और उसकी तलवार छुड़वा दी। कलाई की एक फुर्तीली हरकत से त्रिभानु ने सिपाही की छाती में वार किया, जिससे एक घाव खुल गया और खून बहने लगा, जिससे सिपाही चीखता हुआ घुटनों के बल गिर पड़ा। उसके आगे बढ़ते हुए, किन्नर ने सिपाही के सिर के पिछले हिस्से पर एक लात मारी, जिससे वह लड़खड़ाता हुआ, बेसुध और बड़बड़ाता हुआ, मुंह के बल कीचड़ में जा गिरा।

मताली ने मन ही मन कहा, "यह तो बहुत आसान था!" उसने देखा कि वह सुंदर किन्नर तीसरे सैनिक पर झपट पड़ा, भाले की नोक से उसके चेहरे पर वार किया और उसके गाल को कान से मुंह तक चीर दिया। जैसे ही सैनिक पीछे हटा, त्रिभानु ने बाईं ओर से आ रहे एक वार को रोका, जो न तो ताकत से किया गया था और न ही सटीक ढंग से। भाले पर अपनी पकड़ बदलते हुए, किन्नर ने हमलावर के पेट में वार किया, फिर दूसरे पर, फिर छठे सैनिक पर, और उन सभी को धूल में कराहते और घायल छोड़ दिया।

बहुत आसान था, देव ने फैसला सुनाया और अपनी तलवार लहराते हुए उसे नगर रक्षक दल के एक सिपाही के सिर पर ज़ोर से वार किया जो उसका रास्ता रोकने की कोशिश कर रहा था। तलवार सिपाही के हेलमेट से टकराकर उछल गई, वार का असर मताली के हाथ में सिहरन की तरह दौड़ गया, साथ ही उसने हेलमेट के नीचे सिपाही की खोपड़ी के टूटने की संतोषजनक आवाज़ भी सुनी। सिपाही गिर पड़ा, दोनों नथुनों से खून बह रहा था।

उसके चारों ओर, उसके पीछे, हर जगह, नरसंहार के ऐसे ही दृश्य थे; उज्जैनी में किन्नर सेना की प्रगति के निशान क्षत-विक्षत मानव शरीरों के ढेरों में बिखरे हुए थे। सेंटॉर अजेय थे, और अवंती के सैनिक फटेहाल छोटे-छोटे समूहों में आकर मरने के लिए तैयार थे, मानो किसी बलि में चढ़ाए जा रहे हों। मताली जानता था कि उज्जैनी

अपनी सबसे मजबूत स्थिति में नहीं है, लेकिन शहर की रक्षा व्यवस्था जिस तरह से ध्वस्त हो रही थी, उसे देखकर स्पष्ट था कि अवंती इस तरह के हमले के लिए बुरी तरह से तैयार नहीं थी।

अवंती के सैनिकों के एक दल के मारे जाने और दूसरे दल के अभी आने बाकी होने के बीच, लड़ाई में थोड़ी देर के लिए विराम आ गया, और मताली ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपने घोड़े को (जिसे उसने शहर से भागते समय घायल कर लिया था) दौड़ाया और किन्नरा सरदार के बराबर आ गया।

अपने बगल में देव को आते देख त्रिभानु ने अपनी चाल धीमी कर दी। "हलाहल पर कब्ज़ा करने की अपनी नाकाम कोशिशों के बाद अश्विनों और मरुतों ने इस जगह का कितना बड़ा बवाल मचाया था!" किन्नर ने शहर की घंटियों की तेज़ आवाज़ और घोड़ों के खुरों की गड़गड़ाहट के बीच ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा। उसने अपनी चाल धीमी कर ली, और उसके पीछे आ रहे मताली और किन्नरों ने भी ऐसा ही किया। "वे लगातार इस बात का बखान करते रहे कि इस शहर की रक्षा कितनी अच्छी तरह से की गई थी, मनुष्यों ने कितनी बहादुरी से लड़ाई लड़ी... वो सारा साहस और वीरता कहाँ गई? राजा की सेना बिना किसी लड़ाई के ही हार मान रही है। मैं अपनी सेना का सिर्फ़ एक तिहाई हिस्सा लाकर भी इस शहर पर कब्ज़ा कर सकता था।" आत्मविश्वास से भरे हुए उसने आगे कहा, "तुम और मैं अकेले ही महल पर हमला कर सकते हैं। जब तक तुम कटार सुरक्षित करते हो, मैं राजा को बंदी बना लूँगा। नागों की क्या ज़रूरत है?"

"शायद, लेकिन हमें तक्षक के साथ हुए समझौते पर कायम रहना चाहिए," मताली ने चेतावनी देते हुए कहा। "इस स्तर पर हमें अपनी योजना नहीं बदलनी चाहिए।"

"हम्म," किन्नर ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, वह अपने प्रस्ताव के प्रति देवता की अरुचि से प्रसन्न नहीं था।

"और इसकी तुलना अश्विनों और मरुतों के नेतृत्व में हुए हमलों से करना गलत है," मताली ने आगे कहा। "उन्होंने कहीं अधिक शक्तिशाली प्रतिरोध का सामना किया था। हमें सौभाग्यशाली समझना चाहिए कि सम्राट के नौ सलाहकारों में से छह उज्जैन में नहीं हैं—और मैंने उनमें से कुछ के बारे में जो कहानियां सुनी हैं, वे वाकई अद्भुत हैं। एक तो भयंकर आधे शेर में बदल जाता है। दूसरी बस गायब हो जाती है और जहां चाहे प्रकट हो जाती है। मैंने सुना है कि वह एक साधारण लड़की है, लेकिन

चाकू चलाने में माहिर है। फिर एक विशालकाय योद्धा है जो रेगिस्तान से निकलकर आदिवासियों के पक्ष में चला गया है; कहते हैं कि उसके जैसा योद्धा धरती पर कोई नहीं है। हमें शुक्रगुजार होना चाहिए कि उनमें से कोई भी आज हमारे बीच नहीं है।"

"क्या छह इंसान इस किन्नरा हमले का रुख बदल सकते थे?" त्रिभानु ने मताली पर कटाक्ष करते हुए कहा। "क्या तुम यही कह रहे हो?"

"दरअसल, हमें रोकने के लिए एक ही इंसान काफी होता—अगर राजा के पास अभी नरक की अग्नि होती, तो वो खुद ही काफी होता। सौभाग्य से, दोनों तलवारें यहाँ से बहुत दूर हैं और गरुड़ के पंख के हर वार के साथ और भी दूर होती जा रही हैं। आपके सवाल का जवाब ये है कि इन इंसानों ने पहले भी देवताओं और असुरों से युद्ध किया है और उन्हें खदेड़ा है। ये बहुत शक्तिशाली हैं, और इन्हें कम आंकना मूर्खता होगी।"

किन्नर सरदार ने सिर हिलाते हुए मुंह फेर लिया, उसके होठों से व्यंग्यात्मक मुस्कान अभी भी गायब नहीं हुई थी।

"किस तरफ, स्वामी?"

त्रिभानु ने मुड़कर देखा तो उनके जनरलों में से एक ने आगे सड़क के एक मोड़ की ओर इशारा किया।

"जिस भी दिशा में हम जाना चाहें," उसने उत्तर दिया, "बस इतना ध्यान रखना है कि हम शहर के केंद्र में बहुत दूर तक न भटकें और महल से दूर रहें। हमारा काम उज्जैन के रक्षकों को महल से दूर शहर की दीवारों की ओर खींचना है ताकि नाग और यहाँ के देवता," उसने मताली की ओर लापरवाही से हाथ हिलाते हुए कहा, "खंजर लेने के लिए महल में प्रवेश कर सकें।"

"इनमें कोई नहीं रहता," किन्नरा सेनापतियों में से एक ने सड़क के मोड़ पर जल रही मशालों की रोशनी में घरों को देखते हुए कहा। "ये सब खाली हैं। इसीलिए सड़कें भी सुनसान हैं।"

"सभी निवासियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है," मताली ने बताया। "शहर के कई हिस्सों को काफी समय से खाली कराया जा रहा था।"

"अगर शहर में मारने या घायल करने के लिए कोई बचा ही नहीं है, तो हम मानव राजा और उसके सैनिकों को महल छोड़कर यहाँ कैसे लाएँगे?" सेनापति ने बड़बड़ाते हुए कहा।

मताली को यह भी एक समस्या लगी, लेकिन त्रिभानु के पास इसका आसान समाधान था। "चलिए थोड़ा और खोजबीन करते हैं। अगर कुछ नहीं तो हमें मारने के लिए और सैनिक ज़रूर मिल जाएँगे।" वह रुका और शहर की सड़कों को रोशन करती मशालों की ओर इशारा करते हुए बोला, "नहीं तो हम घरों में आग लगा सकते हैं। इससे लोग भागते हुए बाहर आ जाएँगे।"

सेनापति ने सिर हिलाया। बिना किसी चेतावनी के, त्रिभानु ने घोड़े को सरपट दौड़ाया और अचानक दाहिनी ओर गली में मुड़ गया। मताली त्रिभानु के पीछे-पीछे चला, जबकि दोनों सेनापति सीधे चलते रहे। उनके पीछे आ रहे किन्नर दो समूहों में बंट गए, एक समूह सेनापतियों के पीछे गया, और दूसरा मताली और अपने राजा के पीछे।

वे अभी सौ गज से भी कम दूरी तय कर पाए थे कि आगे एक गली से अवंती की शाही सेना के घुड़सवारों की एक छोटी टुकड़ी प्रकट हुई, जिनमें से कुछ के हाथों में मशालें थीं। मताली ने अनुमान लगाया कि वे लगभग पंद्रह थे, और घुड़सवारों ने उसी समय आगे बढ़ते किन्नरों को देख लिया। एक क्षण के लिए, घुड़सवार सेना वहीं थम गई, यह तय नहीं कर पा रही थी कि हमला करें या पीछे हटें, और किन्नर सरदार ने इस हिचकिचाहट का फायदा उठाया। अपने भाले को मजबूती से गाड़कर, ढाल ऊपर उठाकर, त्रिभानु सड़क पर दौड़ पड़ा, और एक पल बाद, किन्नर सेना तलवारों और भालों से वार करने के लिए तैयार होकर उसके पीछे चल पड़ी।

मताली ने अपनी तलवार उठाई और अपने घोड़े को लात मारी, लेकिन वह पहले ही पीछे छूट चुका था। उसे पता था कि उसे ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

अवंती के घुड़सवार दो समूहों में बंट गए—एक समूह में दस या ग्यारह घुड़सवार थे जिन्होंने हताशा में किन्नरों पर हमला कर दिया, जबकि दूसरा समूह भय और डर से पीछे हट गया, अपने साथियों को छोड़कर भागने लगा। पहले समूह के घुड़सवारों का किन्नरों से आत्मघाती हमले में सामना हुआ, किन्नरों के भालों से वे अपनी ही काठी में घायल होकर मारे गए। दूसरे समूह ने रात के अंधेरे में भागने की कोशिश की, लेकिन पीठ में गहरे धंसे खंजरों और तीरों के साथ वे अंधेरे में और भी आगे निकल गए।

बहुत ही आसान।

जैसे ही त्रिभानु ने अपने भाले की नोक से एक मृत घुड़सवार को मुक्त किया, मातली घोड़े पर सवार होकर वहाँ पहुँच गया। बूढ़े सैनिक का शरीर असंतुलित होकर घोड़े की पीठ से नीचे गिर गया और धड़ाम से ज़मीन पर जा टकराया। किन्नर ने देव की ओर मुड़ा, उसकी मुस्कान में चुनौती थी।

"क्या तुम्हें अब भी लगता है कि मनुष्यों में लड़ने की हिम्मत बची है, देव?" उसने भौंह उठाकर पूछा।

मताली ने कंधे उचका दिए, हालाँकि उसे जवाब पता था। यह एक पूर्ण हार में परिणत होगा, जिसमें मानव राजा और उसकी सेना को बचाने वाला कोई नहीं होगा। न ही उसकी सेना की ओर से कोई वीरतापूर्ण प्रतिरोध, न कोई साहस, न कोई साहसिक कारनामा।

न तो राजा का कोई अता-पता था और न ही उसकी परिषद का। ऐसा लग रहा था मानो उन्होंने प्रतिरोध करने की इच्छाशक्ति पहले ही त्याग दी हो।

मताली समझ गई कि विक्रमादित्य किस पीड़ा से गुजर रहे होंगे। किन्नरों और नागों के आक्रमण को रोकने के लिए नरक की अग्नियों के अभाव में, यह युद्ध लगभग हारा हुआ था, हलाहल लगभग छीन लिया गया था—सर्वज्ञ से किया गया वादा लगभग टूट गया था।

आत्मसमर्पण होना तय था; इंद्र को अपने पोते को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखना पड़ेगा।

मृत घुड़सवारों के ऊपर से कदम रखते हुए, किन्नर सरदार ने विजयोन्माद से मताली की ओर मुस्कुराया।

बहुत ही आसान।

***

विक्रमादित्य का घोड़ा अपने खुरों की तेज़ आवाज़ के साथ अस्तबल से निकला और महल के मैदान की ओर तेज़ी से दौड़ा, जहाँ क्षपणक सैनिकों के एक दल के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। लगभग अस्सी सैनिकों का यह दल दो बराबर समूहों में बँटा हुआ था, जिनमें शाही सेना और नगर रक्षक दल के साथ-साथ एक दर्जन संसप्तक और कुछ नागरिक सैनिक भी शामिल थे। रात घंटियों की गूंज से गूंज रही थी, जो उज्जैन के लिए अशुभ संकेत दे रही थीं।

“कोई नई खबर?” सम्राट ने अपने घोड़े को ज़ोर से झटका देते हुए पूछा, जिससे घोड़ा चौंककर उछल पड़ा और पिछले पैरों पर खड़ा हो गया। घोड़े की गर्दन सहलाते हुए, उन्होंने क्षपणक की ओर देखा। “क्या कुछ ऐसा है जिस पर हम कार्रवाई कर सकें?”

पार्षद ने उदास स्वर में उत्तर दिया, "हमें बस इतना ही निश्चित रूप से पता है कि हमलावर आधे घोड़े और आधे इंसान हैं। और वे बहुत बड़े हैं।"

"कितने?"

“सैकड़ों,” क्षपनाका ने कंधे उचकाते हुए कहा। “अंधेरे में अनुमान लगाना असंभव है। और शायद ही कोई जीवित व्यक्ति बचा हो जो विस्तृत जानकारी दे सके...”

पार्षद ने अशुभ स्वर में अपनी बात अधूरी छोड़ दी, उनके शब्द हवा में एक निराशाजनक चेतावनी की तरह लटके रहे।

“हमने कितने लोगों को खोया है?” राजा ने गंभीर स्वर में पूछा।

"कई। कुछ लोग पचास कहते हैं, कुछ लोग इससे भी अधिक।"

राजा चौंक गया। "नागरिकों?"

"शुक्र है, हमारी जानकारी में ऐसा कोई मामला नहीं है।"

"माननीय न्यायाधीश, हमले पूर्व और दक्षिण तक ही सीमित रहे हैं," सिटी वॉच के एक कप्तान ने कहा।

यह राहत की बात थी कि अभी तक कोई नागरिक हताहत नहीं हुआ था। शहर को समय पर खाली करा लेने से मदद मिली थी। “अच्छा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमले नहीं फैलेंगे,” विक्रमादित्य ने ऊँची आवाज़ में सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा। “जो मेरे साथ आ रहे हैं, वे पूर्वी द्वार की ओर बढ़ें। जो पार्षद क्षपनाका के साथ जा रहे हैं, वे शहर की छावनी में उनका इंतज़ार करें। अभी जाओ!”

सैनिक तितर-बितर हो गए, घुड़सवार सरपट दौड़ते हुए चले गए, जबकि पैदल सैनिक और तीरंदाज उनके पीछे एक स्थिर गति से दौड़ते हुए अंधेरे में गायब हो गए।

“वे शहर में कैसे घुस आए?” सम्राट ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया। क्षपणक उनके बगल में चलने लगा।

पार्षद ने उत्तर दिया, "दक्षिण और पूर्वी द्वारों से, हालांकि किसी को नहीं पता कि वे अंदर कैसे आए। किसी को पता चलने से पहले ही वे अंदर थे।"

उन्होंने फाटक तोड़कर जबरदस्ती अंदर प्रवेश किया होगा।

पार्षद ने संशय से सिर हिलाया। "उन फाटकों को तोड़ना बहुत मेहनत का काम है। शोरगुल भरा काम। पहरेदारों के पास अलार्म बजाने के लिए पर्याप्त समय होता।"

विक्रमादित्य ने कुछ देर इस पर विचार किया। "फिर किसी ने या किसी चीज ने भीतर से आधे घोड़ों के लिए द्वार खोल दिए।"

"उन फाटकों पर पहरेदार तैनात थे।"

"शायद उनके पास जवाब देने का समय नहीं था।"

"क्या उस धोखेबाज ने द्वार खोले होंगे?" क्षपणक ने सम्राट को चतुराई से देखा।

सम्राट के मन में दो गायब तलवारों का ख्याल कौंध गया। उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा, "ऐसा हो सकता है। मेरा मतलब यह है कि इन आधे घोड़ों के अलावा, हमें कम से कम एक और शातिर दुश्मन पर नज़र रखनी होगी।" सिर हिलाकर विक्रमादित्य ने लगाम झटक दी। जैसे ही उनका घोड़ा तेज़ी से भागा, उन्होंने पार्षद को पुकारते हुए कहा, "अच्छी तरह लड़ो।"

दोनों अलग हो गए, पार्षद शहर की छावनी की ओर चल पड़ा जबकि राजा अपने उन सैनिकों के पीछे गया जिन्हें उसने पूर्वी द्वार पर भेजा था, और कुछ ही मिनटों में उसने एक दर्जन पैदल सैनिकों और तीरंदाजों को पीछे छोड़ दिया। वह घुमावदार सड़कों पर तेजी से आगे बढ़ा, उसका ध्यान हमलावरों को रोकने पर केंद्रित था, इसलिए एक तीखे मोड़ पर आते ही वह सड़क के बीच में huddled खड़े शाही सेना के तीन घुड़सवारों से टकराने ही वाला था। विक्रमादित्य ने टक्कर को टालने के लिए अपनी लगाम को जोर से खींचा।

"क्या बात है?" उसने गुस्से से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। "तुम अभी तक गए क्यों नहीं?"

उसे पहचानते ही चौंके हुए घुड़सवारों ने झुककर प्रणाम किया। उनमें से एक ने इशारा करते हुए कहा, "आग लगाइए, महाराज।"

सम्राट ने उस व्यक्ति की उंगली का अनुसरण किया।

आग को पहचानना आसान था—महल के उत्तर-पूर्व में थोड़ी दूरी पर एक तेज़ लपट उठ रही थी, जिसकी रोशनी रात के आकाश में फैल रही थी। राजा को एहसास हुआ कि अगर वह अपने विचारों में इतना डूबा न होता तो वह इसे देख ही लेता। खतरे की घंटियाँ इससे ज़्यादा तेज़ नहीं बज सकती थीं, लेकिन विक्रमादित्य ने सुनते हुए महसूस किया कि उनकी तीव्रता और तीव्रता थोड़ी और बढ़ गई है।

घुड़सवारों में से एक ने कहा, "वहाँ कोई नहीं है। शहर के उस हिस्से को खाली करा लिया गया है।"

"आग हमलावरों ने ही लगाई होगी," दूसरे ने कहा।

विक्रमादित्य ने आग की लपटों को घूरते हुए कहा, "क्या यह पुराने पशु बाजार के आसपास ही नहीं है?" उसने तीखे स्वर में पूछा।

"जी हां, माननीय।"

पूर्वी भाग में दो परिवार रहते हैं। दोनों ही जगह खाली करने से इनकार कर रहे हैं... उनका कहना है कि वे उस व्यक्ति के आदेशों का पालन नहीं करेंगे जो अवंती का राजा बनने के योग्य नहीं है।

क्षपणक के शब्द, जो उन्होंने तब कहे थे जब वे नाविकों को महल की झील में खोज करते हुए देख रहे थे।

मैंने पूछताछ की। दोनों मकान मुसिली के छावनी प्रमुख कमांडर शरमाना से संबंधित परिवारों के हैं। शरमाना, वरारुची का दाहिना हाथ था।

विक्रमादित्य ने अपने सैनिकों की ओर मुख किया। उनमें से एक की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "पूर्वी द्वार की ओर जाओ और नगर रक्षक दल तथा शाही सेना के कमांडरों को सूचित करो कि मैं एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा करने के लिए रुका हूँ। उन्हें बता दो कि मैं यथाशीघ्र उनसे मिल जाऊँगा। जाओ।"

उस आदमी ने सिर हिलाया, अपने घोड़े को मोड़ा और चला गया।

सम्राट ने शेष घुड़सवारों को संबोधित करते हुए कहा, "मेरे साथ आओ। शहर का वह हिस्सा पूरी तरह से खाली नहीं कराया गया है। वहां अभी भी दो परिवार रह रहे हैं, और उनकी जान को गंभीर खतरा है। उन्हें बचाना हमारा कर्तव्य है।"

विक्रमादित्य ने अपने घोड़े को एड़ी से जकड़ा और घोड़ा तेजी से आगे बढ़ा, दोनों घुड़सवारों को पीछे छोड़ते हुए। गली के अंत में पहुँचकर राजा एक संकरी गली में

मुड़ गए और नज़रों से ओझल हो गए, जबकि घुड़सवारों ने उन्हें पकड़ने की कोशिश में अपने घोड़ों को तेज़ी से दौड़ाया।

***

महल से सौ गज से भी कम दूरी पर वे सब धरती से बाहर निकले, अपने पूरे झुंड को फाड़ते और नोचते हुए ऊपर की ओर बढ़ते हुए, जमीन के नीचे से निकले, उनके हाथों में कांटेदार तलवारें और भाले थे।

पुल पर तैनात महल के पहरेदारों को उनकी मौजूदगी का जरा भी आभास नहीं था। अपनी तलवारों और ढालों को कसकर पकड़े हुए, पहरेदार अंधेरे में देखने की कोशिश कर रहे थे, शहर में घुस आए आधे घोड़ों पर सवार लोगों पर नजर रख रहे थे, जो आपस में कुछ बुदबुदा रहे थे और हमलावरों के बारे में आशंका भरे अनुमान लगा रहे थे। बेचारे पहरेदारों को पता नहीं था कि आगे क्या होगा, इसलिए वे सबसे बुरे की आशंका से घबरा गए।

लेकिन सबसे बुरा तब हुआ—जब वह छोटे, शक्तिशाली पैरों पर अंधेरे से उछलता हुआ उन पर आ गिरा—वह किसी भी ऐसी चीज से बदतर था जिसके लिए गार्ड खुद को तैयार कर रहे थे।

नाग धरती से निकले और चारों ओर से महल पर हमला कर दिया। उन्होंने महल के पहरेदारों पर तलवारों, भालों और पंजों से वार किए। पुल के अंत में हुई झड़प भयावह थी, हालांकि महल की सुरक्षा में बैठे दर्शक अंधेरे और घंटियों की आवाज़ से बच गए, क्योंकि घंटियों की गूंज ने मरने वालों की चीखों को दबा दिया था। जब यह सब समाप्त हुआ, तो दृश्य बिल्कुल भी सुखद नहीं था। चारों ओर लाशें बिखरी पड़ी थीं, काली आकृतियाँ ज़मीन पर बेजान पड़ी थीं—और नाग लाशों पर घिनौने ढंग से चढ़ रहे थे, फैले हुए खून पर फिसलते हुए पुल पर कूद रहे थे।

"जल्दी मेरे साथ आओ," एक वरिष्ठ सैनिक ने कमान संभालते हुए आदेश दिया। "हमें पुल को अवरुद्ध करना होगा।"

"ये तो घोड़ों जैसे बिल्कुल नहीं दिखते," किसी और ने चिल्लाकर कहा। "ये चीज़ें क्या हैं?"

"वे जो भी हों, हमें उनसे लड़ना होगा। जल्दी करो।"

चारों ओर से उठ रहे सवालों और निर्देशों की अनदेखी करते हुए, वराहमिहिर लंगड़ाते हुए धनवंतरी के पास पहुँचे। चिकित्सक पुल के किनारे बनी खिड़कियों में से एक के पास खड़े थे, उनके पैर फैले हुए थे, उंगलियाँ उनकी लोहे की लाठी पर कसकर लिपटी हुई थीं, और उनकी निगाहें पुल के सिरे पर अभी-अभी हुए रक्तपात पर टिकी हुई थीं।

"इसका क्या अर्थ है?" वराहमिहिर ने खिड़की से बाहर झांकते हुए पूछा।

"अच्छी बात नहीँ हे।"

वराहमिहिर कुछ पल चुप रहे। फिर बोले, "महल को इन... प्राणियों से बचाना हमारी ज़िम्मेदारी है, मेरे मित्र।"

चिकित्सक ने लंगड़े पार्षद पर तिरछी नज़र डाली और फिर अपना ध्यान पुलिया पर केंद्रित किया, जहाँ लगभग बारह महल के रक्षक मध्य बिंदु के पास तलवारें और भाले ताने हुए एक कच्ची और नुकीली घेराबंदी बनाकर खड़े थे। बीस से अधिक नाग अपनी तलवारें और भाले उठाए हुए पुलिया से रेंगते हुए नीचे आ रहे थे। सात-आठ सैनिक महल से बाहर निकलकर रक्षा में सहायता करने के लिए दौड़े, लेकिन ठीक उसी क्षण नागों ने विचित्र ढंग से अपनी ही तलवारों और पंजों से अपने कंधे, बाँहें और धड़ चीरने शुरू कर दिए। आत्म-विच्छेदन का यह विचित्र कृत्य भयावह रूप से चौंकाने वाला था, और दोनों पार्षद सम्मोहित होकर देखते रहे, जबकि नाग महल के रक्षकों के लगातार करीब आते जा रहे थे। इस विचित्र व्यवहार से विचलित और समझ न पाने के कारण, रक्षक दहशत में निष्क्रिय अवस्था में जम से गए प्रतीत हुए।

“वे क्या कर रहे हैं?” वराहमिहिर ने फुफकारा।

धनवंतरी अपनी गहरी सोच से बाहर आ गए। उनके मित्र का सवाल सिर्फ एक सवाल था, जिसका जवाब देना ज़रूरी नहीं था। इसके बजाय, उन्होंने पुल की ओर देखा, उनके मोटे कंधे तन गए। उन्होंने हड़बड़ी भरे लहजे में कहा, "इन लोगों को पीछे हटना होगा, वरना सब मारे जाएंगे।"

जैसे ही वह बोल रहा था, अंधेरे से और भी नाग निकल आए और पुल पर मौजूद लोगों के समूह में शामिल हो गए।

“अरे नहीं...” धनवंतरी ने धीमी आवाज़ में कहा। पीछे मुड़कर उसने नीचे बने आंगन में चिल्लाकर कहा, “सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दो... मैं दोहराता हूँ, सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दो।”

"जी हां, महाराज," नीचे से एक गार्ड ने चिल्लाकर कहा।

हालांकि, आदेश पहुंचने से पहले ही नागों ने बैरिकेड पर हमला कर दिया। दौड़ते-भागते और उछलते हुए, उन्होंने महल के पहरेदारों पर आक्रमण कर दिया, उन पर आ रहे तलवारों और भालों की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उनके शरीर से खून बह रहा था, नागों ने पहरेदारों को जकड़ लिया, उन्हें कसकर पकड़ लिया, उनकी हरकतों को रोक दिया और पहरेदारों और पीछे से आ रहे नागों के बीच एक तकिये का काम किया। जैसे ही महल के पहरेदार दर्द से चीखने लगे, और भी नाग पुल से नीचे उतर आए और मानव बैरिकेड को धक्का देने लगे। संख्या में कम होने के कारण, पहरेदार इधर-उधर और पीछे की ओर धकेले गए जिससे उनका संतुलन बिगड़ गया और वे चीखते हुए गिर पड़े—पल भर में, बैरिकेड पूरी तरह से ढह गया। नागों का एक समूह बैरिकेड तोड़कर महल की ओर दौड़ पड़ा, जबकि उनके पीछे आए उनके भाइयों ने गिरे हुए महल के पहरेदारों पर बेरहमी से हमला किया, उन्हें संभलने से पहले ही मार डाला और उनके शवों को झील में फेंक दिया।

“नहीं,” धनवंतरी ने पीड़ा और भय से कराहते हुए कहा। “नहीं।”

“महल के द्वार बंद करो,” कहीं से एक पहरेदार चिल्लाया। “जल्दी करो, उन्हें अंदर मत आने दो।”

“हाँ, द्वार,” वराहमिहिर चिल्लाया और लंगड़ाते हुए उस सीढ़ी की ओर बढ़ा जो आंगन की ओर जाती थी। “उन्हें अंदर नहीं आना चाहिए।”

सौभाग्यवश, नया लगाया गया लोहे का फाटक पहले से ही बंद था, जिसका अर्थ था कि केवल फाटक में बने छोटे दरवाजे को ही बंद करना बाकी था। दरवाजा अपने कब्जों पर सुचारू रूप से घूमा और एक जोरदार आवाज के साथ बंद हो गया, बोल्ट अपने खांचों में लग गए और कुंडी ठीक समय पर अपनी जगह पर बैठ गई, जिससे नागों का फाटक फाटक पर व्यर्थ ही टूट पड़ा।

द्वार पर हो रही व्यर्थ की खटखटाहट और खड़खड़ाहट सुनकर धनवंतरी ने राहत की एक गहरी साँस ली और अपने लाठी पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। उसने दस कदम दूर खड़े, बैसाखी के सहारे खड़े वराहमिहिर की ओर देखा और कहा, “बाल-बाल बच गए। ये जो भी चीजें हैं, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि—”

चिकित्सक ने देखा कि वराहमिहिर का ध्यान उनके चेहरे से हटकर उनके कंधे के पीछे किसी बिंदु पर चला गया। उसी समय, वृद्ध परामर्शदाता की आँखें भय से चौड़ी

हो गईं और उनके होंठ कुछ शब्द बोलने ही वाले थे, लेकिन धनवंतरी सहज रूप से झुक गए, अपना सिर नीचे करके घुटनों के बल बैठ गए। ऐसा करते ही चिकित्सक को अपने सिर के ऊपर से कुछ तेज़ी से गुज़रने का आभास हुआ और उन्हें यकीन था कि उन्होंने धातु के हवा में से गुज़रने की आवाज़ सुनी।

फिर वराहमिहिर ने अपना दाहिना हाथ हवा में उठा रखा था, हथेली बाहर की ओर, मानो किसी को रोक रहे हों, उनकी आँखें एक ही जगह पर टिकी हुई थीं। धनवंतरी ने मुड़कर देखा तो पुल से एक नाग ऊर्जा की एक पतली परत को धकेल रहा था जो भिनभिना रही थी और चटक रही थी। वैद्य उस विचित्र प्राणी को घूर रहे थे, जिसका सिर साँप का और शरीर आंशिक रूप से मनुष्य का था। वह उस खिड़की से रेंगकर अंदर आ गया था जिससे वह और वराहमिहिर बाहर देख रहे थे, वराहमिहिर की ऊर्जा ढाल ने उसके प्रवेश को रोक दिया था। वह प्राणी उस पारदर्शी पर्दे को फाड़ने की पूरी कोशिश कर रहा था, अपने पंजों से उस पर हमला कर रहा था, लेकिन व्यर्थ।

नाग की तलवार, जिससे उसने धनवंतरी का सिर काटने की कोशिश की थी, उसके हाथ से गिरकर जमीन पर पड़ी थी।

"क्या यह चीज़ टिक पाएगी?" चिकित्सक ने धीरे-धीरे उठते हुए पूछा।

"हम्म-हम्म।"

"और क्या तुम... उस प्राणी को नियंत्रित कर सकते हो?" धनवंतरी ने नाग से लेकर अपने मित्र के हाथ तक आश्चर्य से देखा।

मुझे नहीं पता। इतने सवाल मत पूछो।

"कोशिश करना।"

वराहमिहिर ने गंभीर भाव से मुंह बनाया, एकाग्रता में उनकी भौंहें तन गईं। एक पल के लिए कुछ नहीं हुआ। फिर परामर्शदाता ने अपना हाथ झटके से पीछे धकेला, और धनवंतरी के देखते ही देखते ऊर्जा का पर्दा हिल गया और वह प्राणी खिड़की से बाहर, अंधेरे में जा गिरा। पर्दा तुरंत गायब हो गया, मानो वह कभी था ही नहीं। चिकित्सक खिड़की की ओर दौड़ा और बाहर देखा, और एक क्षण बाद, उसने एक ज़ोरदार छपछपाहट सुनी जब वह प्राणी झील में गिरा।

"वाह, कितना शानदार था..." उसने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ कहना शुरू किया, तभी उसे बाईं ओर कुछ हलचल दिखाई दी। उसने मुड़कर देखा तो एक और

जीव खिड़की से रेंगता हुआ अंदर आ रहा था। आखिर ये आ कहाँ से रहे थे?

लेकिन वराहमिहिर इसके लिए तैयार थे। इससे पहले कि वह प्राणी ठीक से पैर जमा पाता, उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और खिड़की पर ऊर्जा कवच फेंक दिया। प्राणी ने पूरी ताकत से पर्दे को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन वह भी अंदर नहीं घुस पाया। वराहमिहिर ने फिर से अपने हाथ से धक्का दिया, और अब उस प्राणी की बारी थी खिड़की से बाहर निकलकर रात के अंधेरे में झील की ओर उड़ जाने की।

"वे कहाँ से आ रहे हैं—" एक चेतावनी भरी आवाज़ ने चिकित्सक की बात को एक बार फिर बीच में ही रोक दिया।

"वे पानी में हर जगह हैं। वे महल की ओर तैर रहे हैं।"

इससे यह स्पष्ट हो गया कि वह प्राणी खिड़की तक कैसे पहुँचा था। वराहमिहिर से एक अशुभ नज़र का आदान-प्रदान करते हुए, धनवंतरी गैलरी के अंत तक दौड़ा और उस खिड़की से बाहर झाँका जहाँ से झील का स्पष्ट दृश्य दिखाई दे रहा था। हालाँकि उसे पानी में एक अजीब हलचल महसूस हुई, लेकिन चिकित्सक को पहले कुछ भी दिखाई नहीं दिया। लेकिन जैसे ही उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त हुईं, उसने झील की सतह पर चार-पाँच धुंधली आकृतियाँ तैरती हुई देखीं, जो महल की ओर बढ़ रही थीं। महल की दीवार के नीचे पहुँचकर, इनमें से पहली आकृति ने बड़ी कुशलता से पानी से खुद को बाहर निकाला और दीवार पर चढ़ना शुरू कर दिया, सहारा लेने के लिए उसने पैरों के छोटे-छोटे सहारे का इस्तेमाल किया। कुछ ही क्षणों बाद, दो और आकृतियाँ चढ़ाई शुरू कर चुकी थीं।

धनवंतरी घूमकर वराहमिहिर की ओर मुड़ा। "ये चीजें दीवारों पर चढ़ रही हैं।"

"खिड़कियाँ।" वराहमिहिर की आँखों में चिंता झलक उठी। "महल में बहुत सारी खिड़कियाँ हैं।"

"और बहुत सारी बालकनियाँ और छतें हैं," धनवंतरी ने आगे कहा। "अगर ये चीजें अंदर आ सकती हैं तो एक गेट बंद करने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा—" वह बीच वाक्य में ही रुक गया और रेलिंग के पास चला गया। झुककर उसने एट्रियम में चिल्लाकर कहा, "हमें तीरंदाजों की ज़रूरत है। उन्हें यहाँ भेजो। जल्दी।"

"आआआ...."

चीख ऊपर से आई, और उसकी तीव्रता से चौंककर पार्षदों ने ऊपर देखा तो एक महल का रक्षक ऊपरी गलियारों में से एक से तेजी से आता हुआ दिखाई दिया, उसकी आँखें पागलपन से लाल थीं और चेहरा भय से पीला पड़ गया था। वह सीढ़ियों से नीचे लड़खड़ाता हुआ आया, लगभग गिरते-गिरते बचा, लेकिन किसी तरह एक बुरी तरह गिरने से बच गया। वह धनवंतरी की ओर दौड़ा, जिसने अपने भारी-भरकम शरीर से उसका रास्ता रोक दिया।

"क्या बात है?" चिकित्सक ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखते हुए, उससे नज़रें मिलाने की कोशिश करते हुए पूछा।

सिपाही की निगाहें चिकित्सक से बचने का रास्ता ढूंढते हुए बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थीं। आखिरकार, उसकी नज़र धनवंतरी पर टिकी और उसे पहचान का आभास हुआ। वह कांप उठा और उसके होंठों से एक धीमी सी आह निकल गई।

“क्या बात है, सिपाही?”

उस आदमी ने गहरी सांस ली और खुद को संभाला, हालांकि उसकी आंखों से डर पूरी तरह गायब नहीं हुआ था। "माननीय न्यायाधीश... उनका खून। यह उनका खून है।"

“कौन सा खून?” वराहमिहिर ने पूछा।

“वो जीव... उनका खून।” गार्ड ने ऊपर, उस दिशा में देखा जहाँ से वह आया था, और धनवंतरी के रोंगटे खड़े हो गए। वो जीव पहले से ही अंदर थे।

“उनके खून का क्या?” उसने पूछा।

उनका खून हमारे शरीर को सड़ा देता है।

चिकित्सक घूरता रहा।

“जब उनका खून हमें छूता है, तो हमारी त्वचा और मांस सड़ने लगते हैं।” फिर से, वह आदमी घबराकर पीछे और ऊपर देखने लगा। “मैंने परिषद कक्ष के पास कुछ पहरेदारों को सड़कर गिरते देखा। मैं छिपकर भाग निकला।”

धनवंतरी को समझ आया कि इसीलिए वे जीव खुद को काटते थे। ताकि खून बह सके।

और इसीलिए पुल पर तैनात पहरेदार मरने से पहले इतनी भयानक चीखें मार रहे थे। खून उनके शरीर को छू गया था।

“क्या वे जीव परिषद कक्ष के पास थे?” चिकित्सक ने अनावश्यक रूप से पूछा।

उस आदमी ने सिर हिलाया और कांप उठा। "उनमें से दो, महाराज।"

धनवंतरी ने वराहमिहिर की ओर भयभीत होकर देखा। शायद बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन फिर भी उन्हें कुछ करना ही था।

"हमें तीरंदाजों की ज़रूरत है," वह चिल्लाया। "वे अभी तक यहाँ क्यों नहीं आए? कोई उन्हें बुलाओ।"

उनकी असली इच्छा यही थी कि क्षपणक यहाँ होते...

***

मताली पानी के अंदर से धीरे से बाहर निकला, उसकी परछाई महल की दीवार से चिपकी हुई थी, एक नीची छत के ठीक नीचे ताकि वह किसी की नज़र में न आए। उसे शक था कि ऊपर से कोई झील पर नज़र रख रहा है, दीवारों पर चढ़ते नागों पर नज़र रख रहा है, लेकिन इससे उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा; उसका महल में घुसने के लिए दीवार पर चढ़ने का कोई इरादा नहीं था।

सांस लेने के लिए रुककर, उसने अपनी आँखों से पानी पोंछा और चारों ओर देखा। वह महल के पश्चिमी भाग में था, पुल और पूर्वी भाग के ठीक सामने, जहाँ भीषण लड़ाई चल रही थी। शाही रसोईघर उसके ठीक ऊपर थे, और महल के अभ्यास के अनुसार, रसोइये और उनके सेवक अब तक अपने-अपने स्थान छोड़ चुके होते, जिससे रसोईघर खाली हो जाते—और उसके लिए महल में चुपके से वापस जाने का यह आदर्श अवसर होता। महल से उज्जैन के पूर्वी भाग का दृश्य अवरुद्ध था, लेकिन झील के पानी में प्रतिबिंबित नारंगी रंग की हल्की झलक ने उसे बताया कि किन्नरों ने शहर में आग लगा दी है। महल से दूर से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें उसके कानों तक पहुँच रही थीं।

देवता ने छत के निचले किनारे को पकड़ा और खुद को पानी से बाहर खींच लिया। खड़े होकर, वह पास की दीवार से होकर गुजरे, जिससे छत पर उनके निशान के रूप में केवल पानी की एक छींटा और आधा दर्जन गीले पदचिह्न ही बचे रहे जो रहस्यमय तरीके से दीवार पर जाकर समाप्त हो गए।

मताली ने खुद को एक अंधेरे कमरे में पाया, जिसमें मसालों की तेज़ गंध आ रही थी। उसे हल्दी और सूखी मिर्च की महक महसूस हुई, और उसकी नाक अनायास ही सिकुड़ गई, छींक आने ही वाली थी। अपनी नाक को कोहनी में दबाकर, छींक

को रोकने की पूरी कोशिश करते हुए, देवता मुड़े और बाईं ओर की दीवार के पार चले गए, जिससे वे उस कमरे में पहुँच गए जिसे उन्होंने रसोइयों का कमरा समझा। कमरा बड़ा था, फर्श पर पाँच रजाई बिछी हुई थीं। जूट की रस्सी से दो पुरानी लेकिन साफ धोतियाँ लटकी हुई थीं, और मताली ने जल्दी से अपनी गीली धोती उतारकर एक धुली हुई, सूखी धोती अपने चारों ओर लपेट ली। वह अभी दूसरी धोती से पानी पोंछ ही रहा था कि अचानक, जिस छींक को वह रोकने की कोशिश कर रहा था, वह फूट पड़ी, कमरे की खामोशी में उसकी गर्जना इतनी तेज़ थी कि देवता के कानों में गूंज उठी।

मताली ने अपनी सांस रोक ली और पास आती आवाजों या कदमों की आहट सुनने के लिए उत्सुकता से सुनने लगा।

कुछ नहीं। धीरे-धीरे, वह दबे पांव दरवाजे तक गया और अपना सिर बाहर निकाला।

वह गलियारा खाली था, और जहाँ तक उसे पता था, पूरा विंग भी खाली था। यह तो अपेक्षित ही था—सभी को भूलभुलैया की ओर ही ले जाया गया होगा।

राहत की सांस लेते हुए, देवता हलाहल की खोज शुरू करने के लिए गलियारे में चले गए।

बचाव

क्षपनाका ने काफी समय से अपने धनुष में एक बाण तैयार रखा हुआ था, लेकिन विभिन्न कारणों से वह अब तक किसी किन्नर पर एक भी सटीक निशाना नहीं लगा

पाई थी।

एक तो वह और किन्नर अब उज्जैन के घनी आबादी वाले दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में थे, जो एक पुराना इलाका था जहाँ की गलियाँ बेहद संकरी, घुमावदार और ऊबड़-खाबड़ थीं, और घर और दुकानें इतनी घनी थीं कि बिना किसी रुकावट के तीर के लिए भी कोई जगह नहीं थी। फिर, क्षपनाका के वाहन की तुलना में, सेंटॉर अधिक बलवान, फुर्तीले और अधिक चपल थे, जो बड़ी आसानी से गति बढ़ा सकते थे और दिशा बदल सकते थे। इससे परामर्शदाता को यह एहसास हुआ कि किसी का घोड़ा कितना भी मजबूत और भरोसेमंद क्यों न हो, घोड़े की सवारी करने और घोड़ा होने में अंतर होता है—एक ऐसा लाभ जिसका ये आधे घोड़े भरपूर फायदा उठा रहे थे।

फिर भी, वह आसानी से एक-दो तीर चला सकती थी, इस उम्मीद में कि वे निशाने पर लगेंगे, और सामान्य परिस्थितियों में, वह बिना सोचे-समझे ऐसा कर देती। लेकिन उसके तरकश में तीरों की संख्या बहुत सीमित थी, और आस-पास कोई छावनी, निगरानी मीनार या भट्टी नहीं थी जहाँ से वह अपने तीरों का भंडार भर सके। यह जानते हुए कि उसे हर तीर का सही इस्तेमाल करना है, उसने खुद को रोका, तीरों को बचाते हुए किन्नरों का पीछा किया, और सोचती रही कि वह उन्हें उन इलाकों से कैसे दूर रखे जहाँ से अभी तक लोगों को निकाला नहीं गया था।

उसे यह ख्याल आया कि आधे घोड़ों के मुकाबले उसके पास एक ही फायदा था, और वह यह कि वह इलाके की भौगोलिक स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ थी।

एक गली के अंत तक पहुँचकर, क्षपनाका ने सेंटॉरों का पीछा करने के बजाय उनसे मुँह मोड़ लिया। वह एक बाज़ार से गुज़री और एक बड़े तालाब वाले मंदिर के किनारे से होते हुए एक पहाड़ी पर चढ़ गई, जहाँ पहुँचकर वह बाईं ओर मुड़ने वाली सड़क पर आ गई। सड़क पार करके गुलमोहर के पेड़ों के एक समूह के पीछे छिपकर, उसने धीरे-धीरे धनुष की डोरी खींची, धनुष के मुड़ने पर लकड़ी की चरमराहट सुनी और अपने हाथों और कंधों में तनाव महसूस किया।

दिल की धड़कन के चार अंतराल में, पहली किन्नरा नजर आई।

क्षपणक ने बाण छोड़ने से पहले धनुष की डोरी को यथासंभव पीछे की ओर खींचा।

पार्षद का निशाना सटीक था, और तीर इतनी ज़ोर से किन्नर के गले में लगा कि वह उसकी मोटी गर्दन को चीरता हुआ पीछे से निकल गया और रीढ़ की हड्डी को

दो टुकड़ों में तोड़ दिया। किन्नर के पूरी तरह मुड़ने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

गति और मांसपेशियों की सहजता के बल पर, सेंटॉर सड़क पर सरपट दौड़ता रहा, जो क्षपणक को बिल्कुल भा गया—पीछे आ रहे किन्नरों को जरा भी शक नहीं हुआ और वे कोने से दौड़ते हुए आ गए, एक, दो, तीन, चार, पाँच...

एक। दो। तीन। चार। पांच।

पार्षद ने झटपट एक के बाद एक पांच तीर निकाले और चलाए, सभी पांचों तीर इतनी कुशलता और सटीकता से दागे गए कि निशाने सड़क के बीचोंबीच एक दूसरे के ऊपर बिखरे पड़े थे, उलझे हुए शरीरों और अंगों का एक ढेर सा बन गया था।

कुछ ही पलों में छह आधे घोड़े पीछे छूट गए, क्षपनाका ने संतुष्टि से मन ही मन सिर हिलाया। यह तो अच्छी बात थी। बुरी बात यह थी कि अपने मृत भाइयों को देखकर सतर्क हुए किन्नर पीछे से आ रहे थे और रुक गए थे, उसकी नज़र से दूर। उसे कुछ ऐसा करना था जिससे वे दिखाई देने लगें।

गुलमोहरों की आड़ से निकलकर, पार्षद मृत सेंटॉरों के पास पहुँची। उसने शवों को देखने और उनकी जाँच करने का नाटक किया, साथ ही सड़क पर दूर से देख रहे किसी भी व्यक्ति को अपनी झलक भी दिखाई। वह जानती थी कि उस पर तीर चलने का खतरा है, लेकिन यह एक जोखिम था—

"वहाँ!"

आवाज सड़क के उस पार से आई। एक क्षण बाद, क्षपणक ने घोड़ों के दौड़ने की तेज आवाज सुनी।

अपने घोड़े को घुमाते हुए, पार्षद विपरीत दिशा में दौड़ पड़ी, इस उम्मीद में कि आधे घोड़े उसका पीछा करेंगे।

वे सभी दस लोग, मोड़ के चारों ओर तेजी से दौड़ते हुए, सड़क को पार करते हुए, उसके और उनके बीच की दूरी को कम करते हुए आगे बढ़े।

हालांकि क्षपनाका को पूरा यकीन था कि उसका पीछा कर रहे सेंटॉरों के पास धनुष-बाण नहीं हैं, फिर भी वह उन्हें करीब आने से रोकने के लिए तेज़ी से घोड़े दौड़ाती रही, और अपने ऊपर फेंके जाने वाले किसी भी भाले से बचने के लिए दाएं-बाएं मुड़ती रही। अचानक दिशा बदलकर वह अनपेक्षित गलियों में चली जाती, लेकिन हमेशा ऐसे रास्ते चुनती जहाँ सेंटॉर उसका पीछा कर सकें। सलाहकार की रणनीति स्पष्ट थी, जिसे कोई भी बुद्धिमान सैनिक समझ सकता था, फिर भी आधे

घोड़े उसके पीछे पड़े रहे—जिससे वे या तो बेहद निडर साबित हुए या फिर बेहद मूर्ख।

एक और मोड़ मुड़ते ही सड़क पर एक घर की छत लटकी हुई देखकर क्षपणका ने अपने घोड़े की लगाम थोड़ी धीमी कर दी—यही तो उसने इस रास्ते को चुना था। धनुष को कंधे पर टांगकर वह घोड़े की काठी पर सवार हो गई और पीठ पर झुककर बैठ गई, उसकी आँखें छत से अपनी दूरी का अंदाज़ा लगा रही थीं। जैसे ही घोड़ा छत के नीचे से गुजरा, क्षपणका ने घोड़े की गति इतनी धीमी कर दी कि वह दोनों हाथों से छत को पकड़ सके। उसी क्षण उसने घोड़े के पिछले हिस्से पर एक लात मार दी।

"टचक, टचक," उसने अपनी जीभ चटकाते हुए उस जानवर को उकसाया।

घोड़े की रफ्तार बढ़ गई, और पार्षद ने अपने पैर छुड़ाकर खुद को छत पर खींच लिया। नीचे झुककर, वह ढलान पर चढ़ती हुई बिल्कुल चोटी पर पहुँच गई। अपने पैरों को मजबूती से जमाकर और संतुलन बनाते हुए, क्षपनाका उस दिशा की ओर मुड़ी जहाँ से वह आई थी।

किन्नर घोड़े पर सवार होकर कोने से मुड़े और उसके ठीक पीछे आ गए।

क्षपनाका ने सेंटॉरों को छज्जे के नीचे से सरकते हुए देखा, उनकी निगाहें उसके घोड़े पर टिकी थीं, जो पहले ही कम रोशनी वाली सड़क पर आधा रास्ता तय कर चुका था, एक अस्पष्ट परछाई की तरह, जिसे देखा कम और सुना ज़्यादा जा सकता था। किन्नरों को यह पता नहीं था कि जिस घोड़े का वे पीछा कर रहे थे, उस पर अभी कोई सवार नहीं था। कम से कम अभी तो नहीं।

अपना धनुष उतारकर, पार्षद ने उस पर तीर लगाया और कमान खींची। उसने समूह के दसवें किन्नर के छत के नीचे से गुजरने का इंतजार किया, और जब वह स्पष्ट रूप से उसकी नजर में आ गया, तो उसने तीर छोड़ दिया।

तीर निशाने की गर्दन में जा लगा और खोपड़ी के ठीक नीचे धंस गया। सेंटॉर के पैर लड़खड़ा गए और वह गिर पड़ा।

क्षपनाका छत की पूरी लंबाई में दौड़ते हुए किन्नरों पर पीछे से निशाना साधते हुए गोली चला रहा था, हर गोली एक को गिरा रही थी। नौ, आठ, सात, छह, पांच... आगे चल रहे सेंटॉर पीछा करने में इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि पीछे चल रहे उनके साथी एक-एक करके मारे जा रहे हैं।

वे गली के उस दरार के पास पहुँच रहे थे जो दो मशालों की रोशनी से जगमगा रही थी। यह जानते हुए कि बचे हुए चार आधे घोड़े यह देख लेंगे कि उसका घोड़ा सवारहीन है, क्षपनाका ने एक और तीर धनुष पर चढ़ाया और अपनी गति बढ़ा दी, किन्नरों के सतर्क होने से पहले वह अपना काम पूरा करने के लिए उत्सुक थी। हालाँकि, जल्दबाजी में, परामर्शदाता का संतुलन बिगड़ गया और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, धनुष उसके हाथ से गिर गया और वह छत से नीचे फिसलने लगी, पुरानी, काई लगी टाइलों में सहारा ढूंढने के लिए बेताब थी। लेकिन गुरुत्वाकर्षण ने अपना प्रभाव दिखाया और उसका गिरना तेज़ हो गया, हालाँकि एक हाथ से छत के किनारे को पकड़कर वह क्षण भर के लिए रुक गई।

उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह गिर गई।

अपने पैरों पर उतरते ही उसका संतुलन बिगड़ गया, वह घुटनों के बल बैठ गई और लुढ़क गई ताकि उसके घुटनों पर चोट कम लगे। दोबारा संभलते ही, वह आधी उठी ही थी कि उसने देखा कि चार भाले उसकी ओर इशारा कर रहे हैं। उसका हाथ तेजी से कमर पर बंधी तलवार की ओर बढ़ा, लेकिन इससे पहले कि उसकी उंगलियां तलवार की मूठ को छू पातीं, भाले आगे बढ़ गए, मानो उसे चेतावनी दे रहे हों कि ऐसा नहीं करना चाहिए। उसने अपना हाथ नीचे कर लिया और ऊपर देखा—सीधे उन चार सेंटॉरों की कठोर आँखों में, जिनका वह पीछा कर रही थी।

सेंटॉर उस दिशा में पीछे मुड़े जहाँ से वे आए थे। क्षपनाका निश्चित रूप से नहीं कह सकती थी, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि वे सड़क पर मृत किन्नरों के शव देख सकते हैं। उनके चेहरे ठंडे पड़ते देख, वह जान गई कि उसका अनुमान सही था। चारों किन्नरों ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर उनमें से एक ने बात की।

"जब मौका मिला था, तब हमें भी मार देना चाहिए था। अगर तुमने वो मौका गंवा दिया तो—"

किन्नरा की सबसे बड़ी गलती यह थी कि उसने अपनी ही सलाह का पालन नहीं किया।

अंधेरे से एक आकृति झपट्टा मारती हुई छत से नीचे आई, एक धुंधली सी आकृति जो सेंटॉर की पीठ पर जा गिरी। उस आकृति के हाथ में कुछ था, और क्षपनाका के देखते ही देखते, हाथ किन्नर के गले पर तेज़ी से चला और एक गहरे घाव से खून की बौछार हो गई। इससे पहले कि आधे घोड़े वाले प्राणी समझ पाते कि उन पर हमला

हो रहा है, वह आकृति—क्षपनाका ने अब देखा कि वह एक आदमी था—दूसरे किन्नर पर कूद पड़ी और झपट्टा मारकर उसका गला भी काट दिया। बचे हुए दो किन्नर इस नए खतरे से निपटने के लिए मुड़े, भाले लहराते हुए, लेकिन उस आदमी ने पहले ही इसका अनुमान लगा लिया था। वह एक भाले के नीचे से निकला और तेज़ी से ऊपर आकर अपनी कटारी को एक सेंटॉर के पेट में ज़ोर से घुसा दिया, जिससे उसका पेट फट गया। इसी बीच, ध्यान भटकने का फायदा उठाते हुए, क्षपनाका ने अपनी तलवार निकाली और आखिरी किन्नर पर झपट्टा मारा, तलवार की धार किन्नर की बगल के नीचे से तेज़ी से फिसल गई। जैसे ही उसकी उंगलियों पर खून के छींटे पड़े, उसने धक्का देकर सेंटॉर के सिर के किनारे पर एक जोरदार प्रहार किया जिससे उसकी जान चली गई। वह जानवर लड़खड़ाया और गिर पड़ा।

क्षपनाका ने मुड़कर देखा तो पाया कि सभी आधे घोड़े नीचे गिर चुके थे। वह व्यक्ति उस भीषण नरसंहार के बीच खड़ा था, अपनी कटारी को कसकर पकड़े हुए, साँस लेने की कोशिश कर रहा था और उसका चेहरा दूसरी ओर मुड़ा हुआ था।

क्षपणक को उसे पहचानने के लिए उसका चेहरा देखने की आवश्यकता नहीं थी।

वह आदमी मुड़ा और टॉर्च की रोशनी से आखिरकार उसके चेहरे के हाव-भाव साफ दिखाई दिए।

बुनकर।

***

पुराने पशु बाजार के आसपास का इलाका आग की लपटों में घिरा हुआ था, चारों ओर दम घोंटने वाली गर्मी और धुएं की दीवार सी छाई हुई थी। गर्मी चारों ओर फैल रही थी, जिससे विक्रमादित्य को पीछे हटना पड़ रहा था, और सम्राट की घनी दाढ़ी और भौहें आग के बहुत करीब जाने की कोशिश में झुलस चुकी थीं। आग के केंद्र से काला धुआं उठ रहा था और जलती हुई छतों के ऊपर चक्कर खा रहा था, नीचे से नारंगी रंग की रोशनी से जगमगा रहा था, फिर रात के अंधेरे में घुलमिलकर गायब हो रहा था। आग को बुझाने वाला कोई नहीं था, इसलिए वह अपनी मर्जी से फैलती चली गई, नए मोहल्लों में घुसती गई, और शहर के अधिकाधिक हिस्से को अपनी विनाशकारी गिरफ्त में लेती चली गई।

"माननीय, यहाँ कोई नहीं दिख रहा," घुड़सवारों में से एक ने पुकारा। वह व्यक्ति थका हुआ लग रहा था, उसका चेहरा कालिख और पसीने से सना हुआ था, और उसकी आवाज़ से स्पष्ट था कि वह खोज छोड़ने के लिए तैयार था।

"शायद वे भाग निकलने में कामयाब हो गए हों," दूसरे घुड़सवार ने कहा। उसके शब्दों में आशा तो थी, लेकिन उसकी निगाहें आग से घिरे परिदृश्य पर संदेह से घूम रही थीं, जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह वास्तव में क्या होने की कल्पना कर रहा था।

विक्रमादित्य ने गंभीर भाव से सिर हिलाया और गली से उठते धुएं को घूरने लगा। इतने धुएं के बीच से अंदर जाने का कोई रास्ता नहीं था। और अंदर जाने का रास्ता ढूंढने का भी कोई फायदा नहीं था, उसने मन ही मन सोचा। शायद बहुत देर हो चुकी थी। शायद दोनों परिवार पहले ही मर चुके थे—जलकर या दम घुटकर या दोनों—और यह सब समय की बर्बादी थी; शायद उन्हें वापस लौट जाना चाहिए और जहाँ उनकी वास्तव में ज़रूरत थी, वहाँ अपना योगदान देना चाहिए...

"क्या हमने हर जगह तलाश कर ली है?" उसने पूछा।

"मुझे ऐसा ही लगता है, माननीय न्यायाधीश।"

"हम्म।" विक्रमादित्य ने जलते हुए इलाके पर अपनी नज़रें फिर से टिका दीं। "वहाँ उस हिस्से का क्या हुआ?" उसने छतों की ओर इशारा करते हुए पूछा। "जहाँ पिताजी के ज़माने में सुनारों का संघ था? क्या हमने उसकी जाँच की थी?"

"मैंने... नहीं देखा है, माननीय न्यायाधीश। लेकिन यह तीन तरफ से आग से घिरा हुआ है, इसलिए अगर वे बाहर आ जाते तो..."

विक्रमादित्य ने दूसरे घुड़सवार की ओर देखा। उसे भी सिर हिलाते देख राजा ने अपने घोड़े को मोड़ दिया। "चलो जाकर देखते हैं।"

घुड़सवार सम्राट के पीछे-पीछे चल रहे थे और तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे, आग को अपने दाहिनी ओर रखते हुए, आग के चारों ओर घूमते हुए, जहाँ तक संभव हो सके आग के करीब पहुँच रहे थे। उज्जैन पर हमले के क्षण से ही खतरे की घंटियाँ लगातार बज रही थीं, इसलिए उनका शोर अब उतना स्पष्ट नहीं था, उनकी तीव्रता कुछ डेसिबल कम हो गई थी और वे दबी हुई और थकी हुई लग रही थीं। परिस्थितियाँ अलग होतीं तो उन पर ध्यान न देना आसान होता।

पुराने सुनारों के संघ की ओर जाने वाली एक गली में मुड़ते हुए, विक्रमादित्य और घुड़सवार आधे रास्ते तक ही पहुँच पाए थे कि धुएँ के एक विशाल गुबार ने उनका रास्ता रोक दिया। धुआँ आग की गर्मी से घना था, और उसकी धुंधली परतों में नारंगी-लाल लपटें उछलती और नाचती हुई दिखाई दे रही थीं, मानो अतिक्रमण के खिलाफ चेतावनी दे रही हों। अपने घोड़ों को मोड़कर, तीनों सवार सुरक्षित दूरी पर पीछे हट गए, जहाँ से उन्होंने देखा कि धुआँ गली को पूरी तरह से ढक रहा है और धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रहा है।

"क्या अंदर जाने का कोई और रास्ता नहीं है?" सम्राट ने पूछा, हालांकि उन्हें जवाब पता था। एक जिज्ञासु बालक होने के नाते, उन्होंने शहर का एक कोना भी नहीं देखा था, कोई गली ऐसी नहीं थी जिससे वे बाहर निकलने का रास्ता न खोज सकें। उज्जैन के बारे में विक्रमादित्य को सब कुछ पता था।

घुड़सवारों को भी यह बात पता थी, इसलिए उन्होंने कुछ नहीं कहा।

"मुझे लगता है कि अब बस इतना ही है," राजा ने भारी स्वर में कहा, झुंझलाहट से उनकी भौंहें तन गईं। "कम से कम हमने अपनी पूरी कोशिश तो की—"

अंधेरे से चीख निकली, तीखी और आतंक से भरी हुई, जिसने सम्राट के शब्दों को काट दिया। एक महिला की छोटी सी चीख।

राजा और दोनों घुड़सवारों ने चारों ओर देखा, घंटियों की गूंज के बीच वे आवाज़ के स्रोत का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे। वे कान लगाकर कुछ सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

फिर से। इस बार, एक छोटी, घबराहट भरी आज्ञा के साथ। "अम्या... भागो!"

"उस तरफ।" घुड़सवारों में से एक ने अपना हाथ फैलाकर दाईं ओर इशारा किया।

उस आदमी का हाथ वापस अपनी कमर पर आने से पहले ही सम्राट ने अपने घोड़े का रुख उत्तर दिशा की ओर मोड़ दिया। घोड़े के पेट में एड़ियाँ गड़ाकर वह तीर की तरह दौड़ पड़ा, घुड़सवारों को अपनी गति पकड़ने और उसके पीछे सरपट दौड़ने में कुछ क्षण लगे।

विक्रमादित्य ने चौराहे पर दाहिनी ओर मुड़ते ही उन्हें देख लिया।

दो महिलाएं और लगभग आठ साल की एक बच्ची, बच्ची के दोनों ओर खड़ी महिलाएं उसके हाथ पकड़े हुए, सचमुच बच्ची को घसीट रही थीं, जिससे उसके पैर

सड़क को छू रहे थे।

वे सड़क के आखिरी मोड़ से आए, इसलिए आग की चकाचौंध में उनकी परछाईं आंशिक रूप से दिखाई दे रही थी, वे उसकी ओर दौड़ रहे थे, लेकिन जिस भी चीज ने उन्हें भयभीत किया था, उससे बचने की अपनी हताशा में उन्होंने उसे नोटिस नहीं किया।

लड़की का पैर ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर फंस गया और वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी, जिससे दौड़ रुक गई और महिलाएं पीछे की ओर खिंच गईं।

"अम्या... बच्ची... जल्दी करो।"

महिलाओं ने बच्ची को ऊपर उठाया, तभी उनमें से छोटी ने पीछे मुड़कर देखा। "जल्दी करो, माँ..." उसने किसी को पुकारा, अपनी गति थोड़ी धीमी करते हुए, अभी भी पीछे देख रही थी।

"चलो चलें, चलो चलें..." दूसरी महिला ने छोटी बच्ची का हाथ खींचते हुए, हिस्टीरिया भरी आवाज़ में ज़िद की। "बस चलो चलें... प्लीज़..."

"माँ..." बच्चा सिसकते हुए बोला, छोटी महिला की ओर देखते हुए, उसे डर था कि कहीं उनके हाथ अलग न हो जाएँ।

महिला अपनी बेटी की ओर मुड़ी। "जी हाँ, बच्ची। आओ, आओ..."

लड़की का हाथ और मजबूती से पकड़ते हुए, उनकी उंगलियां आपस में गुंथ गईं, महिला ने अपनी गति बढ़ा दी, और वे तीनों फिर से चल पड़े, उनके पैर कठोर कीचड़ पर जोर से पड़ रहे थे।

विक्रमादित्य के पीछे आते हुए घुड़सवारों ने देखा कि उनके राजा ने अपने घोड़े की गति धीमी कर दी है और धीरे-धीरे चल रहे हैं। उन्होंने देखा कि सम्राट ने अपने हाथ आगे की ओर मोड़े और कमर पर बंधी तलवारों को उठाया। जैसे ही राजा की उंगलियों ने तलवारों की मूठ पकड़ी और उन्होंने म्यान से तलवारें निकालीं, घुड़सवारों ने भी ऐसा ही किया और सड़क पर खड़ी महिलाओं और बच्चे को अनिश्चितता से देखने लगे।

घुड़सवारों की निगाहें भागती हुई तीनों महिलाओं पर टिकी हुई थीं, तभी सड़क के दूसरे छोर पर दो और आकृतियाँ दिखाई दीं—एक पुरुष और एक महिला, दोनों दुर्बल और उम्रदराज, कमजोर पैरों पर लड़खड़ाते हुए, एक-दूसरे का सहारा लेते हुए, जो भी उनका पीछा कर रहा था, उससे बचने की पूरी कोशिश कर रहे थे।

एक-दो पल बाद, सड़क के मोड़ से पाँच भयभीत नागरिकों का पीछा करने वाला प्राणी नज़र आया।

सात विशाल, चौड़े कंधों वाले आधे घोड़े, जो भाले और तलवारें लिए हुए हैं।

विक्रमादित्य का घोड़ा अपनी शांत चाल से चलता रहा, राजा के हाथों में तलवारें दृढ़ता से पकड़ी हुई थीं।

किन्नर एक स्थिर गति से आगे बढ़ रहे थे, वे सभी सात किन्नर सड़क की चौड़ाई में बेतरतीब ढंग से कतार में खड़े थे, शिकार करने के प्रति आश्वस्त शिकारियों के आलसी साहस से भरे हुए थे।

सबसे आगे खड़ी बुजुर्ग महिला ने सबसे पहले सम्राट और घुड़सवारों को देखा और एक हल्की चीख निकालते हुए अचानक रुक गई। अगले ही पल मां और बेटी ने उन्हें देख लिया और तीनों महिलाएं भय से आंखें फाड़कर अपनी जगह पर जम गईं।

"मैं हूं, तुम्हारा सम्राट," विक्रमादित्य ने उनके भय का कारण समझते हुए उन्हें पुकारा। भीषण आग के धुंधले प्रकाश में, उन्हें और उनके पीछे चल रहे घुड़सवारों को आसानी से आधे घोड़े समझा जा सकता था। "तुम्हें हमसे डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

राजा धीरे-धीरे महिलाओं की ओर बढ़ा, घुड़सवार उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। महिलाएं देखती रहीं, जैसे ही आग की रोशनी सम्राट पर पड़ी, उनके चेहरों से राहत के भाव धीरे-धीरे गायब हो गए। आगे, बूढ़ा आदमी और औरत लड़खड़ाते हुए दौड़ते रहे, उनका ध्यान केवल उन आधे घोड़ों पर था जो उनके पीछे दहाड़ते और हंसते हुए आ रहे थे, उनके भाले और तलवारें निकली हुई थीं, उनके खुर सड़क पर बज रहे थे, उनके घने बाल पीछे धधकती आग की रोशनी में लहरा रहे थे। वे सातों, गति बढ़ाते हुए, तेजी से दौड़ते हुए, दूरी कम करते जा रहे थे...

विक्रमादित्य के हाथों में तलवारें लटकी हुई थीं, एक-एक हाथ दोनों तरफ, जिनकी नुकीली नोकें जमीन की ओर थीं।

नुकीले सिरे आग की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रहे थे।

अचानक सिरे आग की लपटों में घिर गए, नारंगी लपटें चिकनी धातु पर भड़क उठीं और जीवंत हो उठीं।

"सम्राट," महिलाओं में से बड़ी महिला ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज कांप रही थी जब विक्रमादित्य उनके पास से गुजरे, उसकी निगाहें आश्चर्य और

अविश्वास से तलवारों से राजा की ओर घूम रही थीं।

"हमारे पीछे आ जाओ," राजा ने महिलाओं को इशारा करते हुए कहा, उसकी निगाहें आधे घोड़ों पर टिकी हुई थीं।

किन्नर उस बुजुर्ग दंपत्ति के लगभग करीब पहुँच चुके थे, भाले और तलवारें उन्हें जान से मारने के लिए तैयार थीं। दंपत्ति स्वयं अपने भाग्य के प्रति समर्पित प्रतीत हो रहे थे; वे थक रहे थे, उनके कंधे हार मानकर झुक गए थे, और उन्होंने जीने की इच्छा त्याग दी थी...

सम्राट ने अपनी भुजाएँ ऊपर उठाईं और उन्हें ज़ोर से नीचे पटका—तलवारों की सतहों पर जलती लपटें चटक उठीं और भड़क उठीं, लंबी होती गईं और फिर धारों के सिरों से पतली होती गईं, मानो चाबुक जैसी लचक प्राप्त कर ली हो। उसी समय, लपटें चमकीले हरे रंग की हो गईं, तलवारों से निकलती हुई ज़मीन पर फैल गईं। क्रोध से आँखें सिकोड़ते हुए, विक्रमादित्य ने अपने सामने हवा में वार किया, दोनों तलवारें तेज़ी से एक-दूसरे को काटती हुई आगे बढ़ीं—और तलवारों के सिरों से ज्वाला की लपटें अलग होकर सेंटॉरों की ओर बढ़ीं, हवा में घूमती और मुड़ती हुई, फुफकारती और भयंकर रूप से आग उगलती हुई लंबी होती गईं।

शाही सेना के घुड़सवार हरे रंग की ज्वालाओं के कोड़ों को देखकर विस्मय से घूर रहे थे।

तीनों महिलाएं भय से सिसकती हुई घुड़सवारों के पीछे छिप गईं।

बुजुर्ग दंपति भय और आश्चर्य से आग की लपटों को अपने सिर के ऊपर से नीची उड़ान भरते हुए देखते रहे।

आग की लपटों की घुमावदार लकीरों को देखते ही किन्नर अचानक लड़खड़ाते हुए रुक गए, और हैरानी से एक-दूसरे से टकराते चले गए। सड़क के बीचोंबीच पैर पटकते और सहमते हुए, वे अब अपनी ओर बढ़ती आग की लपटों को घूर रहे थे, यह समझ नहीं पा रहे थे कि इन धधकती लपटों का क्या मतलब है, जिनकी भयावहता निर्विवाद थी। वहीं जड़वत खड़े किन्नर उज्जैन की उस संकरी सड़क पर मौत को अपनी ओर आते हुए भय और आकर्षण से देख रहे थे।

हरे रंग की भयानक ज्वाला की दो लंबी लपटें सेंटॉरों पर जा गिरीं, उनके धड़ पर प्रहार करते हुए उनके शरीर को चीरती हुई, मांस और हड्डियों को जलाती हुई, उनके घावों को झुलसाते हुए उनके शरीर को आग की लपटों में झोंक दिया। किन्नरों

के हथियार उनके बेजान हाथों से गिरकर सड़क पर धीमी सी खड़खड़ाहट के साथ जा गिरे, और अगले ही पल उनकी दर्द भरी चीखों से गली गूंज उठी, जो आग से झुलसे मोहल्ले में गूंजती हुई घंटियों की आवाज को लगभग दबा रही थी। उसी समय, जले हुए मांस और बालों की एक भयानक, घिनौनी और मतली लाने वाली गंध सड़क पर फैल गई।

"उज्जायिनी के लिए," विक्रमादित्य ने क्रोध से दांत पीसते हुए मन ही मन कहा।

एक-एक करके सेंटॉरों को ज़मीन पर गिरते देख, बुज़ुर्ग दंपति अवाक रह गए, उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वे मौत से बच कर कितने भाग्यशाली रहे। जैसे ही आखिरी किन्नर जलते हुए मलबे में तब्दील हुआ, दंपति धीरे-धीरे सम्राट की ओर मुड़े, सम्राट ने कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम किया और राहत से उनके घुटने झुक गए। दोनों घुड़सवारों के पीछे से महिलाएं निकलीं और दंपति की ओर दौड़ीं, उन्हें पुकारा, दिलासा दिया और उनसे दिलासा मांगा।

वे सभी सात आधे घोड़े दर्द से कराहते और तड़पते हुए पड़े थे, जो निर्दयी हरी लपटों में लिपटे हुए थे, जो धीरे-धीरे और तेजी से उनकी जान ले रही थीं।

उनकी मृत्यु शीघ्र हुई क्योंकि विक्रमादित्य के उनके पास पहुँचकर यह सुनिश्चित करने तक कि वे मर चुके हैं, वे सभी गतिहीन हो चुके थे; उनकी मृत्यु धीमी हुई क्योंकि उनकी आँखों से प्रकाश ओझल होने और उनके हृदय उनके सीने में पिघलने के बाद भी वे बहुत लंबे समय तक जलते रहे—एक लंबा और दर्दनाक दहन, जिस प्रकार दिति ने नरक की आग के पीड़ितों को जलाने की योजना बनाई थी।

***

महल के मुख्य मार्ग के शीर्ष पर पहुँचकर, क्षपनाका ने अपने घोड़े की लगाम खींची और काठी से उतरकर अपने पंजों पर खड़ी हो गईं। घोड़ा अचानक रुक गया, हिनहिनाया और अंधेरे से आती मशाल को देखकर अपने खुर पटकने लगा। मशाल की रोशनी में तीन महल के पहरेदारों के चेहरे दिखाई दिए, जो घबराए हुए और हाँफते हुए पार्षद के पास आकर रुके।

"अंदर कैसा है?" क्षपणका ने महल पर नज़र डालते हुए पूछा। उसने डरे हुए जानवर की लगाम पकड़ी हुई थी और उसे शांत करने के लिए उसकी गर्दन सहला

रही थी। घोड़ा उसका नहीं था—उसका अपना घोड़ा तब भाग गया था जब वह छत से गिरकर सेंटॉरों से उलझ गई थी। उसने यह घोड़ा उस सवार से उधार लिया था जो धनवंतरी के आदेश पर उसे ढूंढने आया था। “हमने कितने आदमी खो दिए हैं?”

"काफी सारे, महाराज," उनमें से एक व्यक्ति ने अनिश्चित भाव से कंधे उचकाते हुए उत्तर दिया।

“तीरंदाज महल में घुसने से उन जीवों को रोकने की पूरी कोशिश कर रहे हैं,” दूसरे ने कहा। “लेकिन महल में बहुत सारी खिड़कियाँ हैं, और जीव भी बहुत ज़्यादा हैं...”

"मुझे बताया गया था कि वे जमीन के नीचे से निकलते हैं," पार्षद ने संदेह भरी निगाहों से अंधेरे में देखा।

“जी हां, माननीय न्यायाधीश।”

“और वे अच्छे तैराक हैं। इसी वजह से वे महल में घुसने में कामयाब रहे।”

क्षपनाका ने तेज़ी से सिर हिलाया। एक पहरेदार को लगाम सौंपते हुए उसने कहा, "तीर।"

वे लोग उसकी ओर देखते रहे, उन्हें कुछ समझ नहीं आया।

पार्षद ने कहा, "मुझे तीरों की ज़रूरत है। मेरे पास अब तीर नहीं बचे हैं।"

“उम... हमारे पास कोई नहीं है, महाराज,” एक गार्ड ने जवाब दिया। “हमें पता नहीं था—”

“कोई बात नहीं,” क्षपनाका ने कहा। उसने उनमें से एक की ओर इशारा करते हुए कहा, “तुम्हारा भाला और तुम्हारी ढाल।”

पुराने ढाल के छल्लों में हाथ डालकर उसने दूसरे हाथ से भाले का वजन महसूस किया। वह ठोस और संतुलित लगा। वह पुल की ओर चलने लगी।

“इन प्राणियों के रक्त में ऐसी क्या खास बात है?” उसने पूछा। “जो दूत मुझे लेने आया था, वह बिल्कुल भी होश में नहीं था...”

धनवंतरी के दूत का अंधेरे में और हमलों की अफरा-तफरी के बीच उसे ढूंढ पाना अपने आप में एक चमत्कार था। वरारुचि द्वारा चारों किन्नरों को मार गिराने के तुरंत बाद ही वह प्रकट हुआ था। वरारुचि को सड़क के बीचोंबीच खड़ा देखकर उसकी आंखें चौड़ी हो गईं, उसकी कटारी से खून टपक रहा था और उसके पैरों के पास

शंख बिखरे पड़े थे। उस दूत ने महल पर हुए हमले का संक्षिप्त विवरण दिया और क्षपणक को बताया कि धनवंतरी ने उसे महल में बुलाया है।

"जाओ," वरारुचि ने उससे कहा था, "लेकिन मुझे बताना कि क्या इन बाकी लोगों का मुकाबला करने की कोई योजना है।" उसने मृत किन्नरों की ओर इशारा किया था।

क्षपणक ने योजना को तीन सरल चरणों में समझाया था, और वे अलग हो गए थे।

"...और मुझे बस इतना समझ आया कि उनका खून अनोखा है।" वह पुल पर कदम रखते हुए आगे बढ़ी।

"यह ज़हरीला है, महाराज।" पहरेदारों ने उसका पीछा करना छोड़ दिया और सतर्क होकर पीछे हट गए। घोड़ा भी हिनहिनाया और आँखें घुमाईं, शायद पुल पर गिरे खून की गंध सूंघ रहा था।

"अगर यह किसी मानव शरीर को छूता है, तो शरीर सड़ने लगता है। यह बहुत भयानक है।"

"इसीलिए वे खुद को चोट पहुँचाते हैं..."

क्षपणक रुका और मुड़ा। "खुद को काट लेंगे?"

"ताकि खून बहकर हम पर गिरे, महाराज।"

अब अंततः पार्षद को समझ आ गया कि धनवंतरी उसे यहाँ क्यों बुलाना चाहता था। उसे उम्मीद थी कि वह किसी तरह इन जीवों द्वारा अपने रक्त में मिलाए गए विष को बेअसर कर सकेगी। आखिरकार, जैसा कि मदर ओरेकल कहा करती थीं, उसके पास भी एक नया वरदान था...

"ठीक है।" भाला उठाते हुए उसने महल की ओर देखा।

"राजकुमारी जी, पुल पर खून लगा है। कुछ खून तो उन जीवों का भी है। कृपया सावधान रहें।"

क्षपनाका पुल के आधे रास्ते तक पहुँच चुकी थी कि तभी उसका पैर जमे हुए खून के एक उथले कुंड में जा गिरा, उसकी उंगलियाँ उस ठंडे, चिकने खून में धंस गईं। यह जानकर कि यह खून अवंती के कुछ सबसे बहादुर योद्धाओं का था, पार्षद को लगभग उल्टी आने लगी, लेकिन उसने अपनी इच्छा पर काबू पाया और संभलकर धीरे-धीरे उस कुंड से होते हुए द्वार की ओर बढ़ी।

उसे इस बात की भी गुप्त रूप से राहत थी कि उन जीवों के खून का उस पर कोई असर नहीं हुआ था। हो सकता है कि उनका खून अभी तक उसके संपर्क में न आया हो, लेकिन शायद धनवंतरी सही थी, और वह किसी भी विष से प्रतिरक्षित थी...

महल के पास पहुँचते ही उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "द्वार खोलो," ताकि महल के अंदर के शोर के बीच भी उसकी आवाज़ सुनाई दे सके।

नाग ने ऊपर से पार्षद पर हमला किया, इतनी तेज़ी और फुर्ती से नीचे उतरा कि वह लगभग उसे पकड़ ही लेता। आखिरी क्षण में सहज प्रवृत्ति ने उसे जगाया और क्षपनाका ने ऊपर देखा, अपने सिर के ऊपर ढाल उठाकर महल के द्वार को रोशन करने वाली मशालों के बीच से नीचे आ रहे उस आकृति को रोकने की कोशिश की। हालांकि, उसका बचाव कमज़ोर था और बहुत देर हो चुकी थी, और नाग उस पर ज़ोर से टकराया, उसके पंजे ढाल से रगड़ खा गए, जिससे चिंगारियां उड़ने लगीं। उसके गिरने का प्रभाव हथौड़े की चोट जैसा था, जिससे पार्षद लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ी। उस पर कूदकर, नाग ने अपने धड़ को चीरकर खून निकाला, और साथ ही पार्षद को अपने शक्तिशाली पैरों के नीचे कुचलने की कोशिश की।

क्षपनाका ने खुद को ढाल के नीचे कसकर समेट लिया, ताकि वह प्राणी अपने शरीर पर पैर न रख सके और अपनी हड्डियों को कुचल न सके। उसी समय, उसने अपने भाले को निकालने की कोशिश करते हुए उस पर लात मारी, जो उसकी पकड़ से फिसलकर अब उसके शरीर के नीचे अजीब तरह से फंसा हुआ था। नाग के घाव से निकला खून उस पर छिटक गया, लेकिन क्षपनाका को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। हताशा में गुर्राते हुए, प्राणी उस पर हमला करने के लिए झुका, और क्षपनाका ने इस अवसर का फायदा उठाते हुए उसके पेट में लात मारी और उसे अपने ऊपर से उठाकर पुल पर पटक दिया। प्राणी लड़खड़ाकर गिर पड़ा, अपना संतुलन बनाने के लिए संघर्ष कर रहा था, और क्षपनाका झट से लुढ़क कर खड़ी हो गई, भाला हाथ में तैयार था, और वह उस पर झपटी...

नाग पार्षद का सामना करने के लिए तेज़ी से मुड़ा, लेकिन बीच में ही रुक गया, उसके विशाल, सर्पाकार मुख से एक दर्दनाक फुफकार निकली। उसकी नज़र अपने पेट पर पड़ी—जहाँ एक भाला गहराई तक धंसा हुआ था, जिसका सिरा लगभग पूरा अंदर तक घुसा हुआ था। घाव के चारों ओर से खून बह रहा था और

गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही थी, द्वार पर जल रही मशालों की रोशनी में वह काला दिख रहा था।

क्षपनाका ने भाले का दूसरा सिरा पकड़ रखा था, और जैसे ही नाग ने उसकी ओर देखा, उसने भाले को इतनी ज़ोर से घुमाया कि उसका सिरा नाग के शरीर में और गहरा धंस गया। नाग दर्द से चीख उठा और भाले पर गिर पड़ा, उसका हरा-काला शरीर पीला पड़ गया, त्वचा फटकर उतरने लगी। पार्षद ने भाला झटक कर छुड़ा लिया, और नाग राख और पपड़ियों के बीच पुल पर गिर पड़ा, उसकी आँखों के सामने ही चूर-चूर हो गया।

"द्वार खोलो," क्षपनाका ने द्वार के ऊपर की खिड़कियों की ओर चिल्लाकर कहा।

अंदर से एक चौकीदार ने चिल्लाकर कहा, "ये पार्षद क्षपनाका हैं। गेट खोलो।"

छोटे से दरवाजे से अंदर कदम रखते ही पार्षद ने अंदर मची अफरा-तफरी को भांप लिया। महल में अफरा-तफरी मची हुई थी, पहरेदार इधर-उधर भाग रहे थे, लेकिन किसी का भी ध्यान कहीं और नहीं था। जैसे ही वह प्रांगण पार कर रही थी, ऊपर की एक गैलरी से एक पहरेदार का शव नीचे गिर पड़ा, प्रांगण के फर्श पर गिरते ही उसकी छाती का मांस चूर-चूर होकर फट गया। सड़ते हुए मांस के टुकड़े और हड्डियों के टुकड़े चारों ओर बिखर गए, जिससे क्षपनाका को उल्टी रोकने के लिए अपनी नाक और मुंह को अपनी बांह में छिपाना पड़ा।

"मुझे तीर चाहिए," उसने एक रक्षक पर चिल्लाते हुए कहा, जिसने उससे नज़रें मिलाई थीं। उसने भाला और ढाल एक तरफ फेंक दी और अपना धनुष कंधे से उतारा, जिसे उसने गिरने के बाद उठाया था। "ढेर सारे तीर। जितने हो सके उतने तरकश ले आओ और मेरे साथ आओ। जल्दी करो।"

कुछ ही पलों में, एक दर्जन से अधिक भरे हुए तरकश लिए दो रक्षक क्षपनाका के पास आ पहुँचे। एक तरकश को अपने कंधे पर टांगकर और धनुष में तीर लगाकर, उसने रक्षकों की ओर देखा। "पार्षद धनवंतरी कहाँ हैं?"

"ऊपर कहीं, माननीय न्यायाधीश।"

क्षपनाका और पहरेदार दो सीढ़ियाँ चढ़े - रास्ते में परामर्शदाता ने पाँच नागों को मार गिराया, जिनमें से प्रत्येक को सिर या गर्दन में तीर मारकर गिरा दिया गया था।

"अरे, तुम यहाँ हो।"

पार्षद ने मुड़कर देखा तो धनवंतरी पास आ रहे थे। "क्षपणक, तुम्हें देखकर मुझे कितनी राहत मिली है, यह तुम नहीं जानते।"

क्षपणका ने सिर झुकाया। "अच्छा हुआ कि तुम्हारा सवार मुझे मिल गया।" उसने चारों ओर देखा। "तुम्हारे अनुमान से महल के अंदर कितने लोग हैं?"

"मुझे लगता है कि सौ के करीब होंगे, शायद इससे भी ज़्यादा," शाही चिकित्सक ने जवाब दिया। "लेकिन यह तो सिर्फ़ इस हिस्से की गिनती है। कौन जाने महल के बाकी हिस्सों में कितने घुसपैठिए होंगे? सैकड़ों, शायद।"

"निशानेबाज़ी के लिए तो ये और भी बढ़िया है," क्षपनाका ने अपने कंधों को हिलाते हुए और दाहिने हाथ की उंगलियों को मोड़ते हुए कहा। एक नया तीर निकालकर धनुष में लगाते हुए वह रुकी। "पार्षद वराहमिहिर कहाँ हैं?"

"वह अपनी ऊर्जा के जाल... पर्दे... का इस्तेमाल करके उन जीवों को अंदर आने से रोक रहा है।" धनवंतरी ने क्षपणक की ओर आशा भरी निगाहों से देखा। "क्या तुम्हारी शक्ति उन पर काम करती है?"

क्षपनाका ने सिर हिलाया। "उनके खून का मुझ पर कोई असर नहीं होता।" वह गैलरी की ओर चलने लगी और चिकित्सक ने राहत की एक गहरी सांस ली और उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

"और जब पार्षद उन्हें गोली मारता है, तो उनकी मौत अजीब तरीके से होती है," गार्डों में से एक ने बीच में कहा।

"सचमुच?" धनवंतरी ने चमकती आँखों से पूछा। "किस तरह से?"

उत्तर में, क्षपणका ने अपना धनुष सीधा किया और बाण को सीधे सामने वाली गैलरी की ओर चलाया, जहाँ दो नाग प्रकट हुए थे। बाण एक नाग की आँख के ठीक ऊपर लगा। उसके गिरने से पहले ही, दूसरा बाण तेज़ी से आया और दूसरे नाग के गाल पर जा लगा, जिससे उसका जबड़ा चकनाचूर हो गया और थूथन टुकड़े-टुकड़े हो गया। धनवंतरी ने देखा कि क्षपणका के बाणों में मौजूद विष उनके रक्त में फैलकर उन्हें दूषित कर रहा था और उनके शरीर में फैल रहा था, जिससे दोनों जीव पीले पड़ गए और क्षीण होने लगे।

"मुझे लगता है कि अब महल को बचाया जा सकता है," धनवंतरी ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर अचानक उसका चेहरा गंभीर हो गया। "बाहर खड़े उन आधे घोड़ों का क्या? क्या वे अभी भी शहर को बंधक बनाए हुए हैं?"

क्षपनाका ने कंधे के ऊपर से कहा, "मुझे लगता है कि उन्हें अपना मुकाबला मिल गया है।"

"विक्रम में?"

"और किसी और में।" क्षपणक ने एक और बाण धनुष पर चढ़ाया और कमान को पीछे खींच लिया।

"कौन?"

वह मुस्कुराई। "आप कभी अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते।"

***

"सम्राट, आधे घोड़े तो हर जगह हैं।"

जब वह शहर के पूर्वी द्वार की ओर जाने वाली सड़क पर मुड़ा, तो घुड़सवारों ने उसे देखा; वे सभी पांचों युवा और बेहद घबराए हुए थे।

"क्या हमने उन्हें दीवार के सामने ला खड़ा किया है?" विक्रमादित्य ने पूछा। उनके दाहिने हाथ में एक नरक की आग सुलग रही थी, दूसरी फिलहाल म्यान में थी।

"हम कोशिश कर रहे हैं, महाराज," चौकी के एक कप्तान ने जवाब दिया। "लेकिन वे बहुत तेज़ और बहुत ताकतवर हैं..."

सम्राट ने अपनी दाहिनी ओर देखा, जहाँ तलवारबाज़ों और तीरंदाज़ों का एक समूह इकट्ठा होकर खड़ा था, जो स्पष्ट रूप से असमंजस में था। उन्होंने हाथ के इशारे से उन्हें बुलाया। पाँच घुड़सवारों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "क्या तुम जानते हो कि आधे-घोड़े कहाँ हैं?"

"वहाँ... और वहाँ," सवारों में से एक ने इशारा करते हुए अपना हाथ एक बड़े चाप में घुमाया।

"ठीक है। अब ध्यान से सुनो..." जब सभी पुरुषों का ध्यान उनकी ओर गया, तो विक्रमादित्य ने कहा, "अगर मैं आधे घोड़ों को इस तरफ ले जाऊं, तो क्या आप सभी उन पर भरोसा कर सकते हैं कि आप उन्हें दीवार की ओर धकेलेंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे किसी और दिशा में न फिसलें?"

दोनों व्यक्ति आपस में फुसफुसाए और झिझक भरी नजरों से एक-दूसरे को देखने लगे।

"वे मुझसे भागेंगे," सम्राट ने मददगार लहजे में कहा। "तुम्हें बस इतना करना है कि उन पर इस तरह हमला करो कि वे भागते रहें—" उन्होंने अपनी तलवार से इशारा करते हुए कहा, "—दीवार की ओर। क्या तुम ऐसा करोगे?"

"हां," कई आवाजों ने एक साथ कहा, जो पहले से अधिक आत्मविश्वासपूर्ण लग रही थीं।

"जितने हो सके उतने को मार डालो और जो बच जाएं उन्हें दीवार पर भेज दो।" राजा ने जलती हुई तलवार को ऊँचा उठाया। "अवंती की जय हो!"

विक्रमादित्य द्वारा घोड़े को आगे बढ़ाते ही सैनिकों ने गरजते हुए उत्तर दिया, "अवंती की जय हो!"

वह गलियों में सरपट दौड़ा, इस उम्मीद में कि वह जल्द ही सेंटॉरों को ढूंढ लेगा। कमांडर शरमाना के परिवार को बचाने के लिए लिया गया यह चक्कर अप्रत्याशित और अपरिहार्य था, जिससे सम्राट का समय बर्बाद हुआ। अगर क्षपनाका दक्षिण में आधे घोड़ों को घुमाकर पूर्वी दीवार तक वापस लाने में कामयाब हो जाता—और विक्रमादित्य जानता था कि यह एक बड़ी 'अगर' थी—तो उसे तेजी से आगे बढ़कर शहर के इस हिस्से में मौजूद सेंटॉरों को भी दीवार तक लाना होगा, ताकि सभी सेंटॉर एक जगह इकट्ठा हो जाएं और वह...

एक तीखे मोड़ पर मुड़ते ही उसने देखा कि उनमें से लगभग तीन दर्जन लोग एक चौक में इकट्ठा थे, हंस रहे थे और एक-दूसरे को पुकार रहे थे, जबकि वे पास की दुकानों और घरों में आग लगा रहे थे।

अपने प्रिय नगर को इतनी लापरवाही से आग लगाते देख सम्राट का रक्त खौल उठा। अगले ही पल, वह अपने घोड़े पर सवार होकर, धधकती आँखों और हाथों में जलती नरक की आग लिए, उनकी ओर दौड़ पड़ा।

उन्होंने उसे देखा और मुड़कर अपने कंधे सीधे किए और हथियार उठा लिए। उनमें से एक ने आदेश दिया और दस से बारह लोग चुनौती का सामना करने के लिए सड़क पर दौड़ पड़े।

विक्रमादित्य ने नरक की अग्नि को उठाया और उसे कोड़े मारे, जिससे लपटें छल्लेनुमा आकार में फैल गईं।

अकेले घुड़सवार को अपनी ओर सरपट दौड़ते देख, जिसकी तलवारों से अचानक आग की लपटें निकल रही थीं, किन्नरों ने अपनी गति धीमी कर दी और फिर पूरी

तरह रुक गए। वे देखते रह गए जब घुड़सवार की तलवारों से आग की लपटें अलग होकर उनकी ओर घूमने लगीं। खतरे को भांपते हुए, उनमें से जो अधिक चतुर थे, वे तेजी से पीछे हटने के लिए मुड़े, लेकिन पीछे से आ रहे सेंटॉर उनके रास्ते में थे; किन्नर एक-दूसरे से टकरा गए, घबराहट में लात-घूंसे मारते हुए भागने की कोशिश करने लगे। लेकिन बचने का कोई रास्ता नहीं था।

बेल्टों ने उन पर प्रहार किया, उन्हें चीर डाला, उन्हें बेरहमी से जला दिया।

सेंटॉर चीखते-चिल्लाते मर गए। और जो बच गए, वे भाग निकले, जलती हुई तलवारों वाले उस आदमी से जितना हो सके उतनी दूरी बनाने की कोशिश करते हुए।

विक्रमादित्य ने किन्नरों का पीछा किया और उन्हें उज्जैन के दक्षिण-पूर्वी भाग की ओर भागने के लिए उकसाने के लिए उन पर आग के कोड़े बरसाए। जब यह प्रयास विफल रहा, तो उन्होंने सेंटॉरों को अपने सैनिकों के पास इकट्ठा किया, ताकि वे किन्नरों को दीवार तक खदेड़ सकें। रास्ते में उनकी मुलाकात नगर रक्षक दल से हुई, जिसे उन्होंने किन्नरों का पीछा करने का कार्य सौंपा, ताकि वे सेंटॉरों के दूसरे समूह की खोज में जुट सकें।

दक्षिणी क्षेत्र को घेरने वाले किन्नरों की संख्या कहीं अधिक थी; और संकट को और भी गंभीर बनाने वाली बात यह थी कि शहर के पूर्वी हिस्से के विपरीत, इस जिले को अभी तक पूरी तरह से खाली नहीं कराया गया था। सड़कों पर निकलते ही सम्राट ने देखा कि कुछ सैनिक नागरिकों के एक समूह को शहर सुरक्षा कमान केंद्र की अपेक्षाकृत सुरक्षित जगह पर ले जा रहे थे।

विक्रमादित्य ने उनमें से एक व्यक्ति को पुकारते हुए पूछा, "आधे घोड़े कहाँ हैं?"

“उस तरफ,” सिपाही ने अपने अंगूठे से पीछे की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया।

"क्या आपने पार्षद क्षपनाका को कहीं देखा है?"

सिपाही ने अपना सिर हिलाया। वह घबराया हुआ लग रहा था।

राजा आगे बढ़ने ही वाला था कि तभी उस व्यक्ति ने बात की।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, अभी भी लोग अपने घरों में फंसे हुए हैं।"

"कहाँ?"

"पुल के बगल में स्थित आटा मिलों के पास।"

"कितने घर हैं?"

"मुझे नहीं पता, माननीय न्यायाधीश। लेकिन आधे घोड़े हर जगह मौजूद हैं।"

"इन्हें जल्दी से सुरक्षित स्थान पर ले जाओ," सम्राट ने नागरिकों की ओर सिर झुकाते हुए गरजते हुए कहा, "फिर बाकियों को लेने वापस आना। जल्दी करो।"

विक्रमादित्य उस पुल की ओर चल पड़े जो कभी एक संकरी धारा पर बना हुआ था, जो मानसून के हर महीने पानी से भर जाती थी। शहर की दीवार बनने के बाद पानी का रास्ता बदल दिया गया था और धारा सूख गई थी, लेकिन पुल अभी भी मौजूद था। राजा के उस पर से गुजरते समय घोड़े के खुरों की तेज़ आवाज़ पुरानी, मौसम की मार झेल चुकी लकड़ी पर गूंज रही थी।

तुरंत ही सम्राट का सामना लगभग एक दर्जन किन्नरों से हो गया।

आधे घोड़े गली में इधर-उधर घूम रहे थे और बेतरतीब ढंग से घरों में आग लगा रहे थे। एक इमारत से दहशत भरी चीखें सुनाई दे रही थीं। विक्रमादित्य अभी स्थिति का जायजा ही ले रहे थे कि अचानक लगभग बारह साल के दो लड़के एक घर से निकलकर सड़क पर दौड़ पड़े, जो उन आधे घोड़ों से कुछ ही पीछे थे। लड़के सबके सामने थे—आधे घोड़ों को उन्हें देखने के लिए बस एक सिर घुमाना ही काफी था।

"अंदर वापस जाओ," राजा ने संकट में चिल्लाते हुए कहा और अपने घोड़े की काठी से उठ खड़ा हुआ।

एक पल के लिए ध्यान भटकने पर, सम्राट की नज़र किन्नरों से हटकर लड़कों पर पड़ी और उन्होंने उन्हें घर लौटने के लिए प्रेरित किया। उसी क्षण, उनकी पुकार से आकर्षित होकर, एक किन्नर ने विक्रमादित्य पर तीर चलाया।

गोली शक्तिशाली थी लेकिन उसका निशाना गलत था, वह बहुत नीचे चली गई थी।

फिर भी, वह राजा के घोड़े की गर्दन पर वार करने में कामयाब रहा, जिससे वह गहरा घाव कर बैठा।

घोड़ा हिनहिनाया और लड़खड़ा गया। उसके आगे के पैर मुड़ गए और वह सड़क पर औंधे मुंह गिर पड़ा।

विक्रमादित्य, जो घोड़े की पीठ पर संतुलन बनाए हुए थे और दोनों हाथों में नरक की अग्नि धारण किए हुए थे, अचानक आगे की ओर गिर पड़े। गति के बल पर, और

गिरने से रोकने के लिए कुछ भी न होने के कारण, वे घोड़े के सिर के ऊपर से लुढ़कते हुए ज़मीन पर ज़ोर से गिरे, लेकिन इस तरह मुड़े कि उनके कंधे पर सबसे ज़्यादा चोट लगी। गिरते और लुढ़कते हुए, दर्द से तड़पते हुए, वे एक घुटने के बल उठे, बाहें फैलाए हुए, नरक की अग्नि धधक रही थी।

पलक झपकते ही उसने आग की दो नई लपटें पैदा कर दीं और उन्हें अपने सामने खड़े किन्नरों की ओर भेज दिया।

बेल्ट अभी अपने लक्ष्य तक पहुँचे ही थे कि राजा घूमकर बचे हुए सेंटॉरों का सामना करने के लिए आगे बढ़े। कंधे के दर्द से उनकी आँखें सिकुड़ गईं और दाहिने कूल्हे में हल्की सी पीड़ा होने लगी। किन्नरों की संख्या बहुत अधिक थी और चोट के कारण विक्रमादित्य की गति धीमी हो गई थी, दर्द से उनकी प्रतिक्रियाएँ मंद पड़ गई थीं। सम्राट को उठने के लिए संघर्ष करते देख, आधे घोड़ों ने उन्हें फिर से गिराने के लिए अपने हथियार तैयार कर लिए, तभी गली के दोनों छोरों से तीरों की बौछार हुई, जिसने किन्नरों को चौंका दिया और उन्हें गिरा दिया।

उसी समय, एक घुड़सवार अंधेरे से गरजता हुआ निकला, उसके हाथ से लोहे की एक लचीली पट्टी लटक रही थी।

पहले किन्नर के पास पहुँचते ही, सवार ने कुशलतापूर्वक उरुमी (एक प्रकार का तीर) चलाया और सेंटॉर की पीठ चीर दी। इसके बाद, उसने एक किन्नर की कोहनी के ठीक ऊपर से एक भुजा काट दी, और फिर दूसरे का चेहरा दो टुकड़ों में फाड़ दिया। आग की रोशनी में उरुमी (एक प्रकार का तीर) लहराती और चमकती हुई सेंटॉर के खून से लाल हो गई, जबकि अवंती के तीरंदाज लगातार तीरों की बौछार से किन्नरों को मार गिरा रहे थे। कुछ ही क्षणों में, सड़क मरे हुए और मरणासन्न आधे घोड़ों से भर गई।

विक्रमादित्य ने गिरे हुए सेंटॉरों को देखकर पलकें झपकाईं और फिर सड़क की ओर मुड़कर देखा, जहाँ दोनों लड़के अभी भी खड़े थे और उस नरसंहार को बड़ी-बड़ी आँखों से देख रहे थे।

मैंने कहा, "अंदर वापस जाओ।"

लड़के अस्त-व्यस्त और युद्ध में घायल राजा को घूर रहे थे, जिसके हाथों में नरक की आग जल रही थी और उसकी गहरी, काली, क्रोधित आँखों में आग की परछाई दिख रही थी। मुड़कर वे अंदर भाग गए।

गहरी सांस लेते हुए सम्राट दर्द से कराह उठा और घोड़े पर बैठे घुड़सवार की ओर देखा। घुड़सवार के हाथ से उरुमी लटक रही थी, जिससे धीरे-धीरे खून टपक रहा था।

"तुम आ गए," विक्रमादित्य ने थकी हुई, टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा।

मैं अवंती के लिए आया हूं, जो सिंहासन से भी बड़ा है।

सम्राट के चेहरे पर मुस्कान और चौड़ी हो गई, उनके कंधे का दर्द धीरे-धीरे कम होने लगा था। "इसीलिए सिंहासन को आपकी आवश्यकता है, भाई।"

वररुचि ने कोई जवाब नहीं दिया।

"मैं ये सारी लड़ाइयाँ अकेले नहीं लड़ सकता," विक्रमादित्य ने जलते हुए घरों की ओर देखते हुए स्पष्टीकरण दिया। "मुझे आपके साथ की ज़रूरत है।"

वररुचि ने कुछ देर सोचा। अंत में उन्होंने कहा, "क्षपणक ने मुझे तुम्हारी योजना के बारे में बताया। अधिकांश आधे घोड़ों को पूर्वी दीवार के पास धकेल दिया गया है।" उन्होंने विक्रमादित्य की ओर देखा। "भाई, इन्हें जला दो। इन्होंने हमारे शहर के साथ जो किया है, उसका इन्हें दंड दो।"

नरक की आग पर सम्राट की पकड़ और मजबूत हो गई। "अवंती के लिए।"

"अवंती के लिए," वररुचि ने उत्तर दिया।

***

तीनों चुड़ैलें रात के आकाश में चीखती-चिल्लाती, भयानक और डरावनी आवाज़ें निकालती हुई, अपने मुँह से हरी लपटें उगलती हुई, अपने पीछे हरी आग की लकीरें छोड़ती हुई, उनकी आँखों के गड्ढे खून की प्यास से भयावह रूप से पागल हो गए थे।

मताली अविश्वास से भौंहें चढ़ाकर उन्हें घूर रहा था, और इस बात को समझने की कोशिश कर रहा था कि यह छापा इतना भयावह क्यों हो गया है।

आपने गलती की है।

लेकिन कहां और कैसे, यह सवाल देवता ने महल की ऊंची छत से चुड़ैलों को देखते हुए खुद से पूछा। नीचे से वह साफ दिखाई दे रहा था, आसमान में छाए हरे रंग के घेरे में उसकी परछाईं उभर रही थी, लेकिन वह जानता था कि कोई उसकी

तरफ नहीं देख रहा होगा; उज्जैन में सभी की निगाहें शहर के दक्षिण-पूर्वी कोने के ऊपर आसमान पर टिकी थीं, जहां चुड़ैलों का दबदबा था।

वह महल में वीषादा के खंजर की तलाश में इधर-उधर घूम रहा था—और जैसे-जैसे यह स्पष्ट होता जा रहा था कि सम्राट ने उसे अच्छी तरह छिपा रखा है, उसका धैर्य धीरे-धीरे कम होता जा रहा था—तभी उसे हवा में भयानक विलाप सुनाई दिया। खिड़की से बाहर देखते ही उसकी सांसें थम गईं जब उसने आकाश में दो चुड़ैलों को आग उगलते हुए देखा; और जैसे ही उसने देखा, हरी लपटों की लपटें उठीं और मिलकर एक तीसरी चुड़ैल का रूप ले लिया।

देव को यह समझने में केवल एक क्षण का समय लगा कि ये चीखती हुई आकृतियाँ कहाँ से प्रकट हुई थीं।

और मानो उसकी बात की पुष्टि करते हुए, तक्षक उसके बगल में प्रकट हुआ और चुड़ैलों को घूरते हुए बोला, "मुझे लगा था कि तुमने कहा था कि तुमने मानव राजा की तलवारें चुराई हैं।"

“मैंने दिखाया था। मैंने... मैंने ही तुम्हें और त्रिभानु को दिखाया था, याद है?” मताली ने हैरानी से देखा। “तुमने उन्हें गरुड़ के ले जाने से पहले देखा था... है ना?”

नाग ने संदेह भरी निगाहों से अपना सिर हिलाया।

“क्या?” मताली ने झुंझलाहट से घूरते हुए कहा। “अब तुम उन तलवारों को देखने से इनकार कर रहे हो?”

“मुझे बस इतना पता है कि वे चीजें उन दो तलवारों से निकलती हैं,” तक्षक ने चुड़ैलों की ओर इशारा करते हुए कहा। “और मेरा अनुमान है कि वे चीजें त्रिभानु की किन्नर सेना का सफाया कर रही हैं, और हम यहाँ खड़े होकर देख रहे हैं। अगर मैं त्रिभानु होता, तो मैं इस स्थिति से बहुत दुखी होता,” उसने रूखे स्वर में कहा।

मताली ने तक्षक को तीखी निगाहों से देखा। "और इसके लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ?"

नाग ने देवता को ठंडी निगाहों से घूरते हुए कहा, “हमने नरक की आग को बुझाने के लिए आप पर भरोसा किया था। हमें निराश होने का पूरा हक है।”

तक्षक कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ा। मातली ने आकाश में फैली चुड़ैलों पर चिंता भरी नज़र डाली, फिर नाग की ओर देखा। "शायद राजा ने किसी तरह उन्हें गरुड़ से वापस ले लिया हो।"

तक्षक ने देवता को घूरकर देखा। “आप जानते हैं कि यह संभव नहीं है। गरुड़ तलवारें लेकर बहुत पहले ही चले गए थे।”

मताली ने हार मानकर अपने हाथ फैला दिए। "फिर क्या हुआ?"

आपने गलती की है।

नाग दरवाजे पर ही था जब मताली ने उसे फिर से पुकारा। “अब हम क्या करें?”

मताली की ओर इशारा करते हुए तक्षक ने उत्तर दिया, “चुड़ैलों के हमले के बाद किन्नरों के पास दो ही विकल्प बचे हैं—या तो मर जाओ या भागते हुए मर जाओ। मुझे संदेह है कि उनमें से कितने ही जीवित लौट पाएंगे, लेकिन मैं यहाँ रुककर यह पता नहीं लगाना चाहता, कहीं ऐसा न हो कि चुड़ैलें फिर हम पर ही हमला कर दें। वैसे भी, मेरे बहुत से नाग उस स्त्री के हाथों मारे जा चुके हैं जो हमारे विष से अप्रभावित है—और एक कुशल धनुर्धर भी है। मैं यहाँ से निकल रहा हूँ, और जब तक आपको हलाहल को खोजने का कोई अच्छा तरीका न पता हो, मैं आपको भी यही सलाह देता हूँ।”

कुछ समय पहले की बात थी, और अब ऊँची छत पर खड़े मताली ने महसूस किया कि नीचे चल रहा युद्ध शांत हो रहा है, क्योंकि नागों ने लड़ाई छोड़ दी और झील के रास्ते महल से निकलकर नीचे सुरंग खोदकर अवंती के ग्रामीण इलाके की सुरक्षा में आ गए। पूर्व में उज्जैन आग की लपटों में घिरी थी, लेकिन निगाहें स्वाभाविक रूप से ऊपर की ओर गईं जहाँ चुड़ैलें आकाश में गश्त लगा रही थीं। वह शहर की दीवार के पास क्या हो रहा था, यह देखने के लिए बहुत दूर था, लेकिन देव को किन्नरों के भाग्य के बारे में कोई भ्रम नहीं था।

आपने गलती की है।

ठंडी हवा के झोंके से जब मताली को घसीटा गया, तो उसका मन उस कक्ष की ओर मुड़ गया जहाँ उसने रेशमी कपड़े में लिपटी नरक की आग की दवाइयाँ उठाई थीं। उसने अपने मन में मेज, बुझी हुई पीतल की लालटेन, कलमों से भरी स्याही की दवात... और तलवारें देखीं।

उसे याद था कि उसने उनमें से एक तलवार उठाई थी और उसे म्यान से बाहर निकाला था। उसे पूरा यकीन था कि उसने दोनों तलवारों को रेशमी कपड़े में लपेटकर सम्राट के कक्ष से बाहर निकाला था, और उस गठरी को अपने सीने से

लगाए रखा था। देवलोक ले जाने के लिए गरुड़ को सौंपने से पहले तलवारें एक बार भी उसके हाथों से अलग नहीं हुई थीं।

उसके द्वारा गलती करने का कोई सवाल ही नहीं था, फिर भी राक्षसी चुड़ैलें उज्जैन के ऊपर मंडरा रही थीं...

हमें हेलफायर्स को निष्क्रिय करने के लिए आप पर भरोसा था। हमें निराश होने का पूरा अधिकार है।

अगर मैं त्रिभानु होता, तो मैं जिस तरह से चीजें घटी हैं उससे बहुत दुखी होता।

तक्षक की चेतावनियों के बावजूद, मताली को नागों और किन्नरों को निराश करने की कोई परवाह नहीं थी, न ही वह त्रिभानु की नाराज़गी से विशेष रूप से भयभीत था; असल में, देव को इंद्र के क्रोध का सामना करने की चिंता सता रही थी। न हलाहल, न जंजीरों में जकड़ा कोई मानव राजा—अमरावती खाली हाथ लौटने के परिणाम गंभीर होंगे, वह जानता था। काश उसे हलाहल मिल जाता, सब कुछ माफ हो जाता और उसका वीरों जैसा स्वागत होता। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, उसे एक भी ऐसी जगह याद नहीं आ रही थी जहाँ उसने कटार न खोजी हो। सभा कक्ष, राजा के कमरे, सलाहकारों के कमरे, सिंहासन कक्ष, सभा, खजाना, राजकोषीय शस्त्र कक्ष...

बंशीओं को चक्कर लगाते और धरती पर झपट्टा मारते देख, मताली महल में छिपकर लड़ाई के शांत होने का इंतज़ार करने के बारे में सोचने लगा। शायद तब, यह मानकर कि खतरा टल गया है, मनुष्य अपनी सतर्कता कम कर देंगे। तब शायद वह चुपके से बाहर निकल सके, और शायद महल के किसी सेवक को मारकर उसकी जगह ले सके और फिर से शिकार शुरू कर सके...

अचानक एक चुड़ैल महल की ओर मुड़ी। मताली को यह भयानक अहसास हुआ कि चुड़ैल की खाली आँखें उस पर टिकी हुई हैं, मानो उज्जैन के हज़ारों निवासियों में से उसे चुनकर, उसे ही शत्रु मानकर, दंड का पात्र समझकर अलग कर रही हों... देव के मन में दहशत फैल गई।

मेरा यहाँ रुकने का कोई इरादा नहीं है, क्योंकि अगली बार चुड़ैलें हमारे पीछे पड़ जाएँगी।

मताली ने कल्पना की कि चुड़ैल आकाश में महल की ओर, उसकी ओर बढ़ने लगी है। एक अजीब सा भय उसे जकड़ लिया, यहाँ तक कि इंद्र के क्रोध का सामना

करने का डर भी उसके मन से ओझल हो गया।

मैं यहाँ से निकल रहा हूँ, और जब तक आपको हलाहला कहाँ मिलेगा, इसका कोई अच्छा अंदाजा न हो, मैं आपको भी ऐसा ही करने की सलाह देता हूँ।

चुड़ैल की रफ्तार बढ़ती हुई प्रतीत हुई, वह शहर के ऊपर से गुज़रती हुई, अपना मुँह चौड़ा खोलकर लपटें उगलने लगी...

मताली का दिल भय से जम गया। वह किन्नरों की तरह मरना नहीं चाहता था, जिन्हें बंशी दौड़ाकर हड्डियों तक जला देती थीं।

वह बिल्कुल भी मरना नहीं चाहता था।

वह महल में नहीं रुकना चाहता था। वह खंजर की तलाश भी नहीं करना चाहता था।

वह बस उन दुष्ट चुड़ैलों से छुटकारा पाना चाहता था।

वह मुड़ा और छत से कूदकर भाग गया।

सीमांत

उज्जैनी के ऊपर छाए धुएं के गुबार से छनकर आती हल्की रोशनी, जिसमें सूरज निकले हुए कुछ घंटे हो चुके थे फिर भी गर्माहट और रंग दोनों कम थे। ज़मीन के करीब, अंधेरा अभी भी छाया हुआ था, जो शहर के जले हुए अवशेषों से उठते घने धुएं में घुलमिल रहा था। रात भर आग पर काबू पाने की कोशिश की गई थी, लेकिन कुछ इलाके अभी भी बचे थे जहां नगर सुरक्षा बल के सैनिक जनता के साथ मिलकर जिद्दी लपटों को बुझाने में जुटे थे। शहर के दक्षिणी हिस्से में कई अस्पताल खुल गए

थे, जहां वैद्य सैनिकों और नागरिकों की कतारों में जले हुए और अन्य चोटों का इलाज कर रहे थे। चारों ओर थकान का गहरा एहसास था, घंटियों की खामोशी राहत देने के साथ-साथ अजीब तरह से बोझिल भी लग रही थी, जिससे उदासी का माहौल और गहरा हो रहा था।

उज्जैन के लिए अच्छी खबर यह थी कि हमले में केवल पाँच नागरिकों की जान गई, हालांकि लगभग एक दर्जन लोग लापता बताए जा रहे थे। बुरी खबर यह थी कि सैन्य हताहतों की संख्या तीन सौ से अधिक थी, और गिनती अभी पूरी नहीं हुई थी। महल और शहर में मृतकों की संख्या लगभग बराबर थी, महल में मृतकों की गिनती और पहचान करना कठिन था क्योंकि शव बुरी तरह क्षत-विक्षत और सड़ चुके थे। आग में ही लगभग बीस लोगों की जान चली गई, सभी दक्षिणी घनी आबादी वाले इलाके में।

"शहर का लगभग आधा हिस्सा राख में तब्दील हो गया है। इसे दोबारा बनाने में हमें अनंत काल लग जाएगा।"

हमने यह पहले भी किया है। हम इसे फिर से करेंगे।

धुआं थोड़ा छटा और दोनों सवारों को आराम से आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया।

“बर्बरों को भगाए जाने के बाद... आप सही कह रहे हैं।” वरारुची ने अपने सामने मौजूद धूसर रंग के पर्दे की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाया। “हम इसे फिर से करेंगे।”

विक्रमादित्य धुएं के बीच से घूरते रहे, उनकी आंखें गंभीर थीं और वे पलकें नहीं झपका रहे थे। “कल रात हमने जिन लोगों को खोया... उन्हें वापस लाना इतना आसान नहीं होगा। एक शहर को कुछ ही वर्षों में फिर से बनाया जा सकता है, लेकिन ऐसे बहादुर पुरुषों को तैयार करने में दशकों लग जाते हैं जो अपने राज्य के लिए अपनी जान कुर्बान करने को तैयार हों। कभी-कभी, ऐसे पुरुषों की जगह कोई नहीं ले सकता।”

“मैं समझता हूँ आप क्या कहना चाहते हैं,” वररुची ने कहा। “लेकिन कभी-कभी, बहादुर और निडर लोग अपनी मृत्यु के माध्यम से ही बहादुर और निडर पुरुषों की एक नई पीढ़ी को जन्म देते हैं।”

“सच है। ऐसे पुरुषों का मिलना हमारा सौभाग्य है, वो भी इतनी अधिक संख्या में।” सम्राट का चेहरा कठोर हो गया। “फिर भी, मृतकों का बदला अवश्य लिया जाना

चाहिए। उज्जैनी को अपनी रक्षा करते हुए शहीद हुए लोगों को उचित दंड देना चाहिए।"

इससे पहले कि वरारुची कुछ और कह पाते, हल्की धूप में महल की रूपरेखा उभर आई। पार्षद ने तुरंत अपने घोड़े की लगाम खींच ली।

"क्या?" विक्रमादित्य ने अपनी लगाम खींचते हुए और मुड़ते हुए पूछा।

वररुची ने गहरी सांस ली और अनिश्चितता से कंधे उचकाए। "मुझे नहीं पता... मैं..."

"बड़ी मां तुम्हारा इंतजार कर रही हैं। मैंने उनसे वादा किया था कि मैं तुम्हें वापस ले आऊंगा।"

वररुचि ने कुछ देर सोचा, फिर अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और दोनों भाई फिर से घोड़े पर सवार हो गए। दोनों के शरीर पर कालिख लगी हुई थी, उनके बाल, दाढ़ी और मूंछें राख और कीचड़ से बुरी तरह चिपकी हुई थीं। उनके चेहरे मुरझाए हुए थे, आँखें लाल और धुंधली थीं क्योंकि उन्होंने पूरी रात शहर को हमलावरों और आग से बचाया था।

"अगर मेरी मां न होतीं, तो मैं समय पर यहां कभी नहीं पहुंच पाता।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" विक्रमादित्य ने व्याकुल होकर अपने भाई की ओर देखा।

"मां से मिले काफी समय हो गया था। इसलिए, कल रात अचानक ही मैंने उनसे मिलने का फैसला किया," वरारुची ने कहा। "मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह यहां आई हैं। यह महज़ संयोग था कि मैं ग्रामीण इलाके से होते हुए पुराने महल की ओर जा रहा था, तभी हवा के रुख में बदलाव से घंटियों की आवाज़ सुनाई दी। मुसिली में तो मुझे यह अलार्म कभी सुनाई ही नहीं देता।"

सम्राट ने सोच-समझकर सिर हिलाया। "बड़ी माँ को धन्यवाद देने का एक और कारण मिल गया," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

"विश्वास करना मुश्किल है कि वह यहाँ है," वरारुची ने कहा। "उसने वादा किया था कि वह कभी महल में कदम नहीं रखेगी। इसीलिए वह कभी नहीं आई..."

विक्रमादित्य के होंठों पर एक कड़वी मुस्कान आ गई। "तुम सब मुझसे राज़ छिपा रहे हो, ऐसा दिखावा कर रहे हो जैसे सब कुछ सामान्य हो। क्यों?"

वररुचि ने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्यों?" सम्राट ने अपने घोड़े की पीठ घुमाकर अपने भाई की ओर देखते हुए पूछा। "तुम इतने वर्षों तक चुप क्यों रहे और मुझे कुछ क्यों नहीं बताया?"

"मैं तुम्हें क्या बताता?" वरारुची ने पूछा, उसकी आवाज़ में अचानक दर्द झलक रहा था। "मैं अपने छोटे भाई से भला क्या कहता—कि उसकी माँ मुझे दिल से कोसती थी, और चाहती थी कि मैं इस दुनिया से गायब हो जाऊँ? क्या तुम्हें पता है कि यह बात अब भी कितनी बेतुकी लगती है? और इससे क्या फ़र्क पड़ता—"

"मैं उसका सामना करता," राजा ने ज़ोरदार ढंग से बात काटते हुए कहा।

"इससे क्या फायदा होता? वह मुझसे अपनी नफरत को सबसे छुपाने में माहिर थी —याद रखो, इतने सालों में तुम्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसके और मेरे बीच कुछ टूटा हुआ है। वह मुझे नापसंद करने से इनकार कर देती, कहती कि मैं बस बेवजह परेशान हो रहा हूँ। उसकी बात के सामने मेरी बात, तुम क्या करते?"

विक्रमादित्य ने कठोर स्वर में उत्तर दिया, "मैं सत्य जानने का प्रयास करता।"

और इस चक्कर में, शायद तुम अपनी माँ के लिए कुछ इज़्ज़त खो बैठते, हो सकता है कि तुम उनसे कम प्यार करने लगते, जिससे मैं उनकी नज़रों में और भी बड़ा खलनायक बन जाता। तुम्हें बताने से मैं तुमसे और भी दूर हो जाता, और हम सब दुखी हो जाते, बस इतना ही।

"तो, तुमने चुपचाप सब कुछ सहा, दर्द और गुस्से को अपने अंदर पनपने दिया। और देखो, इसका नतीजा क्या हुआ। हम सब दुखी हैं। तुम और मैं एक-दूसरे के खिलाफ साजिश रच रहे थे, अज्ञानता और गलतफहमी से उपजी नफरत से भरे हुए, और उस समय आमने-सामने थे जब अवंती को हमारी साथ रहने की सबसे ज्यादा जरूरत थी..." विक्रमादित्य की आवाज कांपते हुए रुक गई।

उनके बीच एक तीखी खामोशी छा गई। वरारुची ने अपने भाई की ओर तिरछी नज़र डाली। "मुझे खेद है," उसने संक्षिप्त में कहा।

राजा ने क्षमा को अनसुना करते हुए दृढ़ता से आगे की ओर देखा। कुछ क्षण तक वे चुपचाप चलते रहे, फिर वरारुची ने गहरी सांस ली।

"जब पार्षद वराहमिहिर और धनवंतरी मुझसे मुसिली में मिलने आए, तो धनवंतरी ने मुझे याद दिलाया कि कैसे पिताजी और मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें चलना सिखाते थे और ध्यान रखते थे कि तुम कभी गिरो नहीं। धनवंतरी को यह याद नहीं है, लेकिन एक दिन मेरा ध्यान कहीं और था और मैं तुम पर ध्यान नहीं दे रहा था।

तुम गिर गए, कुछ सीढ़ियाँ लुढ़कीं और तुम्हारा सिर एक बेंच से टकरा गया। पिताजी इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने मुझसे दो दिन तक बात नहीं की।" वररुचि अपने सौतेले भाई की ओर देखते हुए रुके। "उस दिन मैंने खुद से वादा किया था कि मैं तुम्हें फिर कभी गिरने नहीं दूँगा, विक्रम। मुझे खेद है कि मैं अपना वादा लगभग भूल ही गया था।"

"भाई, तुम भूले नहीं। घंटियाँ सुनकर तुम आ गए और तुमने मुझे उन आधे घोड़ों के हाथों मरने से बचाया।" सम्राट की आँखों में आँसू चमक रहे थे। "तुम चाहकर भी मुझे गिरने नहीं दे सकते थे। मुझे तो यह बात पता होनी चाहिए थी, न कि तुम्हारे बारे में सबसे बुरी बातें सोचनी चाहिए थीं।"

वे लगभग पुलिया के पास ही थे, महल के उन कर्मचारियों की आवाज की पहुंच के भीतर जो रात की भीषण लड़ाई के खून के धब्बों से पुलिया के पत्थरों को साफ कर रहे थे।

"कंधा कैसा है?" वरारुची ने चतुराई से विषय बदलते हुए पूछा।

राजा ने मुंह बनाया। अपना दाहिना हाथ फैलाकर, उन्होंने धीरे-धीरे अपना कंधा आगे-पीछे हिलाया। किसी धर्मशाला में उनके कंधे पर एक साधारण सी पट्टी बंधी हुई थी।

"इतना दर्द हो रहा है कि रोने का मन कर रहा है," उसने हंसते हुए कहा, गले में अचानक अटकी गांठ को निगलते हुए। "लगातार झूलने और काटने से दर्द हो रहा है, लेकिन ठीक हो जाएगा।"

हम धनवंतरी से इस पर गौर करने के लिए कहेंगे।

महल में उन्हें बताया गया कि उनकी दोनों माताएँ भूलभुलैया से लौट आई हैं और वे महारानी के कक्ष में हैं। वररुचि ने उपश्रुति से मिलने से हिचकिचाते हुए, अतीत का सामना करने और भूले हुए घावों को कुरेदने से डरते हुए, एक बार फिर खुद को रोक लिया। लेकिन विक्रमादित्य के समझाने पर, वह अंततः उस गलियारे तक चढ़ गया जहाँ महारानी का कक्ष था। सम्राट ने दरवाजा खटखटाया और एक दासी ने तुरंत दरवाजा खोलकर उन्हें और वररुचि को अंदर आने दिया।

"बड़ी मां, देखो मेरे साथ कौन है," उसने कहा।

उशांता उपश्रुति की गोद से उठी और राख और गंदगी की परवाह किए बिना वरारुचि को गले लगा लिया, उसे काफी देर तक अपने से लगाए रखा। अंत में,

उसने वरारुचि को छोड़ा और पीछे हटकर उसके चेहरे की ओर देखा।

"सबसे पहले तो, तुम मेरे पुत्र हो, और जब तक सूर्य आकाश में रहेगा, मेरा प्रेम तुम्हारे लिए कभी कम नहीं होगा," उसने कहा। "लेकिन अपने भाई के विरुद्ध जाने का तुम्हारा निर्णय गलत था। तुमने अपने पिता से किया हुआ वह वादा तोड़ दिया कि तुम अवंती की महिमा को बनाए रखने के लिए विक्रम का साथ दोगे। इंद्र के आरोपों से रानी माता का बचाव करके विक्रम ने तुम्हारे पिता का अपमान नहीं किया; बल्कि तुमने अपने पिता के आदेश का उल्लंघन करके उनका अपमान किया।"

"माँ, मुझे माफ़ कर दो। मुझसे गलती हो गई—"

"बड़ी मां, कृपया भाई को रहने दीजिए—" सम्राट ने उसी समय विरोध जताया।

"रुको..." उशांत ने बीच में ही टोकते हुए दोनों आदमियों को चुप कराने के लिए उंगली उठाई।

वररुचि का हाथ पकड़कर वह उसे उपश्रुति के पास ले गई, जो पलंग के पास खड़ी थी और घबराहट में अपनी उंगलियों के बीच चादर का कोना मरोड़ रही थी।

"बहन, मेरे बेटे को आशीर्वाद दीजिए, और उससे जो भी गलतियाँ हुई हों, उन्हें क्षमा कर दीजिए। वह मेरा बेटा है, लेकिन वह उतना ही आपका भी है, जितना विक्रम आपका और मेरा है।"

उपश्रुति की आँखों में देखना उसके लिए एक चुनौती थी, लेकिन जब अंततः उनकी निगाहें मिलीं, तो सलाहकार महारानी माँ की आँखों में पश्चाताप देखकर आश्चर्यचकित रह गया। अनजाने में ही उसने प्रणाम करते हुए हाथ जोड़ लिए। "किसी भी गलती के लिए क्षमा चाहता हूँ—" उसने कहना शुरू किया, लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, उपश्रुति ने उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

"तुम्हें किसी भी बात के लिए माफी मांगने की जरूरत नहीं है," उसने आँसुओं से भीगी आँखों से वरारुचि की ओर देखते हुए कहा। "मुझे तुम्हारे साथ किए गए दुर्व्यवहार के लिए प्रायश्चित करना चाहिए। मुझे माफ कर दो, बेटे, मैंने जो किया और जो मैं थी। मैं..." उपश्रुति ने वरारुचि के हाथों पर अपना सिर झुकाया। उनकी उंगलियों को कसकर पकड़कर और उन्हें अपने माथे पर रखकर, वह फूट-फूट कर रो पड़ी, उसके कंधे दुख और शर्म से कांप रहे थे।

“रानी-माँ... कृपया...” वरारुचि ने उपश्रुति से उषांथा की ओर देखा, वह व्याकुल था। उषांथा उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ी और महारानी माँ को कंधों से पकड़कर पलंग पर बिठा दिया। उनके बगल में बैठते हुए उषांथा ने उन्हें सांत्वना देने के लिए उनका सिर अपने कंधे पर रख लिया।

"अगर घुड़सवार ने उसी दिन शंकु का संदेश नौकरानी तक पहुंचा दिया होता तो इनमें से बहुत कुछ टाला जा सकता था," उशांत ने आह भरी।

“कौन सवार, क्या संदेश?” वरारुची ने हैरानी से अपनी माँ की ओर देखा।

“उस दोपहर जब आप आखिरी बार घर से निकली थीं, शंकु का संदेश लेकर एक घुड़सवार आया था। जब वह आया तब मैं सो रही थी, इसलिए नौकरानी ने उसका स्वागत किया और उसे बताया कि आप जा चुकी हैं। घुड़सवार बिना संदेश बताए चला गया, जो अब मुझे समझ में आया कि आपको घटाकरपारा के अपहरण के बारे में सूचित करने के लिए था। मुझे समझ नहीं आता कि उसने नौकरानी को क्यों नहीं बताया, क्योंकि अगर मुझे अपहरण के बारे में तब पता होता, तो मैं यहाँ जल्दी आ जाती, और शायद यह सब कभी नहीं होता...”

उपश्रुति के सिसकने की धीमी आवाज़ कमरे में छाए सन्नाटे को तोड़ रही थी। उषांथा ने सिर झुकाकर विक्रमादित्य को अपने और महारानी के पास आने का इशारा किया।

सम्राट ने उनकी ओर दो कदम बढ़ाए ही थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

“जी?” विक्रमादित्य ने मुड़कर कहा।

दरवाजा थोड़ा खुला और नौकरानी का चेहरा दिखाई दिया। "महाराज, आपके लिए एक संदेशवाहक आया है।"

राजा ने सिर हिलाया और दरवाजा पूरी तरह खुल गया। बाहर एक महल का रक्षक खड़ा था।

“यह क्या है?” विक्रमादित्य ने पूछा।

“माननीय महोदय, मेरे पास मदर ओरेकल का एक संदेश है। उनके पास आपके लिए महान रेगिस्तान से कुछ महत्वपूर्ण समाचार हैं।”

***

ठंडा था।

बेहद, दिमाग सुन्न कर देने वाली ठंड।

इतनी ठंड थी कि भूख से पेट में मची जलन भी कम तकलीफ का कारण बन गई थी।

बेकाबू होकर कांपते हुए, उसके दांतों की कर्कश आवाज उसके कानों में गूंज रही थी, वह पहाड़ की ढलान पर बने उथले गड्ढे में घुस गया, गर्मी और आराम की तलाश में, लेकिन उसे कुछ नहीं मिला। ठंड उसे चैन से सोने नहीं दे रही थी, उसके झुके हुए कंधों पर दबाव डाल रही थी और उसके ऊपर लिपटे पतले सूती कपड़ों के नीचे आसानी से फिसल रही थी। रेगिस्तान के लिए तो ये कपड़े ठीक थे, लेकिन उत्तरी अर्बुदास की हवा से भरी पहाड़ियों में ये बेहद अपर्याप्त साबित हो रहे थे। उसके शरीर की हर हड्डी में दर्द हो रहा था, पैर की उंगलियां और हाथ की उंगलियां झनझना रही थीं और धीरे-धीरे सुन्न होती जा रही थीं। फिर भी, हर बार जब वह जागने की कोशिश करता, उसका एक हिस्सा विद्रोह कर देता, पहाड़ों से नीचे आती ठंडी हवा के खिलाफ खुद को समेट लेता, निर्देशों का पालन करने से इनकार कर देता, बस वहीं लेटे रहने की इच्छा रखता, इस उम्मीद में कि आखिरकार नींद उसे अपनी गिरफ्त में ले लेगी।

घटकरपारा को इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि पिछली दोपहर जब वह अर्बुदा पर्वतमाला की छाया में दाखिल हुआ था, तब रात कितनी ठंडी होने वाली थी। हालांकि घाटियों में तेज़ हवा चल रही थी जो अच्छे संकेत नहीं दे रही थी, पर उसने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह चिलचिलाती गर्मी वाले रेगिस्तान को पीछे छोड़कर राहत महसूस कर रहा था। सूरज डूबने के काफी देर बाद—और पहाड़ों में काफी आगे बढ़ने के बाद—ही हवा में ठंडक का एहसास होने लगा। उसके बाद, वह अंधेरे में भटकता रहा, और किसी तरह उस जगह पर पहुँच गया जहाँ वह अब लेटा हुआ था, बुरी तरह थका हुआ, ठंड और भूख के कारण बेचैनी से सो रहा था।

राजकुमार जानता था कि उसे उठने के लिए खुद को मजबूर करना चाहिए, कि अगर उसने अपने शरीर को हिलाया-डुलाया नहीं और दिल को धड़कने नहीं दिया, तो बेहोशी की हालत में पहुँचने का खतरा था, जिससे वह शायद कभी जाग न पाए और नींद में ही ठंड से जम कर मर जाए। लेकिन जागने का विचार समझ से परे था, और इसके लिए जो मेहनत करनी पड़ती, वह इसके फायदों के अनुपात में नहीं थी।

इसलिए, उसने तर्क की सुस्त आवाज़ को अनसुना कर दिया और खुद को नींद में बहने दिया...

उन्हें याद नहीं था कि उदयपुरी के आसपास के पहाड़ इतने ठंडे हुआ करते थे। सीमा पर स्थित दूर-दराज की चौकियाँ भी इससे ज़्यादा गर्म थीं। बेदार, बलिपुरा, कांजा...

घटाकरपारा अपनी अधनी नींद में करवट बदल रहा था, बलिपुरा का ख्याल आते ही उसके मन में एक याद ताजा हो गई जिसे वह थामे रखने की पूरी कोशिश कर रहा था, उसकी पलकों के पीछे एक चेहरा उभर रहा था। गोल और हल्के भूरे रंग का, चमकती आँखों वाला, जिनमें वह डूब सकता था, और रसीले होंठ जो शाम के समय ग्रामीण इलाकों में छाए हुए अमृत जैसे लग रहे थे।

अगर पिताजी तुम्हें स्वीकार नहीं करते, तो मैं सब कुछ छोड़कर तुम्हारे साथ आने को तैयार हूँ।

अपने ऊपर छाई सुस्ती और सुन्नता को दूर करते हुए, राजकुमार ने अपनी आँखें थोड़ी सी खोलीं और नए दिन को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। जहाँ वह दुबका हुआ था, वहाँ हल्की धुंधली रोशनी थी, जो कठोर पहाड़ों को धीरे से रोशन कर रही थी; सूरज अभी इतना ऊपर नहीं आया था कि पहाड़ के इस हिस्से तक पहुँच सके। घटाकरपारा ने करवट बदलने की कोशिश की, लेकिन ठंड ने उसे जकड़ लिया और उसे वापस जकड़ लिया, जिससे वह सिकुड़कर एक गेंद जैसा बन गया।

बहुत ठंड थी। असहनीय ठंड। इतनी ठंड कि हिलना-डुलना, उठना भी नामुमकिन था। उसके लिए सोना ही बेहतर था...

अपारूपा की यादें उसके मन में उमड़ आईं, और उसे एहसास हुआ कि वह उसके लौटने का इंतज़ार कर रही थी, उसका दिल टूटा हुआ था और वह चिंता से व्याकुल थी। उसे उसके पास वापस जाना ही था।

घटाकरपारा को पीठ के बल लेटने में अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी। गठिया के कारण होने वाले दर्द से जूझते हुए उन्होंने अपने शरीर को सीधा किया, अकड़े हुए अंगों को फैलाया और जोड़ों को मोड़कर उनकी जकड़न दूर करने की कोशिश की। ठंड ने उनके असुरक्षित शरीर पर अपना प्रकोप और भी बढ़ा दिया, लेकिन राजकुमार ने किसी तरह खुद को बैठने की स्थिति में पहुंचाया, फिर संघर्ष करते हुए

चारों हाथों-पैरों के बल खड़े हुए। अटूट दृढ़ संकल्प के साथ, वे अंततः अपने पैरों पर खड़े हुए, संतुलन बनाने से पहले वे खतरनाक तरीके से लड़खड़ाए।

Aparupa.

उसे उसे बताना था कि वह उसके साथ रहने के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार है।

भूख अंदर से और ठंड बाहर से जकड़ रही थी, ऐसे में घटाकरपारा ने धीमी, कांपती टांगों से पहाड़ पर अपनी चढ़ाई फिर से शुरू कर दी।

***

"तक्षक और त्रिभानु न तो मूर्ख थे और न ही लापरवाह; उन्हें बस यह गलतफहमी थी कि मानव राजा के पास नरक की अग्नि नहीं है।"

हिरण्याक्ष और होलिका हैरान होकर शुक्राचार्य की ओर देखने लगे।

"और नरक की आग राजा के कब्जे में क्यों नहीं होगी?" असुर स्वामी ने गुस्से में कहा।

"क्योंकि मताली को लगा कि उसने उन्हें चुराया है," महायाजक की आँखों में प्रसन्नता की चमक थी। "उसने तो गरुड़ के द्वारा चुराई गई तलवारें भी देवलोक भेज दी थीं। अपने स्वामी के लिए उपहार के रूप में।"

लेकिन उसने जो तलवारें लीं, वे नरक की आग नहीं थीं?

शुक्राचार्य ने सिर हिलाया। "उन्हें यह विश्वास दिलाया गया कि वे किन्नर हैं, और किन्नर सेना ने उनकी इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई। हमले में एक चौथाई से भी कम सैनिक बच पाए; बाकी जलकर मर गए।"

"और नागों का क्या?"

"भले ही उनका सामना हेलफायर्स से नहीं हुआ, फिर भी उनकी हालत कुछ खास अच्छी नहीं रही।"

"तो फिर उन्हें किसने मारा, महागुरु?" होलिका ने उत्सुकता से पूछा।

"नागों का सामना उस सलाहकार से हुआ जो विष को नियंत्रित करने की क्षमता रखती है, जो नाग मोती का अवतार है। वह नागों से अप्रभावित थी, और उनके विष को भी उन्हीं पर इस्तेमाल करने में सक्षम थी।" शुक्राचार्य कुछ देर रुके, उनकी भौंहें तन गईं। "यह चिंताजनक है, जिस तरह से उसने नागों को हराया... यहाँ तक कि

दूसरा भी लौट आया है, राजा का भाई, जो बांस मोती का अवतार है। उसने राजा से अपने मतभेद भुला दिए और किन्नरों के विरुद्ध लड़ने के लिए वापस आ गया।"

होलिका और हिरण्याक्ष ने एक-दूसरे को संदेह भरी निगाहों से देखा। "आपने कहा था कि नौ मोती कमजोर हो गए हैं, महागुरु। उन्हें बांधने वाली शक्ति टूट गई है—"

"हाँ, ऐसा ही हुआ था," प्रधान पुरोहित ने असुर स्वामियों को घूरते हुए कहा। "इसीलिए मैंने कहा था कि यह चिंताजनक है। मनुष्यों को इतनी अच्छी तरह से मुकाबला नहीं करना चाहिए था... हालाँकि हमारे नज़रिए से देखें तो मनुष्यों की जीत बहुत अच्छी बात है। देवताओं को खदेड़ दिया गया है, और इंद्र को जल्द ही पता चल जाएगा कि उसके पास दो बेकार तलवारों के अलावा कुछ नहीं बचा है। यह हमारे लिए खुशी की बात है।"

"खासकर इसलिए क्योंकि यह बिल्कुल अप्रत्याशित था," हिरण्यक्ष ने सहमति जताते हुए कहा। "और वो खंजर...?"

शुक्राचार्य ने हंसते हुए कहा, "राजा के पास तो वह हमेशा से था ही। बेचारा मतली आधी रात महल में उसे ढूंढता रहा। उसने गलत तलवारें चुरा लीं, हलाहल नहीं मिला, और कुछ हज़ार किन्नरों की मौत का कारण भी वही बना... इस बार इंद्र अपने इस चहेते सिपाही से बिल्कुल भी खुश नहीं होंगे।"

"आने वाले समय में इंद्र कई बातों से नाराज होंगे," होलिका ने मुस्कुराते हुए कहा। "भाई देवलोक से कितनी दूर हैं?"

उसे अभी काफी लंबा सफर तय करना है।

और अही को जगाने के मंत्र—"

शुक्राचार्य ने कहा, "हड्डियां मुझे आश्वस्त करती हैं कि वे देवताओं के साथ हैं।"

जैसे ही कक्ष में सन्नाटा छा गया, हिरण्याक्ष सीधा खड़ा हो गया।

"मनुष्यों ने भले ही बहादुरी से लड़ाई लड़ी हो, लेकिन वे बुरी तरह हार गए हैं। देवताओं की हालत भी कुछ बेहतर नहीं है, वे भी पराजित और हतोत्साहित हैं। महागुरु, हलाहल लेने का यह सुनहरा अवसर है।"

"बिल्कुल," शुक्राचार्य ने सहमति जताई। "यह सौभाग्य की बात है कि मनुष्य आग में अपने शहर का आधा हिस्सा पहले ही खो चुके हैं। मुझे नहीं लगता कि मेरे पुत्रों

और व्यालों की सेना को उन्हें यह समझाने में ज़्यादा समय लगेगा कि यदि वे हमें कटार नहीं सौंपते हैं तो वे बाकी आधा हिस्सा भी खोने का जोखिम उठा रहे हैं।”

***

"देवी का कहना है कि बादल मरुस्थली के ऊपर पूर्व की ओर बढ़ रहे धूल भरी आंधी के संकेत दे रहे हैं।"

"शायद यह सिर्फ एक धूल भरी आंधी ही है," क्षपनाका ने कंधे उचकाते हुए कहा।

विक्रमादित्य ने स्पष्ट किया, "हजारों पैरों वाला धूल का तूफान।"

“ओह,” क्षपणक ने उत्तर दिया। “एक सेना मार्च कर रही है।”

“तेजी से दौड़ती सेना की तरह लग रहे हो,” धनवंतरी ने सम्राट के कंधे पर बंधी पट्टी हटाते हुए कहा और सूजन वाले, लाल रंग के घाव को देखा, जो तेल लगे होने के बावजूद बैंगनी-लाल दिख रहा था। “अपना हाथ उठाओ।” उन्होंने राजा का हाथ उठाने में मदद की और घाव को टटोलते हुए देखा, राजा के दर्द से कराहने पर भी उन्होंने उसकी अनदेखी की।

विक्रमादित्य ने सभी को महल के औषधालय में बुलाया था ताकि धनवंतरी के घाव का उपचार करते समय वे योजना बना सकें। वराहमिहिर कषायम से भरे कई घड़ों के पास बैठे हुए पीछे की ओर झुक गए और खिड़की से बाहर झाँकने लगे।

“इस धुएं के कारण मुझे कुछ भी ठीक से दिखाई नहीं दे रहा,” उसने बुदबुदाते हुए कहा। “मुझे आश्चर्य है कि भविष्यवक्ता को बादलों तक सब कुछ कैसे दिखाई देता था।”

सम्राट ने कहा, "उसे उन संकेतों पर कोई संदेह नहीं था जो उसने पढ़े थे।"

"झील में शव मिलने के बाद, मैं उसकी हर बात पर विश्वास करूंगा," धनवंतरी ने कहा।

“ठीक है,” वराहमिहिर ने सिर हिलाया। उन्होंने विक्रमादित्य की ओर देखा। “कालिदास के बारे में कुछ नहीं?”

"नहीं, लेकिन हमें यह मान लेना होगा कि वह हूण सेना के साथ है, संभवतः उसका नेतृत्व भी कर रहा है।"

क्या उसे पता है कि यह धूल भरी आंधी सीमावर्ती इलाके से कितनी दूर है?

“नहीं, लेकिन हम इतना तो निश्चित कह सकते हैं कि वे जल्द ही अरबुदास नदी पार करने का प्रयास करेंगे।” धनवंतरी ने चोट पर गर्म सरसों के दानों की पट्टी लगाई तो राजा चौंक गए। “हमें उन्हें रोकने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा, और इसका मतलब है कि हमें आगे बढ़कर सैनिकों का नेतृत्व करना होगा।”

वररुची, जो अपने हाथों को अपनी छाती पर रखकर दरवाजे से टिके हुए थे, सीधे खड़े हो गए। "मैं जाऊंगा।"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। “मैंने कालिदास को अवंती छोड़ने दिया। मुझे उसे वापस लौटने से रोकना ही होगा।” उनकी आवाज़ में ऐसा दृढ़ संकल्प था जो किसी भी तर्क को स्वीकार नहीं करता था।

पार्षदों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"इस हाथ के साथ आपको सावधान रहना होगा," धनवंतरी ने चेतावनी दी।

“मुझे लगा था कि आप इसका कोई त्वरित उपाय ढूंढ लेंगे,” सम्राट के होंठों के कोने मुड़ गए।

मैं चिकित्सक हूं, जादूगर नहीं।

“शहर में लोग ऐसा नहीं कह रहे हैं,” वराहमिहिर ने जवाब दिया। “मैंने सुना है कि आपने कल रात के कई घायलों को तुरंत राहत पहुँचाई है। मुझे बताया गया है कि लोग आपकी तुलना वैद्य से कर रहे हैं।”

"कृपया उसे मत बुलाइए," चिकित्सक ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

और जिस तरह से आपने विक्रमा को बॉर्डरवर्ल्ड से वापस लाया, वह किसी चमत्कार से कम नहीं था।

राजा ने धनवंतरी की ओर देखा। “मैंने इसके लिए आपको धन्यवाद नहीं दिया—”

“कृपया,” चिकित्सक ने शर्मिंदा होकर सम्राट को दूर जाने का इशारा किया। “आपके हाथ के बारे में,” उन्होंने विषय बदलते हुए कहा, “शुक्र है, उसमें कोई डिसलोकेशन नहीं है, लेकिन एक लिगामेंट फट गया है, इसलिए मुझे आपको स्लिंग लगानी पड़ेगी। आपको कुछ दिनों तक कंधे पर ज़ोर नहीं डालना चाहिए।”

राजा मुस्कुराया। "अगर हूण इसकी अनुमति देंगे तो मैं ऐसा न करने की कोशिश करूंगा।"

“हलाहल के बारे में क्या?”

सभी लोग मुड़कर वराहमिहिर को घूरने लगे।

"क्या आप इसे अपने साथ ले जा रहे हैं?" बूढ़े पार्षद ने जोर देकर पूछा।

"यह बहुत खतरनाक है," सम्राट ने सिर हिलाते हुए कहा। "सीमा बहुत दूर है, और युद्ध के बीच में कटार खो सकती है..."

तो आप इसे कहाँ छोड़ेंगे?

"यहाँ।"

विक्रमादित्य द्वारा प्रस्तावित भयावहता का अहसास होते ही चारों पार्षद चुप हो गए और चोरी-छिपे एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"क्या आपको विश्वास है कि हम कटार की रक्षा कर सकते हैं?" वराहमिहिर ने राजा को संदेह भरी निगाहों से देखा।

"हाँ।"

वराहमिहिर को ज़रा भी यकीन नहीं हुआ। कक्ष में सन्नाटा पसरा हुआ था।

"तुम सब इस कटार की रक्षा कर सकते हो, लेकिन तुम निश्चित रूप से कर सकते हो," राजा ने वराहमिहिर से कहा।

"मैं नहीं समझता-"

"धनवंतरी ने मुझे आपके ऊर्जा कवच के बारे में बताया... वह चीज़ जो आप करते हैं। उन्होंने कहा कि आपने उस कवच का प्रयोग करके महल पर हमला करने वाले जीवों को रोक दिया था। आपने हमें यह भी बताया था कि जब आप शुक्राचार्य के साथ रथ पर थे, तब आपने उस सर्प के विष को कैसे रोका था।" बूढ़े सलाहकार को सिर हिलाते देख सम्राट ने आगे कहा, "आप जो करते हैं, वह बहुत शक्तिशाली है। कोई भी चीज़ आपके उस कवच को आसानी से भेद नहीं सकती, और इसी तरह आप कटार की रक्षा करेंगे।"

"मुझे नहीं पता कि वह ढाल वास्तव में कितनी मजबूत है," वराहमिहिर ने विरोध किया। "मुझे नहीं पता कि वह क्या रोक सकती है और क्या नहीं। क्या होगा अगर वह किसी बहुत शक्तिशाली खतरे को न रोक पाए—"

"अपनी शक्ति की सीमा का पता तुम्हें तभी चलेगा जब तुम उसका पूरा उपयोग करोगे," राजा ने उत्तर दिया। "अपनी शक्ति पर विश्वास रखो। और तुम अकेले नहीं हो। क्षपणक, वरारुचि और धनवंतरी यहाँ हैं, और सौभाग्य से बाकी लोग भी बहुत जल्द लौट आएंगे।"

वराहमिहिर ने कुछ देर तक अपने हाथों के पिछले हिस्से की झुर्रियों को गौर से देखा। अंत में, उन्होंने अपनी दृष्टि विक्रमादित्य पर और फिर अन्य सलाहकारों पर डाली।

"क्या आपको लगता है कि विक्रमा सही है?" उसने उनसे पूछा।

"जानने का केवल एक ही तरीका है," क्षपनाका मुस्कुराया। वरारुचि ने सहमति में अपने कंधे उचका दिए।

"आप कब प्रस्थान करने का इरादा रखते हैं?" क्षपणक ने विक्रमादित्य से पूछा।

"तुरंत।" सम्राट ने वरारुचि की ओर मुड़कर कहा, "पचास बलवान घुड़सवारों की एक टुकड़ी तैयार करो। साथ ही, उदयपुरी और गोश्रृंगा को संदेश भेजो कि पहाड़ों में गश्त दोगुनी कर दी जाए और गश्त करने वाले हर तीन घंटे में छावनियों और कमान केंद्रों को रिपोर्ट करें। रेगिस्तान में किसी भी हलचल की सूचना तुरंत दी जानी चाहिए। और उदयपुरी में छावनी के कमांडर को—उनका नाम क्या है? अतुल्यतेज? —यह बता दो कि मैं एक-दो दिन में वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

वररुचि कमरे से बाहर चला गया। वराहमिहिरा ने उसे जाते हुए देखा और फिर दूसरों की ओर मुड़ा।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "उनका वापस आना अच्छा है।"

बाकी तीनों ने भी जोरदार तरीके से सिर हिलाकर सहमति जताई।

"मैं आपको बता नहीं सकता कि मुझे कितनी राहत मिली है," राजा ने अपनी बांह को सहलाते हुए कहा। "उसके लौटने से मेरे कंधों और सीने से एक बड़ा बोझ उतर गया है।"

चिकित्सक ने कहा, "आपके स्नान करने और कपड़े बदलने के बाद मैं पट्टा लगा दूंगा।"

विक्रमादित्य को अपने आसन से उठते देख वराहमिहिर ने कहा, "जाने से पहले हमें नरक की आग के बारे में बताइए। ऐसा तो नहीं है कि आपको विस्मय पर—या उसके वेश में किसी पर—शक था, तो आखिर हुआ क्या? अगर उसने तलवारें चुराईं, तो ये दोनों कहाँ से आईं?" उन्होंने राजा की कमर पर जल रही नरक की आग की ओर इशारा किया।

"मुझे किसी पर विशेष संदेह नहीं था, लेकिन मुझे यह एहसास हो गया था कि नरक की अग्नियों को चुराने का एक वास्तविक खतरा था," सम्राट ने कहा। "इसलिए,

दो दिन पहले, मैंने अपने महल के लोहार बरिसा से दोनों तलवारों की प्रतिकृतियां बनाने को कहा। दरअसल, बरिसा उस सुबह यहीं था, जब आप और धनवंतरी मुझसे मिलने आए थे, तूफान के ठीक बाद। मैंने उससे वादा लिया कि वह किसी को भी नहीं बताएगा कि मैंने उससे क्या करने को कहा था। खैर, उसने नकली तलवारें बना दीं, और बिल्कुल सही समय पर। मैंने नकली तलवारें उस जगह रख दीं जहाँ मैंने नरक की अग्नियां रखी थीं और असली तलवारें छिपा दीं। विस्मया के हमशक्ल ने नकली तलवारें ले लीं, यह सोचकर कि वे नरक की अग्नियां हैं।"

"तुमने बड़ी चतुराई दिखाई," वराहमिहिर ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"शायद आपको बरिसा से इसकी एक दर्जन और प्रतिकृतियां बनवानी चाहिए," क्षपनाका ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मुझे शक है कि वह मानेंगे," विक्रमादित्य ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "वह पहले से ही लोहे की कमी की शिकायत कर रहे थे; वह इसे बर्बाद करना बिल्कुल पसंद नहीं करेंगे।" दरवाजे की ओर चलते हुए उन्होंने आगे कहा, "इसके अलावा, अब से नरक की आग हमेशा मेरे साथ रहेगी, जब तक हम अवंती पर मंडरा रहे खतरों का अंत नहीं कर देते।"

***

शायद धनवंतरी के बारे में नगरवासियों की बातों में कुछ सच्चाई थी, सम्राट ने विशाखा के बगल में खाली आसन पर बैठते हुए मन ही मन सोचा। उनका शरीर अभी भी अकड़ा हुआ और दर्द से भरा था, और घोड़े से गिरने के कारण उनके कूल्हे में भी दर्द था, लेकिन धनवंतरी की देखभाल के कुछ ही मिनटों में उनके कंधे का दर्द कम होने लगा था और अब लगभग न के बराबर था। शायद वैद्य ने कोई ऐसी जादुई शक्ति खोज ली थी, जो वराहमिहिर, क्षपणक और अन्य चिकित्सकों के समान थी, जिससे वे बेहतर उपचार कर पाते थे...

विक्रमादित्य ने रानी का हाथ अपने हाथ में लेते हुए आह भरी, "कितना अफ़सोस है कि धनवंतरी उसके सीने के दर्द को कम करने के लिए कुछ नहीं कर सका।" यह दर्द सबसे कठिन था, एक निरंतर, हल्का दर्द जो हर सुबह और शाम इस कमरे में आने पर उसके दिल को चीर देता था। और यह जानते हुए कि वह अब कुछ समय

तक यहाँ नहीं आएगा, दर्द मानो दुगना हो गया, मानो उसकी अनुपस्थिति की भरपाई कर रहा हो।

"मुझे जाना ही होगा, मेरी प्रियतमा, मेरे पास कोई विकल्प नहीं है," उसने फुसफुसाते हुए उसके हाथों को अपने होठों तक उठाया और उसकी उंगलियों को हल्के से चूमा। "लेकिन मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे मुझे याद करने से पहले ही मैं वापस आ जाऊँगा।"

उसके मन में एक आवाज़ ने बेरहमी से उसे याद दिलाया, "वह तुम्हें याद नहीं करेगी," और राजा को निराशा का घना साया अपने चारों ओर महसूस हुआ। शायद वह उसे फिर कभी याद न करे, यह जाने बिना कि उसने क्या खोया है और वह दिन-ब-दिन क्या खोता जा रहा है, हर उस दिन जब वह उसे पहचान नहीं पाती...

"अरे, तुम तो पहले से ही यहाँ हो।"

विक्रमादित्य ने देखा कि धनवंतरी रानी के कक्ष में प्रवेश कर रहे हैं। राजा ने कहा, "जाने से पहले मैं आपसे विदा लेने आया हूँ।"

डॉक्टर ने बिस्तर के पास आते हुए सिर हिलाया। "कंधा कैसा है?"

"लोग आपके बारे में सही कहते हैं। आपको शायद ही कोई दर्द होता है।" सम्राट ने अपने कंधे को हिलाया, जो पट्टी में बंधा हुआ था।

"आराम से," धनवंतरी ने चेतावनी दी। "दूसरों की बातों में ज्यादा मत पड़ो। चोट ठीक होने में समय लगता है। स्लिंग पहने रहो और कंधे पर ज्यादा दबाव मत डालो।"

विक्रमादित्य ने विशाखा का हाथ वापस पलंग पर रख दिया। उन्होंने चिकित्सक से बात करते हुए रानी की ओर देखते हुए कहा, "कृपया उनका अच्छे से ख्याल रखना।" उन्होंने हाथ बढ़ाकर विशाखा के माथे को सहलाया, मानो उनकी शिकन को शांत कर रहे हों।

"मैं करूँगा।"

सम्राट ने वैद्य की ओर देखा। "मुझे पता है कि आपको इसकी ज़्यादा परवाह नहीं है, लेकिन जब लोग आपकी तुलना वैद्य से करते हैं, तो मैं इस बात पर यकीन करना चाहता हूँ। अगर उन्होंने उसे वापस ज़िंदा किया... तो शायद आप भी कर सकते हैं।"

धनवंतरी ने अपना सिर हिलाया, लेकिन विक्रमादित्य की निगाहों से बचते रहे। यह देखकर राजा का चेहरा उतर गया और वे खड़े हो गए। उन्होंने उदास आँखों से एक बार फिर विशाखा की ओर देखा।

धनवंतरी ने राजा के हाथ पर दिलासा भरा हाथ रखा। उन्होंने कहा, "शायद मैं कर सकता हूँ। जैसा कि आपने वराहमिहिर से कहा था, हमें अपनी शक्तियों की सीमा का पता तभी चलेगा जब हम उनका उपयोग करेंगे।"

सम्राट मुस्कुराए और वैद्य के हाथ को अपने हाथ से ढक लिया। "धन्यवाद, मित्र।" विशाखा की ओर अंतिम दृष्टि डालकर वे कमरे से चले गए।

वह गैलरी से नीचे उतरा और अपने कक्षों की ओर सीढ़ियाँ चढ़ गया, उसका दिमाग पहले से ही यात्रा और सीमांत क्षेत्र में लगा हुआ था, वह हूणों को पहाड़ों को पार करने से रोकने के लिए रणनीतियाँ बना रहा था और यदि रक्षा की पहली पंक्ति विफल हो जाती है तो हमले का मुकाबला करने की योजनाएँ तैयार कर रहा था।

विक्रमादित्य अपने कक्ष में दाखिल हुए, लेकिन वे अपने विचारों में इतने मग्न थे कि उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं हुआ कि कमरे में कोई पहले से मौजूद है। उन्हें उस दूसरे व्यक्ति को समझने में कुछ क्षण लगे, जो बाहर छत की ओर जाने वाले दरवाजे के पास खड़ा था।

प्रकाश आकृति के पीछे था, इसलिए सम्राट तुरंत यह नहीं पहचान पाए कि वह कौन है।

उसने पलकें झपकाईं और आश्चर्य और क्रोध से उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।

उसने उज्जैन की एक भीड़भाड़ वाली सड़क पर उस चेहरे को देखा था, एक ऐसा चेहरा जिसे उसने हाल ही में पहली बार देखा था।

एक ऐसा चेहरा जिसे वह शायद ही कभी भूल पाएगा।

The deva Gandharvasena.

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" सम्राट दहाड़ते हुए बोला, उसकी आँखें आग की तरह धधक रही थीं।

"मैं शांति से आया हूँ, पुत्र—" आगंतुक ने कहना शुरू किया, लेकिन विक्रमादित्य आगे बढ़े, उनकी मुट्ठियाँ क्रोध से कसी हुई थीं।

"मत करो..." ये शब्द चेतावनी भरे स्वर में निकले। "मत करो... मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूँ। कभी नहीं।"

देवता भयभीत होकर पीछे हट गए, हाथ ऊपर उठाए, हथेलियाँ आगे की ओर थीं। "मैं शांति से आया हूँ; मेरा इरादा तुम्हें या तुम्हारी माँ को कोई हानि पहुँचाने का नहीं है।"

"तो फिर तुम क्या चाहते हो? तुम यहाँ कैसे आए?" राजा की निगाहें कमरे में इधर-उधर दौड़ रही थीं, जबकि उसका बायाँ हाथ उसकी दाहिनी कमर पर लटकी हुई नरक की अग्नि की ओर बढ़ गया।

मैं शपथ लेता हूँ कि मैं शांति से आया हूँ... पिता की तरह नहीं, जो केवल अपने लाभ के लिए आया था।

विक्रमादित्य ने गंधर्वसेना से निगाहें मिलाईं।

"तुम इंद्र के साथ आए थे। तुम्हें पता था कि तुम मुझे कितना नुकसान पहुंचाने वाले हो।"

"पिताजी ने तो बस इतना ही कहा था कि मैं आपको बताऊं कि मैं आपके लिए कौन हूं," देव ने सिर हिलाते हुए कहा। "मुझे नहीं पता था कि परिणाम इतना भयानक होगा।"

"अगर तुम्हें पता होता, तो क्या तुम उसके साथ आने से इनकार कर देते?" सम्राट ने चुनौती देते हुए पूछा।

राजा और देव ने एक-दूसरे को तब तक घूरा जब तक कि देव ने अपनी निगाहें नीचे नहीं कर लीं।

"मेरी रगों में शेर का खून बहता है, मेमने का नहीं," विक्रमादित्य ने व्यंग्य करते हुए कहा। "मैं तुम्हारा पुत्र नहीं हो सकता।"

गंधर्वसेना के होठों से एक टूटी हुई आह निकली। उन्होंने कहा, "महेंद्रदित्य एक महान पिता रहे होंगे जिन्होंने तुम्हारे जैसे साहसी सिंह का पालन-पोषण किया। इंद्र के सामने तुम्हारे जैसा साहस दिखाने की हिम्मत बहुत कम लोगों में होती है। तुम्हारे इस साहस ने मुझे शर्मिंदा कर दिया, इसीलिए मैं यहाँ प्रायश्चित करने आया हूँ।"

"क्षतिपूर्ति? किस रूप में?"

"पिताजी की वजह से तुम बहुत कष्ट सह चुके हो, इसलिए मैं तुम्हारी मदद करने आया हूँ।"

विक्रमादित्य ने गुस्से से कहा, "मुझे तुम्हारी मदद नहीं चाहिए। चले जाओ, और फिर कभी वापस मत आना।"

गंधर्वसेना ने सम्राट को पीड़ा भरे भाव से देखा। “हो सकता है आपको मेरी मदद न चाहिए हो, लेकिन यकीन मानिए, आपको इसकी ज़रूरत है। आपके राज्य को इसकी ज़रूरत है।” उन्होंने धुएं से घिरी उज्जैनी की ओर एक नज़र डाली। “मुझे पहले आ जाना चाहिए था। कृपया, ईश्वर की कृपा से, थोड़ी समझदारी दिखाइए और मेरी बात सुनिए...”

***

क्या उसे पता है कि वह क्या कर रहा है?

"उनके पिता ने कहा कि वह एक कुशल ट्रैकर थे, माननीय न्यायाधीश।"

“हम्म,” अमारा सिम्हा ने घुटनों के बल बैठे उस युवक को घूरते हुए कहा, जो रेगिस्तान की ज़मीन को निहार रहा था। “वैसे भी हमारे पास ज़्यादा विकल्प नहीं हैं,” उसने स्वीकार किया। भेड़ की खाल से बनी बोतल उठाते हुए उसने एक घूंट पानी पिया, उसे चखा और अपने होंठों और जीभ को पानी सोखने दिया।

अंगामित्रा ने चारों ओर देखते हुए पूछा, "हम मरुस्थली में कहाँ हैं?"

पार्षद ने संसप्तक की दृष्टि का अनुसरण किया। पिछले दिन और उससे पहले के दिनों की तरह, ज़मीन लगभग समतल थी, मिट्टी या तो कठोर और धूल भरी थी, या फिर भुरभुरी और रेतीली। ऊपर आकाश हल्का नीला था, क्षितिज से क्षितिज तक एकसमान, सिवाय अकेले चमकते सूरज के। वे लोग थके हुए लग रहे थे, गर्मी और इस खोज की मंडराती निरर्थकता ने उनकी ऊर्जा को क्षीण कर दिया था।

“बच्चे ने कहा कि यह रेगिस्तान का उत्तरी भाग है,” दुभाषिए ने कहा।

“यह तो काफी स्पष्ट है,” अमारा सिम्हा ने कहा। “मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि यह ठीक कहाँ है।”

“क्या वे पहाड़ वहाँ हैं?” अंगामित्रा ने अचानक झाँककर इशारा किया।

सभी लोग अचानक उत्सुकता से देखने लगे, इस उम्मीद में कि पूर्वी क्षितिज पर छाए धुंध में से अर्बुदा पर्वत श्रृंखला की रूपरेखा स्पष्ट रूप से दिखाई देगी। लेकिन उनमें से कोई भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता था।

पार्षद ने कहा, "दूर से साफ दिखाई नहीं दे रहा है। लेकिन हम पूर्व दिशा की ओर बढ़ते जा रहे हैं।"

दुभाषिया ने उस लड़के से बात की, जो अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच धूल का एक कण रगड़कर उसकी जांच कर रहा था। लड़के ने पूरब की ओर देखा और सिर हिलाया। उसने कहा, "घेयार।"

“ये पहाड़ हैं,” दुभाषिए ने अनुवाद किया।

उन आदमियों ने राहत भरी मुस्कान बिखेरी।

“और घटाकरपारा?”

दुभाषिया ने लड़के के उठते ही उसे गौर से देखा। उसका शरीर दुबला-पतला था और चेहरे पर शर्मीली मुस्कान थी। वह तभी बोलता था जब उससे कुछ पूछा जाता था, या जब वह कोई संकेत देखता और उसे करीब से देखने के लिए रुकना चाहता था। सबके चेहरों पर जिज्ञासा का भाव देखकर उसने उत्तर-पूर्व की ओर इशारा करते हुए बोलना शुरू किया। दुभाषिया ने ध्यान से सुना।

उन्होंने कहा, "उनका कहना है कि रास्ता उस तरफ जाता है।"

“क्या उसे यकीन है?” अमारा सिम्हा ने संदेह भरी नज़र से पूछा। “हम काफी देर से उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रहे हैं। अगर राजकुमार ने यही रास्ता चुना है, तो वह मत्स्य पहुँचेगा, अवंती नहीं।”

लड़का आश्वस्त है।

तो चलिए अब आगे बढ़ते हैं।

जैसे ही लड़का वापस घोड़े पर बैठा, उन्होंने फिर से घुड़सवारी शुरू कर दी।

"मुझे बस उम्मीद है कि यह एक निराशाजनक प्रयास नहीं होगा," पार्षद ने शिकायत करते हुए कहा।

“बच्चे का नाम नोरहान है, जो ध्रुव तारे का साका नाम है,” दुभाषिए ने कहा। “मेरा मानना है कि यह बहुत शुभ संकेत है। वह हमें राजकुमार तक ले जाएगा।”

I am Mithyamayi —”

“नहीं, तुम नहीं हो,” विक्रमादित्य ने कहा।

अप्सरा ने घूरते हुए अपने निचले होंठ को कांपने से रोकने के लिए काट लिया।

“तुम विस्मया की भतीजी भी नहीं हो। तुम्हारी माँ का नाम करुणा नहीं है, और तुम्हारे पिता ने कभी विश्वपुरी में फलों का व्यापार नहीं किया।”

“मुझे समझ नहीं आ रहा...” अप्सरा ने अपनी पलकें झपकाईं।

“तुम इंद्र के साथ उज्जैन आए थे—”

विक्रमादित्य को उस महिला की आंखें सदमे से चौड़ी होते हुए देखने का आनंद मिला, लेकिन तभी दरवाजे से प्रलूपी की आवाज सुनाई दी।

"यह सब क्या है?"

राजा की बहन पहरेदारों को धक्का देते हुए आगे बढ़ी, उसकी निगाहें उर्वशी और विक्रमादित्य पर टिकी थीं। “तुम उसे अकेला क्यों नहीं छोड़ सकते? वह तो बस एक दासी है। उसे परेशान करना बंद करो।”

वह नौकरानी नहीं है—

“बिल्कुल, वो है,” राजकुमारी ने ज़ोर देकर कहा। उसकी नज़रें एक बार फिर उर्वशी पर पड़ीं, और सम्राट को उनमें थोड़ी सी चिंता झलकती देखकर आश्चर्य हुआ। “आओ, बच्ची,” उसने अप्सरा का हाथ थामते हुए कहा, “चिंता मत करो। मैं इसका ख्याल रखूँगी—”

“बस करो।” विक्रमादित्य का स्वर इतना कठोर था कि ऊपर लटके पक्षियों के पिंजरों से चौंककर चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। प्रलूपी का हाथ मानो जल गया हो, पीछे हट गया और वह अपने भाई से दूर हट गई।

“यह तुम्हारी दासी मिथ्यामयी नहीं है। यह अप्सरा उर्वशी है, और वह अपने स्वामी इंद्र के आदेश पर उज्जैन में है। वह उस कटार का पता लगाने आई है जिसे सर्वज्ञ ने मेरे पास सुरक्षित रखा है, और वह विस्मय का रूप धारण करने वाले देवता के साथ मिलकर कटार चुराने की साजिश रच रही है। यह मानना उचित है कि वफादार विस्मय की हत्या में उसका हाथ था—”

"नहीं," उर्वशी ने बीच में ही टोकते हुए तीखे स्वर में कहा। "उस आदमी की मौत में मेरी कोई भूमिका नहीं थी।"

राजा ने अप्सरा को ध्यान से देखा। "तो, तुम मेरी कही हुई बाकी सारी बातें मान लेती हो।"

उर्वशी ने कोई जवाब नहीं दिया। प्रलूपी ने अप्सरा को घूरकर देखा।

विक्रमादित्य उर्वशी की ओर बढ़े और उनकी आँखों में देखते हुए बोले, "मेरी तलवारें चुराना... ये किसका विचार था? या पिछली रात तुम्हारा आना..."

राजा अप्सरा को ध्यान से देख रहा था, इसलिए उसने यह नहीं देखा कि प्रलूपी की निगाहें घबराहट में उर्वशी की ओर घूम गईं।

"मुझे तलवारों के बारे में कुछ नहीं पता।" अप्सरा हिचकिचाई, मानो वह अपने मन की बात पूरी करना चाहती हो, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया और अपनी नज़रें झुका लीं।

सम्राट ने कुछ क्षण उर्वशी के बारे में सोचा। "तुम्हारी बातों में कितना सच है, यह बताना असंभव है। और अगर तुम सच भी बोल रही हो, तो भी मैं तुम्हें अवंती छोड़कर देवलोक लौटने नहीं दे सकता, क्योंकि वहाँ जाकर तुम इंद्र को अपने सारे रहस्य बता दोगी।"

"क्या आप मुझे यहाँ कैदी बनाकर रखना चाहते हैं?" उर्वशी अचंभित होकर देखती रही।

"तुम अवंती के लिए, इस शहर के लिए और यहाँ के लोगों के लिए खतरा हो। तुमने यह तो नहीं सोचा होगा कि मैं तुम्हें देवलोक वापस भेजने के लिए पालकी मंगवाऊँगा, है ना?"

अपने स्वर से हल्के व्यंग्य को हटाते हुए विक्रमादित्य ने कहा, "राज्य के शत्रु कालकोठरियों में बंद हैं, लेकिन वह स्त्रियों के लिए जगह नहीं है। तुम अवंती की कैदी बनकर महल में रहोगी, लेकिन तुम्हें वह सम्मान दिया जाएगा जिसकी एक स्त्री हकदार है।"

सम्राट ने एक पहरेदार को सिर हिलाकर इशारा किया।

"आप मुझे यहां कब तक रखने का इरादा रखते हैं?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता," राजा ने उत्तर दिया। "लेकिन जब हमें यह सुनिश्चित हो जाएगा कि अब आप अवंती के लिए कोई खतरा नहीं हैं, तो आपको देवलोक वापस

भेज दिया जाएगा।”

जब अप्सरा उसे दरवाजे तक ले जा रही थी, तभी वह सम्राट की ओर देखने के लिए रुक गई।

“तुम्हें कैसे पता चला?” उसने पूछा। “किस बात से मेरी पोल खुली... या किसने खोली?”

"जब तक तुम कैद में हो, तब तक जवाब ढूंढने की कोशिश करो," विक्रमादित्य ने उसे हल्की सी मुस्कान दी।

***

शशिवर्धन की उंगलियां लगाम पर सुन्न पड़ गई थीं, उनके जोड़ों की जकड़न धीरे-धीरे उनके कूल्हों और पीठ तक फैल रही थी, क्योंकि उनका घोड़ा पतली, गीली बर्फ की चादर पर धीरे-धीरे चल रहा था। ठंड से राजकुमार की आंखों में पानी आ गया था, इसलिए उन्हें अपनी दृष्टि को साफ करने के लिए बार-बार पलकें झपकानी पड़ रही थीं, ताकि वे दक्षिण-पश्चिमी मत्स्य की टूटी-फूटी पहाड़ियों को देख सकें, जो जगह-जगह देवदार के पेड़ों के झुरमुटों से ढकी हुई थीं। शशिवर्धन जिधर भी देखते, उन्हें एक ठंडी और वीरान भूमि दिखाई देती, जहां मानव बस्ती का कोई निशान नहीं था।

“क्या हमें सच में इतनी दूर आने की ज़रूरत थी?” राजकुमार ने पूछा, उसका ध्यान चौकी पर स्थित अपने कमरे में रखे छोटे लकड़ी के अंगीठी पर था, जहाँ वह उत्तर से आ रही ठंडी हवा से अपने हाथों को गर्म रख रहा था। “यहाँ हमें देखने वाला कोई नहीं है।”

“महाराज, आपका आना सौभाग्य की बात है,” उनके अंगरक्षक पियुषा ने जोर देकर कहा। “चौकी पर तैनात सैनिकों को अब यकीन हो जाएगा कि वत्सा का भावी राजा लोहे का बना है।”

शशिवर्धन को ऐसा महसूस नहीं हो रहा था जैसे वह लोहे का बना हो—सच कहूँ तो, उसे यह भी नहीं पता था कि उसे इसकी परवाह है या नहीं। वह बस चौकी पर वापस जाना चाहता था, जहाँ शराब का घड़ा हो और गर्म आग हो, ताकि उसकी ज़ुकाम दूर हो जाए। कौशांबी में वापस जाना और भी अच्छा होता, जहाँ साल भर धूप खिली रहती थी... लेकिन तभी उसे याद आया कि उसने स्वयं सीमा पर तैनात

होकर मत्स्य को शक आक्रमणों से बचाने का जिम्मा लिया था। अपने पिता की आपत्तियों के बावजूद, वह यहाँ, इस बर्फीली विशालता में, आराम से घर के अंदर या धूप से भरे कौशांबी में रहने के बजाय, मौजूद था। इससे पता चलता था कि उसे परवाह थी।

शायद उसमें वाकई कुछ दृढ़ निश्चय था।

दो रात पहले पियूषा के साथ हुई बातचीत के बारे में सोचते हुए उसने सोचा कि इसी बातचीत के कारण यह अभियान शुरू हुआ था। पियूषा रात के खाने के तुरंत बाद उसके पास आई थी, जब वह बिस्तर पर लेटा हुआ था और शराब और गीतों के साथ बिताई गई सुखद शाम के बाद उसे नींद आ रही थी। उस हट्टे-कट्टे सिपाही ने धैर्यपूर्वक शशिवर्धन के एक प्राचीन नाविकों के गीत को गुनगुनाने के समाप्त होने का इंतजार किया, और जब राजकुमार ने प्रसन्नता से उसकी ओर देखा, तो उसने बिल्कुल अप्रत्याशित शब्द कहे।

मत्स्य के सैनिक तुम्हें कमजोर समझते हैं।

शशिवर्धन को यह बात समझने में थोड़ा समय लगा। "क्यों?" उसने हैरानी से पलकें झपकाईं।

"वे इस बारे में बात करते हैं कि तुम कभी चौकी से बाहर नहीं निकलते और हमेशा घर के अंदर ही रहते हो। वे इसे तुम्हारी कमजोरी, तुम्हारी इज्जत की कमजोरी समझते हैं।"

"अगर वे मुझसे लड़ना चाहते हैं तो मैं उन्हें अपनी ताकत दिखा सकता हूँ," शशिवर्धन ने अतार्किक ढंग से कहा, उसके गालों का रंग लाल हो रहा था।

"चौकी के सैनिकों से लड़ने से मत्स्य और वत्स के बीच अच्छे संबंध बिगड़ने के अलावा कोई फायदा नहीं होगा। इसके अलावा, उन्हें आपकी तलवारबाजी की कुशलता पर संदेह नहीं है, बल्कि इन परिस्थितियों में, एक ऐसी जगह पर जिससे आप बिल्कुल भी परिचित नहीं हैं, लड़ाई का नेतृत्व करने की आपकी क्षमता पर संदेह है।"

शशिवर्धन ने इस पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद पूछा, "मुझे उन्हें यह दिखाने के लिए क्या करना चाहिए कि मैं कमजोर नहीं हूँ?"

"चौकी के आराम को छोड़कर सीमावर्ती इलाकों का निरीक्षण करने जाओ, वहां के हालात को समझो। शाम को लौटकर अपने साथियों से बात करो कि तुमने क्या

देखा, क्या निष्कर्ष निकाले... उन्हें दिखाओ कि तुम एक सैनिक की तरह उतनी ही सहजता से सोच सकते हो जितनी सहजता से तुम नाविक का गीत गाते हो, महाराज।"

तो, कल वे चौकी छोड़कर उत्तर की ओर चले गए थे और सूर्यास्त के समय ही लौटे, ठंड से कांपते और थके-हारे। शशिवर्धन को पक्का यकीन नहीं था कि उसने यात्रा में कुछ महत्वपूर्ण सीखा था, लेकिन पीयूषा ने बताया था कि सीमा पर उसे आधा दर्जन मत्स्य गश्ती दल ने देखा था, और यही उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण था।

आज वे चौकी छोड़कर दक्षिण की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े थे। आज कल की तुलना में काफी ठंड थी, और दक्षिण का विस्तृत इलाका कहीं अधिक निर्जन और सुनसान था।

"यह कैसे हो सकता है कि हमें अभी तक एक भी गश्ती दल नहीं मिला?" शशिवर्धन ने आश्चर्य व्यक्त किया। "और मुझे मीलों तक एक भी निगरानी मीनार नहीं दिखाई दी।"

"हम्म-हम्म," पियुषा ने सहमति जताते हुए कहा। "बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।"

"साका लोग यहाँ से आसानी से अंदर आ सकते हैं।" अपने अंगरक्षक के शब्दों से उत्साहित होकर राजकुमार ने बोलना जारी रखा। "अगर हम बर्बरों के लिए पिछला रास्ता खुला छोड़ देंगे तो उत्तर की ओर रक्षा व्यवस्था मजबूत करने का क्या फायदा?"

इस बार पियूषा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"इस इलाके को सुरक्षित करने के लिए कितनी गश्त लगानी पड़ेगी? तीन? चार? मतलब लगभग पचास आदमी? मुझे यकीन है कि कासवती की चौकी इतने आदमी दे सकती है। मुझे कमांडर अद्री से तुरंत बात करनी होगी..."

राजकुमार ने अपनी दाहिनी ओर देखा, उसे उम्मीद थी कि पियुषा उसके बगल में सवार होगी। लेकिन अंगरक्षक उसके बगल में नहीं थी।

आश्चर्यचकित होकर शशिवर्धन ने अपनी काठी घुमाई और देखा कि उसका अंगरक्षक दल उससे लगभग बीस कदम पीछे रुक गया था। सभी दस आदमी अपने-अपने घोड़ों पर बैठे थे और भयभीत भावों से उसे देख रहे थे।

"क्या हमारा सफर पूरा हो गया?" राजकुमार ने पूछा, उसकी आँखों में उम्मीद की किरण जगी थी। लेकिन साथ ही कुछ उलझन भी थी। वे अभी तक इतनी दूर या

इतनी लंबी यात्रा नहीं कर पाए थे कि वापस लौट सकें... "क्या हम लौट रहे हैं?"

उन पुरुषों में से किसी ने भी कुछ नहीं कहा।

उन्हें वहां बैठे और सीधे अपनी ओर देखते हुए देखकर, शशिवर्धन को अचानक एक अनहोनी का अहसास हुआ।

"हां, हमारा काम हो गया," पियूषा ने अंत में कहा। "हम वापस लौट रहे हैं।"

अंगरक्षक के लहजे में कुछ ऐसा था जिससे राजकुमार का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसे एहसास हुआ कि उसके होंठ सूख गए हैं, और यह ठंड के कारण नहीं था। उस आदमी के चेहरे के भावों को समझने की कोशिश करते हुए, उसने अपने घोड़े को मोड़ा। "अच्छा। तो चलिए—"

"आप नहीं।"

शशिवर्धन ने अपने अंगरक्षक को घूरते हुए कहा, "क्या?"

पियूषा ने सिर हिलाया। "तुम हमारे साथ वापस नहीं जा रहे हो।"

समय मानो एक ही समय में धीमा और तेज़ हो रहा था, जिससे राजकुमार की आँखों के सामने सब कुछ धीमा होकर रेंगने जैसा हो गया और साथ ही उछल-कूद और सरक कर आगे बढ़ने लगा। उसने देखा कि पियूषा एक आदमी की ओर मुड़ा और कुछ कहा, उसके मुँह से शब्द निकलने में उसे सदियाँ लग गईं... और फिर अचानक उस आदमी ने अपना धनुष निकाला और तीर तैयार कर रहा था... और फिर वह आदमी धनुष की डोरी को लगातार पीछे खींचता चला गया...

"...मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" शशिवर्धन ने कांपती हुई आवाज में खुद को चिल्लाते हुए सुना, जो उसके कानों में दूर से आती हुई प्रतीत हुई।

पियूषा ने उसकी ओर मुड़कर देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।

"मुझे बताओ क्यों," शशिवर्धन की आवाज में विनती थी।

राजकुमार ने देखा कि उसका अंगरक्षक मुड़कर धनुष खींचने वाले व्यक्ति की ओर देखने लगा।

"क्या इसीलिए तुम मुझे यहाँ लाए हो? ताकि मत्स्य के सैनिक मेरी हत्या को न देख सकें?"

पियुषा ने धनुर्धारी को सिर हिलाकर सहमति दी।

शशिवर्धन को चक्कर आने लगा जब उसकी निगाहें अंगरक्षक से धनुर्धर और फिर उसकी ओर मंडराते तीर के नोक पर गईं। टकटकी लगाए वह तीर के नोक को एक

और असंभव इंच पीछे हटते हुए देखता रहा।

उसकी निगाहें फिर से तीर के पीछे मौजूद धनुर्धारी के चेहरे पर टिक गईं।

सांवला। दाढ़ी वाला। बाईं भौं के ऊपर एक निशान।

दर्द से चेहरा अचानक विकृत हो गया, होंठ पीछे की ओर खिंच गए और पीड़ा से भीगे हुए टेढ़े-मेढ़े दांत दिखाई दिए। होंठ और दांत अनायास ही खुल गए, और मुंह से खून बहने लगा, जिससे उसकी दाढ़ी भीग गई।

शशिवर्धन आश्चर्य से देखता रहा कि धनुष अचानक धनुर्धर की बेजान उंगलियों से छूट गया और तीर उसके और उसके घोड़े के बहुत करीब से निकल गया। इसी बीच, धनुर्धर अपने घोड़े की गर्दन पर आगे की ओर गिरा, अपना संतुलन खो बैठा और धड़ाम से जमीन पर जा गिरा।

वह बेसुध पड़ा रहा जबकि उसका घोड़ा उसके सिर के पास जमीन पर बेचैनी से पैर पटक रहा था।

"यह क्या है?" पियुषा चिल्लाया और अपनी तलवार निकालते हुए अपने गिरे हुए साथी को घूरने लगा।

सभी पुरुषों ने तुरंत अपनी तलवारें निकाल लीं। वे अभी भी होश में आ रहे थे और हमले के स्रोत का पता लगाने के लिए इधर-उधर देख रहे थे, तभी घोड़े पर सवार एक दूसरे व्यक्ति ने चीख मारी। उसे देखकर शशिवर्धन को उसकी पीड़ा का कारण तुरंत समझ आ गया।

किसी चीज ने सिपाही की गर्दन को भेद दिया था, जो दाहिनी ओर से इतनी ज़ोर से घुसी थी कि वह आर-पार हो गई और दूसरी तरफ निकल गई। वह वस्तु भाले जैसी दिख रही थी, जिसके सिरे से खून टपक रहा था, लेकिन शशिवर्धन जहां अपने घोड़े पर सवार बैठा था, वहां से भाले का कुंद सिरा बर्फ का बना हुआ प्रतीत हो रहा था, जो पिघलकर पानी टपका रहा था...

बर्फ से बना एक भाला।

***

मुझे मेरा बेटा वापस चाहिए।

विक्रमादित्य ने प्रलूपी को भावहीन निगाहों से देखा। फिर, महल के सेवक से अपनी तलवारों की पेटी लेते हुए, सम्राट ने उस व्यक्ति को सिर हिलाकर इशारा

किया कि वह राजकुमारी और खुद को अकेला छोड़ना चाहते हैं। उस व्यक्ति के कक्ष से चले जाने के बाद ही विक्रमादित्य ने अपनी बहन से बात की।

"अमारा सिम्हा उसे ढूंढ रहा है। उसे समय दीजिए।"

"अमारा सिम्हा को सीमावर्ती क्षेत्र में गए एक सप्ताह हो गया है, और हमें उससे एक बार भी कोई खबर नहीं मिली है। उसने हमें कोई खबर क्यों नहीं भेजी? हम उसे और कितना समय दें?"

"बहन, किसी भी चीज़ को खोजने में समय लगता है। और हम यहाँ मरुस्थली की बात कर रहे हैं, एक ऐसी जगह जिसके बारे में हमें लगभग कुछ भी नहीं पता।" राजा थोड़ी देर रुके, और उनका चेहरा नरम पड़ गया। उन्होंने प्रलूपी की ओर एक कदम बढ़ाया। "मैं जानता हूँ कि यह कितना असहाय लगता है, लेकिन अमर सिंह पर भरोसा रखो। वह लड़के को ढूंढ लेंगे।"

"विश्वास।" राजकुमारी ने उस शब्द को ऐसे थूक दिया मानो उसका स्वाद उसके मुँह में कड़वा हो। "जिन पर मैंने विश्वास किया, सबने मुझे निराश किया है, इसलिए विश्वास कोई ऐसी नाव नहीं है जिस पर मैं आसानी से सवार हो जाऊँ। और मैं अमारा सिंह पर घातकपर को खोजने के लिए विश्वास क्यों करूँ? घातकपर उनका भतीजा नहीं है; उन्हें उस लड़के के साथ क्या होगा, इसकी परवाह क्यों होगी?"

अपनी बहन की बातों से भयभीत होकर सम्राट ने विरोध में मुंह खोला, लेकिन प्रलूपी अभी चुप नहीं हुई थी। "हमें यह भी नहीं पता कि वह अब भी लड़के की तलाश कर रहा है या नहीं। हमें क्या पता, अमरा सिंह ने खोज बंद कर दी हो। इसीलिए तुम्हें जाना चाहिए, भाई। यह तुम्हारा मेरे प्रति कर्तव्य है।"

विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा, "अगर घटकर्परा को ढूंढने के लिए अमारा सिंह को महान रेगिस्तान को भी तहस-नहस करना पड़े, तो मैं उस पर पूरा भरोसा करूंगा। उज्जैन छोड़ने से पहले उन्होंने मुझसे वादा किया था, जिसे वे हर हाल में निभाएंगे। अमारा सिंह घटकर्परा को वापस लाएंगे।"

"तुम जाकर उसकी मदद कर सकते हो," प्रलूपी ने हठपूर्वक बुदबुदाते हुए कहा।

"मैं सीमावर्ती क्षेत्र की ओर जा रहा हूँ, लेकिन कुछ और कारणों से, बहन," राजा ने आह भरते हुए अपनी कमर पर तलवार की पेटी कस ली। "हूण आ रहे हैं, और मुझे उन्हें रोकना होगा।"

राजकुमारी ने विक्रमादित्य की ओर एक नज़र डाली। "वरारुचि फिर से आपकी नज़रों में आ गया है, तो वह जा सकता है। उसे हूणों को रोकने के लिए भेजो या फिर घटा को खोजने के लिए भेजो—"

"वरारुचि को उज्जैनी और कटार की रक्षा के लिए यहीं रहना होगा," सम्राट के चेहरे पर धैर्य और सहनशीलता के भाव स्पष्ट थे। उन्होंने तेल लगे और पॉलिश किए हुए नरक की आग को उठाया, जो एक छोटी मेज पर रखी थी। "खटार के लिए जो विनाश हुआ है, उसे देखने के लिए आपको बस खिड़की से बाहर देखना होगा—"

"वह मूर्ख कटार," प्रलूपी ने क्रोध से कहा। "काश अगली बार जब देव या असुर आएं तो वे इसे अपने साथ ले जाएं।"

विक्रमादित्य ने अविश्वास से राजकुमारी की ओर पलकें झपकाईं।

"तुम्हें कटार की परवाह है, तुम्हें सर्वज्ञानी से किए अपने वादे की परवाह है, तुम्हें इस शहर की परवाह है... बस एक ही चीज़ है जिसकी तुम्हें ज़रा भी परवाह नहीं है, वो है मेरा बेटा। लेकिन फिर, तुम क्यों परवाह करोगे..." राजकुमारी ने राजा को गुस्से से घूरा। "तुम आदित्य नहीं हो। तुम्हारे अंदर आदित्य का खून नहीं है, इसलिए ज़ाहिर है, आदित्य के खून का तुम्हारे लिए कोई महत्व नहीं है।"

सम्राट सीधा खड़ा था, उसकी निगाहें अपनी बहन पर टिकी थीं, और उसने नरक की आग पर अपनी पकड़ और कस ली थी। उसकी सुगठित, गठीली भुजाओं में हल्की सी कंपन हुई, और एक पल के लिए तलवारों की धातु गर्मी से चमक उठी।

अगले ही पल, विक्रमादित्य ने चुपचाप नरक की आग को अपनी कमर से लटकती म्यानों में डाल दिया। बिना कुछ बोले, वह कक्ष पार करके, प्रलूपी के पास से गुज़रे और दरवाज़े से बाहर निकल गए।

अपने भाई के जाने को देखकर राजकुमारी निराशा से भर उठी। उसने खाली द्वार की ओर देखा और महसूस किया कि राजा को कार्रवाई के लिए उकसाने का उसका आखिरी प्रयास भी विफल हो गया था। विक्रमादित्य उसकी चाल में नहीं आए थे।

वह कमरे में इधर-उधर भटकती रही, फर्नीचर पर उंगलियां फेरती हुई, जब तक कि वह छत पर नहीं पहुंच गई। वह चबूतरे पर जाकर उस पर झुक गई और झील के उस पार शहर को देखने लगी। उत्तर दिशा से आती हल्की हवा के कारण धुआं थोड़ा छंट गया था, लेकिन हवा अभी भी फेफड़ों में भारी लग रही थी। प्रलूपी की

नजरें स्वाभाविक रूप से झील के किनारे उग रहे गुलमोहर के पेड़ की चोटी पर बैठे एक काले गिद्ध की आकृति पर टिक गईं।

पक्षी को अपने पंख फड़फड़ाते हुए देखकर उसने मन ही मन सोचा, वह असफल हो गई। फिर से असफल।

वरारुचि डरी हुई और कायर होकर विक्रमादित्य के पक्ष में लौट आई थी। भूलभुलैया में अपनी माँ के साथ बड़ी माँ को देखते ही उसे अंदाजा हो गया था कि विक्रमादित्य वापस आ जाएगा, क्योंकि दोनों महिलाएं अचानक एक-दूसरे से अलग नहीं हो पा रही थीं। उसे नहीं पता था कि उसकी माँ को क्या हो गया था, या इतने वर्षों बाद उषांथा महल में क्यों थी, लेकिन वह जानती थी कि अब वह वरारुचि के समर्थन पर भरोसा नहीं कर सकती।

यह एक झटका था, लेकिन प्रलूपी ने खुद को यह सोचकर दिलासा दिया कि उसके पास अभी भी मिथ्यामयी है। वह स्त्री अत्यंत आकर्षक थी, और अपने मामा की मृत्यु के बाद उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। वह महल में होगी, और विक्रमादित्य को रिझाने का एक और अवसर मिलेगा; प्रलूपी को बस इतना करना था कि क्षपणक इसका साक्षी बने— लेकिन नहीं! वह दासी इंद्र द्वारा भेजी गई अप्सरा निकली, और अब वह कैद में थी, और सम्राट सीमा की ओर जा रहे थे...

असफल। फिर से।

प्रलूपी की आँखों में निराशा के आँसू आ गए और क्रोध एवं दुःख से उसकी साँसें अटक गईं। वह इस दुनिया की घोर अन्यायपूर्णता से घृणा करती थी। वह अपने पुत्र को वापस चाहती थी। वह चाहती थी कि उसका पुत्र वत्स का राजा बने। इसमें क्या बुराई थी? भाग्य उसकी इच्छा क्यों नहीं मान रहा था? क्यों?

उसने धुएं से भरे आकाश की ओर देखते हुए मन ही मन चीख मारी, "क्यों? घटाकरपारा को राजा बनाने के लिए क्या करना पड़ेगा?"

उज्जैन के आसमान में तीन पक्षी चक्कर लगा रहे थे, धुएँ के गुबारों के बीच से आते-जाते हुए। उनके पंख चौड़े फैले हुए थे, उनकी उड़ान शांत और राजसी थी। राजकुमारी ने मन ही मन सोचा, और उन्हें याद आया कि गिद्ध भी मृत्यु का संकेत देते हैं।

क्या यह एक अपशगुन था?

प्रलूपी ने अपने होंठ दबा लिए, दिल से उम्मीद कर रही थी कि ऐसा ही हो। अगर शशिवर्धन की अचानक मृत्यु हो जाए तो...

***

अंधेरे की संकरी सुरंग से उसने घुड़सवारों को देखा, अचानक उसके मन में ख्याल आया कि उनमें से उसका भाई कौन है—और इस सोच से उसे ज़ख्मी होना पड़ा कि कहीं उसने उसे हत्यारों से बचाने के बजाय गलती से मार तो नहीं दिया। अपनी आँखों के सामने छा रही परछाइयों को हटाने के लिए उसने पलकें झपकाईं और सिर हिलाया, फिर दोबारा देखा। इस बार, उसने राजकुमार को घुड़सवारों के समूह से कुछ दूरी पर देखा; राजकुमार अचरज से मुँह खोले उसे घूर रहा था।

घटाकरपारा उस मूर्खतापूर्ण अविश्वास भरी नज़र से अच्छी तरह वाकिफ था, एक ऐसा भाव जो उसने बचपन में द्वंद्वयुद्ध के दौरान कई बार देखा था, जब उसने शशिवर्धन के हाथ से तलवार छीन ली थी—समय बीतने के साथ-साथ यह सिलसिला और भी ज़्यादा बार जारी रहा। फिर भी, अपने से कई साल छोटे चचेरे भाई से हारने के बावजूद, शशिवर्धन ने कभी भी घटाकरपारा के प्रति द्वेष नहीं दिखाया, जब भी वह कौशांबी आता, वह उससे स्नेहपूर्वक व्यवहार करता था। घटाकरपारा को वे मुलाक़ातें बड़ी स्नेह से याद थीं, बागों से रसीले कच्चे आम चुराना और यमुना में स्नान करना, जहाँ शशिवर्धन ने उसे पहली बार धारा के विपरीत तैरना सिखाया था। उन बढ़ते वर्षों में, वत्सा का युवराज घटाकरपारा के लिए एक दयालु बड़े भाई के समान था।

लेकिन मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?

कई ग्रीष्मकाल पहले की वही कोमल, मधुर आवाज़ घटाकरपारा तक पहुँची थी, जब वह वृक्षों की कतारों में लड़खड़ाते हुए एक भयानक सपने से बचने की कोशिश कर रहा था, जिसमें वह रेत के टीलों पर परछाइयों से भाग रहा था, लेकिन हर मिनट रेत में और गहरा धंसता जा रहा था। उसने ठंड से होने वाले भ्रम से जूझते हुए पेड़ों के बीच से पलकें झपकाईं, यह समझने की कोशिश कर रहा था कि क्या वह आवाज़ उसके बुरे सपने का हिस्सा थी, तभी उसकी नज़र घुड़सवारों के एक समूह पर पड़ी, जिनमें से एक ने अपना धनुष खींचा हुआ था, तीर दूसरे घुड़सवार की ओर तना हुआ था जो कह रहा था...

मुझे कारण बताओ।

शशिवर्धन और उसकी ओर इशारा करते हुए तीर को घूरते हुए, घटाकरपारा को यह समझने में कुछ क्षण लगे कि यह सब सचमुच हो रहा है।

पहाड़ों और घाटियों की लंबी यात्रा से उसके शरीर के हर जोड़ में दर्द हो रहा था, उसका दिमाग उसके साथ चालें चल रहा था और उसकी आंखों से अंधेरा छट रहा था, ठंड ने उसकी संवेदनाएं छीन ली थीं, फिर भी घटाकरपारा ने खुद को आगे बढ़ाया, उसकी उंगलियां पहले से ही वातावरण से पानी और बर्फ खींच रही थीं, और उन्हें एक साथ मिलाकर एक कच्चा बर्फ का गोला बना रही थीं...

क्या इसीलिए तुम मुझे यहाँ लाए हो? ताकि मत्स्य के सैनिक मेरी हत्या को न देख सकें?

धनुर्धारी धनुष को पूरी तरह खींच रहा था। अगर उसने जल्दी कुछ नहीं किया तो वह जान नहीं बचा पाएगा... घटाकरपारा ने तेज़ी से बर्फ का तीर बनाया और अपनी सुन्न उंगलियों के बीच उसकी नोक को तेज़ किया। हाथ उठाकर उसने तीर को धनुर्धारी के सिर के पिछले हिस्से में जा लगा दिया। वह गिर पड़ा।

एक और घुड़सवार को मार गिराने के लिए उतनी ही कुशलता से दूसरा भाला बनाने के बाद, घटाकरपारा के हाथ में तीसरा भाला था और वह अपना अगला लक्ष्य चुन ही रहा था कि चारों ओर से परछाइयाँ तेजी से आने लगीं, और उसके पैरों के नीचे की धरती हिल गई और वह लड़खड़ा गया।

शशिवर्धन के भावी हत्यारों ने अपने घोड़ों को एड़ी मारी और घटाकरपारा की ओर धावा बोल दिया।

"सावधान रहो, भाई!"

अपने चचेरे भाई की चेतावनी पर ध्यान देते हुए, घटाकरपारा ने अपना सिर उठाया और उसकी आँखों से पर्दा हट गया। ज़मीन भी स्थिर हो गई, लेकिन घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनकर और ऊपर देखते हुए, राजकुमार को अलग-अलग घुड़सवारों को देखने के बजाय, एक धुंधली सी आकृति पास आती हुई दिखाई दी। पैरों के नीचे की बर्फ़ भी एक बार फिर रेत में बदल गई, और घटाकरपारा अब निश्चित नहीं था कि वह अपने बुरे सपने में वापस आ गया है या नहीं।

"भाई..."

शशिवर्धन की बेबस चीख ने भ्रम को तोड़ते हुए घटाकरपारा को होश में ला दिया। उसने देखा कि घुड़सवार दस कदम की दूरी पर थे और तेज़ी से उसके करीब आ रहे थे। सामने खड़े व्यक्ति पर निशाना साधते हुए उसने बर्फ का तीर चलाया।

मिसाइल तेजी से गुजरी और आदमी के गले के निचले हिस्से में जा धंस गई।

जैसे ही घटाकरपारा ने दोनों हाथों का उपयोग करते हुए एक साथ दो बाण बनाए, शशिवर्धन ने अपनी तलवार निकाली और घुड़सवारों का पीछा किया, वह अपनी काठी में असहज था, लेकिन अपने इरादे में आश्वस्त था, अपने चचेरे भाई से उनका ध्यान हटाने के लिए वह अपनी पूरी आवाज में चिल्ला रहा था।

सातों घुड़सवार घटकरपारा की ओर तेजी से बढ़ रहे थे...

राजकुमार ने एक बाण चलाया, लेकिन जल्दबाजी में उसका निशाना चूक गया और बाण लक्ष्य से चूक गया। वह दूसरा बाण चलाने ही वाला था कि अंधेरा फिर से छा गया और वह घुटनों के बल गिर पड़ा। बाण घटाकरपारा की उंगलियों से फिसलकर नीचे गिर गया।

शशिवर्धन की चुनौती का सामना करने के लिए दो घुड़सवार मुड़ गए थे, लेकिन बाकी पांच लगभग घातक्परा के पास पहुँच चुके थे, जो घुटनों के बल लड़खड़ा रहा था। आगे के दो घुड़सवार राजकुमार को मार गिराने ही वाले थे कि तभी दो लंबे भाले उनकी ओर आए और उनकी छाती में जा लगे, जिससे वे अपने घोड़ों से गिर पड़े और सीधे पीछे से आ रहे अपने साथियों के रास्ते में जा गिरे।

दृष्टि स्पष्ट होते देख, घटाकरपारा आश्चर्य से पलकें झपकाते हुए घोड़ों को उलझते, लड़खड़ाते और सबको गिराते हुए देख रहा था। बिना सवार के घोड़े उसके पास से तेज़ी से गुज़रे, उनके खुरों की गड़गड़ाहट उसके कानों में गूंज रही थी, और धरती उसके घुटनों के नीचे कांप रही थी। तभी, खुरों के शोर के बीच, उसने अपने पीछे से एक चीख सुनी।

"अवंती के लिए..."

पीछे मुड़कर देखने पर उसने पर्वत की एक दरार से घुड़सवारों का एक दल सरपट दौड़ता हुआ देखा। सबसे आगे दो चेहरे थे जिन्हें वह पहचानता था।

अमर सिंह और अंगामित्र।

घटाकरपारा के कंधे राहत और थकावट से झुक गए। अंधेरा फिर से छा गया, और इस बार उसने उसके आगे घुटने टेक दिए, और आगे की ओर गिर पड़ा,

उसका चेहरा पतली बर्फ में धंस गया।

अमर सिंह अपने घोड़े से कूदकर घटाकरपारा के पास उतरे। तीन ही कदमों में उन्होंने सम्राट के भतीजे और हमलावरों के बीच खुद को खड़ा कर लिया, जो अभी भी उनके अंगों के जंजाल से निकलने की कोशिश कर रहे थे। अंगामित्र और उनके सैनिक फैल गए और शशिवर्धन से लड़ रहे दोनों व्यक्तियों को निहत्था कर दिया, सभी को घेर लिया और भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए। दो संसप्तक घटाकरपारा की सहायता के लिए दौड़े आए।

"क्या वह ठीक है?" अमारा सिम्हा ने उसके कंधे के ऊपर से संक्षिप्त रूप से पूछा।

"महामहिम, वह सांस ले रहे हैं, लेकिन उनकी नब्ज़..." संसप्तक में से एक ने कंधे उचकाते हुए कहा। "मैं बस इतना ही बता सकता हूँ।"

अंगामित्रा और दुभाषिया जल्दी से घातकपारा को उठाने और उसे ले जाने में मदद करने के लिए आगे बढ़े।

अमरा सिम्हा ने पहरेदारों को घूरा, जो उसकी भयंकर लाल दाढ़ी और घने बालों को पहचानकर विस्मय से उसे घूर रहे थे। "मैं देख रहा हूँ कि तुम सब मिलकर मेरे खिलाफ साजिश रच रहे हो... तो आओ," उसने अपनी मजबूत भुजाओं से अपनी चौड़ी कुल्हाड़ी उठाई। "मुझसे लड़ो। आओ।"

वे लोग आंखें फाड़कर घूरते रहे, एक भी मांसपेशी हिलाने से इनकार कर दिया।

अमरा सिम्हा की निगाहें एक चेहरे से दूसरे चेहरे पर घूम रही थीं। "तुम्हारा साहस, तुम्हारा लड़ने का जज़्बा कहाँ है?" उसने उकसाते हुए कहा। "मुझे दिखाओ कि तुम्हारी रगों में खून दौड़ रहा है, दूध नहीं। मैं वादा करता हूँ कि मेरे आदमी दखल नहीं देंगे। बस तुम और मैं होंगे। चलो..."

शशिवर्धन के रक्षकों ने एक-एक करके अपनी तलवारें नीचे रख दीं।

उनमें से एक ने दबी आवाज में कहा, "हम आपके समक्ष आत्मसमर्पण करते हैं, महाराज।"

अमरा सिम्हा ने अपना सिर हिलाया, हालांकि उनके चेहरे के भाव से यह स्पष्ट नहीं था कि यह घृणा थी या केवल निराशा। "तुम कौन हो और तुम्हारा नेता कौन है?"

"वे मेरे रक्षक थे, आदरणीय पार्षद," शशिवर्धन ने कहा। "वे मेरी जान लेने की कोशिश कर रहे थे, तभी घटाकरपारा ने बीच में आकर मुझे बचा लिया। वह,"

उन्होंने इशारा करते हुए कहा, “मेरे दल का मुखिया है। उसका नाम पियूषा है।”

मुख्य अंगरक्षक जमीन पर पड़ा था, उसके पेट में, सीने की हड्डी के ठीक नीचे, एक भाला धंसा हुआ था। उसकी सांसें अनियमित थीं और उसके चेहरे का रंग तेजी से उड़ रहा था।

“राजकुमार, वे आपको क्यों मारना चाहते थे?”

"मुझें नहीं पता।"

अमरा सिम्हा ने आत्मसमर्पण करने वाले लोगों को आशा भरी निगाहों से देखा। उनमें से एक ने तुरंत कहा, "कप्तान ने हमें दस-दस सोने के सिक्के दिए और पदोन्नति का वादा किया।"

"लेकिन क्यों?"

“हमें नहीं पता। उन्होंने कहा कि सवाल न पूछें।”

पियुषा के बगल में बैठे पार्षद ने भाले के डंडे को पकड़ लिया। "क्या इससे दर्द होता है?"

पियूषा ने आह भरी और दर्द से कराह उठी।

"अगर मैं भाले को इधर-उधर घुमाऊंगा तो और भी ज्यादा दर्द होगा, आप जानते हैं ना।"

अंगरक्षक ने सिर हिलाकर यह दर्शाया कि वह समझ गया है।

हम इसे आसान तरीके से भी कर सकते हैं या मुश्किल तरीके से भी। चुनाव आपका है।

पियुषा ने दूसरी बार सिर हिलाया।

“अच्छा। तुम राजकुमार शशिवर्धन को क्यों मारना चाहते थे?”

पियूषा ने अपना सिर हिलाया।

अमारा सिम्हा और करीब झुक गई। "क्या?"

"मैं नहीं," अंगरक्षक ने दांत भींचते हुए कहा।

“मैं समझ गया। तो फिर उसे कौन मरवाना चाहता था? किसने तुम्हें ये गंदा काम करने के लिए पैसे दिए?”

पियूषा कुछ पल चुप रही। फिर, जैसे ही अमर सिंह ने भाले पर अपनी पकड़ मजबूत की, उस व्यक्ति ने जल्दी से सिर हिलाकर सहयोग करने की अपनी इच्छा का संकेत दिया।

“यह... उम्मफ,” वह कराहते हुए बोला, “...यह पार्षद यशोभावी थीं।”

***

गहरे नीले और लाल रंग के विभिन्न शेड्स में ताज़ा रंगे हुए महीन बुने हुए लिनेन के टुकड़े ऊँचे बाँस के खंभों से लटक रहे थे, जो दोपहर की हवा में लहरा रहे थे। मजदूर खुली आग पर उबलते बड़े-बड़े बर्तनों में मंजिष्ठा और नील के मिश्रण कर रहे थे। वे आपस में आदेश दे रहे थे या अश्लील चुटकुले सुना रहे थे, और उन दो बूढ़े आदमियों पर मुश्किल से ही ध्यान दे रहे थे जो रंगाई स्थल के एक कोने में, चारों ओर लटके हुए कपड़ों के टुकड़ों के पीछे, धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

"मैंने भी इस गवाह के बारे में अफवाहें सुनी हैं," सन के रंग और बनावट वाली बिखरी हुई मूंछें रखे हुए व्यक्ति ने बेचैनी से इधर-उधर देखते हुए धीमी आवाज़ में कहा।

"वह अफवाह नहीं है," अस्माबिंदु ने दूसरे आदमी की ओर झुकते हुए जोर देकर कहा।

छोटे कद के व्यक्ति ने मगध के कानूनी सलाहकार की ओर देखा। अपने विशाल पेट को खुजाते हुए उसने पूछा, "आपको यह कैसे पता चला?"

अस्माबिंदु ने हल्के से कंधे उचकाए, लेकिन नजरें नहीं हटाईं।

दोनों व्यक्तियों ने एक-दूसरे का आकलन किया। "लगता है वह कोसला में छिपा हुआ है," दूसरे व्यक्ति ने कहा, उसकी आँखें असमबिंदु के चेहरे पर ऐसे संकेत ढूँढ़ रही थीं जिनसे उसे बातचीत को आगे बढ़ाने में मदद मिल सके।

कानूनी सलाहकार ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, वह पार्षद अश्रवा को उस बात को समझने की कोशिश करते हुए देखता रहा जो उसे अभी-अभी बताई गई थी। अश्रवा मगध के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक था, और क्षेत्र के लाभदायक कपड़ा रंगाई व्यवसाय में उसका लगभग एकाधिकार था; और अपनी इस संचित संपत्ति के बल पर, वह गिरिव्रज के सबसे शक्तिशाली पार्षदों में से एक था। वह परिषद में राय को प्रभावित कर सकता था। और सबसे अच्छी बात यह थी कि राजा सिद्धसेना से निकटता के कारण उसे व्यावसायिक रूप से लाभ हुआ था—अस्माबिंदु को उम्मीद थी कि बूढ़े राजा के प्रति कुछ कृतज्ञता अभी भी बची होगी जिसका लाभ उठाया जा सकता है।

“लेकिन क्या यह सच है?” अश्रवा ने असंतुष्ट होकर कहा। “क्या इस संगीतकार ने सचमुच वही देखा जो वह कह रहा है, या यह शूरसेना को बदनाम करने और पार्षद पल्लवन को जासूस के रूप में बेनकाब करने का बदला लेने के लिए कोसला की एक सोची-समझी चाल है? हम इस गवाह पर कैसे विश्वास करें, खासकर तब जब उसके दावों को कोसला का समर्थन प्राप्त प्रतीत होता है?”

असमबिंदु ने गहरी सांस ली और अपना सिर हिलाया। उसे इसका पहले से ही अंदाजा था।

"मेरा मानना है कि इसी संगीतकार की वजह से पल्लवन और हमारे पूर्व सहकर्मी उत्तमा, दिगंता और भास्कर की मौत हुई है।"

जैसे ही अश्रवा ने चतुराई से अपनी आँखें सिकोड़ीं, अस्माबिंदु ने सिर हिलाया।

“उत्तम, दिगंता और भास्कर को पल्लवन के साथ गिरफ्तार किए जाने से कुछ दिन पहले, उत्तम ने मुझसे संपर्क किया और कहा कि कोई महत्वपूर्ण बात सामने आई है जिस पर उन्हें चर्चा करनी है। उन्होंने यह नहीं बताया कि मामला क्या था; उन्होंने बस इतना कहा कि मैं पहाड़ियों में स्थित उनके महल में आऊं, जहां हम खुलकर बात कर सकते हैं। लेकिन उन्होंने यह जरूर बताया कि यह सिद्धसेना की मृत्यु से संबंधित है।”

"क्या उसने आपको उसी शाम आने के लिए कहा था जिस शाम उसे और अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया था?"

अस्माबिंदु ने सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि उसने हम सभी से पूछा होगा।"

“लेकिन आपको यह नहीं पता था कि भास्कर और दिगंता को भी बुलाया गया है? या यह कि पल्लवन भी वहाँ होगा?”

“नहीं,” झूठ बड़ी आसानी से मुंह से निकल गया। “मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है।”

तो फिर आप ऐसा क्यों—”

“मैं नहीं जा सका क्योंकि उस दिन मेरी पत्नी बहुत बीमार थी,” अस्माबिंदु ने नाटकीय अंदाज में कांपते हुए कहा।

आश्रवा एक पल के लिए सोच में डूब गया। उसने कहा, "पल्लवन और अन्य लोगों को किकाटाओं की सहायता करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।"

“ये सब मनगढ़ंत आरोप हैं,” अस्माबिंदु ने उत्तर दिया। “इनमें से किसी का भी किकाटाओं से कोई लेना-देना नहीं है। मेरा मतलब है, किकाटाओं से मेरा कोई

संबंध नहीं है। तो फिर उत्तमा ने मुझे क्यों आमंत्रित किया होगा अगर वे किकाटाओं की मदद के लिए बैठक कर रहे थे?"

दूसरे व्यक्ति के चेहरे पर संदेह का भाव देखकर असमबिंदु ने आगे कहा, "इसे तार्किक रूप से देखो। जिस सुबह सिद्धसेना की मृत्यु हुई, उस सुबह महल में एक संगीतकार मौजूद था; उसने पिछली रात राजा के लिए प्रस्तुति दी थी। उसी सुबह पल्लवन गिरिव्रजा में था... याद है, हम सब दरबार में थे जब शूरसेना ने पल्लवन की इस बात को अनसुना कर दिया कि हम सिंधुवर्त की रक्षा के लिए और सैनिक भेजें? दोनों बातों को जोड़कर देखो। राजा की मृत्यु के समय एक संगीतकार महल में था। पल्लवन भी यहाँ था, कोसल से आया हुआ। बाद में, पल्लवन सिद्धसेना की मृत्यु से संबंधित जानकारी लेकर उत्तम के पास आया। उत्तम, भास्कर और दिगंत को गिरफ्तार कर लिया गया, उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और सार्वजनिक रूप से उन्हें फाँसी दे दी गई। पल्लवन, जो गिरफ्तार था, उसे फाँसी नहीं दी गई; इसके बजाय, कोसल की सीमा पर कहीं उसकी हत्या कर दी गई, कथित तौर पर भागने की कोशिश करते हुए—हालाँकि इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि वह गिरिव्रजा से इतनी दूर कैसे पहुँचा। अब, संगीतकार के कोसाला में छिपे होने की अफवाहें सामने आई हैं... सोचिए... इन सबका क्या मतलब हो सकता है?

अश्रवा को इस बारे में सोचते देख, अस्माबिंदु मन ही मन मुस्कुराया। वे अपने वचन से मुकर गए थे; उन्होंने अपना वादा तोड़ दिया था और उसकी जगह वांगा के किसी मूर्ख को राज्यपाल नियुक्त कर दिया था। तब से वह अंदर ही अंदर परेशान था, क्रोधित था लेकिन लाचार था, लेकिन पिछली रात किकाटा जनजाति के दो लोगों के आने के बाद, अब उसके पास पलटवार करने का एक तरीका था।

"क्या शूरासेना ने राजा बनने के लिए ही ऐसा किया था?"

अस्माबिंदु ने कंधे उचकाते हुए कहा, "वंगा पर आक्रमण करने के मामले में उसकी योजना तो बिल्कुल भी सफल नहीं होने वाली थी। याद है ना, सिद्धसेना तो इस विचार के घोर विरोधी थे? कपिल और दैपायन ही ऐसे थे जो वंगा पर आक्रमण करने के लिए उत्सुक थे।"

"क्या आपको लगता है कि वे सिद्धसेना की हत्या में भी शामिल हैं?"

कानूनी सलाहकार ने फिर से कंधे उचका दिए।

"उत्तम द्वारा आपको दिए गए निमंत्रण के बारे में आपने किसी को क्यों नहीं बताया?"

"मैं क्या कह सकता था? कि मुझे एक ऐसी बैठक में बुलाया गया था जहाँ मौजूद सभी लोगों पर राजशाही के खिलाफ साजिश रचने का आरोप था? आपको लगता है कि मैं भी उन्हीं की तरह अंजाम भुगतना चाहता था?" अस्माबिंदु ने सिर हिलाया। "मुझे समझ नहीं आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा है, और... संगीतकार का ज़िक्र तो अब आया है। और अब भी, मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि मुझे आप पर भरोसा है।"

आपको क्या लगता है कि उत्तमा और बाकी लोगों को किसने पकड़वाया?

कानूनी सलाहकार ने पलकें झपकाईं। उन्हें यह ख्याल ही नहीं आया था कि यह सवाल भी उठ सकता है। "मुझे नहीं पता।"

"इसका मतलब है कि कोई न कोई तो पल्लवन और उत्तमा की चालों को जानता है, कोई ऐसा है जिसने शूरसेना के हाथों उनकी पोल खोली।" अश्रवा चुप हो गया। ठंडी हवा में लिनेन लहरा रहा था। "अब ये सब मुझे क्यों बता रहे हो?"

"सिद्धसेना हमारे लिए एक न्यायप्रिय और दयालु राजा थे। वे न्याय के पात्र हैं, और यह हमारा उनके प्रति कर्तव्य है।"

आश्रवा ने अपनी मूंछों के बिखरे हुए सिरों पर हाथ फेरा। "एक घुमंतू संगीतकार का दावा है कि उसने एक बेटे को अपने पिता की हत्या करते और हत्या का इल्जाम पिता के अंगरक्षक पर लगाते देखा। वह बेटा, जो अब राजा है, इस आरोप का खंडन करता है और इसे अपने राज्य के शत्रुओं द्वारा उसे बदनाम करने की साजिश बताता है। एक साधारण संगीतकार की बात एक शक्तिशाली और लोकप्रिय राजा की बात के सामने। मेरे मित्र, मगध के लोग किसकी बात मानेंगे?"

"मैं मानता हूँ कि मात्र आरोपों को साबित करना असंभव होगा, लेकिन..." अस्माबिंदु ने षड्यंत्रकारी लहजे में अश्रवा की ओर झुकते हुए कहा, "...मेरे पास शूरसेना को फंसाने और उससे अपना अपराध स्वीकार करवाने की एक योजना है।"

छोटे कद वाले पार्षद की भौहें माथे पर चढ़ गईं। "तो चलिए सुनते हैं।"

***

हवा अनेक पंखों पर सवार होकर आने वाली मृत्यु की कहानी कहती है।

अपने कंधे के ऊपर से देखते हुए, वरारुची ने पाया कि भविष्यवक्ता ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और धीरे-धीरे आगे-पीछे झूलने लगी थी, ठीक उसी तरह बैठी हुई थी जैसे उसने उसे कुछ मिनट पहले पाया था, जब वह उसके दरवाजे पर आया था।

"तुम राजा के भाई हो," उसने अपनी आँखें खोलते हुए और जिस चटाई पर वह बैठी थी, वहाँ से थकी हुई निगाहों से उसे देखते हुए कहा था।

“जी हां, मां,” वरारुची ने जवाब दिया, यह सोचते हुए कि जब उसकी आंखें बंद थीं तो उसे कैसे पता चल गया कि वह यहां है। वह चुपचाप कमरे में दाखिल हुआ। “तुम मुझसे मिलना चाहती थी?”

“राजा ने मुझसे कहा था कि जब वह यहाँ न हों तो अगर कोई बात हो तो मैं आपसे पूछ लूँ।”

पार्षद ने सिर हिलाया।

"मुझे लगता है कि राजा सीमावर्ती क्षेत्र के लिए रवाना हो गए हैं?"

“हां, मां,” वरारुची ने अपना सिर झुकाया और धैर्यपूर्वक उनके सामने खड़े रहे।

भविष्यवक्ता कुछ देर तक चुप रही, अपना मन बना रही थी।

अंत में उसने कहा, "हवा कई पंखों पर सवार होकर आने वाली मौत की बात कह रही है।"

"कई पंखों वाली मौत," वरारुची ने दोहराया, हालांकि उन्हें यह शब्द बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।

बुजुर्ग महिला ने सिर हिलाया।

"और?"

“और?” मदर ओरेकल ने हैरानी से देखा।

"मेरा मतलब है, हवा ने आपको और क्या बताया?"

"बहुत सी बातें। यह मुझे लगातार कुछ न कुछ बताता रहता है, जिनमें से अधिकतर जानने लायक नहीं होतीं।"

“इस आसन्न मृत्यु के बारे में और कुछ नहीं? यह कहाँ से आ रही है, कौन है—”

“नहीं। बस इतना ही था।”

"माँ, हम आपके आभारी हैं," पार्षद ने झुककर अभिवादन किया और जाते हुए कहा।

भविष्यवक्ता के कमरे से निकलते हुए, वरारुचि उस स्त्री की भविष्यवाणी पर मन ही मन विचार कर रहा था कि उसे आगे क्या करना चाहिए। अनेक पंखों पर सवार मृत्यु का अर्थ आकाश से होने वाला आक्रमण ही हो सकता था, जिसका मुकाबला करना कहीं अधिक कठिन था। इसके लिए बड़ी संख्या में धनुर्धारियों और संभवतः वराहमिहिर के भारी तोपों की आवश्यकता होगी। लेकिन क्या इसका अर्थ पक्षी थे या पंखों वाला कोई बिल्कुल अलग प्राणी? भविष्यवक्ता ने कहा था, अनेक पंख। लेकिन कितने, और यह आक्रमण कब हो सकता है—और यह कितना भयानक हो सकता है?

भविष्यवाणी करने वाले ने आने वाली घटना का वर्णन करने के लिए 'मृत्यु' शब्द का प्रयोग किया था। यह निश्चित रूप से बुरी घटना होगी।

वररुची दौड़ते हुए आगे बढ़ने लगा। उसे परिषद के अन्य सदस्यों के साथ मौसम का पूर्वानुमान साझा करना था। शहर की सुरक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता थी। एक घंटे से भी कम समय में रात होने वाली थी, और अगर ऊपर से कुछ आ रहा था, तो रोशनी के लिए आग जलानी पड़ेगी। वराहमिहिरा को कटार की रक्षा का पूरा जिम्मा संभालना होगा...

जालीदार बरामदे पर तेज़ी से चलते हुए, मन ही मन आकस्मिक स्थितियों के लिए योजनाएँ बनाते हुए, पार्षद की नज़र महल की छतों पर पड़ी और उनकी आँखें चौड़ी हो गईं। अपनी चाल रोककर, वे जाली के पास पहुँचे और उज्जैन के ऊपर आसमान को उसकी दरारों से झाँका, फिर एक चबूतरे पर चढ़ गए जहाँ से शहर का अबाधित दृश्य दिखाई देता था... और ऊपर मंडराते गिद्ध भी नज़र आ रहे थे।

सैकड़ों की संख्या में वे पक्षी चौड़े, शांत चापों में उड़ते हुए उज्जैन की सड़कों के किनारे लगे पेड़ों और उसके कई खूबसूरत पार्कों में बसने के लिए धीरे-धीरे नीचे उतरते थे।

वररुची जहां खड़ा था वहीं एक पूरा चक्कर लगाकर पूरे आकाश का नजारा निहारने लगा। उसे एहसास हुआ कि वह गलत था।

सैकड़ों नहीं, बल्कि हजारों-हजारों गिद्ध हर दिशा में मंडरा रहे थे।

वररुचि बेचैनी से सोचने लगा कि उसने पहले कभी पक्षियों का ऐसा जमावड़ा नहीं देखा था, क्योंकि मातृ भविष्यवक्ता की चेतावनी उसे फिर से याद आ रही थी।

हवा अनेक पंखों पर सवार होकर आने वाली मृत्यु की कहानी कहती है।

क्या यह वही मृत्यु थी जिसका संकेत भविष्यवक्ता ने दिया था, या क्या गिद्ध आने वाली मृत्यु की प्रत्याशा में आ रहे थे? दक्षिणी राज्यों के लोग मानते थे कि गिद्ध मृत्यु के निकट होने का संकेत दे सकते हैं...

यह सोचकर पार्षद कांप उठा और मुड़कर वापस अंदर चला गया। उसे परिषद को तुरंत बुलाना था ताकि वे निर्णय ले सकें कि क्या करना है—

"अरे वाह... संभलकर।"

वररुची ने दरवाजे की ओर तेजी से आ रहे गार्ड से टकराने से बचने के लिए अचानक गाड़ी रोक दी।

"माफ़ कीजिए, पार्षद जी," गार्ड ने झुककर कहा और जल्दी से पीछे हट गया। गहरी सांस लेते हुए उसने कहा, "मैं आपको ही ढूंढ रहा था। पार्षद धनवंतरी ने मुझे भेजा है।"

"क्या हुआ?" वरारुची का जबड़ा तन गया और उसका हाथ अनायास ही उसकी तलवार की ओर चला गया।

"महामहिम, यह महारानी विशाखा हैं। वह जाग गई हैं।"

वररुची घूरता रहा।

"वैद्यनाथ ने मुझे आपको सूचित करने के लिए कहा है, महाराज," गार्ड ने कहा।

सिर हिलाकर वरारुचि पहरेदारों को पीछे धकेलते हुए यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे थे कि विक्रमादित्य कितनी दूर तक घोड़े पर सवार होकर आए होंगे और उन्हें खबर पहुंचाने का सबसे तेज़ तरीका क्या होगा। घुड़सवारों को भेजा जा सकता था, या पर्याप्त सूर्यप्रकाश रहते हुए सूर्ययंत्रों के माध्यम से संदेश पहुंचाया जा सकता था... वरारुचि एक गलियारे को पार करते हुए अपने विकल्पों का मूल्यांकन कर रहे थे। सम्राट विशाखा के साथ रहना चाहेंगे, इसलिए उन्हें रेगिस्तान के बर्बरों के खिलाफ सिंधुवर्त की रक्षा का नेतृत्व करना होगा। यदि वे सूर्यास्त से पहले उज्जैन छोड़ दें और रात भर घोड़े पर सवार होकर यात्रा करें, तो वे विक्रमादित्य के दल से मिल सकते हैं, ताकि सीमा तक पहुंचने में समय की बर्बादी न हो... लेकिन विक्रमादित्य तक खबर पहुंचाने में अप्रत्याशित देरी हो सकती थी, इसलिए इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि राजा वापस लौटेंगे।

साथ ही, भविष्यवक्ता की चेतावनी पर भी विचार करना आवश्यक था।

सलाहकार दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ते हुए रानी के कक्ष की ओर जाने वाले मार्ग में मुड़ गया। वह उज्जायिनी को आने वाले खतरे के भरोसे नहीं छोड़ सकता था, इस उम्मीद में कि विक्रमादित्य समय पर लौट आएंगे... उसे अपने भाई के लौटने का इंतज़ार करना ही होगा, भले ही इसका मतलब कालिदास के नेतृत्व में बर्बर आक्रमण की स्थिति में सिंधुवर्त की संयुक्त सेना को नेतृत्वहीन छोड़ना हो...

विशाखा के शयनकक्ष का दरवाजा खुला था, जिससे गलियारे में आवाज़ें आ रही थीं। दरवाजे के पास पहुँचकर, वरारुचि अंदर झाँकने ही वाले थे कि तभी उनकी मुलाकात बाहर निकलते हुए धनवंतरी से हो गई। दोनों की नज़रें मिलीं और वरारुचि ने सवालिया अंदाज़ में अपनी भौहें उठा लीं।

“वह कैसी है?” वरारुची ने पूछा।

"वह जाग गई है," शाही चिकित्सक के जवाब में कोई भाव नहीं था।

वररुचि ने चिकित्सक के भारी-भरकम शरीर के पीछे से झाँकने के लिए अपनी गर्दन ऊपर उठाई। महल की चार दासियों, कुंजला और तीन कनिष्ठ वैद्यों के अलावा, वहाँ क्षपणक विशाखा के बगल में बैठी अपनी बहन का हाथ पकड़े हुए थी। विशाखा नरम गद्दियों के सहारे बैठी थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वररुचि ने देखा कि रानी की आँखें जीवंत थीं, लेकिन उनमें विरोधाभास था, अविश्वास और भ्रम से भरी हुई थीं, उसकी निगाहें कमरे में इधर-उधर घूम रही थीं मानो वह किसी राहत की तलाश में हो।

वररुचि ने धनवंतरी की ओर देखा। "ठीक नहीं हो?" उसने चिंता से सिर हिलाते हुए पूछा।

चिकित्सक ने कंधे उचकाए और बहनों की ओर मुड़कर देखा।

धनवंतरी ने कहा, "वह किसी को पहचान नहीं पा रही है। उसे यह भी नहीं पता कि वह कहां है।"

“ओह...” वरारुचि ने गंभीर स्वर में कहा, यह सोचते हुए कि विक्रमादित्य को क्या संदेश भेजा जाए। वह किसी को पहचान नहीं पा रही है।

लेकिन वह विक्रमा का नाम लेकर पूछ रही है।

वररुची ने चिकित्सक को घूरकर देखा, फिर हैरानी से रानी की ओर मुड़ा। "आपने अभी कहा कि वह किसी को नहीं पहचानती," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

"खैर, विक्रम को छोड़कर।" धनवंतरी ने गहरी सांस ली। "उसे वह साफ-साफ याद है।"

Janasthana

वह अंधकार जो काला होने के बजाय उदासी से भरा था, एक रंग होने के बजाय एक मनोदशा थी; एक निराशाजनक धुंध जो बिखरे धब्बों और भद्दे ब्रशस्ट्रोक में प्रकट होती थी, मानो कैनवास पर अनाड़ी, कलाहीन हाथों से बनाई गई हो।

और अंधकार की परतों के बीच फंसा हुआ था
कोहरा।

कुछ स्थानों पर सफेद और सघन रूप से सघन, चारों ओर फैले अंधेरे में खड़े हैं। अन्य स्थानों पर बिखरे हुए और विरल, अंधेरे में समाए हुए और उसके आक्रामक दबाव का विरोध करने में असमर्थ।

अंधेरे और कोहरे के चिथड़े, एक ऐसी हवा के साथ बहते हुए जिसे वह महसूस नहीं कर सकता था।

और कोहरे और अंधेरे के बीच से एक आवाज, हवा के साथ उड़ती हुई और दूर चली गई।

...समाप्त... यह आखिरी है... चला गया...

आवाज जानी-पहचानी थी। उसने इसे हाल ही में सुना था।

...इस तरह यह गुजरता है... हमारा घर... एक स्मृति में...

वेतन।

उस बूढ़े की आवाज़ में एक तनाव था जो राजा के मन में घर कर गया। विक्रमादित्य को एहसास हुआ कि वह भूत-प्रेत उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहा था।

...अब मेरी बात नहीं सुन पा रहे... अंत है... लेकिन हम बेबस हैं... पेड़ मर रहा है...

घोड़े की हिनहिनाहट। लगाम की खनक। लोगों की बातें। सम्राट ने बेताल की बात सुनने के लिए सभी आवाज़ों को अनसुना करने की कोशिश की।

...आपको बता दूं, भले राजा... हमारे लिए बहुत देर हो चुकी है...

अंधकार के पर्दे छंट गए, कोहरा छंट गया और विक्रमादित्य ने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि जिस खुरदुरे लकड़ी के पलंग पर वह लेटा था, उसके ठीक बगल वाली

खिड़की से एक साफ सुबह की रोशनी आ रही थी।

घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ और आदमियों के हंसने की आवाज़। घोड़ों के गोबर और घास की गंध।

राजा को स्थिति समझने में कुछ क्षण लगे। उन्हें याद आया कि वे घोड़े के अस्तबल में थे।

समय बचाने के लिए, उन्होंने और उनके दल ने उदयपुरी जाने के लिए सबसे छोटा रास्ता चुना, जिसका अर्थ था सीधे रास्ते के उत्तर और दक्षिण में स्थित लावा और बिद्धिरा की चौकियों को छोड़ना। अपने रास्ते में पड़ने वाले इस पुराने घोड़े के स्टेशन पर पहुँचकर, जो मुख्य रूप से व्यापारिक काफिलों के लिए था, उन्होंने एक रात आराम करने का निर्णय लिया।

एक कोहनी के बल उठकर, सम्राट ने अपने घायल कंधे को धीरे से हिलाया, दर्द की एक लहर का इंतज़ार करते हुए। कुछ नहीं हुआ। हिम्मत जुटाकर, उन्होंने अपनी बांह को इधर-उधर हिलाया, प्रयोग करते हुए, और हालांकि कुछ कोणों पर हल्का दर्द हुआ, कल का दर्द गायब हो गया था। राजा ने सोचा, धनवंतरी वाकई एक कुशल चिकित्सक साबित हो रहे हैं, और अपने पैर पलंग से नीचे लटका दिए। उन्हें सूरज के और ऊपर चढ़ने से पहले निकलना होगा।

बॉर्डरवर्ल्ड के बारे में अपने सपने की याद आने पर वह रुक गया।

बेताल उदास लग रहा था, पर उसकी बातें अस्पष्ट थीं। वह क्या कहना चाह रहा था? विक्रमादित्य ने घोलमास्टर के शब्दों को याद करने की कोशिश की। पेड़ के मरने और बहुत देर हो जाने के बारे में कुछ कहा था... लेकिन क्या यह वही बात नहीं थी जो बेताल ने पिछली बार उसे पुकारी थी, जब असुरों ने बॉर्डरवर्ल्ड पर हमला किया था? जब घोलमास्टर चाहता था कि वह आए और हलाहल और पेड़ को बचा ले, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। तो अब क्या? क्या बेताल ने फिर से उससे संपर्क किया था? या उसने फिर से वही पुराना सपना देखा था, उसके दिमाग का कोई धोखा?

पता लगाने का एकमात्र तरीका यही था कि वापस सो जाएं और बेताल के आने का इंतजार करें, लेकिन सम्राट जानते थे कि सोने में और समय बर्बाद करना उचित नहीं है। उठकर वे थाने के वार्डन के कमरे से बाहर निकले और परिसर के बाहर स्थित कुएँ की ओर चल पड़े। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि हूण सेना कहाँ तक पहुँच

चुकी है, लेकिन उन्हें रेगिस्तान के उन भयंकर योद्धाओं के अर्बुदा पर्वतमाला को पार करके सिंधुवर्त में घुसने से पहले सीमा तक पहुँचना ही था।

***

"एबा, चिंता मत करो..."

हुना कमांडर के सहायकों ने अपने वरिष्ठ के आदेश का पालन करते हुए अपने सिर के ऊपर छोटे त्रिकोणीय झंडे उठाए और दोनों हाथों को तेज़ी से नीचे गिरा दिया, जिससे भोर के उजाले में झंडे लाल रंग की चापनुमा आकृतियाँ बनाते हुए नीचे की ओर लहराने लगे। उसी समय, दोनों सहायकों ने अपने कमांडर के निर्देशों को ज़ोर से दोहराया, ताकि पीछे से आ रहे अन्य हुना कप्तानों को भी यह बात समझ आ जाए।

"एबा, चिंता मत करो..."

अपने घोड़ों को लगाम लगाओ।

एबा, ज़ुही गेल'ला... एबा, ज़ुही गेल'ला... एबा, ज़ुही गेल'ला।

योद्धाओं के सिर के ऊपर से गुज़रता हुआ आदेश एक लहर की तरह पीछे की ओर फैल गया, नुकीले भालों और लहराते झंडों के बीच से गुज़रता हुआ, उड़ती धूल को चीरता हुआ, यहाँ तक कि सबसे पीछे खड़े सैनिकों ने भी सुन लिया और समझ लिया कि उनसे क्या अपेक्षा की जा रही है। धीरे-धीरे, विशाल सेना लड़खड़ाते हुए, रुक गई, लंबी रात के मार्च के बाद थके हुए घोड़े राहत की साँस लेते हुए रेगिस्तान की ज़मीन पर पैर पटक रहे थे।

"येर गोहोट," कमांडर ने फिर से पुकारा। 'तंबू लगाओ।'

घोड़े की पीठ से उतरकर कालिदास ने अपनी पीठ सीधी की और सुबह की ठंडी हवा में गहरी सांस ली। फिर अपनी उंगलियों से अपनी कमर की मालिश करते हुए वे रेगिस्तान में कुछ दूर चले गए, उनकी निगाहें दूर आसमान में साफ दिखाई दे रही पर्वत श्रृंखलाओं पर टिकी थीं।

हम कल वहाँ होंगे।

कालिदास ने मुड़कर देखा तो उनके बगल में खशी दुर खड़ा था। सरदार का दागदार चेहरा धूल से सना हुआ था और थकान से उसकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं, जब वह अंधेरी, ऊबड़-खाबड़ पर्वत श्रृंखला को घूर रहा था।

कालिदास ने सिर हिलाया लेकिन कुछ नहीं कहा।

"क्या आप वाकई चाहते हैं कि सभी शायर वहां मौजूद हों, न कि सिर्फ हम दोनों?"

कालिदास ने इस विशाल हूण सेना के अन्य तीन सरदारों पर एक नजर डाली। उन्होंने कहा, "जब तक कि वे डरे हुए न हों और आना न चाहें।"

खाशी दुर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। "एक हूण किसी से नहीं डरता, थ्राखा।"

"मेरा मतलब वो नहीं था," कालिदास ने उत्तर दिया। "शायद उन्हें अब भी लगता है कि मैं उनके साथ विश्वासघात कर सकता हूँ। शायद उन्हें मुझ पर उतना भरोसा नहीं है—"

"अगर हर कोई तुम पर भरोसा नहीं करता, तो अब तक रेगिस्तान की धूप में तुम्हारी हड्डियाँ सूखकर चूर-चूर हो गई होतीं, थ्राखा," श्योर ने गुस्से से कहा।

कालिदास ने सिर झुकाया। "तो फिर, सभी श्योरों को साथ आना होगा।"

अब खशी दुर की बारी थी सिर हिलाने की। दोनों व्यक्ति धीरे-धीरे अरबुदास पर्वतमाला के ऊपर से उगते सूरज को देखने के लिए मुड़े, जिसने रेगिस्तान को सूर्य की रोशनी से भर दिया।

"क्या आप अपने पुराने दोस्त से मिलने के लिए उत्सुक हैं?" सरदार ने अंततः पूछा।

उस दैत्य ने सिकुड़ी हुई आँखों से उगते सूरज को घूरते हुए कहा, "मैं सम्राट की प्रतिक्रिया देखना चाहता हूँ जब हमारा ड्रोइबा याहब्रे को प्रकट करेगा।"

***

शंकु ने पिछली रात की आग की राख में उंगली फेरते हुए, चुटकी भर बारीक काली कालिख उठाई और उसे अपने मसूड़ों और दांतों पर मलते हुए ज़ोर से रगड़ा। मुंह धोकर और चेहरे पर पानी के छींटे मारकर, उसने चट्टान के नीचे बने छोटे से खुले मैदान पर नज़र डाली, जहाँ उन्होंने अपना डेरा डाला था।

दंडका के सूर्योदय के अर्धप्रकाश में उसने देखा कि सभी लोग जाग चुके थे।

संशोधन। सभी लोग खड़े थे।

सभी लोग रात भर जागते रहे—जैसा कि परसों की रात भी हुआ था—नींद ठीक से नहीं आ रही थी, अक्सर अचानक जागकर बेचैनी से चारों ओर देखते और फिर

सोने की कोशिश करते। और जब नींद नहीं आती, तो चुपचाप लेटे रहते और बहादुरी का दिखावा करते हुए चुपके से उस रात पर नज़र डालते जो चारों ओर से उन्हें घेरे हुए जंगल को छिपाए हुए थी, एक तेल के समान गहरा अंधेरा आग की रोशनी में घुसकर उसे बुझा रहा था।

और अंधकार की परतों के भीतर, वह चेहराहीन, आकारहीन सत्ता भी धीरे-धीरे मंडरा रही थी... एक धारणा, एक बेचैन कर देने वाली अनुभूति कि कोई हमें देख रहा है, हम पर नज़र रखी जा रही है...

"एक और रात बीत गई और हम सब यहीं होंगे, बूढ़े आदमी।"

शंकु ने वक्ता का आकलन किया; ग्रीष्मा के बगल में खड़ा एक सैनिक, जमीन पर पालथी मारकर बैठे डाकू को घूर रहा था, जिसके कंधे झुके हुए थे और चेहरे पर एक चिड़चिड़ा-नींद भरा भाव था।

"हम फिर से जीत गए," सैनिक ने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी आवाज में जीत से ज्यादा राहत थी।

"अब तुम पर हम तीनों के तीन-तीन सिक्के बकाया हैं," दूसरे सैनिक ने बीच में कहा। "अच्छा हुआ कि तुम्हारे पास सम्राट का इनाम है जिस पर तुम निर्भर रह सकते हो।"

ग्रीष्म ने अपना गाल खुजाया और नज़रें फेर लीं, मानो उसे इस बात की कोई परवाह न हो कि वह अपने साथियों के साथ लगाए गए एक घिनौने जुए में छह और सोने के सिक्के हार गया है। हर शाम, वे लोग डाकू के खिलाफ शर्त लगाते कि क्या वे रात सुरक्षित गुजार पाएंगे। अगर वे बच जाते, तो सैनिक जीत जाते; अगर कोई हताहत होता—जैसा कि ग्रीष्म ने भविष्यवाणी की थी—तो डाकू हार जाता। ग्रीष्म लगातार तीन रात हार चुका था, लेकिन जैसा कि वह सैनिकों को याद दिलाता रहता था, अगर वह जीत जाता, तो उन सबको कुछ सोने के सिक्कों से कहीं ज़्यादा नुकसान उठाना पड़ता।

शंकु को एहसास हुआ कि ग्रीष्मा को कुछ और सिक्के खोने की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि दंडक से बचकर उज्जैन वापस लौटने की उसकी संभावना लगभग न के बराबर थी। जुए के बकाया चुकाने का सवाल तो उसके दिमाग में था ही नहीं।

"चलो चलते हैं," उसने कहा और कीड़े के काटने से हुए घावों को शांत करने के लिए अपनी बाहों और गर्दन पर तुलसी और हल्दी का लेप लगाया।

पुरुषों को शिविर हटाते देख ग्रीष्मा भी उठ खड़ी हुई और काम में मदद करने का दिखावा करने लगी, लेकिन शंकु ने उसे रोक दिया।

"और कितनी दूर?" उसने ठुड्डी से इशारा करते हुए पूछा।

ग्रीष्मा को लड़की का मतलब समझने के लिए पीछे मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी। वह जानता था कि वह उस पतले रास्ते की बात कर रही है जो खुले मैदान के किनारे से होकर गुज़रता था और सुबह की हल्की रोशनी में धुंधला दिख रहा था। वे उस रास्ते पर बिल्कुल संयोग से आ गए थे, और डाकू ने तुरंत ज़ोर देकर कहा कि वह उसे जनस्थान जाने वाले रास्तों में से एक के रूप में पहचानता है। शंकु को यह पता नहीं चल पा रहा था कि वह झूठ बोल रहा है या उसे वन आत्माओं को बलि चढ़ाने की धमकी को पूरा करने से रोकने के लिए, लेकिन दंडक से होकर जाने का यही सबसे नज़दीकी रास्ता था, इसलिए वे उसी रास्ते पर चलते हुए यहाँ तक आ गए।

शंकु ने ठंडे लहजे में कहा, "हम दो दिन से इस रास्ते पर हैं। आपने कहा था कि आपको पूरा यकीन है कि यह रास्ता हमें हमारी मंजिल तक पहुंचा देगा।"

"ऐसा होगा," ग्रीष्मा ने एक पैर से दूसरे पैर पर हिलते हुए कहा।

"कब?"

मुझे याद नहीं है। इतने लंबे समय पहले की बात है कि मुझे कुछ भी याद नहीं है...

उस खुले मैदान में कुछ बदलाव आया। शायद रोशनी में हल्का सा बदलाव हुआ हो या हवा के बहाव में परिवर्तन। हो सकता है वह खुला मैदान ही बदल गया हो; शंकु को वह छोटा लगने लगा, ऐसा लगा जैसे वह अपने आप में सिमट रहा हो, किसी चीज से सिकुड़ रहा हो...

पार्षद की निगाहें खुले मैदान के चारों ओर घूमीं। पेड़ों की कतार अभी भी घने अंधेरे में डूबी हुई थी, धुंध की पतली-पतली चादर से घिरी हुई थी, लेकिन जैसे ही उनकी नज़र ऊपर उठी, सुबह की धूप पेड़ों की चोटियों पर पड़ी, जहाँ बैठे दो पक्षी चौंककर उड़ गए। शंकु ने खुद से कहा, ज़रूर यह रोशनी का असर होगा, पक्षियों को उड़ते हुए देखकर—क्या वे भाग रहे थे?

वह निश्चित तो नहीं थी, लेकिन उसे लगा कि जंगल में कहीं कोई टहनी टूट गई हो... खुले मैदान से ज़्यादा दूर नहीं। उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह कांप उठी।

ग्रीष्मा ने बोलना बंद कर दिया था, उसका मुंह आधा खुला हुआ था, उसका सफ़ेद बालों वाला सिर एक तरफ झुका हुआ था, वह सुन रहा था।

सैनिक भी रुक गए थे, शायद उस चीज ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया था।

"चलो चलें," लड़की ने ताली बजाते हुए जल्दी करने का आग्रह किया, लेकिन अपनी आवाज़ में घबराहट छिपाने की कोशिश में नाकाम रही। डाकू की ओर मुड़कर उसने झल्लाकर कहा, "जल्दी करो।" उसने लोहे के बर्तनों में से एक को उठाया और ठंडी आग के चारों ओर रखे पत्थरों से उसे अलग करते हुए कहा, "दूसरा बर्तन भी लाओ।"

कुछ ही मिनटों में, समूह खुले मैदान से निकलकर ऊबड़-खाबड़ पत्थरों से बने कच्चे रास्ते पर आ गया। जंगल दोनों ओर से तेज़ी से घिर आया, जिससे सबके कंधे तन गए। शंकु ने महसूस किया कि सभी ने कान लगाकर आने वाली आवाज़ों को सुनने की कोशिश की। छोटे से काफिले के पीछे चलने का ख्याल आते ही लड़की को अचानक कंपकंपी छूट गई और उसने पीछे मुड़कर उस रास्ते को देखा जहाँ से वे आए थे, लेकिन पेड़ों और धुंध में मुड़ते हुए रास्ते के अलावा उनके पीछे कुछ भी नहीं था।

रास्ता प्राकृतिक ढलान वाला हो गया, जो घनी, उभरी हुई जड़ों वाले पेड़ों के बीच से होकर घुमावदार था। सूरज ऊपर चढ़ता जा रहा था, जिससे रास्ता रोशन हो रहा था, लेकिन उनके सिर के ऊपर घने पत्तों के पीछे छिपा हुआ था। सूरज के ढलने के साथ ही उनके मन में छाई चिंता धीरे-धीरे कम होती जा रही थी, और शंकु स्थिर गति से चलने लगी, अपना सिर नीचे रखे और अपने कदमों पर ध्यान देते हुए, इस बात को लेकर दुविधा में थी कि क्या उसे ग्रीष्मा पर अब भी भरोसा करना चाहिए या नहीं—और अगर हाँ, तो कब तक। वह अभी कोई फैसला ले ही रही थी कि तभी आगे से अचानक एक तेज आवाज आई और उसके विचार टूट गए।

ऊपर देखते हुए पार्षद ने पाया कि रास्ता एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया था, और आगे चल रहे दोनों व्यक्ति पहले ही चोटी पर पहुँच चुके थे, और नीचे की ओर देख रहे थे कि आगे क्या है। उनके हाव-भाव से स्पष्ट था कि सैनिकों को कोई खतरा महसूस नहीं हो रहा था, और समूह ने तुरंत अपनी गति बढ़ा दी। कुछ ही क्षणों में, शंकु भी पहाड़ी की चोटी पर सैनिकों के साथ शामिल हो गया।

सामने का दृश्य देखकर वह अचंभित रह गई।

पेड़ों की कतार और पगडंडी वहीं आकर खत्म हो गई जहाँ वे खड़े थे। शंकु के पैरों के पास पहाड़ी तेज़ी से नीचे की ओर ढलान पर उतर रही थी, जो दूर स्थित पहाड़ियों की एक श्रृंखला की ओर फैली हुई थी, जो सुबह की धूप में धुंधली लग रही थी। घाटी कोहरे से ढकी हुई थी, लेकिन शंकु को पेड़ों की चोटियों के बीच से झाँकती हुई एक दीवार की प्राचीरें दिखाई दीं। दीवार के पीछे से एक अकेला, उदास सा दिखने वाला बुर्ज पेड़ों के बीच से एक प्रहरी, एक चेतावनी, एक गंभीर चेतावनी की तरह ऊपर की ओर उठा हुआ था।

"जनस्थान।" ग्रीष्मा की आवाज में सिसकी और फुसफुसाहट का मिश्रण था, जो विस्मय, आश्चर्य और अचानक उत्पन्न हुए अनियंत्रित भय से कांप रही थी।

Janasthana.

अपनी दादी के बार-बार कहने के बावजूद, ग्रीष्मा के बारे में अपने पिता की कहानी, दंडक के बारे में लुटेरे के खुद के बयानों, और इस खतरनाक यात्रा के लिए स्वेच्छा से आगे आने और निर्वासितों के जंगल में इतनी गहराई तक जाने के बावजूद... इन सब के बावजूद, शंकु को एहसास हुआ कि उसके मन का एक हिस्सा दानवों की उस काल्पनिक राजधानी पर कभी विश्वास नहीं करता था। फिर भी, वह यहाँ जनस्थान को देख रही थी।

और जनस्थान भी उसे घूर रहा था, उसका टावर शांत और भयावह लग रहा था।

"यह क्या है?" एक सैनिक ने बीच में टोकते हुए पूछा।

शंकु ने मुड़कर घाटी के निचले हिस्से में पेड़ों के एक समूह को देखा जो हिंसक रूप से हिल रहे थे, मानो वे हवा के एक झोंके में फंस गए हों जो घाटी के तल पर अपना रास्ता बनाते हुए बह रहा था।

"ये तो बस हवा है—" उनमें से एक आदमी ने कहना शुरू किया, लेकिन तभी उसके साथियों ने उसे बीच में ही रोक दिया।

"लो... एक और।"

उनके नीचे जंगल का एक और हिस्सा भी इसी तरह की उथल-पुथल की स्थिति में था, जहां तेज हवा के झोंके से पेड़ों की शाखाएं हिल रही थीं।

वे घाटी में टेढ़ी-मेढ़ी बहती हवा की धाराओं को देख रहे थे, जो एक-दूसरे की ओर बढ़ रही थीं, मानो एक-दूसरे से मिलने का इरादा रखती हों। शंकु जो देख रही थी

उसे समझने की कोशिश कर रही थी, हवा की घुमावदार गतियों की समकालिकता से मंत्रमुग्ध थी, जबकि उसके भीतर खतरे की भावना भी धीरे-धीरे बढ़ रही थी।

उसके बगल में खड़ा सिपाही बुदबुदाया, "कुछ तो गड़बड़ है।"

उस आदमी के मुंह से शब्द निकले ही थे कि हवा की दोनों धाराएं एक साथ अपनी दिशा बदलकर उस पहाड़ी की ओर बढ़ने लगीं जहां समूह खड़ा था, और हर गुजरते सेकंड के साथ उनकी ताकत और गति बढ़ती जा रही थी।

"वे... वे इस तरफ आ रहे हैं," उनमें से एक व्यक्ति ने घबराकर चिल्लाया।

शंकु टकटकी लगाकर देखता रहा, जैसे ही दोनों धाराएँ अचानक रंग और बनावट में बदल गईं, तेल के धुएँ की तरह काली और मखमली, जंगल में तेज़ी से बहती हुई, पक्षियों के झुंड की नकल करती हुई। घाटी से शाखाओं के टूटने और दबाव से चटकने की आवाज़ उठी, और छायादार हवा के बल से पेड़ झुक गए, जो अब प्रचंड क्रोध में गरज रही थी और महामारी की तरह घाटी में दौड़ती हुई, अवंती के छोटे राजनयिक दल की ओर बेदम होकर तेज़ी से बढ़ रही थी।

ग्रीष्मा चिल्लाई, "वापस मुड़ो। भागो।"

शंकु ने देखा कि डाकू उसी रास्ते वापस मुड़ने लगा जिससे वे आए थे। उसने देखा कि उसके आदमी भी मुड़ गए, आत्मरक्षा की सहज प्रवृत्ति का पालन करते हुए। और उसने देखा कि वे सभी अपनी जगह पर रुक गए और घूरने लगे, सुबह की धूप में उनके चेहरे पीले पड़ गए।

उनकी दृष्टि रेखा का अनुसरण करते हुए, पार्षद ने देखा कि छाया-पवन की एक तीसरी धारा उसी रास्ते से उनकी ओर आ रही है जिससे वे इस बिंदु तक पहुँचे थे। तेल के रंग की काली दुर्भावना की एक तीव्र धारा, पेड़ों को चीरती हुई, चीखती-चिल्लाती हुई उनकी ओर बढ़ रही थी।

शंकु ने घाटी में एक नज़र डाली, ढलान पर ऊपर की ओर बहती हुई दो धाराओं को देखा जो उनकी ओर बढ़ती जा रही थीं। उसने पगडंडी पर ऊपर की ओर आती हुई तीसरी धारा को भी देखा।

उसने ग्रीष्मा और उसके आदमियों को देखा, जो किसी भयानक, अलौकिक, और अपरिहार्य चीज की तीन अभिसारी धाराओं के भंवर को देखकर भय से जम गए थे, जिसकी भयावहता को वह समझ भी नहीं सकती थी।

***

शूरासेना ने अपनी नई कटी दाढ़ी पर उंगली और अंगूठे से स्पर्श करते हुए, नौकर द्वारा पकड़े गए सपाट, टिन के शीशे में अपना प्रतिबिंब देखने के लिए आगे की ओर झुका। राजा को घूरता हुआ चेहरा सुंदर था, हालांकि पतले, क्रूर होंठ और आँखों में स्पष्ट अहंकार झलक रहा था। अपनी दाढ़ी में एक अकेला सफेद बाल देखकर, उन्होंने दरबारी नाई का ध्यान उस ओर दिलाया, और जब वह अपने रूप से संतुष्ट हो गया, तभी उन्होंने स्नानघर में प्रवेश करने वाले लंबे व्यक्ति को देखा और चुपचाप एक तरफ खड़े हो गए।

“जी हां, कमांडर शिरसा?” उसने पूछा।

“महाराज, एक समाचार है।” सेनापति एक मजबूत कद-काठी का व्यक्ति था, जिसका चेहरा पचास से अधिक वर्षों की उम्र के कारण खुरदरा था। उसका सिर लोहे जैसे भूरे बालों से ढका हुआ था।

"यह क्या है?"

शिरसा हिचकिचाया, उसकी निगाहें नाई और इधर-उधर काम कर रहे दो नौकरों पर टिक गईं। “यह खबर कोसल से संबंधित है, महाराज,” उसने कोमल स्वर में कहा। “और राजा सिद्धसेन से भी।”

शूरासेना की आंखें सख्त हो गईं। उसने सिर हिलाकर नाई और नौकरों को विदा कर दिया।

"यह संगीतकार के बारे में है, मेरे राजा," शिरसा ने अकेले होने पर कहा।

“कौन सा संगीतकार?” राजा ने झुंझलाहट से कहा। “कोई संगीतकार नहीं है। यह कोसला द्वारा गढ़ा गया झूठ है।”

सेनापति ने सिर झुकाया। “निस्संदेह, ये मेरे राजा हैं। लेकिन झूठ फैल रहा है।”

शूरासेना सिंहासन से उठे। उन्होंने अभी तक स्नान नहीं किया था, और उनका चौड़ा धड़ और पीठ पसीने और तेल से चमक रहे थे। उन्होंने मुट्ठियाँ भींचीं और कंधे उचकाए। “भूमिपाल ने मेरे राज्य में संदेह और शंका फैलाकर मुझे बदनाम करने

की जो कोशिश की है, उसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। दैपायन के ओड्रा से लौटते ही हम श्रावस्ती की ओर कूच करेंगे।"

"जी महाराज," शिरसा कुछ देर रुका। "मैं जो खबर लाया हूँ, वह कोसल की योजनाओं से संबंधित है, यह जानकारी हमें शहर के शराबखानों से मिली है। दो नाविकों को यह कहते हुए सुना गया कि कोसल संगीतकार को मगध में तस्करी करके ले जाने की योजना बना रहा है।"

शूरासेना ने कमांडर को घूरकर देखा।

"हमने नाविकों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया। ऐसा लगता है कि उनमें से एक को संगीतकार को नाव से नदी के रास्ते पंडारा तक लाने के लिए कहा गया था। संभवतः योजना उसे गिरिव्रजा ले जाने की है, जहाँ कोसला को उम्मीद है कि वह अफवाह फैलाना शुरू कर देगा।"

"क्या वे उसे यहाँ ला रहे हैं?" शूरासेना घबराकर चिल्लाया, उसकी आवाज़ में दहशत थी। "क्या वे पागल हो गए हैं?" गहरी साँस लेकर और खुद को संभालते हुए, वह अपने हाथों को पीछे बाँधकर बाथटब में इधर-उधर घूमने लगा।

"क्या हमें पता है कि वे पंडारा कब पहुंचने वाले हैं?"

"नाविक के अनुसार, अगले कुछ दिनों में।"

"यह नाविक कहाँ है?" शूरासेना ने अचानक रुकते हुए पूछा।

"हमने उसे जाने दिया, महाराज। उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था, और उसने कुछ भी गलत नहीं किया था।"

"उसे ढूंढो। हमें ठीक-ठीक जानना होगा कि वे पांडारा में कब और कहाँ उतरने का इरादा रखते हैं।"

"हम कोशिश करेंगे, महाराज, लेकिन नाविक यहाँ का नहीं था। हो सकता है वह शहर छोड़कर चला गया हो।" शूरसेना का माथा सिकुड़ता देख सेनापति ने जल्दी से कहा, "हम तुरंत पंडारा के लिए सैनिकों की एक टुकड़ी भेज सकते हैं और नदी के किनारे पहरेदार तैनात कर सकते हैं। मैं शहर के हर प्रवेश द्वार पर पहरेदारों की तैनाती बढ़ा सकता हूँ—अगर संगीतकार को गिरिव्रज ले जाया जा रहा है, तो उसे पकड़ना और भी आसान हो जाएगा। हमें बस सतर्क रहना है और जैसे ही वह दिखाई दे, उसे पकड़ लेना है।"

"पांडारा में हुई लैंडिंग के बारे में जितनी हो सके उतनी जानकारी जुटाएँ। अधिक से अधिक मुखबिरों को सराय में भेजें, उन्हें नाविकों, व्यापारियों से बात करने के लिए कहें... जितनी जल्दी हो सके उतनी अधिक जानकारी प्राप्त करें।"

जी हां, महाराज। और... पंडारा में सैनिक भेजने और गश्त बढ़ाने के बारे में क्या ख्याल है?

"नहीं," राजा ने आदेश दिया। "बस उस पर ध्यान केंद्रित करो जो मैंने मांगा है।"

शूरासेना मुड़ा और स्नानघर में चला गया। वह सीढ़ियों से नीचे उतरा, फिर एक छोटी सी छपछपाहट के साथ पानी में कूद गया, तुरंत पानी के भीतर चला गया और शिरसा से दूर चला गया।

कमांडर मुड़ा और दरवाजे की ओर चल पड़ा। उसने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया था।

***

रिक्शा पर्वत की ऊँची घाटियों में, सुबह की ठंडी हवा जंगली फूलों की खुशबू से महक रही थी, और जहाँ भी वेताला भट्टा की नज़र जाती, उन्हें घोड़ों के घुटनों तक पहुँचने वाली ओस से भीगी पतली घास में भूरे और हरे रंग की ड्रैगनफ्लाई उड़ती हुई दिखाई देतीं। पगडंडी पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी ढलान से होकर गुज़रती थी, आचार्य और उनके साथ चल रहे दस खच्चरों के पीछे सूरज की तेज़ रोशनी चमक रही थी, जिन पर ओड्रा की लौह खानों से अयस्क लादा हुआ था।

अब तक का सफर शांतिपूर्ण रहा था। छोटा काफिला आनूपा के खतरनाक प्रभाव से बचने के लिए ओद्रा के खनिकों से सीखे गए अधिक कठिन और घुमावदार रास्ते को चुन रहा था। फिर भी, उन्होंने अच्छी प्रगति की थी और वे विंध्य और ऋक्षा पर्वतमालाओं के बीच स्थित दर्रों के पास पहुँच रहे थे, जो सिंधुवर्त के उत्तरी मैदानों तक पहुँचने का मार्ग थे। राजगुरु का अनुमान था कि यदि वे इसी गति से चलते रहे, तो तीन से चार दिनों में उज्जैन वापस पहुँच जाएँगे।

वे एक कतार में सवार थे, सबसे आगे केदारा, जो अंगरक्षक दल के मुखिया थे, चल रहे थे। आचार्य मध्य में थे, उनके पीछे खच्चर धीरे-धीरे चल रहे थे और दो पहरेदार सबसे पीछे थे। राजगुरु अवंती की अनेक समस्याओं में उलझे हुए थे, इसलिए उन्होंने केदारा को हाथ उठाकर काफिले को रुकने का संकेत देते हुए तुरंत

नहीं देखा। जब घोड़े और खच्चर आपस में टकराकर रुक गए, तब आचार्य ने गर्दन उठाकर कप्तान की ओर देखा।

"क्या बात है?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा, मानो उसे सहज ही किसी परेशानी का आभास हो गया हो।

केदारा ने जवाब में दाईं ओर इशारा किया।

पहले तो वेताला भट्टा को कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन जैसे ही वह वापस मुड़ने वाले थे, उन्होंने पेड़ों के ऊपर धीरे-धीरे तैरता हुआ धुएं का एक हल्का सा धब्बा देखा। सिर उठाकर राजगुरु ने धीरे से सूंघा, उन्हें लकड़ी के धुएं के साथ मिला हुआ खाना पकाने के तेल की गंध आई, जो जंगल की अन्य सभी सुगंधों के बीच विशिष्ट और अनोखी थी।

वह धीरे-धीरे खिसकते हुए केदारा के पास पहुँच गया।

"हो सकता है कि वे डाकू हों, महाराज," कप्तान ने चेतावनी दी।

आचार्य ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, "हो सकता है ये सीधे-सादे पहाड़ी लोग हों। चलिए एक नज़र डाल लेते हैं।"

कप्तान ने सिर हिलाकर अपने आदमियों की ओर रुख किया। उसने दो पहरेदारों की ओर इशारा करते हुए कहा, “तुम हमारे साथ चलो, तुम दोनों खच्चरों को रास्ते से हटाकर उस घने जंगल में ले जाओ। हमारे वापस आने का इंतज़ार करो, फिर खुद को ज़ाहिर करना।”

"और अगर हम ऐसा नहीं करते हैं," वेतला भट्टा ने रूखेपन से कहा, "तो अयस्क को उज्जैन ले जाने की जिम्मेदारी आपकी होगी।"

जैसे ही दोनों आदमी खच्चरों को ढलान पर चढ़ाने लगे, आचार्य, कप्तान और बाकी दो पहरेदार घोड़ों से उतर गए और उन्हें पास के एक पेड़ की छाया में बाँध दिया। वे आग की दिशा में बढ़े, अपनी तलवारें निकालीं और अलग-अलग दिशाओं से स्थिति को देखते हुए एक-दूसरे पर नज़र रखते हुए फैल गए।

ज़मीन ढलानदार होकर एक घने जंगल वाली घाटी में उतरती थी, और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, आचार्य के कानों में एक तेज़ पहाड़ी झरने की बढ़ती हुई आवाज़ सुनाई दी। झरने को नज़र आने में कुछ समय लगा—और जैसे ही वह दिखाई दिया, राजगुरु ने दोनों किनारों पर कुछ लोगों को ज़मीन पर लेटे हुए, आपस में बातें करते

हुए या ठंडे पानी में खेलते हुए देखा। अपनी सुविधाजनक जगह से वेताला भट्ट ने देखा कि वे लगभग सौ लोग थे, सभी हथियारों से लैस और वर्दी में थे।

मगध की राजसेना की वर्दी।

और उन आदमियों के बगल में जमीन पर गड़े हुए दो बैनर थे जिन पर मगध का जलता हुआ बाज वाला झंडा बना हुआ था, जो सफेद रंग पर चमकीले नारंगी और लाल रंग से चित्रित था।

मुख्य सलाहकार चुपचाप पीछे हट गया और घाटी में ऊपर चढ़ गया, घनी झाड़ियों के बीच से झुकता हुआ तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह मगध के सैनिकों की नज़र से ओझल नहीं हो गया। दोनों पहरेदारों में से एक लगभग उसी समय वापस रास्ते पर चढ़ गया, लेकिन उन्हें कुछ तनावपूर्ण मिनटों तक इंतजार करना पड़ा जब तक कि केदारा और दूसरा पहरेदार उनके साथ नहीं आ गए।

"मगधान सैनिकों, महाराज," कप्तान ने कहा।

आचार्य ने सिर हिलाया। "आपके अनुमान से कितने होंगे? मैंने तो लगभग सौ देखे, लेकिन निश्चित रूप से इससे कहीं अधिक होंगे।"

"कम से कम एक हज़ार तो होंगे ही, महाराज," सबसे आखिर में लौटने वाले गार्ड ने कहा। "मैं खाई के दूसरी तरफ था, इसलिए मुझे नदी के बहाव की दिशा में दूर तक सब कुछ दिखाई दे रहा था। दोनों किनारे सैनिकों से भरे पड़े हैं। शायद एक हज़ार से भी ज़्यादा।"

"तर्कसंगत," वेतला भट्ट ने कहा, यह समझते हुए कि यह शूरसेना की सेना का अग्रिम दस्ता था जो ओड्रा की ओर जा रहा था।

"क्या हमें घोड़ों को छिपा देना चाहिए?" दूसरे गार्ड ने पूछा। "वे इस तरफ जासूस भेज सकते हैं।"

पार्षद ने कहा, "ऐसा होने की संभावना कम है। यह रास्ता सेना के मार्च के लिए बहुत संकरा है... और मुझे संदेह है कि उन्हें इसके अस्तित्व के बारे में पता भी होगा। वे घाटी में नीचे वाले चौड़े रास्ते से ही जाएंगे, जिस रास्ते से हम ओड्रा गए थे।"

ठीक उसी समय, पहाड़ी की चोटी पर स्थित झाड़ियों में खच्चरों को ले गए पहरेदारों में से एक, मिट्टी के ढेलों और कंकड़ों के एक छोटे से हिमस्खलन के साथ,

तेजी से नीचे उतरने लगा। नीचे खड़े लोग उस आदमी के नीचे उतरने को भय और आश्चर्य से देख रहे थे।

"सेना आगे बढ़ रही है, कप्तान," गार्ड हांफते हुए धीरे से रुका। सांस लेते हुए उसने ऊपर झाड़ियों की ओर इशारा किया। "उस तरफ, पहाड़ी के उस पार घाटी में।"

वेताला भट्टा और केदारा ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"यहीं रुको," केदारा ने आदेश दिया और आचार्य और रक्षक के साथ पहाड़ी पर जाने के लिए मुड़ गया।

पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, रक्षक मुख्य सलाहकार और कप्तान को उन घने जंगलों से होते हुए ले गया जहाँ खच्चर छिपे हुए थे और उन्हें एक ऊँचे स्थान पर ले आया जहाँ से दूसरी ओर की घाटी का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। नज़ारा बेहद खूबसूरत था, दूर तक फैले पहाड़ों की श्रृंखला तक भूमि फैली हुई थी, और हरी-भरी घाटी में सूर्य की रोशनी में चमकती हुई एक झील थी।

लेकिन यह वह बात नहीं थी जिसने वेताला भट्टा और कप्तान का ध्यान आकर्षित किया।

उनकी निगाहें झील के किनारे घाटी के मध्य से गुज़रते सैनिकों के एक दल पर टिकी थीं, जिनके सफेद झंडों पर जलते हुए बाज़ का चिन्ह हवा में लहरा रहा था। दल के अंत में महाशिलाकंटकों की एक पंक्ति थी, जिनमें से प्रत्येक को चार हाथियों की जोड़ियाँ खींच रही थीं, और विशाल गुलेलों के पीछे हाथियों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियाँ थीं जिन पर बड़े-बड़े पत्थर और पेड़ों के तने लदे थे जिन्हें महाशिलाकंटक किसी किलेबंद शहर पर फेंकते थे।

"कितने आदमी?" आचार्य ने पूछा।

"लगभग दो हज़ार," केदारा ने असंतुष्ट होकर उत्तर दिया। "और एक दर्जन महाशिलकंटक।"

"क्या आपको यकीन है-"

"वहाँ," गार्ड ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "और भी आदमी हैं।"

राजगुरु को यह समझने में कुछ क्षण लगे कि वह व्यक्ति किस ओर इशारा कर रहा है। फिर उन्होंने देखा—घाटी के उस पार सैनिकों की एक कतार थी, जो इतनी दूरी से लगभग दिखाई नहीं दे रही थी, सिवाय हवा में लहराते सफेद झंडों के।

"वे लहरों में आगे बढ़ रहे हैं," केदारा ने सैनिकों के तीसरे समूह को देखते हुए बुदबुदाया। "शायद दो हज़ार और सैनिक हैं, जो आधे दिन की पैदल दूरी पर हैं।"

घाटी में पहले से ही लगभग एक हजार सैनिक मौजूद थे। झील के किनारे दो हजार सैनिक मार्च कर रहे थे, साथ ही लगभग एक दर्जन भारी गुलेलें भी थीं। घाटी के उस पार दो हजार सैनिक थे। न पास, न दूर। पांच हजार सैनिक उत्तरा तोसाली की ओर मार्च कर रहे थे।

और वे अपने गंतव्य से सिर्फ दो दिन दूर थे।

मैंने अपनी सेना को पहले ही बुलावा भेज दिया है। मेरे सैनिक आठ-नौ दिनों में यहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए जब शूरसेना की सेना आएगी तो हम तैयार रहेंगे...

वेताल भट्ट के मन में यह बात कौंध गई कि जब अगले कुछ दिनों में मगध की सेना उत्तरा तोसली पर आक्रमण करेगी, तो अभिरामी और वीरयंका उसकी रक्षा के लिए पर्याप्त रूप से तैयार नहीं होंगे। कलिंग से अतिरिक्त सहायता के बिना, उत्तरा तोसली मगध की सेना द्वारा जीत लिया जाएगा और ओद्रा शूरसेना के हाथों में चला जाएगा।

राजगुरु ने कहा, "हमें उन्हें रोकने के लिए कुछ करना होगा।"

उसने मुड़कर देखा तो युवा कप्तान के चेहरे पर हैरानी के भाव थे... और उसे अपनी कही बात की बेतुकीपन का एहसास हुआ। पाँच हज़ार पूरी तरह से हथियारों से लैस मगध के सैनिक उत्तरा तोसाली पर कब्ज़ा करने के लिए आगे बढ़ रहे थे। और वे सिर्फ़ छह लोग थे।

संभावनाएं वाकई चौंकाने वाली थीं।

***

“सम्राट के बारे में आपको और क्या याद है?”

विशाखा महल की झील के पार खाली निगाहों से देखती रही, मानो उसने सवाल सुना ही न हो। फिर, अपना सिर घुमाकर, उसने क्षपणक के बारे में विचारपूर्वक सोचा।

“लोग उन्हें सम्राट कहकर क्यों संबोधित करते हैं?”

क्योंकि वह सिंधुवर्त के सम्राट हैं।

विशाखा ने धीरे से सिर हिलाया, लेकिन क्षपणक को यकीन नहीं था कि वह समझ पाई है या नहीं।

"हम उन्हें विक्रमादित्य कह सकते हैं," उसने कहा। "तो... आपको और क्या याद है?"

रानी ने आकाश की ओर देखा, जहाँ दर्जनों गिद्ध अभी भी चक्कर लगा रहे थे, चुपचाप चाप बनाते हुए नीचे उतर रहे थे। गिद्धों के आक्रमण की खबरें पूरे शहर से आ चुकी थीं, और जहाँ भी क्षपणका ने देखा, उन्हें गिद्धों की झुकी हुई आकृतियाँ दिखाई दीं—महल की छतों और छज्जों पर, झील के उस पार पेड़ों पर, शहर की इमारतों पर... गिद्धों के इस विचित्र आगमन ने सभी को चिंतित कर दिया था, और महल के रक्षकों और पहरेदारों द्वारा उन्हें भगाने के बार-बार प्रयासों के बावजूद, गिद्धों ने टस से मस होने का कोई संकेत नहीं दिया, वे बस अपने पतले, खुरदुरे पैरों पर अपने घोंसलों में सरकते रहे।

"मानो वे किसी ऐसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे हों जिसके आने का उन्हें पहले से ही पता हो," वराहमिहिर ने पिछली रात भोजन के दौरान अशुभ स्वर में कहा था, जब धनवंतरी ने विशाखा को नींद लाने वाला काषायम दिया था। लंगड़े सलाहकार के ये शब्द विशेष रूप से भयावह लग रहे थे, क्योंकि वरारुचि ने बताया था कि देवी ने मृत्यु के अनेक रूपों में आने के बारे में क्या कहा था।

"वह बेहद दयालु हैं," विशाखा ने अपनी आँखों में उदासी लिए कहा। "वह मुझे खुश करने के लिए बहुत कुछ करते थे—" वह रुक गई, पलकें झपकाईं और भौंहें सिकोड़ीं, मानो कोई याद ताज़ा करने की कोशिश कर रही हो और नाकाम हो रही हो।

"उसके बाद...?" क्षपनाका ने पूछा।

"मुझे याद नहीं आ रहा।" विशाखा ने दुखी होकर अपनी हथेली की ओर देखा और अपने अंगूठे को उन टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं पर फेरा, जिनके बारे में ज्योतिषियों का मानना है कि वे किसी व्यक्ति का भाग्य निर्धारित करती हैं।

"कोई बात नहीं।" क्षमानाका ने अपनी बहन के हाथ पर हाथ रखा और दिलासा देते हुए मुस्कुराई। "तुम कह रही थी कि वह तुम्हें खुश करता है।"

विशाखा ने सिर हिलाया और अपनी दाहिनी हथेली की मध्यमा उंगली पर उंगली फेरते हुए बोली, "मेरे पास एक अंगूठी थी जिस पर मेरा नाम लिखा था। अंगूठी के

स्थान को सहलाते हुए उसने कहा, "वह महल के स्नानघर में खो गई थी, लेकिन विक्रम ने उसे मेरे लिए पानी की गहराई में खोज निकाला। वह जानता था कि वह अंगूठी मुझे बहुत प्रिय थी।"

"यह तुम्हें इतना प्रिय क्यों था?" क्षपणक ने यह उम्मीद करते हुए पूछा कि इससे कोई रास्ता खुल जाएगा।

"क्योंकि..." रानी फिर रुक गई, जवाब ढूंढने की कोशिश कर रही थी। वह दुखी लग रही थी। "मुझे नहीं पता... इसका संबंध किसी दुखद घटना से है, लेकिन मुझे बिल्कुल नहीं पता कि वह क्या हो सकती है।" उसने अनिश्चितता से अपनी बहन की ओर देखा।

"कोई बात नहीं," क्षपणक ने जल्दी से कहा। "महत्वपूर्ण यह है कि विक्रमादित्य ने इसे तुम्हारे लिए ढूंढ निकाला। तुम सही कह रहे हो, वह अविश्वसनीय रूप से दयालु है।"

"पर लगता है मैंने इसे फिर से खो दिया है।" विशाखा ने क्षपणका को अपना दाहिना हाथ दिखाया, उंगलियां फैली हुई थीं, पांचों उंगलियां बिना किसी आभूषण के। उसकी नज़र अपनी बहन पर पड़ी और अचानक उसकी आंखों में आंसू आ गए। "उसे मिल तो गया, पर मैं फिर भी उसकी देखभाल नहीं कर पाई... वह कहां है? वह अभी तक यहां क्यों नहीं आया?" रानी ने क्षपणका का हाथ अपने हाथों में थाम लिया और कसकर पकड़ लिया। "कृपा करके... मुझे मेरे विक्रम के पास ले चलो... कृपया..."

"तुम नहीं जा सकती क्योंकि यह बहुत खतरनाक है, लेकिन हमने उसे संदेश भेज दिया है," पार्षद ने अपनी बहन का हाथ हल्के से दबाते हुए कहा। "वह जल्द ही यहाँ आ जाएगा।"

क्षपणक को एहसास हुआ कि वह कुछ ज़्यादा ही मुस्कुरा रही है और उसने उम्मीद की कि उसकी बनावटीपन ज़ाहिर न हो। सच तो यह था कि विशाखा के पुनर्जीवन की खबर सूर्ययंत्र द्वारा लावा और बिद्धिरा की चौकियों तक पहुँचा दी गई थी, जो दोनों ही उदयपुरी जाने वाले मुख्य मार्गों पर स्थित थीं, लेकिन किसी भी चौकी ने सम्राट तक संदेश पहुँचने की पुष्टि नहीं की थी। दरअसल, बिद्धिरा की चौकी के सेनापति का एक संदेश एक घंटे पहले ही आ चुका था, जिसमें कहा गया था कि विक्रमादित्य अपनी चौकी पर नहीं आए हैं, जिसका मतलब केवल यही हो

सकता है कि राजा ने रात लावा में बिताई होगी, लेकिन लावा से अभी तक कोई खबर नहीं आई थी।

"सीमा कहाँ है?" विशाखा ने अपनी बहन के विचारों को बाधित करते हुए पूछा।

“हम्म... बहुत दूर।”

“दूर?” रानी के चेहरे पर चिंता झलकने लगी।

“ज्यादा दूर नहीं,” क्षपणका ने खुद को सुधारते हुए कहा। “विक्रम वैसे भी वहाँ नहीं पहुँच पाते, इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।”

दोनों बहनें कुछ देर बैठी रहीं और खूबसूरती से सजाए गए चबूतरे को निहारती रहीं, जहाँ गमलों में लगे फर्न और सजावटी लताएँ दिन की गर्मी के आगे फीकी पड़ती हवा में लहरा रही थीं। सूरज ऊपर चढ़ रहा था; जल्द ही छाया नहीं बचेगी और उन्हें अंदर जाना पड़ेगा...

वह वहां क्यों गया है?

“बर्बर लोगों को वापस लौटने से रोकने के लिए।”

विशाखा के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। "क्या वे इतने बुरे हैं कि उन्हें रोकना पड़ेगा?"

“हूण और शक...” क्षपणका को अचानक सीने में भारीपन महसूस हुआ और उसकी सांस गले में अटक गई। वह सोच रही थी कि क्या उसे इस विषय पर बात आगे बढ़ानी चाहिए ताकि उसकी बहन को कुछ याद आ जाए, लेकिन वह यह भी जानती थी कि विशाखा के लिए यह एक गहरा आघात हो सकता है। और यह ऐसा विषय नहीं था जिस पर वह इस समय बात करना चाहती थी। “हाँ, वे बुरे हैं,” उसने फिलहाल इस बात को यहीं खत्म कर दिया।

अगर उन्हें नहीं रोका गया तो क्या होगा?

पार्षद के जवाब देने से पहले ही, सुबह की खामोशी को चीरती हुई एक तीखी, कर्कश आवाज गूंज उठी। यह काफी दूर से आ रही थी, लेकिन इसमें एक भयानकपन था जिसने दोनों बहनों को घबराहट में एक-दूसरे की ओर देखने पर मजबूर कर दिया, फिर उन्होंने आवाज के स्रोत का पता लगाने के लिए अपना सिर घुमाया।

“वो क्या था?” विशाखा ने पूछा।

उत्तर देने के बजाय, क्षपणक उठे, चबूतरे के छोर तक गए और चारों ओर देखने के लिए झुक गए। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि गिद्ध भी घबरा गए थे, और महल की छतों पर पक्षी इधर-उधर फुदक रहे थे और घबराकर अपने पंख फड़फड़ा रहे थे। कुछ महल के रक्षक आवाज़ की जाँच करने के लिए पुल पर आ गए थे, जबकि दासियाँ खिड़कियों पर दिखाई दीं और गर्दनें उठाकर देखने लगीं कि क्या हो रहा है। आकाश में, जो कुछ गिद्ध अभी भी हवा में थे, उनकी उड़ान अस्त-व्यस्त लग रही थी, और क्षपणक को जो दिखाई दिया, उससे ऐसा लग रहा था कि वे बिखर रहे हैं... आकाश के दक्षिणी भाग से दूर बिखर रहे हैं।

फिर वही चीख उठी, मुर्गे की तरह कर्कश, लेकिन घृणा से भरी, क्रोध और रक्तपात से कांपती हुई। और चीख अभी शांत भी नहीं हुई थी कि दूसरी चीख गूंज उठी, लेकिन पिछली चीख से भी कहीं अधिक तेज और पागलपन भरी।

"क्या बात है?" विशाखा ने पूछा। वह अपनी बहन के पास खड़ी हो गई थी, चारों ओर बड़ी-बड़ी आँखों से देख रही थी, और अब डर के मारे क्षपणक का हाथ कसकर पकड़ लिया और उससे लिपट गई। क्षपणक ने सहज ही रानी को सुरक्षात्मक रूप से अपने हाथ में ले लिया।

"मुझे नहीं पता," पार्षद ने कहना शुरू किया, उनकी निगाहें दक्षिणी आकाश की ओर घूम रही थीं। "ऐसा हो सकता है—"

वह रुक गई।

आकाश में कुछ था, जो तेजी से उज्जैनी की ओर बढ़ रहा था। कोई विशालकाय चीज...

नहीं, सिर्फ एक चीज नहीं। बहुत सी चीजें। पंखों पर।

अचानक हवा में कर्कश, भयानक चीखें गूंज उठीं जो कानों को चीर रही थीं और नसों में खून जमा रही थीं। विशाखा ने अपना सिर क्षपनाका के कंधे में छिपा लिया, मानो शोर से बचने के लिए अपनी बहन की लटों में शरण ले रही हो, जबकि परामर्शदाता दांत पीसते हुए ऊपर से उड़ती हुई चीजों को घूर रही थी...

वे अब तक देखे गए सबसे विचित्र और भयानक जीव थे। वे मूल रूप से पक्षी थे, इसमें कोई संदेह नहीं था; उनके पास चौड़े, शक्तिशाली पंख थे जिनका उपयोग वे अविश्वसनीय गति से उड़ने के लिए करते थे। उनके शरीर बड़े और पैर लंबे थे, और जब उनमें से एक महल के ऊपर से गुजरा, तो वह चुनौती भरे स्वर में चीखता हुआ

झील की सतह पर लहरें पैदा कर रहा था, तभी क्षपणका ने उसके पैरों के अंत में नुकीले, तेज और क्रूर पंजे देखे।

लेकिन पार्षद का ध्यान वास्तव में उन पांच सिरों पर गया जो उन जानवरों के शरीरों से निकले थे, प्रत्येक खुरदरा, गोल सिर एक लंबी, घुमावदार, झुर्रीदार गर्दन पर हिल रहा था, प्रत्येक गर्दन और सिर अलग-अलग दिशाओं में खिंच रहे थे, जिससे पांचों चीखते हुए सिर एक दूसरे के विपरीत काम करते हुए प्रतीत हो रहे थे। ऐसा लग रहा था कि उन जानवरों को पूरी तरह से बेकाबू होने से रोकने वाले सींग वाले जीव थे जो उन प्राणियों की पीठ पर बैठे थे और उनका मार्गदर्शन कर रहे थे...

अचानक एक प्राणी हवा में ही घूम गया और महल की ओर झपटा—और सीधे उस चबूतरे की ओर आया जहाँ बहनें खड़ी थीं, पूरी तरह से असुरक्षित और छिपने की कोई जगह नहीं थी। किसी कारणवश हिलने-डुलने में असमर्थ, क्षपनाका देखती रही कि वह जानवर उस पर और विशाखा पर निशाना साधते हुए नीचे आ रहा है, सूर्य की तेज रोशनी उसके शरीर को ढके हुए भारी, काले शल्कों के कवच को चीर रही है, उसके पाँचों सिर ऊपर उठे हुए हैं और द्वेष से भरी दस छोटी-छोटी आँखों से सीधे उसकी ओर देख रहे हैं।

उस राक्षस का सवार पाँच सिरों के पीछे छिपा हुआ था, लेकिन पार्षद की नज़र से राक्षस के पैर नहीं छिपे थे—जैसे ही वह बहनों के पास पहुँचा, उसके पैर फैल गए और आगे की ओर बढ़ गए, उसके विशाल पंजे चौड़े होकर अपने शिकार को पकड़ने के लिए मुड़ गए... या उन्हें टुकड़ों में काटने के लिए। उसी क्षण, राक्षस के एक सिर ने अपनी चोंच खोली और गुस्से में चीखा।

चीख ने सन्नाटा तोड़ दिया और क्षपनाका हरकत में आ गईं। विशाखा का हाथ कसकर पकड़े हुए, वह घूमीं और अपनी बहन को खींचते हुए दरवाजे की ओर बेताब होकर दौड़ीं। उन्होंने तीन कदम ही बढ़ाए थे कि उनके मन में एक विचार कौंध गया—वे इस प्राणी से कभी बच नहीं पाएंगी, चाहे वह कुछ भी हो। विशाखा और वह दरवाजे तक आधे रास्ते भी नहीं पहुंच पाएंगी। सलाहकार ने सहज ही खुद को छत पर गिरा दिया, रानी को जोर से खींचते हुए, उन्हें भी नीचे खींच लिया, लेकिन विशाखा के गिरने को अपने शरीर से संभाल लिया। वे ढेर हो गईं, लेकिन क्षपनाका तुरंत उठ खड़ी हुईं, अपनी बहन के ऊपर लुढ़क गईं, उन्हें उस जानवर

के पंजों से बचा रही थीं जो उनकी ओर बढ़ रहे थे... करीब आ रहे थे... उनकी त्वचा को चीर रहे थे... उनकी पीठ और बाएं कंधे को चीर रहे थे...

सफेद अंधा कर देने वाला दर्द

क्षपणका ने अपनी आँखें बंद कर लीं और विशाखा को अपने नीचे दबाकर यथासंभव नीचे झुक गई...

दर्द

...और फिर वह प्राणी दूर जाने लगा, आसमान में वापस उड़ने लगा, उसके पंजे खाली थे...

क्षपणका ने अपने बालों को आँखों से झटककर ऊपर देखा और सुनिश्चित किया कि खतरा टल गया है। फिर उसने विशाखा की ओर देखा, जो भयभीत होकर उसे घूर रही थी। राक्षस द्वारा दिए गए घावों से खून बहता देखकर, क्षपणका अपनी बहन से दूर हटी और झट से खड़ी हो गई।

“हमें अंदर जाना होगा,” उसने दर्द को नजरअंदाज करते हुए फुसफुसाते हुए कहा और रानी को अपना हाथ बढ़ाया। “उठो।”

विशाखा ने हाथ पकड़ा और खड़ी हो गई। "ये क्या हैं?" उसने शहर के ऊपर उड़ते हुए उन जानवरों को देखकर स्तब्ध होकर पूछा।

पार्षद ने चिढ़कर कहा, "पता नहीं। जल्दी करो।"

विशाखा को घुमाते हुए, क्षपणक ने उसे आधा धक्का देते हुए और आधा घसीटते हुए महल की सुरक्षा की ओर ले गया। द्वार पर पहुँचकर, सलाहकार ने विशाखा को अंदर धकेल दिया और फिर यह सुनिश्चित करने के लिए मुड़ा कि वे वास्तव में सुरक्षित हैं।

वे थे। कम से कम फिलहाल तो। सबसे नज़दीकी जानवर झील के उस पार, उज्जैनी के ऊपर नीची उड़ान भर रहा था।

फिर, बिना किसी चेतावनी के, जिस प्राणी को वह देख रही थी, उसने अपनी पांचों चोंचें खोल दीं और शहर पर आग के बड़े-बड़े गोले थूक दिए।

Hiranyakashipu

हर तरफ चीख-पुकार मची हुई थी।

उन्मादपूर्ण चीख-पुकार, हर दूसरी आवाज़ को दबा रही थी, जिससे दांत असहनीय रूप से किटकिटा रहे थे और कान के पर्दे दर्द से फड़क रहे थे। फिर भी, शंकु का ध्यान चीख-पुकार पर उतना नहीं था जितना कि उस कारण पर था—या उन कारणों पर था—जो इसे पैदा कर रहे थे।

अवंती से आए लोग घाटी के शीर्ष पर जड़वत खड़े थे, और डर से कांपती हुई हवा की धाराओं को ऊपर उठते और उनके चारों ओर कसते घेरों में घूमते हुए देख रहे थे। तेल जैसे काले घने आवरण से निकली लताएँ उनकी ओर बढ़ती हुई, उन्हें टटोलती और उकसाती हुई लग रही थीं। पुरुषों ने अपने हथियार निकाल रखे थे और तेल जैसे काले आवरण के कुंडलियों पर बेतरतीब ढंग से वार कर रहे थे, और शंकु को ग्रीष्मा की डरी हुई, हताश, गिड़गिड़ाती हुई आवाज़ के कुछ अंश सुनाई दे रहे थे...

"—तलवार चाहिए—"

कृपया मेरी रक्षा करें।

लेकिन किसी ने भी उस डाकू को नहीं पहचाना, और तेल से सना हुआ वह व्यक्ति गोल-गोल घूमता हुआ अंदर की ओर बढ़ता गया।

और फिर तेल के रंग का एक गुबार उठा और झपटा, जिसने एक सैनिक की कलाई पकड़ ली।

चीख-पुकार के बीच, वह आदमी दहशत में चिल्लाया, "मेरी मदद करो!" तभी तेल जैसे काले रंग का एक और गुच्छा उसकी गर्दन के चारों ओर लिपट गया और उसे हवा में खींच लिया। "हे— उक!" वह घुटते हुए, घुरघुराया, उसके पैर बेतहाशा छटपटा रहे थे और आँखें बेहूदा होकर बाहर निकल रही थीं।

अपने साथी को अपने सिर के ऊपर उठाते हुए देखकर समूह के बाकी लोग अवाक रह गए, उनके चेहरे का रंग उड़ गया क्योंकि एक विशाल तेल-काले रंग के भीतर एक तेल-काला शून्य खुल गया और सैनिक उसमें गायब हो गया, एक ही

झटके में अस्तित्व से मिट गया, उसकी तलवार बेकार हो गई और तेल-काले मुंह के किनारे से फिसलकर जमीन पर एक धीमी, धातु जैसी धमक के साथ गिर गई।

"यह क्या चीज है?" किसी ने चीख कर कहा।

ग्रीष्मा चिल्लाई, "भागो, भागो," लेकिन कोई नहीं हिला। भागने की कोई जगह नहीं थी। चारों ओर से तेल के काले रंग की चीख-पुकार गूंज रही थी।

उन आदमियों का ध्यान भटकते देख, तेल-काले रंग का वह व्यक्ति फिर से आगे बढ़ा और उनमें से एक को गर्दन और बांहों से पकड़कर ऊपर उठा लिया।

चीख-पुकार के शोर में सिपाही के मुंह से निकली कोई बात सुनाई नहीं दी। वह तेल से सने उस काले मुख पर वार कर रहा था, अपनी तलवार से उसे चीर रहा था, और उसकी आँखें शंकु को ढूंढ रही थीं, मानो किसी तरह उसकी मदद के लिए आ जाए। उसे ऊपर और ऊपर उठाया जा रहा था, और फिर से तेल से सना मुंह खुल गया, मानो उसे भी पूरा निगल जाना चाहता हो।

फिर चीख-पुकार के बीच एक और चीख सुनाई दी। शंकु ने देखा कि यह उसके आसपास खड़े पुरुषों की आवाज़ थी। उसे एहसास हुआ कि यह आवाज़ उसके मुंह से भी निकल रही थी, उसके खुले मुंह से फूट रही थी, उस आतंक की अभिव्यक्ति जिसने उसे जकड़ लिया था और उसे जकड़ रहा था।

तेल से सना हुआ मुंह चौड़ा खुला हुआ था, सैनिक उसके ऊपर लटका हुआ था और चीख रहा था।

चीखना-चिल्लाना, चीखना-चिल्लाना।

उन पर तेल जैसा कालापन छा रहा था, मानो पिछली रात खुले मैदान में हुआ हो। किसी बुरे सपने की तरह, बस अंत में जागने की कोई उम्मीद नहीं थी। एक ऐसा बुरा सपना जो अंत ही था...

"अपने हथियार नीचे फेंक दो," शंकु चिल्लाई, उसके मुंह से लगातार निकल रही चीख के बीच उसने शब्दों को जबरदस्ती बाहर निकाला।

किसी तरह, चीख-पुकार और शोर के बीच भी उन आदमियों ने उसकी आवाज़ सुन ली। वे उसे ऐसे घूरने लगे मानो उन्होंने उसकी बात गलत सुनी हो।

"अपने हथियार नीचे रख दो," उसने दोहराया।

वे उसे ऐसे घूर रहे थे मानो वह अचानक पागल हो गई हो, उन्होंने अपनी तलवारें और भाले और भी कसकर पकड़ लिए, इस डर से कि कहीं वे अवचेतन रूप से

प्रभावित होकर अपने हथियार न गिरा दें।

"हम यहाँ लड़ने नहीं आए हैं," पार्षद ने उन पर चिल्लाते हुए कहा। उसने अपनी तलवार ज़मीन पर इतनी दूर फेंक दी कि कोई उसे उठा न सके, फिर अपनी नज़र चारों ओर फैले काले रंग पर डाली। "हम यहाँ लड़ने नहीं आए हैं," उसने विरोधाभासी चुनौती भरे लहजे में उस काले रंग को संबोधित करते हुए कहा।

तेल के काले रंग का घूमना धीमा पड़ गया। चीखने-चिल्लाने की तीव्रता कम हो गई।

शंकु ने उन आदमियों की ओर देखा और सिर हिलाया। वे आदमी असमंजस में एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"नहीं, नहीं... तुम लोग क्या कर रहे हो—" ग्रीष्मा ने कहना शुरू किया, लेकिन सैनिक एक-एक करके अपने हथियार डालने लगे थे।

"नहीं, यह पागलपन है," डाकू ने विरोध किया। "हम मारे जाएँगे—"

वह रुक गया और देखता रह गया जब तेल से सने मुंह के ऊपर लटका हुआ सैनिक अनाड़ीपन से जमीन पर उतारा गया। मुंह स्वयं तेल के उस काले रंग में विलीन हो गया।

शंकु ने अपनी हथेलियाँ जोड़ लीं। उन्होंने काले तेल के घूमते हुए समूह को संबोधित करते हुए कहा, "हम शांति से आए हैं। हम अवंती के सम्राट विक्रमादित्य के दरबार से आए हैं और दानवों के स्वामी शालिवाहन से दर्शन करने आए हैं।"

काफी समय तक कुछ नहीं हुआ।

तेल-काला रंग समूह के चारों ओर मथता और चक्कर लगाता रहा। छायादार हवाओं से उत्पन्न शोर धीमी होकर एक कर्कश विलाप में बदल गया।

फिर, अंत में, तेल-काला रंग पिघलकर राख का चूर्ण बनने लगा, और राख के कण आपस में मिलकर जलते हुए कोयले के टुकड़े बन गए, और धीरे-धीरे, घूमता हुआ पिंड स्थिर होकर स्वयं को पुनः निर्मित करने लगा, अंगारे जली हुई लकड़ी में परिवर्तित हो गए, लकड़ी के ठूंठ शाखाओं और वृक्षों के तनों के बड़े-बड़े टुकड़ों में पुनर्मिलित हो गए... अचानक, इससे पहले कि समूह में कोई इस तथ्य को समझ पाता, हवा साफ हो गई, और उनके चारों ओर पेड़ों और लताओं से बनी तीन विशाल, चार भुजाओं वाली आकृतियाँ खड़ी थीं, उनके सींग वाले सिर लगभग वृक्षों

की चोटियों को छू रहे थे, उनकी चारों मांसल भुजाएँ दंडक के तल पर तंतुओं की तरह लताएँ फैलाए हुए थीं।

***

तीन दिनों में दूसरी बार उज्जैनी में भीषण गर्मी देखने को मिली।

जलती इमारतों से उठती गर्मी और धुआँ गलियों में बवंडर की तरह घूमता हुआ आसमान में फैल गया, जहाँ शहर पर हमला करने वाले जीव उड़ते हुए गिद्धों के बीच बेतरतीब ढंग से चक्कर लगा रहे थे, अपने विशाल पंखों से हवा को पीट रहे थे और दर्जनों आग के गोले फेंक रहे थे। उनकी चीखें उन अलार्म घंटियों की आवाज़ को दबा रही थीं जिनका अब कोई मतलब नहीं रह गया था। शहर में अत्यधिक सतर्कता और दहशत का माहौल था, नगर रक्षक और शाही सेना के सैनिक उज्जैन के नागरिकों को एक जलते हुए आश्रय से दूसरे आश्रय तक सुरक्षित पहुँचाने की पूरी कोशिश कर रहे थे, साथ ही खुद को भी खतरे से बचा रहे थे। अगर प्रतिरोध का कोई नामोनिशान नहीं था, तो इसका कारण यही था कि लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना प्राथमिकता थी, और वैसे भी वे जीव हवा में थे, पहुँच से बहुत दूर और इतने तेज़ थे कि उन पर पलटवार करना नामुमकिन था। फिलहाल, सबसे अच्छा उपाय यही था कि चुपचाप रहें और अपनी जान बचाएँ।

इसके अलावा, जैसा कि क्षपनाका ने उन तीन अवसरों पर सीखा था जब प्राणी इतने नीचे उड़ रहे थे कि उसके तीर उन्हें लग सकें, उसके तीर उनकी काली, खुरदरी खाल से बस फिसलकर निकल गए थे।

घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ के बीच उसने वरारुची को पुकारते हुए कहा, “तीरंदाज टुकड़ियों को यह बता देना चाहिए कि उनके कवच को भेदना मुश्किल है। लोहे को बर्बाद न करना ही बेहतर है।”

“इस अफरा-तफरी में अपनी बात लोगों तक पहुंचाना मुश्किल होगा, लेकिन हमें कोशिश करनी चाहिए।” वरारुची ने उस जीव की ओर देखा जिसका वे पीछा कर रहे थे, उसकी विशाल परछाई उनके आगे सड़क और छतों पर से गुज़र रही थी। “उम्मीद है कि बैलिस्टा काम करेंगे। यही हमारी एकमात्र उम्मीद है।”

“क्या वराहमिहिर ने बताया कि कितने थे?”

"केंद्रीय चौकी में पांच लोग।"

"क्या उनके पास बैलिस्टा के लिए पर्याप्त तीर हैं?"

“कोई अंदाजा नहीं। वहां पहुंचने पर पता चल जाएगा।”

क्षपनाका ने सिर हिलाया और अपने सिर के आभूषण के एक कोने से अपने चेहरे का निचला आधा हिस्सा ढक लिया ताकि धुआं और राख उसकी नाक और मुंह में न जाए।

दोनों पार्षदों ने उस हमलावर जीव पर गरजते हुए हमला किया। वह जानवर मानो उन्हें चिढ़ा रहा था, सीधी रेखा में उड़ता हुआ, बचे हुए गिद्धों को अपने विनाशकारी रास्ते से बचने के लिए इधर-उधर भटकने और बचने पर मजबूर कर रहा था। उज्जैनी पर आग के पहले गोले गिरते ही गिद्ध तुरंत उड़ गए थे, अपने ठिकाने छोड़कर आग की लपटों से बचने के लिए आसमान में चले गए थे। हालांकि कुछ गिद्ध जल गए थे, लेकिन हमलावर जानवरों ने ज्यादातर गिद्धों को नजरअंदाज कर दिया था।

“घटिया लोग,” राजा के भाई ने ऊपर देखते हुए धीमी आवाज़ में अपशब्द कहे।

क्षपणक ने उसकी ओर एक भौंह उठाई।

“गिद्ध। उन्हें पता था कि मौत का साया मंडरा रहा है। इसीलिए तो वे आए थे।” वरारुची ने भागते हुए पक्षियों को घृणा भरी निगाहों से देखा। “वे अभी भाग रहे हैं, लेकिन सब कुछ खत्म होते ही लौट आएंगे। वे हमेशा ऐसा ही करते हैं, मौत के अवशेषों पर दावत करने के लिए। नीच प्राणी।”

मानो उनके पीछा करने की निरर्थकता को रेखांकित करने के लिए, जिस प्राणी का वे पीछा कर रहे थे, वह अचानक मुड़ा और आकाश में उड़ गया, जिससे पूर्व दिशा में आधा मील दूर एक इलाके पर आग की बौछार हो गई। अपने घोड़ों को रोकते हुए, पार्षदों ने हर जगह हो रहे नरसंहार को क्रोध और हताशा से देखा। उनके दाहिनी ओर, एक घर और उससे लगा हुआ अन्न भंडार जल रहा था; ठीक आगे, कुंजला और दो अन्य दरबारियों के खाली आवास सुलग रहे थे; और जहाँ वे अपने घोड़ों पर बैठे थे, वहाँ से क्षपनाका और वरारुचि नदी के किनारे स्थित सराय में धुआँ और आग फैलते हुए देख सकते थे।

"हमने कल ही इन इलाकों में लगी आग बुझाई थी," वरारुची ने निराशा से अपना सिर हिलाया।

क्षपनाका चुप रही, अपने दांत पीसते हुए क्योंकि जानवर के पंजे से लगे घाव का दर्द अचानक भड़क उठा।

उनके पीछे शोरगुल मच गया। मुड़कर देखने पर पार्षदों ने देखा कि सैनिकों का एक दल नागरिकों के एक बिखरे हुए समूह को सड़क पर घसीट रहा है। नागरिक दहशत में थे, उनमें एक युवा माँ भी थी जो अपने बच्चे को सीने से लगाए रोती हुई धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

"एक तरफ रहो, लेकिन चलते रहो," सैनिकों ने आदेश दिया और दल को तेजी से आगे बढ़ने के लिए कहा।

“अगर हालात ऐसे ही चलते रहे तो इस शहर का कुछ भी नहीं बचेगा,” वरारुची ने बुदबुदाते हुए कहा, उनकी आवाज़ में बेबसी झलक रही थी। फिर खुद को संभालते हुए उन्होंने कहा, “चलो चलते हैं।”

क्षपनाका ने कुछ नहीं कहा, हालांकि उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि वह भी उम्मीद खोने के कगार पर थी। उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ी मारी और तेज़ी से भागे, तीन और जलती हुई सड़कों को पार करते हुए केंद्रीय छावनी पर पहुँचे, जहाँ सैनिक आदेशों का पालन करने के लिए दौड़ रहे थे।

वरारुची घोड़े से उतरकर पास से गुजर रहे एक पहरेदार कप्तान का हाथ पकड़ लिया। "सभी तीरंदाजों को यह संदेश पहुंचा दो कि वे इन चीजों पर तीर चलाकर अपने तीर बर्बाद न करें," कप्तान ने कहा। "समझ गए?"

"जी हां, माननीय।"

“अच्छा। रॉयल इंजीनियर्स का कमांडर कहाँ है?”

"छत पर, माननीय न्यायाधीश।"

वररुचि सीढ़ियों की ओर जाने वाले दरवाजे की ओर बढ़े। क्षपणक उनके पीछे-पीछे गए।

“क्या खबर है, कमांडर?” सम्राट के भाई ने दरवाजे से बाहर निकलते हुए और छत पर चढ़ते हुए पूछा। “बैलिस्टा के साथ कोई सफलता मिली?”

रॉयल इंजीनियर्स के प्रमुख, जो बड़ी मूंछों और घुंघराले बालों वाले भारी-भरकम व्यक्ति थे, छत के किनारे पर लगे एक बैलिस्टा से मुड़े। तीन आदमी उस विशाल मशीन के पास दुबके हुए थे, जिसमें पहले से ही एक भारी तीर लगा हुआ था, जो

दागे जाने के लिए तैयार था। छत के दाएं और बाएं ओर दो और बैलिस्टा इसी तरह लगे हुए थे, उन पर सैनिक तैनात थे और तीर लगे हुए थे।

"वास्तव में नहीं, महोदय," इंजीनियर ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"ऐसा क्यों?" वरारुची बैलिस्टा के पास आया।

"ये बदमाश जानवर बहुत तेज़ हैं," उस आदमी ने फिर कंधे उचकाते हुए कहा। "बैलिस्टा भारी होते हैं और उन्हें घुमाने और निशाना साधने में समय लगता है। जब तक मेरे आदमी निशाना साधते हैं, तब तक वे जीव दिशा बदल कर भाग जाते हैं।"

"कितने प्रयास किए गए हैं?"

"हमने अब तक छह तीर चलाए हैं, और सभी निशाने से काफी चूक गए हैं।"

वररुची ने मुंह बनाया। "तुम्हारे पास कितने तीर बचे हैं?"

इंजीनियर ने छत के चारों ओर देखा। "लगभग बीस और।"

वररुचि के माथे पर तिलक की झुर्रियाँ पड़ गईं। "अच्छा नहीं है।" उसने अप्रसन्नता से क्षपणक की ओर देखा।

तभी, एक प्राणी पास के शहर के एक हिस्से पर झपट्टा मारता हुआ आया, उसके पाँचों सिर एक साथ चीखे जिससे पूरा वातावरण गूंज उठा। छत पर मौजूद लोग उसकी उड़ान देख रहे थे, और अपने कमांडर के इशारे पर, बैलिस्टा चलाने वाले लोग मशीन को घुमाकर उस प्राणी की ओर निशाना साधने लगे। हालांकि, प्राणी ने फिर से अपना रुख बदला और आग उगल दी। उज्जैन का एक और हिस्सा आग की लपटों में घिर गया।

"नहीं, फिर से नहीं," वरारुची ने झुंझलाहट में कहा।

उस विशालकाय जीव को ऊपर की ओर उड़ते देख, क्षपनाका ने उस पर सवार सींगों वाले प्राणी को घूरकर देखा, जो उसी क्षण छत की ओर मुड़ा। उस प्राणी ने बीच हवा में ही अपना रास्ता बदलकर छत की ओर रुख किया, और पल भर में ही वह सीधे चौकी की ओर बढ़ रहा था।

"यह हमारी तरफ आ रहा है," कमांडर चिल्लाया, और सैनिक बैलिस्टा से उठकर इधर-उधर भागने लगे।

क्षपनाका टस से मस नहीं हुई। क्रोध से भरी हुई, उसने सींगों वाले सवार से आँखें मिलाईं। ये लोग उसके अनमोल शहर को बर्बाद कर रहे थे, और वह विनाश को देखने के अलावा कुछ नहीं कर पा रही थी... पीठ में हो रहे दर्द से होंठ दबाते हुए,

बिना सोचे-समझे, अपने दिल की बात मानते हुए, क्षपनाका ने अपना धनुष उठाया। एक ही झटके में, उसने तीर को धनुष पर चढ़ाया और डोरी को पूरी तरह पीछे खींच लिया... धनुष उठाया... निशाना साधा...

तीर तेज़ी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा, तीव्र और घातक। वह सवार के मुँह पर लगा, उसके होंठ फट गए और दाँत चकनाचूर हो गए। तीर पूरी तरह से अंदर घुस गया, उसके सिर के पिछले हिस्से में जा लगा और दर्द का एहसास होने से पहले ही उसकी मौत हो गई। वह उस जीव की पीठ से लुढ़क गया और नीचे जल रही इमारतों में से एक में जा गिरा।

क्षपणका ने यह सब नहीं देखा। उसके पास एक दूसरा तीर तैयार था, जिसे उसने उस प्राणी के पाँच हिलते हुए सिरों में से एक पर चला दिया। तीर खोपड़ी के ऊपरी हिस्से को भेद गया, और सिर लंबी गर्दन के अंत में मूर्खतापूर्ण ढंग से लटक गया, नीचे की ओर झुकता हुआ, बदरंग होता चला गया...

क्षपणक तीसरा बाण उठाने ही वाला था कि तभी बाकी के चारों सिरों से आग निकलने लगी।

"दूर हो जाओ।"

वरारुचि ने क्षपनाका की कोहनी पकड़कर उसे खुली छत से नीचे खींच लिया। वे दोनों दौड़कर दरवाजे से अंदर घुस गए, तभी उनके पीछे आग के गोले गिरे और फट गए, जिससे चारों ओर लपटें बरसने लगीं। पार्षदों के झुकने और दीवारों के पीछे छिपने की कोशिश में आग दरवाजे से अंदर घुस आई।

आग को भड़काने के लिए आसपास कोई ज्वलनशील पदार्थ न होने के कारण, लपटें पीछे हट गईं।

सांस रोकते हुए, वरारुची ने सीढ़ियों के उस हिस्से की ओर देखा जहाँ लोग huddled थे। "क्या सब लोग सुरक्षित पहुँच गए?"

"मुझे ऐसा लगता है," रॉयल इंजीनियर्स के कमांडर ने जल्दी से गिनती करते हुए कहा।

वररुची ने दरवाजे से झाँका। उस प्राणी का कोई निशान नहीं था। वह उड़कर निकल गया था। उठकर उसने अपने कपड़े झाड़े और वापस छत पर चला गया।

लाल बलुआ पत्थर से बनी छत पर तो कोई असर नहीं पड़ा, लेकिन दो बैलिस्टा में आग लग गई थी और वे धीरे-धीरे जल रहे थे, लकड़ी से धुआं निकल रहा था और

वह काली पड़ रही थी।

इंजीनियर ने अपने आदमियों से गरजते हुए कहा, "जल्दी से पानी लाओ।"

क्षपनाका, वरारुचि के पास आई और अपनी पीठ की मांसपेशियों को सिकोड़ते हुए दर्द से कराह उठी। उसने चोट का जायजा लिया।

"मैं इसे रोक नहीं सकी," उसने खेदपूर्ण चेहरा बनाते हुए कहा।

"आपको राइडर मिल गया," बुजुर्ग पार्षद ने जवाब दिया। "वाह, क्या शानदार शूटिंग थी!"

"मुझे इसका पूरा फायदा उठाना था।" क्षपणक ने महल की ओर देखा, जिसके ऊपर पाँच राक्षस चक्कर लगा रहे थे। "कम से कम अब हमें पता है कि इन जीवों के सिर कमजोर हैं। उम्मीद की किरण अभी बाकी है... अगर वे हमारी सीमा के भीतर आ गए तो।"

वररुचि ने क्षपनाका की दृष्टि रेखा का अनुसरण किया। उन्होंने कहा, "सवाल यह है कि महल इस हमले का कब तक सामना कर पाएगा?"

क्षपणका ने गंभीर भाव से सिर हिलाया। "हमें वहीं वापस जाना चाहिए। कटार वहीं है, और वराहमिहिर और धनवंतरी को कुछ मदद की ज़रूरत होगी।" थोड़ा रुककर उसने आगे कहा, "वैसे भी हम यहाँ कुछ खास नहीं कर सकते। पुरुष अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं..."

वररुची ने आकाश की ओर देखा, जो एक बार फिर धुएँ से ढका हुआ था और खूंखार पक्षियों की उड़ान से भिनभिना रहा था। बचे हुए गिद्ध धुएँ के बादलों में बने छिद्रों से होकर गायब हो रहे थे।

"ऐसा नहीं है कि हम कहीं कुछ खास कर पाएंगे," उसने धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन इतनी तेज़ कि क्षपनाका सुन सके। "पर तुम सही कह रहे हो। चलो चलते हैं।"

वे छावनी भवन से बाहर निकले और अपने घोड़ों की ओर चल पड़े।

अपने घोड़े पर सवार होकर क्षपणका ने यह देखने के लिए नज़र घुमाई कि वे जीव कहाँ हैं, ताकि वह स्थिति का जायज़ा ले सके। गिद्ध सब गायब हो चुके थे। उसने आकाश में काले और भयावह दिखने वाले दो जानवरों का पीछा किया। आकाश गहरा और भयावह होता जा रहा था, बादल रंग की तरह फैल रहे थे, हर धब्बा और घुमाव लहरदार छायाओं से भरा हुआ था, मानो वे कोई गहरा, कड़वा रहस्य छिपा

रहे हों। प्रकाश भी बदल गया था, मंद पड़ रहा था, और आग की गर्मी के बावजूद, हवा ठंडी हो गई थी, मानो कहीं से अचानक हवा चलने लगी हो।

क्षपणका कांप उठी। उसे महसूस हो रहा था कि हवा में कुछ अजीब सा है। कुछ विचित्र, आने वाली किसी और घटना का आभास...

***

महल में मौजूद किसी ने भी आकाश से उल्कापिंड को गिरते हुए नहीं देखा।

बाद में, शहर के कुछ देवताओं और अप्सराओं ने दावा किया कि उन्होंने दूर से महल के ऊंचे शिखरों की ओर एक आग का गोला गिरते हुए देखा था। लेकिन अंदर मौजूद लोगों के लिए, महल के मुख्य प्रांगण पर उल्कापिंड के टकराने की भयानक गड़गड़ाहट ने बड़े पैमाने पर मृत्यु के आगमन की घोषणा कर दी।

एक या दो गज व्यास का और धुआं उगलता हुआ उल्कापिंड प्रांगण में गिरा और काले पत्थरों की बौछार के साथ फट गया, जिससे मलबा चारों ओर बिखर गया और प्रांगण के पुराने, दरार वाले पत्थरों पर सुनहरी लपटें और अंगारे फैल गए। जैसे ही गड़गड़ाहट की गूंज आसपास की चट्टानों से टकराकर गरज की तरह गूंजी और महल अपनी नींव पर कांप उठा, आग के ढहते गोले से एक आकृति उभरी। सुनहरे बालों से भरे सिर पर सींगों का मुकुट और सुनहरी दाढ़ी; एक शक्तिशाली, मांसल शरीर, चमकदार और काले रंग का; कठोर आंखों वाला चेहरा; कांटों से जड़ी एक भारी गदा को पकड़े हुए हाथ।

जैसे ही उल्कापिंड उसके चारों ओर ढहने लगा, हिरण्यकशिपु ने अमरावती के महल और चारों ओर की चट्टानों को निहारा। फिर, लपटों से बचते हुए, वह प्रवेश द्वार की ओर बढ़ा।

असुर अभी द्वार तक पहुंचा भी नहीं था कि पहला देव हलचल के स्रोत का पता लगाने के लिए दौड़ पड़ा। दो और देव उसके पीछे-पीछे आ गए, और तीनों ने एक साथ हिरण्यकशिपु को देखा, उनकी आंखें चौड़ी हो गईं और उन्होंने अपनी तलवारें उठा लीं। वे घुसपैठिए को रोकने के लिए सीढ़ियों से नीचे उतरे, लेकिन असुर स्वामी ने अपनी विशालता के अनुरूप अप्रत्याशित गति से उन्हें चौंका दिया, और अपने गदा के सटीक प्रहारों से पहले एक देव को, फिर दूसरे को अपने रास्ते से हटा दिया। उसने अपने नुकीले कांटों और नुकीले दांतों से लिपटे दस्ताने से तीसरे देव के

चेहरे पर मुक्का मारा, और उसे तलवार म्यान से निकालने का मौका मिलने से पहले ही नीचे गिरा दिया।

हिरण्यकशिपु धूप से जगमगाते प्रांगण से निकलकर महल की छाया में प्रवेश कर गया, और प्रकाश और छाया के बीच उस दहलीज पर, उसका शरीर क्षण भर के लिए धुंधला सा चमक उठा। जैसे ही वह अंदर दाखिल हुआ, एक धुंधली आकृति उससे अलग होकर प्रकट हुई। पलक झपकते ही, वह आकृति साकार हो उठी और असुर की हूबहू प्रतिकृति बन गई, सींगों से लेकर पैरों की उंगलियों तक बिल्कुल एक जैसी। असली हिरण्यकशिपु कुछ पल के लिए धुंधला होकर गायब हो गया, और उसकी परछाई सीढ़ियों के मुहाने पर उमड़ते हुए नए देवताओं के समूह का सामना करने के लिए मुड़ गई।

देवता हिरण्यकशिपु के प्रतिरूप की ओर बढ़े, असुर को घेरते हुए चारों ओर फैल गए, जो उनके बीच खड़ा होकर उनका जायजा ले रहा था। देवताओं ने कुछ देर तक छलाँग लगाई, फिर उनमें से दो ने आगे बढ़कर असुर की खुली पीठ पर वार किया—वे असुर को मुँह खोले देखते रहे, क्योंकि उनकी तलवारें हवा को चीरती हुई गुज़र रही थीं, जो अजीब तरह से गाढ़ी और भारी लग रही थी, मानो पानी या गुड़ हो। जहाँ-जहाँ तलवारें लगीं, असुर के शरीर में कंपन हुआ, हालाँकि न तो कोई तलवार त्वचा, मांस या हड्डी को छू पाई, और न ही ऐसा लगा कि उन्होंने अपने लक्ष्य को कोई चोट पहुँचाई हो। लापरवाही से मुड़कर असुर ने दोनों हमलावरों का जायजा लिया, और तुरंत ही अन्य देवता अपनी तलवारों और भालों से उस पर टूट पड़े, वार करते और वार करते हुए।

देवताओं के हथियार असुर के आर-पार चले गए, मानो हवा में मौजूद भार को चीरते और छेदते हुए।

फिर, हिंसा के एक विस्फोट में, हिरण्यकशिपु के प्रतिरूप ने अपने गदा और नुकीले मुक्कों से उन देवताओं पर प्रहार किया, जो पास आकर खड़े हो गए थे और प्रहार करने की पूरी दूरी पर थे। ऊँची खिड़कियों से छनकर आती धूप में फटे चेहरों और धड़ों से निकला खून उड़ रहा था, और चीखें गुंबदनुमा छत तक गूँज रही थीं जहाँ दीपक काँप रहे थे और घबराहट में बुझ रहे थे। कुछ ही क्षणों में, सात मृत देवता हिरण्यकशिपु के प्रतिरूप के चरणों में पड़े थे, जो शांति से क्षत-विक्षत शरीरों

को पार करते हुए सीढ़ियों की ओर बढ़ गया, उसके गदा से खून की बूँदें सफेद संगमरमर के फर्श पर बरस रही थीं।

इसी बीच, असुर स्वामी चुपके से महल में प्रवेश कर गया, उसका शरीर क्षण भर के लिए फिर से प्रकट हो गया। उसके शरीर से एक और परछाई अलग हुई, जिसने आकार और संरचना धारण कर ली और उसी की एक और प्रतिकृति बन गई। यह प्रतिकृति मुड़कर दूसरी दिशा में चली गई, जिससे हिरण्यकशिपु सीधा आगे बढ़ता रहा, और अपने पीछे कई प्रतिरूपों को उत्पन्न करते हुए कभी दिखाई देता तो कभी ओझल हो जाता था।

वे दोनों रूप महल में देवताओं की खोज में भटकते रहे, और देवता उनकी इच्छा पूरी करते हुए युद्ध करने के लिए आगे आए, इस उम्मीद से कि वे घुसपैठिए को मार डालेंगे या पकड़ लेंगे, लेकिन इसके बजाय वे खुद क्रूर मृत्यु को प्राप्त हुए। और इस बीच, हिरण्यकशिपु अहि को जागृत करने के मंत्रों की खोज में और भी गहराई तक उतरता चला गया...

***

"राजगुरु, अब हम क्या करें?"

केदारा और वेतला भट्टा खाई के ऊपरी हिस्से में स्थित कुछ बड़े पत्थरों के पीछे छिप गए, जहाँ मगध सेना का अग्रिम दस्ता डेरा डाले हुए था। यह स्थान छिपने के साथ-साथ नदी के किनारे का अच्छा दृश्य भी प्रदान करता था, जहाँ सैनिक अभी भी आराम कर रहे थे, मगध सेना के शेष भाग के आने का इंतजार कर रहे थे और शराब के प्याले आपस में बाँटते हुए हँसी-मजाक और गीत गाकर समय बिता रहे थे। केदारा और उनके एक साथी ने उस स्थान का गहन निरीक्षण किया था और वापस आकर पुष्टि की थी कि टुकड़ी में वास्तव में एक हजार सैनिक थे।

"मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं," आचार्य ने उत्तर दिया। इधर-उधर हिलते-डुलते हुए, उन्होंने एक बार फिर पत्थरों के बीच से झाँककर नदी किनारे हो रही खुशियों को निहारा।

"जब तक पूरी सेना पार नहीं कर लेती, हम दर्रों की ओर जाने वाली सड़क पर नहीं जा पाएंगे," कप्तान ने कहा। "जब तक हम यहीं रुके रहेंगे, तब तक हम सुरक्षित रहेंगे।"

“हम्म,” पार्षद ने अनमने ढंग से सिर हिलाया। फिर, अपनी आँखें सिकोड़ते हुए, उन्होंने कहा, “क्या यह वही है जिसके बारे में मैं सोच रहा हूँ?”

केदारा की जिज्ञासा बढ़ गई और वह देखने के लिए आगे झुका।

“झंडे के पास खड़ा वह आदमी, जिसके हाथ में तलवार है और जो बाकी चार आदमियों से बात कर रहा है,” राजगुरु ने इशारा करते हुए कहा। “बड़ी मूंछों वाला।”

कप्तान ने और गौर से देखा। "माननीय न्यायाधीश महोदय, यह व्यक्ति जाना-पहचाना लग रहा है।"

वे कुछ देर और देखते रहे। फिर, जब कप्तान थकने लगा, तो जिस व्यक्ति को वे देख रहे थे, वह उनकी ओर मुड़ा और किसी के मजाक पर हंस पड़ा। वेताला भट्टा का चेहरा तुरंत खिल उठा।

“इसमें कोई शक नहीं कि यह वही है,” उसने कप्तान की कलाई पकड़ते हुए गुस्से से फुसफुसाया। “तांबूलम से सने दांत और वो मूंछें। मैं जनरल दैपायाना को कहीं भी पहचान लूंगा, भले ही हमारी मुलाकात को कुछ साल हो गए हों।” आचार्य का चेहरा गंभीर हो गया। “बेशक, उनसे मिलने की कोई खास इच्छा नहीं है।”

“उसकी छवि एक निर्दयी व्यक्ति की है, है ना?” केदारा ने बात समझते हुए पूछा।

“बेहद क्रूर। और पूरी तरह से चापलूस। मुझे लगता है कि राजा सिद्धसेना ने उसे केवल इसलिए बर्दाश्त किया क्योंकि वह एक चतुर रणनीतिकार था। मैं समझ सकता हूँ कि शूरसेना को वह क्यों पसंद आया होगा, दोनों एक ही जैसे हैं।”

"तो फिर, दैपायाना ओड्रा के लोगों के लिए अच्छी खबर नहीं हो सकती।"

वेताला भट्टा परेशान दिखे। “बिल्कुल नहीं। हमें इस सेना को रोकने का कोई न कोई तरीका ढूंढना ही होगा। या कम से कम, इसे कुछ समय के लिए टालना तो पड़ेगा ही।”

“कैसे, माननीय न्यायाधीश?”

काश मुझे पता होता।

पार्षद ने खाई में टकटकी लगाई, उसकी निगाहें मगध के सेनापति पर टिकी हुई थीं। वहाँ केवल पानी के बहने की आवाज़, कुछ पक्षियों की चहचाहट और नदी के निचले हिस्से से आती बेसुरी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। तभी वेताला भट्टा बोले।

"दस हजार सैनिकों की सेना भी एक ही व्यक्ति के आदेश पर चलती है।"

केदारा आचार्य को हैरानी से देखता रहा, समझने की कोशिश करता रहा। "इसका क्या मतलब है, राजगुरु?"

“इसका मतलब है कि मुझे इस सेना को ओड्रा की ओर बढ़ने से रोकने का एक तरीका मिल गया है,” मुख्य सलाहकार के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान आ गई। “मेरा भाला ला दोगे?”

***

"वह हर जगह है।"

नारदा ने अपने सामने मौजूद उस चेहरे को घूर कर देखा, जो खरोंचों से भरा और जर्जर था, और जिसकी आंखें भय से चौड़ी खुली हुई थीं।

“हर जगह का मतलब...?” उसने पूछा।

“वह एक ही समय में कई स्थानों पर मौजूद है,” देवता ने कांपती हुई आवाज में उत्तर दिया।

“ऐसा नहीं हो सकता,” नारद ने कहा और स्वयं देखने के लिए देवता को धक्का देकर आगे बढ़ गए। वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, तलवार की मूठ पर उनकी पकड़ और मजबूत हो गई, और वे एक ऐसे गलियारे में पहुँचे जहाँ से उन गलियारों में जाया जाता था जहाँ युवा अप्सराएँ गीत, नृत्य और मोहक कलाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करती थीं। उन्होंने दोनों ओर देखा, यह सोचते हुए कि कहाँ जाएँ, फिर उन्होंने युद्ध की आवाज़ सुनकर उसी दिशा में आगे बढ़े।

एक विशाल गलियारे में पहुँचकर, राजनयिक ने सबसे पहले बाईं ओर सीढ़ियों से नीचे हिरण्यकशिपु से लड़ रहे देवताओं के एक समूह को देखा। नारद ने उसके सुनहरे बालों और उसके विशाल सींगों से असुर को आसानी से पहचान लिया; उन्होंने यह भी देखा कि संख्या में कम होने के बावजूद, असुर स्वामी देवताओं पर भारी पड़ रहा था, उसने एक के बाद एक दो को पलक झपकते ही मार गिराया। शेष देवता पीछे हट गए, और असुर ने तुरंत गलियारे पर अपना पैर जमा लिया।

नारद देवताओं को सहायता देने के लिए आगे बढ़ने ही वाले थे कि उन्हें नीचे गलियारे में शोर सुनाई दिया। तीन कदम चलकर वे रेलिंग पर झुके और नीचे हिरण्यकशिपु को एक और लड़ाई में उलझा देखकर दंग रह गए। उन्होंने अविश्वास से देखा कि हिरण्यकशिपु ने एक देवता के सिर पर अपना गदा चलाया और उसे

चकनाचूर कर दिया... नारद ने अपनी दृष्टि सीढ़ियों के ऊपर की ओर वापस की, जहाँ पहला हिरण्यकशिपु दूसरे देवता को पीट-पीटकर मार रहा था।

वह हर जगह है।

लेकिन ऐसा नहीं हो सकता, नारद ने स्वयं से दोहराया, असुर स्वामी के दो रूपों को देखते हुए, उनमें अंतर करने की कोशिश की और महसूस किया कि वह ऐसा नहीं कर सकते। यह कैसी चाल थी, और हिरण्यकशिपु यह सब कैसे कर रहा था? उसने कहाँ महारत हासिल की थी—

एक प्रचंड बिजली गलियारे में तेज़ी से चमकी, कड़कती और चिंगारियां बिखेरती हुई, जिसने नारद की दृष्टि को चकाचौंध कर दिया। यह बिजली गलियारे में नीचे लेटे हिरण्यकशिपु पर गिरी, उसके शरीर में समा गई और दृष्टि से ओझल हो गई। असुर का शरीर क्षण भर के लिए अनियमित रूप से धड़कता और मंद होता रहा, फिर उसने अपना रूप धारण कर लिया।

राजनयिक ने हॉल के उस छोर की ओर देखा जहाँ से बिजली गिरी थी, वहाँ इंद्र अपने पैर फैलाकर खड़े थे, उनकी बर्फीली नीली आँखें चमक रही थीं और क्रोध से उनके नथुने फड़फड़ा रहे थे। देवों के स्वामी के हाथ में वज्रायुध था, एक विशाल अस्थि-तलवार जिसमें नीली विद्युत धाराएँ धीरे-धीरे बह रही थीं। इंद्र ने अपना ध्यान गैलरी में खड़े हिरण्यकशिपु की ओर मोड़ा। वज्रायुध को उठाकर उन्होंने उसे एक झटके में नीचे गिराया, और तलवार से बिजली का एक और तेज झटका निकला और असुर को लगा। लेकिन नीचे हॉलवे में मौजूद हिरण्यकशिपु की तरह, यह हिरण्यकशिपु भी वज्रायुध के प्रभाव से अप्रभावित प्रतीत हुआ। अपने सामने चुनौती देने वाले अंतिम देव को पराजित करके, यह हिरण्यकशिपु नारद की ओर पीठ करके गैलरी में आगे बढ़ गया।

राजनयिक का खून खौल उठा और वह जाते हुए असुर की ओर दो कदम बढ़ा ही रहा था कि तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे पीछे खींच लिया। मुड़कर देखने पर उसने एक विशालकाय, घनी भूरी दाढ़ी वाले देव को देखा। देव का चेहरा खून से लथपथ था और उसके हाथ में महल के रक्षक की लोहे की ढाल थी, साथ ही एक सींग वाले राक्षस की खोपड़ी के आकार का लोहे का गदा भी था।

"इसका कोई फायदा नहीं है," महल के रखवाले मान्यू ने सिर हिलाते हुए कहा।

“तुम्हारा क्या मतलब है?” नारदा ने घबराहट भरी आवाज में पूछा।

“हिरण्यकशिपु ने अपनी प्रतिकृतियाँ बनाई हैं, जो महल में हर जगह फैली हुई हैं,” बड़े देवता ने समझाया। “यद्यपि उन्हें मारना असंभव है, फिर भी वे घातक हैं। उनसे लड़ना व्यर्थ है, और इस रहस्य को सुलझाने में बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है।”

नारद अचंभित होकर सीढ़ियों के शीर्ष पर पड़े मृत देवताओं को घूरने लगे। "उन्होंने अपने कितने रूप बनाए होंगे?"

महल के रखवाले ने संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, "बहुत ज्यादा।"

“और स्वयं हिरण्यकशिपु कहाँ है?”

"हम नहीं जानते क्योंकि उसे उसके भ्रमों से अलग करने का कोई तरीका नहीं है।"

थकान की लहर उमड़ते ही नारद ने गलियारे की ओर देखा, जहाँ असुर स्वामी का दूसरा रूप अंतिम देवता का खात्मा कर रहा था। इंद्र अपने वज्र से लगातार बिजली गिरा रहे थे, लेकिन उन बिजली के झटकों का असुर पर कोई असर नहीं हो रहा था।

“वह ये सब कैसे करता है?” राजनयिक ने मन ही मन फुसफुसाया। उन्हें पहले कभी असुर स्वामी के पास ऐसी शक्तियों के बारे में पता नहीं था...

“वह भी एक भ्रम है,” मान्यु ने गलियारे में झाँकते हुए बुदबुदाया। ऊँची आवाज़ में चिल्लाते हुए उसने असुर से लड़ रहे दो बचे हुए देवताओं से कहा, “पीछे हट जाओ। वह चीज़ असली नहीं है। उसे युद्ध में मारा नहीं जा सकता।”

महल के रक्षक की आवाज़ इंद्र तक पहुँची, जिन्होंने नारद और मन्यु पर तेवर चढ़ाए और असुर पर बिजली की एक और बौछार कर दी। बिना किसी कष्ट के टेढ़ी-मेढ़ी धाराओं को सहते हुए, उस मायावी देवता ने अंतिम देव को करारा प्रहार किया, जिससे उसका दस्ताना उसके सिर के एक तरफ़ फट गया। देव ज़मीन पर गिर पड़ा।

मृगतृष्णा इंद्र की ओर मुड़ गई। देवता ने वज्र को कसकर पकड़ते हुए और गहरी सांस लेते हुए गुस्से से उसका सामना किया। मृगतृष्णा ने अपने सींगों वाला सिर नीचे झुकाया और आक्रमण करने के लिए तैयार हो गई।

"नहीं," मन्यु गुर्राया। "नहीं..."

इससे पहले कि मृगतृष्णा हमला कर पाती, महल के रक्षक ने रेलिंग के ऊपर से छलांग लगाई और गलियारे में कूद गया। नारदा ने मन्यु के इस छलांग को बड़ी उत्सुकता से देखा। रक्षक सीधे मृगतृष्णा के ऊपर गिरा, उसने अपने आप को नुकीले सींगों से बचाने के लिए ढाल उठा रखी थी। लेकिन मृगतृष्णा से टकराने के

बजाय, वह उसके आर-पार निकल गया और ढाल के गिरने के पूरे बल को झेलते हुए ज़ोरदार धमाके के साथ ज़मीन पर जा गिरा। फिर भी, देव घायल हो गया था, और एक पल के लिए वह मृगतृष्णा के पैरों के पास हांफता हुआ पड़ा रहा, फिर दर्द से कराहते हुए उठा और अपनी पीठ के बल लेट गया।

मान्यु ने हिरण्यकशिपु के मृगतृष्णा की ओर देखा। मृगतृष्णा ने भी रक्षक की ओर देखा।

इंद्र हॉल के एक छोर से देख रहे थे, जबकि नारद ऊपर की गैलरी से नीचे देख रहे थे।

मृगतृष्णा ने अपना गदा उठाया और उसे इतनी ऊँचाई तक घुमाया कि वार का प्रभाव इतना ज़बरदस्त हो कि मन्यु कुचलने वाला हो। मन्यु सहम गया, लेकिन अचानक ही उसे लगा जैसे उसने अपरिहार्य को स्वीकार कर लिया हो, वह इतना थक चुका था कि खुद का बचाव नहीं कर पा रहा था। नारदा का मुँह सूख गया और भयानक आशंका से उसका गला सूख गया...

बिजली चमकी और मृगतृष्णा से टकराई, लेकिन इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

मृगतृष्णा ने गदा को नीचे गिरा दिया, खून से सने नुकीले सिरे मान्यू की ओर झुक गए।

और फिर, मानो वह कभी था ही नहीं, वह मृगतृष्णा गायब हो गई।

नारद ने पलकें झपकाईं, उनकी नज़रें गलियारे में इधर-उधर घूम रही थीं। मान्यु ने भी पलकें झपकाईं, वे कुछ अचंभित से लग रहे थे, फिर उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और थके हुए अंदाज़ में अपना सिर पीछे झुका लिया। इंद्र गलियारे में आगे बढ़े, कोनों में और दीर्घा की ओर देखते हुए, उनका वज्र प्रहार करने के लिए तत्पर था।

वहां मृगतृष्णा का कोई निशान नहीं था।

मारे गए देवताओं से बचते हुए नारद सीढ़ियों से नीचे उतरे। जैसे ही उन्होंने गलियारे में कदम रखा, और भी कई देवता दरवाजों से अंदर आ गए, जो भयभीत और राहत महसूस कर रहे थे। वे सभी एक साथ बातें कर रहे थे और तेजी से एक-दूसरे से विचार साझा कर रहे थे।

"...अचानक गायब हो गया..."

"...बस चला गया..."

"...यह पता नहीं चल सका कि वह कहाँ गया..."

नारद इंद्र के पास पहुँचे, जिन्होंने मन्यु का हाथ पकड़कर उसे उठने में मदद की। "तुमने जो किया वह अत्यंत वीरतापूर्ण था," देवताओं के स्वामी ने रक्षक से कहा।

उस दैत्य ने सिर झुकाया, लेकिन अपने साहसिक कार्य पर विचार करने के बजाय, उसने चारों ओर नज़र डाली। "क्या हमें असुर स्वामी मिल गया?" उसने आशा से पूछा। "क्या इसीलिए उसके हमशक्ल गायब हो गए?"

इंद्र के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। "क्या हमने उसे पकड़ लिया, या हिरण्यकशिपु ने वह चीज़ हासिल कर ली जो उसे अमरावती ले आई?"

वह मुड़ा और देवताओं पर दहाड़ा। "महल के हर कोने की तलाशी लो। हर दरवाजा खोलो, हर छिपने की जगह में देखो। गरुड़ों को शहर की तलाशी लेने को कहो। मेरु पर्वत पर चौकियां लगाओ। हर जगह देखो। वह जहां भी हो, उसे ढूंढो—और उसे भागने से रोको।"

गिद्धों

उर्वशी अपने पैरों के पास लेटे सैनिक को घूरती रही।

सैनिक ने अपने पीछे की दीवार को घूरते हुए, आश्चर्य से आधा खुला हुआ मुंह रखा, और स्पष्ट रूप से वह मृत प्रतीत हो रही थी।

गैलरी की खामोशी से दूर, व्याल शहर के ऊपर चीखते-चिल्लाते और झगड़ते फिर रहे थे। कहीं ऊपर आसमान में आग की लपटें उठ रही थीं और चटक रही थीं।

आस-पास एक सरसरी नज़र डालते हुए अप्सरा घुटनों के बल बैठी और उस आदमी को कंधे से हिलाया। कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। वह आगे झुकी और उसके चेहरे के सामने हाथ हिलाया। उसकी आँखों में कुछ भी भाव नहीं था। उसने उसकी नाक के नीचे उंगली रखी। वह साँस भी नहीं ले रहा था। वह पेट के बल लेटा हुआ था, पैर फैले हुए थे, दाहिना गाल गैलरी के फर्श पर टिका हुआ था। एक हाथ उसके नीचे था, दूसरा बगल में लटका हुआ था, जिसमें अभी भी भाला था। उसकी गर्दन अजीब तरह से मुड़ी हुई थी, और इतनी नज़दीक से उर्वशी ने उस आदमी की ठोड़ी पर खून की एक बूँद देखी।

वह लड़खड़ाते पैरों से उठी, उसे मुश्किल से यकीन हो रहा था कि वह कितनी भाग्यशाली थी कि वह खुद मौत के मुंह से बच गई। उसने पहरेदार के सिर के चारों ओर टूटी पड़ी मिट्टी की टाइलों को देखा, फिर छत की ओर देखा जहाँ से वे गिरी थीं, शायद छत में फैलती आग से कमजोर होकर। गिरी हुई टाइलों से बने छेद से धुआँ निकल रहा था, जबकि टाइलों और बीमों के बीच की दरारों से भी धुआँ रिस रहा था। दीर्घा में गर्मी फैल रही थी, लेकिन उस पल उर्वशी को छत के गिरने के खतरे का कोई आभास नहीं था। गिरती हुई टाइलों का उसे बिल्कुल न लगना और उसे खरोंच तक न आना एक चमत्कार था; और भूलभुलैया तक उसका साथ दे रहे पहरेदार को गिराकर मार डालना एक अप्रत्याशित सौभाग्य था, उसने सोचा।

वह बिना किसी निगरानी के थी, और मनुष्य व्यालों से बचने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि वह गायब हो गई है। अप्सरा को उत्साह से भर कर एहसास हुआ कि उसके पास भागकर देवलोक लौटने का भरपूर मौका है। उसे बस सबकी नजरों से दूर रहना था और पकड़े जाने या मारे जाने से बचना था।

सामान्य ज्ञान कहता था कि महल से बाहर निकलने का सबसे अच्छा रास्ता झील तैरकर पार करना था। अपनी उत्सुकता को काबू में रखते हुए, भय और प्रत्याशा से धड़कते दिल के साथ, उर्वशी मृत रक्षक को चकमा देकर गैलरी के अंत में स्थित खिड़की की ओर तेजी से बढ़ी। बाहर झुककर उसने महसूस किया कि झील अभी काफी दूर है; उसे अंधेरे पानी में छलांग लगाने से पहले कुछ तल नीचे उतरना होगा। ऊपर देखते हुए, अप्सरा ने अंधेरे होते आकाश में दो व्यालों को तेजी से आगे बढ़ते देखा, जिससे अमरावती के विनाश की यादें ताजा हो गईं और उसकी रीढ़ की

हड्डी में सिहरन दौड़ गई; और नीचे, उज्जैनी का भयावह दृश्य, जो हर दिशा में धुएं और आग से घिरी हुई थी, उसे देखकर उसका चेहरा पीला पड़ गया।

जलते हुए शहर में फंस जाने की आशंका से उर्वशी सोचने लगी कि महल के अंदर रहना ज़्यादा सुरक्षित है या सड़कों पर। उसे लगा कि शहर में छिपने की ज़्यादा जगहें हैं और वहाँ उसे पहचानने वाले लोगों की संख्या भी कम होगी। इसलिए वह वापस गैलरी से नीचे की ओर भागी और नीचे जाने का रास्ता खोजने लगी। लेकिन उसने देखा कि आगे का गलियारा सैनिकों से भरा हुआ है जो अफरा-तफरी में इधर-उधर भाग रहे हैं। उर्वशी वापस लौटी और इस बार एक मोड़ लिया जो नीचे के एक दूसरे गलियारे की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर जाता था। लेकिन यहाँ भी उसे घबराए हुए महल के रक्षक मिले जिन्होंने प्रवेश के सभी रास्ते बंद कर दिए थे।

महल के दो हिस्सों में भीषण आग लगी हुई थी, जिससे महल में अफरा-तफरी मची हुई थी। सैनिकों के आदेशों और निर्देशों को सुनकर अप्सरा को पता चला कि उज्जैनी एक भयानक घेराबंदी में है। व्यालों की चीखें लगातार गूंज रही थीं, और बीच-बीच में मिलने वाली शांति महल के पहरेदारों के उन्मादी नारों और आग की चटकने और दहाड़ से टूट रही थी।

उर्वशी महल में लगातार अपना रास्ता खोजती रही, गलियों से होकर गुज़रती, प्रतीक्षालक्षों में छिपती और गलियारों में भागती रही, ताकि उसे कोई ऐसा दरवाज़ा या सीढ़ी मिल जाए जहाँ से वह झील तक पहुँच सके। लेकिन हर कोशिश नाकाम होने पर अप्सरा हताश हो गई, जिससे वह इतनी बेपरवाह हो गई कि लगभग दो बार महल के पहरेदारों के सामने खुद को प्रकट करने ही वाली थी।

उम्मीद और किस्मत दोनों ही कम होती जा रही थीं, अब उसे विश्वास नहीं था कि वह महल से बाहर निकल पाएगी। वह एक और घुमावदार रास्ते पर आधी दूर तक जा चुकी थी, और अगर उसका सामना सैनिकों के एक और समूह से हुआ तो मन ही मन वापस लौटने की तैयारी कर रही थी, तभी अचानक उसके सामने एक दरवाजा खुला जिसे उसने पहले नहीं देखा था और एक आकृति दिखाई दी।

अप्सरा घबरा गई और खुद को ज्यादा सावधान न रहने के लिए कोसने लगी। उसके पास छिपने की कोई जगह नहीं थी।

वह एक महिला थी, और वह उर्वशी से दूर, दूसरी तरफ देख रही थी।

अगर वह महल की दासियों में से एक होती, तो शायद उसे पहचान लिया जाता, अप्सरा ने सोचा।

वह महिला उर्वशी की ओर मुड़ी। उर्वशी उसे घूरने लगी।

उर्वशी ने भी हैरानी से देखा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। उसने उस चेहरे को पहले केवल एक बार देखा था, तकियों के सहारे लेटी हुई, कहीं खोई हुई, अपने आसपास घट रही हर चीज़ से बेखबर।

ये विशाखा हैं, अवंती की रानी। सम्राट ने उस रात जब उन्हें इस महिला के पास ले गए थे, तब उनका परिचय इसी तरह कराया था। एकमात्र स्त्री जिससे मैंने कभी प्रेम किया है—

"कौन है भाई?"

उर्वशी ने पलकें झपकाईं। रानी आ रही थी।

“तुम कौन हो? क्या तुम रास्ता भटक गए हो?”

क्या यह रानी थी या उसे भ्रम हुआ था? यदि ऐसा था, तो वह अपनी उस दुर्दशा से कब उबर गई थी? और जब महल पर हमला हो रहा था, तब वह यहाँ क्यों थी, जबकि महल के बाकी लोग भूलभुलैया की सुरक्षा में थे?

"मैं... मैं महल की दासी हूँ, महाराज।"

“ओह... क्या आप भी किसी की तलाश कर रहे हैं?”

"नहीं, माननीय न्यायाधीश।"

“ओह...” उसने फिर से कहा, चारों ओर देखते हुए, उलझन में। “यह कौन सी जगह है?”

“महाराज, यह अवंती का महल है,” अप्सरा ने धीरे से कहा।

विशाखा ने इस बारे में सोचा। “लेकिन यह जगह... यह जगह आखिर क्या है?”

उर्वशी ने अपने चारों ओर देखा। उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वे कहाँ हैं, और उसे यह भी नहीं पता था कि रानी क्या कहना चाह रही है।

“मुझे...नहीं पता, माननीय न्यायाधीश। मैं यहाँ नया हूँ।”

"ओह।"

उर्वशी ने रानी का चेहरा देखा, सुंदर, लेकिन उदास और चिंतित। वह जानती थी कि यहाँ रुकने से कोई लाभ नहीं होगा; उसे जल्द से जल्द यहाँ से निकल जाना

चाहिए, कहीं कोई आ न जाए... उसने उस दरवाजे की ओर इशारा किया जहाँ से रानी निकली थीं, "क्या आपके साथ कोई है, महाराज?"

विशाखा ने अपना सिर हिलाया।

"तो फिर आप यहां क्यों हैं, महाराज?"

“मुझे नहीं पता।” रानी ने उर्वशी की ओर अस्पष्ट दृष्टि से देखा। “मैं देख रही थी।”

“किसलिए, माननीय न्यायाधीश?”

“विक्रम। मेरे पति। क्या तुमने उन्हें देखा है?”

उर्वशी ने प्रश्न पर विचार किया।

“जी हां, माननीय न्यायाधीश। कल सुबह, बहुत ही संक्षिप्त रूप से,” उसने सच्चाई से उत्तर दिया।

"यह उसके सीमावर्ती क्षेत्र की ओर रवाना होने से पहले की बात होगी।"

राजा यहाँ नहीं थे?

"यदि आप जानते हैं कि वह महल में नहीं है, तो आप यहां उसकी तलाश क्यों कर रहे हैं, महाराज?"

विशाखा सवाल सुनकर अचंभित रह गई और घूरने लगी। "मुझे लगा..." उसने अनमने ढंग से नज़रें फेर लीं।

अप्सरा ने अनुमान लगाया कि रानी की मानसिक स्थिति में सुधार होने के बावजूद, उसकी सोचने-समझने की शक्ति अभी भी कमज़ोर थी। तो फिर उसकी बातों पर कितना विश्वास किया जाए? क्या राजा सचमुच चले गए थे, या यह सब रानी की कल्पना मात्र थी?

“महामहिम, क्या आप जानते हैं कि सम्राट सीमा पर क्यों गए हैं?”

“बर्बर लोगों से लड़ने के लिए। उन्होंने मुझसे यही कहा था।”

“किसने कहा, माननीय न्यायाधीश?”

“वे सभी। मुस्कुराता हुआ चेहरा लिए मोटा आदमी जो मुझे दवाइयाँ देता है, बैसाखी वाला दूसरा आदमी... बड़ी आँखों वाली लंबी, सांवली महिला... और वह जिसे लोग मेरी बहन कहते हैं...”

उर्वशी ने सुनना बंद कर दिया था। विक्रमादित्य उज्जैन में नहीं थे। लेकिन कटार कहाँ थी?

अप्सरा को अचानक एहसास हुआ कि वे गलियारे से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति की नजर में आ रही हैं। रानी की कोहनी पकड़कर, उसने धीरे से उन्हें दरवाजे की ओर ले गई।

"माननीय न्यायाधीश, आपको अंदर वापस चले जाना चाहिए। यहाँ बाहर रहना सुरक्षित नहीं है।"

"हां, उन... चीजों ने छत पर हम पर हमला किया। वह महिला... मेरी बहन... उसने मेरी रक्षा की और मुझे अंदर रहने को कहा। उसने कहा कि उसे जाकर उन चीजों को रोकना होगा।"

बड़ी-बड़ी आँखों वाली लंबी, सांवली महिला... जिसे लोग मेरी बहन कहते हैं। यह ज़रूर क्षपणक ही होगी, जो विक्रमादित्य के साथ आई थी जब वह उसे उसके 'चाचा' विस्मय की मृत्यु की सूचना देने आया था। उर्वशी ने मन ही मन सोचा, रानी अपनी बहन को पहचान नहीं पा रही है...

जैसे ही उन्होंने दरवाजे से अंदर कदम रखा, वे खुद को एक ऐसे कमरे में पाए जिसकी अलमारियों में पतली जूट की रस्सी से बंधी ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों के ढेर लगे हुए थे।

"क्या उन्होंने बताया कि सम्राट कब लौटेंगे, महाराज?" उर्वशी ने दरवाजा बंद करते हुए पूछा।

"मेरी बहन ने बताया कि उन्होंने उसे संदेश भेज दिया है, लेकिन यह नहीं बताया कि मैं उससे कब मिल सकती हूँ।" रानी अचानक निराश दिखीं।

"क्या आपकी बहन या किसी और ने उस खंजर का जिक्र किया, जिसकी सम्राट रक्षा कर रहे हैं?"

"खंजर?" रानी ने अनमने ढंग से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने सिर हिलाया।

उर्वशी को निराशा का एहसास हुआ, लेकिन उसे यह भी समझ आ गया कि इसकी संभावना बहुत कम थी। रानी को ढूंढने आने से पहले ही वहाँ से चले जाना ही बेहतर था, और अप्सरा अभी बहाना सोच ही रही थी कि तभी रानी ने बोलना शुरू किया।

"यहाँ कितना अकेलापन है," दर्द भरी आह के साथ उसके मुँह से शब्द निकले। "मैं यहाँ किसी को नहीं जानती। काश मैं विक्रम के साथ होती। काश मुझे सीमा का

रास्ता पता होता...”

“सीमा बहुत दूर है, और शहर पर हमला हो रहा है, महाराज। शहर से बाहर निकलना असंभव है, क्योंकि बाहर बहुत खतरा है—”

मुझे एक रास्ता पता है। एक गुप्त मार्ग।

उर्वशी रानी को घूरती रही।

“कोई गुप्त रास्ता? शहर से बाहर निकलने का?”

“विक्रम ने मुझे यह कई साल पहले दिखाया था,” विशाखा ने सिर हिलाते हुए कहा। “भूलभुलैया से ग्रामीण इलाके में स्थित एक पत्थर के कुएं तक जाने का एक रास्ता।”

कमरा एकदम शांत था, व्यालों की चीखें अचानक धीमी पड़ गईं। खिड़की से उर्वशी ने उज्जैन पर बारिश होते देखी। उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। जब उसने इस जगह से भागने की उम्मीद लगभग छोड़ ही दी थी, तभी अपने पति से मिलने की चाहत रखने वाली एक भोली-भाली और भरोसेमंद महिला ने उसकी राह में उम्मीद की किरण दिखाई थी। लेकिन क्या वह महिला झूठ बोल रही थी, या सच कह रही थी?

अप्सरा ने गहरी सांस ली। उसके पास विकल्प सीमित थे। उसे हर संभव अवसर का लाभ उठाना था।

“आप सम्राट के साथ रह सकती हैं, महाराज,” उर्वशी की मुस्कान के पीछे उनकी आँखों में कल्पित कथन झलक रहा था। “मुझे शहर से बाहर निकलने का यह गुप्त मार्ग दिखाइए, मैं आपको आपके पति के पास ले जाऊंगी।”

***

बरसती बारिश की चादर के बीच से देखने पर, उज्जैन नीचे दूर स्थित इमारतों की एक धुंधली रूपरेखा के रूप में दिखाई दे रही थी, जो अब भाप के बादलों के उठते ढेरों से तेजी से अस्पष्ट होती जा रही थी।

अमर्का ने उस व्याल पर गुस्सा निकाला जिस पर वह सवार था, वह एक तरफ झुककर ऊपर उठा और मूसलाधार बारिश में आगे बढ़ने लगा। बारिश की मोटी-मोटी बूँदें उसकी नंगी बाहों पर पड़ रही थीं और व्याल की खुरदरी पीठ और पंखों से छिटक रही थीं। पानी उसके चेहरे से बह रहा था, दाढ़ी से टपककर आँखों में जा रहा था, जिससे उसे अपना सिर नीचे रखना पड़ रहा था और हर कुछ सेकंड में

पलकें झपकानी पड़ रही थीं ताकि उसकी नज़र साफ़ हो सके। जहाँ भी वह देखता, दृश्यता कम थी, हवा घने, सफ़ेद कोहरे से भरी हुई थी, जिसके बीच से उसे बारिश में संघर्ष करते हुए दूसरे व्यालों की झलक दिखाई दे रही थी। अमर्का को पता नहीं था कि उसका भाई कहाँ है, और उसे ढूँढ़ना व्यर्थ था।

दुर्घटनाओं से बचने के लिए अपने व्याल को अन्य जानवरों से दूर रखते हुए, असुर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, उस शहर को निहार रहा था जिसे वे तबाह करने आए थे और सोच रहा था कि परिस्थितियाँ कितनी तेज़ी से बदल गई हैं। हमला इससे बेहतर शुरुआत नहीं कर सकता था। उज्जैन के ऊपर की हवा गर्म थी—धुएँ के निशान हाल ही में लगी आग की ओर इशारा कर रहे थे—और जब वे पहुँचे तो शहर अभी भी गर्म था। अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए, व्यालों ने एक भीषण हमला किया, जिससे शहर हिल गया। कुछ प्रतिरोध तो हुआ ही, और कुछ अति उत्साही असुरों को इसकी कीमत चुकानी पड़ी, लेकिन अधिकतर मनुष्य बुरी तरह भयभीत थे। उन्हें इस तरह पराजित देखकर, अमरका आत्मसमर्पण की उम्मीद कर रहा था, तभी अचानक बादल छा गए, आकाश काला हो गया और ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई।

अमरका ने पहले कभी इतनी तीव्र वर्षा का सामना नहीं किया था। इसने व्यालों की चोंचों से निकलती हुई लपटों को बुझा दिया, आग के गोलों को उनके प्रक्षेप पथ में ही वाष्पीकृत कर दिया और हमले को अचानक रोक दिया। इसने नीचे लगी आग को तेजी से बुझा दिया, जिससे भाप के बादल उठ खड़े हुए, और जहाँ आग तक पहुँचना कठिन था, वहाँ वर्षा ने उसके फैलाव को रोककर उसे नियंत्रित कर दिया।

अमरका को सबसे अजीब बात यह लगी कि बारिश का पानी कितनी तेज़ी से ठंडा हो रहा था। तापमान इतनी तेज़ी से गिर रहा था कि उसके दांत भींच गए थे और उसने ठंड से बचने के लिए अपने कंधे झुका लिए थे। हालांकि उसे लगा कि वह यह सब कल्पना कर रहा है, अमरका ने बारिश की बूंदों को हवा में उठते हुए देखा—फिर वे आसमान में गिर रही थीं, उसके मन में अजीब सा ख्याल आया—गिरती हुई बूंदों के बीच से निकलकर वापस आसमान में जा रही थीं और फिर नीचे आ रही थीं, जो कि बिलकुल असंभव था क्योंकि बारिश ऐसे काम नहीं करती...

अमरका को लगा कि उसका व्याला बीच हवा में ही सुस्त पड़ गया है, मानो अचानक उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो गई हो। उसने अपने सामने हिलते हुए उस

जानवर के पाँचों सिरों का जायजा लिया। वे डरे हुए लग रहे थे, उनका हमेशा वाला आक्रामक स्वभाव गायब था। उसने अपने चारों ओर देखा, यह जानने की कोशिश की कि दूसरे जानवर और उनके सवार कैसे हैं, लेकिन उसे बस बारिश ही दिखाई दी - और ऊपर जाती हुई, जैसा कि उसने खुद से कहा। एक पल के लिए, उसने कल्पना की कि वह आकाश में अकेला है, कि किसी तरह बाकी सभी को उस भूखी बारिश ने निगल लिया है और अब उसकी बारी है, लेकिन इससे पहले कि यह विचार उसे घबरा दे, उसने अपने दाहिनी ओर एक व्याला को पंख फड़फड़ाते हुए देखा।

वह अभी उस तरफ मुड़ ही रहा था कि बारिश रुक सी गई। लेकिन अगले ही पल, कोई नरम चीज़ उसके कंधे पर आकर गिरी। उसने देखा कि बारिश तेज़ी से बर्फीली बूंदों में बदल रही थी, जो जम चुकी थीं और उसकी बांहों पर गिरकर उसकी दाढ़ी से चिपक रही थीं।

उसका व्याला लड़खड़ाया, एक तरफ झुक गया और गिरने लगा, फिर कुछ प्रयास के बाद खुद को संभाला।

अमरका के दांत किटकिटा रहे थे, उसने देखा कि व्याला के पंखों पर बर्फ की एक महीन परत जमी हुई थी। असुर ने मन ही मन बड़बड़ाया; मौसम इतनी तेजी से और अचानक कैसे बदल सकता है, जब तक कि कोई जादू-टोना न हो। उसे पता लगाना ही था कि आखिर क्या हो रहा है। लगाम को जोर से खींचते हुए, उसने अपने जानवर को दाईं ओर स्थित व्याला की ओर मोड़ दिया। वे इसे यूं ही नहीं छोड़ सकते थे; उन्हें स्थिति का जायजा लेना था और कार्रवाई का फैसला करना था, पहल को वापस अपने हाथ में लेना था...

"क्या तुमने चंदासुर को देखा है?" अमरका ने पास आकर पूछा।

दूसरे व्याल पर सवार असुर मुड़ा और जवाब देने के लिए मुँह खोला, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसका व्याल अचानक लड़खड़ाकर गिर पड़ा। ऐसा लगा जैसे उसने खुद को संभाल लिया हो, लेकिन बर्फ से ढके उसके पंख थकान से फड़फड़ाने लगे और वह ज़मीन पर जा गिरा, उसके पाँचों सिर अजीब तरह से गोल-गोल घूम रहे थे, चोंचें खुली हुई थीं और डर से कर्कश आवाजें निकाल रही थीं।

अमरका ने उस राक्षस को गिरते हुए देखा, उसका सवार नियंत्रण वापस पाने के लिए पुरज़ोर कोशिश कर रहा था। आधे रास्ते में ही असुर को एहसास हो गया कि

अब कोई फायदा नहीं है। उसने अमरका को हैरानी भरी निगाहों से देखा और ठीक उसी समय वह राक्षस की पीठ से गिर पड़ा।

जानवर और सवार टूटे हुए अंगों और पंखों के एक अजीबोगरीब उलझे हुए ढेर में दुर्घटनाग्रस्त होकर मर गए।

"कमांडर, हम व्यालस खो रहे हैं।"

अमारका अनियंत्रित रूप से कांपते हुए, अपनी बाईं ओर प्रकट हुए व्याला पर सवार सवार को घूरने के लिए मुड़ा।

"ये गिर रहे हैं," सवार ने चिंता भरे स्वर में कहा। उसका अपना व्याला (घोड़ा) अनिश्चित रूप से हिल रहा था, ऐसा लग रहा था कि वह ज़्यादा देर तक हवा में नहीं रह पाएगा। "ठंड की वजह से ऐसा हो रहा है।"

"कितने गिरे हैं?" अमरका ने पूछा, लगाम पर उसकी उंगलियां सुन्न होने लगी थीं।

"उनमें से सात या आठ पहले से ही मौजूद हैं।"

अमरका ने गिरी हुई व्याला और उसके सवार को सदमे से देखा। बर्फीली बारिश उनके क्षत-विक्षत, धीरे-धीरे खून बहते शरीरों पर गिर रही थी।

***

मुझे आश्चर्य होता है कि ओड्रा की महिलाएं बिस्तर में कितनी अच्छी होती हैं।

खाई के ऊपरी हिस्से में दो पेड़ों के पीछे दुबके हुए वेताला भट्टा चौंक उठे। उन्होंने मन ही मन सोचा, "किस तरह का आदमी ऐसा सोच सकता है?" फिर उन्होंने खुद को संभाला। वे ठीक से जानते थे कि किस तरह का आदमी न सिर्फ ऐसे भद्दे विचार रखेगा, बल्कि उनमें आनंद भी लेगा; ठीक उसी तरह का आदमी जिसे वे देख रहे थे।

पार्षद ने खुद से कहा, तुम्हें एकाग्रता बनाए रखने की जरूरत है। ध्यान केंद्रित करो।

शायद मैं उनकी रानी से शुरुआत कर सकती हूँ... उन्हें मगध के शाही दरबार के सामने खुलकर बोलने के बारे में कुछ बातें सिखा सकती हूँ...

आचार्य के मन में एक अश्लील हंसी उठी, साथ ही उनके दिमाग में एक महिला की छवि कौंध गई जो एक लेस के पर्दे के पीछे बिस्तर पर नग्न अवस्था में लेटी हुई

थी, जिससे शरीर का कोई भी हिस्सा ढका हुआ नहीं था। मुख्य सलाहकार उस महिला को पहचान नहीं पाए; वह सांवली और गोल-मटोल थी।

...शायद रानी और उसकी सभी दासियाँ एक साथ...

पलंग के पास दो और नग्न महिलाएं प्रकट हुईं, जिनके हाथों में मोर के पंखा था। दोनों महिलाएं पलंग पर लेटी महिला से काफी मिलती-जुलती थीं। आचार्य के मन में कामुकता की तीव्र लहर दौड़ गई।

उसने मुँह बनाया। उसने यह भी सोचा कि तीनों महिलाएँ एक जैसी दिखती हैं क्योंकि वे सभी उस तरह की महिला की कल्पना थीं जो दैपायना को आकर्षक लगती थी। मगध के सेनापति को ओद्रा की रानी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए वह उसे अपनी कामुक कल्पनाओं के अनुरूप गढ़ रहा था...

"एकाग्रचित्त रहो, एकाग्रचित्त रहो," राजगुरु ने अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए अपना सिर हिलाते हुए स्वयं को अनुस्मरित किया।

अच्छा हुआ, हमारे जवान पहले से ही तैनात हैं...

यह क्या था? वेताला भट्टा सेनापति के विचारों पर ध्यान केंद्रित कर रहा था; भाले के सिरे पर लगी खोपड़ियाँ और भी गहरे लाल रंग में चमक रही थीं।

शूरासेना ने द्वार खुलवाने के लिए समय से पहले ही अपने सैनिकों को शहर में भेजकर चतुराई दिखाई...

राजगुरु ने मन ही मन सोचा, अगर इस सेना को रोका नहीं गया तो पूरी तरह से पराजय हो जाएगी। और इसे रोकना उन्हीं की जिम्मेदारी थी। उन्हें चुपके से अंदर घुसना था...

दो दिन में हम वहाँ पहुँच जाएँगे...

वेताला भट्ट ने उस छोटी सी घाटी को देखा, लेकिन अब वह स्वयं उसमें था, धारा के किनारे खड़ा था और मगध का झंडा नम मिट्टी में गहराई तक गड़ा हुआ था। सैनिक आस-पास आराम कर रहे थे या चौसर खेल रहे थे। राजगुरु को एहसास हुआ कि वह दैपायन की दृष्टि से देख रहा है, और सेनापति दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क की ओर देख रहा था जो आनूपा के पास से होकर गुजरती थी...

ओड्रा हमारा होगा... और उसे बंधक बनाकर हम कलिंग को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करेंगे...

आचार्य वृक्षों के पीछे छिप गए और अपने भाले को कसकर पकड़ लिया। उन्होंने गहरी साँस ली। दो दिन, उन्होंने मन ही मन सोचा, शब्दों को हवा में ऐसे फैलाते हुए जैसे स्पर्श यंत्र हों, लेकिन क्या हम इससे भी जल्दी वहाँ पहुँच सकते हैं?

...क्या हम वहां और भी जल्दी पहुंच सकते हैं? क्यों? यह सवाल दैपायना के मन में आश्चर्य और संदेह के साथ उठा।

इतनी दूरी पर भी यह कारगर साबित हुआ। मुख्य पार्षद ने राहत की सांस ली।

ओड्रा को चौंका देने के लिए, उसने उन शब्दों को खाई में भेज दिया, जिससे उसके मन में यह विचार बैठ गया।

हम्म... मुझे यकीन नहीं है... अभी भी अविश्वास है, अभी भी सतर्कता है।

अगर हम यात्रा का समय कम कर दें, तो सैनिकों को युद्ध से पहले आराम करने के लिए अधिक समय मिल जाएगा। यह एक लंबा सफर रहा है...

हम्म... ठीक है। सेनापति की दृष्टि उस खाई पर पड़ी जहाँ लोग बैठे बातें कर रहे थे। लेकिन... हम वहाँ जल्दी कैसे पहुँचें?

आचार्य कुछ देर रुके। यही निर्णायक क्षण था।

"तुम्हें उत्तर पता है," उसने ये शब्द दैपायन के मन में उकेर दिए। साथ ही, उसने ऋक्ष पर्वतों की तलहटी में फैले आनूपा पर्वतों की छवि भी सेनापति के मन में अंकित कर दी।

भूतों का दलदल? वेताला भट्टा दैपायना के मन में विस्मय की लहर दौड़ती हुई महसूस कर सकता था। लेकिन...

देखा? आपको जवाब पता है। आपको हमेशा से पता था। इसीलिए आप अपने काम में इतने माहिर हैं, इसीलिए आप लोगों के भाग्य के स्वामी हैं...

हाँ... लेकिन... जनरल की निगाहें बेतहाशा घूम गईं। लेकिन उस भूतिया दलदल का क्या हुआ?

आपको जवाब पता है फिर भी पूछ रहे हैं? वेताला भट्टा ने जनरल से हल्के से तिरस्कार भरे लहजे में ये शब्द कहे। ठीक है... हम इस दलदल से कैसे निपटेंगे?

हम इसके चारों ओर घूमते हैं...

समय बर्बाद हो रहा है। लेकिन अगर हम सीधे मुद्दे पर आ जाएं तो...

आचार्य ने अपनी स्मृति से प्रेरित होकर आनूपा की एक और छवि प्रस्तुत की - धुंध से होकर गुजरता एक रास्ता, जो काई से ढके पेड़ों और सरकंडों के तालाबों से घिरा

हुआ था।

यहां से एक रास्ता गुजरता है... दैपायाना ने हल्के आश्चर्य से कहा।

क्या यह स्पष्ट नहीं है कि इसके बीच से कोई न कोई रास्ता जरूर गुजरता होगा?

हम इसे ले जाकर भूत दलदल में छिपा सकते हैं... दैपायाना का उत्साह राजगुरु के मन में फैल गया।

हां, हम वहां छिपकर ओड्रा को चौंका सकते हैं; उन्हें दलदल के अंदर से हमारे आने की उम्मीद नहीं होगी।

लेकिन दलदल सुरक्षित नहीं हो सकता... ऐसी कहानियां हैं कि यह कितना खतरनाक हो सकता है...

ये कहानियां कौन फैलाता है? धूर्त व्यापारी। ज़ाहिर है, वे यही कहेंगे कि दलदल खतरनाक है; इसी तरह तो वे अपना एकाधिकार बनाए रखते हैं... दूसरों को डराकर भगाते हैं। और ये कहानियां ओड्रा को भी सुरक्षित रहने में मदद करती हैं...

सही सही...

घोस्ट मार्श में कुछ भी नहीं है। पार्षद ने फिर से आनूपा की एक हानिरहित छवि पेश की। रास्ता सीधा ओड्रा की ओर जाता है। उन आदमियों पर एहसान करो। दलदल से होकर जाओ...

हम शीघ्र हमला कर सकते हैं...

बिल्कुल।

...ओड्रा तैयार नहीं होगी... सेनापति मुस्कुरा रहा था और आचार्य को उस व्यक्ति का उत्साह अपने ऊपर हावी होता हुआ महसूस हुआ। और मैं रानी के बिस्तर पर इससे भी जल्दी पहुँच सकता हूँ...

बिस्तर पर लेटी हुई मोटी महिला एक बार फिर वेताला भट्टा के दिमाग में छा गई। वह बेचैन हो गया।

हां, हम सीधे भूतिया दलदल से होकर गुजरेंगे... दैपायाना की खुशी एक सुखद चमक की तरह थी।

राजगुरु ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा, "तुम्हें हमेशा ऐसे चतुर विचार आते हैं," जिससे उस व्यक्ति का आत्म-महत्व का भाव और बढ़ गया और उसने जनरल के सिर में, अपने ही सिर में, यह भाव और भी बढ़ गया।

मैं चतुर हूँ, मैं हूँ। मुझे अपने साथियों को बताना होगा... दैपायाना ने नदी के किनारों का जायजा लिया, और वेताला भट्टा ने देखा कि उसकी नजर एक पेड़ से टिके दो सैनिकों पर टिक गई।

"Karti... Atiksha..." he called.

सैनिक दौड़ते हुए आए।

"मुझे एक विचार आया है, और योजना में बदलाव है," आचार्य ने दैपायन को बोलते हुए सुना। "हम बाकी सेना के आने का इंतज़ार करेंगे। फिर, भूत दलदल के चारों ओर चक्कर लगाकर समय बर्बाद करने के बजाय, हम सीधे उसी से होकर गुजरेंगे... सीधे ओड्रा की ओर।"

"भूतिया दलदल से होकर, जनरल?" दोनों सैनिक परेशान होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

"यह कुछ भी नहीं है," जनरल ने हाथ हिलाते हुए लापरवाही से कहा। "मुझे एक ऐसा रास्ता पता है जो..."

दैपायन के अहंकारपूर्ण आत्मविश्वास को भांपते हुए, वेताला भट्ट ने खाई से खुद को अलग कर लिया और सेनापति के ध्यान से खुद को दूर कर लिया। जब उसे यकीन हो गया कि अब वह किसी की नजर में नहीं आएगा, तो वह पेड़ के पीछे आराम से लेट गया और गहरी सांस ली। उसके भाले पर लगी खोपड़ियों की चमक फीकी पड़ गई।

"क्या यह कारगर रहा, राजगुरु?" केदारा ने फुसफुसाते हुए पूछा।

"मुझे लगता है ऐसा हुआ," मुख्य पार्षद ने जवाब दिया।

"क्या वे सब मिलकर घोस्ट मार्श में घुसने वाले हैं? क्या वे सभी एक साथ?"

वेतला भट्टा ने थकी हुई मुद्रा में सिर हिलाया।

केदारा की निगाह पार्षद से हटकर खाई की ओर गई, जहां दोनों सैनिक मगध के सेनापति की बात से सहमत होते हुए सिर हिला रहे थे।

"राजगुरु, आपने तो पूरी सेना को बिना उनकी जानकारी के ही मौत के मुंह में भेज दिया," सेनापति ने आश्चर्य से कहा। "और बिना एक भी तलवार म्यान से निकाले।"

***

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह सब क्या है,” वरारुची ने गैलरी में चलते हुए कहा। उन्होंने अपने बाएं हाथ की उंगलियों पर फूँक मारी—उनके दाहिने हाथ में कुंडलित उरुमी था—उंगलियों और अंगूठे को आपस में रगड़कर उनमें थोड़ी गर्मी लाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; बहुत ठंड थी। “लेकिन जो कुछ भी हो रहा है, उसका असर जानवरों पर भी पड़ा है। उन्होंने शहर पर हमला करना बंद कर दिया है, और ऐसा लगता है कि उन्हें हवा में उड़ने में दिक्कत हो रही है।”

धनवंतरी, वरारुचि के बगल में धीरे-धीरे चल रहा था, उसका चेहरा विचलित और दुखी लग रहा था। ठंड से उसके मोटे कंधे इतने झुके हुए थे कि उसकी गर्दन लगभग गायब सी हो गई थी, और वह खिड़कियों से दूर ही रहता था, झील के पार बहने वाली ठंडी हवा के झोंके के संपर्क में आते ही वह कांप उठता था।

“आग भी बुझ रही है,” उसने दांत भींचते हुए बुदबुदाया। उसका मतलब बेशक अच्छी खबर देना था, लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव से यह ज़ाहिर नहीं हो रहा था। मुंह बनाते हुए, उसने अपने अंगवस्त्रम को कंधों पर और कसकर लपेट लिया और दोनों हाथों को आपस में दबा लिया। “बारिश के लिए भगवान का शुक्र है, लेकिन यह सर्दी बर्दाश्त से बाहर है।”

गैलरी के अंत तक पहुँचकर वरारुचि खिड़की से बाहर झुके। उन्होंने आकाश पर नज़र डाली और उज्जैन पर बरस रही बर्फीली बारिश को देखा, बूँदें दीवारों और चौखटों से टकराकर पानी और बर्फ में बदल रही थीं। आसमान में अभी भी घने बादल छाए हुए थे, लेकिन उन राक्षसों का कोई निशान नहीं था, कम से कम आकाश के इस हिस्से में तो नहीं। वैद्य एक दीवार के पीछे छिप गए और अपना सिर बाहर निकाला, मानो आकाश की एक झलक देखना चाहते हों, लेकिन जैसे ही ठंडी हवा का झोंका उन पर पड़ा, वे तुरंत पीछे हट गए। "ठंड लग रही है," वे काँप उठे।

“क्या हो रहा है?” क्षपनाका ने गैलरी के दूसरे छोर से पूछा। उसके हाथों में धनुष था, बाण लगा हुआ था और चलाने के लिए तैयार था, लेकिन ठंड से बचने के लिए उसने अपनी बाहों को बगल में सटा रखा था। उसकी बाहों और कंधों पर रोंगटे खड़े हो गए थे। वह खिड़की पर खड़े पुरुषों के साथ शामिल हो गई। “यह सारी बारिश... बर्फ... अचानक कहाँ से आ गई?”

वररुची ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैंने अवंती में इससे पहले ऐसा कुछ कभी नहीं देखा।"

“सिंधुवर्त में इतनी ठंड कभी नहीं पड़ी,” धनवंतरी ने गुस्से में कहा। “बहुत ठंड है।”

"इस सीज़न में नहीं," क्षपनाका ने सहमति जताई।

"यह मुझे मत्स्य के उत्तर में स्थित निर्जन क्षेत्र की याद दिलाता है," राजा के भाई ने टिप्पणी की।

“क्या आपको लगता है कि अगली बार बर्फबारी होगी?” चिकित्सक ने वरारुची को चिंता भरी नजरों से देखा।

वररुची ने मुंह बनाकर कहा कि उसे कुछ पता नहीं है। फिर, उत्साह से आंखें चौड़ी करते हुए, उसने आसमान की ओर इशारा किया, "देखो, देखो... एक और गिर गया।"

ठंड के बावजूद, धनवंतरी और क्षपणक खिड़की के पास गए और तुरंत ही उन्होंने एक राक्षस को हवा में गिरते हुए देखा, जो ज़मीन की ओर तेज़ी से आ रहा था, उसके पंख गोल-गोल घूम रहे थे, गर्दनें फड़फड़ा रही थीं और चोंचें डर से चीख रही थीं... सलाहकारों ने उस प्राणी के लड़खड़ाते हुए गिरने का तब तक पीछा किया जब तक कि वह उज्जैन के दक्षिणी हिस्से में कहीं आँखों से ओझल होकर दुर्घटनाग्रस्त नहीं हो गया।

वररुची ने कहा, "बारिश ही इन चीजों को प्रभावित कर रही है।"

क्षपनाका ने आगे कहा, "ठंड भी इसका कारण हो सकती है।"

“क्या आपको अंदाज़ा है कि कितने लोग गिरे होंगे?” चिकित्सक के मुँह से लड़खड़ाते हुए शब्द निकले। “वो चीज़ें...”

“कहना मुश्किल है,” वरारुची ने अस्पष्ट रूप से कहा। “शायद एक दर्जन?”

"बस इतना ही?"

“अगर ठंड ज्यादा देर तक बनी रही तो शायद बाकी भी गिर जाएंगे,” क्षपनाका ने कहा।

धनवंतरी ने उसे असंतुष्ट भाव से देखा, लेकिन क्षपणक ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उसकी निगाहें उस स्थान पर टिकी हुई थीं जहाँ वह प्राणी गिरा था।

उन्होंने कहा, "हमें गिरे हुए पेड़ों की जांच करनी चाहिए। हमें नहीं पता कि उनसे अब क्या खतरा हो सकता है।"

“आप सही कह रहे हैं,” वरारुची ने सिर हिलाया। “हममें से किसी एक को तो—”

खिड़की के पास से कोई विशालकाय चीज़ तेज़ी से गुज़री, पार्षद की बात बीच में ही काट दी और नीचे जाते हुए दीर्घा में एक विशाल छाया डाल दी। तीनों पार्षद खिड़की की ओर झपटे और झुककर देखने लगे कि उनमें से एक जीव झील में ज़ोरदार छपछपाहट के साथ गिरा, जिससे पानी की लहरें हवा में बहुत ऊपर तक उठीं और पुल और महल की दीवारें भीग गईं। जीव ने झील में गिरने से पहले एक ज़ोरदार साँस ली, बिना कोई प्रतिरोध किए, चुपचाप डूबता चला गया जबकि उसके चारों ओर पानी बरस रहा था। जीव धीरे-धीरे नीचे जाता गया, पानी उसके भारी शरीर पर से गुज़रता रहा, पहले उसके पंखों को, फिर उसकी मुड़ी हुई गर्दन को और अंत में, उसके पाँचों तैरते हुए सिरों को उसकी धूसर गहराई में खींच लिया।

पार्षद मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे जैसे ही वह जानवर पानी में डूब गया, और झील की धीरे-धीरे हिलती सतह पर केवल जानवर की अंतिम आह से निकले कुछ बुलबुले ही रह गए, जो नीचे से उठ रहे थे, और ऊपर से गिरती बर्फ की बारिश की छोटी-छोटी बूंदें ही दिखाई दे रही थीं।

"बस, बात यहीं खत्म होती है," वरारुची ने हैरानी से कहा। "ये चीजें गिरने के बाद मर जाती हैं।"

क्षपनाका ने जोर देकर कहा, "हमें अभी भी सावधान रहना चाहिए। यह एक अपवाद हो सकता है।"

"मैं सहमत हूँ," वरारुची ने कहा। "मैं कुछ आदमियों को अपने साथ ले चलता हूँ —" वह अचानक प्रकट हुए महल के रक्षक को देखकर रुक गया। "क्या बात है, सिपाही?"

"वे प्राणी जा रहे हैं, महाराज। हर जगह से।"

तीनों पार्षद महल के मुख्य चबूतरे पर आ पहुँचे और क्षितिज से क्षितिज तक फैले नम आकाश को निहारने लगे। वे अकेले नहीं थे जो देख रहे थे। खबर तेजी से फैल चुकी थी और ठंड की परवाह किए बिना सैनिक और महल के अधिकारी चबूतरों पर उमड़ रहे थे, जबकि नीचे नौकरानियाँ और महल के सेवक डरते-डरते बालकनियों और यहाँ तक कि पुल पर भी खबर को अपनी आँखों से देखने के लिए आ रहे थे। वरारुचि को बड़ी राहत मिली, क्योंकि आकाश से वाकई वे भयानक जीव और उनके सींग वाले सवार गायब हो गए थे, आखिरी जानवर उसी तरह गायब

हो गए जैसे वे आए थे, उनके पंख सुस्त पड़ गए थे, मानो वे उस स्थिति से जूझ रहे हों जिसने उन्हें इस तरह अपमानजनक वापसी करने के लिए मजबूर किया था।

वरारुची को यह भी स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि बादल उन जानवरों को भगा रहे हैं, उन्हें आगे बढ़ा रहे हैं; आकाश निश्चित रूप से हल्का हो गया था, सिवाय दक्षिण दिशा के, जहाँ जानवर जा रहे थे। हालाँकि, उसके ऊपर उठे चेहरे पर चुभने वाली बर्फीली बारिश लगातार गिर रही थी।

महल के चारों ओर राहत और एक कठिन परीक्षा से बच निकलने की जीत की भावना से उपजे एक स्वतःस्फूर्त जयकार गूंज उठी। कहीं से एक नारा शुरू हुआ—अवंती... अवंती... अवंती...—और आवाजें उसमें शामिल हो गईं, जो बढ़ती हुई एक जोशीली गायन-श्रद्धांजलि में तब्दील हो गई, जो झील के पार जाकर पूरे शहर में गूंज उठी।

आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो...

मानो जनता की आवाज़ के साथ एकजुटता दिखाते हुए, बर्फ़ीली बारिश कम होने लगी, बूँदें अब उतनी ठंडी नहीं रहीं, बल्कि बर्फ़ से ज़्यादा पानी जैसी हो गईं। हवा भी गर्म होती हुई प्रतीत हुई। धनवंतरी को देखते हुए वरारुचि ने पाया कि वैद्य ने अपना अंगवस्त्रम हल्के से लपेटा हुआ था, और रुई हवा में लहरा रही थी, जिसने ठंडी हवा की जगह ले ली थी।

आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो...

वररुची ने कहा, "हमें सतर्क रहना होगा। उनका जाना एक छलावा हो सकता है।"

न तो क्षपणक ने और न ही धन्वंतरि ने उत्तर दिया।

वररुची ने कहा, "हमें गिरे हुए जानवरों की तलाश करनी चाहिए।"

अभी तक किसी भी पार्षद की ओर से कुछ नहीं हुआ। वररुचि ने क्षपणक की ओर देखा।

वह आकाश की ओर देखते हुए भौंहें चढ़ा रही थी।

आगे आगे...

वररुचि ने अपने आसपास की आवाज़ों को धीरे-धीरे कमज़ोर और लड़खड़ाते हुए सुना। शहर का शोर भी अचानक थम गया, और बारिश की बूँदों की आवाज़ उसके कानों में खालीपन भरने लगी।

उसे एहसास हुआ कि हर कोई आसमान की ओर टकटकी लगाए देख रहा था।

क्षपणक की दृष्टि का अनुसरण करते हुए, वरारुचि ने देखा कि बादल एक बार फिर सीधे उनके सिर के ऊपर जमा हो रहे थे, सभी दिशाओं से तेज़ी से आ रहे थे। बढ़ती चिंता के साथ, उन्होंने देखा कि एकत्रित बादल गोलाकार गति में घूमने लगे, आकाश में एक भंवर, एक अदृश्य धुरी पर घूमते हुए उज्जैन के ऊपर नीचे उतर रहा था। किसी के होंठों से भय की एक कराह निकली, लेकिन वरारुचि ने उसे अनसुना कर दिया। टकटकी लगाए, उन्होंने घूमते बादलों को अजीबोगरीब आकृतियाँ बनाते हुए देखा जो आपस में जुड़कर पंखों का रूप ले रही थीं—अनेक पंख, सैकड़ों पंख, फैलते और फड़फड़ाते हुए। और इन पंखों से गिद्धों की आकृतियाँ उभर रही थीं। सैकड़ों-सैकड़ों गिद्ध पंखों से निकल रहे थे, न कि इसके विपरीत; सैकड़ों-सैकड़ों गिद्ध शहर के चारों ओर बड़े-बड़े चापों में चक्कर लगा रहे थे, नीचे उतरते हुए, आकाश से गिरते हुए और बड़े होते जा रहे थे...

वररुचि ने मन ही मन सोचा, वे वापस आ गए हैं।

"ये कोई साधारण गिद्ध नहीं हैं," धनवंतरी ने हैरानी से कहा।

वररुची ने महसूस किया कि पास की छतों पर मौजूद सैनिकों में दहशत फिर से हावी हो गई है। वे अजीब तरह से पीछे हट रहे थे, क्योंकि वे चाहते थे कि अगला हमला शुरू होते ही वे महल के अंदर हों।

वररुची ने मन ही मन सोचा, अभी खेल खत्म नहीं हुआ है। यह सब एक छलावा था। गिद्ध और जानवर मिलकर काम कर रहे थे—

दो गिद्ध अचानक झुंड से अलग हो गए और महल की ओर तेजी से झपट्टा मारते हुए सीधे छत की ओर बढ़े—जहां क्षपनाका ने अपना धनुष खींचकर तैयार रखा था, जिसका तीर आने वाले पक्षियों के बीच एक तंग चाप बनाते हुए अपने पहले लक्ष्य को निर्धारित कर रहा था।

उसके बगल में, वरारुची ने अपनी उरुमी तलवार बाहर निकाल रखी थी और उसे फैला रखा था, स्टील की लचीली लंबाई उसके हाथ से झूलते हुए लापरवाही से चमक रही थी।

गिद्ध निर्भीक होकर छत की ओर चल पड़े।

"क्या मुझे गोली चलानी चाहिए?" क्षपनाका ने दांत पीसते हुए पूछा।

"रुको।" वरारुची ने खुद को संभाला। "देखते हैं ये क्या है।"

गिद्ध छज्जे के किनारे, मुंडेर के पास धीरे से उतरे, अपने पंखों को मोड़कर बड़ी सहजता से अंदर समेट लिया। वे फुदकते और लड़खड़ाते हुए वरारुचि और क्षपणक के ठीक सामने आ गए, क्षपणक का धनुष एकदम स्थिर था, और तीर एक गंजे, काले सिर से दूसरे सिर के बीच झूल रहा था।

आपको व्यालों से डरने की कोई जरूरत नहीं है।

वरारुचि ने पलकें झपकाईं और क्षपणक की ओर एक नज़र डाली। क्या वह यह सब कल्पना कर रहा था, या किसी पक्षी ने कुछ कहा था?

"किस बात का डर?" क्षपणक का धनुष ज़रा भी नहीं डगमगाया। तीर बोलने वाले गिद्ध की ओर तना हुआ था।

"व्याल... जिन चीजों ने तुम पर हमला किया था। मैंने यह सुनिश्चित कर दिया है कि वे वापस नहीं लौटेंगे।"

"और तुम कौन हो?" वरारुची ने अपनी आवाज को शांत रखते हुए पूछा।

"हम शांतिपूर्वक और मित्रतापूर्वक आए हैं, सम्राट विक्रमादित्य।"

मैं विक्रम नहीं हूँ—"

गिद्ध भड़क उठे। पलक झपकते ही उन्होंने अपना रूप बदल लिया, उनके पंख भूरे धुएं में बदल गए जो एक घने, काले बादल में तब्दील हो गया और वरारुची के कुछ समझ पाने से पहले ही गायब हो गया।

कुछ क्षण पहले जहाँ घना काला बादल था—और उससे पहले राख जैसा धुआँ, और उससे पहले दो गिद्ध—वहाँ अब दो आकृतियाँ खड़ी थीं। आगे खड़ा व्यक्ति, जिसने बात की थी, मोटा और बालों से भरा हुआ था, उसकी चौड़ी छाती सोने की जंजीरों से सजी थी। उसकी गोल-मटोल उंगलियों और पैरों की उंगलियों पर अंगूठियाँ चमक रही थीं, उसकी बाहों में कंगन और बाजूबंद सजे थे, और उसने अपने कानों, नाक, और अपनी गुंथी हुई बालों और घनी काली दाढ़ी में भी सोने के आभूषण पहन रखे थे। उसने वरारुचि, क्षपणक और धनवंतरी को प्रणाम किया। जब उसने बात की, तो उसके मोटे, फूले हुए होठों से शब्द हल्के से लयबद्ध होकर निकले।

"अवंती के राजा, नमस्कार। मैं कुबेर, यक्षों का स्वामी हूँ। हम आपकी सहायता के लिए यहाँ आए हैं।"

वरारुचि उस असाधारण आकृति को विस्मित होकर देखता रहा, इतना आश्चर्यचकित कि उसके पास कहने के लिए शब्द ही नहीं थे। तभी सन्नाटे में महल के अंदर से कदमों की आहट सुनाई दी। मुड़कर देखने पर उसने देखा कि महल के दो रक्षक छत पर आ गिरे और रुकते ही एक-दूसरे पर गिर पड़े।

"यह क्या है?" वरारुची ने पूछा।

पहरेदार घबरा गए। फिर, हिम्मत जुटाकर उनमें से एक बोला।

"माननीय महोदय, महारानी विशाखा महल से लापता हैं और उनका पता नहीं चल पा रहा है।"

***

सीमा कितनी दूर है?

उर्वशी हिचकिचाई। "हम्म... लगभग एक दिन का सफर," उसने आगे अंधेरे में देखते हुए अंदाज़ा लगाया, मशाल की रोशनी से ज़्यादा देखने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रही।

"बस इतना ही? तब वे मुझे वहाँ क्यों नहीं ले गए? उन्होंने... उसने मुझे बताया था कि वह बहुत दूर है।" रानी थोड़ी देर रुकी, सोचने लगी। "शायद विक्रम कहीं और है, सीमा से बहुत दूर..."

उर्वशी रानी के लहजे में पनप रहे संदेह से सतर्क हो गई। "महाराज सीमा पर हैं, महाराज। महल में सभी जानते हैं कि वे कहाँ मिलेंगे," उसने बीच में ही कहा। "उन्होंने आपसे झूठ बोला क्योंकि वे आपको उनके पास नहीं ले जाना चाहते थे।"

"क्यों नहीं?" विशाखा रुक गई और आशंका से उर्वशी की ओर देखने लगी।

"क्योंकि... वे नहीं चाहते कि तुम उसके साथ रहो?" अप्सरा ने जवाब ढूंढते हुए सुझाव दिया।

"वे मुझे विक्रम के साथ क्यों नहीं देखना चाहेंगे?" विशाखा की आवाज, निराशा और आक्रोश से भरी हुई, घुमावदार गलियारे में खोखली और असंबद्ध सी गूंज उठी।

"मुझे नहीं पता, महाराज," अप्सरा ने मन ही मन आह भरी, सवालों से थक चुकी थी। "जैसा कि मैंने कहा, मैं महल में नई हूँ।"

महल में मौजूद लोग उसे उसके पति के पास क्यों नहीं ले जा रहे थे, इससे क्या फर्क पड़ता था? वह उसे ले जा रही थी—खैर, सच में नहीं, लेकिन फिर भी—तो रानी को खुश रहना चाहिए और लगातार बड़बड़ाने के बजाय चुप रहना चाहिए... अप्सरा चाहती थी कि वह रास्ते पर ध्यान दे; उसे डर था कि रानी गलत मोड़ ले लेगी और वे रास्ता भटक जाएंगे। रानी को उस चौराहे पर सही रास्ता पता था जिसे वे पीछे छोड़ आए थे, लेकिन...

"क्या आपको यकीन है कि हम सही रास्ते से आए हैं, महाराज?" उर्वशी ने पूछा।

"विक्रम मुझसे प्रेम करते हैं, वे मुझ पर जान छिड़कते हैं," विशाखा संकरे और तीखे ढलान वाले रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए मुड़ी। उसने अप्सरा का सवाल सुनने का कोई संकेत नहीं दिया। "वे मेरे साथ रहना चाहेंगे।"

वह ऐसा करेगा। उर्वशी को इस बात में कोई संदेह नहीं था। उसने उस आदमी का उस औरत के प्रति प्रेम देखा था। तब भी यह बात उसे आकर्षित करती थी। अब भी यह उसे आकर्षित करती है। यह एक ऐसी खुजली थी जिसे खुजलाना ही था।

"महामहिम, सम्राट आपसे इतना प्रेम क्यों करते हैं?"

"क्यों?" यह सवाल सुनकर रानी चौंक गईं और सोचने लगीं।

"हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए, माननीय न्यायाधीश।"

विशाखा ने सावधानी से कदम बढ़ाते हुए फिर से चलना शुरू किया। आगे कहीं से बहते पानी की धीमी गड़गड़ाहट सुनाई दी।

"क्या इसका कारण यह है कि आप भी उनसे प्यार करते हैं, माननीय न्यायाधीश?"

"नहीं। मेरा मतलब है, हाँ... मैं उससे प्यार करती हूँ, लेकिन वह मुझसे इसलिए प्यार नहीं करता। मुझे पता है, क्योंकि उसने एक बार कहा था कि अगर मैं उससे प्यार करना बंद कर दूँ, तब भी वह मुझसे प्यार करेगा। कि वह यह नहीं जानता कि मुझसे प्यार करना कैसे बंद किया जाए। उसने अपने प्यार को खरपतवार कहा था।"

"एक खरपतवार?" उर्वशी ने हैरानी से रानी के सिर के पिछले हिस्से को देखा।

"हाँ," विशाखा उस याद को याद करके प्यार से हँसी। "उन्होंने कहा था कि उनका प्रेम न तो चाँदनी रात में खिले हुए भव्य कमल जैसा है, न ही चमकते रुद्रपुष्प जैसा, और न ही मदहोश कर देने वाले चंपक जैसा। उन्होंने मेरे प्रति अपने प्रेम को एक खरपतवार कहा था, जो कहीं भी पनप सकता है, बस मेरी मुस्कान की हल्की सी

धूप से ही पनप सकता है।" रानी ने सिर हिलाया, और उर्वशी समझ गई कि वह मन ही मन मुस्कुरा रही है। "विक्रम जब चाहे तब बड़े रोमांटिक हो सकते थे।"

किसी की मुस्कान की धूप में पनपता हुआ एक खरपतवार। यह भी उर्वशी के लिए एक नया विचार था। लेकिन फिर उसे याद आया कि उस रात राजा ने उस स्त्री के बिस्तर के पास क्या कहा था: यही वह है जिससे मैं प्रेम करता हूँ... यही वह है जिसे मैं अपनी बाहों में थामना चाहता हूँ, जिसे मैं रात-रात भर लोरी सुनाकर सुलाना चाहता हूँ। दो साल तक राजा उस स्त्री के बिस्तर के पास इस उम्मीद में बैठा रहा कि वह जाग उठेगी, उसकी मुस्कान की धूप से भी कम में पनपता हुआ, जिद्दी, अपने विश्वास की मिट्टी में अपनी जड़ें गहरी जमाए हुए कि वह उसके पास लौट आएगी... उसका प्रेम, एक खरपतवार...

क्या किसी से इस तरह बिना शर्त प्यार करना संभव है, यह जानते हुए कि शायद आपके प्यार का कभी जवाब न मिले?

"सावधान रहो," विशाखा की आवाज़ ने उर्वशी को वापस रास्ते की ओर खींच लिया। पानी के बहने की आवाज़ अब तेज़ हो गई थी। "हम एक संकरे किनारे के पास पहुँच रहे हैं," रानी ने पीछे मुड़कर कहा। "मुझे बेहतर देखने के लिए टॉर्च की ज़रूरत है।"

अप्सरा ने उसे प्रकाश सौंप दिया।

"मेरे पीछे आओ, लेकिन संभलकर कदम रखो," विशाखा ने हिदायत दी। "एक भी गलत कदम, और तुम खाई में गिरकर बह जाओगे।" वह रुकी, सोचने लगी। "मुझे याद नहीं आ रहा कि वह कौन था, लेकिन विक्रम ने एक बार किसी को नदी में गिरने से बचाया था..."

उर्वशी अब सुन नहीं रही थी। उसके विचार अगली समस्या पर केंद्रित हो गए थे: इस मार्ग से बाहर निकलकर शहर से बाहर जाते ही रानी से कैसे छुटकारा पाया जाए। अप्सरा ने सोचा कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर रानी को चट्टान से धक्का देकर नदी में गिरा सकती है। वह अपने पंजों के बल उस ऊबड़-खाबड़ चट्टान पर चल रही थी, उसकी एड़ियाँ खाई के ऊपर लटक रही थीं और उसके हाथ चट्टान में धंसी जंग लगी लोहे की रेलिंग को कसकर पकड़े हुए थे। बस एक झटके में रानी का कंधा पकड़कर उसे खींचकर नदी में फेंक दे। लेकिन उर्वशी को रानी की ज़रूरत तब तक थी जब तक कि वह मार्ग ग्रामीण इलाके में न खुल जाए...

"...जितना संभव हो, और विक्रम इस बात पर जोर देता था..."

"हम कुएँ से कितनी दूर हैं?" उर्वशी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, अब उसे दिखावा करने की कोई परवाह नहीं थी। वह तंग आ चुकी थी।

विशाखा असमंजस में रुक गई, फिर उसके चेहरे पर भाव उभर आए। "ओह, अब हम करीब हैं।"

"अच्छा।" उर्वशी किनारे से नीचे उतर गई। रास्ता चौड़ा होकर दाईं ओर मुड़ गया। "चलो चलें।"

उर्वशी को पता नहीं था कि यह उसकी रूखेपन की वजह से था या विशाखा की थकान के कारण, लेकिन रानी की बातें धीरे-धीरे बंद हो गईं, और ऊपर की ओर बढ़ते हुए केवल उनके कदमों की आहट ही सुनाई दे रही थी, क्योंकि रास्ता अब ढलानदार और घुमावदार था। दीवारों से पानी टपक रहा था, और जगह-जगह अप्सराओं को छत से लटके हुए चमगादड़ों की आंखों पर मशाल की रोशनी चमकती दिखाई दे रही थी।

चढ़ाई अंतहीन सी लग रही थी। उर्वशी को डर लगने लगा था कि कहीं वे कोई मोड़ न चूक गए हों या गलत सुरंग में न आ गए हों, तभी उसकी नज़र दूर आगे हल्की सी परावर्तित धूप की किरण पर पड़ी।

"बस पहुंचने ही वाले हैं," विशाखा ने घोषणा की, और अप्सरा को राहत की लहर महसूस हुई।

"महाराज, मुझे आगे चलने दीजिए," उर्वशी ने एक बार फिर पूरी विनम्रता और औपचारिकता के साथ कहा। "मैं सुनिश्चित करूँगी कि रास्ता साफ हो और आपके लिए कोई खतरा न हो।" जवाब का इंतजार किए बिना, उसने रानी से मशाल ली और आगे बढ़ गई।

गलियारे के अंत में खुला द्वार दिखाई देने लगा। पास पहुँचकर अप्सरा ने देखा कि उसके सामने हरी काई से ढकी एक घुमावदार पत्थर की दीवार थी। उर्वशी ने अपना सिर उस खुले द्वार से अंदर डाला और कुएँ के शांत, हरे पानी में झाँका, जिसकी सतह पर सूखे पत्ते, कुछ कमल के पत्ते और कुछ जलीय कीड़े-मकोड़े इधर-उधर फुर्ती से रेंग रहे थे। ऊपर देखते ही उसने कुएँ का गोल मुँह देखा, जहाँ से बाहर पेड़ों की घनी पत्तियों के बीच से सूरज की कुछ हल्की किरणें अंदर आ रही थीं।

"हमें ऊपर तक पहुंचने के लिए चेन का इस्तेमाल करना होगा," विशाखा की आवाज पीछे से आई।

तभी अप्सरा ने द्वार के किनारे लटकती हुई जंजीर को देखा, जिसकी मजबूत कड़ियों पर जंग के धब्बे लगे हुए थे।

उसे पता था कि क्या करना है। उसने रानी की ओर रुख किया।

"आप यहीं रुकिए, मैं ऊपर पहुँच जाती हूँ," उसने गंभीर और आशंका से भरे चेहरे से कहा। "याद रखिए, वे नहीं चाहते कि आप सम्राट से मिलें, इसलिए उन्होंने ऊपर पहरेदार तैनात किए होंगे।" विशाखा के चेहरे पर घबराहट देखकर उसे खुशी हुई। "आप यहीं रुकिए, आप मेरा इंतज़ार कीजिए। मैं जाकर देखती हूँ कि कोई खतरा तो नहीं है। अगर सब ठीक रहा, तो मैं वापस आ जाऊँगी, और फिर आप बाहर आ सकती हैं। तब तक यहीं रुकिए। मेरे पीछे मत आना, ठीक है?"

"ठीक है," विशाखा ने जल्दी से सिर हिलाया, उसका चेहरा अचानक पीला पड़ गया। "सावधान रहना।"

उर्वशी कुएँ के मुहाने से बाहर निकली और जंजीर पकड़ ली। फिर, कुएँ की दीवार पर चतुराई से उकेरे गए सहारे का इस्तेमाल करते हुए, वह एक के बाद एक सहारे पकड़ती हुई ऊपर चढ़ने लगी। उसने नीचे नहीं देखा, उसकी निगाहें कुएँ के मुँह पर टिकी थीं, जो उसके करीब आने पर और चौड़ा होता जा रहा था।

सांस फूल रही थी, जंजीर को कसकर पकड़ने से उसकी हथेलियाँ छिल गई थीं, परिश्रम के कारण उसकी बाहें और कंधे दुख रहे थे, उर्वशी कुएँ से बाहर निकली।

उसने चारों ओर देखा और मन ही मन मुस्कुराई।

वह खुले मैदान के बीचोंबीच थी, ठीक वैसे ही जैसे रानी ने कहा था। चारों ओर खेत थे, जिनकी सिंचाई एक छोटी नहर से होती थी। उसके बाईं ओर नहर पर बांस का बना एक कच्चा पुल था। दूर-दूर तक कोई इंसान नज़र नहीं आ रहा था, हालांकि कुछ झोपड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। उसके पैरों के नीचे की ज़मीन गीली थी, काली मिट्टी उसकी उंगलियों के बीच से निकल रही थी, और अप्सरा को यह एहसास अच्छा लग रहा था। उसे यह जानकर सुकून मिल रहा था कि वह महल की चारदीवारी से बाहर है, अपने चेहरे पर हवा और धूप महसूस कर रही है, और खुले मैदानों की ताज़ी हवा में सांस ले रही है।

वह आज़ाद हो गई, और यह सब उस महिला की बदौलत हुआ जो नीचे गलियारे में उसका इंतज़ार कर रही थी।

उर्वशी ने मुड़कर कुएं में अपना सिर डाला तो देखा कि विशाखा कुएं के मुहाने से उसे ऊपर की ओर देख रही थी।

"क्या सब ठीक है?" कुएं की बनावट के कारण रानी की आवाज और भी तेज सुनाई दी।

अप्सरा ने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, उसने उस जंजीर को पकड़ लिया जिसका इस्तेमाल उसने कुएं से बाहर निकलने के लिए किया था।

विशाखा उसे देखती रही। "क्या मैं अब ऊपर आ सकती हूँ?" उसने पूछा।

इसके जवाब में उर्वशी ने चेन को ऊपर खींचना शुरू कर दिया।

कुएं के अर्ध-अंधेरे में रानी की आंखें चौड़ी हो गईं। उनमें आश्चर्य था। साथ ही भय भी, क्योंकि उनके मन ने उन्हें बताया कि स्थिति में कुछ गंभीर गड़बड़ है।

“तुम क्या कर रही हो?” चीख और फुसफुसाहट के बीच कहीं जन्मी रानी के शब्द पथरीली सुरंग में कांपते हुए ऊपर तक पहुंचे।

उर्वशी चुपचाप जंजीर को खींचती रही, उसे ऊपर की ओर खींचती रही, विशाखा की पहुँच से और दूर ले जाती रही...

फैसले

ये वो चीजें हैं जो गरुड़ मेरे लिए लाया है..."

इंद्र ने मताली पर दो तलवारें तान दीं, उनके हाथ तलवारों के मूठों पर इतनी मजबूती से जकड़े हुए थे कि जब उन्होंने अपनी बात समझाने के लिए अपने हाथ हिलाए तो दोनों तलवारें कांप उठीं। "ये वही तलवारें हैं जो तुमने मानव राजा से ली थीं?"

मताली ने सादे लोहे के मूठ वाली पुरानी तलवारों पर एक नज़र डाली और इंद्र की नज़र से बचने के लिए अपना सिर झुका लिया। मताली के पीछे खड़े त्रिभानु ने पत्थर जैसे चेहरे के साथ चुपचाप यह सब देखा।

“मुझे बताया गया है कि ये नरक की आग हैं। अगर ये नरक की आग हैं, तो किन्नर सेना का नाश करने वाली चुड़ैलें कहाँ से आईं?” कोई जवाब न मिलने पर इंद्र का गुस्सा और गहरा गया। “मुझे जवाब दो, मूर्ख।”

"मुझसे कहीं कोई गलती हो गई है, महाराज।"

“कहीं नहीं,” इंद्र गुर्राए। “मैं तुम्हें ठीक-ठीक बता सकता हूँ कि तुमने कहाँ गलती की। तुमने मानव राजा की चालाकी को कम आँका, यह तुम्हारी मूर्खता थी। उसने तुम्हें यह विश्वास दिलाया कि नरक की अग्नियाँ आसानी से चुराई जा सकती हैं, उसने शायद तुम्हें उन्हें लेने का मौका भी दिया—और इस पूरे समय उसने असली नरक की अग्नियों को बड़ी सावधानी से छिपाए रखा। और ये?” देवों के स्वामी ने तलवारें मताली के पैरों पर फेंक दीं; वे गूँजती हुई गूँज के साथ चौड़े गलियारे में गिरीं। “ये बेकार नकली तलवारें हैं जिन्हें मुझे तुम्हें वापस उपहार में देना चाहिए... तुम्हारी पीठ में गहराई तक गाड़ देना चाहिए।”

इंद्र ने मताली को खतरनाक निगाहों से देखा, और मताली डर से कांप उठी।

“मुझे खेद है, महाराज। मुझे नहीं पता था कि ये नरक की आग नहीं हैं—”

“तुम्हें पता नहीं था क्योंकि तुमने यह जानने की परवाह ही नहीं की कि क्या ये वाकई नरक की आग थीं। और तुम्हारी लापरवाही के कारण किन्नर सेना अपने मूल स्वरूप के एक चौथाई तक सिमट गई है। तुम्हें यह एहसास तो है ना कि तुम्हें त्रिभानु को एक बहुत बड़ा स्पष्टीकरण देना है?”

मताली ने सिर हिलाया। त्रिभानु बोलने के लिए मुँह खोलने ही वाला था कि इंद्र ने हाथ उठाकर उसे चुप रहने का आदेश दिया।

"लेकिन पहले मुझे जवाब दो—खंजर का क्या हुआ? तुमने उसे अभी तक क्यों नहीं पाया?"

"मैंने महल में खोजा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला, महाराज," मताली ने लड़खड़ाते हुए शब्दों में कहा। "अगर मेरे पास और समय होता तो—"

"जो तुम्हें मिल जाता अगर चुड़ैलें आकर हमारे हमले में बाधा न डालतीं। फिर से तुम्हारी ही गलती है।"

"मुझे खेद है, महाराज।" मताली ने अपना सिर गहराई से झुकाया।

"मैं—"

"इसे अपना सौभाग्य समझो कि इस समय मेरे पास ध्यान भटकाने के लिए बहुत कुछ है," इंद्र ने मताली को अपनी बात पूरी करने का मौका दिए बिना कहा। "वरना, मैं अभी तुम्हारे साथ क्या करना है, यह तय कर लेता। यहाँ से चले जाओ। लेकिन याद रखना, यह मामला अभी सुलझा नहीं है, और न ही भुलाया गया है। यहाँ से जाओ, और..." उन्होंने तलवारों की ओर इशारा करते हुए कहा, "...इन्हें अपने साथ ले जाओ, ताकि ये तुम्हें तुम्हारी बेकारता की याद दिलाती रहें, और यह भी कि देवलोक को निराश करने का दंड तुम्हें अभी भुगतना है।"

मताली ने तलवारें उठाईं, जिनकी धारें हॉल की खामोशी में ज़ोर से टकराईं। उसने बेढंगे तरीके से प्रणाम किया और बिना कुछ कहे मुड़कर चला गया। उसके नज़रों से ओझल होने के बाद ही इंद्र ने मुड़कर हॉल में चहलकदमी करना शुरू किया।

नारद, त्रिभानु और तक्षक देवलोक के स्वामी को चिंतन करते हुए देख रहे थे, उनके हाथ पीछे बंधे थे और माथे पर गहरी लकीरें थीं। अंत में, टहलना बंद करके इंद्र ने सभाघर की ओर रुख किया।

"मैं ऐसे नाकाबिल लोगों से क्यों घिरा हुआ हूँ?" वह गरजते हुए बोला और नारद, त्रिभानु और तक्षक से गुहार लगाते हुए हाथ फैला दिए। "पहले अश्विन, फिर मरुत, अब ये... और हाँ, किसी को भी हिरण्यकशिपु के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं है। वह क्या चाहता था, कहाँ गया, कुछ भी नहीं..." उसने उंगलियां चटकाते हुए कहा, "...बस हवा में गायब हो गया? और गरुड़ क्या कर रहे थे?" देव का स्वर और भी क्रोधित हो गया। "उन्होंने हमें उसके आने की सूचना क्यों नहीं दी? अगर वे पाताल पर बेहतर नज़र रखते तो दे सकते थे। लेकिन नहीं... नाकाबिलियत।"

उसने सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर खुद को शांत किया और नाग, किन्नर और राजनयिक की ओर देखा। "क्या यह महज़ बदकिस्मती है, या मानव राजा को हराना वाकई इतना कठिन है?"

कुछ पल के लिए कोई नहीं बोला।

अंत में त्रिभानु ने कहा, "हे स्वामी, वह नरक की अग्नियों का स्वामी है।"

और उस खंजर की रक्षा के लिए उसे स्वयं सर्वज्ञानी ईश्वर द्वारा चुना गया था।

इंद्र ने तक्षक की ओर गुस्से से देखा। "क्या तुम्हारे शब्दों में कोई चेतावनी छिपी है?"

"त्रिभानु की तरह, मैंने भी अभी-अभी एक तथ्य बताया है, मेरे मित्र," नाग ने संयम से उत्तर दिया।

"अच्छा। क्योंकि मैं न तो मानव राजा से डरने वाला हूँ और न ही कुछ असफलताओं से हतोत्साहित होने वाला। और मैं हलाहला की खोज नहीं छोड़ूंगा।"

"हे स्वामी, आप क्या करने की योजना बना रहे हैं?" नारद ने सावधानी से पूछा।

इंद्र ने राजनयिक को एक चतुर दृष्टि से देखा और फिर खिड़की से बाहर मेरु पर्वत को दूर से उगते हुए देखा, जो दोपहर की हल्की रोशनी में धूसर रंग का दिख रहा था।

"शायद मुझे यह रास्ता पहले ही चुन लेना चाहिए था, मताली और बाकी सभी मूर्खों पर भरोसा करने के बजाय।" देवों के स्वामी ने नारद की ओर मुड़कर कहा, "लेकिन अभी भी देर नहीं हुई है।"

"किसलिए, महाराज?"

"अही को अपनी आज्ञा का पालन करने का आदेश देना।"

तक्षक, त्रिभानु और नारद बिल्कुल स्थिर खड़े थे।

"हम अहि को बुलाएँगे।" इंद्र की आँखों में द्वेषपूर्ण आशा की चमक थी। "अहि एक ऐसा मौलिक प्राणी है जिसे मारा नहीं जा सकता। नरक की आग भी उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकती। जैसे ही अहि उसके राज्य को नष्ट करना शुरू करेगा, विक्रमादित्य मेरे सामने आत्मसमर्पण करने के लिए विवश हो जाएगा।"

नारदा अभी कुछ बोलने ही वाले थे कि तभी उनके पीछे से एक धीमी आवाज आई।

"अही मछली के पालन-पोषण में एक छोटी सी समस्या है।"

राजनयिक ने मुड़कर देखा तो दरवाजे पर बृहस्पति खड़े थे, जो घबराहट में अपने बालों को सहला रहे थे।

"क्या समस्या है?" इंद्र की आवाज तीखी सुनाई दी।

दरबारी अपने टेढ़े पैरों पर लड़खड़ाते हुए हॉल में दाखिल हुआ, वह स्पष्ट रूप से असहज दिख रहा था। वह तक्षक के पास आकर रुका और गला साफ किया, अभी भी शब्दों की तलाश में था।

"क्या समस्या है, गुरुदेव?" इंद्र ने फिर से पूछा, उसकी आवाज़ नरम थी, लेकिन किसी तरह उसमें और भी धमकी का भाव था।

"मंत्र...हिरण्यकशिपु द्वारा महल पर किए गए हमले का कारण थे।"

जैसे ही उन शब्दों के निहितार्थ उन पर टूट पड़े, देवराज का चेहरा बेबस क्रोध से काला पड़ गया...

***

"कुबेरा।" यह नाम कर्कश, विषैली गुर्राहट के साथ निकला। "कुबेरा, कुबेरा, कुबेरा।"

हड्डियाँ उछलती-कूदती और चिकने संगमरमर पर बिखर गईं, मानो मंडल से दूर जा गिरीं, मानो उस हाथ से भाग रही हों जिसने उन्हें इतनी बेरहमी से ज़मीन पर फेंका था। दो टुकड़े फिसलकर एक कोने में रखी लेखन मेज के नीचे गायब हो गए, तीन टुकड़ों को लोहे की लकड़ी के पलंग के नीचे शरण मिली, जबकि छठी कशेरुका ज़मीन पर लुढ़कती रही, और अंत में, अनाथ होकर और कहीं छिपने की जगह न पाकर, हिरण्यक्ष के चरणों में आकर रुक गई।

"कुबेर, वह दखलंदाजी करने वाला सड़ा हुआ यक्ष का लोथड़ा," शुक्राचार्य ने अपने सामने बने मंडल पर गुस्से से घूरते हुए शाप दिया। उनके हाथ मुट्ठी में बंद थे, मुट्ठियाँ जांघों पर टिकी थीं, पीठ झुकी हुई थी, उनका पूरा शरीर क्रोध से तना हुआ और कांप रहा था। "यह सब उसी की गलती है।"

हिरण्याक्ष ने तिरछी निगाहों से महायाजक को देखा, उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है। मानव नगरी पर हमला तो बहुत अच्छा चल रहा था...

"महागुरु, कुबेर ने क्या किया?" होलिका ने कमरे के दूसरे छोर से पूछा।

शुक्राचार्य ने गुर्राते हुए कहा, "वह मनुष्यों को बचाने के लिए अपने यक्षों को लाया था।"

असुर स्वामी अचंभित होकर देखता रहा। "बचाव? क्यों?"

"क्योंकि, न्याय की भावना में आकर उसने विक्रमादित्य का साथ देने का निर्णय लिया है।" प्रधान पुरोहित ज़मीन पर बैठे-बैठे ऊपर देखने लगा, उसकी अच्छी आँख एक-एक करके सभी भाई-बहनों पर घूम रही थी। "ऐसा लगता है कि उसने वैषद के खंजर के लिए मनुष्यों का साथ देने का फैसला कर लिया है।"

"मनुष्यों से गठबंधन?" होलिका हैरान दिखी। "यह तो समझ में ही नहीं आता। इससे उसे और यक्षों को क्या फायदा होगा?"

"मुझे भी नहीं पता, लेकिन मेरी हड्डियां तो यही बताती हैं।"

"क्या ऐसा हो सकता है कि कुबेर हलाहल पर अपना अधिकार जमाना चाहता हो, और यह मनुष्यों का विश्वास जीतने की एक चाल हो?" हिरण्याक्ष ने अपने पैरों के पास पड़ी हड्डी को उठाने के लिए झुकते हुए पूछा।

चुड़ैल रानी और प्रधान पुजारी ने चिंता भरी निगाहों का आदान-प्रदान किया।

शुक्राचार्य ने कहा, "मनुष्य मित्रता और सहायता के प्रस्तावों से सावधान रहते हैं। यह मत भूलिए कि उन्होंने नारद के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था, और वीषाद के छुरे के बदले उनकी रानी का इलाज करने के मेरे प्रस्ताव को भी अस्वीकार कर दिया था। मेरा मानना है कि वे कुबेर से भी सावधान रहेंगे।"

"लेकिन उसने तो उनके शहर को बचा लिया," हिरण्याक्षा ने बताया।

"और उसने उन्हें खंजर को सुरक्षित रखने में मदद की," होलिका ने आगे कहा।

"मुझे पता है," प्रधान पुजारी ने झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "कुबेर शायद कटार के लिए खेल रहा हो। यह भी उतना ही संभव है कि वह ऐसा नहीं कर रहा हो। दोनों ही स्थिति में, उज्जैन में जादुई यक्षों की उपस्थिति चिंताजनक है।"

"मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि उसने हमें कैसे नाकाम किया," हिरण्याक्षा ने कहा।

"जब अमरका और चंदासुर ने उज्जैन पर आक्रमण किया, तब कुबेर और उनके यक्ष गिद्धों का वेश धारण करके शहर में पहले से ही मौजूद थे—" शुक्राचार्य ने हाथ उठाकर होलिका को रोकते हुए कहा, "—मुझसे यह मत पूछो कि क्यों। मैं तुम्हें वही बता रहा हूँ जो मैंने हड्डियों से सीखा है। बात यह है कि वे उज्जैन में थे और मनुष्यों को इसकी कोई जानकारी नहीं थी। खैर, हमारे आक्रमण से शहर में आग लग गई, और हम बस इतना ही करीब थे," उन्होंने अंगूठे और तर्जनी के बीच की एक छोटी

सी दूरी दिखाते हुए हाथ उठाया, "आत्मसमर्पण कराने के बस इतना ही करीब थे, तभी कुबेर ने अपना कदम उठाया।"

"उसने क्या किया?"

"वह जानता था कि व्याल अग्नि से ऊर्जा प्राप्त करते हैं, कि ऊष्मा ही उन्हें जीवित रखती है। इसलिए, उसने अपने यक्षों को नमी के कणों का रूप धारण करने और व्यालों और उज्जैनी पर वर्षा करने का आदेश दिया। यक्षों ने जल के अणुओं से पाले और बर्फ में परिवर्तित होने से पहले, शहर और उसके ऊपर मौजूद सभी ऊष्मा स्रोतों को निष्क्रिय कर दिया। उज्जैनी के ऊपर की हवा इतनी ठंडी हो गई कि व्यालों की नसों में दौड़ती अग्नि ठंडी पड़ गई और उन्होंने अग्नि-गोले बनाना बंद कर दिया। अंत में, वे बड़ी मुश्किल से हवा में टिके रहे और उड़कर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए।"

"क्या हमने कई व्याल खो दिए?" असुर स्वामी ने गंभीर स्वर में पूछा।

"उनमें से चौदह।"

"उनमें से अधिकतर तब बच निकले थे और उन्हें वापस युद्ध में उतारा जा सकता है," होलिका ने राहत की सांस ली।

"हाँ, लेकिन व्यालों का अब कोई खास उपयोग नहीं है क्योंकि यक्ष उनकी कमजोरी का फायदा उठाना जानते हैं," प्रधान पुरोहित ने कहा। "जब तक यक्ष उज्जैन में हैं, हम मनुष्यों पर हमला करने के लिए व्यालों का उपयोग नहीं कर सकते।"

"हमें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है," हिरण्यक्ष ने जवाब दिया। "अब जब हमें पता चल गया है कि यक्ष मनुष्यों की मदद कर रहे हैं, तो हम उनके लिए तैयार हो सकते हैं। अगर हम कुबेर की मदद से भी उज्जैन पर पूरी ताकत से हमला करें, तो मनुष्यों के लिए होलिका और मुझे रोकना नामुमकिन होगा। हम उन्हें बचा सकते हैं—"

"मैं इन बेतुके युद्धों से तंग आ चुका हूँ जिनमें अंत में मनुष्य ही विजयी होते हैं," शुक्राचार्य ने सिर हिलाते हुए बीच में कहा। "हिरण्यक्ष, तुम सही कह रहे हो कि हमें उन पर पूरी ताकत से हमला करना चाहिए। हमें करना ही होगा। ऐसा हमला जो मनुष्यों का सफाया कर दे। लेकिन उस हमले को शुरू करने से पहले हमें थोड़ा इंतजार करना होगा।"

होलिका और हिरण्याक्ष ने एक-दूसरे की ओर देखा। "किस बात का इंतज़ार, महागुरु?"

"हिरण्यकशिपु की वापसी के लिए," शुक्राचार्य की आँखों में घृणा की चमक आ गई। "तब तक चंदासुर और अमरक भी लौट आएंगे।"

"महागुरु, आपके मन में क्या है?" हिरण्याक्ष ने अपनी उंगलियों के बीच हड्डी को घुमाते हुए पूछा, उसकी सुनहरी आंखें शुक्राचार्य के चेहरे को निहार रही थीं।

"एक ऐसी चीज है जिसे मैं हलाहल के साथ-साथ लगभग उतनी ही शिद्दत से चाहता हूँ," प्रधान पुजारी ने घोषणा की, और फर्श से उठकर उस खिड़की की ओर बढ़े जहाँ से पाताल गंगा का उफनता पानी दिखाई देता था। "मैं चाहता हूँ कि मानव नगरी नष्ट हो जाए। पूरी तरह नष्ट। मिट्टी में मिला दिया जाए, धरती से मिटा दिया जाए, स्मृति से मिटा दिया जाए।"

वह असुरों की ओर मुड़ा, उसके होंठों पर एक क्रूर मुस्कान थी। "हिरण्यकशिपु के मंत्र लेकर लौटते ही, अमर्का और चंदासुर अही को जागृत करके अवंती भेज सकते हैं। उसी समय, तुम दोनों अपने भाई की मदद से मानव परिषद के प्रतिरोध को तोड़कर हलाहल पर अधिकार कर सकते हो। तुम तीनों और अही के बल पर, मनुष्य और उनके सहयोगी उज्जैन के विनाश को रोकने में असमर्थ होंगे।"

***

"हमें कैसे पता चलेगा कि उन पर भरोसा किया जा सकता है?"

"हमें यह भी नहीं पता कि वे वही हैं जो वे होने का दावा करते हैं।"

"कौन जाने, हो सकता है कि विशाखा के लापता होने में उनका हाथ हो।"

वरारुचि, धनवंतरी और वराहमिहिर ने एक-दूसरे को अनिश्चितता भरी निगाहों से देखा, सभा कक्ष की खामोशी में यक्षों के बीच चल रही नोकझोंक के बारे में उनके विचार स्पष्ट नहीं थे। बाहर, चमकीला सूरज धीरे-धीरे शहर को गर्म कर रहा था, आसमान उन आगों के धुएं से साफ हो चुका था जिन्होंने उज्जैन के आधे हिस्से को राख में बदल दिया था।

"उन्होंने कहा कि वे जल में परिवर्तित होकर वर्षा के रूप में बरसे... ताकि व्यालों को भगा सकें?" वराहमिहिर ने वैकल्पिक वाक्यों पर जोर देते हुए प्रश्न को लयबद्ध

ढंग से पूछा। उन्होंने पहले भी इसी संदेहपूर्ण स्वर में, अविश्वास के उसी भाव के साथ यह प्रश्न पूछा था।

वररुचि ने सिर हिलाया। वराहमिहिर के चेहरे पर बढ़ती शिकन देखकर उन्होंने कहा, "देखिए, हमने उन्हें सादे बादलों से गिद्धों का रूप लेते देखा, और हमने कुबेर और अन्य यक्षों को... खैर, जो हम अभी देख रहे हैं, अपनी आँखों के सामने बदलते देखा। क्षपणक और मैं अकेले नहीं थे—वहाँ पहरेदार, दरबारी, महल के अधिकारी, महल के सेवक... महल के आधे लोग छतों पर थे और उन्होंने यह सब देखा।"

"ठीक है, लेकिन क्या उन्होंने सचमुच व्यालों को भगा दिया?" वराहमिहिर ने अपने गाल पर मौजूद चेचक के एक निशान को खुजलाया।

"आपने बारिश देखी। ठीक है, हमने पहले भी बारिश देखी है, लेकिन आपने देखा कि हर जगह कड़ाके की ठंड थी—आपने इसका अनुभव किया। इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है।"

ठंड का जिक्र सुनते ही धनवंतरी के शरीर में नाटकीय ढंग से सिहरन दौड़ गई।

"हमने देखा कि बारिश और ठंड शुरू होते ही जीव गिरने लगे," वरारुचि ने आगे कहा। "अब तक हमने पूरे शहर में तेरह जानवर गिरे हुए देखे हैं—अगर झील के पानी के नीचे वाले को भी शामिल करें तो चौदह। सभी मरे हुए हैं। लोगों को सींग वाले सवारों के नौ शव भी मिले हैं। कुबेर हमें बताते हैं कि वे असुर हैं। यक्षों ने उन्हें गिराने में ज़रूर कोई भूमिका निभाई होगी।"

वराहमिहिर ने सिर हिलाया। "तो क्या हम उन पर भरोसा कर सकते हैं?"

वररुची ने कहा, "मैंने ऐसा नहीं कहा।"

तो फिर आप क्या कह रहे हैं?

"मेरा मानना है कि यक्षों ने व्यालों से छुटकारा दिलाने में मदद की और उज्जैन को विपत्ति से बचाया। लेकिन मुझे नहीं पता कि उन्होंने ऐसा क्यों किया और क्या उनके इरादे नेक थे।"

"हाँ, क्या तुम्हें वह वैद्य याद है?" धनवंतरी ने चेतावनी दी।

"बिल्कुल।"

"विशाखा के गायब होने का समय मुझे चिंताजनक लगता है," वराहमिहिर ने कहा। "यह बहुत बड़ा संयोग है कि ये यक्ष आते हैं और—"

"हो सकता है कि महल पर हमले के दौरान वह रास्ता भटक गई हो," चिकित्सक ने कहा। "वहाँ पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी..."

"वह यूं ही कैसे खो सकती है?" वराहमिहिर ने तर्क दिया। "अगर वह महल में नहीं है तो कहां हो सकती है? हमले के बीच में उसका बाहर जाना तो नामुमकिन है—" कमरे का दरवाजा खुलते देख वह रुक गया।

अन्य दो पार्षदों ने मुड़कर देखा तो दरवाजे पर क्षपनाका खड़ी नजर आईं।

"वह मिल गई है," क्षपनाका ने घोषणा की।

"Vishakha? Where was she?"

"क्या वह ठीक है?"

सवाल एक साथ निकल पड़े।

"वह ठीक है।" क्षपणका झुके हुए कंधों में राहत और थकान के भाव लिए अंदर आई। "वह कुएँ की ओर जाने वाले गुप्त मार्ग में थी।"

दोनों पुरुषों ने एक-दूसरे की ओर देखा। वराहमिहिर ने पूछा, "वह वहाँ क्या कर रही थी?"

क्षपनाका ने सिर हिलाया। "वह सीमा की ओर जा रही थी।" पुरुषों के चेहरों पर आश्चर्य देखकर उसने सहमति में सिर हिलाया। "सम्राट के साथ रहने के लिए। उसे भूलभुलैया से होकर कुएँ तक जाने का रास्ता याद आ गया था।"

"I must see her," said Dhanavantri.

"इसीलिए तो मैं आया हूँ," क्षपणक ने उत्तर दिया।

"वह कहाँ है?"

"उसके कक्ष में।"

चिकित्सक ने सिर हिलाया और जल्दी से कमरे से बाहर निकल गया।

"तो, यक्षों का उसके गायब होने से कोई लेना-देना नहीं था," वराहमिहिर ने अनुमान लगाया।

"नहीं। दरअसल, बात इसके बिल्कुल उलट थी। एक यक्ष ने उसे ढूंढने में मदद की थी।"

वराहमिहिर और वररुचि आश्चर्य से देखने लगे।

"जब लोगों ने हमें विशाखा के बारे में खबर दी, तब कुबेर छत पर थे," क्षपणक थकी हुई आवाज़ में कुर्सी पर बैठते हुए बोले। "उन्होंने ज़रूर कुछ सुन लिया होगा

और उन्होंने यक्षों को खोजबीन का इंतज़ाम करने को कहा। मुझे नहीं पता कि वे विशाखा को कैसे पहचानते, लेकिन खैर, एक यक्ष ने पत्थर के कुएँ के तल में एक स्त्री को देखा और कुबेर को सूचना दी। कुबेर ने महल के पहरेदारों को समझाया और वे खोजबीन के लिए निकल पड़े... महज़ संयोग था कि यक्ष ने उसे देख लिया।"

"वाह!" वराहमिहिर ने अपने गाल फुलाते हुए कहा। "यह कुबेर तो वाकई चतुर व्यक्ति है।"

"क्या इसका मतलब यह है कि विशाखा को सीमा का रास्ता याद है?" वरारुचि ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"वह नहीं करती," क्षपणक ने उत्तर दिया।

"नहीं? तो फिर कुएं से बाहर निकलने के बाद उसकी क्या योजना थी?"

क्षपनाका ने भारी स्वर में कहा, "उसके पास कोई योजना नहीं थी। वह कहती है कि उसके साथ मौजूद महल की दासी ने उसे सीमा तक ले जाने का वादा किया था। ऐसा लगता है कि वे दोनों महल से एक साथ निकली थीं।"

"यह कौन सी राजमहल की नौकरानी थी?" वरारुची ने हड़बड़ी से पूछा। "वह कहाँ है?"

"उसने विशाखा को कुएं की तलहटी में छोड़ दिया और चली गई।"

"क्या?" वरारुची अवाक रह गया। "यह नौकरानी कौन है?"

"हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं, लेकिन विशाखा कहती है कि वह बेहद खूबसूरत थी," क्षपणक ने कहा। "संयोगवश, अप्सरा उर्वशी महल में कहीं नहीं मिलती, और हाल तक वह राजकुमारी प्रलूपी की दासी बनकर भेष बदले रही। उर्वशी ने विशाखा को कैसे ढूंढा और उसे सीमा पर जाने के लिए कैसे राजी किया, यह शायद हम कभी नहीं जान पाएंगे।"

वराहमिहिर ने चिल्लाते हुए कहा, "उसने विशाखा को उज्जयिनी से दूर जाने में मदद करने के लिए धोखा दिया।"

वररुची ने गुस्से में कहा, "हमें उसकी तलाश करनी चाहिए। वह ज्यादा दूर नहीं जा सकती।"

"वह किसी भी दिशा में जा सकती थी, और हमारे पास तलाशी के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं हैं," क्षपनाका ने उत्तर दिया। "शहर को हर संभव संसाधन की

आवश्यकता है। अभी भी कई आग बुझानी बाकी हैं, सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करनी है... उसे जाने दो।"

"हम यक्षों से उसे खोजने के लिए कह सकते हैं..." वरारुचि ने संशयपूर्वक कहा। "लेकिन फिर हम उनके ऋणी हो जाएंगे।"

"हम पहले से ही वही हैं।" खिड़की से बाहर देखते हुए, क्षपणक ने पत्तियों से टपकते बारिश के पानी पर सूर्य की रोशनी की चमक देखी।

वररुचि रानी की बहन के सामने बैठ गए। सभा की मेज पर कोहनियाँ टिकाकर उन्होंने वराहमिहिर की ओर देखा। "यक्षों ने व्यालों का नाश किया और विशाखा को ढूँढ़ने में भी मदद की। कुबेर ने हमें मित्रता का हाथ बढ़ाया है और हमारी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम उन्हें और प्रतीक्षा नहीं करा सकते। हमें उन्हें कुछ बताना होगा।"

"यह सब एक चाल भी हो सकती है," दूसरे पार्षद ने कहा, उनका हाथ उनकी बेल्ट की ओर गया। बेल्ट में घुसी एक छोटी सी म्यान से एक खंजर के काले पत्थर के हैंडल का ऊपरी हिस्सा बाहर निकला हुआ दिखाई दे रहा था।

"ऐसा हो सकता है," वरारुची ने सहमति जताते हुए कहा। "लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि गिद्ध कल दोपहर से ही उज्जैन में मंडरा रहे हैं। अगर कुबेरा हलाहला चाहता, तो उसके पास इसे हथियाने के कई मौके थे—बिना हमसे दोस्ती किए या हमारा भरोसा जीते।"

क्षपनाका ने मेज पर हाथ रखकर सिर हिलाया। "यक्षों ने यह साबित कर दिया है कि वे जो चाहें, जो चाहें बन सकते हैं। उन्होंने हमारा मित्र बनना चुना है, यह एक ऐसी बात है जिसका हमें ध्यान रखना चाहिए।"

"मैं आप दोनों की बात समझ गया," वराहमिहिर ने कहा, "और आप सही भी हो सकते हैं। लेकिन हमें फिर भी सतर्क रहना चाहिए। इसलिए, जब तक हमें कुबेर के इरादे का पक्का पता न चल जाए, तब तक यक्षों को मेरे और कटार के ठिकाने के बारे में कुछ भी पता न चलने दें।"

***

...वह बहुत समय से दूर है... वह वापस नहीं आ रही... वह... अपने पिता के आधे भी पुरुष बनना सीखो... वह... और अगर वह वापस आ भी गई तो... वरना अपनी

माँ की गोद में लौट जाओ... वह तुमसे प्यार नहीं करती... (खटखट)... लेकिन वह करती है... उसने तुमसे कहा था कि वह करती है... वह जानती है कि तुम दोनों का प्यार इंद्र के क्रोध को भड़काएगा... उसने तो यह भी कहा था कि वह मदद करेगा... मैं तुम्हारी मदद करूँगा—एक शर्त पर... उसने वादा किया था... (खटखट)... तुम्हें शुक्राचार्य से नहीं मिलना है... लेकिन वह चला गया (खटखट)...

नॉक, नॉक, नॉक।

जयंता हिले-डुले और अपने चारों ओर देखा, अपने विचारों में बुने हुए मकड़ी के जालों को झाड़ते हुए जो घने, सफेद पर्दों की तरह उनके चेहरे के सामने लटके हुए थे।

उसने अपना हाथ आगे-पीछे हिलाया... फिर उसे एहसास हुआ कि उसकी आँखों के सामने जो सफेद चीज़ थी, वह धुआँ था। उसे लगा जैसे किसी चीज़ में आग लग गई हो, इसलिए वह तुरंत खाँस उठा, लेकिन जैसे ही उसने धीरे से साँस ली, बासी गांजे की गंध उसकी नाक में भर गई।

अपनी स्थिति याद आने पर राजकुमार ने बेहतर ढंग से देखने के लिए ध्यान से देखा।

तीन लंबी खिड़कियों में से दो खुली होने के बावजूद, कमरा गांजे के धुएं से इतना भरा हुआ था कि उस पेंटिंग की बारीकियां देखना मुश्किल था जो स्टैंड पर रखी थी, जहां जयंता दीवार की ओर पीठ करके चटाई पर बैठा था, उससे दस मीटर से भी कम दूरी पर। वैसे भी जयंता को पेंटिंग की कोई परवाह नहीं थी, जो शाची द्वारा कमरे से दिखाई देने वाली दो ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों की नीरस पुनरावृत्तियों की श्रृंखला में नवीनतम थी। इन दिनों, राजकुमार को इस कमरे तक जाने वाली खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ने के अलावा और किसी चीज की परवाह नहीं थी, ताकि वह अपनी मां के साथ चिलम पर चिलम पी सके, और फिर दोनों एक सहनीय मदहोशी में समय बिता सकें, जिसे बाद में दोनों को याद नहीं रहता। और यह ठीक ही था, क्योंकि हर दिन लगभग पिछले दिन और अगले दिन जैसा ही होता था, जो न केवल बीते हुए समय की, बल्कि भविष्य की भी याद दिलाता था।

मानवलोक में अही के साथ हुए अपने दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव से लौटने के बाद से जयंता की यहाँ आने की आदत बन गई थी। वह अपने पिता के ताने से बचने के लिए अपनी माँ की गोद में शरण लेता था और धीरे-धीरे कमरे में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध

गांजे का आदी हो गया था। उर्वशी के इंद्र के साथ चले जाने पर गांजा उसके काम आया था; इसने उसका ध्यान भटकाया और उसके हृदय और वासना को शांत रखा। फिर भी उसका बाहरी दुनिया से संपर्क बना रहा, यहाँ तक कि उसकी मुलाकात शुक्राचार्य से भी हुई - महागुरु ने उर्वशी को अपने प्रेम को स्वीकार करवाने और उसे अपनी बाहों में सौंपने का उपाय खोजने का वादा करके उसे आशा से भर दिया था।

लेकिन फिर अचानक बृहस्पति ने उन्हें महल छोड़ने और शुक्राचार्य से मिलने से रोक दिया। उनके बार-बार किए गए अनुरोधों और धमकियों के बावजूद, पहरेदारों ने शुक्राचार्य के आदेशों का सख्ती से पालन करवाया। बाद में, उन्हीं पहरेदारों में से एक से उन्हें पता चला कि महापुजारी रात के अंधेरे में देवलोक से चले गए हैं।

उसने तुम्हारी मदद करने का वादा किया था... लेकिन वह तुमसे प्यार नहीं करती...

यदि निराशा ने जयंता को इस कमरे में धकेल दिया था, तो परित्याग की भावना ही थी जिसने उसे यहाँ लंबे समय तक रोके रखा, इस हद तक कि उसने अपनी माँ की तरह एक और छिपने की जगह बनने का जोखिम उठाया, कमरे के स्थायी अवशेषों में से एक बनकर, धीरे-धीरे गांजे के नशे में क्षीण होते हुए।

एक धुंध जो वैसे भी उर्वशी के विचारों को नियंत्रण में रखने में विफल होने लगी थी।

लेकिन वो तुमसे प्यार नहीं करती...

नॉक, नॉक, नॉक।

राजकुमार को दरवाजे पर किसी के होने का एहसास होने में एक और पल लग गया। उसने अपनी माँ की ओर देखा, उम्मीद कर रहा था कि वह दरवाजा खोल देगी और उसे परेशानी से बचा लेगी। लेकिन शची अपने बिस्तर पर बेहोशी की हालत में लेटी रही और जागने का कोई संकेत नहीं दिखा रही थी। जयंता ने बेपरवाही से मुंह फेर लिया, यह कामना करते हुए कि जो भी बाहर हो, वह चला जाए...

नॉक, नॉक, नॉक।

"कौन?" उसने लड़खड़ाती आवाज़ में पूछा, उसकी जीभ मुंह में भारी हो गई थी और आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

फिर भी, उन्होंने जरूर सुना होगा। "राजकुमार, आपसे मिलने के लिए एक रक्षक आया है।" शाची की दासियों में से एक ने उत्तर दिया।

मुझे?

"मुझे आपको लाने के लिए भेजा गया है, महाराज।"

जयंता लड़खड़ाते हुए उठा और दरवाजे तक गया। उसने कुंडी खोली तो देखा कि नौकरानी के बगल में एक लंबा-चौड़ा देव खड़ा है।

"तुम्हें किसने भेजा?"

"महामहिम, आपके पिता," गार्ड ने झुककर अभिवादन किया। अगर उसे गांजे की गंध आई भी थी, तो उसने इसे छिपाने में बखूबी कामयाबी हासिल की।

जयंता चौंक गया, उसका दिमाग अचानक सतर्क हो गया और वह उन कारणों की तलाश करने लगा कि इंद्र उससे क्यों नाराज होंगे और उससे मिलना क्यों चाहेंगे।

"प्रभु का कहना है कि मामला अत्यंत अत्यावश्यक है, और आपको शीघ्र आना चाहिए," गार्ड ने जोर देकर कहा।

राजकुमार के मन में अपने पिता की इच्छा का उल्लंघन करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई। भला उसे जल्दी क्यों करनी चाहिए, जब इससे कुछ लाभ ही नहीं होने वाला? उसे प्रतीक्षा करनी चाहिए।

"जाते समय दरवाजा बंद कर देना, वरना यहां ठंड हो जाएगी," शाची ने अंदर से आवाज लगाई, उसकी आवाज खोखली और डरावनी लग रही थी, मानो बहुत दूर से आ रही हो।

उसने अपनी माँ की ओर देखने के लिए मुड़ा, लेकिन वह पहले ही एक तरफ करवट लेकर दूसरी ओर मुँह करके लेटी हुई थी, उसके कंधों तक एक शॉल लिपटा हुआ था और उसके बाल तकिए पर बेतरतीब ढंग से उलझे हुए थे।

यहां भी अवांछित।

जयंता ने एक गहरी सांस ली और दरवाजा बंद करते हुए बाहर कदम रख दिया।

जब तक उन्हें इंद्र, बृहस्पति और नारद की प्रसन्न उपस्थिति में लाया गया, तब तक गंजीका का प्रभाव समाप्त हो चुका था। राजकुमार इतने होश में थे कि वे अपने प्रति प्रदर्शित सद्भावना की मीठी भावना को महसूस कर सकें, जो इस तिकड़ी से बिल्कुल अप्रत्याशित थी।

"पुत्र," इंद्र ने अकड़े हुए खड़े होकर कहा, हाथ पीछे बांधे हुए, उनके चेहरे पर एक दर्द भरी आधी मुस्कान जमी हुई थी जो जयंता को एक विकृत भाव से अधिक प्रतीत हो रही थी। "मुझे लगता है कि तुम ठीक हो।"

"जी... जी पिता," राजकुमार ने तुरंत सतर्क होते हुए जवाब दिया और बाकी दोनों देवताओं पर संदेह भरी निगाहें डालीं। इंद्र का स्वभाव स्नेह दिखाने का कभी प्रबल नहीं रहा था, इसलिए यह संबंध स्थापित करने का प्रयास जयंता के लिए अटपटा, भयावह और बेचैन करने वाला साबित हुआ।

आगे क्या कहें, यह न जानते हुए इंद्र ने सिर हिलाया। जयंता के इंतजार करते ही कमरे में अजीब सी खामोशी छा गई...

"रानी शची कैसी हैं?" बृहस्पति ने पूछा, उनकी सौम्य मुस्कान थोड़ी बनावटी सी थी।

"वह सो रही है..." जयंता ने इंद्र की ओर मुड़कर कहा, "पिताजी, आपने मुझे बुलाया था।"

"जी हां।" इंद्र सीधे खड़े हो गए, उनका चेहरा संकोची लग रहा था। उन्होंने असहजता से नारद की ओर देखा।

"हम सोच रहे थे," राजनयिक ने एक सौम्य मुस्कान के साथ बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "कि क्या आपको अभी भी याद है कि आपने अही का पालन-पोषण कैसे किया था।"

इससे शिष्टाचार का यह अचानक और अत्यधिक प्रदर्शन समझ में आया। जयंता को संतुष्टि की एक सुखद अनुभूति हुई। वे उससे कोई मदद चाहते थे।

"मैं करता हूं।"

नारद, इंद्र और बृहस्पति ने राहत भरी निगाहों से एक-दूसरे की ओर देखा।

"ऐसे में, हम चाहेंगे कि आप अही को फिर से पालने में हमारी मदद करें," राजनयिक की मुस्कान सच्ची खुशी से और चौड़ी हो गई।

"ठीक है।"

"ठीक है," इंद्र ने दोहराया। "चलिए शुरू करते हैं।"

राजकुमार ने अपने पिता की ओर देखा, जो पहले ही मुंह फेर रहे थे, उनके लिए यह मामला सुलझ चुका था।

गुरुदेव, मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे ऐसा पुत्र मिला?

जयंता को अपने पिता के वे शब्द याद आए जो उन्होंने बृहस्पति से तब कहे थे जब वे मानवलोक से पराजित होकर लौटे थे, अही का पालन-पोषण तो कर लिया था, लेकिन हलाहल प्राप्त करने में असफल रहे थे। "मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे ऐसा पुत्र मिला..." फिर भी, अब जब उन्हें अपने लाभ के लिए उसी पुत्र की आवश्यकता थी ताकि वह अही का पालन-पोषण कर सके, इंद्र असाधारण रूप से निर्दयता दिखा रहे थे, अपने पुत्र की आँखों में आँखें डालकर उसकी सहायता मांगने से भी इनकार कर रहे थे। यहाँ तक कि कृतज्ञता का सामान्य प्रदर्शन भी गायब था...

जयंता के मन में अपने पिता के प्रति आक्रोश उमड़ आया। कहो कि तुम्हें मेरी मदद की ज़रूरत है। कहो कि तुम्हें मुझे पुत्र पाकर गर्व है। पिताजी, मैं बस यही सुनना चाहता हूँ, लेकिन आपका अहंकार इतना अधिक है कि इसे स्वीकार करना भी आपके लिए शोभा नहीं देता...

"...अही को मानव साम्राज्य को नष्ट करने के लिए भेजना," नारद ने कहा, और राजकुमार समझ गया, भले ही उसने राजनयिक की कही हुई अधिकांश बातें नहीं सुनी थीं।

"ठीक है।"

"बहुत बढ़िया," नारदा इस समय मुस्कुराते हुए बोले। "हम जल्द से जल्द निकलना चाहेंगे। आह्वान करने में कितना समय लगेगा?"

जयंता ने कंधे उचकाते हुए कहा, "गुरुदेव से मंत्र मिलते ही मैं शुरू कर सकता हूँ।"

इंद्र, नारद और बृहस्पति उसे घूरने लगे, तीनों अचानक चुप हो गए।

"क्या?" राजकुमार ने हैरानी से एक-एक चेहरा देखा।

"तुम्हें मंत्रों की ज़रूरत है?" नारद ने गंभीर स्वर में पूछा, उनके चेहरे से मुस्कान गायब हो गई थी मानो वह कभी थी ही नहीं।

जयंता ने कोई जवाब नहीं दिया, वह सोच रहा था कि आखिर हो क्या रहा है। उसने देखा कि इंद्र बृहस्पति को गुस्से भरी नजरों से देख रहे हैं।

"मंत्र..." नारद अनिश्चितता से रुक गए। "वे... चोरी हो गए हैं।"

राजकुमार ने नारद को घूरकर देखा, फिर अपनी निगाहें बृहस्पति पर टिका दीं, और खुशी की एक तीव्र लहर उसके शरीर में दौड़ गई, जिसे वह बड़ी मुश्किल से रोक पा रहा था। बूढ़े दरबारी ने उसे मंत्रों से अलग कर दिया था, यह कहते हुए कि

उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उसने उसे महल से बाहर जाने और शुक्राचार्य से मिलने से रोक दिया था, जिसके कारण वह उर्वशी को जीतने का रास्ता कभी नहीं जान पाया। बृहस्पति हर कदम पर बाधा बना रहा, लेकिन अब उस अहंकारी मूर्ख ने मंत्र भी खो दिए...

"किसने चुराया?" उसने पूछा।

"The asura lord, Hiranyakashipu," said Narada.

"क्या तुमने युद्ध की आवाज नहीं सुनी?" हार के ख्याल से चिढ़कर इंद्र के चेहरे पर फिर से वही चिढ़ भरी मुस्कान आ गई।

अब ठीक है पिताजी... ये लुक आप पर ज्यादा जंच रहा है। जयंता ने सिर हिलाया।

"आजकल तुम कहाँ हो?" इंद्र ने गुस्से से पूछा। "क्या तुम्हें पता भी है कि महल में क्या हो रहा है? क्या तुम्हें इसकी परवाह भी है?" थोड़ी देर रुककर, गुस्से से चेहरा बनाए हुए, उन्होंने आगे कहा, "ये मंत्र... क्या तुम्हें याद नहीं हैं? तुमने अही को एक बार जीवित कर दिया है, तो मंत्र याद रखना इतना मुश्किल क्यों है?"

मंत्रों को याद रखना इतना मुश्किल क्यों है? जयंता ने शब्दों को अपने भीतर समा जाने दिया, उनके द्वारा उत्पन्न घावों को महसूस किया और उनसे होने वाले दर्द को सहा। इस कठिन घड़ी में भी, उसके पिता ऐसे जता रहे थे मानो अही का पालन-पोषण न हो पाने का दोष उन्हीं का हो। वे कितने कृतघ्न थे! मंत्रों को याद रखना इतना मुश्किल क्यों है? मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझे ऐसा बेटा मिला?

"अगर मंत्र मेरे पास होते, तो मुझे उन्हें याद करने का मौका मिल जाता," राजकुमार गुस्से से बोला। "लेकिन तुम सबने उन्हें मुझसे छीन लिया, क्योंकि मुझ पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। मुझ पर भरोसा नहीं किया जा सकता, मैं मूर्ख हूँ, मैं बेवकूफी भरी हरकतें करता हूँ... लेकिन अब वे चले गए हैं, और इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।" वह अपने पिता से बृहस्पति की ओर घूर रहा था, उनके अहंकार पर क्रोधित, उनके अपमान पर प्रसन्न, और अंततः उन्हें नीचा दिखाने, उन्हें दंडित करने, और एक बार उन सबसे श्रेष्ठ महसूस करने की शक्ति पाकर आनंदित। "मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ..." उसने घोषणा की।

"...लेकिन उन मंत्रों के बिना नहीं।"

तीनों शक्तिशाली देवताओं को निराशा में मुरझाते देख उसका सीना संतोष से फूल गया। "इन्हें मेरे पास लाओ, मैं तुम्हारे लिए अही को जीवित कर दूंगा।"

***

कमरा तंग और सीलन भरा था, क्योंकि पत्थर की दीवारों से नमी रिस रही थी और सख्त फर्श पर छोटे-छोटे गड्ढे थे जहाँ पानी जमा हो गया था। अँधेरा था, पर रोशनी नहीं थी; दरअसल, जनस्थान में रोशनी थी ही नहीं, शंकु ने यह महसूस किया था। दानवों को घोर अँधेरे में भी रास्ता खोजने के लिए दीपक या मशाल की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। उनके खुरदुरे, गांठदार चेहरों पर आँखों के नाम पर बने काले छेद अँधेरे में भी अच्छी तरह देख सकते थे। रोशनी का एकमात्र स्रोत छत में लगी जालीदार खिड़की से छनकर आने वाली हल्की तारों की रोशनी थी।

मैंने तुम्हें हथियार डालने के खिलाफ चेतावनी दी थी। मुझे पता था कि यह एक बुरा विचार था।

शंकु को सामने वाले कोने में दुबकी हुई आकृति की धुंधली रूपरेखा दिखाई दी, मानो परछाइयों के बीच एक परछाई हो। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"हम शांति से आए हैं... हम मित्र बनकर आए हैं," ग्रीष्मा ने सुबह तीनों दानवों को संबोधित करते हुए व्यंग्यपूर्वक कहा। "देखो तुम्हारी शांति और मित्रता ने तुम्हें कहाँ पहुँचा दिया है।" शंकु की आवाज़ काँप रही थी, हालाँकि वह यह नहीं कह सकता था कि यह डर, ठंड या दोनों के कारण था। उसने फिर से ग्रीष्मा की नकल करने की कोशिश की। "हम किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते।"

शंकु ने फिर भी एक शब्द नहीं बोला।

वह अपने बचाव में क्या कह सकती थी? क्या वह यह कह सकती थी कि दानवों के सामने आत्मसमर्पण करने का उसका विचार एक उत्कृष्ट रणनीति थी? क्या वह यह कह सकती थी कि इससे उन्हें वह सद्भावना प्राप्त हुई जिसकी उसे आशा थी?

ऐसा नहीं हुआ था।

बिना कोई आभार व्यक्त किए, बिना उसकी बात समझे, तीनों दानव राक्षसों ने शंकु और उसके साथियों द्वारा नीचे रखे गए हथियारों को तुरंत छीन लिया। फिर, देखते ही देखते, दानवों ने उन्हें लताओं से कसकर जकड़ दिया, उनके विरोध और विनती का कोई लाभ नहीं हुआ। उन सातों को—आठवें सैनिक का चमत्कारिक रूप

से पुनरुत्थान नहीं हुआ था, जो तेल-काले रंग में समा गया था—तब घाटी में ले जाया गया और जनस्थान के विशाल द्वारों से होकर ले जाया गया। यहाँ, शंकु और ग्रीष्मा को उनके साथियों से अलग कर दिया गया—संभवतः इसलिए कि एक युवती और एक बूढ़े व्यक्ति से कोई खतरा नहीं था, जबकि सैनिकों से था—और उन्हें उस कोठरी में लाया गया जहाँ वे अब थे।

तमाम विपरीत सबूतों के बावजूद, शंकु को शालिवाहन से मिलने की उम्मीद थी, लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतता गया और एक भी दानव प्रकट नहीं हुआ, यह स्पष्ट हो गया कि उन्हें लंबे समय तक कारावास का सामना करना पड़ेगा, और आसानी से भाग निकलने की संभावना तेजी से कम होती जा रही थी...

"ओई!" ग्रीष्मा ने अचानक छत की खिड़की की ओर चिल्लाकर कहा। "ओई, कोई है क्या? हमें खाना दो। अरे बेवकूफों... हमें कुछ खाना दो..." उन्होंने सुबह से कुछ नहीं खाया था, और भूख के मारे डाकू बेखौफ और साहसी हो गया था।

शंकु को नहीं पता था कि दानव ग्रीष्मा की बात सुन पा रहे थे या समझ पा रहे थे। उसे यह भी नहीं पता था कि उनके समूह के बंदी बनाए जाने से पहले उसने जो कुछ कहा था, उसका एक भी शब्द दानवों ने समझा था या नहीं। अगर समझा भी था, तो जाहिर है उन्हें कोई परवाह नहीं थी।

उसने खिड़की पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। उसे पता था कि उसके ऊपर एक पेड़ था; दोपहर में कमरे को रोशन करने वाली सूरज की किरण पर पत्तियों की छाया पड़ रही थी। और अगर वहाँ पेड़ था, तो उसकी शाखाएँ भी होंगी।

"क्या तुम्हें अब भी लगता है कि आत्मसमर्पण करना अच्छा विचार था?" ग्रीष्मा फिर से उसे परेशान करने लगी। उसे एहसास हुआ कि वह उसके क्रोध, भूख और निराशा का एक आसान निशाना थी। "अब भी ऐसा ही लगता है, है ना?"

"हम पहले भी इस स्थिति से गुजर चुके हैं," शंकु ने बुदबुदाते हुए कहा, उम्मीद करते हुए कि वह चुप हो जाएगा ताकि वह ध्यान केंद्रित कर सके—

"हाँ, बिलकुल," कोने में बैठे डाकू ने व्यंग्य से भरी आवाज़ में सिर हिलाया। "हम यहाँ मदद मांगने आए हैं, इसलिए अगर हम लड़ेंगे या भागेंगे तो हमें दुश्मन समझा जाएगा। लेकिन हमने न तो लड़ाई की और न ही भागे, फिर भी हमारे साथ वैसा ही बर्ताव किया जा रहा है जैसा किसी दुश्मन के साथ किया जाता है। किसी ने मेरी बात नहीं सुनी..."

उसने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह सही कह रहा था। क्या वह दोपहर में देखी गई शाखा की ही छाया थी? वह काफी मजबूत लग रही थी...

"सम्राट को मना करना मेरा सही फैसला था," डाकू मन ही मन बड़बड़ा रहा था। "हमें यहाँ आना ही नहीं चाहिए था। लेकिन सम्राट ने मुझे धोखा दिया, धमकाया... उसने मुझे मजबूर किया। अब हम यहीं मरेंगे, और हमारा खून सम्राट के हाथों पर होगा।"

शंकु खड़ी हुई और तीन कदम चली, जिससे वह लगभग खिड़की के ठीक नीचे आ गई। उसने सलाखों के बीच से ऊपर देखा।

"तुम क्या कर रहे हो?" ग्रीष्मा ने पूछा। "ऊपर देखने लायक कुछ नहीं है। कोई हमारी मदद के लिए नहीं आ रहा है। हम यहीं मर जाएंगे और कोई... अरे... तुम क्या कर रहे हो? क्या—"

डाकू ने पलकें झपकाईं और सिर हिलाया। उसकी नज़रें इधर-उधर घूमीं। वह घूरता रहा।

उसे एहसास हुआ कि वह एक खाली कमरे से बात कर रहा है।

***

विक्रमादित्य ने तकिए को पलटकर उसका ठंडा निचला हिस्सा ऊपर की ओर कर लिया और अपना सिर वापस नीचे रख दिया। वह आरामदेह स्थिति पाने के लिए करवटें बदलता रहा। उसने गहरी सांस ली ताकि उसकी सांसें लयबद्ध हो जाएं, शरीर को आराम मिले और वह शांत अवस्था में आ जाए।

अब उसे अच्छा लगा। अब उसे बस इतना ही करना था—

...तुम्हारे अलावा रानी को कुछ याद नहीं है। वो तुम्हें ही बुला रही हैं, सम्राट।

विक्रमादित्य एक तरफ करवट ले लिया, कमांडर अतुल्यतेजा के शब्द उसके दिमाग में गूंज रहे थे।

युवा गैरीसन कमांडर की मुलाकात उनसे आधी रात से कुछ पहले उदयपुरी के ठीक बाहर हुई थी। प्रांतीय शहर गहरी नींद में सो रहा था, लेकिन अतुल्यतेज अपने राजा के आगमन की प्रतीक्षा में जागे रहे।

"महामहिम, आज शाम लावा से आपके लिए एक संदेश आया है," उन्होंने झुकते हुए कहा था। "इसमें लिखा है कि रानी विशाखा कल शाम कोमा से जाग उठीं।"

कल शाम। मेरे जाने के बाद। सम्राट ने कमांडर को घूर कर देखा, उसका मन एक ही पल में खुशी से भर उठा और पीड़ा से कांप उठा। काश उसने अपना प्रस्थान थोड़ा और टाल दिया होता... "बस इतना ही? संदेश में और कुछ नहीं लिखा था?"

"जी हाँ, महाराज। उसमें लिखा था कि आपके अलावा रानी को कुछ याद नहीं है। लगता है वह आपको ही बुला रही हैं, सम्राट।"

वह उसे ही बुला रही थी।

विक्रमादित्य बिस्तर पर करवटें बदलते हुए राज्यपाल के खाली महल की छत को घूर रहे थे, जहाँ उन्हें रात के लिए ठहराया गया था। गद्दार सत्यवेद को एक कोठरी में बंद कर दिया गया था, और मालवा के लिए अभी तक नए राज्यपाल का नाम तय नहीं हुआ था। सम्राट ने अपने पेट पर उंगलियाँ फेरते हुए आह भरी। घोड़े के स्टेशन से लंबी और कठिन यात्रा, जिसमें बीच-बीच में जल्दबाजी में दोपहर का भोजन और घोड़े बदलने के लिए थोड़े समय का ठहराव भी शामिल था, ने उन्हें थका दिया था, लेकिन उज्जैनी से मिली खबर ने उनके मन को नींद में डूबने नहीं दिया।

विशाखा जाग उठी थी और उसके बारे में पूछ रही थी। आखिरकार उसे उसकी याद आ गई थी। अब उसे क्या करना चाहिए?

उसने जम्हाई को दबा लिया।

विशाखा को उसकी ज़रूरत थी। संदेश में लिखा था कि उसे उसके सिवा कुछ भी याद नहीं था...

लेकिन हूण सीमा की ओर बढ़ रहे थे, जो कुछ उन्होंने खोया था उसे वापस लेने के लिए लौट रहे थे...

अनिश्चितता के सागर में वही उसका एकमात्र सहारा था। वह उसे अकेले बहने नहीं दे सकता था...

लेकिन वह अकेली नहीं थी। वह उन लोगों से घिरी हुई थी जो उससे प्यार करते थे और उसकी देखभाल करते थे। धनवंतरी, क्षपणक, कुंजला, महारानी माँ... यह सीमावर्ती इलाका था जहाँ कोई और नहीं था और उसे उसकी उपस्थिति की आवश्यकता थी...

लेकिन क्या होगा अगर हूणों के बारे में मदर ओरेकल की भविष्यवाणी गलत साबित हुई हो...?

भविष्यवाणी कभी गलत नहीं हुई थी। द्वारका लगभग हार के कगार पर था, और हूण हारने का जोखिम नहीं उठाते थे। वे फिर आएंगे...

अंधकार।

...मेरी बात सुनो, हे राजा... यह अंत है...

विशाखा को सालों में पहली बार उसकी याद आई थी, उसने उसके बारे में पूछा था...

हूणों को सीमा पार करने से रोकना आवश्यक था। वरारुचि ने स्वेच्छा से आने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने सिंधुवर्त की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लेने पर ज़ोर दिया। वे अब यहीं थे, और वे जा नहीं सकते थे... उन्हें जाना ही नहीं चाहिए था। सिंधुवर्त का भविष्य दांव पर था...

अंधकार।

...आखिरी पत्ते भी गिर गए... समाप्त हो गया... शुक्र है कि तुम मेरी बात सुन रहे हो... समय बीत रहा है...

उन्होंने विशाखा की रक्षा करने का वादा किया था। उन्होंने अपनी प्रजा की रक्षा करने का भी वादा किया था...

...मैंने तुमसे वादा किया था... हलाहला को सुरक्षित रखा... बॉर्डरवर्ल्ड के लिए बड़ा खतरा...

अंधेरा। और धुंध का एक हल्का सा धब्बा उसमें से बेजान होकर गुजर रहा है। सड़न की गंध।

वेतन?

जी हाँ, हे राजा...

क्या आप मुझे कुछ बताना चाहते हैं?

हाँ। पेड़ मर रहा है, और अंधेरा छा रहा है। जल्द ही, बॉर्डरवर्ल्ड का अस्तित्व नहीं रहेगा।

क्या?

शुक्राचार्य की असुर सेना ने वृक्ष को भीषण क्षति पहुँचाई। अपूरणीय क्षति...

रुको, रुको, रुको... आपने कहा कि बॉर्डरवर्ल्ड नहीं होगा?

जी हाँ, महाराज। पत्ते झड़ रहे हैं। पेड़ सूख रहा है। हम जैसे पिशाचों के लिए यह अंत है।

नहीं। नहीं, नहीं... ऐसा हो ही नहीं सकता।

कोई बात नहीं, महाराज। हम...

नहीं, रुकिए। सबको पता है बॉर्डरवर्ल्ड शाश्वत है। बॉर्डरवर्ल्ड अविनाशी है।

हे महाराज, कुछ भी शाश्वत नहीं है। हर चीज का अंत होना तय है, और हर चीज का अंत होगा ही।

कोई न कोई रास्ता तो जरूर होगा।

कोई नहीं है। बॉर्डरवर्ल्ड जल्द ही नष्ट हो जाएगा...

नहीं।

मैं आपकी दोस्ती के लिए धन्यवाद देना चाहता था और आपको अलविदा कहना चाहता था...

विक्रमादित्य घबरा गया। बॉर्डरवर्ल्ड खतरे में था। उसे कुछ करना ही था। उसे घोलमास्टर की मदद करनी ही थी। उसे जागना ही था...

"सम्राट, जाग जाओ।"

विक्रमादित्य नींद से जागा, धुंधली आँखों से घूरते हुए सोच रहा था कि वह कितनी देर सोया रहा। उसे पता चल रहा था कि अभी भी रात है। जैसे ही उसकी नज़रें साफ़ हुईं, उसने अपने बिस्तर के पास दो आकृतियाँ देखीं। एक झुकी हुई थी और उसे कंधे से धीरे से हिला रही थी।

"सम्राट," अतुल्यातेजा ने कहा। "आपको जगाने के लिए मुझे बहुत खेद है, लेकिन श्रीस्थली स्थित कमांड सेंटर से एक घुड़सवार खबर लेकर आया है।"

"क्या बात है, सेनापति?" राजा ने उठकर पूछा।

"आज शाम को सीमा के किनारे हूणों की एक सेना को इकट्ठा होते देखा गया। स्काउट रिपोर्ट में बताया गया है कि सेना रेगिस्तान की आधी चौड़ाई तक फैली हुई थी और लगभग उतनी ही गहराई तक फैली हुई थी।"

विक्रमादित्य पलंग से उछल पड़े। "यह सेना आखिर कहाँ एकत्रित हो रही है?"

"माननीय महोदय, श्रीस्थली के दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ों के उस पार। उदयपुरी से एक दिन की घुड़सवारी की दूरी पर।"

सम्राट को यह बात अचानक समझ में आ गई कि उन्होंने प्रश्न पूछते समय ही इस बात का अनुमान लगा लिया था। श्रीस्थली के दक्षिण में, अर्बुदा पर्वतमाला दर्रों से भरी हुई थी, जिन्हें एक दृढ़ निश्चयी सेना सिंधुवर्त में प्रवेश करने के लिए निशाना बनाएगी।

उन्होंने टिप्पणी की, "सीमा का सबसे छिद्रपूर्ण हिस्सा, और बचाव करने के लिए सबसे कठिन हिस्सा।"

कालिदास

भोर के धुंधले प्रकाश में आकाश और रेगिस्तान एकसमान धूसर रंग के थे, हूण सेना का विशाल समूह उनके बीच फैला हुआ था, जिससे दोनों आपस में घुलमिल नहीं रहे थे। हूण पर्वतों की तलहटी से कुछ मील दूर एकत्रित थे, जहाँ बर्बरों को अंधेरे की आड़ में करीब आने से रोकने के लिए रात भर सैकड़ों आग जलती रही थीं। दिन निकलने ही वाला था कि ये आग धीमी पड़ने लगीं और धुएँ के गुबार पर्वतीय चोटियों पर उड़ने लगे, जहाँ अवंती की सेना प्रतीक्षा कर रही थी और देख रही थी, उनके झंडे और बैनर ठंडी हवा में लहरा रहे थे। नीचे, जहाँ रेगिस्तान से रास्ते अर्बुदास के दर्रों और घाटियों में जाते थे, वहाँ हूण घोड़ों के आक्रमण को रोकने के लिए नुकीले कांटों से बनी विस्तृत सुरक्षा व्यवस्था की गई थी, और रास्तों के आरंभ में रणनीतिक रूप से बड़े-बड़े पत्थर रखे गए थे, ताकि दर्रों से निकलने वाले घुड़सवारों और सैनिकों पर उन्हें फेंका जा सके।

“वे यहाँ दो दिन से हैं। वे किस बात का इंतजार कर रहे हैं?”

वक्ता शाही सेना का एक कप्तान था, और उसकी आवाज में घबराहट साफ झलक रही थी।

आस-पास मौजूद किसी भी सैनिक ने एक शब्द भी नहीं कहा, हालाँकि हर किसी की रगों में एक जैसी घबराहट दौड़ रही थी। खून-खराबे की आशंका अक्सर

असलियत से कहीं ज़्यादा भयानक होती थी; असलियत में डरने का समय ही नहीं होता था, जबकि आशंका कल्पना को बेकाबू होने का भरपूर मौका देती थी। और जिस तरह से हूणों की यह सेना एक-एक रेजिमेंट करके पश्चिमी क्षितिज को ढकती जा रही थी, उसे देखकर रूह काँप उठी।

"वे अब किसी भी समय कार्रवाई कर सकते हैं, कप्तान।"

आवाज के साथ-साथ कंकड़ पर पैरों की चरमराहट सुनाई दी, और सैनिक मुड़कर देखने लगे कि उनके सम्राट उनके बगल में आकर रुक गए हैं, उनके पीछे अतुल्यातेजा और सीमा रक्षक और शाही सेना के अन्य कमांडर भी थे। सभी सैनिकों ने झुककर पीछे हट गए, ताकि सम्राट और कमांडरों को टीले की चोटी पर जगह मिल सके।

“वह सेना इतनी बड़ी है कि हमारे ठिकानों पर लगातार हमला कर सकती है,” विक्रमादित्य हूणों का अवलोकन करते हुए बोले। हवा से उनके बिखरे बाल उड़ रहे थे, उदयपुरी से लंबी यात्रा के कारण उनका चेहरा धूल से सना हुआ था, लेकिन उनकी निगाहें तेज और केंद्रित थीं, जो रेगिस्तान को छान रही थीं, मानो हूणों की मानसिकता को समझने की कोशिश कर रही हों। “उनके रुख को देखकर लगता है कि वे इस सीमा की पूरी लंबाई पर एक साथ हमला करेंगे ताकि कई दबाव बिंदु बन सकें जिन्हें भेदना आसान हो। और फैलकर वे हमारे तीरंदाजों को कमजोर लक्ष्य प्रदान करेंगे, जिससे हम उन्हें कम नुकसान पहुंचा पाएंगे।”

वे लोग उदास होकर रेगिस्तान की ओर देखने लगे।

अतुल्यातेजा ने कहा, "मुझे कोई गुलेल दिखाई नहीं दे रही है।"

“घेराबंदी के हथियार सेना की गति धीमी कर देते हैं,” राजा ने उत्तर दिया। “यह सेना जितनी तेजी से हो सके उतनी तेजी से आगे बढ़ना चाहती है।”

एक कमांडर ने कहा, "हमें उन्हें सीमा पार करने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा।"

“इसके विपरीत, हमें उन्हें कुछ जगहों से जबरदस्ती अंदर घुसने देना चाहिए,” विक्रमादित्य ने सुधार करते हुए कहा। सैनिकों को असमंजस में देखते हुए उन्होंने नक्शा मांगा। कपड़े का चौकोर टुकड़ा खोलकर एक चट्टान पर फैलाते हुए उन्होंने इशारा किया, “हम यहां और यहां पीछे हटेंगे; ये संकरे दर्रों की ओर जाते हैं जहां हम बाद में उन्हें घेर लेंगे। लेकिन यह स्वाभाविक लगना चाहिए। उन्हें यह विश्वास

होना चाहिए कि उन्होंने हमारी घेराबंदी तोड़ दी है। अब, यह सोचकर कि इन जगहों को सफलतापूर्वक भेद दिया गया है, हूण सेना का शेष भाग इनमें से किसी एक बिंदु पर इकट्ठा हो जाएगा। तभी हम उन पर हमला करेंगे; हम उन्हें एक जगह इकट्ठा कर लेंगे ताकि हमारे तीरंदाज उन पर तीरों की बौछार कर सकें।"

कमांडरों ने सहमति में सिर हिलाया और आपस में विचार-विमर्श करते हुए कनिष्ठ अधिकारियों को योजना को क्रियान्वित करने के लिए त्वरित निर्देश दिए। उत्तर और दक्षिण की ओर संदेशवाहक भेजे गए ताकि अग्रिम पंक्ति के सभी कमांडरों को रणनीति की जानकारी दी जा सके, और उन स्थानों पर सैनिकों को पुनः तैनात किया गया जहाँ हूणों को उनके विनाश के जाल में फंसाया जाना था। कुछ करने को मिलने से, अंततः लंबे समय से चल रहे तनावपूर्ण इंतजार से ध्यान हटाने का मौका मिलने पर, सैनिकों में व्याप्त चिंता कम होती प्रतीत हुई, और उसकी जगह स्थिति पर पूर्ण नियंत्रण के अहसास से उत्पन्न उत्साह ने ले ली।

लेकिन रेगिस्तान से आती उस चीख के क्षण ही सारा नियंत्रण हवा में उड़ गया।

सभी का सिर एक साथ घूम गया और अवंती की सेना की निगाहें हूण सेना के बाईं ओर एक बिंदु पर टिक गईं, जहाँ अचानक कुछ अकल्पनीय आकार का प्रकट हुआ, मानो कोई विशाल धूल भरी आंधी हो। ठीक उसी क्षण सूर्य क्षितिज से ऊपर उठा, और पहाड़ों में मौजूद लोग भय से देखते रहे, तभी धूल भरी आंधी ने दो भयानक प्राणियों का रूप धारण कर लिया, जिनके काले मुँह से रोंगटे खड़े कर देने वाली चीखें निकल रही थीं, और बिजली लगातार चमक रही थी।

"ये क्या हैं?" राजा के बगल में खड़े एक कमांडर ने हांफते हुए पूछा।

किसी को पता नहीं था। किसी ने जवाब नहीं दिया।

"हमें क्या करना चाहिए, महाराज?" अतुल्यातेजा ने सम्राट के करीब झुकते हुए पूछा।

विक्रमादित्य के हाथ नरक की आग की मूठों पर थे। "देखते हैं क्या होता है।"

धूल के उन विशालकाय गुबारों को घूरने में सब इतने मशगूल थे कि किसी को भी रेगिस्तान के बीचोंबीच मौजूद घुड़सवारों के छोटे से समूह पर ध्यान देने में थोड़ा समय लग गया, जो अर्बुदास की दिशा में बढ़ रहे थे। पहाड़ियों पर फुसफुसाहट फैलने लगी और अतुल्यातेजा ने आते हुए घुड़सवारों को ध्यान से देखा।

"वे क्या कर रहे हैं?" उसने आश्चर्य और संदेह के भावों को एक साथ महसूस करते हुए पूछा।

"क्या हमें खतरे की घंटी बजानी चाहिए, महाराज?" एक अन्य कमांडर ने बीच में कहा।

विक्रमादित्य ने आगे बढ़ते घुड़सवारों पर निगाह रखते हुए आदेश दिया, "तीर रोको।"

जैसे ही ढोल बजाने वालों ने पर्वत श्रृंखलाओं पर उनके आदेश का प्रसार किया, सम्राट ने छोटी सी टोली के आगे चल रहे दो घुड़सवारों में से एक पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। वह अपने घोड़े पर ऊँचाई पर बैठा था, जो अब रेगिस्तान में फैल रही धूप में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। इतनी दूरी से भी, राजा के लिए घुड़सवार को पहचानना आसान था, उसकी परछाई रेत पर लंबी और भद्दी सी दिख रही थी, जो तिरछी धूप में स्पष्ट नज़र आ रही थी।

***

शुक्राचार्य असुर स्वामियों के काले क्रिस्टल सिंहासन तक जाने वाली सीढ़ियों पर आधे रास्ते में खड़े हो गए, ताकि वे एकत्रित असुर सेनापतियों के सिर के ऊपर से देख सकें। प्रधान पुरोहित ने संतोषपूर्वक देखा कि दरबार में सैकड़ों असुर पुरुष और स्त्रियाँ खचाखच भरे हुए थे, सभी हथियारों से लैस और युद्ध के लिए तैयार थे। ठीक सामने उनके अपने पुत्र, चंदासुर और अमरका बैठे थे। उन्हें देखकर शुक्राचार्य समझ गए कि वे अपने मिशन में विफल होने से क्रोधित थे और प्रायश्चित करने की तीव्र इच्छा से भरे हुए थे। उनके पीछे, सिंहासन पर, पाताल के तीनों भाई-बहन बैठे थे।

विशाल कक्ष में चल रही बातचीत को रोकने के लिए प्रधान पुरोहित ने हाथ उठाया। फिर, इतनी बुलंद आवाज़ में कि पीछे तक सुनाई दे, उन्होंने कहा, "मैं आप सबका समय बर्बाद नहीं करूँगा यह दोहराकर कि हम सब आज यहाँ क्यों एकत्रित हुए हैं। इतना कहना ही काफी है कि मानव राजा ने हमारे धैर्य की परीक्षा ली है, और अब समय आ गया है कि हम उसे असुरों को शत्रुता में डालने के परिणामों के बारे में शिक्षित करें।"

दरबार में तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी और शुक्राचार्य ने इसके शांत होने का इंतजार किया।

"मैं यहाँ उपस्थित सभी लोगों को यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि अवंती के मनुष्यों को हल्के में न लें। राजा नरक की अग्नियों का स्वामी है, यद्यपि दिति की संतान होने के कारण आप उन तलवारों से सुरक्षित हैं और आपको डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन, उसके नौ सलाहकार नौ पवित्र मोतियों के धारक हैं, और यह उनमें से प्रत्येक को असाधारण शक्तियाँ प्रदान करता है। मैंने नौ मोतियों की शक्ति को कम करने के लिए यथासंभव प्रयास किया है ताकि सलाहकार कम चुनौती पेश करें, लेकिन फिर भी सतर्क रहें; पिछली बार जब इंद्र ने हलाहल प्राप्त करने का प्रयास किया था, तो सलाहकारों ने नागों और किन्नरों की सेना को वीषाद के खंजर तक पहुँचने से सफलतापूर्वक रोक दिया था।"

इस बार, हॉल में फैली फुसफुसाहट अधिक सतर्क थी।

"इसके अलावा, हमें यह जानकारी मिली है कि कुबेर और उसके यक्षों ने मनुष्यों का साथ दिया है," प्रधान पुरोहित ने घोषणा की। अपने पुत्रों को शर्म और क्रोध से लाल होते देख, उन्होंने उन्हें और अधिक शर्मिंदगी से बचाने के लिए विवरण न देने का निर्णय लिया। "हम नहीं जानते कि यक्षों का उद्देश्य क्या हो सकता है, लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि वे मनुष्यों की तब तक सहायता करेंगे जब तक यह उनके लिए फायदेमंद होगा। इसलिए, यक्षों के जादू का सामना करने के लिए तैयार रहें।"

शुक्राचार्य ने अपने शब्दों को समझने के लिए कुछ देर रुककर कहा, "तुम्हारे स्वामी हिरण्याक्ष और होलिका तुम्हें युद्ध में नेतृत्व करेंगे, जहाँ तुम्हारा काम राजा के सलाहकारों को उलझाकर उनका ध्यान भटकाना होगा, ताकि तुम्हारे स्वामी हिरण्यकशिपु को हलाहल प्राप्त हो सके। मानव नगर को नष्ट करने में तुम्हारी सहायता के लिए हम नाग-ड्रैगन अहि का आह्वान करेंगे—जिसे मेरे पुत्र हिरण्यकशिपु द्वारा देवलोक से लाए गए मंत्रों की सहायता से उत्पन्न करेंगे।"

हॉल में आश्चर्य भरी आहें और जयकारे गूंज उठे। मुख्य पुरोहित ने शोर शांत होने का इंतजार किया और फिर सिंहासन की ओर मुड़े। तीनों असुर स्वामियों को देखते हुए उन्होंने कहा, "वैषद का खंजर मानव राजा के पास बहुत समय से है, और यह जितने लंबे समय तक मनुष्यों के पास रहेगा, देवताओं या शायद यक्षों द्वारा इस पर कब्जा करने का खतरा उतना ही बढ़ जाएगा। ऐसा नहीं होना चाहिए। यह खंजर

एक असुर का था। हलाहल को एक असुर ने ही लिया था। हलाहल हम असुरों के लिए ही बना है। आइए हम जाकर अपना भाग्य प्राप्त करें। आइए हम अपना हक वापस लें।"

हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष और होलिका क्रिस्टल सिंहासन से उठे। हिरण्यकशिपु ने एक कदम आगे बढ़कर हवा में मुट्ठी उठाई। "पाताल की जय हो। असुरों की महिमा हो," उसने पुकारा।

"पाताल के लिए। असुरों की महिमा के लिए," हॉल ने कान फाड़ देने वाली गर्जना के साथ जवाब दिया।

***

लावा-विरातापुरी सड़क से नदी सौ कदम से भी कम दूरी पर थी, लेकिन इन इलाकों में जंगल इतना घना था कि जहां घटाकरपारा और अमर सिंह एक बड़े, सपाट पत्थर पर बैठे थे, उनके पैर टखनों तक पानी में डूबे हुए थे, वहां से सड़क दिखाई नहीं दे रही थी। अंगामित्र और उनके समसप्तक पास ही थे, आपस में बातें कर रहे थे जबकि उनके घोड़े नदी से पानी पी रहे थे या नदी किनारे की घास चर रहे थे। दो समसप्तक राजमार्ग पर पहरा दे रहे थे, हालांकि यह आवश्यकता से अधिक आदत के कारण था, क्योंकि इस क्षेत्र के जंगल एक दशक से अधिक समय से डाकुओं से मुक्त थे।

"उफ़!" घटाकरपारा ने आश्चर्य से अपने गाल फुला लिए। "उज्जायिनी छोड़ने के बाद से कितना कुछ हो चुका है। हम पर राक्षसों, हूणों और एक भयानक नाग ने हमला किया; रानी विशाखा को अपनी स्मृति वापस मिली, लेकिन तुरंत ही खो गई; हम सभी को चमत्कारी शक्तियां प्राप्त हो गई हैं, और कालिदास..." उन्होंने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया, "...कालिदास शत्रुओं के पक्ष में चले गए हैं। अविश्वसनीय!"

"और तुम खुद ही अपहरण करवा बैठे?" अमारा सिम्हा ने रूखेपन से हंसते हुए कहा। उसने राजकुमार को तिरछी नज़रों से देखा। "तुम ठीक हो?"

घटकरपारा ने सिर हिलाया। हालांकि मरुस्थली और अर्बुदास पर्वतमाला की कठिन यात्रा से उनमें अभी भी थकावट के लक्षण दिख रहे थे, अमर सिंह ने गौर किया कि बालक के गालों पर कुछ रौनक लौट आई थी और उनके बाल पहले जैसे ही तेल लगे, धुले और करीने से कंघी किए हुए लग रहे थे। अपने राजा बाणहस्त की

उपस्थिति से उत्साहित होकर—जो शशिवर्धन के जीवन पर हुए हमले की खबर सुनकर विराटपुरी से तुरंत आ गए थे—कासवती की चौकी के वैद्य ने घटकरपारा को स्वस्थ करने का सराहनीय कार्य किया था, ताकि वे उज्जैन वापस जाने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हो सकें। बाणहस्त ने घटकरपारा को विराटपुरी ले जाने का प्रस्ताव दिया था ताकि वे आराम कर सकें और स्वास्थ्य लाभ कर सकें, जबकि शशिवर्धन चाहते थे कि अमर सिंह और घटकरपारा उनके साथ कौशांबी जाएं।

"पिताजी आप दोनों को मेरी जान बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देना चाहेंगे," वत्स के राजकुमार ने शराब का घड़ा पीते हुए उनसे विनती की। "और दरबार के वैद्य घातकपर को स्वस्थ कर देंगे। कृपया मेरे साथ आइए।"

अमर सिंह ने बानहस्त और राजकुमार को धन्यवाद दिया, लेकिन दोनों के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, यह कहते हुए कि उन्हें जल्द से जल्द अवंती लौटना है। शशिवर्धन अंततः मान गए और उन्होंने अपना घड़ा घटाकरपारा की ओर उठाया। उन्होंने कहा, "भाई, मैं आपका जीवनदायिनी हूँ, और पिता और मैं आपके ऋणी हैं। वत्सा आपके द्वारा किए गए कार्य का कभी भी प्रतिफल नहीं दे सकता, लेकिन यदि आप मेरे राजा बनने के बाद वत्सा के मुख्य सलाहकार और सैन्य सलाहकार का पद स्वीकार करते हैं, तो मैं इसे अपना सम्मान समझूंगा।" अपना घड़ा पीते हुए उन्होंने आगे कहा, "मुझे अपनी प्रजा का अच्छा राजा बनने में सहायता करें।"

"पार्षद यशोभावी ने ऐसा क्यों किया?" घटकरपारा ने अचानक नदी की कलकल ध्वनि के बीच पूछा।

"काश मुझे पता होता," अमारा सिम्हा ने कंधे उचकाते हुए चेहरे पर कोई भाव नहीं दिखाया। अंगरक्षक पीयूषा ने पैसों के लिए हत्या करने की बात मान ली थी; उसका अपना कोई गुप्त मकसद नहीं था, और न ही उसे पता था कि यशोभावी शशिवर्धन को क्यों मारना चाहती थी। "मुझे लगता है कि पूछताछ के बाद हमें सच्चाई पता चल जाएगी।"

"वे हमेशा मेरे प्रति दयालु और स्नेही थे," घटाकरपारा ने पानी की ओर देखते हुए कहा। "मुझे याद है एक बार वे मेरे लिए चमड़े की एक कठपुतली लाए थे... नाचती हुई स्त्री की। माँ ने बताया था कि वह दक्षिणी राज्यों से आई थी। एक बार वे श्रीविजया से मेरे लिए एक छोटा ढोल लाए थे। और गर्मी की दोपहरों में, वे जामुन

और बेर लाते थे। यशोभावी अक्सर आसपास रहते थे, लेकिन उज्जैन जाने के बाद से उनका दिखना कम होता चला गया।"

अमरा सिंह ने तिरछी नजर से राजा के भतीजे की ओर देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।

"सचमुच किस्मत अच्छी थी कि मैं ठीक समय पर, उस जगह पहुँच गया जहाँ उन्होंने हत्या करने का फैसला किया था," लड़के ने सिर हिलाते हुए कहा। "और शशिवर्धन और मेरे लिए तो और भी बड़ी किस्मत की बात है कि आपने हमें ऐन मौके पर पा लिया। वरना, वर्धन वंश के दोनों राजकुमार मारे जाते..." उसने अमरा सिंह की ओर कृतज्ञता से देखा।

"नोरहान और उसके पिता का बहुत-बहुत धन्यवाद। बूढ़े ने नोरहान को हमें इस शर्त पर सौंपा था कि वह सीमा तक आपका पीछा करेगा और उससे आगे नहीं जाएगा। लेकिन लड़के ने स्वेच्छा से पहाड़ों को पार करके सिंधुवर्त आने की पेशकश की—सच कहूँ तो, अगर वह नहीं आता, तो हम आपको कभी नहीं ढूंढ पाते।" अमरा सिंह ने आकाश की ओर देखा। "उनके पास हमारी मदद करने का कोई कारण नहीं था, फिर भी उन्होंने मदद की।"

काश मैं उस लड़के से मिला होता।

मैंने उससे कहा कि होश में आने पर तुम ऐसा चाहोगे, लेकिन वह घर लौटने के लिए बेताब था। उसे डर था कि अगर उसने ज्यादा देर की तो उसके पिता चिंतित हो जाएंगे।

घटाकरपारा ने सोच-समझकर सिर हिलाया। "मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं एक साका का ऋणी होऊंगा।"

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे कोई ऐसा साका मिलेगा जिसे मैं मारना नहीं चाहूँगा," अमारा सिम्हा उदास स्वर में बोले। "लेकिन जब हम रेगिस्तान में तुम्हारी तलाश कर रहे थे और हमने उस किले पर हमला किया जहाँ तुम्हें बंदी बनाया गया था, तो मेरे सामने दो औरतें और तीन-चार साल का एक लड़का दया की भीख माँग रहे थे। उस बच्चे को घुटनों के बल बैठकर भीख माँगते देख मुझ पर गहरा असर हुआ। मैं... बदल गया। यह मत पूछो कैसे।" उन्होंने साँस लेने के लिए थोड़ा रुककर कहा। "तुम खून से लथपथ होकर युद्ध में जाते हो। खून से सने हाथों से वापस आते हो। कभी-कभी युद्ध तुम्हें करुणा के बारे में किसी भी धर्म से ज़्यादा सिखाते हैं।"

घटाकरपारा ने अपने साथी की ओर गौर से देखा। "तुम्हें पता है, तुम बूढ़े हो रहे हो।"

उन्होंने एक पल के लिए एक-दूसरे को देखा; फिर वे जोर से हंस पड़े।

"तुम्हें देवी ओरेकल का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए," अमारा सिम्हा ने कहा। "उन्होंने बादलों में तुम्हारे अपहरण के संकेत पढ़ लिए थे... अरे रुको, मुझे तुम्हें कुछ देना है।"

बुजुर्ग पार्षद अपने घोड़े के पास गए और काठी में रखे थैले में तलाशी लेने लगे। मनचाही चीज मिलने पर वे वापस मुड़ गए।

"ये लो," उसने सोने के सूर्य-चिह्न वाले पदक को उसकी चेन से पकड़ते हुए कहा, जिससे सूर्य-चिह्न उसकी फैली हुई उंगलियों से धीरे-धीरे झूल रहा था। "साकाओं ने इसे ले लिया था। मैंने इसे तुम्हारे लिए वापस ले लिया।"

"धन्यवाद," राजकुमार ने पदक अपने सिर पर पहनाते हुए कहा। "तो, मैं भविष्यवक्ता का ऋणी हूँ," उन्होंने मुस्कुराते हुए सूर्य-शिखर को ठीक करते हुए कहा। "मैं उन्हें धन्यवाद देना याद रखूँगा।"

"और अतुल्यतेज, जिसने यह निष्कर्ष निकाला कि सत्यवेद का तुम्हारे अपहरण में हाथ था। और..." अमर सिंह हिचकिचाया, "...अच्छा, उस लड़की का कर्ज भी तुम्हारा है।"

Ghatakarpara looked up sharply.

"मेरी जानकारी के अनुसार, वही वह स्त्री थी जो आपके द्वारा उसके लिए बनाई गई चूड़ी अतुल्यतेज के पास लाई थी, जिससे अतुल्यतेज को सत्यवेद का मार्ग मिला," अमर सिंह ने आगे कहा। "और अतुल्यतेज ने मुझे बताया कि वह आपकी खोज में लगी रही—उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह जिस व्यक्ति को खोज रही थी वह अवंती और वत्स का राजकुमार था।"

"अब तो उसे पता चल ही गया होगा, है ना?" घटाकरपारा ने उदास स्वर में पूछा।

मजबूत कंधों ने एक झटके में कहा, "तुम्हारी पहचान उससे छुपाना मुश्किल होगा।"

"क्या वह क्रोधित थी?" राजकुमार ने अमारा सिम्हा के चेहरे को गौर से देखा।

"मुझे नहीं पता। मैंने तो इस लड़की को देखा भी नहीं है। आपको अतुल्यातेजा से पूछना होगा।"

"तुम सही कह रहे हो।" लड़का रुका, सोचने लगा। "मुझे उदयपुरी जाना होगा। मैं दो-तीन आदमियों को साथ लेकर पश्चिम की ओर चलूँगा—"

"तुम कहीं नहीं जा रहे हो," अमरा सिंह ने विरोध किया। "तुम मेरे साथ उज्जैन चलोगे। मैंने सम्राट को वचन दिया था कि मैं तुम्हें वापस लाऊंगा—"

"तुमने मुझे सिंधुवर्ता वापस लाकर अपना वादा निभाया है," घटाकरपारा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "क्या यह काफी नहीं है? मुझे उदयपुरी जाने दो—"

अमरा सिंह ने अपना सिर दृढ़ता से हिलाया। "तुम्हारी माँ उज्जैन में है, चिंता से बीमार है—"

"मां हमेशा किसी न किसी बात की चिंता में बीमार रहती हैं।"

और तुम्हारे चाचा तुमसे मिलना चाहेंगे, साथ ही साथ बाकी सब लोग भी—"

"माँ को बता देना कि मैं ठीक हूँ," राजकुमार ने बड़े सलाहकार की ओर मुड़कर कहा। "सबको बता देना कि मैं ठीक हूँ। देखो, मुझे उदयपुरी जाना है। मुझे जाना ही होगा—"

"उस लड़की की वजह से?"

"हाँ।" घटाकरपारा ने अमरा सिंह को ऐसे घूरा जैसे वह मूर्ख हो। "मैं वहाँ क्यों जाना चाहूँगा? मुझे उससे मिलना ही है। मुझे मिलना ही होगा—"

"अपनी आवाज़ धीमी रखो," बुजुर्ग पार्षद ने कहा। "पुरुषों को तुम्हारी आवाज़ सुनाई दे रही है।"

राजकुमार ने पीछे मुड़कर देखा, फिर तुरंत वापस मुड़ गया। "मुझे अपने किए के लिए उससे माफी मांगनी होगी," उसने गुस्से में फुसफुसाते हुए कहा। "मुझे उसे अपना इरादा बताना होगा—"

"उसका नाम क्या है?"

"क्या? ओह, अपारूपा।"

"ठीक है, मेरी बात सुनो। यह अपारूपा एक गद्दार की बेटी है, एक ऐसे आदमी की जिसने अवंती के राजकुमार के अपहरण की साजिश रची और अपहृत राजकुमार को सीमा पार दुश्मन के हाथों में पहुँचाने में मदद की। यह आदमी हिरासत में है और उस पर राजद्रोह का आरोप लगाया जाएगा। उसे आजीवन कारावास होगा, हालाँकि इस बात की भी उतनी ही संभावना है कि उसे निर्वासितों के वन में भेज दिया जाए। क्या तुम्हें इस स्थिति की बेतुकीपन समझ में आ रही है?"

“खैर, मैं वही राजकुमार हूँ जिसका अपहरण कर लिया गया था—”

"बिल्कुल।"

"—तो, अगर मुझे इस आदमी की बेटी से कोई समस्या नहीं है, तो मुझे नहीं लगता कि किसी और को भी उससे कोई समस्या होगी।"

अमारा सिम्हा ने घटकपारा को घूरकर देखा।

राजकुमार ने आगे कहा, "इसके अलावा, हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इस बेटी ने उसी राजकुमार को बचाने में सहायता की थी।"

“तुम्हें क्या लगता है कि महल—” अमारा सिम्हा ने कहना शुरू किया, फिर रुक गया। “उदयपुरी पहुँचकर तुम्हारा क्या करने का इरादा है?”

मैं अपारूपा को ढूंढकर उसे बताऊंगी—”

“उस स्थिति तक पहुंचें जहां हम मान लें कि वह आपको माफ कर देगी। फिर आगे क्या? आप क्या करेंगे?”

घटाकरपारा ने इस बारे में एक पल सोचा। "मैं उससे शादी करने के लिए कहूंगा।"

एक गहरी आह भरते हुए, अमरा सिंह ने नदी के उस पार जंगल की ओर देखा। ऊपर आसमान में सूरज धीरे-धीरे चढ़ रहा था, लेकिन जंगल अभी भी ठंडा था।

“मैं जानता हूँ कि आपके मन में क्या चल रहा है,” राजकुमार ने कहा। “आप सोच रहे हैं कि राजा की सभा में अपना स्थान त्यागकर और अवंती के राजकुमार कहलाने का अपना अधिकार खोकर मैं मूर्खता कर रहा हूँ। आप सोच रहे हैं कि संभवतः मैं वत्स का राजकुमार भी नहीं रहूँगा, और उज्जैन और कौशांबी के दरबारों में बहुत से लोगों को, विशेष रूप से अपने मामाओं—सम्राट, मामा वरारुचि और राजा चंद्रवर्धन —को निराश करूँगा। आप सोच रहे हैं कि एक गद्दार की पुत्री से विवाह करने के कलंक के साथ जीने के लिए विशेषाधिकारों से भरे जीवन को ठुकराना मेरी मूर्खता है। आप सही हैं, क्योंकि मैं मूर्खता कर रहा हूँ, और यह सरासर मूर्खता है।”

अमारा सिम्हा ने घटकार्पारा को तिरछी नज़र से देखा।

“आप सही कह रहे हैं,” राजकुमार ने उदास मुस्कान और कंधे उचकाते हुए कहा। “शायद शशिवर्धन भी मुझे अपना मुख्य सलाहकार बनाने का प्रस्ताव भूलने को मजबूर हो जाएं। लेकिन आप जानते हैं क्या? मैं अपनी प्रेमिका के साथ रहने के लिए यह सब सहने को तैयार हूं।”

अमरा सिंह ने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन घटाकरपारा ने उन्हें रोक दिया।

"आपने अभी मुझे बताया कि अतुल्यातेजा ने अपारूपा की लगन का जिक्र कैसे किया; उसके लिए मैं सीमा रक्षक का एक साधारण सिपाही मात्र था, फिर भी उसने मुझे इतनी शिद्दत से ढूंढा। इससे आपको उसके बारे में क्या पता चलता है?"

वरिष्ठ पार्षद ने कुछ नहीं कहा।

"आप उस आदमी को क्या सलाह देंगे—मुझे नहीं, किसी और आदमी को—जिसे पता हो कि कोई औरत उससे उतना ही गहरा प्यार करती है जितना अपारूपा मुझसे करती है? क्या आप उस आदमी से कहेंगे कि वह इस औरत को भूल जाए, या आप उसे कहेंगे कि वह उसके इस अनमोल प्यार की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करे? आप क्या सलाह देंगे?"

अमरा सिम्हा ने नज़रें हटाने की कोशिश की, लेकिन घटाकरपारा ने उसके बलवान हाथ पर हाथ रख दिया, जिससे वह मुड़ने और उसकी निगाहों से मिलने के लिए मजबूर हो गया।

"विशाल रेगिस्तान को पार करते समय अपारूपा के विचारों ने ही मुझे हिम्मत दी। उन्हीं की वजह से मैं इन ठंडे पहाड़ों को पार कर पाया। मुझे उनके पास जाना ही होगा, कृपया। मुझे उन्हें यकीन दिलाना होगा कि मेरा इरादा उन्हें धोखा देने का कभी नहीं था। मुझे उनसे क्षमा मांगनी होगी। मुझे उनके प्रति अपना प्यार साबित करना होगा। सबसे बढ़कर, मुझे उन्हें ढूंढना ही होगा, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। इसलिए, मुझे जाने दीजिए।"

"मेरी बात सुनो," अमरा सिंह ने समझाने की कोशिश की। "तुम अकेले उदयपुरी जाने की हालत में नहीं हो। रेगिस्तान और पहाड़ों में झेली कठिनाइयों से अभी उबरना बाकी है। तुम अभी भी कमजोर हो। महल में आओ ताकि धनवंतरी तुम्हें देख सकें—"

"क्या माँ को अपारूपा के बारे में पता है? क्या चाचा विक्रम को पता है? चाचा वरारुचि को?"

"मुझे लगता है, वे ऐसा करते हैं," अमारा सिम्हा ने स्वीकार किया। "अतुल्यतेजा उन्हें बाहर नहीं रख सकते थे।"

"क्या आपको लगता है कि वे मुझे और उसे स्वीकार करेंगे?" राजकुमार ने बूढ़े आदमी की चुप्पी पर ध्यान दिया और सिर हिलाया। "मुझे नहीं लगता। एक बार मैं महल में पहुँच गया, तो वे मुझे अपारूपा से मिलने से रोकने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेंगे। जब इतनी पीढ़ियों की परंपरा और पारिवारिक सम्मान दांव पर लगा हो, तो वे मुझे कैसे जाने देंगे? इसीलिए मुझे पहले उदयपुरी जाना होगा।"

अमर सिंह गहरे सोच में डूबे बैठे थे। अंत में उन्होंने बालक की ओर मुड़कर कहा, "मैं समझता हूँ कि तुम इस कन्या के प्रति कैसा भाव रखते हो। और यदि तुम मेरी सलाह जानना चाहते हो, तो वह यह है। उसे यथासंभव अपने करीब रखो, यथासंभव लंबे समय तक, क्योंकि समय कब तुम्हें अलग कर देगा, यह तुम नहीं जानते। लेकिन जब मैं तुमसे कहूँ कि मेरे साथ उज्जैन चलो, तो मेरी बात सुनो। तुम कमज़ोर हो, और यदि उदयपुरी में तुम्हें कुछ हो गया, तो मैं सम्राट की आँखों में आँखें डालकर नहीं देख पाऊँगा। मैं उन्हें निराश कर दूँगा। धनवंतरी से कहो कि वह तुम्हारा इलाज करके तुम्हें स्वस्थ कर दे। फिर तुम उदयपुरी जा सकते हो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें और अपारूपा को मिलाने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा, चाहे इसके लिए महल के लोगों का क्रोध ही क्यों न सहना पड़े। मेरे लिए अभी मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारे लिए उदयपुरी तुम्हारे साथ चलूँगा।"

कुछ देर तक घटाकरपारा चुपचाप पानी को घूरते रहे।

"आपको मेरा वचन है," अमारा सिम्हा ने राजकुमार के कंधे को हल्के से दबाते हुए फिर कहा।

लड़के ने अंततः अपने साथी की ओर देखा। धीरे से, उसने सिर हिलाया।

***

अतुल्यतेज की तलवार म्यान में थी, जो काठी और उसकी बाईं जांघ पर संतुलित थी, उसका दाहिना हाथ तलवार की मूठ पर हल्के से टिका हुआ था, जरा सी भी उकसाहट पर तलवार निकालने के लिए तैयार था, क्योंकि वह अपने राजा के पीछे मरुस्थली में प्रवेश कर रहा था।

रेगिस्तान की तलहटी में, हवा में रेत भरी हुई थी जो आँखों में चुभ रही थी और नाक बंद कर रही थी; ऊपर, सूरज की गर्मी से कमांडर के माथे पर पसीना आ रहा था और गर्दन से नीचे बह रहा था। लेकिन उस नौजवान को इसका एहसास नहीं हो

रहा था, क्योंकि उसकी निगाहें हूण टुकड़ी पर टिकी थीं—और खासकर उस चौड़े कंधों वाले विशालकाय योद्धा पर, जिसे वह बचपन से अपना आदर्श मानता आया था। उसे आज भी याद था कि पहली बार किसी ने उसे उस योद्धा से घटाकरपारा के मित्र के रूप में मिलवाया था। उस योद्धा ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसकी ओर देखते हुए कहा था, "जब तुम्हारा मित्र कोई राजकुमार हो, तो राजकुमार से भी बेहतर लड़ना सीखो। इस तरह तुम्हारा आत्मसम्मान बना रहेगा और तुम्हारी मित्रता बराबरी की होगी।"

लगभग एक दर्जन से भी कम संख्या में मौजूद हूण घुड़सवार, अवंती की रक्षा पंक्ति से कुछ सौ कदम की दूरी पर रुक गए थे और वहीं प्रतीक्षा करने लगे। उनके आगमन के कुछ ही क्षणों के भीतर, उन्होंने पहाड़ों में संदेश भेजा, जिसमें सम्राट को उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया गया था, और उन्हें किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाने का आश्वासन दिया गया था, साथ ही अवंती की सेना से यह आश्वासन भी मांगा गया था कि वे भी हमला नहीं करेंगे। हूणों ने सम्राट से मिलने की इच्छा का कोई कारण नहीं बताया था।

अतुल्यतेज और उनके साथी सेनापतियों ने विक्रमादित्य के हूणों से मिलने जाने का विरोध किया था, क्योंकि उनका मानना था कि उन बर्बरों पर भरोसा नहीं किया जा सकता और यह मुलाकात सम्राट की हत्या का बहाना हो सकती है। लेकिन विक्रमादित्य पीछे हटने को तैयार नहीं थे। अंततः अतुल्यतेज के विरोध के आगे झुकते हुए, उन्होंने सेनापति को अपने साथ रेगिस्तान में जाने की अनुमति दे दी।

सम्राट और सेनापति को पहाड़ों की छाया से निकलते देख, पाँच घुड़सवार अपने घोड़ों से उतर गए और उनसे मिलने के लिए आधे रास्ते पर चल पड़े। विक्रमादित्य ने लगाम खींची और घोड़े से उतर गए, जिससे अतुल्यतेज को भी ऐसा ही करना पड़ा, और वे दोनों आते हुए हूणों के समूह की ओर चल पड़े। सेनापति ने हवा में एक सन्नाटा महसूस किया, पहाड़ों में उनके पीछे एक तनावपूर्ण खामोशी छाई हुई थी, और प्रतीक्षा कर रहे हूणों की ओर से भी वैसी ही खामोशी थी। यह खामोशी केवल धूल के विशालकाय बादलों की रुक-रुक कर आने वाली दहाड़ और उनकी चप्पलों की रेत पर रगड़ की आवाज से ही भंग हो रही थी।

जब उनके बीच तीस कदम से भी कम की दूरी रह गई, तो अन्य चार हूण योद्धा रुक गए, लेकिन कालिदास तब तक चलते रहे जब तक कि उनके और राजा के

बीच की दूरी घटकर दस कदम नहीं रह गई। अंत में वे रुके और सम्राट के बारे में सोचने लगे।

सम्राट ने भी पलटकर अपने पूर्व सलाहकार के चेहरे पर आंखें गड़ा दीं।

कालिदास के पीछे, चारों हूण झुकी हुई आँखों से देख रहे थे।

राजा के बगल में खड़े अतुल्यातेज ने देखा कि कालिदास का हाथ अपनी तलवार की ओर बढ़ रहा है। वह तनावग्रस्त हो गए।

उस विशालकाय व्यक्ति की निगाहें अतुल्यतेजा पर पड़ीं। उन्होंने उन्हें पहचान लिया, लेकिन फिर उनकी निगाहें सम्राट पर वापस टिक गईं।

सूरज की भीषण गर्मी में भी कुछ नहीं हिला।

"पिछली बार जब हम मिले थे तब से कुछ बदलाव हुए हैं," हूना ने अंत में कहा, उसकी निगाहें राजा की दाढ़ी पर टिकी हुई थीं।

“वहाँ भी बदलाव हुए हैं,” विक्रमादित्य ने सिर मुंडवाए हुए सिर और उस विशालकाय व्यक्ति के माथे पर बने गहरे निशान की ओर इशारा करते हुए जवाब दिया।

कालिदास ने अपना सिर झुकाया। उन्होंने सहज भाव से पूछा, "उज्जायिनी कैसी हैं?"

"जबरन रोकते हुए।"

"यह मनुष्यों की दृढ़ इच्छाशक्ति से बना है," उस विशालकाय व्यक्ति ने अरबुदास की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए टिप्पणी की।

अतुल्यतेज के कुछ ही समय में उसका हाथ अपनी तलवार की ओर बढ़ा और कालिदास ने तलवार निकाल ली और उसे सहजता से अपने हाथ में थाम लिया। उसके पीछे चारों हूणों ने अपनी तलवारें निकाल लीं।

अतुल्यतेज की तलवार म्यान से आधी बाहर निकली ही थी कि उन्हें एहसास हुआ कि सम्राट ने नरक की आग को छुआ तक नहीं था। उन्होंने चिंता भरी नजर अपने राजा की ओर डाली, जो सीधे खड़े थे, पैर फैलाए कालिदास को देख रहे थे।

बाघ की गति और फुर्ती से चलते हुए, वह विशालकाय व्यक्ति अचानक एक घुटने पर बैठ गया और अपनी तलवार को सम्राट के सामने रेगिस्तान की ज़मीन पर सपाट रख दिया। वह सिर झुकाए वहीं बैठा रहा, और जब अतुल्यतेज ने हैरानी से उसे

देखा, तो पीछे खड़े चारों व्यक्ति भी घुटनों के बल बैठ गए और अपनी तलवारें भी उसी तरह ज़मीन पर रख दीं।

फिर, लगभग एक साथ, वे सभी पांचों आदमी अपने पैरों पर खड़े हो गए, और अपने हथियार वहीं छोड़ दिए जहां उन्होंने उन्हें रखा था।

अतुल्यतेज के माथे से पसीना धारियों में बहकर उनकी आँखों में चला गया। वे पलकें झपकाते हुए कालिदास से सम्राट की ओर देखने लगे, मानो पूरी तरह से व्याकुल हों। आखिर क्या हो रहा था, हूण क्या कर रहे थे, वे क्या—

"सम्राट विक्रमादित्य, मैं तुम्हारे और अवंती के लिए यह लाया हूँ," कालिदास ने अपनी बलिष्ठ भुजा को घुमाते हुए हूण सेना की ओर इशारा किया। "और यह भी।" उन्होंने विशालकाय धूल के दानवों की ओर इशारा किया।

इसका क्या मतलब है, सेनापति ने खुद से पूछा, कालिदास की बातें सुनते हुए उसकी आंखें चौड़ी हो गईं, वह समझ तो रहा था... लेकिन उस दैत्य की बातों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था।

"हुना लोग यहाँ मित्र बनकर आए हैं, सम्राट, हलाहला की रक्षा के हमारे संघर्ष में हमारी मदद करने के लिए।"

***

उर्वशी को यह नहीं पता था कि आगे क्या होगा जब देव उसे महल के गलियारों और रास्तों से जल्दी से ले गए और बताया कि इंद्र बड़ी बेसब्री से उसके आने का इंतजार कर रहे हैं। उसके लौटने की खबर गरुड़ों द्वारा अमरावती तक पहुंचाई गई थी, और जैसे ही उसने खाई को पार किया, देव उससे मिले और देवताओं के स्वामी से मिलने के लिए उनके साथ चलने का आग्रह किया।

इंद्र के आनंद कक्ष वाले हॉल में पहुँचकर, देवता ने उर्वशी के लिए दरवाज़ा खोल दिया। अंदर प्रवेश करते ही अप्सरा ने सबसे पहले फर्श पर बिखरे हुए तकिए देखे, जिनके बीच जल्दबाजी में कपड़े और गहने भी बिखरे पड़े थे। सामने स्थित पलंग के चारों ओर पर्दे लटके हुए थे, लेकिन मेहराबदार खिड़कियों से आती रोशनी पतले पर्दे से छनकर उर्वशी को दो अप्सराओं के सोते हुए रूप दिखाई दिए, जिनके ऊपर रेशमी चादरें चारों ओर फैली हुई थीं। हवा में पर्दे लहरा रहे थे, जिससे एक अप्सरा

की नंगी पीठ दिखाई दे रही थी, जबकि दूसरी अप्सरा का हाथ आराम से पहली अप्सरा की कमर पर पड़ा हुआ था।

"Urvashi."

मुड़कर देखने पर अप्सरा ने अपने दाहिनी ओर एक दीवान पर इंद्र को देखा, जो एक कोहनी के बल टिके हुए थे और नींद की कमी और सोमा के अधिक सेवन से धुंधली आँखों से उसे देख रहे थे। सामने एक स्टूल पर नारद बैठे थे, जिनका चेहरा उर्वशी को देखकर प्रसन्नता से चमक रहा था। नागों के स्वामी तक्षक भी वहीं मौजूद थे, जो दूसरे दीवान पर पस्त थे। तीनों के बीच एक छोटी सी लोहे की मेज थी, जिस पर एक कपड़ा बिछा हुआ था, और उस पर चौसर की तख्ती को सुंदर कढ़ाई से सजाया गया था।

"उर्वशी," इंद्र ने फिर से कहा और खुद को सीधा करते हुए लड़खड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

"मेरे स्वामी," अप्सरा ने सिर झुकाया।

"इतनी देर क्यों लगा दी?" इंद्र ने झुंझलाहट भरे लहजे में पूछा। "मुझे तो लगने लगा था कि कहीं तुमने मनुष्य राजा को बहका तो नहीं लिया।" उसने अपनी बात को हल्के में लेने के लिए हँस दिया, लेकिन चूंकि बाकी लोगों को इसमें कोई हंसी नहीं आई, इसलिए उसने अजीब तरह से गला साफ किया। उर्वशी की ओर लड़खड़ाते हुए कदम बढ़ाते हुए उसने कहा, "बताओ, तुम हमारे लिए कोई अच्छी खबर लाई हो। बताओ, हलाहल के ठिकाने का पता लगाने के बारे में मेरा अनुमान गलत तो नहीं था।"

"मैं...मानव राजा को पता चल गया कि मैं कौन हूँ और मैं उसके महल में क्यों हूँ।"

इंद्र ने कमर पर हाथ रखकर अप्सरा को संदेह भरी निगाहों से देखा। "इसका क्या मतलब है?"

"मुझे कैद में रखा गया था, महाराज। मुझे खंजर के बारे में कुछ भी सीखने का अवसर नहीं मिला।"

इंद्र का चेहरा क्रोध और निराशा से लाल हो गया। "जब तुमने राजा को बहकाया था, तब क्या हुआ था? उन्होंने कुछ तो कहा होता... कुछ इशारा जरूर किया होता..."

"मुझे मौका ही नहीं मिला," अप्सरा ने हताशा में कहा।

"इतने दिनों तक महल में रहने के बावजूद तुम्हें कभी मौका नहीं मिला? एक बार भी नहीं?" इंद्र ने उर्वशी पर भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "क्या ऐसा हो सकता है कि तुमने पर्याप्त प्रयास नहीं किया?"

"मैंने अपनी पूरी कोशिश की..." अप्सरा ने कहना शुरू किया, फिर रुक गई और दूसरी तरफ देखने लगी।

देव ने उर्वशी को गौर से देखा। फिर, उसके चेहरे के भावों को सही ढंग से पढ़कर, अविश्वास और तिरस्कार का भाव उनके चेहरे पर उभर आया। "विक्रमादित्य ने तुम्हें ठुकरा दिया," उन्होंने ताना मारा। उन्होंने तक्षक और नारद की ओर देखा। "देवलोक की सबसे आकर्षक और मोहक अप्सरा, और वह उस एक गुण में विफल हो गई जिसमें उसे निपुण होना चाहिए था, वह गुण जिसके कारण वह उस कार्य के लिए योग्य थी जो उसे सौंपा गया था।" इंद्र ने उर्वशी पर तिरस्कार भरी दृष्टि डाली। "एक अप्सरा का क्या फायदा अगर वह किसी पुरुष को अपनी बाहों में मोहित न कर सके, जो उसके प्रति आसक्ति से पागल हो जाए?"

नारद और तक्षक की निगाहों का भार महसूस करते हुए उर्वशी के गाल शर्म और क्रोध से लाल हो गए। "मैंने अपनी पूरी कोशिश की, महाराज," उसने दर्द और अपमान को दबाते हुए धीरे से कहा।

"तुम मानव राजा को बहकाने में नाकाम रहे, और तुम पकड़े गए और कैद में डाल दिए गए। शाबाश!" देव ने निराशा में अपने हाथ ऊपर उठा दिए। "तुम खाली हाथ लौटने की बजाय कैद में ही रह सकते थे, लेकिन मुझे यकीन है कि यह विचार तुम्हारे मन में आया ही नहीं।"

इस निर्ममता को देखकर अप्सरा स्तब्ध रह गई और इंद्र की ओर घूरने लगी। फिर, यद्यपि उसके भीतर आक्रोश का ज्वार उमड़ रहा था, उसने कहा, "मैं खाली हाथ नहीं लौटी हूँ। मैं आपके लिए समाचार लाई हूँ। मनुष्य राजा उज्जैन में नहीं है। वह बर्बर आक्रमण से लड़ने के लिए सीमा पर गया है।"

"और इससे मुझे क्या फायदा है?" इंद्र ने अप्सरा की ओर आलोचनात्मक दृष्टि से देखा।

उर्वशी यह बात स्पष्ट रूप से बताकर हैरान थी। "यदि मनुष्य राजा सीमा पर है, तो उज्जैन में नरक की आग नहीं लग सकती, हे मेरे स्वामी।"

अपने सामने आए अवसर को भांपते हुए, देवताओं और नागों ने उत्साह भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। "वह निश्चित रूप से नरक की अग्नि को अपने साथ ले गया होगा," नारद ने सौहार्दपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।

"अगर उसने ऐसा नहीं भी किया है, तो उज्जैन में कोई भी ऐसा नहीं है जो इन हथियारों का इस्तेमाल कर सके।" तक्षक चौसर बोर्ड पर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, खेल को वह पहले ही भूल चुका था।

इंद्र सीधे खड़े थे, उनकी आँखें चमकीली और दृढ़ थीं, उनके हाव-भाव में कुछ क्षण पहले छाई सुस्ती गायब थी। "क्या तुम्हें कोई अंदाज़ा है कि वह सीमा पर कब तक रहेंगे...?" उन्होंने उर्वशी से पूछा, उनका लहजा अब कम कठोर था, "...हमारे पास कितना समय है?"

उर्वशी ने अपना सिर हिलाया।

इंद्र ने अप्सरा के प्रति अपनी नाराज़गी हल्के से ज़ाहिर करते हुए मुँह बनाया। "हमें जो पता है, उसी से काम चलाना पड़ेगा," उन्होंने संभलते हुए कहा। फिर उन्होंने नारद और तक्षक की ओर मुँह किया और पूछा, "सिंधुवर्त के लिए पूरी सेना तैयार करने में कितना समय लगेगा?"

नारद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "तक्षक और उसके नाग तो पहले से ही यहाँ हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप और किसे चाहते हैं—"

"मरुत, नाग, त्रिभानु के किन्नर... कम से कम जो भी बचे हों," देव स्वामी ने बीच में ही कहा। "हम जितने भी देव सैनिकों को इकट्ठा कर सकते हैं, उन सभी को, जिनमें अश्विन भी शामिल हैं, जो उम्मीद है कि इस बार अधिक साहसी साबित होंगे। आइए हम इतनी ताकत से हमला करें कि हमारे जाने के बाद मानव नगरी का कुछ भी न बचे।"

"मान्यु और मेरा क्या होगा?" राजनयिक ने पूछा। "और अग्नेयी और उसके अग्नि-प्राणियों का क्या होगा?"

"मुझे किसी आपात स्थिति में अमरावती की रक्षा करने के लिए किसी की आवश्यकता है," इंद्र ने उत्तर दिया। "नहीं, मैंने जो माँगा है, वह उस तुच्छ मानव राज्य को कुचलने के लिए पर्याप्त होना चाहिए।"

नारदा ने कहा, "सभी को एक साथ लाने में एक दिन लगेगा। शायद इससे भी ज्यादा।"

"तो चलो," इंद्र ने उंगलियां चटकाते हुए कहा। "जितनी जल्दी हम अंदर जाएंगे, उतनी जल्दी बाहर आ सकेंगे। विक्रमादित्य के सीमा से लौटने के समय हमें यहाँ नहीं होना चाहिए।" उन्होंने तक्षक की ओर मुड़कर कहा, "तुमने राजा के सलाहकारों का ज़िक्र किया था..."

उर्वशी अब किसी बात पर ध्यान नहीं दे रही थी और नारद को कक्ष से जाते हुए देखती रही। फिर उसने इंद्र और तक्षक की ओर देखा, जो आपस में बातचीत में मशगूल थे। उसने पलंग की ओर देखा, जहाँ अप्सराएँ बातचीत के दौरान सो रही थीं। उसे अचानक एहसास हुआ कि उसे भुला दिया गया है, एक उद्देश्य पूरा होने के बाद उसे त्याग दिया गया है। जब देव उसे इंद्र से मिलवाने के लिए महल से जल्दी ले गए थे, तब उसे पता नहीं था कि क्या होगा, लेकिन अंत ऐसा नहीं होना चाहिए था।

बिना किसी सहानुभूतिपूर्ण शब्द के, बिना कृतज्ञता के, बिना धन्यवाद के।

वह सोच रही थी कि क्या उसे उज्जैनी पर हुए व्याला के हमले का जिक्र करना चाहिए। उसने ऐसा न करने का फैसला किया; उन्होंने पूछा नहीं था, इसलिए कुछ भी कहने की जरूरत नहीं थी।

वह मुड़ी और कमरे से बाहर चली गई। किसी ने उसके जाने पर ध्यान नहीं दिया।

***

"मैं खशी दुर, ब्वो हूनाओं का मुखिया हूँ। मैं आपको अपनी और इस वीरान भूमि के सभी हूना कबीलों की मित्रता भेंट करता हूँ। अवंती के राजा, आपसे मिलकर हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं।"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाकर आभार व्यक्त किया और अपने सामने मौजूद घावों से भरे चेहरे का अवलोकन किया। उन्होंने कहा, "एक हूण जो अवंती भाषा में पारंगत है। दुर्लभ!"

"मैं कह सकता हूँ कि मैंने इस मुलाकात की उम्मीद में आपकी भूमि की भाषा सीखी, लेकिन आप इसे झूठ समझ जाएँगे," खाशी दुर मुस्कुराया। "मैंने इसे उन लोगों को समझने के लिए सीखा जिन पर मैं शासन करना चाहता था।"

हुनों के मूल इरादे का एक संक्षिप्त उल्लेख भी, सुबह की भीषण गर्मी के बावजूद, वातावरण को ठंडा कर देता था।

"तो फिर अचानक मन क्यों बदल गया?" सम्राट ने पूछा। "यह अचानक मित्रता का प्रस्ताव क्यों?"

"क्योंकि उन्होंने आपके बारे में हमें बहुत कुछ बताया है," सरदार ने कालिदास की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर कुछ याद आने पर उन्होंने अपना माथा पीट लिया। "लेकिन पहले, मैं आपको अपने भाइयों, अन्य हूण कबीलों के सरदारों से मिलवाता हूँ। श्योर बा'रह ताहा, श्योर गहवी'ए और श्योर अरे'ज़्ज़..." तीनों सरदारों ने एक-एक करके विक्रमादित्य को प्रणाम किया। सबसे बड़े सरदार, जो लंबी और घनी सफेद दाढ़ी वाले थे, ने कुछ वाक्य बोले और फिर प्रणाम करके अपनी बात समाप्त की।

"भाई आरेज़ कहते हैं कि उन्हें याद है कि आपने उनकी चौकी पर हमला किया था," खशी दुर ने अनुवाद किया। "चौकी आधे दिन में ही गिर गई, और उनका कहना है कि उन्होंने आपसे बेहतर योद्धा कभी नहीं देखा।" सरदार मुस्कुराया। "वह खुश है कि अब उसे आपसे दोबारा युद्ध में नहीं मिलना पड़ेगा।"

विक्रमादित्य ने कालिदास की ओर देखा, जिन्होंने सहमति में अपना सिर झुकाया।

"उसने तुम्हें क्या बताया?" राजा ने दैत्य की ओर इशारा करते हुए पूछा।

हूणों के सरदार ने गहरी सांस ली। ऊपर आसमान में सूरज की तेज गर्मी पड़ रही थी और रेगिस्तान में भीषण तप रही थी।

"उन्होंने हमें तलवारों के बारे में बताया," खाशी दुर ने श्रद्धा भाव से नरक की अग्नियों की ओर इशारा करते हुए कहा। "वे क्या कर सकती हैं, वे तुम्हारे पास कैसे आईं, और उन्हें चलाने का क्या अर्थ है। फिर उन्होंने हमें उस प्राचीन देवता के बारे में बताया जिसने तुम्हें कटार की रक्षा करने का दायित्व सौंपा है।" सरदार ने राजा को आश्चर्य से देखा। "ऐसा हर दिन नहीं होता कि देवता मनुष्यों की सहायता मांगें। यह और तलवारें साबित करती हैं कि तुम विशेष, अद्वितीय और... धन्य हो।" उसने फिर से प्रणाम किया, और यद्यपि अन्य श्योर एक भी शब्द नहीं समझ पाए, उन्होंने भी प्रणाम किया।

"उन्होंने हमें यह भी बताया कि कैसे आपने उन्हें बचपन में पाया और अपने महल में ले गए, जहाँ आप दोनों गहरे दोस्त बन गए," खशी दुर ने आगे कहा। "उन्होंने हमें आपके दूसरे सलाहकार के बारे में भी बताया... वह लड़की जिसका पिता गद्दार है।"

"वह गद्दार था," राजा ने कहा। "उसके अपराध अब अतीत का विषय हैं, और उसने प्रायश्चित कर लिया है।"

सरदार ने अपनी बाहें फैलाईं और मुस्कुराया। "जैसा कि आप कहते हैं, वह गद्दार था। लेकिन आपने उस छोटी बेटी की खातिर उसकी जान बख्श दी। बाद में, आपने उसे सलाहकार बना दिया। आपने थ्रा'आखा और उस लड़की के लिए जो किया, उससे पता चलता है कि आप एक बहादुर योद्धा होने के साथ-साथ एक दयालु और न्यायप्रिय इंसान भी हैं। यह इस दुनिया में बहुत कम देखने को मिलता है और इससे भी कहीं अधिक अनोखा है।"

लेकिन इन सब के लिए पुरस्कृत होने के बजाय, आपको केवल कष्ट सहना पड़ा। आपका शहर तबाह हो चुका है, आपका राज्य घेराबंदी में है, आपके शत्रु असंख्य हैं —इतने अधिक कि थ्राखा महल में किसी से भी यहाँ आने और हमारी सहायता मांगने की अपनी योजना साझा करने से डरता था, कहीं यह बात फैल न जाए और कोई उसे रोकने की कोशिश न करे।

विक्रमादित्य की निगाह कालिदास पर पड़ी। विशालकाय कालिदास ने उनके हाथों को देखा और कुछ नहीं कहा।

"थ्राखा ने हमें रानी और उनके प्रति आपके प्रेम के बारे में बताया, और यह भी बताया कि कैसे आपने कटार के बदले रानी का इलाज करने का प्रस्ताव ठुकरा दिया था।" खशी दुर का चेहरा नरम पड़ गया। "जिनकी हम सबसे ज़्यादा परवाह करते हैं, उनके लिए न झुकना बड़ी हिम्मत का काम है। उन्होंने हमें बताया कि आपको किन-किन मुश्किलों से गुज़रना पड़ा है, और उन्होंने हमसे सिंधुवर्त पर हमला करने का इरादा बदलने की अपील की। उन्होंने हमसे कहा कि हमें कटार की रक्षा के लिए आपकी लड़ाइयों में आपकी मदद करनी चाहिए।"

सम्राट ने एक बार फिर कालिदास की ओर देखा, जिन्होंने संकोचवश नज़रें फेर लीं।

सेनापति ने रेगिस्तान में अपनी सेना की ओर मुड़कर देखा। उसने आगे कहा, "सच तो यह है कि हम युद्ध में तुम्हारा और तुम्हारी तलवारों का सामना नहीं करना चाहते। अगर थ्राखा की बात सच है—और हमारे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है—तो अगर हम तुमसे लड़े तो शायद हम ज़िंदा ही न बचेंगे। फिर भी, यह भी उतना ही सच है कि तुम्हें सहयोगियों की ज़रूरत है, और हम तुम्हारी

मदद कर सकते हैं।" दूसरे श्योरों की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "हे महाराज, मेरे भाइयों और मैंने फैसला लेने में ज़रा भी समय नहीं लगाया। हम आपकी सेवा में हाज़िर हैं।"

"आपकी मदद के लिए हम बहुत आभारी हैं," विक्रमादित्य ने सिर झुकाते हुए कहा। "लेकिन इतनी दूर आकर किसी ऐसे संघर्ष में शामिल होना जो आपका नहीं है, उचित नहीं है, जब तक कि आपको बदले में कुछ न मिले।" उन्होंने चतुराई से एक-एक चेहरे को देखा।

"मैंने एक प्रस्ताव रखा है जिसे मुझे लगता है कि सिंहासन स्वीकार करने की स्थिति में है," कालिदास ने धीमी आवाज़ में कहा।

राजा ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, कुछ नहीं कहा और प्रतीक्षा करने लगे। हालांकि, इससे पहले कि कालिदास कुछ कह पाते, खशी दुर ने हस्तक्षेप किया।

"मुझे स्पष्ट रूप से लगता है कि आप न्यायप्रिय और निष्पक्ष व्यक्ति हैं, इसलिए आइए हम उस बात पर चर्चा करें जो हमें उचित समय पर प्रदान करने की आशा है। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम आपके शत्रुओं के विरुद्ध आपकी सहायता करने के लिए यहाँ आए हैं। यह हूण सेना अब आपके अधीन है।"

"मेरे शत्रु शक्तिशाली और देव-समान असुर हैं," सम्राट ने कहा। "मैं आपके कुशल योद्धाओं का अनादर नहीं करना चाहता, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे कितनी मदद कर सकते हैं।"

खाशी दुर ने जलते हुए रेगिस्तान के आधे हिस्से को अपने दायरे में लेते हुए एक हाथ को घुमाते हुए कहा, "तुम याहब्रे को भूल गए हो।"

"क्या?"

"याहब्रे," सरदार ने विशालकाय धूल के दैत्यों की ओर इशारा करते हुए दोहराया। "हमारे ड्रोइबा द्वारा नरक की गहराइयों से इन्हें जीवन दिया गया है।"

"Droiba?" Vikramaditya stared.

"जी हां, हमारे पुजारी। वह एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं—"

"मुझे पता है," सम्राट ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "क्या आपके पास यहाँ एक द्रोइबा है?"

"हां," खशी दुर आश्चर्यचकित दिखे।

"मुझे अभी उसके पास ले चलो।" राजा की आँखों में तीव्र चमक थी। "मुझे लगता है कि वह मेरी मदद कर सकता है।"

Shalivahana

शुक्राचार्य के माथे पर एकाग्रता की लकीरें और झुर्रियाँ बनी हुई थीं, जब वे मंडल पर बिखरी हड्डियों को घूर रहे थे। उनकी नज़र एक हड्डी से दूसरी हड्डी पर घूम रही थी, मानो वे उनके सामूहिक अर्थ को समझने की कोशिश कर रहे हों। संतुष्ट न होकर, उन्होंने हड्डियों के टुकड़ों को उठाया और खड़खड़ाहट के साथ वापस नीचे गिरा दिया, और उनसे कुछ जानकारी प्राप्त की।

प्रधान पुजारी काफी देर तक मंडल पर झुके बैठे रहे। फिर, हड्डियों को एक आखिरी बार घुमाकर, वे उठे और जल्दी से कमरे से बाहर निकल गए, हड्डियों को वहीं छोड़ दिया।

वह महल के गलियारों से तेज़ी से गुज़रा, जो अवंती पर हमले की तैयारियों से गुलज़ार थे। असुर सेवक भट्ठियों से भाले और नुकीले बरछी लिए दौड़े; कवचधारी भयंकर असुर योद्धा विशाल एकश्रृंगों के पास कतार में खड़े हो गए, युद्ध गैंडों की पीठ कवच से काली हो गई थी, उनके एक सींग वाले सिर अधीरता से हिल रहे थे; विकृत युद्ध महिषा विशाल कुल्हाड़ियाँ लिए आंगनों में उछल-कूद कर रहे थे, जबकि ढोल वादक शुभ गेंदे की मालाओं से सजी बड़ी भेरियों पर युद्धोन्मादी ताल बजा रहे थे।

भीड़ को चीरते हुए शुक्राचार्य पाताल के स्वामियों के कक्षों में पहुँचे। उन्होंने कमरों की छानबीन की और अंत में उन्हें दो भाई गरमागरम बहस करते हुए मिले। महायाजक को द्वार से अंदर आते देख हिरण्याक्ष उनकी ओर मुड़ा।

“हमें आपकी सलाह चाहिए, महागुरु। हम इस बात पर सहमत नहीं हो पा रहे हैं कि क्या बेहतर है; भाई का अकेले राजा के महल में जाना, या हम दोनों का जाना। मेरी राय में—”

“हिरण्याक्ष, तुम मनुष्यों के नगर में नहीं जाओगे,” प्रधान पुरोहित ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “तुम्हारा भाई और होलिका असुरों का नेतृत्व करेंगे।”

"लेकिन क्यों, महागुरु?" हिरण्याक्ष ने चकित होकर शुक्राचार्य की ओर देखा।

“क्योंकि हड्डियों से पता चला है कि मानव राजा और उसके बिछड़े हुए सलाहकार ने अपनी मित्रता फिर से मजबूत कर ली है।” प्रधान पुजारी ने गुस्से से घूरते हुए

कहा। "पता चला कि सलाहकार कभी राजा के खिलाफ था ही नहीं। उसने सबको बेवकूफ बनाया था, यहाँ तक कि मुझे भी।"

असुर स्वामियों ने हैरानी से एक-दूसरे की ओर देखा।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," शुक्राचार्य ने कहा। "महत्वपूर्ण बात यह है कि राजा और सलाहकार एक साथ हैं, और वे बर्बरों की एक विशाल सेना के साथ उज्जैन वापस जा रहे हैं।"

"और हमें उनसे डरना होगा?" हिरण्यकशिपु ने तिरस्कार से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। "एक राजा, एक अतिरिक्त सलाहकार और कुछ बर्बर योद्धाओं से?"

"हमें उनसे सावधान रहना होगा, हाँ," प्रधान पुजारी ने कहा। "खासकर पार्षद से।"

"क्यों?"

"नौ मोती। याद रखो, हर सलाहकार एक मोती का प्रतिनिधित्व करता है..." असुरों को सिर हिलाते देख शुक्राचार्य ने आह भरी। "सलाहकारों को अलग करके मैंने नौ मोतियों की शक्ति को कमजोर कर दिया था, लेकिन सलाहकारों के धीरे-धीरे फिर से एकजुट होने से मोती एक-दूसरे पर अपना प्रभाव डालेंगे और उनकी शक्ति कई गुना बढ़ जाएगी। तब राजा के सलाहकारों को हराना नामुमकिन हो जाएगा।" उन्होंने भाइयों की ओर देखा। "हम ऐसा नहीं होने दे सकते।"

"मोतियों को अलग ही रखना होगा," हिरण्याक्ष ने धीरे से सिर हिलाते हुए समझदारी से कहा।

"जी हाँ। एक मोती को बचाकर हम बाकी मोतियों को अत्यधिक शक्तिशाली होने से रोक सकते हैं। इसीलिए, जब हम सब उज्जैन की ओर प्रस्थान करेंगे, तब तुम विक्रमादित्य और उनके सलाहकार को रोकने के लिए सेना लेकर जाओगे।"

Shukracharya's gaze pierced Hiranyaksha.

"उन्हें रोको," उसने दोहराया। "हिरण्यकशिपु के रास्ते में कुछ भी नहीं आना चाहिए। कुछ भी नहीं।"

***

"विकराम, रेगिस्तान में इतनी सूखा है कि आशा भी मुरझाकर मर जाती है।"

कालिदास कठोर ज़मीन पर पालथी मारकर बैठे थे, उनके हाथ में कद्दू और दाल की दलिया से भरा एक बड़ा कटोरा था और वे आग को घूर रहे थे, शाम की हल्की

हवा में लपटों को नाचते हुए देख रहे थे। उन्होंने आगे कहा, "मैं इसके केंद्र में रहा हूँ, सीमा से तीन-चार दिन की दूरी पर स्थित गाँवों और कस्बों में। हर जगह यही हाल है। सूखा, गर्म, बंजर। उस मिट्टी में कुछ नहीं उगता, और पानी इतना कम है कि लोग उसके लिए जान तक देने को तैयार हैं। लेकिन यहाँ," उन्होंने अपने हाथ फैलाए, "अरबुदों के इस तरफ, हालात बिल्कुल उलट हैं। ज़मीन उपजाऊ है, पानी भरपूर है।" विशालकाय कालिदास रुके और राजा की ओर देखा। "क्या यह उचित है कि कुछ लोगों के पास इतना कुछ है, जबकि दूसरों के पास इतना कम?"

विक्रमादित्य, जो कालिदास के सामने अग्नि के पार बैठे थे और उनके हाथों में भी एक कटोरा था, ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बजाय, उनकी निगाहें श्रीस्थली के पूर्व में झाड़ियों से भरे मैदानों में एक-दूसरे के बगल में डेरा डाले हुए अवंती और हूणों की सेनाओं पर टिकी रहीं। धीरे-धीरे अंधेरा होते परिदृश्य में खाना पकाने की आग जगह-जगह दिखाई दे रही थी, क्योंकि सैनिक जल्दी भोजन करने और कुछ घंटों के आराम के लिए बैठ गए थे, उनके घोड़े पास की विरल घास चर रहे थे। दोनों पक्षों के बीच सावधानीपूर्वक बातचीत शुरू हो गई थी, मुख्य रूप से सामान्य रुचि के विषयों पर: घोड़े—सभी योद्धा घुड़सवार थे—हथियार, और अब, भोजन। हूणों की संख्या, जिसका अंदाजा दोनों शिविरों के आकार से लगाया जा सकता है, अवंती और अनार्तों के सैनिकों से काफी अधिक थी।

दिन के आरंभ में, राजा के द्रोइबा से मिलने के आवेगपूर्ण निर्णय ने अवंती की सेना में दहशत फैला दी थी, और जब तक अतुल्यतेजा ने अचंभित श्रोताओं को घटनाक्रम समझाया नहीं, तब तक पर्वतों में शांति नहीं लौटी। बाद में, सम्राट के साथ कालिदास को शिविर में आते देख सबकी आँखें फटी रह गईं, और यह खबर बिजली की गति से फैल गई, जिससे मीलों दूर तक हर सैनिक को पता चल गया कि हूणों ने मित्रता का प्रस्ताव रखा है, और कालिदास को अब गद्दार नहीं माना जाएगा।

विक्रमादित्य ने आस-पास के सभी घुड़सवारों को इकट्ठा होने का आह्वान करते हुए घोषणा की कि वे—अवंती के घुड़सवार और हूण घुड़सवार—संकटग्रस्त शहर उज्जैन की सहायता के लिए पूरी तेज़ी से वापस लौटेंगे। राजा ने यह भी घोषणा की कि एक हूण पुजारी भी उनके साथ आएगा, हालांकि उन्होंने इसका कारण नहीं बताया। जल्दी से दोपहर का भोजन करने के बाद संयुक्त सेना पूर्व दिशा की ओर गरजते हुए सीमा से दूर चली गई, जिससे धूल का एक पर्दा हवा में उठ खड़ा हुआ

और उन्हें उन पैदल सैनिकों और धनुर्धारियों से अलग कर दिया जिन्हें वे अर्बुदास में पीछे छोड़ आए थे।

"हूण एक ऐसा जीवन जीना चाहते थे जो जीवन-मरण के संघर्ष से मुक्त हो," विशालकाय व्यक्ति ने विक्रमादित्य को चुप देखकर आगे कहा। "रेगिस्तान ने इसकी अनुमति नहीं दी, इसलिए वे बेहतर जीवन की तलाश में अर्बुदा पर्वतमाला पार कर गए। लेकिन सिंधुवर्त के पुराने राज्य अपने पास मौजूद प्रचुर संसाधनों को, जिनकी उन्हें आवश्यकता भी नहीं थी, साझा नहीं करना चाहते थे। इसलिए, हूणों ने बलपूर्वक अपनी इच्छाएँ पूरी करना सीख लिया।"

अंत में सम्राट ने शांत स्वर में कहा, "निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्या करके।"

"हर युद्ध में, हर पक्ष में, सबसे अधिक संख्या में निर्दोष लोग ही मारे जाते हैं।"

राजा ने कुछ नहीं कहा।

"जब हम यहाँ बैठकर बातें कर रहे हैं, तब भी रेगिस्तान में निर्दोष पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे प्यास से मर रहे हैं, जबकि सिंधुवर्त राज्यों के पास ज़रूरत से ज़्यादा ज़मीन और पानी है।" कालिदास के होंठों पर एक कड़वी मुस्कान फैल गई। "सिर्फ़ इसलिए कि वे निर्दोष तलवार से नहीं मर रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि उनका खून किसी के हाथों पर नहीं है, विक्रम।"

विक्रमादित्य ने चुपचाप सिर हिलाया।

"मैं हूणों का बचाव नहीं कर रहा हूँ, मैं उनकी पिछली क्रूरताओं का समर्थन नहीं कर रहा हूँ, मैं उनका पक्ष नहीं ले रहा हूँ," उस विशालकाय व्यक्ति ने राजा से विनती की। "मैं ऐसा कर भी नहीं सकता, क्योंकि यद्यपि मैं जन्म से उन्हीं में से एक हूँ, पर परवरिश से मैं हम में से एक हूँ। मैं दोनों हूँ। मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ, वह यह है कि मैं अपने अस्तित्व का उपयोग करके दोनों पक्षों के बीच की खाई को पाटूँ, यह दिखाऊँ कि दोनों कैसे सह-अस्तित्व में रह सकते हैं।"

"मैं समझ गया," सम्राट ने कहा।

"सिंधुवर्त में खेती के लिए उपयुक्त विशाल खाली भूमि है," उस दैत्य ने कहा। "यह ऐसी भूमि है जिसकी किसी भी राज्य को आवश्यकता नहीं है। हूण वहाँ बस सकते हैं और हम सभी के साथ सद्भाव से रह सकते हैं। उन्हें वह भूमि मिल जाएगी जो वे

चाहते हैं, वे अवंती के प्रति वफादार रहेंगे, और सिंधुवर्त के राज्य आक्रमण के निरंतर भय से मुक्त हो जाएंगे।"

"मैं आपकी बात समझता हूँ, लेकिन कोई भी निर्णय लेने से पहले सिंधुवर्त के सभी राज्यों की सहमति आवश्यक है," राजा ने उत्तर दिया। "याद रखिए, मुझे अपने सभी सहयोगियों को साथ लेकर चलना होगा।" वह थोड़ा रुका और बोला, "मुझे लगता है कि खशी दुर यह बात समझता है।"

कालिदास ने सिर हिलाया। कुछ क्षण के लिए वे ढलती हुई शाम में बैठे रहे और आग से उठती चिंगारियों को देखते रहे।

"हूणों के साथ संधि करने की अपनी योजना के बारे में आपने मुझे क्यों नहीं बताया?" सम्राट ने पूछा।

"महल एक खतरनाक जगह थी, और मुझे लगता था कि किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता," उस विशालकाय ने जवाब दिया। "वह वैद्य... एक चाल चल रहा था। वह हमें अलग-अलग तरीकों से बहका रहा था। मुझे आभास हो गया था कि वह हमें अलग करना चाहता है, इसलिए जब मुझे रेगिस्तान में जाकर हूणों की मदद मांगने का ख्याल आया, तो मैंने भी उसकी चाल चलने का फैसला किया और ऐसा दिखाया जैसे मैं हमेशा के लिए चला गया हूँ। मेरी उम्मीद थी कि वह, या जो कोई भी हमें देख रहा था, यह मान लेगा कि उसकी चाल कामयाब हो गई है और अवंती कमजोर हो गई है।" उसका चेहरा उतर गया और उसने पछतावे से अपना सिर हिलाया। "मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरे चले जाने से अवंती इतनी कमजोर हो जाएगी और विद्रोह के कगार पर पहुँच जाएगी।"

"वरारुचि को आपका जाना बहुत बुरा लगा। उन्हें लगा कि मैंने आपको दुश्मन के पाले में जाने देकर अवंती की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। अगर मुझे आपका असली मकसद पता होता, तो मैं उन्हें अकेले में बताकर उनकी शंका दूर कर देता।"

"मुझे खेद है, भाई," कालिदास ने निराशा से कहा। "मुझे नहीं पता था कि महल में कौन घुसपैठ कर चुका है, और मैं नहीं चाहता था कि किसी को भी, गलती से भी, मेरी योजना के बारे में पता चले। दो लोगों के बीच की बात गुप्त नहीं रहती। लेकिन अगर मुझे पता होता कि वररुचि के साथ मामला बिगड़ जाएगा—"

"कोई बात नहीं," विक्रमादित्य ने विस्मया के वेश में और महल की दासी के रूप में उर्वशी के बारे में सोचते हुए कहा। उन्होंने सोचा कि क्या महल में और भी देव या

असुर जासूस छिपे हुए हैं। “जो हुआ वह शायद अच्छा ही हुआ, और वरारुचि परिषद में वापस आ गए हैं...”

"मुझे अब भी उनसे माफी मांगनी है," कालिदास ने कहा।

कुछ क्षण बाद, उसने विक्रमादित्य की ओर मुड़कर देखा। “क्या तुम्हें सच में लगा था कि मैंने तुमसे मुंह मोड़ लिया है, कि मैं कभी तुम्हारे पास वापस नहीं लौटूंगा?”

सम्राट ने प्रश्न पर विचार किया। “कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता, लेकिन आपने कुछ ऐसा किया जो वर्षों पहले आपके साथ हुई घटना के कारण अवंती के प्रति आपके क्रोध से मेल नहीं खाता था। बेशक, उस दिन सिंहासन कक्ष में आपका प्रदर्शन बहुत प्रभावशाली था—सिवाय एक छोटी सी बात के।”

“यह क्या था?” कालिदास ने पूछा।

"क्या आपको अपने पार्षद का पदक याद है?"

“हां। मैंने रिश्ता तोड़ दिया।”

"और?"

“और क्या? मैंने तो तुम्हें ही दिया था।”

“ठीक है। तुम अपने परिवार के साथ जो हुआ था, उससे क्रोधित थे, तुमने अन्याय के लिए सिंहासन को दोषी ठहराया, तुमने सिंहासन से घृणा की... फिर भी, पदक तोड़ने के बाद, तुमने झुककर उसे हमारे बीच ज़मीन पर धीरे से रख दिया। तुम्हारे क्रोध को देखते हुए, स्वाभाविक प्रतिक्रिया तो यही होती कि तुम अवंती के उस घृणित प्रतीक को ज़मीन पर फेंक देते। लेकिन इसके बजाय, तुम्हारे इस कार्य में प्रेम और सम्मान था, जो तुम्हारी कही हर बात से बिलकुल विपरीत था। जब भी मैं उस क्षण को याद करता हूँ, मुझे लगता है कि उस दिन जो हुआ था, उसमें कुछ और भी था।” सम्राट रुका और मुस्कुराया। “शायद इसीलिए मैं आज सुबह रेगिस्तान में चला गया, जबकि तुम शत्रु थे। तुम कह सकते हो कि तुमने बिना किसी को पता चले खुद को प्रकट कर दिया।”

“मैं उस पदक को कभी ज़मीन पर नहीं फेंक सकता,” उस विशालकाय व्यक्ति ने हंसते हुए जवाब दिया। “यह आश्चर्यजनक है कि आपने इतनी छोटी सी बात पर ध्यान दिया।”

“यह कोई छोटी बात नहीं है,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “यही वह चीज है जो सच्चे वफादारों को अलग करती है।”

"मुझे हर बात का खेद है," कालिदास ने नम आँखों से फिर कहा। "अगर मैंने अपनी योजना आपसे साझा की होती, तो आपको इतनी दूर सीमा तक आने की ज़रूरत नहीं पड़ती, और आप इस समय विशाखा के साथ होते..."

"तुमने वही किया जो तुम्हें सही लगा," राजा ने उत्तर दिया। "कौन जानता है, शायद मैं तुम्हें महान रेगिस्तान की यात्रा का जोखिम उठाने की अनुमति न देता। और अगर देता भी, तो भी मुझे आना ही पड़ता, अगर तुम खाशी दुर और अन्य लोगों को मनाने में असफल रहते। तुमने एक ऐसे आक्रमण को टाल दिया जिससे कई जानें जातीं और सिंधुवर्त के संसाधन समाप्त हो जाते। तुमने अच्छा किया, भाई।"

सम्राट थोड़ी देर रुका और बाद में सोचते हुए बोला, "आपने हमें द्रोइबा दिलाने में मदद की।"

पास आते कदमों की आहट सुनकर वे मुड़ गए।

"क्या मैं आपके साथ शामिल हो सकता हूँ?" खाशी दुर ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं," विक्रमादित्य ने आग के पास खाली जगह की ओर इशारा करते हुए कहा। "क्या तुमने खाना खा लिया है?"

"हाँ," श्योर ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा। उसने चारों ओर देखा और मुस्कुराया। "एक हफ़्ते पहले किसने सोचा होगा कि यह संभव होगा... तुम्हारे और हमारे आदमी शांति से एक साथ भोजन कर रहे हैं।"

राजा ने अपना सिर झुकाया।

खशी दुर ने कालिदास की ओर एक नज़र डाली और फिर सम्राट की ओर मुड़े। "मुझे बताया गया है कि आप हमारे मित्र बनने की सूचना अपने महल को नहीं दे रहे हैं।" राजा को सिर हिलाते देख वह हैरान रह गए। "क्यों नहीं? हूणों की सेना आपके शहर की ओर बढ़ रही है। महल को गलतफहमी नहीं होनी चाहिए और उन्हें अपनी सेना को हम पर हमला करने का आदेश नहीं देना चाहिए—"

"वे ऐसा नहीं करेंगे," विक्रमादित्य ने उन्हें आश्वस्त किया। "जब हम उज्जैन के काफी करीब पहुँच जाएँगे, तब मैं उन्हें हमारी संधि की खबर भेज दूँगा। इस बीच, कमांडर अतुल्यतेजा ने दूरदराज की चौकियों को सूचित कर दिया है, इसलिए उन्हें इस सेना की खबरों से कोई खतरा महसूस नहीं होगा।"

"माफ़ कीजिएगा, लेकिन महल को अभी क्यों नहीं बता देते?"

“क्योंकि, जैसा कि कालिदास ने सही आशंका जताई थी, मेरे महल में देव या असुर जासूस हो सकते हैं। इसी सप्ताह दो का पर्दाफाश हुआ है। मैं नहीं चाहता कि हमारी योजना के बारे में किसी को तब तक पता चले जब तक बहुत देर न हो जाए और हमें रोकना मुश्किल हो जाए। जितनी देर हम अपने महल को सूचित करने में लगाएंगे, हमारे शत्रुओं को प्रतिक्रिया करने का उतना ही कम समय मिलेगा।”

“बात समझ में आती है,” सरदार ने सहमति जताई।

“तुम्हारी यह योजना...” कालिदास ने अग्नि के ऊपर से विक्रमादित्य की ओर देखते हुए कहा, “...बहुत जोखिम भरी लगती है।”

मुझे इससे बेहतर कोई और नहीं सूझ रहा। क्या आपको सूझ रहा है?

कालिदास ने नज़रें फेर लीं, फिर अपने पुराने मित्र की ओर देखा। "क्या यह काम करेगा?"

"हमें सिर्फ एक ही मौका मिलेगा, इसलिए हमें इसका पूरा फायदा उठाना होगा।"

खशी दुर और कालिदास ने एक दूसरे को अशुभ निगाहों से देखा।

“अवसर की वह खिड़की भी बहुत तेज़ी से बंद हो रही है।” उंगलियां चटकाते हुए सम्राट आग को घूरने लगे। “समय कम होता जा रहा है, और मुझे जितनी जल्दी हो सके उज्जैन पहुंचना है।” उन्होंने परेशान आँखों से अपने साथियों की ओर देखा।

"ज़रा सी भी देरी अवंती का भविष्य हमेशा के लिए तय कर सकती है।"

***

जालीदार खिड़की में बिजली की एक आयताकार लकीर चमकी, जिससे बाहर आंधी-तूफान में हिलते पेड़ पर तेज़ रोशनी पड़ी। बिजली की चमक से बरसती बारिश भी जगमगा उठी, जिससे एक पल के लिए पानी की बूँदें हीरे की तरह चमक उठीं। फिर अंधेरा छा गया, और खिड़की और बिजली की धुंधली छवि के अलावा कुछ रोशनी नहीं बची जिससे शंकु ग्रीष्मा की हल्की सी आकृति देख पाया।

“क्या आपको यकीन है कि आप यह कर सकते हैं?” डाकू के शब्द बिजली की कड़क में लगभग डूब गए।

शंकु ने गिनती ही खो दी थी कि ग्रीष्मा ने कितनी बार यही सवाल पूछा था। उसने सिर हिलाया, फिर उसे एहसास हुआ कि अंधेरे में डाकू उसे ठीक से देख नहीं पा रहा था। "हाँ।"

"इस बारिश में भी?"

यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न था।

हाँ, उसे पूरा भरोसा था कि वह अंधेरे में भी अपना रास्ता खोज लेगी। पिछले दो रातों से वह इस पर काम कर रही थी, अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करके कैद से निकलकर बाहर पेड़ पर चढ़ जाती थी, और वहाँ से परिसर में घुसकर, फिर एक इमारत की छाया से दूसरी इमारत की छाया में, छप्पर की छत से फैले पेड़ की छाया में, कहीं गायब होकर कहीं प्रकट होती, जनस्थान के चारों ओर धीरे-धीरे अपना रास्ता बनाती जाती, और साथ ही किसी भी दानव से छिपी रहती जो पहरा दे रहा हो। उसने अपनी पहली रात शहर से परिचित होने में बिताई थी, जबकि दूसरी रात का मुख्य उद्देश्य शालिवाहन के महल तक पहुँचने का तरीका सीखना था—जो अपने आकार और भव्यता से आसानी से पहचाना जा सकता था। हालाँकि, दोनों ही मौकों पर इतनी बारिश नहीं हुई थी जितनी अब हो रही थी, इसलिए उसके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि क्या वह बारिश में अपना रास्ता खोज पाएगी। यह एक मूर्खतापूर्ण सवाल था, इसलिए शंकु ने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया।

इसके बजाय उसने कहा, "मुझे जाना चाहिए।"

उसे लगा कि डाकू ने सिर हिलाया। "तुम्हारे पास चाकू है ना?" उसने पूछा।

शंकु ने उस कटार को कसकर पकड़ रखा था जिसे उसने पिछली रात सोते हुए पहरेदार से चुराया था, उसका घुमावदार हैंडल उसकी हथेली पर चिकना और ठंडा लग रहा था। "हाँ," उसने खिड़की के नीचे कदम रखते हुए कहा, जिससे बारिश की बूँदें उसके ऊपर उठे चेहरे पर पड़ रही थीं। "ठीक है, मैं तुमसे मिलूंगी।"

ग्रीष्मा को कहते हुए उसने सुना, "सावधान रहना। उसे मत लेना—"

जैसे ही पार्षद की दृष्टि ऊपर की ओर उठी और तेज़ी से खिड़की की सलाखों के पार धुंधली सी हो गई, डाकू के शब्द अचानक गायब हो गए... और शंकु ने खुद को उस शाखा पर संतुलित पाया जिस पर वह उतरने की कोशिश कर रही थी। उसने अपने छोटे से शरीर पर पड़ रही तेज़ हवा और बारिश का ध्यान नहीं रखा था, इसलिए उसे सहारे के लिए पेड़ के चौड़े तने को पकड़ना पड़ा। जैसे ही उसने संतुलन बनाया, उसे लगा कि चाकू उसके गीले हाथों से फिसल गया है—और इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, चाकू का ब्लेड गिरा, पेड़ की निचली शाखाओं में से एक से टकराया और उछलकर अंधेरे में गायब हो गया।

गुस्से में बड़बड़ाते हुए, लड़की उस जगह को घूर रही थी जहाँ उसे लगा था कि उसने आखिरी बार खंजर का टुकड़ा देखा था। वह नीचे झुककर खोज सकती थी... लेकिन बिजली और पेड़ों की छाया के मेल से अंधेरा और भी घना हो गया था, और उसे एहसास हुआ कि चाकू ढूंढने का कोई फायदा नहीं था। उसने अभी-अभी अपना मिशन शुरू ही किया था कि हालात बिगड़ने लगे थे। फिर से बड़बड़ाते हुए और आँखों से पानी पोंछते हुए, पार्षद ने आसपास का जायजा लिया। उसके दाहिनी ओर एक संकरी इमारत थी जिसे उसने किसी तरह का गोदाम समझा, और एक और झटके में, वह डाल से गायब हो गई और इमारत के छज्जे के नीचे प्रकट हो गई।

अपनी पहली ही रात शंकु के पास दानवों द्वारा ग्रीष्मा और उसके साथ बंदी बनाए गए पाँच सैनिकों को ढूंढने का विकल्प था, लेकिन उसने इस विचार को समय की बर्बादी समझकर छोड़ दिया। उसके पास जनस्थान में बिना किसी की नज़र में आए घूमने के लिए केवल कुछ ही रातें थीं, और शालिवाहन जाने का रास्ता खोजना उसकी प्राथमिकता थी। उन आदमियों को ढूंढना—उसे उम्मीद थी कि वे अभी भी जीवित होंगे—तब तक कोई काम का नहीं था जब तक वह उन्हें मुक्त नहीं करा लेती, जो वह नहीं कर सकती थी। वह जो कर सकती थी वह था शालिवाहन को ढूंढना...

बारिश से बचने के लिए—वह पहले ही पूरी तरह भीग चुकी थी, उसके बाल गुच्छों में लटक रहे थे और उसके चेहरे और गर्दन से चिपक रहे थे—पार्षद सड़क के उस पार की इमारतों को बेहतर ढंग से देखने के लिए अपने पंजों पर खड़ी हो गई। सड़क बारिश के पानी से भरी हुई थी, लेकिन तूफान के कारण दानव घर के अंदर ही थे, जो अच्छी बात थी। पलक झपकते ही वह सड़क के दूसरे छोर पर पहुँच गई, और कुछ ही देर बाद, सड़क पर आगे एक दूर स्थित दरवाजे के नीचे दिखाई दी।

बारिश के कारण दृश्यता कम हो गई थी, लेकिन शंकु अपनी दिशा बोध पर निर्भर थी और उसे हर कदम देखने की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए उसने महल तक का रास्ता अपेक्षाकृत आसानी से तय कर लिया। वह जानती थी कि महल में प्रवेश करना और शालिवाहन को ढूंढना इतना आसान नहीं होगा; महल की सुरक्षा कड़ी थी, और उसे यह भी नहीं पता था कि अंदर पहुँचने के बाद वह दानव स्वामी को कहाँ ढूँढेगी।

महल एक भव्य इमारत थी, जिसका केंद्रीय बुर्ज बिजली की चमक से जगमगाते आकाश में किसी अशुभ संकेत की तरह ऊंचा खड़ा था। बिल्ली की फुर्ती से चलते हुए, पार्षद घने पेड़ों के बीच से रेंगती हुई निकली और अपनी जगह का पता लगाकर दूर स्थित एक छत पर जा उतरी। बारिश और छत की ढलान के बावजूद, वह बिल्कुल संतुलित होकर उतरी, लेकिन जैसे ही वह खुद को बधाई दे रही थी, उसके पीछे आकाश बिजली से जगमगा उठा।

और उसकी तीक्ष्ण चमक में, नीचे ज़मीन पर, उसने एक दानव रक्षक को बिजली की चमक से आकर्षित होकर उसकी ओर देखते हुए देखा। आकाश में उसकी परछाई देखकर दानव के चेहरे के भाव बदल गए—और अगले ही पल, शंकु ने उसे एक परिचित गहरे काले रंग के पिंड में विलीन होते देखा।

बिजली थम गई और अंधेरा एक बार फिर छत और नीचे जमीन पर छा गया।

लड़की को अपनी बांह के ऊपरी हिस्से पर कुछ गीला और चिपचिपा सा रेंगता हुआ महसूस हुआ, जिसने उसे पकड़ लिया।

अपने गले में उठ रही चीख को दबाते हुए, पार्षद ने मानसिक बल से खुद को छत से नीचे खींच लिया, जो उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा था उससे दूर भागते हुए, बारिश में तेजी से दौड़ते हुए, अंधेरे में गायब हो गई और महल की दूसरी मंजिल पर एक खुले आंगन के सामने बने भीतरी बरामदे पर फिर से प्रकट हुई। जैसे ही उसकी दृष्टि स्थिर हुई, लड़की ने छत पर बारिश की तेज आवाज सुनी और बिजली की चमक में उसने आंगन में पानी गिरते हुए देखा।

उसने यह भी देखा कि तेल के रंग जैसी काली आकृतियाँ आँगन में उसकी तलाश में फैल रही थीं, और बारिश के बीच, उसने बहुत सारी खामोश फुसफुसाहटें सुनीं, जो हवा में उड़ते सूखे पत्तों की तरह लग रही थीं।

शंकु दीवार से चिपक गई, उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। उसने अपनी बांह को छुआ जहाँ उस चिपचिपे अंग ने उसे पकड़ रखा था। वह कांप उठी। उसे देख लिया गया था; खतरे की घंटी बज चुकी थी।

बिजली की रोशनी से बचने के लिए छाया में छिपकर, पार्षद बरामदे से धीरे-धीरे आगे बढ़ी और एक गलियारे में घुस गई, यह पता लगाने की कोशिश कर रही थी कि वह कहाँ है। फुसफुसाहट कभी धीमी तो कभी तेज़ होती, कभी पास ही कहीं

सुनाई देती, फिर धीमी पड़ जाती। शंकु को अचानक लगा कि तेल जैसे काले रंग की आकृतियाँ भी छाया में छिप सकती हैं, उसका इंतज़ार कर रही हों—

किसी चीज ने उसके कंधे को जकड़ लिया। लड़की चीख पड़ी। एक ठंडे हाथ ने उसकी कलाई को जकड़ लिया।

खुद को छुड़ाकर शंकु ने मन ही मन छलांग लगाई। उसे पता नहीं था कि वह कहाँ जा रही है, लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि दानव उसका पीछा कर रहे थे। इसलिए, सारी चिंताएं दरकिनार करते हुए, वह शालिवाहन की तलाश में बेतरतीब ढंग से इधर-उधर भटकने लगी। उसके चारों ओर एक अंधेरा और खाली गलियारा उभरा, जिसमें से वह तेजी से गुजरी; फिर एक और खाली कमरा, और फिर तेल जैसे काले रंग की आकृतियों से भरा एक कमरा, जिन्होंने उसे भांप लिया और उसका पीछा करने लगे। उसने मन ही मन छलांग लगाकर खुले आसमान में छलांग लगाई, और बिजली की एक चमक ने दिखाया कि वह एक छत के ऊपर थी, चक्कर खाकर नीचे गिर रही थी, और तेल जैसे काले रंग की आकृतियाँ उसका पीछा कर रही थीं...

...और वह एक खिड़की से बाहर निकलकर एक दूसरे अंधेरे कमरे में जा गिरी।

बिजली की एक और तेज चमक, जिसके बाद गरज की एक जोरदार आवाज आई जिसने पार्षद के पैरों के नीचे की जमीन को हिला दिया।

उस तेज रोशनी में, एक लंबा व्यक्ति दूसरी खिड़की के पास खड़ा दिखाई दिया।

और उस तेज रोशनी में, वह लंबा व्यक्ति मुड़ा... उसके हाथ में तलवार थी।

अंत में, उसी चमकती रोशनी में, शंकु के बगल में एक मेज पर म्यान में रखा हुआ एक खंजर दिखाई दिया।

उसके पीछे-पीछे तेल से काली आकृतियाँ फूट पड़ीं।

एक पल भी बर्बाद किए बिना, पार्षद ने खंजर छीन लिया और उसे म्यान से बाहर खींच लिया।

तेल से सने काले रंग के आकार उसके ठीक पीछे थे, उसकी ओर बढ़ रहे थे।

सामने खड़ी आकृति अब तेजी से मुड़ रही थी, तलवार चाप बनाते हुए उसकी ओर बढ़ रही थी।

शंकु ने मन ही मन छलांग लगाई, घुमावदार छुरी को पार करते हुए आकृति के करीब सरक गया। खंजर आकृति की ठोड़ी के नीचे से गुजरा, और उसकी नोक

आकृति के गले में धंस गई...

जोर से दबाना।

और जोर से दबाना।

"तलवार नीचे रखो," शंकु फुफकारा। और फिर ज़ोर से, उसके कंधे के ऊपर से, "तुम सब... पीछे हट जाओ।"

तलवार ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ी। वे आकृतियाँ पीछे हट गईं।

"मुझे अपने स्वामी के पास ले चलो," उसने अपने बंधक पर चिल्लाते हुए कहा।

"तुम बहुत अच्छे हो," उस आकृति ने ऐसी आवाज़ में जवाब दिया जो पेड़ों में हवा चलने पर पुरानी शाखाओं के चरमराने जैसी लग रही थी। "तुमने मुझे हरा दिया।"

"मुझे अभी अपने स्वामी के पास ले चलो," पार्षद ने जोर देकर कहा। "मैं मारने में जरा भी संकोच नहीं करूंगा।"

"तुम मुझे नहीं मारोगे। तुम यहाँ इसलिए नहीं आए हो।"

पार्षद हिचकिचाया, यह सोचकर कि इसका क्या मतलब है।

"हम जानते हैं कि आप हमें नुकसान पहुंचाने नहीं आए हैं। आप अपने राजा के लिए मदद मांगने आए हैं, जो शक्तिशाली देवताओं और असुरों से हलाहल की रक्षा कर रहे हैं।"

शंकु अचरज से उस आकृति को घूर रहा था, उसके चेहरे के भाव समझने की कोशिश कर रहा था। "तुम्हें यह सब पता है?"

"हां। जिस दिन से तुमने दंडका में कदम रखा, हम तुम पर नजर रख रहे थे। अगर हमें लगता कि तुम हमारे लिए खतरा हो, तो तुममें से कोई भी इतनी दूर तक नहीं पहुंच पाता।"

"तो मुझसे पहले क्यों नहीं मिले? यह शत्रुता क्यों? हमें कैदियों की तरह क्यों रखा गया? मेरा एक आदमी मारा गया था—"

"तुम्हारे साथ आए सभी पुरुष जीवित हैं।" बिजली चमकी और लड़की को काले-हरे रंग की काई से ढकी दाढ़ी वाले एक चेहरे की झलक मिली। उस आकृति के सिर पर कांटों का ताज रखा था। "और इस बुरे बर्ताव के लिए मैं क्षमा चाहती हूँ, लेकिन यह एक परीक्षा थी—यह देखने के लिए कि क्या तुम हमारी मदद के लायक हो।"

पार्षद ने इस बारे में सोचने के लिए कुछ देर रुककर पूछा, "आप कौन हैं?"

"जिसके लिए तुम इतनी दूर आए हो। मैं शालिवाहन हूं, दानवों का स्वामी।"

शंकु ने कटार पर दबाव कम किया और दानव से पीछे हट गई। तभी बिजली की एक और तेज़ चमक पास ही गिरी, जिसके बाद कान फाड़ देने वाली गड़गड़ाहट हुई। उसने कटार को पलट दिया, जिससे वह उसकी हथेलियों पर खुली और हानिरहित अवस्था में पड़ी रही।

"प्रणाम," उसने कहा, जब गरज की आवाज गूंजी और शांत हुई। "मैं शंकुबाला हूँ, सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में सलाहकार। इस तरह दखल देने के लिए क्षमा चाहती हूँ, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि मुझे कोई रास्ता निकालना ही था—"

"मैं जानता हूँ," दानव ने कटार स्वीकार करते हुए कहा। "चीज़ें इस उद्देश्य से बनाई गई हैं कि तुम पहल करो। या तो तुम मुझ तक पहुँचने का कोई रास्ता निकालो, या फिर जीवन भर जनस्थान में कैदी बनकर रहो। जो स्वयं अपनी सहायता करने का प्रयास नहीं करते, उनकी सहायता करने का मुझे कोई लाभ नहीं दिखता।"

"तो क्या हम आपकी सहायता के योग्य हैं, प्रभु?"

बिजली अभी भी चमक रही थी, लेकिन गरज कम हो रही थी। तूफान भी कमजोर पड़ गया था और लगातार बारिश में बदल गया था।

शालिवाहन ने उस कन्या को निहारा, उसकी काई लगी दाढ़ी पर मुस्कान की लकीरें पड़ गईं। "शंकुबल, तुमने स्वयं को अत्यंत योग्य सिद्ध किया है और दानवों का सम्मान अर्जित किया है। हम तुम्हारे राजा की सहायता करेंगे।"

***

बारिश हल्की फुहारों के रूप में गिर रही थी, जिससे नदी के किनारे उगने वाले सरकंडों के बीच पानी पर कोमल गोलाकार आकृतियाँ बन रही थीं, जो यमुना की तेज़ धाराओं से दूर थीं। नाव धीरे-धीरे अंधेरे से बाहर निकली, सरकंडों को हटाती हुई और बारिश की लहरों के पैटर्न को तोड़ती हुई किनारे से टकराई। नाव चालक ने नाव को लंबाई में घुमाया, फिर धीमी आवाज़ में पीछे मुड़कर पुकारा।

हम पहुँच गए हैं।

धीरे-धीरे हिलती हुई नाव पर बड़ी सावधानी से संतुलन बनाते हुए, तीन लोग उतरे। बारिश से बचने और अपनी पहचान छिपाने के लिए तीनों ने अपने चेहरों पर शॉल

ओढ़ रखे थे। जैसे ही वे ज़मीन पर पहुँचे, उनमें से एक ने एक छोटा सा दीपक निकाला और उसे जलाया। जैसे ही नाव आगे बढ़ी, तीनों ने बारिश और अंधेरे में एक कतार में चलते हुए नदी को पीछे छोड़ते हुए अपनी यात्रा शुरू की।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, ज़मीन तेज़ी से ऊपर उठती गई, इसलिए जब वे अंततः चढ़ाई की चोटी पर पहुँचे और अशोक वृक्षों के एक छोटे से झुरमुट में खुद को पाया, तो वे सभी थोड़ा हाँफ रहे थे। अभी वे पूरी तरह से संभल भी नहीं पाए थे कि अचानक अंधेरे से एक आवाज़ आई।

"जहाँ हो वहीं रहो। तुम चारों तरफ से घिरे हुए हो। भागो मत।"

पेड़ों के पीछे से कुछ धुंधली आकृतियाँ निकलीं, जबकि नदी से आने वाले रास्ते के दोनों किनारों से कुछ आदमी उठ खड़े हुए। मशालें जल रही थीं, तलवारें और भाले उनकी रोशनी में चमक रहे थे। तीनों यात्रियों ने अपने चारों ओर फैले दस से बारह आदमियों को गिना।

"अपनी शॉल उतारो," उनमें से एक आदमी ने अपनी तलवार लहराते हुए आदेश दिया। "अभी के अभी।"

तीनों पुरुषों ने अपने शॉल उतार फेंके और अपने सिर नंगे कर लिए।

अपने हाथ ऊपर उठाओ।

तीनों ने बात मान ली।

आदेश देने वाला व्यक्ति मशाल लेकर उनके पास पहुँचा। उसने मगध सेना के सेनापति की पगड़ी पहन रखी थी। यात्रियों पर पैनी नज़र रखते हुए उसने संतुष्टिपूर्वक सिर हिलाया।

"वे निहत्थे हैं, माननीय न्यायाधीश," उसने पुकार कर कहा।

अंधेरे से एक और आकृति निकली। शूरासेना।

कमर पर हाथ रखे यात्रियों की ओर बढ़ते हुए राजा ने तीनों अधेड़ उम्र के पुरुषों को घूरकर देखा।

"तुममें से गजकेतु कौन है?" उसने तीखे स्वर में पूछा।

यात्रियों ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा। "आप गलत हैं, महोदय," एक ने कहा। "हम किसी गजकेतु के बारे में नहीं जानते—"

"क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो?" शूरासेना ने ताना मारा। "तुम रात के अंधेरे में नाव से पंडारा आते हो, शॉल ओढ़कर रहस्यमयी व्यवहार करते हो, जाहिर है कहीं

जाने की जल्दी में हो... लेकिन गजकेतु को नहीं जानते?"

तीनों आदमियों ने फिर एक-दूसरे की ओर देखा। "हम व्यापारी हैं जिनका मौका चूक गया—"

"रुको," शूरासेना गुर्राया और अपनी तलवार खींच ली। "तुममें से गजकेतु कौन है, यह बताने का तुम्हारे पास एक ही मौका है। वरना तुम तीनों अभी इसी वक्त मर जाओगे।"

यात्रियों ने सैनिकों के घेरे को देखा, और फिर तीसरी बार एक-दूसरे को देखा। फिर, उनमें से एक ने आगे कदम बढ़ाया, उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था।

"माननीय न्यायाधीश महोदय, कृपया मुझे जाने दीजिए," उसने विनती की। "मुझे इसमें विवश किया गया है। मेरा आपके लिए किसी प्रकार की परेशानी पैदा करने का कोई इरादा नहीं था।"

"तुम गजकेतु हो?" शूरसेना ने अपनी तलवार उठाते हुए पूछा।

"मैं तो बस कोसला का एक सिपाही हूँ," उस आदमी ने अचानक कहा। उसने अपने एक सहयात्री की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह गजकेतु है।"

शूरासेना उस व्यक्ति की ओर मुड़ी जिसकी ओर इशारा किया गया था। "तुम?"

वह आदमी जल्दी से एक कदम पीछे हट गया। मुड़कर उसने सैनिकों के घेरे को तोड़ने की कोशिश की।

यह व्यर्थ था। उसे तुरंत पकड़ लिया गया और बंधक बना लिया गया।

"मदद करो," वह छटपटाते हुए और चारों ओर के अंधेरे में घूरते हुए चिल्लाया। "हमारी मदद करो।"

शूरासेना उस आदमी के पास जाते हुए बोली, "चिल्लाना बंद करो। कोई तुम्हारी मदद नहीं करेगा।"

"कृपया... मुझे क्षमा करें, मैं चला जाऊंगा..." वह आदमी बड़बड़ाया। "मुझे जाने दीजिए, कृपया... मदद कीजिए..."

"चुप रहो..." राजा ने अपनी उंगली होठों पर रखी और उस आदमी के चुप होने का इंतज़ार किया। "पछतावा," उन्होंने खामोशी में बोलते हुए कहा, "कभी भरोसेमंद दोस्त नहीं होता। यह हमेशा देर से आता है, और शायद ही कभी किसी को मुसीबत से बचाता है। पछतावा करने और माफ़ी मांगने में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत करो। इसका कोई फायदा नहीं होगा।" शूरासेना मशाल की रोशनी में रुक गए, उनका

चेहरा सख्त हो गया। “तुम्हें यहाँ आने के लिए राज़ी नहीं होना चाहिए था। तुम्हें उस सुबह के बारे में किसी से कुछ भी नहीं कहना चाहिए था। अगर तुम चुप रहते तो इनमें से कुछ भी नहीं होता; हम सब शांति से अपना जीवन जी सकते थे। लेकिन नहीं... तुम्हें हीरो बनना ही था।”

“मदद करो,” वह आदमी दहशत से चीख उठा। “कृपया मुझे चोट मत पहुँचाओ... कृपया...”

“चुप रहो,” शूरासेना ने चेतावनी दी। “मेरे पास और क्या विकल्प है...?”

“नहीं... कृपया, नहीं...” वह आदमी छटपटा रहा था।

"अगर आप जीवित रहते हैं, तो आप अपनी कहानी फैलाएंगे, और सुनने वाले लोग हमेशा मौजूद रहेंगे।"

"मदद करना..."

“चुप रहो,” राजा गुर्राया। “कोई मदद नहीं आ रही है। यहीं तुम्हारी मृत्यु होगी, समझे? किसी ने तुम्हें आते नहीं देखा। कोई नहीं जानता कि तुम कहाँ हो, इसलिए किसी को पता नहीं चलेगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ... तुम्हारी कहानी तुम्हारे साथ ही खत्म हो जाएगी—”

“Shoorasena.”

राजा मुड़ा। "कौन है—"

चारों दिशाओं से कदमों की आहट सुनाई दी, साथ ही हथियार नीचे रखने के आदेश भी दिए गए। राजा के साथ आए सैनिक मुड़े, उनके भाले और तलवारें अब अंधेरे की ओर बाहर की ओर तनी हुई थीं।

“कैप्टन, आप चारों तरफ से घिरे हुए हैं,” एक आवाज सुनाई दी। “अपने हथियार नीचे रख दीजिए।”

“इसका क्या मतलब है?” शूरासेना ने क्रोधित होकर पूछा।

जैसे-जैसे और मशालें जलाई गईं, यह स्पष्ट हो गया कि जंगल सैनिकों से भरा हुआ था। लगभग आधा दर्जन लोग धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़े।

“यह सब क्या है?” शूरासेना गरजते हुए बोला, मानो उसकी आँखों में चुनौती झलक रही हो, और उसने नए आने वालों के चेहरों को ध्यान से देखा। “मैं यह सब बर्दाश्त नहीं करूँगा—”

"कृपया अपनी तलवार नीचे रख दें," कमांडर शिर्सा ने भारी स्वर में कहा।

राजा ने घने भूरे बालों वाले उस विशालकाय व्यक्ति को घूरकर देखा। "क्या तुम खो गए हो—"

"बस करो, शूरसेना," पार्षद अश्रवा ने कहा। "हमने तुम्हें महल की सीढ़ियों पर राजा सिद्धसेना की हत्या स्वीकार करते हुए सुना है—"

मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा... कैप्टन, पार्षद को गिरफ्तार कर लीजिए..."

कप्तान ने अपनी तलवार नीचे रख दी, और उसके सैनिकों ने भी ऐसा ही किया।

"मूर्खों!" शूरासेना चिल्लाया। "मैं..." वह अश्रवा की ओर मुड़ा। "संगीतकार झूठ बोल रहा है।"

"जी हां, वह है," पार्षद ने सहमति जताई।

राजा असमंजस में पड़कर पलकें झपकाने लगा। "तो फिर क्यों—"

"वह झूठ बोल रहा है क्योंकि वह गजकेतु नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे ये दोनों कोसला के सैनिक नहीं हैं," अश्रवा ने कहा। "ये अभिनेता हैं जिनका काम आपको हत्या का जुर्म कबूल करवाना था। यह सब आपको बेनकाब करने के लिए अस्माबिंदु की योजना का हिस्सा था। गजकेतु के यहाँ आने की यह पूरी कहानी आपको खुद को दोषी ठहराने के लिए एक जाल थी।"

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?" शूरासेना गुस्से से भड़क उठी।

"सेनापति शिरसा ने आपको कोसल द्वारा गजकेतु को मगध में तस्करी करके लाने के प्रयास के बारे में बताया था," अश्रवा ने कहा। "कोई भी राजा यही करता कि गजकेतु को गिरफ्तार करवाकर राजद्रोह का मुकदमा चलाता। लेकिन आपने उसे गिरफ्तार नहीं करवाया, क्योंकि आप नहीं चाहते थे कि मगध के लोग उसकी बातें सुनें। क्या आपने अभी-अभी यह नहीं कहा था, 'तुम्हारी कहानी तुम्हारे साथ ही खत्म हो जाएगी'? आपने तो उसे मरवाने की कोशिश की, ताकि सच्चाई उसके साथ ही समाप्त हो जाए।"

"तुम सबने मेरे खिलाफ साजिश रची," शूरासेना ने अपने सामने खड़े लोगों पर कटु और विषैली निगाह डाली। "मैं इस परिषद को भंग करवा दूंगा और तुम सबको—"

"तुमने हमारे प्रिय राजा सिद्धसेन के विरुद्ध षड्यंत्र रचा," अश्रवा ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "मगध की परिषद तुमसे राजा के रूप में तुम्हारी शक्तियाँ छीन लेती है और तुम्हें—"

शूरासेना ने गर्जना करते हुए अश्रवा पर आक्रमण किया, लेकिन शिरसा और उसके सैनिक तैयार थे। उन्होंने शूरासेना के हमले को नाकाम करते हुए उसे घेर लिया। सेनापति ने फिर दोहराया, "अपनी तलवार नीचे रख दो।"

तलवार धीमी सी आवाज के साथ जमीन पर गिर गई।

"यह परिषद आपको आपके अधिकारों से वंचित करती है और राजा सिद्धसेना की हत्या और पार्षद अश्रवा की हत्या के प्रयास के आरोप में आपको गिरफ्तार करती है।"

शिरसा के आदमियों द्वारा राजा को बांहों से पकड़कर ले जाने पर उसने निराशा से अपना सिर झुका लिया।

"अस्माबिंदु, वह चूहा," शूरसेना ने आश्रवा पर थूकते हुए कहा। "क्या तुम जानते हो कि उसी ने उत्तम, दिगंत, भास्कर और पल्लवन को धोखा दिया था? उन्हीं के साथ विश्वासघात करके वह वंगा का राज्यपाल बन गया था?"

मुझे पता है। वह पहले ही गिरफ्तार हो चुका है।

शूरासेना आश्चर्य से देखती रही।

"जब मुझे पता चला कि पल्लवन और बाकी लोगों के साथ विश्वासघात हुआ है, तो मैंने उत्तमा के महल में गिरफ्तारियाँ करने वाले सेनापति का पता लगाया। मैंने उससे पूछा कि गिरफ्तारियों के समय वहाँ कौन-कौन मौजूद था।" अश्रवा ने मशाल की रोशनी में शूरसेना की ओर देखा। "उसने पाँच नाम बताए, लेकिन उनमें से केवल चार की ही मृत्यु हुई थी—जबकि पाँचवाँ व्यक्ति गिरिव्रजा में आज़ाद घूम रहा था। और उस व्यक्ति ने पहले मुझसे झूठ बोला था कि गिरफ्तारियों की रात वह अपनी बीमार पत्नी के पास था।" सलाहकार जाने के लिए मुड़ा, फिर पीछे मुड़कर देखा। "तुम दोनों महल की कालकोठरियों में पड़ोसी बन सकते हो।"

***

अमरा सिम्हा की आंखें खुल गईं। पलक झपकते ही नींद से जागते हुए, उन्होंने अंधेरे में खुद को अभ्यस्त करने के लिए पलकें झपकाईं।

वह उस आवाज़ पर हैरान था जिसने उसे जगाया था। कुछ ऐसा जो—

वहाँ। धातु की हल्की सी खनक सुनाई दी।

शोर न मचाते हुए, उसने अपने भारी-भरकम शरीर को घुमाया ताकि वह पीछे देख सके। आवाज़ नदी के किनारे लगे पेड़ों की तरफ से आ रही थी, जहाँ समूह ने रात बिताने के लिए डेरा डाला था।

पेड़ों के नीचे बंधे घोड़ों के अलावा, पार्षद को पहले तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर, ध्यान से देखते हुए, उसने घोड़ों के बीच एक आकृति को चुपके से चलते हुए देखा।

अमारा सिम्हा अब पेट के बल लेटा हुआ था, उसका दाहिना हाथ उसकी छोटी तलवार की मूठ पर था जिसे वह हमेशा पास रखता था, और बायां हाथ ज़मीन पर टिका हुआ था ताकि वह उछलकर खड़ा हो सके। उसने सोचा कि कहीं ये घोड़े चोर तो नहीं हैं, हालांकि ऐसा होना मुश्किल लग रहा था—घोड़े चोर तो सैन्य टुकड़ियों से दूर ही रहते हैं, और उनकी टुकड़ी तो काफी बड़ी थी। इसीलिए उन्होंने पहले से पहरा नहीं लगाया था, क्योंकि उन्हें लगा कि अवंती के इलाके में इतनी गहराई में पहरा लगाना ज़रूरी नहीं है।

वह अभी तय ही कर पा रहा था कि शोर मचाए या खुद जाकर देखे, तभी पेड़ों के बीच से एक आकृति निकली, जो घोड़े को लगाम से पकड़े हुए थी। पार्षद उस आकृति से बात करने के इरादे से झुकने ही वाला था कि तभी उस आदमी की चाल उसे जानी-पहचानी लगी। वह रुका और वापस ज़मीन पर बैठ गया, और अपनी आँखों से उस आदमी का पीछा करने लगा।

वह आदमी घोड़े को नदी के किनारे की ढलान पर ले गया, खुरों की आवाज़ को कम करने के लिए घास पर चलता रहा। अमारा सिम्हा ने उस आदमी के टीले की चोटी पर पहुँचने का इंतज़ार किया, फिर उठकर उसका पीछा करने के लिए दौड़ पड़ा, छाया में छिपा रहा ताकि अगर वह आदमी पीछे मुड़कर देखे तो उसे देख न सके। नदी के किनारे और सड़क के मिलन बिंदु पर पहुँचकर, पार्षद एक घने पेड़ के पीछे छिप गया और सावधानी से अपना सिर बाहर निकाला।

वह आकृति लगभग पंद्रह कदम की दूरी पर खड़ी थी और काठी की पट्टियों को कस रही थी।

अमरा सिम्हा इंतजार कर रहा था, इस बात पर विचार कर रहा था कि उसे खुद को प्रकट करना चाहिए या नहीं।

अंततः वह व्यक्ति घोड़े पर सवार हुआ और लगाम झटक दी। अमारा सिम्हा उस जानवर को धीरे-धीरे दूर जाते हुए देखता रहा, वह जानता था कि वह कहाँ जा रहा है।

घुड़सवार के नज़रों से ओझल हो जाने के बाद ही पार्षद थके-हारे धीरे-धीरे शिविर की ओर लौटा। सोए हुए सैनिकों के बीच से होते हुए वह उस स्थान की ओर बढ़ा जहाँ घाटकरपारा ने शाम के भोजन के बाद अपना बिस्तर लगाया था। तारों की रोशनी इतनी थी कि राजकुमार को मोटे सूती रजाई के नीचे पुआल की चटाई पर सोते हुए देखा जा सकता था।

बिस्तर के बगल में बैठकर, अमारा सिम्हा ने रजाई को पीछे से हटाया, यह जानते हुए कि राजकुमार उसमें लिपटा हुआ नहीं मिलेगा। वह सही था। रजाई को चतुराई से लपेटकर इस तरह रखा गया था कि ऐसा लगे मानो कोई उसके नीचे हो।

बलवान पार्षद ने आह भरी और सीधा खड़ा हो गया, घाटकरपारा के गुपचुप तरीके से चले जाने से वह दुखी था।

अही

वह सराय की खिड़की के पास बैठा था, एक प्याला हल्की शराब पी रहा था और विनाश के पैमाने को देखकर पूर्ण आश्चर्य से बाहर देख रहा था।

किन्नरों के इस कृत्य का यह परिणाम नहीं हो सकता, उसने मन ही मन सोचा। हाँ, किन्नरों ने शहर के कुछ हिस्सों में आग लगा दी थी, उसे याद आया, लेकिन वे उस स्तर की तबाही नहीं मचा सकते थे जो उसने उस सुबह उज्जैन पहुँचने के बाद से

देखी थी। पूरे मोहल्ले जलकर राख हो गए थे, और शायद ही कोई इमारत बची थी जो आग से अछूती रही हो। यह एक ऐसी आग थी जो अपने आप में एक अंत थी, जबकि किन्नरों का मकसद केवल मनुष्यों को महल से बाहर निकालना था ताकि वे हलाहल की खोज कर सकें; यह योजना तब तक ठीक-ठाक काम कर रही थी जब तक कि असली नरक की आग नहीं भड़क उठी... नहीं।

मताली ने नरक की आग के विचारों को अपने दिमाग से निकालने के लिए अपना सिर हिलाया।

इन्हें अपने साथ ले जाओ, ताकि ये तुम्हें तुम्हारी बेकारता की याद दिलाते रहें, और यह भी कि देवलोक को निराश करने के लिए तुम्हें अभी भी दंड भुगतना पड़ेगा।

इंद्र का आदेश मातली के कानों में श्राप की तरह गूंज रहा था। तलवारों का ख्याल उसके मन से कभी नहीं निकला; यह उसे सताता रहा, उसकी अक्षमता और असफलता की याद दिलाता रहा, एक ऐसी असफलता जिसे वह सुधारना चाहता था, इसीलिए वह देवलोक में किसी को बिना बताए उज्जैन लौट आया था। अपने स्वामी की कृपा पाने के लिए बेताब, देव का उद्देश्य कुछ अप्रत्याशित करना था—जैसे कटार ढूंढना, और अगर यह असंभव हो तो असली नरक की आग को खोजना, या कोई ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना जिसका देव उपयोग कर सकें। वह अपनी उपयोगिता साबित करने और इंद्र की क्षमा प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित था...

"बूढ़े आदमी, कोने में चले जाओ," एक आवाज ने गुस्से से कहा।

ऊपर देखते हुए मताली ने देखा कि पहरेदारों के चार सिपाही उस लंबी मेज के पास खड़े थे जहाँ वह बैठा था, और उसे घूर रहे थे। शहर के पहरेदार, देव ने मन ही मन सोचा—बिल्कुल सही।

"तुम बहुत ज्यादा जगह घेर रहे हो," एक सैनिक ने अधीरता से हाथ हिलाते हुए कहा।

"माफ़ कीजिए," उसने कर्कश आवाज़ में कहा और बेंच पर सरकते हुए ऐसे दिखावा करने लगा जैसे उम्र के कारण उसके सभी जोड़ों में दर्द हो रहा हो।

सभी लोग बैठ गए। नेता ने चौकीदार का ध्यान आकर्षित करने के लिए मेज पर खटखटाया। "चार।"

अपनी शराब की चुस्की लेते हुए मताली ने उन आदमियों को गौर से देखा। उसने महल में आसानी से प्रवेश पाने के लिए महल के रक्षक या पहरेदार का वेश धारण करने के बारे में सोचा था, लेकिन पकड़े जाने का खतरा बहुत अधिक था, जैसा कि वह पहले ही जान चुका था। इसलिए, उसने गुमनाम रहना ही बेहतर समझा। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह बूढ़ा आदमी कौन था; उसने उसे उज्जैन के उत्तर में एक छोटे से जंगल में लकड़ियाँ इकट्ठा करते हुए पाया था। उस आदमी के चेहरे पर पर्ची डालने के बाद, उसने शव को एक गिरे हुए पेड़ के नीचे छिपा दिया, इस उम्मीद में कि किसी को उसकी कमी महसूस न हो और जंगली जानवर उसे किसी और से पहले ढूंढ लें।

और चूंकि उसे महल में प्रवेश नहीं मिल सका, इसलिए वह जानकारी प्राप्त करने के लिए अगली सबसे अच्छी जगह पर आया था, एक ऐसी जगह जहां लोग आसानी से अपनी बात कह देते थे, जहां अगर कोई सच को बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों से अलग करना जानता हो तो बहुत कुछ सीखा जा सकता था...

चौकीदार ने आदमियों को खाना परोसा, जिन्होंने अपने प्यालों में रखा सारा पेय एक ही बार में पी लिया।

“यह इतना पतला क्यों है?” नेता ने नापसंदगी से अपने प्याले की ओर देखा। “सिर्फ पानी है, आग नहीं।”

“माल की कमी है, महोदय,” चौकीदार ने बेबसी से कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। “तीन स्थानीय शराब बनाने की फैक्ट्रियां जलकर राख हो गईं।”

“तो, आप पानी तो बढ़ा देते हैं, लेकिन दरें वही रखते हैं?” नेता ने गुस्से से कहा। “चार और।”

मताली ने तब तक इंतजार किया जब तक पुरुष दूसरे दौर के आधे रास्ते तक नहीं पहुंच गए। "मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि यह हो गया है," उसने अपने बगल में बैठे व्यक्ति से कहा और खिड़की की ओर इशारा किया।

"हम्म-हम्म," सैनिक ने कहा, वह हल्का नशे में था और एक बूढ़े शराबी में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

"मजाक न करें, महोदय, लेकिन यह सब कैसे हुआ?"

सिपाही घूर रहा था। "तुम्हें नहीं पता?" वह अपने साथियों की ओर मुड़ा। "इस आदमी को नहीं पता कि शहर का क्या हाल हुआ है।"

तीन लोगों ने उत्सुकता से मताली को देखा। "इतने समय से तुम कहाँ थे, बूढ़े?" नेता ने पूछा।

“मैं कहीं बाहर गया हुआ था,” देव ने जानबूझकर अस्पष्ट लहजे में कहा। “किसी ने मुझे कुछ घुड़सवारों के बारे में बताया। ऐसे घुड़सवार जो आधे घोड़े थे। उन्होंने कहा कि घुड़सवारों ने सब कुछ जला दिया।”

"घुड़सवारों ने कुछ हिस्सों को जला दिया, लेकिन उड़ने वाले जानवरों ने ही सब कुछ जला दिया।"

उड़ने वाले जीव?

"क्या घुड़सवार उड़ रहे थे?" मताली ने नशे में धुत होकर मूर्खतापूर्ण ढंग से पूछा।

“छी!” नेता ने झुंझलाहट में अपना सिर झटकते हुए कहा। “ये उड़ने वाले जीव तो अलग ही हैं... पक्षियों जैसे, लेकिन पाँच सिर वाले। घुड़सवारों से भी ज़्यादा खतरनाक, जिनमें से अधिकतर मारे गए...”

देवता आश्चर्य से लगभग उठ बैठे। पक्षियों की तरह पाँच सिर होने का मतलब केवल एक ही था—व्याल। इससे झुलसने का कारण स्पष्ट हो गया। इसका यह भी अर्थ था कि असुर यहाँ आए थे। बड़ा सवाल यह था कि क्या उन्होंने कटार पर अपना अधिकार जमा लिया था?

“उड़ने वाले उन जीवों का क्या हुआ?” उसने कर्कश स्वर में पूछा। “क्या हमने उन्हें भगा दिया?”

सैनिकों ने एक-दूसरे को उदास निगाहों से देखा, जिससे मताली के पेट में चिंता की वजह से अजीब सी बेचैनी होने लगी।

"अगर यक्ष समय पर आकर हमें नहीं बचाते तो हम जिंदा नहीं बच पाते।"

यक्ष।

मताली एक पल के लिए अवाक रह गई। "क्या उन जानवरों को यक्षों ने हराया?"

"उन्हें वहीं वापस खदेड़ दिया जहां से वे आए थे," उसके बगल में खड़े सैनिक ने राहत भरी सांस लेते हुए सिर हिलाया।

"यह जानकर अच्छा लगा कि जरूरत पड़ने पर यक्ष मदद के लिए मौजूद हैं," रखवाले ने सैनिकों के लिए शराब का तीसरा गिलास रखते हुए कहा।

“यक्ष अभी भी यहीं हैं?” सैनिकों और सराय मालिक को सिर हिलाते देख और यह याद करके कि वह नाटक कर रहा था, देव ने अपना प्याला उठाया। “भगवान का

शुक्र है।"

"भगवान का शुक्र है," रखवाले ने कहा। उसने मताली के प्याले की ओर इशारा करते हुए पूछा, "क्या आप इसे दोबारा भरवाना चाहेंगे?"

"नहीं," देव ने अपना पेय पीते हुए कहा। "मुझे किसी से मिलना है। मुझे जाना चाहिए।"

असुरों ने व्यालों की सेना के साथ हमला किया था, लेकिन यक्षों ने किसी तरह हस्तक्षेप करके शहर को बचा लिया। यक्ष वहीं रुक गए थे, जिसका कुछ भी मतलब हो सकता है। लेकिन चूंकि असुरों को शायद यह पता था, इसलिए इंद्र को भी सूचित करना आवश्यक था...

"मुझे इस बात की कम चिंता है कि सम्राट उज्जैन में नहीं हैं," सैनिकों में से एक कह रहा था।

देव सतर्क हो गया, और बातचीत पर कान लगाए बैठा रहा।

"बिल्कुल," दूसरे ने सहमति जताते हुए कहा। "सम्राट सीमा पर मौजूद बर्बरों से निपट सकता है, जबकि यक्ष नगर परिषद को शहर की रक्षा करने में मदद करेंगे।"

मानव राजा सीमा पर था, उज्जैन में नहीं।

जैसे ही मताली सराय से बाहर निकला, उसकी खुशी बढ़ती जा रही थी। उसे जल्दी से देवलोक लौटना था। राजा नहीं तो नरक की आग भी नहीं। व्यालों और यक्षों को भूल जाओ; यह खबर उसे इंद्र का सम्मान वापस दिला सकती थी और उसकी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने में मदद कर सकती थी...

कालिख और राख से सनी घुमावदार गलियों से गुज़रते हुए, दुकानों और घरों के खाली ढाँचों के बीच से निकलते हुए, जले हुए और गीले मलबे की गंध नाक में भरते हुए, देव ने संयोगवश आकाश की ओर देखा, जो सुबह से लगभग बादलों से घिरा हुआ था। वास्तव में, उत्तर की ओर बादल घने और भूरे रंग के होकर जमा हो रहे थे, और तेज़ हवा के साथ उज्जैन की ओर बढ़ रहे थे।

मताली को लगा कि जल्द ही बारिश होने वाली है और बेहतर यही होगा कि वह मूसलाधार बारिश में न फंसे। वह आसमान से अपनी नज़र हटाने ही वाला था कि तभी किसी चीज़ ने उसका ध्यान खींचा। उसने अपनी चाल धीमी की, फिर एकदम रुक गया, उसकी निगाहें उस जगह पर टिक गईं जहाँ बादल अजीबोगरीब ढंग से घूम रहे थे, अंदर से तेज़ी से मुड़ते और मरोड़ते हुए। उसी क्षण, आस-पास के

बादलों का रंग तेज़ी से बदलने लगा, एक के बाद एक, उनमें धूसर और काले रंग के सभी शेड्स दिखाई देने लगे।

जैसे ही देव ने देखा, बादलों का एक हिस्सा अचानक फट गया, जिससे उसकी गहराई में रेंगती हुई एक टेढ़ी-मेढ़ी काली आकृति दिखाई दी। हालांकि, वह तुरंत छटपटाने लगी और वापस बादलों में छिप गई, बादल फिर से उस फटे हुए हिस्से पर इस तरह लिपट गए कि वह भयावह दृश्य नज़र से ओझल हो गया।

लेकिन मताली ने इतना कुछ देख लिया था कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

मंत्रों की चोरी के बारे में सुनकर, वह समझ गया कि असुर भोली-भाली उज्जैनी पर क्या कहर बरपाने वाले हैं। और उसे विश्वास नहीं था कि इस बार यक्ष हस्तक्षेप करके मनुष्यों की सहायता कर पाएंगे।

उसे एहसास हुआ कि अब उसे तुरंत वहां से भाग जाना चाहिए।

वह अही के घातक जहर का अनजाने में शिकार बनने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं था।

***

“यह बात समझ में नहीं आती। आखिर यशोभावी शशिवर्धन को क्यों मारना चाहेगी?”

"मैं इसके बारे में सोच रही थी, और मुझे लगता है कि मुझे इसका कारण पता है," अमारा सिम्हा ने कहा।

"तो फिर हमें बताओ," वरारुची ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

“यह बात विक्रम ने हमें बताई थी,” अमर सिंह ने समझाया। “तुम उस दिन यहाँ नहीं थे, लेकिन...” उन्होंने वराहमिहिर और धनवंतरी की ओर देखा, “...याद रखो, इसी कक्ष में... तुम दोनों, शंकु, क्षपणक, मैं...”

चिकित्सक और अभियंता ने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, यह याद करने की कोशिश करते हुए कि अमरा सिम्हा किस दिन का जिक्र कर रहे थे।

“प्रलुपी के बारे में,” बलवान पार्षद ने उन्हें याद दिलाया।

“बिल्कुल,” धनवंतरी ने अपनी हथेली पर हाथ मारते हुए कहा। “यह तो बिल्कुल स्पष्ट है।”

“यह क्या है?” वरारुची ने हैरानी से पूछा।

"बात कुछ इस तरह है," अमरा सिंह ने कहा। "विक्रम ने हमें बताया था कि प्रलूपी शशिवर्धन के बजाय घटकरपारा को वत्स का अगला राजा बनाने पर तुली हुई थी। ऐसा लगता है कि वह विक्रम को परेशान कर रही थी कि वे हस्तक्षेप करें और चंद्रवर्धन को प्रभावित करें ताकि वह घटकरपारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दें।"

वररुचि ने अपने गाल फुलाए और सिर हिलाया, लेकिन सबसे पहले धनवंतरी ने ही बात की।

"मैंने विक्रमा के साथ उसकी बाद की एक बातचीत देखी," चिकित्सक ने सिहरते हुए कहा। "वह... निर्दयी और अडिग थी।"

"खैर," अमारा सिम्हा ने आगे कहा, "अपनी बात को पुष्ट करने के लिए, प्रलूपी ने दावा किया कि कौशांबी में ऐसे लोग थे जो घटाकरपारा के उत्तराधिकार का समर्थन करने को तैयार थे। जब विक्रम ने उससे पूछा कि ये लोग कौन हैं, तो प्रलूपी ने केवल यशोभावी का नाम लिया।"

"शशिवर्धन की हत्या करवाने के लिए अंगरक्षकों को किसने पैसे दिए थे?" धनवंतरी ने गहरी सांस लेते हुए पूछा।

"लेकिन क्या यशोभवी इतनी दूर जाएगी...?" वराहमिहिर रुक गये।

पार्षदों ने सतर्कतापूर्वक एक-दूसरे की ओर देखा, लेकिन अपने मन की बात किसी ने नहीं कही: क्या शशिवर्धन की हत्या के प्रयास में प्रलूपी की प्रत्यक्ष भूमिका हो सकती थी?

"वह मुझसे बदले की भावना से आई थी," वरारुचि ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "क्योंकि विक्रम ने उसका स्वागत करने से इनकार कर दिया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने ऐसा क्या किया था कि वह उससे इतनी नफरत करती थी।"

"यह क्या है?" वराहमिहिर ने तीखे स्वर में पूछा।

"विक्रमा के जाने से पहले मुझे उसे चेतावनी देने का मौका नहीं मिला, और उसके जाने के बाद से इतना कुछ घटित हो गया है कि आपमें से किसी को भी बताने का मौका नहीं मिला..." राजा के भाई ने बिना किसी लाग-लपेट के, प्रलूपी के मुसिली की चौकी में देर रात के दौरे का विस्तृत वर्णन किया।

"उसकी शर्त यह थी कि मैं घटाकरपारा को राजा बनाऊँ," उसने सलाहकारों की नज़रों से बचते हुए कहा। "हालाँकि यह एक तरह से उस एहसान की माँग थी जो

वह कथित तौर पर मुझ पर कर रही थी। असल बात यह है कि मैंने उससे मदद नहीं माँगी थी; वह खुद मेरे पास आई थी, फिर भी उसने ऐसे बात की जैसे मैं उसका ऋणी हूँ।"

"और तुम उसकी इच्छा कैसे पूरी करते?" वराहमिहिर ने पूछा।

"मुझे कोई अंदाजा नहीं," वरारुचि ने कंधे उचकाते हुए कहा, मानो वह पूरी तरह से असमंजस में हो। "विक्रमा के अपमानित होने और राजा पद से हटने के लिए मजबूर होने के बाद मुझे कोई रास्ता निकालना था।"

"वह खतरनाक और अविवेकी है," अमारा सिम्हा ने अपनी दाढ़ी में उंगलियां फेरते हुए कहा। "वह अपनी मनचाही चीज पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है।" उन्होंने वरारुचि की ओर देखा। "क्या उसने विक्रम के खिलाफ अपनी योजना के बारे में बताया?"

वररुची ने अपना सिर हिलाया।

"बात ये है कि—" धनवंतरी ने बोलना शुरू किया, लेकिन इससे पहले कि वो अपनी बात पूरी कर पाते, कमरे का दरवाजा ज़ोर से खुल गया। प्रलूपी गुस्से में अंदर घुस आई और अमरा सिंह को घूरने लगी।

"मेरा बेटा कहाँ है?" राजकुमारी ने पूछा। "वह उज्जैन में क्यों नहीं है?"

"तुम्हारे बेटे ने यहाँ आने के बजाय उदयपुरी जाने का फैसला किया," अमरा सिम्हा ने उत्तर दिया।

"उदयपुरी में क्या है? और तुमने उसे क्यों नहीं रोका?"

अमरा सिम्हा हिचकिचाई। "वह अपने दोस्तों से मिलने गया है। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि उसे महल आना चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि वह जाने के लिए उत्सुक था।"

"दोस्त?" प्रलूपी ने व्यंग्य से पूछा। "उदयपुरी में ऐसा कौन सा दोस्त हो सकता है जो इतना महत्वपूर्ण हो कि वह अपनी माँ से मिलने आने के बजाय वहाँ जाना पसंद करे?" वह थोड़ी देर रुकी, फिर गुस्से से बोली, "वही लड़की है, है ना?"

अमारा सिम्हा ने कंधे उचका दिए।

"और तुमने उसे जाने दिया?" राजकुमारी की आवाज़ तीखी हो गई। "तुम जानते हो कि वह एक साधारण व्यापारी की बेटी है... एक गद्दार की बेटी। शायद वही चारा थी जिसने उसे फंसाया, वह धूर्त छोटी सी लड़की। मेरे भोले-भाले बेटे को अपने जाल में

फंसा लिया। और वह क्या सोच रहा है? क्या वह भूल गया है कि वह जन्म से राजकुमार है? और तुम," वह सलाहकार पर भड़क उठी। "तुम भी भूल गए कि वह राजकुमार है? कितनी गैरजिम्मेदार हो तुम। तुम्हारा काम मेरे बेटे को वापस लाना था —"

"जो मैंने किया है," अमारा सिम्हा ने थके हुए स्वर में बीच में ही टोकते हुए कहा। "मैंने उसे जाने से रोकने की कोशिश की, लेकिन यह उसका अपना फैसला था—"

"ज़ाहिर है, आपने पर्याप्त प्रयास नहीं किया।"

"वह एक वयस्क व्यक्ति है, जो अपने लिए सोचने में सक्षम है। उसे घोड़े की पीठ पर बांधकर कैदी की तरह लाने के अलावा मैं और कुछ नहीं कर सकता था।"

"तुमने उसे वापस लाने का वादा किया था," प्रलूपी ने हठपूर्वक और अविवेकी ढंग से सिर हिलाया। "वह उस लड़की के साथ नहीं रह सकता। किसी को तो उसे वापस लाना ही होगा। उसे ऐसा करने की अनुमति ही नहीं मिलनी चाहिए थी—"

"पार्षद यशोभावी राजकुमार शशिवर्धन की मौत क्यों चाहती हैं?"

"क्या?" राजकुमारी ने वराहमिहिर की ओर बड़ी-बड़ी आँखों से देखा।

"यशोभावी ने मत्स्य उत्सव में शशिवर्धन की हत्या करवाने की कोशिश की थी," लंगड़े पार्षद ने प्रलूपी को ध्यान से देखते हुए कहा। "यह प्रयास विफल रहा क्योंकि घातकपारा ने हत्यारों को रोककर शशिवर्धन की जान बचाई।"

प्रलूपी ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया और भय से एक-एक करके पार्षदों को घूरने लगी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह कांप रही थी, फिर भी उसने परिषद की मेज के चारों ओर रखी कुर्सियों में से एक का सहारा लेकर खुद को सीधा रखा।

"वह कहाँ है?" उसने लगभग फुसफुसाते हुए स्वर में पूछा।

वराहमिहिर ने उत्तर दिया, "कौन? यशोभवी? कौशांबी में।" "संभवतः पूछताछ की जा रही है।"

राजकुमारी ने पीड़ा भरी आवाज में कहा, "चंद्रवर्धन को उसे अकेला छोड़ देना चाहिए।"

पार्षदों ने एक-दूसरे की ओर देखा। "चंद्रवर्धन ऐसा क्यों करेगा?" अमरा सिम्हा ने पूछा। "यशोभवी ने अभी-अभी उसके बेटे की हत्या करने की कोशिश की है।"

"अरे, तुमने ऐसा क्यों किया?" सिसकियों से उसका शरीर कांप रहा था, राजकुमारी ने अपनी बाहें मोड़ लीं और खुद को कसकर पकड़ लिया, उसके कंधे हिल रहे थे। "मैं भी चाहती थी कि वह मर जाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था... अरे, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था..." उसने आँसुओं के बीच आह भरी। "तुम इंतज़ार कर सकती थी..." फिर, दर्द असहनीय हो जाने पर, उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया, मुड़ी और सभा कक्ष से भाग निकली।

अपनी जगह पर जमे हुए पार्षद दरवाजे की ओर घूर रहे थे। प्रलूपी के कदमों की गूंज धीमी पड़ते ही कमरे में फिर से सन्नाटा छा गया। चारों आदमी कुछ नहीं बोले, बोलने से बहुत डर रहे थे।

तुमने ऐसा क्यों किया... ये प्रलूपी के शब्द थे।

मेरी भी यही इच्छा थी कि वह मर जाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि... ओह, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था...

आप इंतजार कर सकते थे...

वे सभी इस बात से जूझ रहे थे कि यशोभावी ने हत्या का आदेश क्यों दिया था, लेकिन अब, अचानक ही, राजकुमारी ने अपनी पीड़ा में जो कहा, उसके कारण उन्हें आखिरकार पता चल गया।

मैं भी यही चाहता था कि वह मर जाए, लेकिन... तुम इंतज़ार कर सकते थे... एक माता-पिता का धैर्यहीन स्वभाव।

अमारा सिम्हा ने मन ही मन सोचा, उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह उस लड़के से प्यार करता था, जैसे एक पिता अपने बेटे से प्यार करता है।

उसी क्षण, कमरे में एक भयानक, बेचैन कर देने वाली फुफकार गूंज उठी, जो महल की दीवारों से भी रिसकर अंदर आ गई और पार्षदों की नसों में खून जमा देने वाली थी।

***

एक और जोरदार धमाके के साथ, पूर्वी हिस्से में एक दूसरी इमारत ढह गई, जिससे उज्जैन के ऊपर छाई गर्म और उमस भरी हवा में और अधिक राख, धूल और मलबा फैल गया।

आकाश में, ठीक उस जगह के ऊपर जहाँ उसने अभी-अभी अपना विनाश किया था, अही पहले से ही लुप्त हो रहा था, उसका शरीर बादलों में छिपा हुआ था, उसका पंखों वाला सिर, तिरछी, अंबर रंग की आँखें और भयानक मुँह अभी भी जहर टपका रहा था, पार्षदों की आँखों के सामने ही गायब हो गया।

वररुचि ने संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए कहा, "संतोष की बात यह है कि वे इमारतें खाली हैं।"

पार्षद एक ऐसी छत पर थे जहाँ से उज्जैनी के अधिकांश हिस्से का अबाधित दृश्य दिखाई देता था।

“हमें क्षपनाका को ढूंढना ही होगा,” अमारा सिंह ने बेबसी और हताशा से गुर्राते हुए कहा। “पिछली बार उसने उस चीज़ का डटकर सामना किया था।”

उन्होंने आकाश में सर्प-ड्रैगन के संकेतों की खोज की।

“कैसे?” पार्षदों में शामिल हुए कुबेरा ने पूछा। अपना सवाल स्पष्ट न देखकर उन्होंने आगे कहा, “क्या उसने ऐसा किया, मतलब क्या उसने किया?”

अमर सिंह ने यक्ष की ओर देखा। "इस पर बाणों की बौछार करके इसे कमजोर कर देना चाहिए।"

“यह संभव नहीं है,” कुबेरा ने अपना सिर हिलाया, जिससे उसके गहनों की हल्की सी खनक सुनाई दी। “अही एक मौलिक प्राणी है। इसे दर्द महसूस नहीं होता, इसलिए इसे हथियारों से सताया, कमजोर या वश में नहीं किया जा सकता। और इसे मारा भी नहीं जा सकता।”

"मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस प्रकार का प्राणी है, लेकिन क्षपनाका ने उसे अपने वश में कर लिया और उसे भागने पर मजबूर कर दिया।"

“वह ऐसा नहीं कर सकती थी,” यक्ष ने दृढ़ता से कहा। “जो भी अहि को बुलाता है, वह अहि को नियंत्रित करता है, और अहि पर प्रभुत्व प्राप्त करने का एकमात्र तरीका उस नियंत्रण को कमजोर करना है।”

“क्या वैद्य ने यह नहीं कहा था कि उन्होंने इंद्र के पुत्र के अहि पर से अधिकार तोड़कर उज्जैनी को बचाया था?” धनवंतरी ने पूछा। “मुझे याद है सम्राट ने इसका जिक्र किया था...”

"यह संभव है," कुबेरा ने पुष्टि की।

"क्या अब हम शुक्राचार्य जैसे झूठे पर विश्वास करेंगे?" अमर सिंह ने झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाते हुए चुनौती दी। "मैंने क्षपणक को उस चीज़ को घेरते हुए देखा था—"

यक्ष एक बार फिर अपना सिर हिला रहा था, तभी वरारुचि ने बहस में दखल देते हुए कहा, "चलिए इसे समझते हैं। आप कहते हैं कि इसे मारा नहीं जा सकता। क्यों?"

"क्योंकि अही एक मौलिक सर्प-ड्रैगन है," कुबेरा ने समझाया। "यह जल से बना है, जिसे नष्ट, घायल या बंदी नहीं बनाया जा सकता। इसे जलाओ, तो यह भाप बन जाएगा। इसे जमा दो, तो यह बर्फ बन जाएगा। इसका रूप बदल जाएगा, लेकिन यह मरना नहीं है। इस प्रक्रिया को उलटा जा सकता है, और यह हमेशा फिर से अही बन सकता है। अभी यह यही कर रहा है—जल से भाप में बदल रहा है और गायब हो रहा है, फिर जल के रूप में पुनः प्रकट हो रहा है।"

सांस लेने के लिए एक पल रुककर यक्ष ने आगे कहा, "आप अहि को पराजित नहीं करते; आप उस मन को पराजित करते हैं जो अहि को नियंत्रित करता है।"

एक पल का सन्नाटा छा गया, क्योंकि सभी लोग इस बात को समझने की कोशिश कर रहे थे और अभी भी बादलों से घिरे आकाश को देख रहे थे।

"तुम यहाँ मदद करने के लिए आए हो," अमारा सिम्हा ने चिढ़कर कहा। "क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?"

"काश हम ऐसा कर पाते, लेकिन पानी से कोई लड़ नहीं सकता।"

उनके बाईं ओर बादलों से अचानक ही सर्प-ड्रैगन प्रकट हुआ, उसका सिर ऊपर उठा हुआ था, जिससे उसकी सुगठित, मांसल पीठ पर काले और भूरे पंख लहरा रहे थे। बिना देर किए, उसने अपना मुंह खोला और उत्तरी क्षेत्र पर भारी मात्रा में धूसर विष उगल दिया। इमारतें कर्कश और क्षत-विक्षत ध्वनि के साथ ढह गईं और मलबा हवा में फैल गया।

"क्या वहां कोई रहता है?" यक्ष ने पूछा।

"यह सटीक स्थान पर निर्भर करता है—"

"शहर की सुरक्षा चौकी वहीं स्थित है," अमारा सिम्हा ने वरारुची की बात काटते हुए गुर्राते हुए कहा। "बैरक में सैनिक होंगे।"

"और, घायल सैनिकों के इलाज के लिए स्थापित किए गए धर्मशालाएं भी," धनवंतरी रोते हुए बोलीं। "यह तो—"

ठीक उसी क्षण, खतरे की घंटियाँ बजने लगीं, हालाँकि वे तात्कालिकता व्यक्त करने के बजाय उदास और दोहराव वाली लग रही थीं।

"हम यहाँ खड़े होकर उस चीज़ को अपने शहर को तबाह करते हुए नहीं देख सकते," अमारा सिम्हा ने गुस्से में कहा। "मैं क्षपनाका को ढूंढने जा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि वह इसे रोक सकती है।"

वररुचि और धनवंतरी ने एक-दूसरे की ओर देखा। अहि आकाश में पहले ही विदा हो चुकी थी।

"वह शायद पहले से ही उसका पीछा कर रही है, इसलिए वह यहां नहीं है," वरारुची ने तर्क दिया।

"अच्छा," तगड़े पार्षद ने जाते हुए कहा। "मैं उसे ढूंढूंगा और उसकी मदद करूंगा।"

"उस जीव के विष से केवल वही अप्रभावित है," चिकित्सक ने उसे याद दिलाया। "तुम कुछ नहीं कर सकते। क्षपनाका को अकेले ही उसका सामना करना होगा।"

अमरा सिम्हा रुक गया और उसने धनवंतरी को घृणा भरी नजरों से देखा।

वररुची ने कुबेरा की ओर मुड़कर पूछा, "क्या आप बता सकते हैं कि अही को कौन नियंत्रित कर रहा है और कैसे?"

"आसान है," यक्ष स्वामी ने कंधे उचकाते हुए कहा। "या तो इंद्र का पुत्र जयंत है, या शुक्राचार्य के पुत्रों में से चंदासुर या अमरका। केवल वही लोग असुर और देव दोनों के रक्त से आच्छादित हो सकते हैं जो अहि शक्ति को धारण कर सकते हैं, इसलिए विकल्प इन्हीं तीन में से एक है।"

"लेकिन क्या आपको पता है कि वे अही को कहाँ से नियंत्रित कर रहे हैं?"

कुबेरा ने चमकती आँखों से वरारुची को देखा। "यह कहीं आस-पास से ही होना चाहिए। इतना नज़दीक कि वे अही को देख सकें और निर्देश दे सकें..."

"क्या आप ठीक-ठीक पता लगा सकते हैं कि कहाँ—"

"जी हां," यक्ष स्वामी ने उत्तर दिया। "मेरे यक्ष जाएंगे..."

कुबेर ने अपने हाथ मुंडेर पर रखे और खुद को उस पर चढ़ा लिया। जैसे ही उनका पैर पत्थर की उस पतली पट्टी पर पड़ा, उनके शरीर में एक अद्भुत परिवर्तन हुआ और तीनों पार्षद मुंडेर पर बैठे भूरे लंगूर को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। लंगूर मुंडेर से फिसल गया और अपनी कुशल पकड़ का इस्तेमाल करते हुए महल

की दीवार से नीचे उतरता हुआ एक विशाल बरगद के पेड़ तक पहुँच गया। एक शाखा पर छलांग लगाते ही लंगूर घनी पत्तियों में खो गया; अगले ही पल, पेड़ से एक कौवे की कर्कश कांव-कांव सुनाई दी। वररुचि, अमर सिंह और धनवंतरी के देखते ही देखते, महल के तालाब के चारों ओर के पेड़ों से सैकड़ों कौवे उड़कर सीधे बरगद की ओर चल पड़े और जोर-जोर से कांव-कांव करने लगे।

राजा के भाई ने अमारा सिंह की ओर मुड़कर कहा, "हम शायद अही से मुकाबला करने के लिए पूरी तरह से सक्षम न हों, लेकिन हम निश्चित रूप से उस व्यक्ति से लड़ सकते हैं और उसे हरा सकते हैं जो इस सर्प को नियंत्रित कर रहा है।"

***

आपको कैसे पता चला कि मैं कहाँ मिलूंगा?

घोड़ों के खुरों की आवाज़ के बीच अमरा सिंह ने उत्तर दिया, "यक्ष।"

"ओह," क्षपणक ने कहा। बस इतना ही स्पष्टीकरण काफी था।

वे शहर के पश्चिमी हिस्से की एक संकरी, घुमावदार गली से होते हुए दक्षिणी द्वार की ओर बढ़ रहे थे, उनके पीछे नगर रक्षक दल के एक दर्जन घुड़सवार आ रहे थे। सभी लोग सर्प-ड्रैगन पर नज़र रखे हुए थे, जिसे आखिरी बार उज्जैन के उत्तरी हिस्सों पर विष उगलते हुए देखा गया था।

क्षपणक ने कहा, "अहि के बारे में यक्ष का कथन सही है। मैंने उसका पूरे शहर में पीछा किया, उस पर बाणों की बौछार की... लेकिन उस पर किसी बाण का कोई असर नहीं हुआ। कीमती बाणों की बर्बादी।"

"हम्म," बुजुर्ग पार्षद ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "लेकिन पिछली बार तो आपने ही इसे रोका था।"

"जैसा कि कुबेर ने कहा, शायद कोई और था। याद है, वैद्य ने सभा कक्ष में इंद्र के पुत्र के बारे में हमें क्या बताया था—"

"जी हां," अमारा सिम्हा ने बीच में ही तीखे स्वर में टोका, लेकिन फिर तुरंत ही उनका चेहरा नरम पड़ गया। "माफ़ कीजिए, बात बस इतनी सी है कि मुझे लगा था कि हमारे पास सांप से निपटने का कोई उपाय है, और अब यह जानकर निराशा हुई कि हमारे पास ऐसा कोई उपाय नहीं है।"

क्षपनाका ने तर्क दिया, “ऐसा लगता है कि हमें अही का प्रतिकार मिल गया है। क्या इसीलिए हम उस दिशा में नहीं जा रहे हैं जहाँ हम जा रहे हैं?”

"आप सही कह रहे हैं," अमारा सिम्हा ने कहा, जब वे उज्जैन के दक्षिणी जिले को दो भागों में बांटने वाली एक खुली सड़क पर मुड़े।

क्षपनाका ने ऊपर की ओर देखा। “सुरक्षित स्थान के पास ही रहना बेहतर है। हम नहीं चाहते कि गलती से भी किसी पर विष गिर जाए।”

अमारा सिंह ने सहज ही अपने घोड़े को सड़क के किनारे बने घरों की छतरियों के पास सरका दिया, और पीछे आ रहे सवारों ने भी ऐसा ही किया, हालांकि सभी जानते थे कि सर्प-ड्रैगन के खतरे के सामने यह आंशिक सुरक्षा कुछ खास काम नहीं आएगी। मानो इस बात को और पुख्ता करने के लिए, अही अचानक उज्जैन के पूर्व में प्रकट हुआ, विष उगलते हुए घरों को ध्वस्त कर दिया और पूरे शहर में कंपन पैदा कर दी। क्षपणक ने शाप दिया और सभी ने अपने घोड़ों की लगाम खींची और छिप गए, और उस सर्प को शहर के ऊपर छाए घने बादलों में गायब होते हुए देखा।

"हमें जल्दी करनी चाहिए," क्षपनाका ने शामियाने के नीचे से निकलते हुए कहा।

“चलो,” अमरा सिंह ने अपनी कुल्हाड़ी से इशारा करते हुए अपने घोड़े को दौड़ाया। क्षपनाका और घुड़सवारों ने भी वैसा ही किया और घोड़ों का काफिला घोड़ों की टापों की गड़गड़ाहट के साथ आगे बढ़ गया।

"वरारुची यहाँ क्यों नहीं है?" महिला ने जोर से चिल्लाकर कहा।

“धनवंतरी ने सोचा कि वरारुचि के आने से कटार असुरक्षित हो जाएगी। हमें महल से दूर ले जाना एक ऐसी रणनीति है जिसका प्रयोग देव और असुर दोनों पहले कर चुके हैं।”

क्षपनाका ने सहमति जताते हुए सिर हिलाया।

सड़क ने एक स्वाभाविक मोड़ लिया और जैसे ही उज्जैनी का दक्षिणी द्वार दिखाई दिया, सलाहकारों ने द्वार की छाया में घुड़सवारों के एक बड़े समूह को प्रतीक्षा करते देखा। पास आने पर यह स्पष्ट हो गया कि वे घुड़सवार अंगामित्र के नेतृत्व में संसप्तक थे। जैसे ही सलाहकारों ने अपने घोड़े रोके, कुबेर का मोटा शरीर समूह से अलग होकर आगे आया। अंगामित्र और शाही सेना के दो सेनापति भी उनके साथ शामिल हो गए।

"ठीक है," अमर सिंह ने यह सुनिश्चित करने के बाद कहा कि सभी का ध्यान उनकी ओर है। उन्होंने यक्ष की ओर देखा। "सभी के हित में, हमें बताइए कि असुर अहि को कहाँ से नियंत्रित कर रहे हैं।"

"उस नाग-ड्रैगन को असुर भाई चंदासुर और अमरका नियंत्रित कर रहे हैं, जो उन पहाड़ियों में छिपे हुए हैं," कुबेर ने द्वार के पार दक्षिण की ओर इशारा करते हुए कहा। "उनकी रक्षा एक विशाल असुर सेना कर रही है। हमारा मानना है कि वे किसी प्रकार के जादू-टोने से भी सुरक्षित हैं, जिसे भेदना आसान नहीं होगा।"

"ठीक है," इस बार अमर सिंह ने अवंती के योद्धाओं को संबोधित करते हुए कहा। "यक्ष स्वामी का कहना है कि सर्प को रोकने का एकमात्र उपाय उन असुर बंधुओं को रोकना है, इसलिए जो करना है वह बहुत सरल है। असुर सेना को चीरते हुए, बंधुओं को ढूंढो और उन्हें मार डालो। क्या हम तैयार हैं?"

"महामहिम, हमारी रेजिमेंट द्वार के उस पार प्रतीक्षा कर रही हैं," कमांडरों में से एक ने कहा।

"संसप्तक तैयार हैं," अंगामित्र ने पुष्टि की।

कुबेर ने कहा, "मेरे यक्ष मेरे संकेत का इंतजार कर रहे हैं।"

"तो चलिए चलते हैं," अमारा सिंह ने सिर हिलाया। उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई। "अवंती," वह दहाड़ा।

"अवंती..." उसके आसपास मौजूद लोगों ने जोरदार आवाज में जवाब दिया।

युद्धघोष बाहर जमा सैनिकों तक पहुँच गया और वे भी दहाड़ने लगे, क्योंकि पार्षद, संसप्तक, दोनों सेनापति और नगर रक्षक दल दक्षिणी द्वार से बाहर निकल आए। उनके पीछे, यक्ष स्वामी ने पलक झपकते ही अपना रूप बदल लिया और बाज़ बनकर शहर की प्राचीरों के ऊपर से उड़ते हुए अवंती की सेना के ऊपर पहुँच गए। उनके पीछे हजारों बाज़ पेड़ों और छतों से उठकर दक्षिण की ओर टूटी हुई पहाड़ियों की ओर उड़ गए, जहाँ असुर सेना प्रतीक्षा कर रही थी।

***

लीजिए... लीजिए...

सेना के बाएं हिस्से में कहीं से शुरू होकर, यह फुसफुसाहट एक लहर की तरह फैल गई और बीच में सवार खाशी दुर, विक्रमादित्य और बाकी सैनिकों के कानों

तक पहुंच गई।

लीजिए... लीजिए...

आकाश में... आकाश में...

"उरुग... वि'दार," एक हूण कप्तान ने खाशी दुर को बिल्कुल अनावश्यक रूप से सूचना दी, क्योंकि सरदार ने फुसफुसाहट सुन ली थी और पहले से ही आकाश की ओर देख रहा था।

विक्रमादित्य, कालिदास और उनके साथ सवार अन्य तीन श्योर तथा आधी सेना, सभी उंगलियां ऊपर की ओर इशारा कर रहे थे, आंखें जिज्ञासा और आश्चर्य से ऊपर की ओर टकटकी लगाए हुए थीं...

क्षितिज पर सैकड़ों धधकते हुए बिंदु आग और धुएं के विशाल चापों में ऊपर उठ रहे थे, जो दक्षिणी आकाश को भर रहे थे और दोपहर के सूरज की चमक को टक्कर देते हुए शानदार ढंग से चमक रहे थे।

विदार... विदार... ये शब्द विस्मय भरी फुसफुसाहट में सबसे पीछे तक पहुँच गए, और किसी को पता चले बिना ही घोड़े अपनी पूरी रफ्तार से दौड़ने की गति को धीमी कर कर धीरे-धीरे चलने लगे।

"हमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा," मुखिया ने विक्रमादित्य की ओर मुड़कर पूछा। "आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?"

"जो भी हो, मुझे लगता है कि यह अच्छा संकेत नहीं है," राजा ने उत्तर दिया। "हमें सतर्क रहना चाहिए।"

उसका हाथ तलवार की मूठ की ओर बढ़ गया, लेकिन खाशी दुर ने सम्राट की बांह पर हाथ रखकर उसे रोक दिया। फिर, पीछे सवार द्रोइबा की ओर देखते हुए, सरदार ने सिर हिलाया। अंत में, उसने हूण सेनापति की ओर देखा।

"एबा," उसने आदेश दिया।

"एबा," कप्तान ने अपने सरदार के आदेश को दोहराया और सेना को रुकने का इशारा किया।

ड्रोइबा अपने घोड़े से उतरा और धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ गया। उसके एक हाथ में जलते कोयलों से भरा एक बंद अंगीठी था और कंधे पर एक पुराना कपड़े का थैला लटका हुआ था। उसके शरीर पर लगा नीला रंग पसीने से बह गया था, जिससे उसकी त्वचा का गहरा रंग दिखाई दे रहा था।

"क्या?" विक्रमादित्य ने द्रोइबा से खशी दुर और फिर कालिदास की ओर देखते हुए पूछा।

खाशी दुर ने नीले आकाश में टेढ़ी-मेढ़ी गति से उड़ते हुए, आग और धुएँ के निशान छोड़ते हुए जलते हुए धब्बों की ओर देखा। "क्या घूलमास्टर का साम्राज्य अपने अंत के करीब नहीं है?"

सम्राट ने सिर हिलाया।

"समय कम है, और आपको उज्जैन पहुंचना ही होगा," सरदार ने कहा। "इससे आपकी गति धीमी न हो। हम द्रोइबा लेकर आगे बढ़ेंगे..." उसने अपनी ठुड्डी से अपने, कालिदास और राजा के बीच एक त्रिभुज बनाया, फिर हूण सेना की ओर सिर झुकाया, "...और यह सब मेरे भाइयों पर छोड़ दो। वे इसे संभाल लेंगे।"

विक्रमादित्य ने कालिदास की ओर देखा, जिन्होंने म्यान से अपनी तलवार निकालते हुए सिर हिलाकर सहमति दी और अवंती की घुड़सवार सेना के एक सेनापति के पास गए ताकि योजना अवंती की सेना को बताई जा सके। खशी दुर ने तीनों सरदारों से शीघ्र परामर्श किया और आदेश दिए, जिसके बाद तीनों सरदारों ने अपने घोड़ों को एड़ी मारी और सेना की कमान संभालने के लिए रवाना हो गए।

खाशी दुर ने हूना कप्तान की ओर मुड़कर अपनी तलवार निकालते हुए कहा, "दा'आरो मेके।"

विक्रमादित्य ने सेनापति को अपने होठों पर मेढ़े का सींग रखकर फूंकते हुए देखा। मैदान में एक तीखी आवाज़ गूंजी, घुड़सवारों ने अपनी तलवारें निकाल लीं और भाले कसकर पकड़ लिए, जबकि धनुर्धारियों ने अपने धनुषों में तीर चढ़ा लिए। इसी बीच, द्रोइबा श्योरों का साथ छोड़कर मैदान में चला गया और अपने थैले में हाथ डालकर मुट्ठी भर रेत निकाली।

ऊपर आसमान में, धुंध से निकलते हुए छोटे-छोटे बिंदु आसमान के किनारों को ढँकते हुए खुले मैदानों पर रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। अब उनकी संख्या हजारों में थी, लेकिन वे ऊपरी वायुमंडल में ही बने रहे, जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन जैसे ही वे आकाश के चरम पर पहुँचे, उनके आगे वाले बिंदु अचानक नीचे की ओर झुके और उतरने लगे।

नीचे, पुरुषों ने गहरी सांसें लीं और खुद को मजबूत किया।

तुरही की गूंज थम गई। उसके बाद छाई खामोशी में, सबका ध्यान दो ओर बँटा हुआ था: एक ओर सिर के ऊपर दूर तक उतरते जलते हुए बिंदु, और दूसरी ओर ड्रोइबा, जो अकेले ही मैदान में चल रहा था, जिसके पंखों का मुकुट हवा में लहराता हुआ पीछे की ओर फैल रहा था। किसी रहस्यमयी जादू के प्रभाव से, कोयले की अंगीठी से धुएँ के गुच्छे तांत्रिक के चारों ओर लिपट रहे थे, उसके शरीर को घेर रहे थे, साँपों की तरह रेंग रहे थे...

विक्रमादित्य की निगाहें द्रोइब से गिरते हुए बिंदुओं पर टिकी थीं—लेकिन अब वे बिंदु नहीं बल्कि जलते हुए उल्कापिंड के टुकड़े थे, जो तेजी से नीचे गिर रहे थे और आकार में तेजी से बढ़ रहे थे। उनके पथ के चाप से सम्राट ने अनुमान लगाया कि उल्कापिंड उस स्थान के आसपास गिरेंगे जहाँ द्रोइब जा रहा था...

उसने आशंका से खशी दुर से कालिदास की ओर देखा। दोनों में से किसी को भी हस्तक्षेप करने के लिए उंगली तक न उठाते देख, और भय से घबराकर, राजा ने लगाम पर अपनी पकड़ और कस ली जब उसने अपने हाथ पर कालिदास का हाथ महसूस किया।

"मेरे दोस्त, ड्रोइबा जानता है कि वह क्या कर रहा है," उस विशालकाय व्यक्ति ने धीरे से कहा।

उल्कापिंड तेज़ी से करीब आते जा रहे थे, अब सैकड़ों उल्कापिंड चीखते हुए नीचे गिर रहे थे, उनसे धुआं और आग निकल रही थी। उनके पीछे और ऊपर, आसमान में और भी बिंदु दिखाई दे रहे थे, कई धरती की ओर गिरने लगे थे, और बहुत से अभी भी अपने परवलयिक चापों की चोटियों की ओर बढ़ रहे थे। ज़मीन के सबसे करीब वाले उल्कापिंड अब साफ दिखाई दे रहे थे, चट्टानी आकृतियों जैसे, जिनकी सतह पर दरारें थीं, और जो पिघली हुई आग से भरे हुए थे।

नीचे मैदान में, ड्रोइबा हुना-अवंती की संयुक्त सेना के अग्रिम दस्ते से सौ कदम की दूरी पर आकर रुक गया था। वह पीठ फेरकर, हाथ बगल में रखे खड़ा था, पंखों वाले मुकुट और पतले पैरों के साथ एक विचित्र आकृति जैसा लग रहा था। धुआँ अब भी उस पर प्यार से रिस रहा था।

उसके ऊपर, उल्कापिंड नीचे गिरते गए... नीचे, नीचे, नीचे...

सम्राट चिंता से व्याकुल था जब अंततः द्रोइबा ने अपना हाथ बढ़ाया और रेत को हवा में उछाल दिया। धुएँ का कुंडल रेत के पीछे उछला, खुद को लपेटते हुए, कणों

को आपस में मिलाते हुए, क्रिस्टलों को ऊपर की ओर सर्पिलाकार गति में पकड़ते हुए, और भी तेज़ी से घूमने लगा...

...और उसी समय, पहला उल्कापिंड उस मैदान में गिरा, जो उस जगह से सौ कदम से भी कम दूरी पर था जहाँ ड्रोइबा का पेड़ खड़ा था।

उनके प्रभाव से धरती कांप उठी, और जैसे ही उल्कापिंड एक के बाद एक लगातार बौछार की तरह गिरे, धूल और मिट्टी हवा में उड़ने लगी, मैदान से ज़बरदस्त कंपन उठने लगी। इसी बीच, तांत्रिक के पैरों के नीचे की धरती बुरी तरह हिलने लगी, धुएं और रेत के सर्पिल की ओर फटते हुए एक घना स्तंभ बन गया जिसने ड्रोइबा को अपनी ओर खींच लिया।

धूल और मिट्टी से हवा भर गई थी, जिससे दृश्य धुंधला हो गया था। सम्राट ने घूमते हुए स्तंभ को आकार में बढ़ते हुए देखा, इससे पहले कि वह क्रोध की एक कान फाड़ देने वाली चीख के साथ दो भागों में फट गया, जिसने उल्कापिंडों की गड़गड़ाहट को भी दबा दिया। दोनों स्तंभ अलग हो गए और मैदान में बह गए, जाते हुए वे याह'ब्रे में पुनर्मिल गए, और धूल के स्तंभ के अवशेषों से ड्रोइबा प्रकट हुआ, अस्त-व्यस्त और धूल से सना हुआ, लेकिन अन्यथा अक्षुण्ण। उसके पीछे, उल्कापिंड मैदान पर बरसते रहे, जिससे जमीन में गहरी सिहरन दौड़ गई।

"ह्ला," ड्रोइबा ने एक हाथ से इशारा करते हुए कहा, दूसरा हाथ अभी भी मुट्ठी में बंद था।

लेकिन विक्रमादित्य की दृष्टि पहले ही शमन से आगे निकल चुकी थी, धूल के पर्दों को भेदते हुए उल्कापिंडों के मलबे से उभरती विशाल सींग वाली आकृतियों पर जा पड़ी, जो स्पष्ट रूप से आगे बढ़ रही थीं और नुकीले भाले ऊपर उठाए हुए थीं, जिनकी नोकें मैदान की मैली हवा में भी चमक रही थीं; क्षितिज तक फैली कतारों में, हजारों आकृतियाँ अपने उल्कापिंडों के खोल से युद्ध के लिए उठ रही थीं।

उनके रास्ते में खड़े याहब्रे के क्रोधित दहाड़ के बावजूद, सींग वाले पुतले टस से मस नहीं हुए। फिर, मानो जवाब में, सींग वाली सेना के किनारों से एक भयानक दहाड़ उठी, और युद्ध महिषाओं की एक टुकड़ी एक टीले के ऊपर से प्रकट हुई, सूर्य के प्रकाश में उनके सींग मोटे और काले थे, उनकी युद्ध कुल्हाड़ियाँ चमकती रोशनी की चाप की तरह लग रही थीं, जैसे ही वे घुड़सवारों की सेना पर टूट पड़े।

"ह्ला," शमन ने गुस्से से अपना हाथ हिलाया।

“आओ, सम्राट,” खशी दुर ने चिल्लाते हुए कहा, जैसे ही उल्कापिंडों में सवार होकर आए लोग दौड़ पड़े। उसने अपने घोड़े को लात मारी। “हमारी आत्मा हमारे साथ चले।”

राजा के दाहिनी ओर, कालिदास ने अपनी तलवार उठाई और चिल्लाया, "कुल’आ ग्वेदे’र।"

सभी पुरुषों ने एक साथ अपने हथियार ऊपर उठाए और उन्हें हिलाया।

"कुल'आ ग्वेडेर। कुल'आ महेक। कुल'आ क्यूल्ट," हूण गिरोह ने दहाड़ते हुए कहा।

“जल्दी करो, भाई,” कालिदास ने कहा।

विक्रमादित्य ने अपने घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया, सरदार आगे और विशालकाय योद्धा पीछे-पीछे चल रहा था। वे पलक झपकते ही द्रोइबा तक पहुँच गए, और आश्चर्यजनक फुर्ती दिखाते हुए द्रोइबा ने राजा की बांह पकड़ ली और घोड़े की पीठ पर सवार होकर राजा के पीछे आ गया। लेकिन सींग वाले योद्धा पहले से ही उस स्थान पर मंडरा रहे थे, याहब्रे को चकमा देते हुए, उनके भाले की नोकें पंद्रह कदम दूर थीं और वे करीब आकर उनका रास्ता रोक रहे थे। हूण घुड़सवार पीछे से आ रहे थे, और सम्राट ने अपनी दृष्टि के किनारे से देखा कि युद्ध के योद्धा भी भगदड़ में शामिल हो रहे हैं।

युद्ध के केंद्र में खशी दुर, कालिदास, जादूगर और स्वयं को पाकर, राजा ने नरक की अग्नियों में से एक को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया।

उसी क्षण, ड्रोइबा ने रेत की दूसरी मुट्ठी हवा में उछाल दी।

धूल का एक घना बादल सम्राट और शमन को घेर लिया और पल भर में चारों दिशाओं में फैल गया, जिससे कालिदास या श्योर को देखना भी असंभव हो गया।

“ओई उ’ज़ा,” ड्रोइबा ने राजा के कान में चिल्लाते हुए कहा और हाथ से उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

धूल का गुबार इतना घना था कि सांस लेना मुश्किल हो रहा था। विक्रमादित्य को समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ जाएं, लेकिन उन्होंने शमन की सलाह मानी और घोड़े की पीठ पर एड़ियों से ज़ोरदार प्रहार किया। जैसे ही घोड़ा सरपट दौड़ने लगा, याहब्रे और युद्ध महिषाओं की रंभाहट उसके पीछे सुनाई देने लगी, और बीच-बीच में हुनाओं की युद्ध गर्जना गूंजने लगी।

तलवार उठाओ। तूफान खड़ा करो। युद्ध शुरू करो। कालिदास ने यही कहा था।
हर कोई खूबसूरत है। हर शरीर खूबसूरत है। हर आत्मा खूबसूरत है।

***

एक और भयावह फुफकार निकालते हुए, जिससे वरारुचि के हाथों के बाल खड़े हो गए, अही उज्जैनी के मध्य जिलों के ऊपर मंडराया, और जहर उगलने के लिए अपना मुंह चौड़ा खोल दिया।

फिर, हिंसक रूप से कांपते हुए, यह चारों दिशाओं में बिखर गया, इसका शरीर अपना आकार और रंग खोता हुआ लाखों बूंदों में तब्दील हो गया जो शहर पर हानिरहित रूप से बरसती रहीं।

"देखा तुमने?" धनवंतरी ने उत्साह से चिल्लाते हुए अपने माथे पर गिरी कुछ बूँदों को अपने अंगवस्त्र से पोंछा। "देखा ना?"

"हम्म-हम्म," वरारुची ने सावधानी से जवाब दिया।

"यह अचानक टूट गया और गायब हो गया," चिकित्सक ने आत्मविश्वास से भरे स्वर में कहा और अब अधिक आत्मविश्वास के साथ छत पर कदम रखा। "यह हमला करने ही वाला था, लेकिन किसी ने इसे रोक दिया।"

"इसके साथ कुछ हुआ है, हाँ," राजा के भाई ने अपने उत्साह में सावधानी बरतते हुए कहा।

"मैं तुमसे कहता हूँ, ये अमर सिंह, क्षपणक और बाकी सब ही होंगे। उन्होंने ही नाग को वश में करने वाले असुरों को ढूँढ़ लिया होगा।"

"यह एक संभावना है—" वरारुची बीच वाक्य में ही रुक गया क्योंकि अही ठीक उसके ऊपर फिर से प्रकट हुआ और सीधे उस छत की ओर देखने लगा जहाँ वे खड़े थे।

"अरे नहीं," चिकित्सक ने हैरानी से कहा, और जैसे ही उत्साह और निश्चितता दोनों गायब हो गए, उसका चेहरा पीला पड़ गया।

सांप का सिर हमला करने के लिए पीछे हटते देख, पार्षद छिपने के लिए भागने ही वाले थे कि तभी राक्षस फिर से फड़फड़ाया।

फिर वह जम गया।

पार्षद मंत्रमुग्ध होकर देखते रह गए, जब अही ने हिलना बंद कर दिया और क्रिस्टलीकृत होकर कठोर बर्फ में बदल गया, जो अंदर से सफेद थी और जिसकी सतह पर प्रकाश अपवर्तित हो रहा था।

"क्या हो रहा है—" धनवंतरी ने कहना शुरू किया, लेकिन बर्फ पर एक दरार दिखाई देने और उसके साथ एक तेज आवाज आने पर वह रुक गया।

अगले ही पल, सर्प-ड्रैगन पूरी तरह से टूट गया और बर्फ के टुकड़ों में बिखर गया जो ओलों की तरह धरती पर गिरे, बर्फ कुछ ही सेकंड में पानी में बदल गई और फिर भाप बनकर पूरी तरह से गायब हो गई।

"देखो, फिर से... देखा?" धनवंतरी खुशी से उछल रहा था। "उन्होंने असुरों को पकड़ लिया है जो इसे नियंत्रित कर रहे हैं। इसके अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।"

"आप सही हो सकते हैं," वरारुची ने अधिक तत्परता से स्वीकार किया। लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाते, एक व्यक्ति छत के दरवाजे से अंदर आ गया।

"आचार्य," धनवंतरी ने आश्चर्य और प्रसन्नता से पुकारा।

मुख्य पार्षद ने अभिवादन में सिर हिलाया और आकाश को देखते हुए अपने साथी पार्षदों की ओर चल दिए।

"राजगुरु, आप कब आए?" वरारुचि ने पूछा।

"मैं यहाँ लगभग उसी समय पहुँचा जब वह चीज़ दिखाई दी," मुख्य पार्षद ने ऊपर की ओर इशारा करते हुए कहा। "हम अभी पूर्वी हिस्से में दाखिल ही हुए थे कि उसने तबाही मचाना शुरू कर दिया। हम बाल-बाल बचे और कुछ देर के लिए शरण लेनी पड़ी।" वह रुका। "हम उस साँप से कैसे निपट रहे हैं?"

"इससे निपटने का काम पहले ही शुरू हो चुका है," वैद्य ने मुस्कुराते हुए कहा। "अमर सिंह और क्षपणक ने सर्प का मार्गदर्शन कर रहे असुरों के विरुद्ध एक सेना का नेतृत्व किया था, और सर्प का व्यवहार अब अनियमित हो गया है। ऐसा लगता है कि अब वह हम पर हमला करने में सक्षम नहीं है।"

"अभी इस निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी," वरारुचि ने शांत भाव से कहा, और वेताल भट्ट सहमति में सिर हिला रहे थे, तभी अही उत्तर दिशा से बादलों के

बीच से तेजी से निकलता हुआ दिखाई दिया। सर्प का शरीर फड़फड़ाता रहा, उसका आकार बदलता रहा और अंत में वह भाप बनकर गायब हो गया।

"देखो?" धनवंतरी ने उंगली से इशारा करते हुए कहा, मानो उसकी बात सही साबित हुई हो। "यह सामान्य रूप से व्यवहार नहीं कर रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे यह पीड़ा में हो।"

अन्य दो पार्षदों को भी सहमति में सिर हिलाना पड़ा।

"अच्छा हुआ कि कुबेर को पता चल गया कि असुर इसे कहाँ से नियंत्रित कर रहे थे," वरारुचि ने कहा।

"कौन पता लगा पाया?" वेताला भट्टा ने आंखें सिकोड़ते हुए पूछा।

"कुबेर, यक्ष—" राजा का भाई रुक गया और उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। "आचार्य जी, आपके जाने के बाद से बहुत कुछ घटित हो चुका है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि कहाँ से शुरू करूँ।"

"फिर बाद में," राजगुरु ने सिर हिलाया। "बशर्ते यक्ष पर भरोसा किया जा सके।"

"उन्होंने और उनकी सेना ने हमें व्यालों से बचाया।"

"और निश्चित मृत्यु," धनवंतरी ने तुरंत कहा।

"व्यालस?" वेतला भट्ट ने भौंहें उठाकर अपने साथी पार्षदों की ओर देखा।

"आग उगलने वाले उड़ने वाले राक्षस। यक्षों के हमारी सहायता के लिए आने से पहले उन्होंने शहर के अधिकांश हिस्से को जलाकर राख कर दिया था।" वरारुचि कुछ देर रुके। "और अब वे अही का मुकाबला करने में हमारी मदद कर रहे हैं।"

आचार्य ने धीरे से सिर हिलाते हुए आकाश की ओर देखा। "मुझे बताया गया है कि विक्रम सीमा पर है।"

"हाँ।"

"मुझे लगता है कि वह खंजर अपने साथ ले गया है।"

"नहीं, आचार्य जी। यह यहीं महल में है। विक्रम ने इसे हमारी देखरेख में छोड़ दिया है।"

वेतला भट्टा ने दोनों पार्षदों को संदेह भरी निगाहों से देखा। "उसने ऐसा क्यों किया?"

"उनका मानना है कि हम इसकी रक्षा कर सकते हैं," धनवंतरी ने कहा। "दरअसल, उनका मानना है कि वराहमिहिर इसकी रक्षा कर सकते हैं।"

कुछ देर सोचने के बाद आचार्य ने कहा, "तो हमारा काम वराहमिहिर की रक्षा करना है। हमें हर संभव प्रयास करना होगा—" मुख्य सलाहकार रुका और आकाश की ओर इशारा करते हुए बोला, "वह क्या है?"

अन्य पार्षदों ने मुड़कर देखा तो उत्तरी आकाश में आग का एक विशाल गोला तेजी से उठ रहा था और सीधे उज्जैनी पर्वतमाला के केंद्र की ओर बढ़ रहा था।

नरक की आग

धूल में से असुरों का झुंड उमड़ पड़ा, उनके सींग और भाले हवा में लहरा रहे थे।

अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कालिदास जमीन पर कूद पड़े। उन्होंने खशी दुर को पुकारते हुए लगाम उसके हाथ में दे दी, "चलते रहो। राजा के साथ रहो। मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।"

सरदार ने सिर हिलाकर लगाम पकड़ी और दोनों घोड़ों को धूल में उड़ा दिया।

श्योरों द्वारा उपहार में दी गई ढाल को पकड़े हुए - जो कि ज़ो एरामी की ढाल के समान डिज़ाइन की थी, जैसा कि उन्होंने कहा था - उस विशालकाय व्यक्ति ने मुड़कर अपनी तलवार उठाई, अपने पैरों को एक दूसरे के पीछे, बगल में और पूरी तरह से संतुलित रखते हुए।

हवा की आवाज़। महक की आवाज़। क़ुल की आवाज़।

असुर रक्तपिपासा में दहाड़ते हुए उस पर टूट पड़े।

आगे चल रहे असुर छह-सात कदम ही दूर थे कि कालिदास ढाल उठाकर उन पर झपटे। उनकी तलवार भालों पर ज़ोरदार प्रहार करते हुए निकली, जिससे असुरों की

अपने हथियारों पर पकड़ टूट गई और उनका निशाना चूक गया। बिना गति बदले, वे झुके और भालों के जाल के नीचे से निकल गए, लुढ़के और तेज़ी से नीचे से ऊपर आ गए, जिससे असुरों के पेट पूरी तरह से खुले रह गए। कालिदास की तलवार चमकी, पेट चीरती हुई, खून बहाती हुई और आंतें बाहर निकालती हुई, और इस तरह असुरों की पहली पंक्ति दर्द से चीखते हुए मर गई।

मरते हुए असुरों में से एक कालिदास के ऊपर गिर पड़ा, लेकिन विशालकाय कालिदास ने असुर का भार अपनी ढाल पर सह लिया। एक घुटने पर सहारा लेकर, शरीर को संतुलित करते हुए, उन्होंने अपनी पूरी ताकत से उठकर शरीर को एक हाथ से असुरों की अगली लहर के रास्ते में फेंक दिया, जिनकी तलवारें और भाले कालिदास के बचाव को भेदने की कोशिश कर रहे थे। असुर लड़खड़ा गए, शरीर से अलग हो गए, और समय और जगह के उन अतिरिक्त सेकंडों का फायदा उठाते हुए, कालिदास ने हमला कर दिया। असुरों के खून से लथपथ, किसी बुरे सपने के प्रेत की तरह, अपनी तलवार को भयंकर, खून से लथपथ चापों में घुमाते हुए, विशालकाय कालिदास ने असुरों पर वार किए और उन्हें चीरते हुए चारों को एक के बाद एक ढेर कर दिया।

चारों ओर युद्ध का शोर गूंज रहा था, क्रोध की चीखें आतंक और पीड़ा की सिसकियों से टकरा रही थीं क्योंकि हूण सेना असुरों के साथ एक क्रूर संघर्ष में उलझी हुई थी। कहीं, एक घोड़ा घबराहट में हिनहिनाया, जिसकी आवाज़ याहब्रे की रंभाने की आवाज़ में दब गई। खाशी दुर के पीछे चलते हुए, कालिदास ने अपनी नज़र के कोने से देखा कि एक युवा हूण धूल से लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला, जिसकी पीठ में तलवार गहरी धंसी हुई थी। जैसे ही हवा साफ हुई और मैदान धीरे-धीरे खुला, गिरे हुए शरीरों की संख्या—लगभग बराबर संख्या में मनुष्य और असुर—उस विशालकाय योद्धा के लिए एक सदमा बनकर आई। बाणों की एक अंतिम बौछार ऊपर से गुजरी, मृत्यु का एक झुंड असुरों को निशाना बना रहा था इससे पहले कि वे मनुष्यों को घातक रूप से कुचल दें। कालिदास ने देखा कि अधिकांश हूण योद्धा अपने घोड़ों को छोड़कर पैदल ही असुरों से लड़ने के लिए निकल पड़े थे।

दोनों में से असुर कहीं अधिक दुर्जेय थे, लेकिन हूणों में बल की कमी को उन्होंने साहस और क्रूरता से पूरा किया। वे झुंड में असुरों पर टूट पड़े, एक या दो योद्धा हमेशा स्वयं को बलिदान कर देते थे ताकि बाकी लोग आगे बढ़कर उनका वध कर

सकें। फिर भी, रेगिस्तानी योद्धा महिषों का मुकाबला नहीं कर सके, जिन्होंने अपनी कुल्हाड़ियों से उन्हें घास की तरह काट डाला, जिससे मैदान जल्दी ही क्षत-विक्षत शवों से भर गया। लेकिन महिषों के इस आक्रमण का याह'ब्रे ने डटकर मुकाबला किया। उन्होंने असुरों को पैरों तले रौंद डाला और महिषों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, फिर शवों को खाने लगे, बिजली से भरे उनके मुंह दावत की उम्मीद में चौड़े खुल गए। हर जगह, हवा में रक्तपिपासा था, जमीन खून से लथपथ थी।

"इति," खशी दुर दक्षिणपंथी विचारधारा से ताल्लुक रखते थे।

"राजा कहाँ है?" कालिदास ने मुखिया के पास पहुँचते हुए पूछा।

खशी दुर ने तीस कदम दूर उठते धूल के नए बादल की ओर इशारा करते हुए कहा, "जल्दी करो।"

तभी, लगभग आधा दर्जन बलवान असुर लड़ाई को चीरते हुए उन दोनों पुरुषों पर हमला करने के लिए आगे बढ़े।

"ज़ुह उ'ज़ा," कालिदास ने असुरों की ओर मुड़ते हुए सरदार पर चिल्लाकर कहा।

असुरों के पास गति और अचानक हमला करने की क्षमता थी, इसलिए विशालकाय राक्षस ने उनके हमलों को रोकने की कोशिश में अपनी ढाल पर लगातार वार झेले। उसे कमजोर पड़ते देख, असुर उस पर पुरजोर हमला करने लगे, उसके करीब आ गए और उसे हिलने-डुलने का भी मौका नहीं दिया, बल्कि एक ऐसे मौके की तलाश में थे जिसका वे फायदा उठा सकें।

तलवारों और भालों की बौछार से कालिदास की ढाल पर प्रहार हो रहा था, ऐसे में उन्होंने पीछे मुड़कर एक नज़र डाली यह देखने के लिए कि क्या खशी दुर सम्राट के पीछे गया है। लेकिन उन्होंने देखा कि एक युद्धमहिष्कार युद्धक्षेत्र से बाहर निकलकर आ रहा है, अपनी कुल्हाड़ी से एक हूण का सिर दो टुकड़ों में काट रहा है और दूसरे की पीठ चीर रहा है—और फिर सीधे सरदार की ओर बढ़ रहा है। हूण योद्धाओं के एक छोटे समूह ने महिषा से मुकाबला करने की कोशिश की, लेकिन उस राक्षस ने उन्हें एक तरफ धकेल दिया और खशी दुर के रास्ते में आकर धूल के गुबार तक पहुँचने का रास्ता रोक दिया।

कालिदास महिष की दूरी का अंदाज़ा लगा ही रहे थे कि एक भाला उनकी बांह में जा लगा, जिससे उनके शरीर में तेज़ दर्द की लहर दौड़ गई। अपने आप पर क्रोधित होकर, विशालकाय कालिदास घूमे और अपनी ढाल से हमलावरों पर वार किया,

उन्हें पीछे धकेलते हुए और अपनी भुजा घुमाने के लिए जगह बनाते हुए। एक तलवार उनके पेट में पसलियों के ठीक नीचे से निकल गई, लेकिन अपने हमलावर को वार करने की दूरी पर पाकर, कालिदास ने दांत पीसते हुए ऊपर की ओर वार किया, जिससे असुर का पेट चीर गया। दूसरे असुर की छाती में कृपाण घोंपते हुए, वे अपने अगले लक्ष्य को चिह्नित कर ही रहे थे कि अवंती से सैनिकों की एक टुकड़ी उनकी सहायता के लिए दौड़ती हुई आ गई।

"इनसे निपटो," उसने हांफते हुए अपनी तलवार झटक कर छुड़ा ली।

भाले के घाव से उसका बायां हाथ बुरी तरह जल रहा था, खून पसीने के साथ मिलकर उसके हाथ से बह रहा था, लेकिन दर्द को अनदेखा करते हुए कालिदास ने खाशी दुर और महिषा पर ध्यान केंद्रित किया। श्योर ने फुर्ती पाने के लिए बुद्धिमानी से अपना घोड़ा छोड़ दिया था, लेकिन अपने भारी-भरकम शरीर और पहुंच के कारण महिषा का पलड़ा भारी था, वह अपनी कुल्हाड़ी से खाशी दुर पर बार-बार वार कर रहा था। सरदार के लिए सबसे अच्छा यही संभव था कि वह उसकी घातक मारक क्षमता से दूर रहे।

उस राक्षस पर अपनी निगाहें गड़ाए कालिदास खशी दुर की ओर दौड़े। आधे रास्ते में ही उन्होंने देखा कि एक असुर बगल से उनके मुखिया की ओर दौड़ रहा है; बिना रुके कालिदास ने अपनी तलवार को घुमाते हुए फेंक दिया। विशाल तलवार असुर के बाएं हिस्से में लगी और कनपटी से धड़ तक लगभग दो हिस्सों में बंट गई। दोनों हाथों में एक-एक भाला लेकर कालिदास ने झुककर महिषा की ओर कदम बढ़ाया।

अपनी गति बढ़ाते हुए और अपनी नसों में अचानक उमड़ती अदम्य शक्ति का अनुभव करते हुए, उस विशालकाय ने आधा दर्जन कदम बढ़ाए और महिषा पर छलांग लगा दी। उसे हवा में देखकर, उस राक्षस ने अपनी कुल्हाड़ी घुमाई, लेकिन कालिदास बहुत तेज़ थे; भारी, दोधारी हथियार के चलने से पहले ही, राक्षस महिषा से टकरा गया, जिससे कुल्हाड़ी उसके हाथों से गिर गई और राक्षस लड़खड़ा गया।

फिर, इससे पहले कि महिषा अपना संतुलन वापस पा पाता—या होश में आ पाता —बड़े सलाहकार ने दोनों भाले उसकी मांसल गर्दन के किनारों में जबरदस्त बल से घुसा दिए, जिससे भाले की नोकें गहराई तक धंस गईं और भाले सीधे अंदर तक घुस गए। कटी हुई धमनियों से काला खून बहने लगा।

महिषा के होठों से एक दयनीय, कर्कश मिमियाहट निकली और वह पीठ के बल गिरकर स्थिर हो गया, बाइसन जैसी आंखें आकाश की ओर टकटकी लगाए हुए थीं, मिमियाहट के थमने के साथ ही उसके भाले कांपते हुए स्थिर हो गए।

एक गहरी आह भरते हुए, कालिदास मृत प्राणी से पीछे हट गए।

"ज़ुह त्रा'ख जाओ।" खशी दुर ने महिषा से लेकर विशाल तक को अविश्वास से देखा।

कालिदास ने आश्चर्य से अपने हाथों का अवलोकन किया, उन्हें पलटकर देखा और मुट्ठी में भींच लिया। उन्हें अभी भी उनमें शक्ति का एक अजीब, मदहोश कर देने वाला प्रवाह महसूस हो रहा था। "हाँ, मैंने इसे मार डाला," उन्होंने चिंतनशील भाव से सिर हिलाया। थोड़ी देर रुकने के बाद, "चलो चलें।"

कुछ देर पहले मारे गए असुर से अपनी तलवार वापस लेने के लिए लौटते हुए, सलाहकार ने मैदान पर एक नज़र डाली। दोनों पक्ष बराबरी पर थे, और याहब्रे ने अपना पूरा ज़ोर लगा दिया था, वे असुरों और महिषों पर जमकर प्रहार कर रहे थे। यह कहना मुश्किल था कि यह लड़ाई कब तक चलेगी।

"चलो चलें," सरदार ने कालिदास के घोड़े की लगाम आगे बढ़ाते हुए कहा।

उस दैत्य ने मृत असुर के शरीर से अपनी तलवार खींच ली।

दोनों व्यक्ति धूल भरी आंधी में अंधे होकर घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़े, उन्हें पता नहीं था कि राजा या द्रोइबा कहाँ और कैसे मिलेंगे। वे गोल-गोल भटकते रहे, देखने और सांस लेने के लिए संघर्ष करते रहे, तभी धूल के बवंडर से एक आकृति प्रकट हुई।

यह ड्रोइबा था। पैदल। अकेला।

"असो सुमरात?" कालिदास ने खशी दुर को सम्राट के बारे में पूछते हुए सुना।

पार्षद को तांत्रिक के अस्पष्ट उत्तर का कुछ भी सुनाई नहीं दिया। लेकिन मुखिया को घबराहट भरी निगाहों से देखते हुए देखकर वह समझ गया कि चिंता का कारण है।

"क्या हुआ?" दैत्य ने अपने वाहन को और करीब लाते हुए उसकी कांपती हुई आवाज को सुना।

"किसी ने उन पर हमला किया। सम्राट का संतुलन बिगड़ गया और वह गिर पड़ा, और जब वह उठा तो घोड़ा मर चुका था—और सम्राट या उसके हमलावर का कोई

निशान नहीं था।”

***

उससे बहुत नीचे, अवंती की मानव सेना ने असुरों का सामना धातु और क्रोध के एक भयंकर टकराव में किया, लेकिन कुबेर के लिए, जो उज्जैनी के दक्षिण में चट्टानी पहाड़ियों के ऊपर, अपने पंखों के नीचे शाम की हवा के साथ ऊँचाई पर उड़ रहा था, युद्ध की आवाजें लहरों की गर्जना की तरह दूर और असंबद्ध महसूस हुईं।

यह युद्ध सीधे तौर पर उससे संबंधित नहीं था। मनुष्यों को असुरों द्वारा उन्हें रोकने के लिए किए जाने वाले हर प्रयास का सामना करना ही था, और वह जानता था कि परिणाम सुखद नहीं होगा। उसकी उम्मीद यही थी कि असुर इतने विचलित हो जाएंगे कि पहाड़ियों की ओर उड़ते हुए असंख्य बाज़ों को देख नहीं पाएंगे। एक बार जब उन्हें अपने लक्ष्य दिखाई दे जाएंगे—और एक बार जब उन्हें शुक्राचार्य के पुत्रों की रक्षा करने वाले जादू का कुछ अंदाजा हो जाएगा—तो यक्ष अपना रूप बदलकर हमला कर देंगे... और तब असुरों के लिए भाइयों को बचाना असंभव हो जाएगा।

जैसे-जैसे ढलान कम होती गई और ज़मीन गहरी खाइयों और नालों से भरती गई, कुबेर ने अनुमान लगाया कि वे उस जगह से ज़्यादा दूर नहीं हैं जहाँ चंदासुर और अमरका उज्जैन का विनाश कर रहे थे। यक्ष स्वामी ने अपने दाहिनी ओर उड़ते हुए बाज़ पर नज़र डाली—वही बाज़ जिसने भाइयों का पता लगाया था—और बाज़ ने पलकें झपकाईं और अपना सिर झुकाकर कुबेर के अनुमान की पुष्टि की। यक्ष स्वामी ने अपना ध्यान फिर से पहाड़ियों पर लगाया, जो छोटे-छोटे शिकारों से भरी हुई थीं, जिन्हें अब वह बाज़ की तेज़ नज़र से आसानी से देख सकता था।

बाज़ों ने अभी पहली पहाड़ी की चोटी भी नहीं चढ़ी थी कि कुबेर की नज़र एक खाई के ऊपर खड़ी एक आकृति पर पड़ी, जो ज़मीन के धुंधले भूरे और हरे रंग के बीच सुनहरी चमक बिखेर रही थी। जिज्ञासा से प्रेरित होकर, यक्ष ने उस आकृति पर अपना ध्यान केंद्रित किया और आनंद की एक लहर उसके मन में उमड़ पड़ी, जिसने उसकी इंद्रियों को व्याकुल कर दिया और उसे सुन्न कर दिया।

कुबेरा अपनी आँखों से और कल्पनाओं में जो कुछ देख रहा था, उससे जूझ रहा था। जितना अधिक वह देखता, उतना ही अधिक वह अभिभूत और असहाय होता चला गया, उस रूप की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गया।

—यह एक जाल है, एक आवाज उसके दिमाग में चीखी—

...इसकी सुंदरता, इसका आकर्षण, इसकी वांछनीयता...

—दूर देखो, दूर देखो, भीतरी आवाज ने खुद को साबित करने के लिए संघर्ष किया —

...लेकिन वह उससे अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था। बल्कि, वह उसे घूरता रहा, उसकी सुंदरता को अपनी आँखों में बसाता रहा, उसे अपनी प्यासी आत्मा में समाहित करता रहा...

वह बेहद खूबसूरत थी; इंद्र जिस अप्सरा को अलका लेकर आए थे, उससे भी कहीं ज्यादा खूबसूरत, जितनी भी अप्सराओं को उन्होंने आज तक देखा था, उनसे कहीं ज्यादा खूबसूरत। उनकी त्वचा सुनहरे रंग की थी, उनके शरीर का हर नग्न अंग प्रेम की गर्माहट बिखेर रहा था; उनके लंबे, खुले बाल हवा में लहरा रहे थे, उनके स्तन और कूल्हे रेशम की तरह कोमल छाया और सिलवटों से उन्हें अपनी ओर खींच रहे थे। उनकी नीली आँखें उन पर मग्न और मदहोश कर देने वाली थीं, लेकिन उनमें बर्फ और बिजली का ऐसा वादा था जिसका विरोध करना नामुमकिन था। उनके होंठ हिले, और इतनी दूरी से भी, वह अपना नाम बेकाबू जुनून में फुसफुसाते हुए सुन सकते थे, एक बेताब कराह जो उनके अंदर की बेताबी को खोज रही थी...

-"क्योंकि"-

नहीं, उसे नज़रअंदाज़ करो, वह नहीं है।

लेकिन उसे नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था क्योंकि वह उसके दिमाग में छाई हुई थी। वह रंगों की एक मोहक, धूप से सराबोर छटा थी; वह प्रेम की मदहोश कर देने वाली खुशबू थी; वह उसकी धड़कनों की तेज़ी थी; वह उसके शरीर में दौड़ते खून का प्रवाह थी। वही सब कुछ थी, और कुबेरा की बस यही इच्छा थी कि उसे अपनी बाहों में भर ले और उसे प्यार से चूम ले। वह उसकी सांसें रोक रही थी...

वह एक भ्रम है।

कुबेरा को एहसास हुआ कि वह सांस नहीं ले पा रहा है।

उसने अपने पंख फड़फड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह लकवाग्रस्त और शक्तिहीन महसूस कर रहा था।

उसके मन में पलक झपकाने और कहीं और देखने का ख्याल आया, लेकिन इसका मतलब होता कि वह उसकी ओर नहीं देख रहा था, और यह विचार इतना

असहनीय था कि वह इस पर विचार भी नहीं कर सकता था।

-"क्योंकि"-

जब उसने प्रेम से उसका नाम पुकारा, तो वह स्वयं को उसमें डूबने देने लगा, डूबता चला गया...

वह गिरने लगा।

नीचे की ढलानों पर, महिषा और एकश्रृंग अवंती की सेना पर टूट पड़े, जिससे मनुष्य और घोड़े दहशत में इधर-उधर भागने लगे। कुल्हाड़ियाँ और भाले मानव रक्त से लथपथ थे, और एकश्रृंग घोड़ों के पेट चीरते हुए सैनिकों को सींगों से मार रहे थे, गिरे हुए लोगों को रौंदते हुए उनकी पसलियों को तोड़ रहे थे और खोपड़ियों को पैरों तले कुचल रहे थे। चारों ओर भय की दुर्गंध फैली हुई थी, क्योंकि कमजोर इच्छाशक्ति वाले लोग असुरों के इस आक्रमण से बचने के लिए भागने लगे थे।

दोनों हाथों से कुल्हाड़ी उठाए, अमर सिंह ने आक्रमणकारी एकश्रृंग का सामना किया। वह क्रूर प्राणी बलवान सलाहकार की ओर तेज़ी से दौड़ता हुआ आया, उसका सिर हिल रहा था और क्रोध से उसकी छोटी-छोटी आँखें सिकुड़ी हुई थीं। अमर सिंह प्रतीक्षा करते रहे, अपनी दृष्टि कवचधारी जानवर से हटाकर उस पर सवार असुर पर डाली, जिसका भाला उनकी ओर था। जब सलाहकार ने अचानक दाईं ओर मुड़ने का नाटक किया, तब वह जानवर पाँच कदम दूर था। एकश्रृंग ने अपने सींगों वाला सिर घुमाया, अमर सिंह का पीछा करते हुए उन्हें घायल करने की कोशिश की; भाला भी घूमा और वार किया, लेकिन अमर सिंह पहले ही विपरीत दिशा में जा चुके थे, और एकश्रृंग के घातक रास्ते से बचने के लिए गोता लगाते हुए और लुढ़कते हुए भाले को पकड़ लिया। उन्होंने असुर को गिराने के लिए भाले को ज़ोर से खींचा, साथ ही अपनी कुल्हाड़ी से जानवर के पेट पर वार किया। लेकिन चौड़ा ब्लेड जानवर के कवच से बस फिसल गया और उसे जरा सा भी नुकसान नहीं पहुंचा पाया।

अमर सिंह और असुर उछलकर खड़े हो गए और भाले के दोनों सिरों को पकड़कर एक-दूसरे से छीनने की कोशिश करने लगे। बलवान और कुशल योद्धा असुर ने सलाहकार से तब तक कड़ा संघर्ष किया जब तक कि अमर सिंह की पकड़ कमजोर नहीं पड़ गई, जिससे असुर को भाला उन पर भेदने का मौका मिल गया। भाला उनके पेट से कुछ ही इंच दूर था जब अमर सिंह थोड़ा हट गए, जिससे भाले

की नोक उनके पास से निकल गई। गति के बल पर असुर उनकी पहुंच में आ गया और एक जोरदार प्रहार से सलाहकार ने अपनी कुल्हाड़ी उनके सिर के किनारे में गाड़ दी।

अमारा सिंह एकश्रृंग का पीछा करने के लिए मुड़े ही थे कि तभी उनके पैरों के पास कोई चीज़ हल्की सी आवाज़ के साथ गिरी। पार्षद ने गिरी हुई वस्तु को देखा, फिर आकाश की ओर देखा।

ऊबड़-खाबड़ ढलानों के एक अन्य हिस्से में, असुरों से घिरी हुई, क्षपनाका ने आकाश की ओर एक नजर डाली। असुर उसके चारों ओर मंडरा रहे थे और वह अब अपने धनुष का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पा रही थी, इसलिए उसने अपने भाले का सहारा लिया, और भाले के डंडे से वारों को रोकते हुए अपने हमलावरों को विष से संक्रमित कर रही थी। असुर योद्धा उसके चारों ओर चीखते और क्षत्रित होते रहे, लेकिन उनके पीछे और भी आ गए, तलवारों और भालों का एक निरंतर प्रहार, क्षपनाका की रक्षा को कमजोर करते हुए, अंततः एक जोरदार गर्जना के साथ, अमर सिंह ने अपनी शिष्या के बगल में रक्त से लथपथ रास्ता बनाया।

"तुम ठीक हो?" उसने चिल्लाकर पूछा।

"हाँ।"

क्षपणका ने अपनी ओर फेंके गए दो भालों को रोक दिया। अपने भाले को घुमाकर, उसने उसका कुंद सिरा एक असुर के गले में घुसा दिया, जिससे उसकी श्वास नली टूट गई। वह दूसरे हमलावर से निपटने के लिए मुड़ ही रही थी कि एक तलवार ने उस असुर को नीचे गिरा दिया। क्षपणका ने अंगमित्र को सिर हिलाकर अभिवादन किया, जो गिरे हुए असुर के ऊपर खड़ा था, जिसका चेहरा दाहिनी भौं के ऊपर गहरे घाव से खून से लथपथ था।

"क्या तुमने बाज देखे?" अमारा सिम्हा ने पूछा।

क्षपणका ने सिर हिलाया। अपने माथे से पसीना पोंछते हुए, उसने फिर से देखा, उसकी आँखें आशंका से चौड़ी हो गईं।

आकाश गिरते हुए पक्षियों से भरा हुआ था। कलाबाजियां करते और तेजी से नीचे गिरते हुए, पंख फड़फड़ाते और हवा के खिलाफ लहराते हुए, सैकड़ों बाज पहाड़ियों पर गिर पड़े।

“यक्षों को असुर भाइयों को ढूंढकर रोकना था...” अमर सिंह बुदबुदाया, उसकी मांसपेशियां सिकुड़कर बड़ी हो गईं, उसके बाल और दाढ़ी का रंग बदलने लगा और वे खुरदुरे हो गए क्योंकि वह नर-सिंह में परिवर्तित होने लगा था,
“...लेकिन लगता है कि उनकी योजना में कुछ बाधा आ गई है।”

***

"वे बहुत सारे हैं, महाराज," पहले सैनिक ने हांफते हुए कहा, उसकी आवाज डर से कांप रही थी, जिससे उसके शब्दों में स्पष्टता नहीं थी।

“ये सब उसी के हैं,” दूसरे सैनिक ने कहा, जिसकी बात पहले वाले से थोड़ी ज़्यादा समझ में आई। वह भी हांफते हुए वरारुची के साथ-साथ दौड़ रहा था, उससे आगे निकलने की कोशिश कर रहा था।

अपनी गति धीमी किए बिना, राजा के भाई ने एक तीक्ष्ण मोड़ लिया, एक हाथ में उरुमी (तलवार) और दूसरे हाथ में ढाल थी। "उसके कई रूप हैं... नकली," उसने सैनिकों को देखते हुए कहा। "बस इतना ही?"

"जी हां, माननीय।"

"कितने?"

दूसरे नंबर पर बोलने वाले सैनिक ने अनिश्चितता से अपना सिर हिलाया। "कई..."

"वे कहाँ हैं?" वरारुची ने झुंझलाते हुए पूछा।

"कुछ लोग कुश्ती के अखाड़ों के आसपास थे, एक को पूर्वी बाजार में देखा गया था, और साहूकार के महल के पास नगर सुरक्षा गश्ती दल पर घात लगाकर हमला किया गया था।"

"गश्ती दल पर कितने लोगों ने हमला किया?" पार्षद ने सुनसान गली में उनके कदमों की गूंज सुनते हुए पूछा।

“माननीय न्यायाधीश महोदय, वे दो थे।”

वररुची के गाल गुस्से से लाल हो उठे। हमले में आठ सैनिक मारे गए थे। आठ लोगों का बदला लेना था।

गली एक चौड़ी सड़क पर खुलती थी, और पार्षद ने दूसरी दिशा से आ रहे सिटी वॉच गश्ती दल के एक दर्जन सैनिकों को देखकर ब्रेक लगा दिया।

“कुछ खबर देने लायक है क्या?” राजा के भाई ने पूछा।

"यहाँ कुछ नहीं है, महाराज," सफ़ेद मूंछों वाले एक हट्टे-कट्टे सैनिक ने उत्तर दिया।

वररुची ने सिर हिलाया। "उस हिस्से की तलाशी लो। हम इस तरफ देखेंगे।"

गश्ती दल ने निर्देशानुसार कार्य किया, जबकि पार्षद और उसके साथी सड़क की ओर मुड़ गए। तीनों ने मुश्किल से दस कदम ही बढ़ाए थे कि एक भयानक चीख ने सुनसान इलाके की खामोशी को चीर दिया।

“उस तरफ,” सैनिकों में से एक ने उस गश्ती दल की दिशा में इशारा किया जिसके पास से वे अभी-अभी गुजरे थे।

एक और तीखी चीख सुनाई दी, जो अचानक ही दब गई। चारों ओर घबराहट और चीख-पुकार मच गई।

"जल्दी करो," वररुची ने दौड़ते हुए कहा।

एक पुराने अशोक वृक्ष के पास से गुज़रते हुए, पार्षद उस गली में तेज़ी से मुड़ गया जिसे गश्ती दल ने चुना था। गली एक संकरे चौक में जाकर खुलती थी, और खुले में कदम रखते ही वरारुची अचानक रुक गया, सामने का दृश्य देखकर वह स्तब्ध रह गया।

छह या सात शव पहले से ही ज़मीन पर पड़े थे, एक दूसरे के ऊपर फैले हुए, उनके सिर क्षत-विक्षत थे, उनके चारों ओर खून जमा था, तीन के चेहरे घने बादलों से घिरे अंधेरे आकाश की ओर थे। उनमें से कोई भी हिलता-डुलता या साँस लेता हुआ प्रतीत नहीं हो रहा था, और वरारुची ने उन पर ध्यान नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने अपना ध्यान उन तीन सैनिकों पर केंद्रित किया जो अभी भी खड़े थे—और उनके बीच खड़े सुनहरे बालों वाले, काले शरीर वाले उस आकृति पर, जो उन सभी से कहीं अधिक विशाल था, जिसके सिर से अलंकृत सींग निकले हुए थे। उस आकृति के हाथ से एक क्रूर, नुकीली गदा लटक रही थी, जिससे खून टपक रहा था... खून टपकता हुआ वह गदा अवंती के एक सैनिक की ओर बढ़ रही थी...

वार ज़ोरदार था, सैनिक के सिर का एक हिस्सा फट गया और खून की फव्वारे हवा में फैल गए। जैसे ही वह आदमी गिर पड़ा, बचे हुए दो सैनिकों में से एक घबराकर भाग गया और गली से बाहर निकलने की हड़बड़ी में वरारुची को धक्का देकर एक तरफ कर दिया, जिससे आखिरी सैनिक उस विशालकाय का अकेले सामना करने के लिए रह गया। उस आकृति ने एक बार फिर अपना गदा उठाया,

लेकिन वरारुची पहले ही हमला करने के लिए तैयार था, उसकी मुट्ठी में उरुमी खुल रही थी। सैनिक को एक तरफ धकेलते हुए, उसने उस विशालकाय पर वार किया, लचीला ब्लेड सांप की तरह विशाल काले धड़ की ओर बढ़ा और उसे चीर डाला...

...उसके आर-पार... मानो हवा को चीरते हुए... उस कट के साथ-साथ विशालकाय शरीर लहरों की तरह हिल रहा था...

...और फिर तलवार शरीर के आर-पार निकल गई, बिना उस दैत्य की त्वचा पर जरा सी भी खरोंच या निशान छोड़े।

और अब, गदा एक करारा प्रहार करते हुए वरारुची के सिर पर गिर रही थी, उसके नुकीले और क्रूर कांटे त्वचा, मांस और खोपड़ी को भेदने के लिए तैयार थे।

जैसे ही गदा वार करने ही वाली थी, पार्षद उसके रास्ते से हट गया। वार हवा में ही निकल गया, जिससे दैत्य का संतुलन बिगड़ गया और वह आगे की ओर गिर पड़ा। वरारुची ने एक बार फिर दैत्य की गर्दन पर उरुमी तलवार चलाई, लेकिन तलवार एक बार फिर उसके काले शरीर के आर-पार हो गई। नज़दीकी का फ़ायदा उठाते हुए दैत्य ने अपना कांटेदार दस्ताना वरारुची के पेट में घुसा दिया, लेकिन मुक्का लगने से पहले ही वरारुची फिसलकर दैत्य के पीछे से निकल गया। एक बार फिर दैत्य का संतुलन बिगड़ गया; एक बार फिर पार्षद ने अपनी ढाल के किनारे से दैत्य की गर्दन तोड़ने की कोशिश की; एक बार फिर ढाल का कोई असर नहीं हुआ। दैत्य ने अपनी कांटेदार मुट्ठी घुमाई, जिसे वरारुची ने आसानी से बचा लिया... दोनों ने एक अजीबोगरीब तरीके से द्वंद्व युद्ध किया, एक-दूसरे के चारों ओर नाचते हुए, अपनी पूरी ताकत से वार करते हुए, लेकिन एक भी वार करने में नाकाम रहे...

जैसे-जैसे उसकी हताशा बढ़ती गई और उसने एक और खतरनाक हमले से खुद को बचाया, पार्षद को इस चीज़ से उलझने की निरर्थकता का एहसास हुआ। चाहे जो भी हो, उसे घायल करना तो दूर, मारना भी असंभव था, इसलिए इससे निपटने का कोई बेहतर तरीका होना ही चाहिए...

वरारुची के बाईं ओर से, जहाँ गली चौक में बदल रही थी, नई चीखें सुनाई दीं। उस विशालकाय से दूरी बनाते हुए, पार्षद ने गली के मुहाने पर नज़र डाली—जहाँ उसके साथ आए दो सैनिक पत्थरों पर पड़े थे, जिन्हें उसी विशालकाय के हूबहू रूप ने बुरी तरह से पीट-पीट कर मार डाला था, जिससे वह लड़ रहा था। जिन सैनिकों को उसने अभी-अभी मारा था, उनके ऊपर से कदम रखते हुए, उस विशालकाय ने

उस सैनिक पर ध्यान केंद्रित किया जिसे वरारुची ने पहले बचाया था। सैनिक भय से दूसरे विशालकाय को घूर रहा था, उसके दिमाग में यह बात नहीं आ रही थी कि विशालकाय ने अपने सिर के ऊपर गदा उठा रखी है...

"दूर हटो!" पार्षद चिल्लाया और वार रोकने के लिए चौक के उस पार छलांग लगा दी। अपनी ढाल ऊपर उठाकर, उसने विशालकाय पर हमला कर दिया, उसका निशाना गदा पकड़े हुए हाथ पर था ताकि वह विशालकाय का निशाना भटका सके... लेकिन वार करने के बजाय, वरारुची विशालकाय के आर-पार निकल गया और दूर की दीवार से टकराकर ढेर हो गया, हाँफता हुआ।

गदा के मांस से टकराने की आवाज के बाद हड्डियों के चूर-चूर होने की आवाज आई, जिसके बाद दर्द से भरी एक कराह निकली जो पैदा होते ही गले में दब गई।

फिर किसी शरीर के जमीन पर गिरने की जोरदार आवाज सुनाई दी।

अभी भी हांफते हुए, गिरने से शरीर पर चोट के निशान और दर्द से कराहते हुए, वरारुची ने मुड़कर देखा तो चौक में पड़े मृत शरीरों के ऊपर दो दैत्य खड़े थे, जो दीवार से सटकर लेटे हुए उस पर नीचे की ओर देख रहे थे...

***

सोने की तरह चमकती आंखें विक्रमदित्य की आंखों में समा गईं, जब वह तलवार पर नियंत्रण पाने के लिए विशाल कंधों वाले असुर से जूझ रहा था।

अपनी लंबाई और वजन का फायदा उठाते हुए, असुर ने तलवार की मूठ पर जबरदस्त दबाव डाला और दोनों हाथों का इस्तेमाल करके अधिक बल लगाया। राजा के घुटने तनाव से झुक गए और उनके हाथ बुरी तरह कांपने लगे क्योंकि वे तलवार की चौड़ी धार को अपना गला काटने से रोकने के लिए संघर्ष कर रहे थे। फिर भी, तलवार लगातार करीब आती जा रही थी, असुर विक्रमादित्य के हाथों को मरोड़ रहा था और राजा का पसीने से तर चेहरा खुद को बचाने की बेताब कोशिश में विकृत हो रहा था...

धूल ने उन्हें एक लबादे की तरह ढक लिया था, जो घना और अभेद्य था।

असुर ने अविश्वसनीय गति और शक्ति से उन पर घात लगाकर हमला किया, धूल से उछलकर घोड़े पर वार किया और राजा या द्रोइब के हमले का पता चलने से पहले ही उसे गिरा दिया। विक्रमादित्य गिर पड़े और लुढ़कते हुए घोड़े से खुद को

छुड़ा लिया, लेकिन जैसे ही वे उठे और अपनी तलवारें पकड़ने वाले थे, असुर ने उन पर वार करना शुरू कर दिया। राजा को अपनी सारी कुशलता और थोड़ी सी किस्मत का सहारा लेकर असुर के हाथ को जकड़ना पड़ा।

अपनी बची हुई सारी शक्ति का इस्तेमाल करते हुए, सम्राट ने धीरे-धीरे असुर के हाथों को पीछे धकेल दिया। अपने प्रतिद्वंद्वी को अचंभित करने की उम्मीद में, उन्होंने अपना माथा उसके खुरदुरे चेहरे पर दे मारा। असुर पलकें झपकाते हुए पीछे की ओर झपटा, उसके होंठ फट गए और खून बहने लगा, लेकिन इससे पहले कि राजा कुछ कर पाते, असुर ने अपना सिर आगे की ओर झटक कर उन्हें जोरदार टक्कर मार दी।

विक्रमादित्य की नाक में असहनीय दर्द के बीच रंगीन चिंगारियों की बौछार हुई, और उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया, उनके पैर लड़खड़ाकर गिर पड़े। घुटनों के बल बैठे, असुर के हाथों को थामे, तलवार को छोड़ने से हठपूर्वक इनकार करते हुए, सम्राट एक शराबी की तरह लड़खड़ा रहे थे, टूटी हुई नाक से बहते खून का स्वाद उनके गले में अटक रहा था, और वे अपना होश संभालने की कोशिश कर रहे थे...

मौका पाकर असुर ने राजा की ढीली पड़ती पकड़ से अपने हाथ छुड़ा लिए। फिर विक्रमादित्य के कंधे पर मजबूती से पैर रखकर उसने जोरदार लात मारी, जिससे राजा पीठ के बल गिर पड़े।

गिरने के झटके से विक्रमादित्य को होश आया। आँखें खोलकर उन्होंने अपने ऊपर मंडराते असुर को देखा, जिसके माथे से मेढ़े के सींग निकले हुए थे, जो उसे ऊँचाई और भव्यता प्रदान कर रहे थे। असुर के सिर के ऊपर धूल का बवंडर उठ रहा था, और वह राजा को घूर रहा था, उसके घायल होठों पर एक शरारती मुस्कान थी।

"सोचा था कि धूल की आड़ लेकर भाग जाओगे?" असुर ने दर्द से कराहते हुए पूछा। "चालाक, पर मेरी दृष्टि से बच नहीं पाए। मैं सब कुछ देख सकता हूँ। अंधेरे में, तूफान में, इस धूल के बीच से। मेरी आँखें विशेष हैं, इसीलिए मुझे हिरण्यक्ष कहते हैं।"

बिना किसी चेतावनी के, और मन में चल रही बातों का कोई संकेत दिए बिना, असुर ने अपनी तलवार उठाई और विक्रमादित्य पर वार किया। तलवार पलक

झपकते ही नीचे आई, लेकिन सम्राट पहले ही उसके रास्ते से हट चुके थे; जब तक तलवार की नोक उन तक पहुँची, वे वहाँ से जा चुके थे, तलवार उनकी पीठ से एक इंच दूर हवा में सरसराती हुई निकल गई। इससे असुर क्रोधित हो गया, और उसने इतनी भयंकर शक्ति से तलवार पलटी मारी कि मानो किसी का सिर धड़ से अलग कर देता। सम्राट बड़ी मुश्किल से बच पाए।

हिरण्याक्ष ने तीसरी बार प्रहार किया, और एक बार फिर, विक्रमादित्य ने छटपटाते हुए वार से खुद को बचाया... एक घुटने पर बैठकर, तलवारें निकालने के लिए पूर्णतया तैयार हो गए। तलवारें एक साथ 'सीं!' की ध्वनि के साथ म्यान से निकलीं, जिसने युद्ध के अन्य सभी शोरों को भेद दिया, और विक्रमादित्य ने हिरण्याक्ष के अगले प्रहार को रोकने और मोड़ने के लिए तलवारें उठाईं।

बिल्ली जैसी फुर्ती और तेज़ी से उठते हुए, उसने असुर की तलवार को रोकते हुए और उसकी रक्षा पंक्ति को भेदते हुए, उसकी बांह और छाती पर वार किया, जिससे असुर आश्चर्य से दो कदम पीछे हट गया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, राजा भी पीछे हट गया, और दोनों योद्धा धूल के बवंडर के बीच एक-दूसरे को घूरते हुए झुक गए। सम्राट की तलवारों की नोकों को छोटी-छोटी लपटें चाट रही थीं।

"मैं तुमसे तब तक लड़ सकता हूँ जब तक हम में से कोई एक गिर न जाए, लेकिन मेरे पास समय नहीं है," विक्रमादित्य ने नरक की आग को हवा में लहराते हुए कहा।

हिरण्याक्ष की निगाहें राजा के रक्तरंजित चेहरे से हटकर तलवारों पर टिक गईं और उसके गूदेदार होंठ एक घिनौनी मुस्कान में बदल गए। "क्या किसी ने तुम्हें नहीं बताया कि दिति के बच्चों पर नरक की आग का कोई असर नहीं होता?"

असुर की सुनहरी आंखों में देखते ही विक्रमादित्य के हाथ रुक गए।

याद रखें, चुड़ैलें केवल बुलाए जाने पर ही आती हैं, और वे युद्ध के मैदान में भी अपने स्वामी के मित्रों और शत्रुओं के बीच अंतर कर सकती हैं।

लायुशी के सदियों पुराने शब्द सम्राट के मन में फिर से गूंज उठे। उन्होंने परित्यक्त हूण सेना और आंगन के बीचोंबीच खड़े उस छोटे, काले रंग के राक्षस की छवि देखी, जो कालिदास और उन्हें नरक की आग के बारे में बता रहा था...

विक्रमादित्य ने तलवारें चलाते समय हिरण्याक्ष से अपनी निगाहें नहीं हटाईं।

इन तलवारों के बारे में एक और बात है जो आपको जाननी चाहिए...

लपटें भड़क उठीं और उछलती हुई लंबी होती चली गईं।

जब दिति ने इन तलवारों को बनाया, तो उन्होंने इनमें शक्तिशाली मंत्र डाले ताकि नरक की चुड़ैलें कभी भी उनकी संतान को नुकसान न पहुंचा सकें। हालांकि, जब दिति आशीर्वाद लेने के लिए तलवारें ऋषि कश्यप के पास ले गईं, तो ऋषि ने दो कार्य किए। इनके दुरुपयोग को रोकने के लिए, उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि तलवारें केवल उन्हीं लोगों की आज्ञा मानेंगी जो वास्तव में श्रेष्ठ और गुणी हों...

अब लपटें आग की पट्टियों में तब्दील हो गई थीं, जो नरक की आग की चोटियों से निकल रही थीं।

तब ऋषि ने दिति के उन मंत्रों को निरस्त करने और रद्द करने के लिए और भी शक्तिशाली मंत्रों का आह्वान किया, जिनसे असुरों को चुड़ैलों से सुरक्षा प्राप्त हुई थी।

स्तब्ध और भ्रमित हिरण्याक्ष राजा के हाथों में धधकती तलवारों को घूरता रहा।

ताकि इन तलवारों के धारक को आवश्यकता पड़ने पर असुरों को दंडित करने से कोई नहीं रोक सके। ऋषि कश्यप ने इसे मेरे गुरु पौरव के अलावा सभी से गुप्त रखा, और नरक की अग्नियों के नए धारक के रूप में, अवंती के राजा, आपको भी इसे गुप्त रखना होगा। ताकि दिति के दुष्ट वंशज लापरवाह और नरक की अग्नियों के प्रकोप के लिए अप्रस्तुत रहें...

"नहीं।"

तलवार उठाए हिरण्याक्ष क्रोध, भय और अविश्वास से भरी चीख के साथ विक्रमादित्य पर टूट पड़ा। लेकिन असुर आधी दूरी भी तय नहीं कर पाया था कि राजा ने नरक की आग का एक गोला उसकी ओर फेंक दिया। आग की वह पेटी टूटकर घूमी और हिरण्याक्ष की छाती पर ज़ोर से लगी, जिससे वह पीछे की ओर गिर पड़ा। असुर चीख उठा क्योंकि लपटें उसके शरीर में घुसकर उसे जला रही थीं।

सम्राट ने तलवारें चलाईं, जिससे आग की लपटें हवा में तैरने लगीं। मैदान पर फैली धूल चमत्कारिक रूप से एक साथ छंट गई और प्रकाश गहरा और धुंधला हो गया, जैसे भयानक परछाइयों ने सूरज को ढक लिया हो। मैदान में सन्नाटा छा गया, और योद्धा युद्ध रोककर आश्चर्य से ऊपर देखने लगे, आग की लपटों को आपस में लिपटकर नरक की तीन भयानक चुड़ैलों को जन्म देते हुए देखने लगे। अपने खुले काले मुँह से चीखती हुई आग उगलते हुए, वे चुड़ैलें अलग हो गईं और अंधेरे होते आकाश में भूखे शिकारियों की तरह उड़ने लगीं।

चुड़ैलें युद्धक्षेत्र पर टूट पड़ीं और असुरों और महिषों को चुन-चुनकर दंड देने लगीं। हिरण्याक्ष आग की लपटों में लिपटा हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा; मृत्यु की पीड़ा झेल रहे असुर को देखकर विक्रमादित्य की दृष्टि धुंधली हो गई और पेट में तेज दर्द होने से वे लड़खड़ा गए। वे झुके हुए तब तक प्रतीक्षा करते रहे जब तक उनकी दृष्टि स्पष्ट नहीं हो गई... फिर सीधे खड़े होकर उन्होंने अपने पेट के एक तरफ से नाभि तक फैले घाव को देखा। घाव से बहुत खून बह रहा था और देखने से लग रहा था कि वह गहरा था।

सम्राट को एक बार फिर चक्कर आने लगे, उनके पैर लड़खड़ाने लगे और नरक की आग पर उनकी पकड़ कमजोर पड़ने लगी। जैसे ही वे एक घुटने पर गिरे, कालिदास, खशी दुर और द्रोइबा उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़े।

"भाई," कालिदास ने राजा को कंधों से पकड़कर सहारा देते हुए कहा।

विक्रमादित्य के सामने बैठकर, द्रोइबा ने घाव का निरीक्षण किया और अपनी उंगलियों से उसे टटोला। राजा ने गहरी साँस ली और द्रोइबा ने श्योर से कुछ कहा।

"द्रोइबा कहता है कि यह अच्छा नहीं है," कालिदास ने अनुवाद किया। "तुम्हें सवारी नहीं करनी चाहिए।"

विक्रमादित्य ने थकावट भरे लेकिन दृढ़ स्वर में अपना सिर हिलाया। फिर, नरक की अग्नियों के सिरों को सहारा देने के लिए जमीन में गाड़ते हुए, उन्होंने तलवारों की मूठों को कसकर पकड़ा और खुद को सीधा खड़ा किया, संतुलन बनाए रखने के दौरान वे लड़खड़ाते रहे।

"तुम इस तरह चलते नहीं रह सकते—" खशी दुर ने आपत्ति जताते हुए कहा।

"मैं रुक नहीं सकता," सम्राट ने दृढ़ता से कहा। उन्होंने उज्जैनी की ओर देखा। "समय नहीं है। क्या पता, मेरे शहर को बचाने में पहले ही बहुत देर हो चुकी हो।"

***

बाजों को गिरते हुए देखकर होलिका शुक्राचार्य के विचार की सरलता पर आश्चर्यचकित रह गई।

व्यालों की पराजय से जुड़े तथ्य सामने आने के बाद से ही पाताल में उज्जैन की रक्षा में यक्षों की भूमिका को लेकर आशंका बनी हुई थी। यक्ष अद्भुत रूपान्तरण करने में सक्षम थे, वे अपनी अद्वितीय जादुई शक्तियों की सहायता से लगभग कोई

भी रूप धारण कर सकते थे, और इसी कारण वे दुर्जेय शत्रु बन जाते थे। जैसा कि हिरण्यक्ष ने कहा था, "यक्ष किसी भी चीज़ का विपरीत रूप धारण करके उसका प्रतिकार कर सकते हैं। यदि हमें सफल होना है, तो हमें पहले उन्हें निष्क्रिय करने का तरीका खोजना होगा।"

प्रस्थान में एक दिन से भी कम समय बचा था और अभी तक कोई समाधान नहीं मिल पा रहा था, तभी प्रधान पुरोहित उनके पास आए। उन्होंने पूछा, "यक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?"

किसी को पता नहीं था, क्योंकि यक्षों में कोई कमजोरी नहीं होती थी।

"लेकिन उन्होंने ऐसा किया," शुक्राचार्य ने जोर देकर कहा था। "यह उनकी कमजोरी थी जिसकी वजह से उन्हें देवलोक गंवाना पड़ा।"

"बेशक, अप्सराओं के प्रति एक कमजोरी," होलिका ने कहा।

"सौंदर्य के प्रति कमजोरी, जिसका प्रतीक अप्सराएं हैं," शुक्राचार्य ने सुधार करते हुए कहा। "और यही कमजोरी तुम भुनाओगी, होलिका।"

हालांकि उनके पास यह अनुमान लगाने का कोई साधन नहीं था कि यक्ष युद्ध में किस रूप में प्रवेश करेंगे, तर्क यही कहता था कि वे ही अमरका और चंदासुर पर आक्रमण का नेतृत्व करेंगे, और मनुष्यों द्वारा असुर सेना से लड़ते समय वेश बदलकर घेराबंदी को तोड़कर अंदर घुस जाएंगे। इसलिए, वह खाई के शीर्ष पर प्रतीक्षा कर रही थी, और अपने मंत्रों का उपयोग करके अपनी एक छवि प्रदर्शित कर रही थी - एक ऐसी छवि जिसमें उसकी सुंदरता का हर पहलू कई गुना निखर रहा था, जिससे वह उसे देखने वाले हर यक्ष के लिए मोहक बन रही थी, और उन्हें मनुष्यों की सहायता करने के अपने कार्य से विचलित कर रही थी...

यक्षों का बाज का रूप धारण करना महज़ सौभाग्य था। बाज की उत्कृष्ट दृष्टि ने होलिका के प्रभाव को और भी बढ़ा दिया, जिससे यक्षों के मन में इतना अधिक संवेदी आवेश उत्पन्न हो गया कि वे उससे निपटने में असमर्थ हो गए। परिणामस्वरूप, वे आकाश से नीचे गिर रहे थे और मृत्यु की ओर चक्कर लगा रहे थे।

"चुड़ैल रानी, एक समस्या है..."

होलिका ने पीछे मुड़कर देखा तो उसके पीछे एक असुर का सेवक खड़ा था। "क्या बात है?" उसने पूछा, और अब जब उसका नग्न शरीर अपना उद्देश्य पूरा कर चुका

था, तो उसने अपने ऊपर एक कपड़ा लपेट लिया।

"चंदासुर और अमरका अहि पर अपना नियंत्रण खो रहे हैं।"

जादूगरनी ने अपने सेवक को धक्का देकर खाई में उतरते हुए पहाड़ी के पश्चिमी ढलान पर चढ़ाई की। युद्ध का शोर उसके पीछे छूटता चला गया। वह ढलान पर चढ़कर उस जगह पहुँची जहाँ कुछ दर्जन असुर एक छोटी गुफा की रखवाली कर रहे थे। झुककर वह गुफा में दाखिल हुई, जो फर्श पर रखे सात दीपों से रोशन थी। गुफा में कोयले, आटे और सिंदूर से एक सर्प का मंडल बना हुआ था। चंदासुर और अमरका मंडल के केंद्र में ताड़ के पत्तों का एक छोटा ढेर अपनी गोद में रखकर बैठे थे, जबकि उनके सामने गर्म पानी से भरा एक तांबे का पात्र उबल रहा था। दोनों भाइयों की गर्दन और कंधों से पसीने की धाराएँ बह रही थीं और उनके चेहरे एकाग्रता से विकृत हो रहे थे।

"क्या हो रहा है?"

जवाब देने के बजाय, चंदासुर ने भौंहें चढ़ा लीं और अपनी आँखें इतनी सिकोड़ लीं कि उसके गोल-मटोल चाँद जैसे चेहरे पर वे लगभग नर्म-सीधी दिख रही थीं। अमरका ने ताड़ के पत्तों से पढ़ा और तांबे के कटोरे से भाप की दो लकीरें उठीं। एक तेज चाकू से चंदासुर ने अपने अंगूठे पर चीरा लगाया—होलिका ने देखा कि असुर की अधिकांश उंगलियों पर पहले से ही कट लगे हुए थे—और खून को बहने दिया, फिर भाप की लकीरों की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"अपने और मेरे रक्त के निशान का अनुसरण करो," चंदासुर ने दमित क्रोध में गुर्राते हुए कहा। "उस हाथ का अनुसरण करो जो तुम्हारा मार्गदर्शन करता है। उस रक्त का आज्ञापालन करो जिसने तुम्हें जीवन दिया है, हे शक्तिशाली अहि। आज्ञापालन करो और वहाँ पहुँचो जहाँ तुम्हारा रक्त तुम्हारा इंतजार कर रहा है।"

होलिका ने उबलते पानी से उठती भाप की लपटों को देखा, जो बिखरी हुई धुंधली लकीरों से मिलकर एक फन वाले सर्प की धुंधली आकृति बना रही थीं। प्रेत-सर्प अनिश्चित रूप से डगमगा रहा था, चंदासुर की खून से सनी उंगलियों को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ा रहा था, लेकिन अंत में अपने ही भार से गिरकर विलीन हो गया।

"नहीं," चंदासुर गुर्राया। अमरका भी हताशा भरी आह के साथ पीछे की ओर झुक गया।

"क्या हुआ?" चुड़ैल रानी ने फिर पूछा। "मुझे लगा था कि तुमने सर्प-अजगर को अपने वश में कर लिया है।"

"हमने कोशिश की, लेकिन कुछ गड़बड़ हो गई है," अमरका ने जवाब दिया। "अही ने हमारे आदेशों का जवाब देना बंद कर दिया है।"

"क्या आपको यकीन है कि आपने मंत्रों को सही ढंग से पढ़ा है?"

चंदासुर ने अपनी शत्रुतापूर्ण, तिरछी आँखों से जादूगरनी को घूरकर देखा। होलिका ने सिर हिलाया।

"शायद किसी ने या किसी चीज ने सांप पर अपना प्रभाव जमा लिया है," अमरका ने कहा।

"ये कौन हो सकता है? और इन्होंने ये कैसे किया?"

"कोई अनुमान नहीं।"

"ज़रूर यक्षों का काम होगा," चंदासुर ने गुस्से में कहा। उसने अमरका की ओर देखा। "चलो फिर से कोशिश करते हैं।"

अमरका मंत्रों का पाठ करने लगा, तभी होलिका गुफा से बाहर निकलकर पहाड़ियों का अवलोकन करने लगी और आकाश से गिरते हुए आखिरी बाज़ को देखने लगी। इसके बाद उसकी नज़र उज्जैनी पर पड़ी, जो ढलते सूरज की सुनहरी रोशनी में जगमगा रही थी और घने बादलों से घिरे आकाश के बिल्कुल विपरीत दिख रही थी। अही बादलों में क्षण भर के लिए फड़फड़ाया, मानो बचने का रास्ता तलाश रहा हो।

यक्ष बाज़ों के रूप में पहाड़ियों पर आए थे, लेकिन क्या उनमें से कुछ अही से निपटने के लिए शहर में ही रुक गए थे? होलिका ने सोचा। क्या यक्षों के जादू में सर्प-ड्रैगन को वश में करने की शक्ति थी? उसे संदेह था। अही को रोकने के लिए कुछ भी इतना शक्तिशाली नहीं था, और उसे नियंत्रित करने वाले मंत्र चंदासुर और अमरका के पास थे।

लेकिन, कोई जबरदस्ती सांप पर कब्जा कर रहा था और उसे रोकना जरूरी था।

शुक्राचार्य हड्डियों की मदद से आसानी से अपराधी को ढूंढ सकते हैं, यह जानते हुए डायन रानी महापुजारी की तलाश में निकल पड़ी। लेकिन कुछ ही कदम चलने के बाद, उसका ध्यान एक अजीब सी आवाज़ पर गया जो बहुत दूर से आती हुई

प्रतीत हो रही थी, फिर भी इतनी तेज़ थी कि पहाड़ी के दूसरी ओर से आ रही युद्ध की गर्जना को भी दबा दे। वह रुक गई और आवाज़ की दिशा का पता लगाने लगी।

एक तीखी चीख-चिल्लाहट।

जैसे ही उसे अंततः इसके स्रोत का पता चला, उसका चेहरा गंभीर हो गया।

दक्षिण दिशा से धुएं के समान दिखने वाला एक विशाल काला बादल घूमता और लहराता हुआ आ रहा था, जिसने क्षितिज के आधे हिस्से को ढक लिया था, वह जमीन के ऊपर से तेजी से और नीची उड़ान भरते हुए सीधे पहाड़ियों और उज्जैन की ओर बढ़ रहा था।

तेल के धुएं का एक विशाल, कालिख से सना हुआ बादल, चीखता-चिल्लाता हुआ युद्ध की ओर बढ़ रहा है...

विफलताओं

"हम उसके कितने रूपों से निपट रहे हैं?" धनवंतरी ने महल के गलियारे की ओर देखते हुए पूछा, जहाँ सींगों वाले तीन हमशक्ल घूम रहे थे।

“किसी को नहीं पता, महाराज,” महल के रक्षक दल के कप्तान ने घबराए हुए स्वर में कहा। “वे इतने अधिक हैं कि बताना असंभव है।”

गैलरी की पूरी लंबाई में खिड़कियों पर तीरंदाज तैनात थे, तीर तैयार थे और चलाने के लिए तत्पर थे, जबकि नीचे गलियारे में, महल के रक्षक सैनिक सीलबंद महल के दरवाजे के पीछे सतर्क, लेकिन बेहद चिंतित होकर इंतजार कर रहे थे। पुल पर वे

तीर बिखरे हुए थे जो उन तीनों प्रेतों पर चलाए गए थे जब वे महल में प्रकट हुए थे, लेकिन किसी भी तीर का उन पर जरा सा भी असर नहीं हुआ था।

"और वे सब उस आग के गोले से बाहर आ गए?"

काले शरीर वाले उन विशालकाय राक्षसों में से एक महल के दरवाजे तक पहुंचा और गुस्से में आकर अपने गदा से उस पर प्रहार किया। धातु पर धातु की टक्कर की आवाज़ महल में गूंज उठी, लेकिन दरवाजा टिका रहा। राक्षस मुड़ा और पुल पर आगे बढ़ गया, रुककर महल की ओर देखा।

"मुझे पक्का पता नहीं है, महाराज," कप्तान ने अंततः चिकित्सक को उत्तर दिया, तीनों विशालकाय प्राणियों को सतर्कता से देखते हुए। "इनके बढ़ने की चर्चा है... एक से दो बनने की। कुछ सैनिकों का कहना है कि उन्होंने उसे दो भागों में बंटते हुए देखा था—"

"क्या वे घुड़सवार थे जिन्होंने शुरू में हम पर हमला किया था?" वेताला भट्टा ने कप्तान को चतुराई से देखते हुए पूछा।

"कुछ हद तक, माननीय न्यायाधीश... लेकिन एक बड़े अंतर के साथ। वे घुड़सवार असली थे और उन्हें मारा जा सकता था। ये नकली घुड़सवार सब भ्रम हैं जिन्हें घायल करना या मारना असंभव है।"

"हम्म," राजगुरु ने सोच-विचार करते हुए कहा।

"महल के दरवाजे को बंद रखो और निचली मंजिलों की सभी खिड़कियों को मजबूती से बंद रखो," चिकित्सक ने निर्देश दिया। "और जो भी जानकारी मिले, हमें बताते रहना।"

कप्तान के चले जाने के बाद, धनवंतरी ने मुख्य सलाहकार का जायजा लिया। "ठीक है, आपके मन में क्या है?" उसने धीमी आवाज़ में कहा। "बताइए।"

आचार्य ने चिकित्सक की ओर देखा। "तुम्हें वे घुड़सवार याद हैं जो संख्या में बढ़ गए थे।" धनवंतरी को सिर हिलाते देख उन्होंने आगे कहा, "उन सभी के एक ही, सामान्य मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित होने के बारे में मेरा अनुमान सही था—इसीलिए विक्रम के नरक की आग के साथ बाहर जाने पर वे सब भयवश भाग गए थे।"

"मुझे याद है।"

"कैप्टन ने कहा कि सैनिकों ने इन चीजों को टूटते हुए देखा है," वेताला भट्टा ने बताया। "क्या पता इन विशालकाय जीवों के साथ भी ऐसा ही हो, क्या पता ये भी एक

ही दिमाग से प्रभावित हों?”

“अगर वे हैं तो क्या होगा?” राजचिकित्सक ने पूछा। “विक्रम तो नरक की आग से उस दिमाग को डराने के लिए मौजूद ही नहीं है, तो इससे क्या फायदा होगा?”

मैं उस दिमाग पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर सकता हूं और उससे वह करवा सकता हूं जो मैं चाहता हूं।

"घुड़सवारों के साथ यह तरीका काम नहीं आया था, याद है ना?"

“दैपायन के साथ तो यह कारगर साबित हुआ था,” राजगुरु ने जवाब दिया। “मैंने दैपायन के नेतृत्व में पूरी मगध सेना को भूतिया दलदल में मार्च करते देखा था। इसे आजमाकर देखना तो बनता है।”

देखते ही देखते, वेताला भट्ट ने एक हाथ में भाला था और दूसरा हाथ सीने पर कसकर पकड़े हुए, पुल पर बने सींग वाले सिरों में से एक को घूर रहा था। आँखें बंद करके, उसने मंत्र का जाप किया, और भाले के सिरे पर स्थित खोपड़ियाँ चमक उठीं।

आचार्य को रक्त की दुर्गंध से भरे एक भयानक अंधकार में धकेल दिया गया, और उनके भीतर एक भयंकर क्रोध भर गया।

मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो

जब उसने उस वस्तु के दिमाग से खुद को निकालने की कोशिश की—

मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो

उसे एहसास हुआ कि क्रोध उसे डुबो रहा है।

मार डालो मार डालो मार डालो

उसे यह जानकर गहरा सदमा लगा कि वह शहर में घूम रही सभी चीजों की आवाजें, उनका सामूहिक क्रोध सुन रहा था।

मारो मारो मारो, उसने कहा कि इसे छिपा दिया जाएगा, मारो मारो, पार्षद को ढूंढो, मारो मारो

मुख्य पार्षद ने हांफते हुए अपनी आंखें खोलीं, उसका चेहरा गुस्से से लाल था, उसके माथे और गर्दन से पसीना बह रहा था।

“क्या तुम ठीक हो?” धनवंतरी ने चिंता से उसकी ओर देखा।

Vetala Bhatta nodded.

तो... क्या हुआ?

"ये सब खोखले शरीर हैं," राजगुरु ने पुल पर खड़ी विशालकाय मूर्तियों की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया। "क्रोध के अलावा इनमें कोई भावना नहीं है। ये हत्या करने के लिए ही बने हैं, और इनका एकमात्र उद्देश्य जान लेना है। ये किसी भयानक जादू-टोने का रूप हैं, इसीलिए इन्हें मारा नहीं जा सकता। और क्योंकि इनमें बुद्धि नहीं है, इसलिए इन पर कोई प्रभाव नहीं डाला जा सकता, और न ही इन्हें दर्द महसूस होता है और न ही डर।"

चिकित्सक ने मुख्य परामर्शदाता को भयभीत होकर देखा। "क्या वे अजेय हैं?"

आचार्य ने कहा, "मैं ऐसा नहीं कहूंगा। मुझे पूरा यकीन है कि ये असली की नकल हैं, और अगर असली को ढूंढकर रोका जा सकता है, तो इन्हें भी रोका जा सकता है।"

"आपको इसके बारे में कैसे पता चला—" धनवंतरी ने बात शुरू की।

"मैंने उसके विचार भी सुन लिए। वह किसी छिपी हुई चीज़ की तलाश कर रहा है... ज़रूर हलाहल होगा।" वेताला भट्टा थोड़ी देर रुका। "मुझे उसे ढूंढने दो।"

अपनी आंखें बंद करके, मुख्य पार्षद ने एक बार फिर पुल पर बने विशालकाय लोगों में से एक के मन में झांकने की कोशिश की।

मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो

आचार्य ने उस बड़बड़ाहट को अनसुना करते हुए अपना ध्यान उस आवाज की खोज में लगाया।

मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो

—अन्य सभी क्रोध से भरी आवाजों से—

मारो मारो मारो सैनिक मारो मारो मुझे मौका दो मारो

आचार्य ने उन शब्दों को पकड़ लिया, और अचानक उन्हें अपने मन में एक नया मार्ग खुलता हुआ दिखाई दिया...

...अब हमला करने का समय है... अब मारने का समय है...

मार डालो मार डालो

वेतला भट्टा की आंखें खुलीं और वह विस्मय से घूरने लगा, उसे याद आ रहा था कि उसने क्या देखा था। एक गलियारा। एक जाना-पहचाना गलियारा, जिस पर वह कई बार चल चुका था।

महल की दूसरी मंजिल पर एक गलियारा।

जिसके भी दिमाग में वह प्रवेश कर चुका था, वह पहले ही महल के भीतर काफी गहराई में पहुंच चुका था।

अब हमला करने का समय है... अब मारने का समय है...

मुख्य सलाहकार घबराकर धनवंतरी की ओर मुड़ा, लेकिन ठीक उसी क्षण, पुल पर मौजूद प्रेत मुड़कर निचली मंजिल की खिड़कियों की ओर झपटे। उन्होंने अपनी गदाओं से पुरानी लकड़ी पर ज़ोरदार प्रहार किया, और एक धमाके जैसी आवाज़ के साथ, हमले में टूटी तीनों खिड़कियाँ चकनाचूर होकर गिर गईं...

सींगों वाले वे हमशक्ल खिड़कियों के खंडहरों को तोड़ते हुए गलियारे में घुस आए और खून की प्यास से दहाड़ते हुए अंदर चले गए।

***

लेकिन इंद्र को पहले से ही पता है कि मानव राजा महल से अनुपस्थित है।

"क्या सच में?" मताली ने नारदा की ओर देखते हुए पलकें झपकाईं। "उसे किसने बताया?"

"उसने किया," राजनयिक ने देव के कंधे की ओर इशारा करते हुए कहा।

मताली ने मुड़कर देखा तो हॉल से बाहर जाने वाले दरवाजे पर उर्वशी खड़ी थी। "तुम... यहाँ हो?" उसने हैरानी से बुदबुदाते हुए कहा। "मुझे लगा तुम मानव राजा के महल में कहीं होगे।"

मानव राजा के महल में कहीं... अप्सरा ने पर्दों की छाया से बाहर निकलते हुए मन ही मन कहा।

"हमारे स्वामी कहाँ हैं?" मताली ने नारद की ओर मुड़कर पूछा।

"वह हलाहल पर दावा करने के लिए मानव नगर के लिए रवाना हो गया है। मुझे आश्चर्य है कि यहाँ आते समय आपकी उससे मुलाकात नहीं हुई। उर्वशी ने एक बार यह खबर दी थी..."

लेकिन मताली अब सुन नहीं रही थी, क्योंकि उसके मन में अप्सरा के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा था। विक्रमादित्य की अनुपस्थिति की खबर उससे पहले लाकर उसने इंद्र को प्रसन्न करने की उसकी योजना को बर्बाद कर दिया था, और अब वह यहाँ श्रेष्ठता का भाव लिए खड़ी थी।

“तुम्हें उस मानव राजा के बारे में कैसे पता चला?” उसने अप्सरा पर कठोर स्वर में पूछा।

उर्वशी ने शांत भाव से कहा, "जिस तरह से तुम गायब हो गए, उसके बजाय महल में ही रुककर बेहतर होता।"

मताली की आंखें सिकुड़ गईं। "खुद पर इतना गर्व करने का कोई कारण नहीं है। तुमने तो बस हमारे स्वामी को सीधे खतरे में डाल दिया है।"

“तुम्हारा क्या मतलब है?” बृहस्पति ने घबराकर पूछा और अपने धनुषाकार पैरों पर लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा।

उर्वशी की आशंका भरी नज़र देखकर मताली ने व्यंग्य किया। “जब मैं उज्जैन से जा रहा था, तभी अही प्रकट हुआ,” उसने कुछ देर रुककर कहा। “असुरों ने उसे मनुष्यों का विनाश करने के लिए भेजा होगा, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अही मनुष्य और देवों में भेद नहीं करता।” उर्वशी की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, “आशा है कि जब यह नाग-ड्रैगन मानव नगर को धूल में मिला रहा हो, तो हमारे स्वामी उससे विमुख न हो जाएँ।”

“क्या आपको यकीन है कि यह अही ही थी...” चैंबरलेन ने अपने चिड़चिड़े लहजे में कहना शुरू किया, लेकिन उर्वशी पहले ही मुड़कर उसी रास्ते वापस जाने लगी थी जिससे वह आई थी।

मुझे लगा कि तुम कहीं मानव राजा के महल में हो।

मताली उज्जैन गया था, लेकिन उसने उर्वशी के ठिकाने का पता लगाने की ज़हमत नहीं उठाई—वह शायद मानव राजा के महल में कहीं थी—और न ही यह जानने की कि वह ठीक है या नहीं। हो सकता है उसने कोशिश की हो और नाकाम रहा हो—या फिर कोशिश करना ही नामुमकिन रहा हो—लेकिन उर्वशी को इस बात पर बहुत शक था। जब उसका भेद खुल गया, तो मताली बिना किसी निशान के गायब हो गया... उसने अवंती को यह आश्वासन तक नहीं दिया कि देवता उसके लिए लौटेंगे। उसे छोड़ दिया गया था, उसके भाग्य पर छोड़ दिया गया था। और देवलोक में किसी को भी उसकी इतनी याद नहीं आई कि उसे बचाने की कोशिश की जाए। अगर उसने खुद पहल न की होती, तो वह देवलोक में आज़ाद घूमने के बजाय आज भी उज्जैन में कैदी होती...

लेकिन क्या वह सचमुच देवलोक में स्वतंत्र थी? या वह महज़ एक कठपुतली थी, इंद्र की इच्छाओं और कल्पनाओं की गुलाम? उर्वशी को वह बात याद आई जो देवलोक ने उज्जैन से लौटने के दिन उसके बारे में कही थी: देवलोक की सबसे आकर्षक और मोहक अप्सरा, और वह उस एक काम में नाकाम है जिसमें उसे माहिर होना चाहिए... अगर कोई अप्सरा किसी पुरुष को अपनी बाहों में मोहित न कर सके, तो उसका क्या फायदा?

फिर रथ के पीछे से विक्रमादित्य के ये शब्द सुनाई दिए: मुझे नहीं पता कि देवलोक में तुम अपनी स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते हो, लेकिन अवंती में हमारी स्त्रियों की गरिमा और सम्मान सर्वोपरि है...

जब उसका छल उजागर हो गया, तब भी मानव राजा ने शालीनता बरती: राज्य के शत्रुओं को काल कोठरी में रखा जाता है, लेकिन वह महिलाओं के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है। तुम अवंती की कैदी बनकर महल में रहोगी, लेकिन तुम्हें वह सम्मान दिया जाएगा जिसकी एक महिला हकदार होती है।

जबकि देवस्वामी, जिनके प्रति उसने इतने वर्षों तक अपना जीवन और निष्ठा समर्पित की थी, ने उसकी कमियों को उजागर करते हुए कहा: तुम मानव राजा को मोहित करने में असफल रही, और तुम खुद को पकड़वाकर कैद में डाल दी गई... खाली हाथ लौटने की बजाय तुम कैद में ही रह सकती थी... देवताओं को हलाहल खोजने में मदद करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने के बाद उसे यही स्वागत मिला था।

अमरावती महल की गलियों में घूमते हुए अप्सरा इंद्र के प्रति अपनी निष्ठा के महत्व पर विचार कर रही थी। देवराज ने कहा था कि वे उससे प्रेम करते हैं, और उसने हमेशा उन पर विश्वास किया था। लेकिन विक्रमादित्य से मिलने के बाद उसे प्रेम की अवधारणा पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा... निस्वार्थ, दयालु और सम्मानजनक प्रेम। आत्मा से जुड़ा प्रेम।

क्या तुम वो हो सकती हो, वो अकेली औरत जिससे मैंने कभी प्यार किया है?

सम्राट के शब्दों ने उर्वशी को अवंती की रानी की याद दिला दी, जिससे वह अपराधबोध से भर उठी। उसने उस स्त्री की पीड़ा का फायदा उठाकर देवलोक से भागने का प्रयास किया था—किसलिए? उन देवताओं के लिए, जो उसे इतना तुच्छ

समझते थे, जिन्हें सत्ता की बेलगाम लालसा के अलावा किसी और चीज की परवाह नहीं थी?

अपराधबोध की लहरें अप्सरा पर उमड़ पड़ीं और उसे एक भयानक ज्वार की तरह घेर लिया। उसने विक्रमादित्य की प्रेमिका के विश्वास को धोखा दिया था, और फिर देवलोक लौट आई थी ताकि राजा के दुखों को और बढ़ा सके, एक और विनाशकारी देव सेना को उसके राज्य की ओर अग्रसर करके। देवों और असुरों के लालच के कारण मानव नगर पहले ही बहुत कष्ट झेल चुका था। और अब जब इंद्र आ रहे थे और असुर अहि वृहद को अपने साथ ले जा रहे थे...

उर्वशी रुककर खिड़की से बाहर देखने लगी, उसे अपने किए पर बहुत दुख और शर्म आ रही थी।

***

क्षपणका तीन असुरों से लड़ रही थी और उसकी पीठ आक्रमणकारी गैंडे की ओर थी। तभी एकश्रृंग उससे कुछ ही गज की दूरी पर था, जब सूर्यास्त के ढलते प्रकाश में चमकता हुआ एक चक्र गैंडे की ओर एक चाप बनाते हुए आया। वह एकश्रृंग के भारी थूथन के ऊपर से गुजरा और उसके बड़े सींग के आधार को चीरते हुए उसे अलग कर दिया। गैंडे के होठों से क्रोध और पीड़ा की एक तीखी, कान फाड़ देने वाली चीख निकली, लेकिन भ्रमित होकर धीमा होने के बजाय, क्रोधित एकश्रृंग दौड़ता हुआ क्षपणका की ओर सीधा बढ़ता गया, अब उसे कुचलने का उसका इरादा और भी दृढ़ था। तभी, पहले चक्र के पीछे एक दूसरा चक्र घूमता हुआ आया, जो गैंडे के घुटने के मोड़ पर सटीक निशाना साध रहा था। इससे दौड़ते समय जब भी गैंडा अपने पैर मोड़ता था, तो उसका घुटना असुरक्षित हो जाता था। इस दूसरे चक्र ने जानवर पर सटीक प्रहार किया, जिससे उसकी नसें और हड्डियां कट उठीं और एकश्रृंग ढेर हो गया, उसका कटा हुआ पैर मांसपेशियों और कवच के पहाड़ के नीचे दबकर मुड़ गया।

अपने ठीक पीछे जानवर के गिरने की आवाज़ सुनकर, क्षपनाका ने सहज प्रवृत्ति से पलटवार किया और जिन असुरों से वह लड़ रही थी, उनसे अपनी नज़रें हटा लीं। असुर भी गैंडे के शानदार पतन से विचलित हो गए थे, लेकिन क्षपनाका का ध्यान

भटकते देख उनमें से दो आगे बढ़े और अपनी तलवारों और भालों से सलाहकार की पीठ पर वार किया।

दोनों में से कोई भी हथियार क्षपनाका तक की आधी दूरी भी तय नहीं कर पाया।

दोनों असुर अपने आक्रमण के बीच में ही रुक गए, उनकी आँखें और मुँह एक-दूसरे की नकल करते हुए चौड़े खुल गए, उनके हथियार उनकी बेजान उंगलियों से फिसल गए। उनमें से एक खाँसा और आश्चर्य से अपनी छाती की ओर देखा, उसकी छाती की हड्डी के नीचे से निकली कटार की नोक को घूर रहा था, जिससे खून बहकर उसके पेट तक पहुँच रहा था। कटार उसके शरीर से छिटकते ही असुर चीख उठा, और दर्द से कमजोर और चक्कर खाकर कीचड़ में औंधा गिर पड़ा, जहाँ उसकी साथी भी पल भर में उसके साथ आ गिरी। दोनों एक साथ परलोक की यात्रा पर चले गए, शंकु उनके मृत शरीरों के ऊपर खड़ी रह गई, उसके दोनों हाथों में खून से सने चाकू थे।

अपना संतुलन वापस पाकर, तीसरे असुर ने शंकु पर तलवार से प्रहार किया, लेकिन वह लड़की गायब हो गई और तलवार हवा में बेअसर होकर निकल गई। अगले ही पल, वह असुर के पीछे खड़ी हो गई, एक हाथ उसके कंधे पर रखकर, एक खंजर उसकी गर्दन तक ले गई और पलक झपकते ही उसे चीर दिया। उसी समय, दूसरा खंजर असुर की पसलियों के बीच से फिसलकर उसके हृदय में जा लगा।

“शंकु,” क्षपणका ने हैरानी से कहा जब असुर शंकु के चरणों में गिर पड़ा। रुककर, उसने अपने चारों ओर देखा। “यह... धुआँ क्या है?”

"दानव," शंकू मुस्कुराया।

क्षपनाका ने युद्धक्षेत्र में फैले तेल के काले धब्बों को देखा, फिर शंकु की ओर मुड़ी, उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं। "तुम उन्हें ले आई हो।"

जवाब देने के बजाय, लड़की ने दोनों चाकू एक हाथ में लिए, अपनी कमरबंद से एक और चक्र निकाला और एक ही झटके में क्षपणक के कंधे पर घुमा दिया। आश्चर्यचकित होकर, क्षपणक ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि एक महिषा उसके पीछे लड़खड़ा रहा है, और उसे मारने के लिए कुल्हाड़ी उठाए खड़ा है। चक्र लगभग पूरी तरह से महिषा के धड़ में धंस गया, और जैसे ही वह आगे की ओर

झुककर अपनी छाती पर गिरा, चक्र और गहरा चला गया, जिससे जानवर की रीढ़ टूट गई और वह खून और उपास्थि से लथपथ उसकी पीठ से बाहर निकला।

"वाह!" क्षपणक की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। "यह तो कुछ अद्भुत था—" लेकिन शंकु जा चुका था। क्षपणक ने मुस्कुराते हुए कंधे उचकाए और तेल जैसे काले रंग की आकृतियों को देखने लगे जो चक्कर लगा रही थीं और झपट्टा मार रही थीं, और सबसे पहले हमलावर एकश्रृंगों और महिषों को निशाना बना रही थीं।

यह बात भले ही अविश्वसनीय रूप से हास्यास्पद लग रही हो, लेकिन विशालकाय जीव तेल-काले रंग के जाल में जकड़े हुए थे, उनकी हरकतें थम सी गई थीं। तेल-काला रंग छटपटाते एकश्रृंगों और महिषों के चारों ओर कसता और जमता गया, जिससे जीव थम गए, और फिर एक-एक करके वे घने घूमते हुए द्रव्यमान में समा गए। जब तेल-काले रंग के धब्बे छटे, तो जीवों का कोई निशान नहीं था, वे सभी हमेशा के लिए तेल-काले रंग में खो गए थे।

गैंडों और युद्ध महिषों को पराजित करने के बाद, दानवों ने अपना ध्यान असुरों की ओर मोड़ा, जिन्हें यह आभास होने लगा था कि युद्ध उनके हाथ से निकल रहा है। मानव जाति के साहसी आक्रमण के सामने जवाबी हमला करने की उनकी सारी महत्वाकांक्षाएँ धराशायी हो गईं। इस आक्रमण का नेतृत्व सिंह-मानव अमर सिंह ने किया, जो अपनी कुल्हाड़ी से असुरों की खाल उतारते हुए और अपने पंजों से उन्हें चीरते हुए आगे बढ़ रहा था। शंकु एक स्थान से दूसरे स्थान पर इतनी तेज़ी से दौड़ रही थी कि उसे घेरना असंभव था, उसके खंजर लक्ष्य पर अचूक प्रहार कर रहे थे, वहीं क्षपणक युद्ध में उतरकर अपने भाले के हर वार से असुरों को सड़े हुए मांस के ढेर में बदल रही थी।

और उनके चारों ओर, तेल से सने काले आकार झपट्टा मारकर असुरों को जिंदा निगल गए।

फिर, योद्धाओं के उस छटपटाते समूह से वह बाहर निकली, और अपनी चेन-ब्लेड से तेल-काले पर्दों को चीरती हुई आगे बढ़ी, जो दिन के अंतिम प्रकाश में सुनहरे-नारंगी रंग में चमक रही थी, जिससे ऐसा लग रहा था मानो वह आग में जल रही हो।

वह जंजीरदार ब्लेड और तलवार लहराते हुए बाहर निकली, मानो प्रतिशोध की भावना को प्रकट कर रही हो।

मलाईदार।

जादूगरनी सीधे क्षपनाका की ओर बढ़ी, उसकी जंजीरदार तलवार हवा में लहराती हुई सलाहकार के भाले को जकड़ने लगी; होलिका ने जंजीरदार तलवार को झटका दिया, क्षपनाका के हाथ से भाला छीन लिया और कलाई के एक झटके से उसे दूर फेंक दिया। सलाहकार पर बर्फीली निगाहें गड़ाए, चुड़ैल रानी अपने लक्ष्य के चारों ओर चक्कर लगाने लगी, जंजीरदार तलवार उसके सिर के ऊपर लिपट गई और वह जानलेवा प्रहार करने के लिए तैयार हो गई। उसी समय, उसने बाईं ओर से आए एक हमले को रोका और अपनी तलवार से अवंती के तीन सैनिकों को मार गिराया।

जंजीरनुमा तलवार की नोक क्षपनाका की ओर बढ़ी, लेकिन होलिका ने फुर्ती से पलटवार करते हुए गिरी हुई तलवार को उठाया और उसका इस्तेमाल करके हमले को अपने चेहरे से कुछ इंच दूर तक टाल दिया। लेकिन इससे पहले कि होलिका कुछ समझ पाती, वह वारों की बौछार से खुद का बचाव कर रही थी, तलवार चलाने में होलिका दोनों में से कहीं अधिक कुशल थी। होलिका ने होलिका को पीछे धकेलते हुए जंजीरनुमा तलवार से अवंती के लगभग एक दर्जन सैनिकों पर हमला किया और उन्हें घायल कर दिया, जो वार करने की दूरी के भीतर थे।

क्षपनाका के बाईं ओर तेल-काले रंग का एक विशालकाय पिंड प्रकट हुआ और उसके और डायन रानी के बीच से निकलकर डायन रानी को दबा दिया। लेकिन शृंखला-तलवार वापस पलटी और तेल-काले पिंड पर हमला करते हुए उसे चीर-फाड़ कर अलग कर दिया, जिससे वह फिर से शालिवाहन के गड़गड़ाते और दाढ़ीदार रूप में प्रकट हो गया। दानवों के स्वामी शालिवाहन शृंखला-तलवार के रास्ते से लुढ़क कर हट गए, उसकी चुभती नोक से बचते हुए उन्होंने शृंखला को कसकर पकड़ लिया और उसे अपने अग्रभाग के चारों ओर लपेट लिया। शृंखला की धारें उनकी छाल जैसी त्वचा में धंस गईं, लेकिन शालिवाहन ने शृंखला पर अपनी पकड़ बनाए रखी और डायन रानी को रोके रखा, जबकि क्षपनाका ने होलिका के वारों को बेहतर ढंग से रोकने के लिए अपना भाला वापस लेने के लिए छलांग लगाई।

सलाहकार और दानव के बीच फंसी चुड़ैल रानी एक पल के लिए असहाय सी लग रही थी, वह क्षपणक के भाले की चुभती नोक को रोकते हुए जंजीर-तलवार को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी। मौका देखकर अंगामित्र क्षपणक की सहायता के लिए दौड़ी, लेकिन तभी होलिका के होंठ हिले और उसने मंत्र पढ़े। और सबके

सामने, उसका रूप बदल गया, उसने अपने सामने खड़े लोगों के गहरे भय को उभारते हुए, उन भयों को और भी बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हुए, उन्हें इतना भयानक बना दिया कि उसे देखने वाले हर व्यक्ति की नजरों में उसका एक अलग ही खौफनाक रूप दिखाई देने लगा।

विशाखा को आग की लपटों में घिरा देखकर क्षपणक पीछे हट गया। गर्मी से उसकी त्वचा फफोले बनकर फट रही थी, उसके बाल गुच्छों में झड़ रहे थे, उसका चेहरा मोम की तरह पिघल रहा था और वह चीख-चीखकर क्षपणक का नाम पुकार रही थी।

अंगामित्र लगभग दस साल की एक लड़की को अपने सामने खड़ी देखकर जम गया। वह पूरी तरह भीगी हुई थी, उसके पतले बालों से पानी टपक रहा था। लंबे समय तक पानी में डूबे रहने के कारण उसका रंग पीला पड़ गया था, और उसके होंठ नीले और फटे हुए थे। वह फुसफुसाते हुए उससे विश्वपुरी बोली में 'भाई' कह रही थी।

अमरा सिंह ने होलिका की ओर देखा... और अपनी मरणासन्न पत्नी को अपनी ओर हाथ बढ़ाते हुए देखकर दंग रह गए। उनका चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ बेरंग, आँखों में जीवन और हँसी की वो चमक गायब थी जो हमेशा उनमें रहती थी। उन्होंने अपनी बांह में एक शिशु को पकड़ रखा था, जिसका चेहरा भी पीला पड़ गया था, होंठ बेरंग, आँखें बंद, मानो कभी न खुलने वाली...

होलिका के आसपास सन्नाटा छाते ही, जादूगरनी ने मौके का फायदा उठाते हुए क्षपनाका के भाले को अपने रास्ते से हटा दिया और सलाहकार पर झपटी, उसकी तलवार सीधे क्षपनाका के नंगे गले की ओर लक्षित थी।

***

हलाहला मनुष्यों के हाथों में सुरक्षित है।

वेतला भट्टा तेजी से सीढ़ियों से ऊपर चढ़े और एक गैलरी में मुड़ गए जो महल के दक्षिणी भाग की ओर जाती थी।

यह लड़ाई यहीं समाप्त होनी चाहिए। मनुष्य हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। हमें वापस लौटना होगा।

गैलरी से गुजरते हुए, राजगुरु यह देखने के लिए रुके कि क्या उनके द्वारा उस व्यक्ति के मन में डाले जा रहे विचार प्रभावी हो रहे हैं या नहीं। उन्होंने ध्यान से सुना...

उस पार्षद को ढूंढना होगा जो खंजर की रक्षा कर रहा है और

अपने प्रयासों के परिणाम पर निराशा व्यक्त करते हुए, आचार्य ने अपना ध्यान पुनः केंद्रित किया, जिससे विचारों का एक सैलाब उमड़ पड़ा और उन्होंने उसे मन की ओर निर्देशित किया...

हलाहल की खोज व्यर्थ है। विक्रमादित्य कभी भी यह कटार नहीं सौंपेंगे। न देवताओं को, न असुरों को, और न ही सर्वज्ञ प्रभु के। मनुष्यों से युद्ध करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। हमें उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए और वापस लौटना चाहिए, क्योंकि हलाहल उनकी देखरेख में सुरक्षित रहेगा...

आचार्य एक बार फिर रुक गए, सुनने लगे... और उनके मन में दक्षिणी भाग के एक हॉल का दृश्य उभर आया। मन में बसी हुई कल्पनाओं की उड़ान भरने वाले आचार्य एक गलियारे की ओर बढ़ रहे थे...

खंजर ज़्यादा दूर नहीं है... महसूस हो रहा है... बहुत पास है...

वेताल भट्ट का हृदय थोड़ा उछल पड़ा जब उन्हें एहसास हुआ कि मन का स्वामी कहाँ है; दो गलियारे और सीढ़ियों का एक सेट जहाँ से वराहमिहिर—

उसने मन पर चिल्लाते हुए कहा, "खंजर महत्वपूर्ण नहीं है," इस उम्मीद में कि उसकी बेचैनी उसके विचारों को उस बाधा को पार करने में मदद करेगी जो उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी... हमें इंसानों से नहीं लड़ना चाहिए... वे कभी भी खंजर नहीं छोड़ेंगे...

आचार्य बाईं ओर मुड़ते हुए उस गलियारे से तेज़ी से आगे बढ़े जो महल के पूर्वी भाग को उस हिस्से से जोड़ता था जहाँ घुसपैठिया छिपा हुआ था...

हलाहल को पाताल में वापस ले जाएंगे... प्रधान सलाहकार के दर्शन में, मन का स्वामी पहले मार्ग के अंत के निकट पहुँच रहा था और दूसरे मार्ग में मुड़ रहा था... इंद्र को पराजित करने के लिए...

यह महसूस करते हुए कि वह मन में कोई पैठ नहीं बना पा रहे हैं, वेताल भट्ट उस हॉल में मुड़ गए जो वराहमिहिर की ओर जाने वाली गैलरी और उन सीढ़ियों के बीच में स्थित था जिनसे असुर नीचे उतरने वाला था। अब यह स्पष्ट हो गया था कि वह

एक असुर था, क्योंकि मन ने इंद्र को हराने की कल्पना कर ली थी। आते हुए असुर के दृष्टिकोण से सीढ़ियों को देखते हुए, राजगुरु मुड़े और खुद को तैयार किया, उनकी निगाहें सीढ़ियों पर टिकी थीं...

मार डालो मार डालो मार डालो मार डालो

विशालकाय प्रतिकृतियों के एकशब्दीय विचार अचानक आचार्य के मन में छा गए, और उन्हें महल के मुख्य हॉल में घुसपैठिए का पीछा करते समय हुई भीषण हिंसा का दृश्य याद आ गया। क्लोन पूरी तरह से बेकाबू हो गए थे, महल के रक्षकों को मार रहे थे, हॉल आतंक की चीखों से गूंज रहा था।

और अब कदमों की गूंज सुनाई दे रही है।

सीढ़ियों के शीर्ष पर असुर प्रकट हुआ, एक भयावह दृश्य, उसकी त्वचा रात के समान काली, उसके बाल और दाढ़ी पिघले हुए सोने की तरह झरनानुमा, सिर पर सींगों की भरमार, अभिमानी और बेलगाम। बाहर मौजूद असुर हूबहू उसके जैसे ही थे, लेकिन वेताल भट्ट की दृष्टि में यह असुर किसी तरह आकार में बड़ा और कहीं अधिक भयावह प्रतीत हुआ।

मुझे वापस जाना होगा। मुझे मनुष्यों को अकेला छोड़ना होगा... आचार्य ने उस असुर की ओर अपने विचार इस उम्मीद में फेंके कि शायद कुछ तो उस अहंकारी दिमाग में बैठ जाए...

यह बूढ़ा आदमी क्या कर रहा है... क्या वह खंजर की रखवाली करने वाला पार्षद है?

मुख्य सलाहकार ने स्वयं को असुर के मन में देखा, हॉल के मध्य में खड़ा, एक हाथ में भाला लिए, खोपड़ियाँ लाल रंग से चमक रही थीं... और उसे अपने प्रति घृणा का भाव उमड़ पड़ा... हिरण्यकशिपु, अगर उसने मुझे रोकने की हिम्मत की तो उस बूढ़े मूर्ख को मरना ही पड़ेगा...

असुर को सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए देखकर, उसकी नुकीली गदा सीढ़ियों पर घिसटती हुई, हर सीढ़ी से टकराने पर धीमी सी आवाज़ करती हुई, राजगुरु भय से भर गए - और उन्हें इस बात का पूर्ण यकीन हो गया कि वे असुर को वराहमिहिर तक पहुँचने से रोकने में असफल रहेंगे।

वापस जाना होगा... इंसानों को हरा नहीं सकते...

असुर अब सभागार में था और उसकी ओर बढ़ रहा था...

"रुको," वेतला भट्टा ने आदेश देते हुए हाथ उठाया।

मुख्य सलाहकार को आश्चर्य हुआ कि असुर की गति धीमी हो गई।

"तुम इससे आगे नहीं जा सकते," आचार्य ने असुर के मन में स्वयं को देखते हुए कहा। असुर की उपहास भरी घुरघुराहट सुनकर उन्होंने अपने भीतर असुर की घृणा और क्रोध को उबलता हुआ महसूस किया।

फिर असुर लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए उसकी ओर बढ़ा।

वेताल भट्ट ने अपना भाला घुमाया और दोनों हाथों से उसकी डंडी को कसकर पकड़ लिया, जिसका सिरा आगे बढ़ते असुर की ओर था। लेकिन जैसे ही वे हमले से खुद को बचाने के लिए तैयार हुए, असुर ने अपनी गदा इतनी तेज़ी और बल से घुमाई कि भाला राजगुरु के हाथों से गिर पड़ा। हथियार ज़मीन पर ज़ोर से गिरा और वेताल भट्ट आश्चर्य से उसे देखते रह गए...

उसने अपना सिर घुमाकर असुर की ओर देखा, यह जानते हुए कि उसका समय समाप्त हो चुका है। अब गदा उसके सिर पर ही वार करेगी और उसे चूर-चूर कर देगी।

असुर ने एक पैर उठाया और पार्षद की छाती पर लात मारी।

आचार्य के फेफड़ों से हवा निकल गई जब उन्हें उठाकर पीछे की ओर फेंका गया, हॉल में हलचल मच गई, उनके धड़ में उस जगह दर्द से तड़प उठ रही थी जहाँ असुर का पैर पड़ा था। पल भर में ही, अन्य दर्दों ने उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया जब वे एक दीवार से टकराकर ज़मीन पर गिर पड़े, उनके कंधे, पीठ और घुटनों में तेज़ जलन हो रही थी। करवट बदलते हुए, वे सिकुड़कर एक गेंद की तरह हो गए और कुछ पल के लिए चुपचाप लेटे रहे, अंधेरे को खुद पर हावी होने दिया क्योंकि दर्द उनके शरीर में भयानक टुकड़ों की तरह दौड़ रहा था।

मुझे रोकने की मूर्खता

कदमों की आहट सुनकर वेताला भट्ट ने आँखें खोलीं। अँधेरा छँट गया और हॉल का फर्श उसके गाल के पास दिखाई दिया, जो उसके चेहरे से दूर तक फैला हुआ था, और उसकी चिकनी सतह उसकी त्वचा पर ठंडी और कठोर लग रही थी। उसका भाला बीच में पड़ा था, उसकी पहुँच से बहुत दूर।

राजगुरु ने पीड़ा से अपना सिर घुमाकर देखा कि असुर के पैर वराहमिहिर की ओर बढ़ते जा रहे हैं। वे जानते थे कि असुर को रोकने के लिए वे कुछ नहीं कर

सकते।

वराहमिहिर के मन में जगह ढूंढते हुए वह चिल्लाया, "वहां से निकल जाओ! असुर आ रहा है। निकल जाओ, निकल जाओ..."

फिर, एक और विचार मन में आने पर, आचार्य ने अपनी रणनीति बदल दी।

वराहमिहिर को मदद की ज़रूरत है, उन्होंने वररुचि को ढूँढ़ने के लिए अपने विचारों को जितना हो सके उतना फैलाया। महल में वापस आ जाओ, तुम जहाँ भी हो... वापस आ जाओ। हलाहल को बचाना ही होगा।

***

एक जोरदार फुफकार के साथ, अही बादलों को चीरता हुआ बाहर निकला।

वह झट से उठ खड़ा हुआ और गली में दौड़ पड़ा, गर्दन उठाकर आसमान की ओर देखता हुआ साँप को ढूँढ़ रहा था। उसने एक मोड़ लिया, फिर दूसरा—और अचानक, वह उसके ऊपर प्रकट हो गया। डूबते सूरज की रोशनी साँप के शरीर पर झिलमिला रही थी, उसके पंख हवा में लहरा रहे थे, वह ऊपर उठा, मुँह खुला था, जीभ लालच से हवा चाट रही थी। उसने खाँसा और ज़हर उगला—

लेकिन उसके हाथ पहले ही ऊपर उठ चुके थे, उंगलियां फड़क रही थीं... गला घोंट रही थीं... कुचल रही थीं... निचोड़ रही थीं... सांप के रूप से जूझते हुए उसके माथे पर पसीना आ रहा था...

सांप ने पलटवार किया, उसका आकार बढ़ता गया, वह पानी पीकर मोटा हो गया, छतों के ऊपर तक चढ़ गया, और भी अधिक प्रभावशाली और तबाही मचाने के लिए और भी अधिक दृढ़ हो गया। उसके मुंह के गड्ढे में, जिसमें सड़े हुए मांस की दुर्गंध आ रही थी, तेजाबी विष गाढ़ा और धूसर रंग का था, और सांप ने थूकने के लिए अपना सिर पीछे की ओर झुकाया।

उसने अपनी उंगलियों को कसकर मरोड़ा, जिससे सर्प के शरीर में मौजूद जल के अणु संकुचित हो गए और वह जलने लगा...

...और अही कांप उठा और भाप बनकर उड़ गया, उसका जहर उज्जैनी को और अधिक नुकसान पहुंचाने से पहले ही गायब हो गया।

अपने प्रयासों से थककर, घटाकरपारा एक काली दीवार के सहारे गिर पड़ा।

कुछ देर तक वह चुपचाप झुका रहा, अपनी साँसों को सामान्य करने की कोशिश करता रहा। बाँहों से पसीना पोंछते हुए, उसने कलाई और उंगलियों को रगड़ा और हिलाया, जिससे उनमें तनाव और दर्द कम हो गया और रक्त संचार ठीक हो गया। फिर सीधा होकर उसने आकाश की ओर देखा। अंत में, उसने पश्चिम की ओर अपनी दृष्टि घुमाई।

राजकुमार के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। जल्द ही अंधेरा हो जाएगा और बादलों में देखना असंभव हो जाएगा।

जब वह साँप दिखाई देगा, तो उसे कैसे पता चलेगा कि वह कहाँ है?

शायद उसे महल जाना चाहिए, उसने मन ही मन सोचा; शायद वहाँ किसी को कुछ पता हो... घटाकरपारा ने सिर हिलाया। महल को शायद ही पता होगा कि साँप के बारे में क्या करना है। अगर किसी को पता होता, तो वे अब तक कुछ कर चुके होते। इसलिए, उसे खुद ही इससे निपटना होगा...

उसे याद आया कि कासवती से लौटते समय अमरा सिंह ने उसे उस सर्प के बारे में बताया था, जो पानी से बना था। तुम्हारे चाचा ने उस जीव को समुद्र से निकलते और पूरे हूण बेड़े को नष्ट करते देखा था।

जैसे ही राजकुमार की नज़र अही पर पड़ी, उसे यकीन हो गया कि यह वही साँप है जो उज्जैन को परेशान करने लौटा है। अमर सिंह के पानी से बने साँप के बारे में कहे शब्दों को याद करके उसने जोखिम उठाया, यह सोचकर कि शायद वह उसे काबू में कर सके। उसका यह दांव सफल रहा, और हालाँकि उस राक्षस को अपने वश में करना कठिन था, फिर भी वह उस पर नियंत्रण रखने में कामयाब रहा, जिससे वह उसके शहर को और अधिक नष्ट करने और और लोगों की जान लेने से बच गया।

घटाकरपारा इस बात को नज़रअंदाज़ कर गए थे कि इस प्रयास का उन पर कितना बुरा असर पड़ेगा। रेगिस्तान और उत्तरी अरबुदास के ऊपर से भागने के बाद थके हुए और अभी तक पूरी तरह से उबर न पाए राजकुमार, अही के साथ संघर्ष से पूरी तरह से थक चुके थे। इस टकराव ने उनकी सारी ऊर्जा निचोड़ ली थी, उनके पैर लड़खड़ा रहे थे, अचानक हिलने पर उनका सिर चकरा जाता था और उनकी कलाई पर नब्ज़ कमज़ोर महसूस हो रही थी। फिर भी, दीवार के सहारे

गिरकर सो जाने की इच्छा को दबाते हुए, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और शहर भर में सांप का पीछा करते रहे।

बादलों के बीच से फिर से फुफकार सुनाई दी, जो नफरत से भरी हुई थी।

कमर झुकाए, एक हाथ दीवार पर टिकाए, घटाकरपारा लड़खड़ाते हुए गली में आगे बढ़ा और अही की तलाश करता रहा। एक मोड़ पर पहुँचकर जब रास्ता बंद हो गया, तो वह वापस मुड़कर एक चौड़ी सड़क पर आ पहुँचा। साँप की पूंछ की एक झलक देखकर, वह उसका पीछा करते हुए दूसरे मोड़ से मुड़कर दूसरी सड़क पर चला गया। अंत में, एक खुले चौक पर पहुँचकर, जहाँ कभी-कभी लोग बसंत और फसल उत्सव मनाने के लिए इकट्ठा होते थे, उसने ऊपर आकाश में अही को देखा।

फिर से, सांप ने उज्जैनी पर विष उगलने के लिए अपना मुंह खोला, और राजकुमार ने उससे फिर से लड़ाई की, जिससे उसे अपना रूप बदलने पर मजबूर होना पड़ा। इस बार वह बर्फीले पानी में बदल गया जो लगभग तुरंत पिघल गया और शहर के उत्तरी जिले में बह गया, जिससे दो संकरी गलियां टखनों तक पानी से भर गईं। लेकिन लगभग तुरंत ही, सारा पानी एक विशाल स्तंभ में सिमट गया जो छतों के ऊपर तक उठ खड़ा हुआ, और कुछ ही सेकंड में, अही ने अपना असली रूप फिर से प्राप्त कर लिया।

राजकुमार ने अपने हाथ ऊपर उठाकर पूरी ताकत से सांप को जकड़ा, और सांप छटपटाने लगा, खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष करने लगा, उसकी सुनहरी आंखें शाम की आग को प्रतिबिंबित कर रही थीं। मनुष्य और उस साँप के बीच संघर्ष जारी रहा, जैसे रात आकाश में एक बड़े घाव की तरह छा गई हो, इससे पहले कि घटकरपारा ने एक अलौकिक प्रहार से अही को उज्जैन के ऊपर एक महीन धुंध में विलीन कर दिया।

जैसे ही सर्प गायब हुआ, घटाकरपारा परिश्रम से थक गया, उसके पैर लड़खड़ा गए, इसलिए उसे गिरने से बचने के लिए एक छोटे पेड़ के जले हुए तने को पकड़ना पड़ा। ठूंठ को पकड़े हुए वह लड़खड़ाता रहा... फिर उसने उसे छोड़ दिया और पेड़ की जड़ों के पास गिर पड़ा, इतना थक गया था कि उठ नहीं पा रहा था।

सूर्य क्षितिज के नीचे डूब गया, और अंधेरा युवा राजकुमार की ओर तेजी से बढ़ने लगा।

नष्ट करनेवाला

अपनी पूरी ताकत से, एक हाथ ऊपर उठाकर, हथेली बाहर की ओर फैलाकर, वराहमिहिर ने अपने और उस भयानक असुर के बीच ऊर्जा कवच को बरकरार रखने के लिए संघर्ष किया। लालच से भरी आँखों से, असुर ने लगातार कवच पर प्रहार किया और उसे कई बार फाड़ने में कामयाब रहा, लेकिन वराहमिहिर ने विशालकाय के अंदर घुसने से पहले ही फटे हुए हिस्सों को तुरंत जोड़ दिया। फिर भी, कवच को टूटने से बचाने का दबाव बहुत अधिक था, और एक पैर और बैसाखी के सहारे असंतुलित ढंग से खड़े रहने के कारण परामर्शदाता के हाथ और कंधे में दर्द हो रहा था।

वेताल भट्ट की मन ही मन सुनाई देने वाली दिव्य चीख ने वराहमिहिर को चौंका दिया, "वहाँ से निकल जाओ। असुर आ रहा है।"

चाहे यह चौंकाने वाला हो या नहीं, आचार्य की आवाज़ में व्याप्त बेचैनी स्पष्ट थी, इसलिए उन्होंने अपनी छुपने की जगह छोड़ दी, और कटार को अपनी कमर में सुरक्षित रख लिया। हॉल में भागते हुए, वे अभी भी सुरक्षित स्थानों के बारे में सोच ही रहे थे कि तभी असुर ने उन पर हमला कर दिया, और काले तूफान की तरह उनकी ओर दौड़े।

अपनी सारी शक्ति को केंद्रित करते हुए, वराहमिहिर ने ज़ोरदार धक्का दिया और ऊर्जा कवच को आगे की ओर धकेल दिया। इस ज़ोरदार गति ने असुर को चौंका दिया और उसे पीछे धकेल दिया। सलाहकार के इस विरोध पर उसका चेहरा क्रोध

से लाल हो गया, लेकिन अपने गुस्से पर काबू पाते हुए, उस विशालकाय ने एक धूर्त और घृणास्पद मुस्कान बिखेरी।

वराहमिहिर ने पलकें झपकाईं जब असुर अंधकार में हिलता-डुलता और गायब होता दिखाई दिया; फिर, उनकी निगाहों के सामने ही, असुर के शरीर से एक परछाई अलग होकर दूर चली गई। इससे पहले कि सलाहकार कुछ समझ पाते, दो सींग वाले असुर उनके सामने आ खड़े हुए, दूसरा पहले की हूबहू प्रतिकृति था। एक और परछाई उस विशालकाय से अलग हुई, फिर तीसरी, और अचानक, चार एक जैसे सींग वाले असुर चारों ओर से वराहमिहिर को घेरते हुए फैल गए।

पहली प्रतिकृति वराहमिहिर के पास आई, जिसमें वह गदा उठाए हुए और घुमाते हुए दिखाई दे रहे थे।

पार्षद ने हमले का जवाब देने के लिए छलांग लगाई, ऊर्जा कवच बनाया और हमले को रोक दिया।

विपरीत दिशा से एक और जोड़ी आगे बढ़ी।

अपनी बैसाखी के सहारे लंगड़ाते हुए, वराहमिहिर ने अपने और इस हमलावर के बीच एक और ऊर्जा कवच बनाने के लिए हाथ से इशारा किया।

तीसरे और चौथे असुर एक ही समय पर दो दिशाओं से आकर युद्ध में शामिल हो गए।

भय से व्याकुल पार्षद ने असुरों को रोकने के लिए बेतहाशा ऊर्जा ढालें बनाईं। एक, दो, तीन, चार; असुरों ने हर ढाल पर क्रोधपूर्वक हमला किया, और उसकी आँखों के सामने ही, मूल ढाल से और भी परछाइयाँ अलग होकर प्रतिकृतियाँ बनाने लगीं... छह, अब उनकी संख्या सात हो गई। उन सातों ने उसके चारों ओर एक बेतरतीब घेरा बना लिया, चटकती हुई ढालों पर हमला करते हुए और उन्हें अपने गदाओं और दस्तानों से इतनी तेज़ी से तोड़ते हुए कि वराहमिहिर उन्हें दोबारा बना भी नहीं पा रहा था, वे सातों हर वार के साथ करीब आते जा रहे थे, घुसने के लिए जगह ढूंढ रहे थे...

सीमावर्ती क्षेत्र में जाने से पहले सम्राट ने उससे कहा था, "अपनी शक्ति की सीमाओं का पता तुम्हें तभी चलेगा जब तुम उसका पूर्ण उपयोग करोगे। अपनी शक्ति पर विश्वास रखो।"

पार्षद ने अपना हाथ आगे की ओर तेज़ी से घुमाया और अपनी बैसाखी को आधार बनाकर पूरा चक्कर लगाया। तुरंत ही, उसके चारों ओर ऊर्जा की एक गूंजती हुई दीवार खड़ी हो गई, जो ज़मीन से लेकर असुरों के सींगों की सबसे ऊपरी नोक तक पहुँच गई। उसने फिर से चक्कर लगाया और पहली दीवार के भीतर ही दूसरी दीवार बना ली। उसने तीसरी, फिर चौथी ऊर्जा की दीवार बनाई और फिर थकान से रुककर यह आकलन किया कि उसका काम कितना कारगर साबित हुआ है। दीवारों ने एक-दूसरे को मज़बूत किया, जिससे नुकीले गदाओं का प्रभाव कम हो गया।

लेकिन लगभग तुरंत ही, और भी असुरों की प्रतिकृतियाँ प्रकट हुईं और उन्होंने पूरे जोश के साथ दीवारों पर हमला कर दिया। और पार्षद ने भय से देखते हुए पाया कि ढालें खिंचने और टूटने लगीं।

अब हॉल पूरी तरह अंधेरे में डूबा हुआ था, बैंगनी-भूरे रंग की धुंधली रोशनी खिड़कियों के एक जोड़े से अंदर आ रही थी, इसलिए वराहमिहिर उस आकृति को तब तक नहीं देख पाए जब तक वह ऊर्जा की दीवार के पास आकर असुरों पर प्रहार नहीं करने लगी। उरुमी की एक तेज चमक देखकर वराहमिहिर ने राहत की सांस ली, लेकिन जैसे ही प्रतिकृतियां वरारुचि पर मुड़ीं, उरुमी की धार उनके शरीर को बिना खरोंचे ही भेद गई, वराहमिहिर की उम्मीदें टूट गईं। फिर भी राजा के भाई ने प्रतिकृतियों पर हमला जारी रखा, उन्हें परेशान किया, उन पर झपटे, फिर दूर हट गए, उनके वारों से बचते हुए उनकी पहुंच से थोड़ा बाहर रहे, उन्हें वराहमिहिर से दूर खींचते रहे...

जैसे ही रक्षात्मक ऊर्जा ढालें टूटकर बिखर गईं, वराहमिहिरा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और घूमकर एक और दीवार खड़ी कर दी, लेकिन इस प्रक्रिया के बीच में ही उनकी बैसाखी उनके पैर में उलझ गई और वे लड़खड़ा गए। अगले ही पल, पार्षद ज़मीन पर गिर पड़े, उनके सीने में दर्द की लहर दौड़ रही थी और ठुड्डी से तेज़ दर्द निकल रहा था। वे इतने थक चुके थे कि उठ भी नहीं पा रहे थे।

आँखों के सामने उड़ती चिंगारियों के बीच उसने वरारुचि को ढूँढ़ने के लिए मुड़ा, पर राजा का भाई उसकी दृष्टि से ओझल था, हालाँकि उसे पैरों की आहट और गदाओं के ज़मीन पर टकराने की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपने चारों ओर पतली होती ऊर्जा की दीवारों और उन दीवारों पर प्रहार कर रहे असुरों के पैरों की ओर

देखा। करवट बदलते हुए उसने अपनी कमर में लगे खंजर को महसूस किया। वह अभी भी वहीं था... हालाँकि उसे नहीं पता था कि कब तक।

फिर मुड़कर उसने हॉल के अंत में दरवाजे पर दिखाई देने वाली मशालों पर नजर डाली।

महल के सेवकों में से एक, वराहमिहिर ने मन ही मन सोचा, यहाँ दीपक जलाने के लिए आए हो।

लेकिन, कोई भी समझदार महल का सेवक महल में इधर-उधर घूमकर दीपक नहीं जलाएगा, जब गलियारों में भीषण युद्ध चल रहा हो और जान जाने का खतरा बहुत अधिक हो। तो फिर मशालें लिए सैनिक ही होंगे, जो तलाश कर रहे होंगे—

लेकिन ये ज्वालाएँ मशालों के लिए असामान्य आकार की थीं, सामान्य से लंबी थीं, और विचित्र रूप से मुड़ी हुई थीं जिससे वे तलवारों की धार जैसी दिखती थीं...

गिरने से हुए दर्द अब कम हो रहे थे, वराहमिहिर का उत्साह लगभग काबू में था। उन्होंने अंधेरे में उठती लपटों को देखा जो चाप बनाकर आग की धाराएं बना रही थीं। उन्होंने हॉल में सन्नाटा महसूस किया, मानो सभी असुर रूप एक समाधि में लीन हो गए हों, लपटों और उन्हें धारण किए हुए उस अंधेरे, छायादार आकृति की ओर आकर्षित हो रहे हों।

तलवारों को थामे हुए हाथ स्थिर हो गए, तलवारें नीचे की ओर झुकी हुई थीं, आग की लपटें कुंडलित होकर फर्श पर फैल गईं। लेकिन अगले ही पल, लपटें भड़क उठीं, नीचे से सम्राट के पसीने से तर दाढ़ी वाले चेहरे पर रोशनी पड़ गई, उनकी आंखें ठंडी और कठोर होकर उनके सामने कतार में खड़े असुरों पर टिकी हुई थीं।

वराहमिहिर विक्रमादित्य को हिलते हुए नहीं देख सके; उनकी आँखों को केवल एक धुंधलापन और प्रकाश दिखाई दिया, जैसे नरक की आग घूम रही हो और लपटों के छल्ले तेजी से एक के बाद एक निकल रहे हों, मानो हवा में दो साँप एक-दूसरे के चारों ओर नाच रहे हों। इससे पहले कि पार्षद कुछ समझ पाते, एक भयानक चीख हवा में गूंज उठी, जैसे कोई चुड़ैल हॉल में उग्र रूप से घुस आई हो, उसका काला मुँह खुला हुआ था और वह हरी आग उगल रही थी।

चुड़ैल झपटी और चीखती हुई ऊर्जा की सुरक्षात्मक दीवार के चारों ओर तैनात असुरों की ओर दौड़ी। वराहमिहिर ने अपने हाथ सिर पर बांध लिए और डर से सिकुड़ गए, उन्हें यकीन था कि वे भी जलकर राख हो जाएंगे, लेकिन हवा के तेज

झोंके के अलावा उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हुआ। सिर उठाकर उन्होंने देखा कि सम्राट, वरारुचि और एक अकेले सींग वाले असुर (वराहमिहिर को शक था कि वह असली असुर था) के अलावा हॉल खाली था। बचा हुआ आखिरी असुर जड़वत खड़ा चुड़ैल को घूर रहा था, जो हॉल की छत तक गई और फिर वापस मुड़ गई...

"यह संभव नहीं है," हॉल में छाए क्षणिक सन्नाटे में वराहमिहिर ने असुर की फुसफुसाहट सुनी। "मैं दिति का पुत्र हूँ—"

असुर की ओर देखते ही चुड़ैल का मुंह खुल गया।

असुर ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। "नहीं..."

असुर चीखते-चिल्लाते गुस्से में चूर-चूर होकर उस पर टूट पड़ा, तभी वह भागने लगा। वह हॉल के आधे रास्ते तक पहुँच चुका था, पता नहीं कहाँ जा रहा था, तभी वराहमिहिर ने देखा कि चुड़ैल के मुँह से एक ज्वाला निकली और असुर को अपनी चपेट में ले लिया। असुर दर्द और भय से कराहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। उसने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से खुद को संभाला और हरी आग में लिपटा हुआ अंधाधुंध भागा, ऊपर से केवल उसके सींग ही दिखाई दे रहे थे। एक खिड़की तक पहुँचकर, उस विशालकाय ने खुद को उससे बाहर फेंक दिया, हाथ-पैर चलाते हुए वह जलती हुई आग में झील में जा गिरा।

वराहमिहिर ने बड़ी सावधानी से खुद को उठाया, उनकी ठुड्डी में हल्का दर्द हो रहा था क्योंकि वह फर्श से टकरा गई थी।

"क्या वे सब चले गए?" वरारुची ने पूछा। उसने खिड़की से बाहर झाँका, हालाँकि बाहर इतना अंधेरा था कि कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

"मुझे लगता है कि वे हैं," वेताला भट्टा ने कहा, जो सामने वाले दरवाजे पर दिखाई दी थीं।

विक्रमादित्य ने वराहमिहिर के पास पहुँचते हुए कहा, "खंजर! नरक की आग उनके हाथों में मंद पड़ रही थी। चुड़ैल ऊपर आसमान में गायब हो चुकी थी। क्या अब सुरक्षित है?"

"हां," लंगड़े पार्षद ने राहत की सांस लेते हुए कहा और अपनी बेल्ट से पतली सी तलवार निकाली।

नरक की अग्नियों में से एक को म्यान में रखते हुए, सम्राट ने खंजर उठा लिया। उसे ऊपर उठाते हुए, जिससे उसकी ओब्सीडियन मूठ मंद प्रकाश में चमक उठी,

राजा ने मूठ की काली गहराइयों में मोहक ढंग से घूमती हुई हलाहल देवी का चिंतन किया, जो इंद्रधनुषी नीले रंग की थी और उस पर सोने और चांदी के कण बिखरे हुए थे।

विक्रमादित्य की आँखें सिकुड़ गईं। "अब इस
चीज़ को हमेशा के लिए नष्ट करना है।"

***

होलिका लगभग पूरी तरह से आक्रमण करने ही वाली थी कि उसे लगा जैसे कोई उसे ज़ोर से पीछे खींच रहा हो, उसकी तलवार की नोक क्षपनाका के गले के ठीक पास आकर रुक गई। जादूगरनी ने ज़ोर लगाकर वार किया और उस छोटे से फासले को पाटने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसे जकड़े रखने वाली शक्ति बहुत प्रबल थी, और उसे ज़ोर से पीछे खींच रही थी। चुड़ैल रानी को यह समझने में थोड़ा समय लगा कि दानव ही उसे जंजीर वाली तलवार से जकड़े हुए है—और यद्यपि वह हथियार को छोड़कर खुद को मुक्त कर सकती थी, फिर भी वह उसे खोना नहीं चाहती थी। इसलिए, वह असंतुलित होकर संघर्ष करती रही, उसके मन का एक हिस्सा सोच रहा था कि दानव पर उसके जादू का कोई असर क्यों नहीं हुआ।

फिर उसे याद आया। दानवों में कोई भावनात्मक लगाव नहीं था, इसलिए उनमें कोई लालसा नहीं थी और न ही कोई पछतावा था। इसीलिए, उसके छल-कपट के मंत्र उनमें भावनाएँ जगाने में विफल रहे थे।

अपनी तलवार घुमाते हुए, डायन रानी ने शालिवाहन पर हमला किया, जिसने अपनी तलवार पर मज़बूत पकड़ बनाए रखी और दूसरे हाथ से उसके वारों को रोका। शालिवाहन ने असुर को जकड़ने के लिए अपनी लताओं को उसके चारों ओर लपेटने की कोशिश की, लेकिन होलिका ने तेज़ी से लताओं को हटा दिया। दोनों ने एक-दूसरे पर हावी होने के लिए ज़ोरदार लड़ाई लड़ी, लेकिन कोई भी दूसरे पर विजय प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ।

जादूगरनी ने दानव स्वामी की एक और तंतु काट ही डाली थी कि अचानक चारों ओर सन्नाटा छा गया। लगभग उसी समय, दूर से रोने की आवाज़ उसके कानों में आई। चारों ओर देखते हुए, वह आश्चर्यचकित रह गई कि असुर, दानव और मनुष्य सभी ने लड़ना बंद कर दिया था और उज्जैनी की ओर देख रहे थे। शंख-तलवार पर

अपनी पकड़ ढीली करते हुए, होलिका शालिवाहन से दूर हट गई। उसने उत्तर की ओर देखा और आकाश में आग उगलती हुई चुड़ैलों का दृश्य देखकर उसकी आँखें फटी रह गईं।

हालांकि वह जानती थी कि असुर चुड़ैलों से सुरक्षित हैं, फिर भी उन प्रेतों को देखकर डायन रानी की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। वह अभी भी सोच ही रही थी कि चुड़ैलें शहर के ऊपर कैसे प्रकट हुईं—क्या मानव राजा हिरण्यक्ष द्वारा बनाए गए घेरे को पार कर गया था?—तभी तीनों बंशी मुड़ीं और पहाड़ियों की ओर चल पड़ीं। युद्ध थम सा गया था, सबकी निगाहें आती हुई चुड़ैलों पर टिकी थीं। अपने विरोधियों पर प्रहार करने का इससे बेहतर मौका न मिलने का एहसास करते हुए, होलिका ने अपनी तलवार उठाई और क्षपणक की ओर मुड़ी... तभी पहाड़ियों पर भय की एक चीख गूंजी। होलिका ने मुड़कर देखा तो बंशीयों ने अपने मुंह खोलकर युद्ध के मैदान में आग बरसा दी। असुर और युद्ध महिष तुरंत आग की चपेट में आ गए, जबकि मानव और दानव योद्धा बाल-बाल बच गए।

अविश्वास से स्तब्ध होकर, जादूगरनी देखती रही जब चुड़ैलों ने असुरों की पूरी सेना को आग लगा दी। असुरों को छटपटाते और गिरते देख, उनकी चीखें शाम के सन्नाटे में गूंज रही थीं और बंशीयों के विलाप को भी दबा रही थीं, होलिका का मन उन कहानियों की ओर चला गया जो पीढ़ी दर पीढ़ी नरक की आग के बारे में सुनाई जाती रही थीं; कि कैसे दिति ने यह सुनिश्चित किया था कि असुर चुड़ैलों से अप्रभावित रहें।

सब कहानियां हैं। सब झूठ हैं। सब गलत हैं।

इस अहसास के साथ ही भय उत्पन्न हो गया। भय ने होलिका के हृदय को बर्फीली जकड़ में जकड़ लिया, उसे निष्क्रिय कर दिया। वह बस आती हुई चुड़ैलों को देखती रह गई, जिनमें से एक सीधी उसकी ओर बढ़ रही थी, मुँह चौड़ा खुला हुआ था, और लपटें उबल रही थीं...

किसी तरह चुड़ैल रानी ने मुड़कर भागने की हिम्मत जुटाई। लेकिन आग की लपटें उसका पीछा करती रहीं और उसकी पीठ और गर्दन की त्वचा को जलाती रहीं।

***

"क्या बॉर्डरवर्ल्ड खत्म हो रहा है?"

आचार्य के शब्द हॉल की सन्नाटे भरी खामोशी में गूंज उठे।

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। उन्होंने थोड़ी उदासी के साथ कहा, "बॉर्डरवर्ल्ड को सहारा देने वाला बरगद का वृक्ष असुरों के हमले के दौरान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। इसका गिरना तय है।"

किसी ने मशालें लाकर कुछ दीपक जला दिए थे। उनकी रोशनी में सलाहकारों ने देखा कि सम्राट बहुत थके हुए थे। उनके पेट पर एक घाव था जिस पर एक साधारण पट्टी बंधी हुई थी, लेकिन राजा ने धनवंतरी को उसे देखने से मना कर दिया था और कहा था कि इसे बाद में देखना होगा।

"घोलमास्टर ने मुझसे संपर्क करके मुझे बताया कि बॉर्डरवर्ल्ड का अंत निकट है, और मुझे अलविदा कहने आया था।" राजा ने अपने सलाहकारों से विचार किया। "अब किसी भी क्षण बॉर्डरवर्ल्ड का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।"

"और तुम हलाहला को बॉर्डरवर्ल्ड में ले जाना चाहते हो?" वेताला भट्टा ने हैरानी से पूछा।

"जब बॉर्डरवर्ल्ड का अंत होगा, तो उसके अंदर की हर चीज़ भी खत्म हो जाएगी। हलाहला को हमेशा के लिए नष्ट करने का यही सही मौका है।" सम्राट दर्द से कराह उठा, अपने घाव पर लगी पट्टी को उसने धीरे से महसूस किया। "बॉर्डरवर्ल्ड को बचाना अब संभव नहीं है। लेकिन कम से कम हम बाकी तीन लोकों को हलाहला और उसके द्वारा फैलाई जाने वाली तबाही से बचा सकते हैं।"

राजगुरु, वरारुचि, वराहमिहिर और धनवंतरी ने एक-दूसरे को असहज निगाहों से देखा। चिकित्सक ने कहा, "अभी सीमावर्ती दुनिया में जाने का सही समय नहीं लग रहा है।"

विक्रमादित्य ने दृढ़ विश्वास से कहा, "हलहल से छुटकारा पाने का यही हमारा सबसे अच्छा मौका है। अगर हम यह मौका गंवा देते हैं, तो हम इस खतरे में फंस जाएंगे, और देवता और असुर हमें कभी चैन से नहीं रहने देंगे। वे बार-बार हलहल के लिए लौटते रहेंगे, और इस नगर और इसके लोगों को उनके लालच की कीमत चुकानी पड़ेगी। उज्जैन तबाह हो जाएगी, और यहाँ के लोगों की आशाएँ और सपने दुखद और भयानक अंत को प्राप्त हो जाएँगे। हम ऐसा नहीं होने दे सकते। अगर हमें युद्ध के निरंतर खतरे से खुद को मुक्त करना है, तो हमें अभी हलहल को नष्ट करना होगा।"

पार्षदों के मन में इस बात को लेकर विचार आते ही सन्नाटा छा गया।

वररुची ने पूछा, "हमें कैसे पता चलेगा कि बॉर्डरवर्ल्ड अभी खत्म नहीं हुआ है?"

“हमें तो नहीं पता, लेकिन हम सबकी भलाई के लिए, उम्मीद करते हैं कि ऐसा न हुआ हो,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया।

“यह बहुत खतरनाक है,” वराहमिहिरा ने सिर हिलाते हुए कहा। “अगर बॉर्डरवर्ल्ड का अंत हो जाए और तुम अभी भी उसके अंदर ही फंसे रहो तो क्या होगा?”

“हमें यह जोखिम अवश्य उठाना चाहिए,” राजा दृढ़ निश्चय के साथ बोले। “शांति के लिए यही हमारी एकमात्र आशा है।”

एक और गहन मौन छा गया। सम्राट ने अपने आस-पास के चेहरों को झुंझलाहट से देखा। उन्होंने कहा, "हम इस पर जितनी बहस करेंगे, मेरे लिए अंदर आना और वापस जाना उतना ही मुश्किल होगा।"

“हमें यह कटार इसलिए सौंपी गई थी ताकि हम इसकी रक्षा करें,” वराहमिहिर ने सोच-विचार करते हुए कहा। “क्या इसे नष्ट करके हम सर्वज्ञानी ईश्वर से किया अपना वचन तोड़ देंगे?”

विक्रमादित्य ने कहा, “सर्वज्ञ ने हलाहल को हमारे संरक्षण में इसलिए रखा क्योंकि उन्हें इसे नष्ट करने का कोई तरीका नहीं दिख रहा था। यह मत भूलो कि हलाहल का विनाश होना तय था, और सर्वज्ञ इसे नष्ट कर देते, सिवाय इसके कि वीषाद ने चालाकी से ऐसा होने से रोक दिया। हमारा काम था इस कटार को देवताओं और असुरों के हाथों में पड़ने से बचाना। यदि मैं समय रहते हलाहल को सीमालोक में रख दूं, तो हम महादेव से किया अपना वादा पूरा करने में सफल हो जाएंगे।”

“तुम बुरी तरह घायल हो,” धनवंतरी ने विरोध करते हुए कहा। “विक्रमा, तुम सीमावर्ती लोक की यात्रा करने की स्थिति में नहीं हो। यह अत्यंत खतरनाक हो सकता है।”

सम्राट ने वैद्य के कंधे पर धीरे से हाथ रखा। उन्होंने कहा, “पिछली बार जब मैं वहाँ मुसीबत में था, तो आपने मुझे बचाया था। अगर मेरी जान खतरे में पड़ी, तो मुझे विश्वास है कि आप मुझे फिर से बचा लेंगे। और फिर विशाखा भी है। वह मुझे बुला रही है, इसलिए कोई मुझे उसके पास वापस जाने से रोकने की कोशिश करे।” वे थोड़ी देर रुके और उनका चेहरा नरम पड़ गया। “वह कैसी है?”

“वह ठीक है,” धनवंतरी ने कहा। “बस उसे ज्यादा देर तक इंतजार मत करवाना।”

विक्रमादित्य ने कटार का अध्ययन किया, जिसकी ओब्सीडियन मूठ में रखी सामग्री उनकी मुट्ठी में छिपी हुई थी। फिर, राजगुरु को सिर हिलाकर उन्होंने कहा, "आइए, हम यह उज्जैनी के लिए करें।"

***

ऊपर आसमान में चुड़ैलों की चीखें और चक्कर लगाते हुए, यथासंभव छुपते हुए शुक्राचार्य, भले ही चारों ओर घना अंधेरा छाया हुआ था, तेज़ी से ढलान पर उस गुफा की ओर भागे जहाँ से उनके पुत्र अही का मार्गदर्शन कर रहे थे। वे जानते थे कि उन्होंने सर्प-ड्रैगन पर अपना नियंत्रण खो दिया है, लेकिन वे यह भी जानते थे कि दखल देने वाला सलाहकार अब अही के मामले में हस्तक्षेप करने में सक्षम नहीं था...

अब उसे बहुत कुछ पता चल चुका था, बहुत कुछ ऐसा था जो हड्डियों ने उसे बताया था।

काश उसने नरक की आग के बारे में हड्डियों से पहले ही पूछ लिया होता। उसने नहीं पूछा था, क्योंकि उसने कभी इसे ज़रूरी नहीं समझा था; क्योंकि पाताल में बाकी सब लोगों की तरह, वह भी उन कहानियों पर विश्वास करता था। इसलिए, उसने डर के मारे देखा कि चुड़ैलों ने असुर सेना पर हमला कर दिया था। जलते और भागते असुरों को देखकर वह स्तब्ध रह गया और स्पष्टीकरण पाने के लिए हड्डियों के पास दौड़ा, और उसे भरपूर स्पष्टीकरण और जवाब मिल गए।

कश्यप ने दिति द्वारा तलवारों पर किए गए मंत्रों को निष्क्रिय कर दिया था। कश्यप और पौरव ने इस बात को गुप्त रखा, जिसके परिणामस्वरूप...

हिरण्याक्ष मर चुका था। हिरण्यकशिपु और होलिका उज्जैन से भाग गए थे। पश्चिम से आए बर्बरों और दंडक के दानवों की सहायता से असुर सेनाओं को परास्त कर दिया गया था। मृत्यु के कगार पर होने के बावजूद, उसके तमाम प्रयासों के बाद भी नौ मोती एकत्रित हो गए थे।

और विक्रमादित्य ने एक बार फिर असुरों को वैषद के खंजर पर दावा करने से रोक दिया था।

—जो अब बॉर्डरवर्ल्ड की ओर बढ़ रहा था।

विक्रमादित्य हलाहल को नष्ट करने पर आमादा थे। महायाजक ने ढलान की चोटी पर पहुँचते ही अविश्वास से क्रोध किया, जब गुफा का मुँह दिखाई दिया, रात के

अंधेरे में धुंधली रोशनी की एक किरण की तरह। विक्रमादित्य यह सुनिश्चित करने पर तुले हुए थे कि असुरों को कभी भी देवताओं पर प्रभुत्व प्राप्त न हो। वे असुरों को अमरावती पर पुनः अधिकार प्राप्त करने का अवसर नहीं देंगे, वे शुक्राचार्य को इंद्र, नारद, बृहस्पति—विशेषकर बृहस्पति—और अन्य सभी देवताओं को अपने सामने गिड़गिड़ाते देखने के सुख से वंचित करने वाले थे...

देवताओं के साथ बहुत से हिसाब चुकता करना बाकी था, इसलिए वह किसी भी कीमत पर राजा को अपनी योजना में सफल नहीं होने देगा।

मन ही मन मंत्र का जाप करते हुए शुक्राचार्य गुफा की ओर चल पड़े। गुफा में प्रवेश करते ही उन्होंने चंदासुर और अमरका को उबलते पानी के कटोरे के ऊपर मंडराते हुए प्रेत सर्प के सामने बैठे देखा।

"क्या सांप फिर से आपके नियंत्रण में आ गया है?" प्रधान पुजारी ने पूछा।

"जी हां, पिताजी," चंदासुर ने उत्तर दिया। "कुछ समय के लिए ऐसा नहीं था—"

"मुझे पता है," शुक्राचार्य ने कठोर स्वर में हाथ हिलाते हुए कहा। "जिस मनुष्य के विरुद्ध तुम लड़ रहे थे, वह शायद मर चुका है, इसलिए कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं चाहता हूँ कि तुम अही पर पूर्ण नियंत्रण कर लो और शहर को नष्ट कर दो। राजा के महल से शुरुआत करो। अंत में, मनुष्यों का कुछ भी शेष नहीं रहना चाहिए।"

"जी हां, पिताजी," चंदासुर ने कहा।

प्रधान पुजारी ने अपनी कमर से एक चाकू निकाला। अपने द्वारा उच्चारित संजीवनी मंत्र को पूरा करते हुए, शुक्राचार्य ने चाकू से अपनी कलाई काट ली, जिससे नसें कट गईं और खून उनके हाथ से बहकर उंगलियों से टपकता हुआ गुफा के खुरदुरे पत्थर के फर्श पर बिखर गया।

महापुजारी के हाथ से चाकू गिर पड़ा और वह गिरकर सीमावर्ती दुनिया में प्रवेश कर गया।

अमरका और चंदासुर ने गुफा के मुहाने पर पड़े अपने पिता के शव की ओर मुड़कर नहीं देखा। माथे से पसीना टपक रहा था, वे अही को अपने वश में रखने वाले मंत्रों का जाप कर रहे थे। जैसे-जैसे पानी से भाप की और अधिक लपटें उठकर प्रेत-सर्प से चिपकती गईं, वह आकृति और अधिक घनी होती गई और ऊपर उठ खड़ी हुई, उसका फन फैल गया, उसका मुँह खुला रह गया, जिससे सड़े हुए मांस की दुर्गंध गुफा की दीवारों पर फैल गई।

बाहर, रात के अंधेरे में छिपा हुआ, अही उज्जैनी के ऊपर बादलों के बीच से निकल गया।

त्याग करना

क्या आपको अही को नियंत्रित करने का कोई तरीका पता है?

"क्या?" जयन्त ने मूर्खतापूर्वक उर्वशी की ओर देखा।

“तुम ही थे जिसने इसे नींद से जगाया। तुम्हें कोई न कोई तरीका जरूर पता होगा...”

जयंता ने अपना सिर बाहर निकालकर दीर्घा का जायजा लिया। वह खाली थी, सिवाय उसके कक्ष के द्वार पर खड़ी अप्सरा के। उसकी निगाहें संदेह से सिकुड़ गईं।

“पिता ने ही तुम्हें भेजा है, है ना?”

“पिताजी...? नहीं... मैं अपनी मर्जी से आया हूँ।”

राजकुमार ने कुछ क्षण अप्सरा को गौर से देखा। "तुम अही से क्या चाहती हो?"

मैं चाहता हूं कि तुम अही को रोक दो।

“रुकें?” जयंता ने हैरानी से पलकें झपकाईं।

“हां, अही को रोक दो।”

“किस काम से?”

"मानव नगर को नष्ट करने से।"

राजकुमार को फिर से संदेह हुआ। "मानव नगरी में ऐसी क्या खास बात है?"

राजकुमार को धक्का देते हुए, जानबूझकर अपने नंगे कंधे को राजकुमार की बांह से छूते हुए, हालांकि उसे यह स्पर्श बिल्कुल पसंद नहीं था, उर्वशी कक्ष में प्रवेश कर गई। पीछे मुड़कर उसने अपने हाथों को इस तरह जोड़ा कि उसके स्तन उभर आए और जयंता की घूरती निगाहों का सामना करना पड़ा।

"इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।" अप्सरा ने युवा देव को घूरते हुए कहा, "क्या तुम इसे रोक सकते हो?"

जयंता की निगाहें उर्वशी के सुडौल शरीर पर टिक गईं। उसने उर्वशी की आँखों में देखा, जो उसे चुनौती भरी निगाहों से देख रही थीं... लेकिन उनमें एक ऐसा वादा भी था जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी धड़कन पल भर में तेज़ हो गई।

"मंत्र हिरण्यकशिपु ने चुराए थे," जयंत ने बिना किसी प्रतिबद्धता के कंधे उचकाए।

"मुझे पता है। लेकिन मुझे लगा कि शायद आपको अभी भी सांप को काबू करना आता होगा।" उर्वशी थोड़ी देर रुकी। उसे एहसास हुआ कि आगे जो कहना है कह देने के बाद पीछे हटना मुमकिन नहीं होगा। "मैं... आपको वो प्यार देने को तैयार हूँ जो आप चाहते हैं—अगर आप ऐसा कर सकें।"

जयंता अप्सरा को मूर्ख की तरह घूरता रहा। फिर, सांस लेने का ध्यान रखते हुए, उसने अपना मुंह बंद किया और निगल लिया। अपने होंठों को गीला करते हुए, वह दरवाजा बंद करने लगा। "शायद मैं कर पाऊँगा—"

"अभी।"

राजकुमार रुक गया; दरवाजा आधा बंद था। अप्सरा की आवाज में दृढ़ता थी।

"मैं चाहती हूँ कि तुम अही को अभी रोक दो," उसने दोहराया। "बाकी सब अपने आप हो जाएगा।"

कुछ देर सोचने के बाद जयंता ने सिर हिलाया। दरवाजा बंद करके उसने अस्त-व्यस्त कमरे में चारों ओर देखा। "मेरे पास दीपक, कोयला और आटा तो है, लेकिन मुझे सिंदूर की ज़रूरत होगी—"

उर्वशी ने पूछा, "अगर असुरों के पास मंत्र हैं तो तुम सांप को कैसे रोकोगे?"

राजकुमार के चेहरे पर एक हल्की मुस्कान आ गई। "वे यही सोचते हैं..." वह उर्वशी की ओर मुड़ा, उसका चेहरा अचानक सतर्क हो गया। "क्या तुम्हें यकीन है कि तुम पिताजी के कहने पर यहाँ नहीं आई हो?"

"नहीं," अप्सरा ने जोर देकर कहा। "क्या आपको लगता है कि वह मुझे मेरे प्रेम की पेशकश के साथ यहाँ भेजेगा?"

"उससे कुछ भी उम्मीद नहीं की जा सकती," देव ने व्यंग्य किया। "पिताजी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए..." एक संदूक में से सात दीपक निकालते हुए उन्होंने कहा, "...असुरों के पास मंत्र नहीं हैं।"

"क्या?"

"क्षमा कीजिए, वे ऐसा करते हैं," जयंता ने समझाया, "लेकिन सभी मंत्र नहीं।"

दीपों को एक तरफ रखकर, राजकुमार ने फर्श साफ किया और कोयले और आटे से एक मंडल बनाया। उन्होंने कहा, "जब बृहस्पति ने मुझे मंत्र सौंपने का आदेश दिया, तो मैंने ताड़ के पत्तों का केवल आधा भाग ही उन्हें दिया और बाकी अपने पास रख लिया। मैं मंत्रों को पूरी तरह से नहीं देना चाहता था; मैंने पिता से यही सीखा है कि शक्ति कभी किसी को नहीं देनी चाहिए। हज़ार वर्षों में किसी ने भी उन मंत्रों को नहीं देखा था, इसलिए बृहस्पति या किसी और को यह पता नहीं चल सकता था कि मंत्र अधूरे हैं। हिरण्यकशिपु यहाँ से केवल वे मंत्र ले गया जो अहि को आंशिक रूप से नियंत्रित कर सकते हैं... पूरी तरह से नहीं।"

जयंता ने गर्व से अपने द्वारा बनाए गए सर्प के आकार के मंडल का अवलोकन किया। फिर उर्वशी की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "अहि को पूरी तरह वश में करने के मंत्र केवल मेरे पास हैं।" अप्सरा के पास जाकर उन्होंने उसका ठुड्डी अपने हाथ में लिया और उसके गालों पर आटा मल दिया। "क्या तुम्हें खुशी नहीं है कि जब तुम्हें सहायता की आवश्यकता है, मैं तुम्हारे साथ हूँ?" उन्होंने अप्सरा के होठों पर ज़ोर से चुंबन किया, उन्हें जुनून से काटा, उसके ऊपर ऊँघते हुए, उनके हाथ मकड़ी की तरह उसके पूरे शरीर पर बेकाबू होकर दौड़ रहे थे, टटोल रहे थे, पकड़ रहे थे, निचोड़ रहे थे...

उर्वशी ने अपनी हथेली देवता की छाती पर रखी। "बाद में," उसने अपने होंठ चाटते हुए कहा, और अपनी जीभ पर बासी गंजीका की बदबू से उसे घृणा हो रही थी। उसने उनकी पागल आँखों में देखा। "पहले अही।"

अनिच्छा से ही सही, राजकुमार पीछे हट गया।

"हिरण्यकशिपु अपने साथ जो मंत्र ले गया था, उनका क्या हुआ?" अप्सरा ने पूछा। "क्या आपको उनकी आवश्यकता नहीं है?"

"वे यहाँ हैं," राजकुमार ने बड़े ही आत्मविश्वास से अपने सिर पर उंगली रखी। "यह मत भूलो, मैंने एक बार पहले ही साँप को जीवित कर दिया है।" उसने मंडला के चारों ओर दीपक रखने शुरू कर दिए। "तुम मानव नगर को क्यों बचाना चाहते हो?" उसने अचानक पूछा।

"क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? मैं तुम्हारे लिए यहाँ हूँ।"

"हम्म-हम्म," जयंता ने मंडल के बीचोंबीच तांबे का कटोरा रखते हुए कहा। "क्या तुम्हें पता है कि पिताजी चाहते थे कि मैं अही को भी पालूँ?" वह बड़बड़ाया। "अगर उन्होंने विनम्रता से कहा होता, तो मैं मान जाता, लेकिन विनम्रता पिताजी के प्रशंसनीय गुणों में से एक नहीं है।" वह हँसा। "हालाँकि अब मुझे खुशी है कि उन्होंने विनम्रता नहीं दिखाई। वरना मैं तुम्हारी मदद कैसे करता..."

आप मानव नगरी को क्यों बचाना चाहते हैं?

उर्वशी ने देवताओं की बातों को अनसुना करते हुए मन ही मन इस सवाल को घुमाया। वह कहाँ से समझाना शुरू करती? क्या वह खुद अपने इरादों को समझती थी? हाँ, इंद्र से उसका मोहभंग हो चुका था। मानव राजा के प्रति उसकी प्रशंसा थी। रानी के साथ अपने व्यवहार के लिए उसे पछतावा था। लेकिन क्या यह सब उसके लिए काफी था कि वह इस नीच राजकुमार के प्रति अपनी घृणा को त्याग दे और उसकी मदद के बदले खुद को उसे सौंप दे? और किसलिए? उसे पक्का पता नहीं था कि जयंत के हस्तक्षेप से उज्जैनी का विनाश रुक जाएगा। उसे यह भी नहीं पता था कि राजकुमार मंत्रों के बारे में झूठ बोल रहा है या नहीं, कहीं वह उसका फायदा तो नहीं उठा रहा है...

आपने कहा था कि आप वो बन सकती हैं जो मैं चाहूँ, विक्रमादित्य के शब्द अचानक रानी के शयनकक्ष से मिथ्यामयी को याद आ गए। नहीं, मिथ्यामयी। हमें प्रेम के लिए इस तरह नहीं बदलना चाहिए; यह प्रेम नहीं रहेगा। बल्कि प्रेम ही है जो हमें बदलता है, रूपांतरित करता है, हमें हमारे वर्तमान स्वरूप से बेहतर बनाता है। जब आप इस अंतर को समझ जाएँगी, तब आप प्रेम को समझ जाएँगी।

उर्वशी बिना देखे सामने घूरती रही।

"जब अही मेरे नियंत्रण में आ जाए तो मुझे उसके साथ क्या करना चाहिए?"

अप्सरा ने जयंता से मंडल की ओर देखा। दीपक जला दिए गए थे और सब कुछ तैयार था।

यह प्यार ही है जो हमें बदलता है, हमें रूपांतरित करता है... हमें हमारे वर्तमान स्वरूप से बेहतर बनाता है।

"इसे वहीं वापस भेज दो जहाँ से तुम इसे लाए हो," उसने जवाब दिया।

राजा सही था। आखिरकार उसे समझ आ गई थी, और राजा ने ही उसे समझाया था।

राजकुमार तांबे के कटोरे के सामने बैठ गया। "क्या आप जानते हैं कि अही इस समय कहाँ है?"

एक गहरी आह भरते हुए उर्वशी ने सिर हिलाया। "मानव नगरी के ऊपर कहीं।"

***

महल के उत्तरी भाग का एक और हिस्सा ज़ोरदार धमाके के साथ ढह गया, जिससे वरारुचि के पैरों तले ज़मीन कांप उठी, जब वह गलियारे में दौड़ रहा था। ढहती हुई ईंटों की गर्जना गलियारे में गूंज रही थी, जिससे सलाहकार के वे शब्द दब गए जिनमें वह वराहामिहिर को उसके पीछे चलने के लिए उकसा रहा था। बूढ़ा व्यक्ति जितना हो सके लड़खड़ाते हुए उसके पीछे चला, लेकिन राजा के भाई को पकड़ने का कोई सवाल ही नहीं था, जो कोने से मुड़कर नज़रों से ओझल हो गया था।

मोड़ पर पहुँचकर वराहमिहिर ने अपने दाहिनी ओर की छत को महल के सेवकों और पहरेदारों से खचाखच भरा देखा। वे दीवार पर झुककर नीचे की ओर इशारा करते हुए या गर्दन उठाकर आकाश की ओर देखते हुए आपस में बड़बड़ा रहे थे। लंगड़ा सलाहकार आगे की ओर धक्का-मुक्की करते हुए पहुँचा और देखा कि ढही हुई दीवारों का मलबा अभी भी महल की झील में गिर रहा था, हालाँकि अंधेरे के कारण नुकसान का पूरा दृश्य दिखाई नहीं दे रहा था। झील का पानी महल की दीवारों से टकरा रहा था और हलचल धीरे-धीरे शांत हो रही थी।

"-साँप।"

वराहमिहिर ने मुड़कर देखा तो वररुचि उनके पास आ खड़ा हुआ था। "क्या?"

"यह पक्का हो गया है," वरारुची ने सबकी आवाज़ के बीच अपनी बात सुनाने के लिए चिल्लाकर कहा। "यह वही साँप है।"

वराहमिहिर ने सिर हिलाया, और दोनों ने काले आकाश में खोजबीन की। दोनों को कुछ भी दिखाई नहीं दिया। न तारे, न तारामंडल, न चंद्रमा, न अही।

"क्या महल में कोई घायल या हताहत हुआ है?"

“मलबे को हटाते समय शायद हमें कोई फंसा हुआ मिल जाए,” वरारुची ने कंधे उचकाते हुए कहा। “क्या तुम इसे और अधिक नुकसान पहुंचाने से रोक सकते हो? अपनी ढाल से?”

“यह निर्भर करता है। सबसे पहले, मुझे इसे देखने में सक्षम होना चाहिए। दूसरा, मुझे महल के उस हिस्से में होना चाहिए जिस पर हमला हो रहा है। तीसरा, मुझे नहीं पता कि मैं इतना बड़ा ऊर्जा कवच बना सकता हूँ या नहीं।”

“आपको कोशिश करनी ही होगी। इस चीज ने महल के तीन हिस्सों को पहले ही गिरा दिया है।”

उनकी दाहिनी ओर से किसी तरल पदार्थ के झील में गिरने की आवाज आई, जिसके बाद खौलते पानी की फुफकार और छनछनाहट सुनाई दी।

किसी ने चिल्लाकर कहा, "सांप ने झील में थूका।"

“अगर पुल बन गया तो हम यहाँ बहुत देर तक फँसे रहेंगे,” वरारुची ने बुदबुदाते हुए कहा। “चलो। यह उस तरफ कहीं है।”

वे घुमावदार गलियारों और खुली गैलरी में सांप का पीछा करते हुए आगे बढ़े, लेकिन जब वे उस जगह पहुँचे जहाँ वरारुचि ने अही के होने का अनुमान लगाया था, तो वहाँ कुछ भी नहीं था। उन्होंने आकाश की ओर देखा, चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए—

एक चीख। उसके बाद एक और ढहने और बिखरने की आवाज़।

पार्षदों ने मुड़कर देखा तो दूर स्थित एक छत का एक हिस्सा ढह गया। धूल आसमान में उड़ने लगी।

"वहाँ," वरारुची ने महल के ऊपर लटकी हुई एक धुंधली, सर्पनुमा आकृति की ओर इशारा किया।

उस आकृति पर ध्यान केंद्रित करते हुए और उसे पीछे हटते हुए देखकर, वराहमिहिर समझ गए कि साँप फिर से विष उगलने की तैयारी कर रहा है। तुरंत ही उन्होंने अपना हाथ ऊपर उठाया और जितना हो सके उतना चौड़ा ढाल बनाया, लेकिन ढाल की चौड़ाई उस चबूतरे को मुश्किल से ही ढक पाई जिस पर वे खड़े थे।

साँप ने फिर से विष उगला, और महल का एक और हिस्सा फट गया, धूल और मलबा हवा में उड़ गया, और झटकों से बाहरी दीवारों में दरारें पड़ गईं। साँप स्वयं रात के अंधेरे में गायब हो गया।

"यह काम नहीं कर रहा है," वराहमिहिर ने दुख भरे स्वर में कहा।

"अगर यह सिलसिला ज़्यादा देर तक चलता रहा तो महल टिक नहीं पाएगा," वरारुचि गुर्राते हुए बोला। "हमें विक्रमा को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाना होगा।"

"जब तक वह बॉर्डरवर्ल्ड से वापस नहीं आ जाता, हम उसे परेशान नहीं कर सकते," वराहमिहिरा ने उसे याद दिलाया।

लेकिन इस मामले में उसे बहुत ज्यादा खतरा है...

वररुची ने ध्यान केंद्रित करने के लिए अपनी उंगलियाँ कनपटी पर दबाईं, तभी ठीक उनके सिर के ऊपर से एक ज़ोरदार आवाज़ आई। पार्षदों ने ऊपर देखा, उनके रोंगटे खड़े हो गए, डर से उनके मुँह सूख गए। पहले तो उन्हें काले आकाश के सिवा कुछ नहीं दिखा। फिर धीरे-धीरे, आसपास के बादलों से धुंधली आकृति उभरने लगी, और अही एक स्पष्ट आकृति में धीरे-धीरे हिलने लगा।

"ढाल," वररुचि फुसफुसाए।

वराहमिहिर ने हाथ उठाते समय अपनी हड्डियों में बुढ़ापे का एहसास किया; मानो हवा भी उनका विरोध कर रही हो, उन्हें याद दिला रही हो कि यह एक बुरा विचार है। फिर भी उन्होंने अपना हाथ ऊपर उठाया।

फिर, अप्रत्याशित रूप से, पूर्व दिशा में बादल छंट गए और चांदनी अंदर आने लगी।

और उस शुद्ध, दूधिया सफेद प्रकाश में, पार्षदों ने उस विशालकाय सर्प को उसके पूर्ण वैभव में देखा। चंद्रमा की रोशनी उसके झिलमिलाते शरीर से परावर्तित और अपवर्तित हो रही थी, उसका खुला हुआ फन उसकी भयानक आँखों की दरारों से जगमगा रहा था, जो भीतर से जल रही थीं और रक्त-नारंगी रंग की थीं। उसका मुँह एक गहरा गड्ढा था जिसमें से एक दोमुँही जीभ बाहर निकली हुई थी, जो लालच से हवा को चाट रही थी।

सांप चबूतरे के ऊपर उठा। उसने पार्षदों को घूरकर देखा। फिर उसने अपना सिर पीछे खींच लिया।

"ढाल," वरारुची ने फुसफुसाते हुए जल्दबाजी में कहा।

वराहमिहिर ने ढाल बनाने की विधि याद करने की कोशिश की, लेकिन उसके मन में केवल भय ही उत्पन्न हुआ।

अही अपनी पूरी ऊंचाई तक उठ खड़ा हुआ, उन पर जहर उगलने के लिए तैयार।

"अपनी ढाल का इस्तेमाल करो," वरारुची ने धीमी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा।

अही डगमगा गया...

...और पतला किया गया...

...और इसने अपना आकार, वजन और घनत्व खो दिया। इसने अपनी दुर्भावना भी खो दी।

अही वाष्पित हो गया।

अब बस खूबसूरत चांदनी ही बाकी रह गई थी।

“इसके साथ कुछ हुआ होगा,” वराहमिहिर ने आश्चर्य व्यक्त किया।

“मुझे लगता है... वह मर गया,” वररुची ने राहत की सांस लेते हुए कहा और उनके कंधे झुक गए।

शहर में कहीं खतरे की घंटी बजने लगी।

“अब क्या?” वरारुचि ने आश्चर्य और व्यथित होकर कहा।

कुछ ही क्षणों में, दूसरी और फिर तीसरी घंटी भी शोरगुल में शामिल हो गई। चिंतित निगाहों का आदान-प्रदान करते हुए, पार्षद अंदर चले गए, जहाँ उनकी मुलाकात एक घबराए हुए गार्ड से हुई।

“उज्जायिनी पर हमला हो रहा है,” गार्ड को कहने की ज़रूरत नहीं थी। अपनी आवाज़ में डर को छुपाते हुए उसने कहा, “ये वही साँप जैसे चेहरे वाले जीव हैं जो कुछ रात पहले आए थे और ज़मीन के नीचे से खोदकर बाहर निकल रहे थे।”

"आधे घोड़ों का कोई सुराग मिला?" वरारुची ने तीखे स्वर में पूछा।

गार्ड ने अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदाया, उसके शब्द शहर भर में बज रही खतरे की घंटियों के शोर के बीच बज रहे तुरही की तेज आवाज में डूब गए।

“वह तो हाथी था!” वरारुचि ने कान उठाकर वराहमिहिर की ओर देखते हुए कहा, जो उज्जैनी की ओर मुड़ गए थे। मंद प्रकाश में वृद्ध सलाहकार का चेहरा पीला पड़ गया था।

वराहमिहिर के होंठ धीरे-धीरे हिले और एक शब्द बोला, "इंद्र।"

***

तांबे के कटोरे में पानी एकदम स्थिर था। उसमें हल्की सी भी हलचल नहीं थी, न ही भाप का कोई निशान था।

"वह चीज कहाँ गई?" अमरका ने कटोरे की ओर देखते हुए भौंहें चढ़ाकर पूछा।

"वह बस पानी में गिर गया और गायब हो गया—जैसे मर गया हो या कुछ और," चंदासुर गुर्राया, अपने चारों ओर देखते हुए, फिर गुफा की छत की ओर देखा, मानो उसे उम्मीद हो कि वहाँ कोई भूत-सांप छिपा होगा, जो वहाँ से भाग रहा होगा।

"चलो फिर से कोशिश करते हैं," अमरका ने रूखेपन से कहा।

एक भाई मंत्रों का जाप कर रहा था, तभी दूसरे ने अपनी उंगली पर एक और चीरा लगाया और कटोरे में खून टपकाया। लेकिन कुछ नहीं हुआ। प्रेत-सांप प्रलोभन में नहीं आया।

"क्या यह काम कर रहा है?" अमरका ने घबराते हुए पूछा।

चंदासुर ने चिढ़कर कहा, "मंत्रों पर ध्यान दो। मुझे अपना काम करने दो।"

वे तब तक कोशिश करते रहे जब तक चंदासुर ने झुंझलाहट में अपना हाथ नहीं छोड़ दिया। "कोई फायदा नहीं," उसने गुस्से में कहा। उसने कटोरे को छुआ। "पानी भी ठंडा हो गया है।" उसने गुस्से में कटोरा धक्का दिया, और पानी ज़मीन पर फैल गया। "ज़रूर वही मानव सलाहकार होगा, जिसके बारे में पिताजी ने बताया था।"

"पिताजी ने कहा था कि शायद वह मर गया है," अमरका ने कुछ देर सोचा। "नहीं, वह नहीं है। उसने अही से संघर्ष किया था। यह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसका सर्प पर कहीं अधिक अधिकार है।" वह खड़ा हो गया।

गुफा से बाहर निकलते ही भाइयों ने आकाश का अवलोकन किया। अर्धचंद्र बादलों को चांदी की कोमल आभा से जगमगा रहा था।

"कुछ नहीं," अमरका ने निराशा से भरे स्वर में कहा। "अही चला गया।"

"आह!" चंदासुर ने हताश क्रोध से गरजते हुए कहा। "हम क्या करें—"

चंदासुर की शांति भंग हो गई जब किसी भारी वस्तु के बहुत हल्के कदमों से गिरने की आवाज़ आई, जिसके बाद एक गहरी, भयावह गुर्राहट सुनाई दी। दोनों भाई

मुड़कर देखने लगे तो पहाड़ियों की घनी झाड़ियों में खड़े एक विशालकाय व्यक्ति पर चाँदनी पड़ रही थी। वह व्यक्ति गुफा से आती रोशनी में कदम रखने लगा।

एक पुरुष-शेर।

एक साथ मिलकर असुरों ने उस जानवर पर हमला कर दिया। वे शारीरिक रूप से शक्तिशाली और अविश्वसनीय रूप से बलवान थे, लेकिन उनमें से कोई भी उस भयंकर क्रोध के लिए तैयार नहीं था जिसके साथ नर-सिंह ने उन पर छलांग लगाई, भूरी भुजाएँ ऊपर उठाईं, पंजे खोले, पहले दाहिने हाथ से, फिर बाएं हाथ से, तेजी से वार किया...

दोनों भाई लड़खड़ाकर पीछे हट गए। चंदासुर के चौड़े, पीले चेहरे पर ज़ख्मों के निशान थे, बायां गाल और मुंह बुरी तरह फटा हुआ था, अमरका का दाहिना कंधा और छाती छलनी हो गई थी और खून बह रहा था। दर्द के बावजूद चंदासुर ने हिम्मत जुटाई और अपनी विशाल मुट्ठी से अमर सिंह की छाती पर वार किया, जिससे अमरका चौंक गया और सलाहकार को चकमा देकर गुफा के अंदर भाग गया। चंदासुर ने अमर सिंह पर एक और वार किया, लेकिन इस बार सलाहकार बच गया और उसने असुर के खुले पेट पर वार किया, जिससे मांस और मांसपेशियां कट गईं।

अमरका दोनों हाथों में एक-एक गदा लिए गुफा से बाहर निकले। नर-सिंह को अपनी ओर पीठ किए देख, असुर ने आक्रमण करने के लिए झपट्टा मारा, अपनी गदा ऊपर उठाई, मानो उसके नुकीले कांटों को अमर सिंह की पीठ में गाड़ने के लिए तैयार हो। लेकिन किसी चीज़ ने असुर को ठोकर मार दी, जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा। बिल्ली जैसी फुर्तीली प्रवृत्ति से सतर्क होकर, अमर सिंह ने मुड़कर देखा कि अमरका उनकी ओर लड़खड़ाते हुए आ रहा है। असुर के बाल पकड़कर, सलाहकार ने उसे आगे की ओर खींचा और ज़मीन पर पटक दिया, फिर समय रहते मुड़कर चंदासुर के चेहरे पर किए गए एक और प्रहार से खुद को बचाया। पहाड़ियों पर गूंजती दहाड़ के साथ, नर-सिंह ने चंदासुर की बांह पर अपने जबड़े बंद कर लिए, इतनी ज़ोर से कि असुर दर्द से चीख उठा, उसकी मांसल बांह की हड्डियां दबाव से चटक गईं।

चंदासुर पर अपनी पकड़ छोड़ते हुए, नरसिंह ने अपना ध्यान अमरका की ओर मोड़ा, जो लड़खड़ाते हुए उठने की कोशिश कर रहा था। लेकिन जैसे ही अमरसिंह

आगे बढ़ा, हाथ ऊपर उठाकर और पंजे खोलकर अमरका के सिर पर प्रहार करने के लिए, जादुई रूप से असुर के चारों ओर जंजीरें प्रकट हो गईं और उसे जकड़ लिया। अमरका ने खुद को छुड़ाने के लिए छटपटाया, लेकिन जंजीरें इतनी मजबूत थीं कि वह लड़खड़ाकर नरसिंह के पैरों पर गिर पड़ा।

अमर सिंह अमरका के पास घुटने टेककर बैठ गया, असुर को गदा से मार डालने ही वाला था कि अचानक उसे अपने हाथ पर एक बंधन महसूस हुआ। सलाहकार ने पलटकर देखा तो उसकी कलाई पर भी एक जंजीर बंधी हुई थी, जिसका दूसरा सिरा कुबेर के हाथ में था।

"आपने कहा था कि आप उन्हें कैदी बनाना चाहते हैं," यक्ष ने पार्षद को याद दिलाया।

शेर-मानव के होंठों से एक गुर्राहट निकली, लेकिन उसकी बांह ढीली पड़ गई और कंधे शिथिल हो गए। जैसे ही जंजीर ढीली होकर गायब हुई, अमारा सिम्हा अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

एक यक्ष गुफा से एक दीपक लेकर आया। उसकी रोशनी जंजीरों में जकड़ी हुई आकृतियों पर पड़ी।

“बिल्कुल वही जो हम ढूंढ रहे थे,” कुबेरा ने प्रसन्नता से कहा। “शुक्राचार्य के पुत्र।”

“हे यक्ष, तुम मनुष्यों का साथ क्यों दे रहे हो?” चंदासुर ने गुस्से से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। कोई जवाब न मिलने पर उसने गुस्से में अपने दांत दिखाए। “तुम लगातार दो बार हमारे रास्ते में आ चुके हो। यक्षों को इसका पछतावा होगा, मैं वादा करता हूँ।”

कुबेरा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “अभी तुम्हें अपनी सुरक्षा की चिंता करनी चाहिए। जल्द ही तुम्हारा सामना नरक की आग के स्वामी से होगा, और तुम उसके रास्ते में इतनी बार आ चुके हो कि यह मुलाकात सुखद नहीं होगी।”

चंदासुर ने दांत पीसे लेकिन कुछ नहीं कहा।

दीपक लाने वाले यक्ष ने कुबेर के कान में कुछ फुसफुसाया।

"लगता है अंदर कोई रहस्य छिपा है," यक्ष स्वामी ने गुफा की ओर इशारा करते हुए कहा।

ज़मीन पर पड़ी आकृति के पास पहुँचकर, कुबेर और अमरा सिंह चेहरे की जाँच करने के लिए झुके; बाईं आँख को ढकने वाली पट्टी से दोनों को उसकी पहचान स्पष्ट हो गई।

"क्या वह मर गया?" नर-शेर ने पूछा।

यक्ष ने नब्ज़ जाँची। "वह है, लेकिन फिर, शायद वह नहीं भी है।"

"इसका क्या मतलब है?"

"शुक्राचार्य ने संजीवनी मंत्र में महारत हासिल कर ली है, जो मृतकों को जीवन में वापस लौटने में सक्षम बनाता है।"

"तो चलो इसे भी ले चलते हैं," अमारा सिम्हा ने गुस्से में कहा। "अगर यह फिर से जीवित हो गया, तो मुझे इसे दोबारा मारने में बहुत आनंद आएगा।"

***

तेज हवा विक्रमदित्य को घना अंधेरा में धकेल रही थी, लगभग पूरी तरह से अंधी होने के कारण उसे आगे बढ़ने के लिए अपनी सुनने की शक्ति और स्मृति पर ही निर्भर रहना पड़ रहा था। उसके पैर सूखे पत्तों के ढेर पर घिसट रहे थे, उनकी चरमराहट उसके कानों में चुभ रही थी, जिससे दूर से आती एक पुराने पेड़ की चरमराहट दब रही थी। हवा के बावजूद, हवा बासी और सड़न से भरी हुई थी। कहीं-कहीं, ऊपर से धुंधली, धूसर रोशनी की किरणें अंधेरे को चीर रही थीं, और प्रकाश के इन धब्बों में सम्राट ने पीले बरगद के पत्तों की मोटी चादर पर धुंध की पतली लकीरों को तैरते हुए देखा।

"घोलमास्टर, तुम कहाँ हो?" विक्रमादित्य ने अपने हाथों को मुँह पर रखते हुए पुकारा। "कृपया मुझे जवाब दो।"

हवा सीटी बजा रही थी और पेड़ चरमरा रहा था।

राजा दस कदम चलने के बाद रुक गया। "यह तुम्हारा मित्र विक्रमादित्य है। तुम कहाँ हो?"

सन्नाटा। और फिर एक सूखी, थकी हुई फुसफुसाहट। "प्रशंसा हो, बुद्धिमान राजा।"

विक्रमादित्य ने मुड़कर देखा तो बेताल अर्धअंधेरे से निकलकर धूसर प्रकाश की किरण में प्रवेश कर रहा था। उस पिशाच के ज्वालामय बाल रंग और शक्ति खो चुके थे, हवा में फीके पीले रंग में लहरा रहे थे, और वह अपने कंधों पर रखे किसी अदृश्य बोझ के कारण झुका हुआ था।

"ऐसे समय में आप यहां क्यों आए हैं?" घोलमास्टर ने पूछा।

सम्राट ने अपने चारों ओर फैले अंधेरे में देखा। पेड़ पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चरमराया।

"बॉर्डरवर्ल्ड में उस शापित खंजर को लाना मेरी गलती थी," उसने गहरे अफसोस भरे स्वर में कहा। "मुझे तुम्हें इसमें शामिल नहीं करना चाहिए था। यह मेरी गलती है। मैंने ही तुम पर और बॉर्डरवर्ल्ड पर यह विपत्ति लाई है, और मैं इसे ठीक नहीं कर सकता। मुझे माफ कर दो, मेरे दोस्त।"

वह पिशाच विक्रमादित्य के थोड़ा और करीब आ गया। "हे महाराज, जो कुछ हुआ है उसके लिए स्वयं को दोष मत दीजिए। यही होना था; यही नियति है। सीमावर्ती जगत का अंत तो होना ही था। आपने वही किया जो आपको सही लगा, और मुझे खुशी है कि सीमावर्ती जगत ने हलाहल की रक्षा करने और सर्वज्ञ ईश्वर से किए गए अपने वादे को निभाने में भूमिका निभाई। यदि आप मुझसे दोबारा पूछें, तो मैं सीमावर्ती जगत को फिर से आपके हवाले कर दूंगा।" थोड़ा रुककर उसने कहा, "मित्र इसीलिए तो होते हैं—जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की मदद करने के लिए।"

राजा ने धीरे से सिर हिलाया।

"क्या तुम इतनी दूर इसीलिए आए हो?" बेताल ने उत्सुकता से पूछा। "सिर्फ माफी मांगने के लिए?"

विक्रमादित्य ने कुछ पल के लिए घोलमास्टर की ओर देखा। "नहीं, लेकिन पहले मुझे बताओ... क्या बॉर्डरवर्ल्ड को बचाने का कोई उपाय नहीं है? क्या उस पेड़ को रोकने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता...?"

बेताल अपना सिर हिला रहा था। उसने कहा, "सुनिए, बुद्धिमान राजा।"

उसका भार सहन करने में असमर्थ, वृक्ष कराह उठा, एक थकी हुई, कर्कश ध्वनि, एक मृत्यु विलाप।

"पेड़ को जो नुकसान हुआ है, उसे ठीक करने का कोई तरीका नहीं है," उस पिशाच ने कहा। "पेड़ को गिरने से कोई नहीं रोक सकता, बॉर्डरवर्ल्ड को कोई नहीं बचा सकता।"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाकर यह दर्शाया कि वह समझ गया है।

"ऐसे में, आपकी अनुमति से, बॉर्डरवर्ल्ड अन्य तीन लोकों की रक्षा और सुरक्षा के लिए एक और काम कर सकता है।" सम्राट ने धीरे से अपनी कमरबंद से कटार

निकाली। “अपने विनाश से, बॉर्डरवर्ल्ड अन्य लोकों को हलाहला से सुरक्षा प्रदान कर सकता है।”

घूलमास्टर ने खंजर को देखा, फिर सम्राट की ओर देखा। “आपको मेरी अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है, बुद्धिमान राजा। मैंने पहले ही कहा है कि यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं बॉर्डरवर्ल्ड को फिर से आपके हवाले कर दूंगा।” अपनी आवाज़ में हल्के व्यंग्य के साथ उसने आगे कहा, “और यह उचित ही है कि बॉर्डरवर्ल्ड उस चीज़ को नष्ट कर दे जिसके कारण बॉर्डरवर्ल्ड का विनाश हुआ।”

बेताल ने राजा की ओर अपना कंकालनुमा हाथ बढ़ाया। "मैं आपको और तीनों लोकों को हलाहल के बोझ से मुक्त करने में प्रसन्न होऊंगा।"

अब विक्रमादित्य की बारी थी सिर हिलाने की। "मकसद हलाहल से छुटकारा पाना है, तुमसे नहीं।"

"मैं नहीं समझता।"

मैं तुम्हें भी अपने साथ ले जाने आया हूँ।

"कहाँ?"

“अवंती को।”

बेताल ने राजा को घूरकर देखा। “मनुष्यों की दुनिया में? क्यों?”

“मैं तुम्हें यहाँ तब तक नहीं रहने दे सकता जब तक तुम्हारे चारों ओर बॉर्डरवर्ल्ड ढह रहा है। मैं चुपचाप तुम्हें जाते हुए नहीं देख सकता। यह किस तरह की दोस्ती होगी?”

घूलमास्टर कुछ पल चुप रहा। अंत में उसने कहा, “हे बुद्धिमान राजा, यह आपकी बहुत बड़ी कृपा है, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा। यह मेरी दुनिया है; मैं यहीं का हूं। मैं यहीं रहा हूं, और यहीं मुझे मरना होगा।”

“जिस दुनिया की तुम बात कर रहे हो, मेरे मित्र, वह अब अस्तित्व में नहीं है,” विक्रमादित्य ने कहा। “तुम्हारे सारे पिशाच जा चुके हैं, और उस दुनिया का कुछ भी शेष नहीं है। यह तुम्हारी दुनिया नहीं है। अगर तुम यहाँ मरना चुनते हो, तो यह व्यर्थ होगा। इसके बजाय मेरे साथ चलो—”

“और क्या करूँ?” बेताल ने पूछा। “मैं तुम्हारी दुनिया में क्या करूँ?”

सम्राट के उत्तर देने से पहले ही, अंधेरे से लकड़ी के टूटने की कर्कश आवाज सुनाई दी। पिशाच ने पीछे मुड़कर देखा, फिर राजा की ओर देखा।

"पेड़ गिरने में अब ज्यादा समय नहीं बचा है," उसने खंजर के लिए अपनी कंकालनुमा उंगलियों को हिलाते हुए कहा। "मुझे हलाहला
दो और चले जाओ।"

"नहीं," विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा।

"यह बहस करने का समय नहीं है—" बेताल ने कहना शुरू किया, फिर राजा के पीछे देखते हुए रुक गया।

विक्रमादित्य ने मुड़कर देखा तो परछाइयों में एक आकृति छिपी हुई थी। उसके चेहरे के हाव-भाव छिपे हुए थे, लेकिन उसका कद-काठी जाना-पहचाना था - छोटा और गठीला, एक हाथ में लोहे की लकड़ी का डंडा।

"हम फिर मिलेंगे।" वह आकृति प्रकाश में आई और राजा तथा बेताल को ध्यान से देखने लगी। "मुझे कटार दो।"

सम्राट ने अपना सिर हिलाया। उसी क्षण, लकड़ी ज़ोर से मुड़ी और टूट गई, जिसके बाद एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट हुई। धरती कंपकंपी से कांप उठी और हवा के एक झोंके ने सूखे पत्तों को हवा में उड़ा दिया।

"मुझे कटार दो," शुक्राचार्य ने तीखे स्वर में मांग की।

"कभी नहीं," विक्रमादित्य ने कहा।

"तुमने बड़े साहस और दृढ़ संकल्प के साथ लड़कर मेरा सम्मान अर्जित किया है," प्रधान पुजारी ने कहा। "बस इतना ही काफी है, मनुष्य। लालच मत करो। अपनी हार को गरिमा के साथ स्वीकार करो और मुझे कटार सौंप दो, ताकि हम यहाँ से निकल सकें, जब तक हमारे पास मौका है।"

"यहाँ से निकलने का एकमात्र तरीका हलाहला के बिना ही है।"

"बस करो," शुक्राचार्य ने क्रोध में थूकते हुए कहा। "मुझे अभी कटार दो। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ," उन्होंने मंत्र पढ़ना शुरू किया, "मुझे दो—रुको... क्या—?"

विक्रमादित्य को अपने ठीक पीछे किसी की मौजूदगी का आभास हुआ, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ प्रतिक्रिया कर पाते, उनके हाथ से कटार छीन ली गई। घूमकर उन्होंने देखा कि वह पिशाच दूर हट रहा है और राजा से दूरी बना रहा है।

"तुम क्या कर रहे हो—" सम्राट ने कहना शुरू किया, लेकिन बेताल पहले ही महायाजक को संबोधित कर रहा था।

"तुम्हें खंजर चाहिए?" उसने पूछा, तभी अंधेरे से एक और भयानक चटकने और गिरने की आवाज़ आई, मानो कोई चीज़ अपने आप में ही गिर रही हो। बेताल ने शुक्राचार्य की ओर खंजर लहराया। "अगर तुम्हें यह चाहिए, तो तुम्हें आकर मुझसे लेना होगा।"

सम्राट घूरता रहा जब घोलमास्टर मुड़ा और रोशनी से बाहर निकलकर अंधेरे की ओर भाग गया... जहाँ से अराजकता और पतन की आवाजें आ रही थीं।

विक्रमादित्य अभी घटनाक्रम को समझने ही वाले थे कि तभी दंड उनके सिर के पिछले हिस्से पर ज़ोर से पड़ा। इस करारी चोट से वे लड़खड़ा गए, उनकी दृष्टि धुंधली और अस्पष्ट हो गई, तभी शुक्राचार्य बेताल का पीछा करते हुए उन्हें धक्का देकर आगे बढ़ गए। महायाजक ने एक बार फिर दंड को नीचे की ओर घुमाया और राजा के घुटनों पर ज़ोर से मारा।

सम्राट के दिमाग से सुसंगत विचार अचानक गायब हो गए और वह लड़खड़ाकर गिर पड़े, उनका सिर पत्तों में जा धंस गया, पत्तों की सरसराहट उनके कानों में गूंज रही थी, साथ ही शुक्राचार्य के कदमों की आवाज धीरे-धीरे शांत होती जा रही थी।

क्षमा

वहाँ, बाईं ओर। पुल की ओर जा रहे हैं।

हे भगवान, यह तो... बहुत बड़ा है।

पुरुषों की बढ़ती घबराहट को सुनकर, वरारुची एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में ढाल लिए गैलरी में तेज़ी से भागा। उसने नीचे गैलरी में बैठे पुरुषों की नज़रें

देखने की कोशिश की, लेकिन बाहर बहुत अंधेरा था और देखने का कोण भी अनुकूल नहीं था।

पुल की ओर बढ़ते हुए।

अपनी गति धीमी करने और खुद देखने की तीव्र इच्छा को दबाते हुए, पार्षद उज्जैन की घंटियों की शोकपूर्ण ध्वनि के बीच आगे बढ़ता रहा।

"खिड़कियों के पास अपनी-अपनी जगह ले लो," एक कप्तान ने तीरंदाजों के एक समूह को आदेश दिया।

सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए वरारुचि को सावधानी बरतनी पड़ी ताकि सीढ़ियों पर पड़े दो सैनिकों से ठोकर न लग जाए। पहले सैनिक का सिर बुरी तरह क्षतिग्रस्त था, जबकि दूसरे का चेहरा बुरी तरह क्षत-विक्षत था। हिरण्यकशिपु के आक्रमण के बाद महल में जगह-जगह लाशें बिखरी पड़ी थीं; उस आक्रमण और अहि तथा अब इंद्र के हमलों के बीच महल को साफ करने का समय ही नहीं मिला था।

पार्षद ने पांच छलांगों में आंगन पार किया और मुख्य द्वार से अंदर घुस गया, ठीक उसी समय हाथी ने फिर से चिंघाड़ना शुरू कर दिया। पुलिया पर दौड़ते हुए, उसने झील के उस पार झाँका, उसकी आवाज से जानवर का पता लगाने की कोशिश कर रहा था—तभी अचानक उसने उसकी हिलती हुई आकृति देखी, आसपास के अंधेरे में एक विशालकाय परछाई, झील के किनारे बड़े-बड़े आक्रामक कदमों से दौड़ती हुई।

वह अभी आधा रास्ता ही पार कर पाया था कि तभी पुल के दूसरे छोर पर वह जानवर अचानक सामने आ गया। महल की रोशनी कम थी और चांदनी हल्की और फैली हुई थी, लेकिन चांद और दीपक की रोशनी में जो दिखाई नहीं दे रहा था, उसे कल्पना ने सहजता से भर दिया, जिससे जानवर का आकार इतना स्पष्ट हो गया कि बिना एहसास किए ही वरारुची ने अपनी गति धीमी कर दी, वह विशालकाय हाथी को आश्चर्य से घूरने लगा और अचानक खुद को असहाय महसूस करने लगा। जैसे-जैसे हाथी करीब आता गया, उसकी असुरक्षा की भावना और भी बढ़ गई और सलाहकार ने उसके छह घुमावदार दांत गिने, जानवर के कान गुस्से से फड़फड़ा रहे थे, उसने अपनी सूंड घुमाई और चिंघाड़ मारी, जो आवाज और आकार दोनों में ही डरावनी थी।

और फिर, उसने जानवर की पीठ पर बैठे हुए व्यक्ति को देखा।

अपने आप को शांत करते हुए और संयम बरतते हुए, पार्षद फिर से दौड़ने लगा। वह किसी भी कीमत पर इंद्र को महल में कदम नहीं रखने देगा।

झील से कोई बड़ी और फुर्तीली चीज उस पर झपटी।

वरारुची ने अपनी आँख के कोने से हलचल महसूस की और उस चीज़ के पुल पर पैर रखने से पहले ही पानी के बहने की आवाज़ सुनी। बिना एक पल भी सोचे, और पूरी तरह से अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार, पार्षद ने अपने उरुमी (तलवार) से वार किया। वार बेतरतीब ढंग से हुआ, लेकिन लचीली ब्लेड ने वार को चीर दिया। वह चीज़ फिसलकर पुल पर गिर गई और फिर पानी में जा गिरी।

राजा के भाई ने अभी सांस भी नहीं ली थी कि पानी से तीन और आकृतियाँ निकलीं और पुल पर आ गिरीं। दो उसके आगे, एक उसके पीछे।

उन जीवों ने लगभग एक साथ वरारुची पर हमला कर दिया और अपनी तलवारें उन पर चला दीं, लेकिन पार्षद ने ढाल से वार रोककर खुद को बचा लिया। उन्होंने अपनी उरुमी तलवार से उन पर वार किया, एक बार तो वह पूरी तरह चूक गया, लेकिन पलटवार में ही उनमें से एक जीव को घायल कर दिया... और फिर, जैसे ही बादल के पीछे से चंद्रमा निकला, उन्होंने अपने हमलावरों के सींग वाले सांपों के सिर देखे।

उसे याद आया कि गार्ड ने कहा था, "कुछ रात पहले सांप जैसे चेहरे वाले जीव आए थे।"

उन्होंने वराहमिहिर के कहे शब्दों को याद करते हुए कहा, "उनका रक्त हमारे शरीर को सड़ा देता है।"

अपनी ढाल से हमले को रोकते हुए, वरारुची उस जीव से दूर कूद गया जिसे उसने अभी-अभी घायल किया था। उसे एहसास हुआ कि यह मुश्किल होने वाला है। वह उनके जहरीले खून को अपने ऊपर लगने नहीं दे सकता था, गलती से भी नहीं।

अपने पेट पर हुए एक वार से बचते हुए, पार्षद ने हाथी पर एक नज़र डाली, जो बिना रुके पुल की ओर बढ़ रहा था। वरारुची ने अपनी ढाल को कसकर पकड़ा और तेज़ी से घूमकर एक साँप के सिर वाले जीव के थूथन पर ज़ोर से वार किया, जिससे वह चकनाचूर हो गया। उसी गति का उपयोग करते हुए, उसने उस जीव को खून बहने से पहले ही झील में धकेल दिया। फिर से, वह एक पैर पर पीछे की ओर झुका, फिर दूसरे जीव के ऊपर से छलांग लगाई और ढाल को उसके सिर के

किनारे पर ज़ोर से मारकर उसे पानी में धकेल दिया। तीसरे साँप के सिर वाले जीव ने उसे छेड़ा और उसकी दाहिनी बांह पर वार किया। उसकी पूरी बांह में दर्द की लहर दौड़ गई, लेकिन पार्षद ने तुरंत मुड़कर ढाल के किनारे से उस जीव के थूथन पर वार किया। उसे पानी में छप-छप करते हुए, वरारुची हाथी का सामना करने के लिए मुड़ा, तभी झील से पाँच और आकृतियाँ निकलीं, तलवारें और भाले उसकी ओर इशारा कर रहे थे...

विशालकाय जीव तीस कदम दूर था। वरारुची ने अपने सारे संभावित दांव-पेच सोच लिए और हर संभावित परिणाम का मन ही मन विश्लेषण करते हुए अपनी ढाल उठाई और अपने सामने मौजूद साँपों के सिरों की कतार को चीरते हुए आगे बढ़ने की तैयारी की। टक्कर के लिए खुद को तैयार करते हुए, पार्षद दौड़ने ही वाला था कि तभी—

झील के किनारे उगने वाले दो सप्तपर्णी वृक्षों की छाया से एक आकृति बाहर निकली।

सीधे हाथी के रास्ते पर।

महल और पुल की ओर पीठ करके, अपने पैरों को मजबूती से जमाए हुए, वह आकृति आगे बढ़ते हुए विशालकाय जानवर का सामना कर रही थी।

वररुची उस परिचित चौड़े कंधों वाले व्यक्ति, उसकी मजबूत मांसपेशियों वाली पीठ और उस व्यक्ति द्वारा पकड़ी गई घुमावदार तलवार को घूरता रहा।

हाथी ने चिंघाड़ते हुए कहा, इस तरह के खुलेआम अवज्ञा के संकेत से वह चिढ़ गया था।

उस आवाज को सुनकर सांप के सिर वाले जीव रुक गए। उन्होंने पीछे देखने के लिए अपने सिर तेजी से घुमाए।

अपने रास्ते में खड़े व्यक्ति को धमकाने के प्रयास में, विशालकाय जानवर ने अपना सिर अगल-बगल घुमाया, उसके दांत अब उससे बीस गज से भी कम दूरी पर थे, और रात की हवा को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। उसके पैरों की हर धमक से धरती कांप रही थी, और कंपन उस रास्ते से होते हुए वरारुचि तक पहुँच रहा था। पार्षद ने देखा कि इंद्र ने अपने सिर के ऊपर एक भारी तलवार उठाई है, जिसकी चौड़ी धार पर नीली धाराएँ गूंज रही थीं और लहरें बना रही थीं...

तलवार लिए खड़ा वह व्यक्ति चट्टान की तरह दृढ़ संकल्प के साथ अपनी जगह पर डटा रहा।

"सावधान रहो—" सलाहकार ने चेतावनी देते हुए कहा, लेकिन इंद्र की तलवार पहले ही नीचे आ रही थी।

वररुचि मंत्रमुग्ध होकर देखता रहा, जब इंद्र की तलवार की नोक से बिजली की एक तेज, चमकीली रेखा कालिदास की ओर बढ़ी, जिसकी चमक ने परछाइयों को पीछे धकेल दिया, जिससे क्षण भर के लिए ऐसा लगा मानो वररुचि, विशालकाय राक्षस, कालिदास और पुल पर बने पांच नागों के सिर के चारों ओर समय थम गया हो।

वज्र कालिदास की ओर झपटा, अपने रास्ते में हवा को जलाता हुआ, पीछे झुलसी हुई गंध छोड़ गया। वह कालिदास की छाती पर घातक इरादे से टूटा, इतना शक्तिशाली कि बड़े से बड़े पेड़ को भी गिरा सकता था...

लेकिन बिजली का झटका कभी भी उस दैत्य की छाती तक नहीं पहुंचा।

आश्चर्य से मुंह खोले वरारुचि ने कालिदास के हाथ को देखा, जिसने तलवार को ऊपर उठाया और सीधे वज्र की ओर तान दिया। वज्र तलवार से टकराया और चिंगारियों की बौछार के साथ फट पड़ा। नीली धारा की लहरें तलवार से ऊपर उठीं और मानो उसके मूठ में समा गईं, जबकि वज्र के प्रभाव से कालिदास तीन कदम पीछे लड़खड़ा गए। विशालकाय कालिदास कुछ क्षण के लिए सिर झुकाए, भयभीत खड़े रहे, तलवार अभी भी इंद्र की ओर थी, उसकी नोक थोड़ी डगमगा रही थी—और फिर, वरारुचि के अविश्वास के बीच, कालिदास ने अपना सिर उठाया और देव से आंखें मिलाईं, तलवार उनके हाथों में स्थिर और मजबूत थी।

देवता ने एक बार फिर कालिदास पर अपनी तलवार चलाई, लेकिन इस बार कुछ नहीं हुआ।

बिजली नहीं चमकी। जली हुई हवा की कोई गंध नहीं आई।

कालिदास ने तलवार पर अपनी पकड़ बदलते हुए उसे अपने सिर के ऊपर उठाया, जिससे उसकी नोक सीधी नीचे की ओर हो गई। वरारुचि मंत्रमुग्ध होकर उस विशालकाय योद्धा को तलवार को ज़मीन में ज़ोर से गाड़ते हुए देखता रहा, जो उसके खड़े होने की जगह से बस एक फुट की दूरी पर थी, और तलवार की नोक मिट्टी में गहराई तक धंस गई...

जिस स्थान पर तलवार ने धरती को भेदा था, वहाँ से बिजली की पाँच लकीरें निकलीं। ये लकीरें चकाचौंध भरी दरारों की तरह फैलती गईं, बाहर की ओर फैलती हुई हाथी की ओर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बनाती गईं। हाथी पहले से ही भय से चिंघाड़ते हुए पीछे हट रहा था, क्योंकि उसके और कालिदास के बीच की ज़मीन धंसने लगी थी। कीचड़ तेज़ी से धंसकर एक खाई बन गई, और विशालकाय हाथी लगभग उसमें खिंच गया, लेकिन इंद्र की धमकियों और शापों के बीच खुद को बचाकर सुरक्षित स्थान पर चला गया।

जब जमीन आखिरकार स्थिर हो गई, तो कालिदास और देव खाई की चौड़ाई के उस पार एक-दूसरे को घूरने लगे।

जमीन से कृपाण को खींचते हुए, उस दैत्य ने अपना बायां हाथ उठाया और इंद्र की ओर उंगली हिलाकर चेतावनी और फटकार दोनों दी।

"कभी नहीं," वह दहाड़ा।

पुल के चारों ओर बिजली की पाँच तेज़ चमक एक के बाद एक गिरी। उनकी रोशनी में आँखें झपकाते हुए, वरारुची ने उन जगहों पर पाँच विशालकाय आकृतियाँ देखीं जहाँ बिजली गिरी थी। उन आकृतियों के सिर पर सींग थे और उनके हाथों में नुकीली तलवारें थीं। उनकी आँखें चाँदनी की तरह सफेद और चमकदार थीं।

महल के ऊपर भीषण बिजली कड़की, इतनी तेज कि कान के पर्दे फट गए।

अपने सम्मोहन से बाहर आते हुए, वरारुची ने उन नाग-सिरों की ओर देखा, जो अभी भी अपनी जगह पर जमे हुए थे। उरुमी को त्यागकर और अपनी कमरबंद से कटारी निकालकर, राजा का भाई दौड़ पड़ा, कटारी का निशाना पहले नाग-सिर पर था।

***

अपने कंकालनुमा रूप के बावजूद, घोलमास्टर आश्चर्यजनक रूप से मजबूत था।

दोनों के बीच धक्का-मुक्की चल रही थी, बेताल ने शुक्रचार्य पर लात-घूंसे बरसाए, जमीन पर लोटते हुए पत्तों को बिखेर दिया। पुजारी की बांह पिशाच के दुबले-पतले गले पर जकड़ी हुई थी, जबकि दूसरे हाथ से वह कटार छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन बेताल ने प्रतिरोध किया और शुक्रचार्य के चेहरे पर पंजे मारते हुए इधर-उधर लुढ़का और कटार को पुजारी की पहुंच से थोड़ा दूर रखा।

शुक्राचार्य ने कराहते हुए बेताल के गले पर अपनी पकड़ और कस ली, लेकिन बेताल छटपटाते हुए पुजारी की पकड़ से खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया। उठकर वह बेताल उनके सामने खुल रहे उस शून्य की ओर झपटा, जो एक धब्बे की तरह फैल रहा था, अपने चारों ओर के अंधकार से भी गहरा, घोर अंधकार, जहाँ से न प्रकाश निकलता था और न ही ध्वनि।

शुक्राचार्य ने बेताल के पीछे छलांग लगाई, उसे पकड़कर पीछे खींचा और दोनों ज़मीन पर ज़ोर से गिर पड़े। शुक्राचार्य को लगा जैसे उनकी सांसें रुक गई हों, पसलियों में ज़ोरदार झटका लगा, लेकिन बेताल पहले ही छटपटा कर खुद को छुड़ा चुका था। अपनी पूरी ताकत लगाकर पुजारी ने बेताल को नीचे गिराया और खुद को उसके ऊपर धकेल कर उसे दबा दिया, लेकिन बेताल का हाथ पहले ही उठकर पीछे खींच लिया गया था...

...खंजर उस फैलते हुए अंधकार की ओर लक्षित था...

पुजारी ने हताशा में अपना हाथ आगे बढ़ाया।

उसने उस राक्षस की हड्डी वाली कलाई को कसकर पकड़ा और हाथ को झटके से पीछे खींच लिया, जिससे बेताल खंजर को हवा में फेंकने से रुक गया। फिर, और भी ज़ोर से झटका देते हुए, उसने हाथ को पूरी तरह पीछे खींच लिया, जिससे कंधे से बांह अपनी जगह से हट गई।

दर्द भरी चीख के साथ, घोलमास्टर ने खंजर छोड़ दिया।

शुक्राचार्य पलक झपकते ही कटार पर झपटे और एक ही झटके में उसे उठा लिया। हथेली पर चिकने, कठोर ओब्सीडियन मूठ का स्पर्श पाते ही महापुजारी के शरीर में आनंद की लहर दौड़ गई। उनकी आँखें आनंद से चमक उठीं—आखिरकार, आखिरकार, वीषाद की कटार उनके हाथ में थी।

काला खालीपन अंदर की ओर बढ़ता गया, जैसे-जैसे उसका आकार बढ़ता गया, उसकी गति बढ़ती गई, उसका किनारा महापुजारी और पिशाच से बीस कदम से अधिक दूर नहीं था।

शुक्राचार्य झट से उठकर खड़े हुए और जिस रास्ते से आए थे उसी रास्ते से वापस जाने के लिए मुड़ गए।

उसने दो कदम ही बढ़ाए थे कि पीछे से किसी ने उसका टखना पकड़ लिया और उसे गिरा दिया।

प्रधान पुजारी मुंह के बल गिर पड़ा। खंजर उसके हाथ से फिसलकर घूमने लगा।

शुक्राचार्य ने देखा कि कटार ज़मीन पर गिरी, उछली और लुढ़क गई। उन्होंने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उनका संतुलन बिगड़ गया। वे चूक गए। कटार उनकी पहुँच से दूर फिसल गई।

बेताल की पकड़ से खुद को छुड़ाते हुए, महायाजक चारों हाथों-पैरों के बल रेंगता हुआ खंजर की ओर झपटा।

लेकिन विक्रमादित्य ने उनसे पहले ही यह काम कर दिया।

सम्राट झुका और अपने पैरों से कटार उठाई।

शुक्राचार्य की आंखें निराशा से सिकुड़ गईं। राजा थोड़ा दर्द से कराहते हुए सीधे खड़े हुए, लेकिन उनकी पकड़ कटार पर मज़बूत थी। देवता और मनुष्य एक-दूसरे को घूरते रहे...

शुक्राचार्य के कंधों पर निराशा का गहरा आलिंगन हो गया जब उन्होंने सम्राट की आँखों में दृढ़ संकल्प देखा। अंततः उन्हें यह अहसास हुआ कि हलाहल उनका नहीं होने वाला है।

“ऐसा मत करो,” महायाजक ने चिंता से कांपती हुई कर्कश आवाज में कहा। “यह इतना अनमोल है कि इसे नष्ट नहीं किया जा सकता, महाराज। यह... मत करो।”

शुक्राचार्य पर निगाहें गड़ाए विक्रमादित्य ने अपना हाथ पूरी तरह पीछे खींच लिया। अपनी पूरी ताकत लगाकर सम्राट ने हलाहल को शून्य की ओर फेंका।

"नहीं..."

शुक्राचार्य ने कटार को अपने सिर के ऊपर से गुजरते देखा। वे मुड़े और उसके पीछे दौड़े, उनके हाथ फैले हुए थे और वे बेतहाशा चल रहे थे, लेकिन राजा का वार शक्तिशाली और सटीक था।

“नहीं...” प्रधान पुजारी विलाप करते हुए, शून्य के किनारे पर फिसलते और लड़खड़ाते हुए बोला।

सन्नाटे में घूमती हुई, वीशादा की कटार घोर काले रंग में गायब हो गई।

***

तेल के समान गहरे काले रंग के विशाल भूभाग, जो अंधेरे में लगभग पहचाने नहीं जा सकते थे, शहर में फैल गए और नागों, किन्नरों और देवताओं को पूरी तरह निगल

गए। यक्षों ने अपना रूप बदला—विषैले तीर, अग्नि के गोले, छींक लाने वाले पराग—किन्नरों और अश्विनी घुड़सवारों को भ्रमित करने के लिए, और आचार्य ने सफलतापूर्वक एक अश्विनी के मन में चुड़ैलों का भय उत्पन्न कर दिया, जिससे पूरी अश्विनी सेना में दहशत फैल गई। क्षपणक उज्जैन की गलियों में नागों और किन्नरों का शिकार कर रहे थे, जबकि शहर के बाहर, हूणों ने मुसिली की शाही सेना के सैनिकों के साथ मिलकर देव सेना के पिछले हिस्से पर घात लगाकर हमला किया, और यक्षों ने देवताओं को कुचलते हुए उनका मनोबल तोड़ दिया।

और शंकु ने शहर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में मन की छलांग लगाकर, सूचना का संचार करते हुए, रणनीतियों को साझा करते हुए और आवश्यकता पड़ने पर मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हुए, अवंती के आक्रमणकारियों के खिलाफ इन कई हमलों का समन्वय किया, ताकि यक्षों, दानवों और मानव योद्धाओं के बीच उज्जैन की अच्छी तरह से रक्षा की जा सके और देवता किसी भी प्रकार का वर्चस्व हासिल करने में विफल रहें।

घंटियों की गूंज के बीच क्षपनाका ने चिल्लाकर कहा, "मेरे पास तीर कम पड़ रहे हैं," और शंकु की मदद से एक गली में रोके गए नागों के एक समूह पर उसने तीरों की एक और बौछार कर दी।

“मैं तुम्हारे लिए कुछ ढूंढती हूँ,” शंकु पास की एक इमारत की छत से चिल्लाई। वह ज़मीन पर कूदी और एक मरे हुए नाग का मुआयना करने के लिए आगे बढ़ी। “क्या तुम्हें यकीन है कि मुझे इस जीव का खून अपने ऊपर नहीं लगने देना चाहिए?” उसने नाग के सिर में गहरे धंसे हुए खंजर को देखते हुए पूछा।

“बिल्कुल। जब तक कि आप अपनी त्वचा को अपनी आंखों के सामने सड़ते हुए नहीं देखना चाहते।”

अपनी खाली बेल्ट पर हाथ फेरते हुए शंकु ने मुंह बनाया। “तो मुझे भी अपने लिए कटारें ढूंढनी पड़ेंगी।” क्षपणका की ओर मुड़कर उसने कहा, “मैं जल्दी वापस आ जाऊंगी। इतनी दूर मत जाना कि मैं तुम्हें ढूंढ न पाऊं।”

अगले ही पल, लड़की सुनसान पूर्वी हिस्से की एक गली में थी।

उसने तीन गलियों का सफर तय करके सिटी वॉक पर बने एक चौकी तक का सफर तय किया, इस उम्मीद में कि वहाँ सैनिक मिल जाएँगे, लेकिन फिर उसे याद आया कि शहर का वह हिस्सा खाली करा लिया गया था। चौकी खाली थी। उसने

फिर से सफर तय किया, इस बार महल के पास। फूलों के बाजार की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर खड़े होकर उसने आसपास का जायजा लिया, लेकिन दो आधे मरे हुए घोड़ों के अलावा—जिनके शरीर जलकर काले पड़ गए थे और अंग दर्द से कराह रहे थे—वहाँ भी कुछ नहीं था।

शंकु दोबारा छलांग लगाने ही वाली थी कि तभी लगभग एक साथ पांच बिजली गिरी और उज्जैन का आधा हिस्सा रोशन हो गया। अगले ही पल, पांच तेज गड़गड़ाहट की आवाजों ने शहर को एक साथ हिलाकर रख दिया। शोर से सहमकर लड़की सतर्क हो गई, उसे एहसास हुआ कि बिजली महल के पास गिरी थी; उसने उस रात की ही तरह की एक घटना को भी पहचान लिया, जब उसने पहली बार मन की छलांग लगाई थी।

उसका मन अचानक एक विचार से भर गया। और उसने पुल के किनारे खड़ी आकृतियों को घूर कर देखा।

पारे जैसी चमकती आँखों वाले पाँच सींग वाले राक्षसों को देखो। पुल के मुहाने पर नागों के एक समूह का वध करते हुए वररुचि की छोटी सी आकृति को देखो। और उस विशालकाय राक्षस को देखो—जिसने एक राक्षस द्वारा फेंके गए ऊर्जा के वज्र को अपनी छाती पर झेल लिया और फिर उसी वज्र को वापस हमलावर पर फेंक दिया। शंकु ने देखा कि वज्र के पथ के चारों ओर हवा मुड़कर मुड़ गई और राक्षस को इतनी ज़ोर से लगी कि उसकी हड्डियों का कवच टूट गया। राक्षस आश्चर्य से पीछे गिर पड़ा, और शंकु ने अपनी तलवार उठाई और राक्षस पर आक्रमण कर दिया...

शंकु को एहसास हुआ कि वह मन ही मन मुस्कुरा रही थी।

मेरे पास तीर कम होते जा रहे हैं। अपना काम याद करके उसने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।

उसने कल्पना की उड़ान भरी... और खुद को दक्षिणी इलाकों में पाया। सुनसान सड़कें। बंद दुकानें और घर।

लड़की ने याद करते हुए अपना माथा पीट लिया। ज़ाहिर है, शहर का शस्त्रागार...

कुछ ही पलों में शंकु वापस वहीं पहुँच गई जहाँ उसने क्षपनाका को छोड़ा था। उसके दोनों कंधों पर बाणों से भरे दो तरकश लटके हुए थे और कमर में अलग-अलग आकार के आठ चाकू थे। वह क्षपनाका की तलाश में गली-गली दौड़ती रही, लेकिन रानी की बहन कहीं नज़र नहीं आई।

एक और कल्पना ने शंकु को एक ऐसी गली में पहुँचा दिया जो मसाला बाजार और फसल उत्सवों के चौक के बीच स्थित थी। गली सुनसान थी, लेकिन एक छोटा सा जला हुआ पेड़ के नीचे एक आकृति गिरी पड़ी थी। उत्सुकतावश, लड़की उस आकृति के पास गई, और जैसे ही उसने परिचित कद-काठी और चेहरे को ढके लंबे बालों को पहचाना, उसके चेहरे के भाव बदल गए। घुटने टेककर उसने बालों को पीछे हटाया।

Ghatakarpara.

शंकु ने राजकुमार की गर्दन पर दो उंगलियां रखकर उसकी नब्ज़ जाँची। उसे नब्ज़ मुश्किल से ही महसूस हुई, और लड़के की त्वचा छूने पर निराशाजनक रूप से ठंडी थी। उसने एक बार चारों ओर देखा, फिर उठी और तेज़ी से आगे बढ़ी—

वह गली-गली भटकती रही, जब तक कि उसे क्षपनाका एक संकरी गली में धनुष ताने हुए दबे पांव नहीं मिल गया।

"श्श्श," क्षपनाका ने अपनी ठुड्डी से गली के दूसरे छोर पर अंधेरे में छिपी किसी चीज की ओर इशारा किया।

“यहाँ,” शंकु फुसफुसाते हुए परछाइयों में सिमट गई और दूसरी महिला की ओर तरकश बढ़ाते हुए बोली, “मुझे जाना होगा। मैंने घटाकरपारा को मसाला बाजार के पास एक गली में पड़ा हुआ पाया।”

क्षपणक घूरता रहा। "क्या वह ठीक है?"

शंकु ने कंधे उचकाए। "मुझे जाना होगा।" उसके मन में एक विचार कौंधा।

वह घुटनों के बल बैठी और घटाकरपारा को सहारा देकर बिठाने की कोशिश की। फिर, लड़के के भारी वज़न से जूझते हुए, उसने उसे खड़ा किया और उसे अपने कंधे पर टिका लिया ताकि वह वापस न गिर जाए। वह उस पर बेबस होकर गिर पड़ा, उसके हाथ लटक रहे थे, सिर एक तरफ लुढ़क रहा था और घुटने लड़खड़ा रहे थे। लड़की ने उस आवाज़ को अनसुना करने की पूरी कोशिश की जो बार-बार कह रही थी कि इससे राजकुमार को बचाने में कोई मदद नहीं मिलेगी।

कालिदास और अंगमित्र द्वारा युवा संसप्तक शिष्यों को सिखाई गई भार उठाने और ले जाने की तकनीकों को याद करते हुए, शंकु ने घातकपर को अपनी पीठ पर उठाने से पहले एक गहरी सांस ली। वह लड़खड़ा गई, तनाव के कारण उसके पैर

डगमगा गए, लेकिन उसने राजकुमार के वजन को अपने कंधों पर समान रूप से फैलाकर जल्दी ही अपना संतुलन वापस पा लिया।

एक बार फिर गहरी सांस लेते हुए, उसने अपना ध्यान महल के भीतर एक सुरक्षित स्थान पर केंद्रित किया।

उसने मन ही मन भूलभुलैया की कल्पना की।

***

"मैं तो बस आपको धीमा कर रहा हूँ, हे बुद्धिमान राजा। जाइए, और मुझे अकेला छोड़ दीजिए।"

"मैं तुम्हारे बिना इस जगह से नहीं जाऊंगा," विक्रमादित्य हांफते हुए बोला, और बेताल की सही बांह को अपने कंधे पर कसकर पकड़ लिया ताकि उसे सहारा मिल सके और उसे उस जर्जर नाव से उतरने में मदद की जो उन्हें क्षिप्रा नदी के बदबूदार, कीचड़ भरे पानी के पार ले आई थी। बेताल की दूसरी बांह उसके बगल में लटकी हुई थी।

"क्यों?"

"क्यों नहीं?" राजा ने उत्तर दिया, और घूलमास्टर को उज्जैन के स्नान घाटों की काई से ढकी सीढ़ियों पर घसीटते हुए ले गया। "बॉर्डरवर्ल्ड में स्वयं का बलिदान करने से क्या लाभ होगा?"

मैं तुम्हारी दुनिया में क्या करूँगा?

"मुझे नहीं पता," सम्राट ने कंधे के ऊपर से झाँकते हुए सच्चाई से जवाब दिया। शून्य ठीक पीछे था, क्षिप्रा पहले ही अंधेरे में गायब हो रहा था, इसलिए हल्की चाँदनी पानी के किनारे से कुछ ही गज की दूरी पर समाप्त हो रही थी। "लेकिन तुम्हें तुम्हारे हाल में मरने के लिए छोड़ देना सही नहीं है।"

वे दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ते हुए बार-बार पीछे मुड़कर देखते रहे कि कहीं खाई उन्हें अपनी ओर खींच तो नहीं रही है। वे लगभग शिखर पर पहुँच ही गए थे, उस विशाल गड्ढे के पास जहाँ कभी शहर का पश्चिमी द्वार हुआ करता था, तभी राजा का पैर फिसल गया और वह लड़खड़ा गया। दर्द से कराहते हुए वह भी गिर पड़ा, उसकी टूटी हुई बांह सीढ़ियों से टकराई।

अपना संतुलन संभालते हुए सम्राट ने बेताल को पकड़ लिया और कहा, "मुझे खेद है।"

"यह आपकी गलती नहीं है, महाराज," उस पिशाच ने मुंह बनाते हुए कहा। "आप घायल हैं। आपको आगे बढ़ना होगा—"

"तुम्हारे बिना नहीं," विक्रमादित्य ने दृढ़ता से बेताल को सहारा देते हुए आखिरी कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने में मदद की। ढहती दीवारों के बीच से फिसलते हुए, उसने एक बार फिर देखा कि खाई घाट की सीढ़ियों पर तेजी से ऊपर चढ़ रही थी और उनकी ओर बढ़ती जा रही थी।

वे उज्जैन की गलियों से तेज़ी से भागे, गड्ढों और कीचड़ से बचते हुए, पेड़ों की उभरी जड़ों से ठोकर खाते हुए। चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी, घर गायब हो चुके थे, बस कहीं-कहीं एक जर्जर फाटक या कहीं-कहीं एक टूटी-फूटी दीवार दिखाई दे रही थी। पेड़ों की घनी छायाएँ प्राकृतिक अंधेरे और उस विनाशकारी शून्य के बीच अंतर करना असंभव बना रही थीं जो उनका पीछा कर रहा था।

"सम्राट, तुम मुझे अपनी दुनिया में कैसे ले जाना चाहते हो?" पिशाच ने पूछा। "दुनियाओं के बीच आना-जाना बेहद मुश्किल है—"

"लेकिन नामुमकिन नहीं," विक्रमादित्य ने सांस लेते हुए कहा। "तुम पहले भी ऐसा कर चुके हो।"

"यह मेरी इच्छा के विरुद्ध था... और शक्तिशाली जादू-टोने की सहायता से किया गया था।"

"और मेरे पास एक शक्तिशाली जादूगर है जो इसे फिर से संभव कर सकता है।" सम्राट ने घोलमास्टर की ओर देखा, जो उसे संदेह भरी निगाहों से देख रहा था। "तुम्हारे रूपांतरण में सहायता करने के लिए मेरे महल में एक द्रोइबा प्रतीक्षा कर रहा है।" बेताल की आँखों में घबराहट देखकर वह हँस पड़ा। "यह द्रोइबा अवंती का मित्र है। वह तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा, यह मेरा वादा है।"

वह पिशाच चुप हो गया। वे अंधेरे शहर में धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे जब तक कि महल के अवशेष दिखाई नहीं देने लगे। अधिकांश दीवारें गिर चुकी थीं और कई छतें गायब थीं; जो बचा था वह एक खाली पसली के पिंजरे जैसा लग रहा था, चाँदनी खाली जगहों से छनकर आ रही थी, और आसपास की झील से उठ रही सफेद धुंध

को हल्की रोशनी दे रही थी। दृश्य अलौकिक और पारदर्शी था, और पुल ही एकमात्र ऐसी चीज थी जो परिदृश्य को ठोस रूप का आभास दे रही थी।

लेकिन जैसे ही विक्रमादित्य और बेताल लड़खड़ाते हुए पुल पर पहुँचे, उनकी भार से उसकी सड़ी हुई लकड़ी टूटकर बिखर गई। वे गिर पड़े, और जैसे ही वे उठे, बेताल ने पीछे मुड़कर देखा और गहरी साँस ली। सम्राट भी—

—और उन्होंने देखा कि पुल उनके पीछे चार कदम की दूरी पर गायब हो रहा है।

दूर-दूर तक न कोई झील थी, न कोई शहर। बस काला सन्नाटा छाया हुआ था।

विक्रमादित्य दौड़ते हुए चिल्लाया, "जल्दी करो!"

"मैं नहीं कर सकता," घोलमास्टर ने एक घुटने पर बैठते हुए कहा।

"तुम कर सकते हो," राजा ने फिर चिल्लाते हुए बेताल को कोहनी से ऊपर खींच लिया। "जल्दी करो।"

वे भागे, एक अंधा और हताश भाग, भूखी शून्यता उनका पीछा कर रही थी, बॉर्डरवर्ल्ड के हर एक टुकड़े को निगल रही थी, पिशाचों के राज्य का हर निशान मिटा रही थी। वे भागे, यह जानते हुए कि वे शून्यता से बच नहीं सकते। वे भागे, क्योंकि वे इतनी देर से भाग रहे थे कि अब हार मानना मूर्खता थी...

वे भागे, क्योंकि उनके सामने एक दरवाजा था। महल का दरवाजा। भारी और लोहे का बना हुआ, जो अब जंग खा चुका था।

अंधेरे में डूबा हुआ शून्य उनकी पीठ से बस एक हाथ की दूरी पर था। विक्रमादित्य ने अपने कंधे से ज़ोरदार धक्का देते हुए दरवाजे पर झपट्टा मारा। दरवाजा टस से मस नहीं हुआ... फिर, शिकायत भरी कराह के साथ, वह अपने कब्ज़ों पर झूलने लगा और चरमराने लगा...

सम्राट ने दोनों हाथों से धक्का दिया और दरवाजा खुल गया।

***

-राजमहल से बाहर निकलकर पुल पर कदम रखने के लिए द्वार चौड़ा खुल गया, दोनों हाथों में नरक की आग जल रही थी।

सम्राट इंद्र पर निगाहें गड़ाए, तलवारों की मूठों पर उंगलियां कसकर पकड़े हुए, पुल पर आगे बढ़े। पुल के दूसरे छोर पर, देवस्वामी वररुचि से भिड़े हुए थे, दोनों में से कोई भी योद्धा विजयी नहीं हो रहा था। दाईं ओर, कालिदास मरुतों से युद्ध कर

रहे थे, भारी संख्या में दुश्मनों से घिरे होने के बावजूद, वे मुक्कों और तलवारों से उन्हें पराजित कर रहे थे।

पुल के मध्य बिंदु को पार करते हुए, विक्रमादित्य ने नरक की अग्नि को कलाई से झटका दिया, जिससे लपटें पतली होकर भड़क उठीं और एक बेल्ट का आकार ले लिया, जिसे राजा ने एक जोरदार झटके में तोड़ दिया, जिसकी गूंज झील में दिखाई दी। बेल्ट की गति और चमक ने सबका ध्यान आकर्षित किया और पुल के किनारे चल रही झड़प रुक गई।

इंद्र ने आगे बढ़ते हुए राजा की आकृति को घूरकर देखा... और उसके हाथों में मौजूद धधकती तलवारों को भी।

जैसे ही आशंका की एक लहर उसके दिल में दौड़ी, देवता ने दो कदम पीछे हट गए।

"क्या तुम्हारी आँखों में डर दिख रहा है, देव?" राजा ने सबके सामने ताना मारा। "देवों का वो प्रसिद्ध शौर्य कहाँ गया? कहाँ गायब हो गया?" पुल से नीचे उतरकर विक्रमादित्य ने अंधेरे में इंद्र का चेहरा बेहतर देखने के लिए नरक की एक अग्नि को मशाल की तरह ऊपर उठाया। उसने चेहरे को ध्यान से देखने का नाटक किया, फिर निराशा में सिर हिलाया। "यहाँ न साहस है, न हिम्मत। अब आगे क्या—क्या तुम भाग जाने की सोच रहे हो?"

द्वेष से देवता की आंखें सिकुड़ गईं।

"आह, आखिरकार, साधारण भय के अलावा कुछ और," सम्राट मुस्कुराया। उसने तलवार नीचे कर ली। "ठीक है, बात ये है। तुमने जो कुछ किया है, उसके बाद तुम न्यायसंगत व्यवहार के लायक नहीं हो, लेकिन इस मुकाबले को बराबरी का बनाने के लिए, मैं तुमसे लड़ते समय दिति की चुड़ैलों को नहीं बुलाऊंगा।" उसने कंधे उचकाए और देव की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

इंद्र ने राजा को संदेह भरी नजरों से देखा।

"में अपनी ज़बान देता हूँ।"

देव के चेहरे पर एक विकृत मुस्कान उभर आई। "मैं तुम पर विश्वास करता हूँ," उसने सिर हिलाया। "मैं लड़ूँगा—"

बिना किसी चेतावनी के, उसने विक्रमादित्य पर हमला कर दिया, उसकी अस्थि-तलवार उठी हुई थी और लहरा रही थी।

राजा को अपनी तलवार उठाकर अपने सिर पर आ रहे वार को रोकने का भी समय नहीं मिला। तलवार और हड्डी के टकराने की तेज़ आवाज़ गूंजी और वार के प्रभाव से विक्रमादित्य लड़खड़ा गए। इंद्र ने राजा पर एक और प्रहार करने के लिए आगे बढ़कर हमला किया। सम्राट ने वार को रोका और लगभग नरक की अग्नि पर अपनी पकड़ खो बैठे। अपने प्रतिद्वंद्वी को संभलने का मौका न देते हुए, इंद्र ने बार-बार वार किया और विक्रमादित्य को पुल की ओर धकेल दिया। राजा देवताओं के प्रहारों से बचने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें पलटवार करने का न तो समय मिला और न ही अवसर।

एक पैर पुल पर, झील के किनारे से बस एक गज की दूरी पर... और अभी भी देव द्वारा पीछे धकेले जा रहे विक्रमादित्य ने गहरी सांस ली और इंद्र के हमले के तरीके का विश्लेषण किया: एक प्रहार, दूसरा प्रहार, आगे की ओर एक झपट्टा... स्वयं को मजबूत करते हुए, सम्राट ने प्रहारों और झपट्टे को रोक दिया। फिर, जैसे ही प्रहारों का अगला दौर शुरू हुआ, वह अचानक इंद्र के थोड़ा और करीब आ गए।

स्वाइप करें। ब्लॉक करें।

स्वाइप करें। ब्लॉक करें।

देवता ने आक्रमण किया, अस्थि-तलवार विक्रमादित्य के पेट पर जा लगी, जहाँ हिरण्यक्ष की तलवार से लगा घाव फिर से खुल गया था और खून बह रहा था। राजा पीछे हटे, लेकिन इतनी जल्दी नहीं कि इंद्र का आक्रमण जारी रखने का इरादा खत्म हो जाए; इसके बजाय, सीमा के भीतर रहते हुए, विक्रमादित्य ने देवता को अपने वार की ओर खींच लिया, तलवार की नोक उनके पेट के बेहद करीब थी, जिससे इंद्र को वार जारी रखने और थोड़ा और जोर लगाने का लालच हुआ।

और निश्चित रूप से, प्रहार करने के लिए दृढ़ संकल्पित, यह मानते हुए कि यदि वह थोड़ा और खिंचाव करे तो अपने दुश्मन को मार गिरा सकता है, इंद्र ने वार करने के लिए झुक गया—

और असंतुलित भी।

गति और बल प्राप्त करने के लिए एड़ी पर घूमते हुए, विक्रमादित्य ने इंद्र पर भयंकर आक्रमण किया। उन्होंने नरक की अग्नि से ताबड़तोड़ प्रहार किए, ऊपर-नीचे वार करते हुए, कभी छोटे-छोटे वार तो कभी बड़े-बड़े वार करते हुए, देवता की अस्थि-तलवार को हिलाते हुए और उनकी रक्षापंक्ति को भेदते हुए उनकी भुजाओं

पर गहरे घाव कर दिए। वे बिना रुके प्रहार करते रहे, सांस लेने के लिए भी नहीं रुके, भुजाओं को आराम देने के लिए भी धीमे नहीं हुए...

प्रत्येक प्रहार के साथ इंद्र पीछे की ओर धकेले जा रहे थे। देवता लड़खड़ाकर एक घुटने पर गिर पड़े, लेकिन विक्रमादित्य का प्रहार निरंतर जारी रहा। इंद्र ने प्रहारों को रोकने के लिए अपनी तलवार उठाई, लेकिन सम्राट हवा में उछले, पूरा चक्कर लगाया और दोनों नरक की अग्नियों को उठी हुई तलवार पर ही बरसा दिया।

हड्डी की तलवार चटक कर चूर-चूर हो गई।

इंद्र विक्रमादित्य को हैरानी से देखते रहे। राजा ने क्रोध से देवता की ओर देखा, परिश्रम से उनकी छाती फूल रही थी, नरक की आग आधी जल रही थी, धीरे-धीरे सुलग रही थी।

इंद्र की निगाहें नरक की आग पर गईं, फिर राजा की ओर लौट आईं।

"मैं तुम्हें अभी मार डालता, लेकिन तुम निहत्थे हो," सम्राट ने दांत पीसते हुए कहा।

"तुम और तुम्हारी इज्जत," देव ने ताना मारा। "चलो, करो।"

विक्रमादित्य ने उन ठंडी, नीली आँखों में टकटकी लगाई।

"करो," इंद्र ने चुनौती दी। "अभी करो, वरना मैं वीषाद का खंजर लेने वापस आऊंगा।"

"वीशादा का खंजर अब मौजूद नहीं है," खाई के उस पार से एक परिचित आवाज आई।

विक्रमादित्य ने ऊपर देखा तो शुक्राचार्य जंजीरों में जकड़े हुए अमर सिंह के बगल में खड़े थे। दो अन्य हट्टे-कट्टे व्यक्ति भी जंजीरों में जकड़े हुए थे, जबकि अमर सिंह के बाईं ओर एक मोटा, आभूषणों से सजा हुआ व्यक्ति खड़ा था।

"महागुरु शुक्राचार्य," इंद्र ने एक फीकी मुस्कान के साथ कहा। "आप अपने उस छोटे से झूठ से कौन से धोखे फैलाना चाहते हैं?"

"देवलोक के स्वामी, यह झूठ नहीं है," महायाजक ने पुकार कर कहा। "यह परम सत्य है। वह व्यक्ति जो आपके सामने खड़ा है..." उसने सिर हिलाकर इशारा किया, "...उसने हम दोनों को मार डाला है, हम दोनों को पराजित कर दिया है।"

अचंभित होकर इंद्र ने सम्राट की ओर देखा। "आपका क्या मतलब है?" उसने पीछे मुड़कर पूछा।

"उसने हलाहल को नष्ट कर दिया है, देव।"

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं उस पर विश्वास कर लूंगा?" इंद्र ने विक्रमादित्य की ओर देखते हुए उपहास किया।

"जब उसने खंजर को बॉर्डरवर्ल्ड में फेंका था, तब मैं वहीं मौजूद था। न तो बॉर्डरवर्ल्ड का अस्तित्व है और न ही खंजर का," प्रधान पुजारी ने कहा।

"बॉर्डरवर्ल्ड का क्या हुआ?" इंद्र ने हैरानी से पूछा। "वह अब मौजूद क्यों नहीं है?"

शुक्राचार्य को चुप देखकर राजा ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, "उसे बताओ!" जब प्रधान पुरोहित फिर भी नहीं बोला, तो उसने कहा, "यह उसका और असुर सेना का कर्म है। हलाहल की लालसा में उन्होंने घूलमास्टर के वृक्ष को नष्ट कर दिया, वही वृक्ष जो सीमावर्ती जगत को पोषण देता था।"

उसने इंद्र की ओर देखा। "यदि तुम सोच रहे हो, तो हलाहल को बेताल के हवाले मैंने ही किया था, और सीमावर्ती लोक को इसकी कीमत चुकानी पड़ी। लेकिन अब ऐसा दोबारा नहीं होगा, क्योंकि मैंने वीषादा का खंजर नष्ट कर दिया है। अब कोई भी हलाहल पर दावा नहीं कर सकता, कोई भी तीनों लोकों को नष्ट करने की धमकी नहीं दे सकता।"

देवताओं के स्वामी ने राजा को आश्चर्य से देखा। "तुमने... कटार को नष्ट कर दिया?"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। "और अब मुझे यह तय करना है कि तुम्हारे साथ क्या करना है।"

बोलते समय उनकी निगाहें देव से महायाजक की ओर गईं। "मैंने तुमसे हमें शांति से रहने देने और अवंती कभी न लौटने का अनुरोध किया था। फिर भी, तुम लौट आए।" उनकी निगाहें इंद्र पर फिर टिक गईं। "मैंने तुमसे कहा था कि मैं हलाहल को कभी नहीं छोड़ूंगा, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुमने मेरी पत्नी को मुझसे छीनने की कोशिश की, मेरे भाई को मुझसे छीनने की कोशिश की..." सम्राट की आवाज में क्रोध का भाव आ गया, "तुमने अपने आधे घोड़े और नाग-सिर वाले सैनिकों को मेरे शहर को जलाने के लिए भेजा। जब मैंने तुम्हें दूर रहने की चेतावनी दी थी, तब भी तुम लौट आए। और तुम," वे फिर शुक्राचार्य की ओर देखने लगे, "तुमने सीमावर्ती लोक को नष्ट कर दिया। तुमने मेरे मित्र का घर छीन लिया, इसलिए उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं बची और मुझे उसे अवंती लाना पड़ा। अपने लालच में, तुम दोनों ने अपनी सेनाओं को मेरी प्रिय उज्जैनी को नष्ट करने के

लिए भेजा...” उनके हाथों में नरक की आग भड़क उठी। “मैं तुम्हें कैसे दंडित करूं?” वे गरज उठे। “कैसे?”

पुल के चारों ओर सन्नाटा छा गया।

अंत में प्रधान पुरोहित ने कहा, “असुरों का आपके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी। याद रखिए, मेरी इच्छा रानी को पूरी तरह से स्वस्थ करना और आपकी हर संभव सहायता करना थी। असुरों का एकमात्र उद्देश्य हलाहल प्राप्त करना था... लेकिन अब जब हम इसे प्राप्त नहीं कर सकते, तो हम आपको और परेशान नहीं करेंगे। हमें शांति से अपने रास्ते जाने दीजिए।”

राजा ने इंद्र की ओर देखा, और इंद्र ने भी उन्हें घूरकर देखा। “तुम एक देवता हो,” देवस्वामी ने भारी स्वर में कहा। “मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुमने खंजर को देवताओं को देने के बजाय नष्ट कर दिया। लेकिन जो हो गया सो हो गया, और यही बात तुम्हारे और तुम्हारे नगर पर भी लागू होती है। मुझे खेद है, लेकिन यह सब हलाहल के लिए था। इसमें व्यक्तिगत कुछ भी नहीं था।”

विक्रमादित्य के होठों पर एक कड़वी मुस्कान थी। “अब शांति की बात हो रही है, और माफ़ी मांगी जा रही है। मुझे लगता है कि मुझसे यही उम्मीद की जा रही है कि मैं पुरानी बातों को भुलाकर उदारता दिखाऊं... कि मैं बड़ा दिल दिखाऊं और अपने नेक स्वभाव के अनुसार कार्य करूं।” वह रुका और उसके हाथ थके हुए से बगल में लटक गए। नरक की आग की चमक मंद पड़ गई। “मैंने तुम्हें पिछली बार जाने दिया था। मैं तुम्हें फिर से जाने का मौका दे रहा हूं,” उसने कहा। “अपनी सेनाएं लेकर जितनी जल्दी हो सके मेरे शहर से निकल जाओ। उज्जैन से जितना हो सके उतनी दूरी बना लो।”

उसने शुक्रचार्य पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। “जाओ,” उसके होठों के कोनों पर एक पतली, ठंडी मुस्कान फैल गई। “जाओ,” उसने इंद्र की ओर मुड़ते हुए कहा, “—इससे पहले कि मैं अपना मन बदल लूँ। अभी जाओ, जाओ।”

शुक्राचार्य की आंखें भय से चौड़ी हो गईं जब उन्होंने देखा कि सम्राट इंद्र को उठने का रास्ता देने के लिए पीछे हट गए। देवता आगे बढ़ गए और मरुतों को अपने पीछे आने का इशारा किया, लेकिन महायाजक राजा पर चिंतित निगाहें गड़ाए रहे। फिर, जैसे ही उनके और उनके पुत्रों के बंधन खुले, वे घूमे और इकट्ठे हुए यक्षों और मानव सैनिकों के बीच से कोहनी मारते हुए बुदबुदाए।

"जल्दी करो," उसने अपने बेटों को उकसाते हुए कहा। "चलो यहाँ से चलते हैं।"

वह दौड़ने लगा, और अमरका और चंदासुर ने भी ऐसा ही किया। "क्या बात है, पिताजी?" अमरका ने उसके पास आकर पूछा।

स्पष्टीकरण देने के बजाय, शुक्राचार्य ने इंद्र की ओर पीछे मुड़कर देखा, जो अभी भी अपने हाथी पर सवार हो रहे थे। "मूर्ख," उन्होंने गुस्से से कहा और अपने बेटों को साथ चलने का इशारा किया।

अमरा सिंह और कुबेर ने महायाजक और उसके पुत्रों को अंधेरे में गायब होते देखा और फिर निराशा भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। पुल के किनारे, वरारुचि अपने भाई की ओर बढ़ा।

"हम उन्हें जाने नहीं दे सकते—" उसने विरोध करना शुरू किया, लेकिन सम्राट से नज़र मिलते ही वह रुक गया। विक्रमादित्य ने सिर हिलाया और आगे बढ़ते हुए पुल पर कदम रख दिया।

वररुचि ने मुड़कर देखा तो इंद्र विशालकाय घोड़े पर सवार थे। पांच बिजली के झटके आए और घायल मरुतों को उड़ा ले गए। कालिदास ने धीरे से अपनी तलवार म्यान में रख ली।

विक्रमादित्य दर्द से कराहते हुए और कदम गिनते हुए धीरे-धीरे पुल पर आगे बढ़ रहे थे।

इसे करो। अभी करो, वरना मैं वीषादा का खंजर लेने वापस आऊंगा।

सभी असुरों की बस एक ही ख्वाहिश थी हलाहल... लेकिन अब जब हमें वह नहीं मिल सकता, तो हम आपको और परेशान नहीं करेंगे।

यह सब हलाहला के लिए था। इसमें व्यक्तिगत रूप से कुछ भी नहीं था।

सम्राट आधी दूरी तय कर चुके थे और महल के द्वार के निकट पहुँच रहे थे। उन्होंने अपनी गति धीमी की... और रुक गए। उन्होंने उज्जैनी की ओर मुड़कर देखा। इंद्र का हाथी अभी भी दिखाई दे रहा था। शुक्राचार्य कहीं नजर नहीं आ रहे थे।

मैंने तुम्हें पिछली बार जाने दिया था... मैं तुम्हें फिर से जाने का मौका दूंगा।

नरक की आग से उसकी पकड़ तलवारों पर और कस गई। तलवारें तुरंत आग की लपटों में घिर गईं।

अपनी सेनाओं को लेकर जितनी जल्दी हो सके मेरे शहर से निकल जाओ।

"नरक की बहनों, उठो," विक्रमादित्य ने फुसफुसाते हुए कहा।

आप और उज्जैनी के बीच जितना हो सके उतनी दूरी बनाए रखें।

"उठो और उन लोगों का नाश करो जो इन तलवारों को धारण करने वाले के प्रति दुर्भावना रखते हैं।" राजा के होठों से ये शब्द कोमल भाव से निकले और उसने नरक की आग की लपटें उठाईं, जो हवा में चक्कर लगाती और घूमती हुई फैल गईं।

जाओ—इससे पहले कि मैं अपना मन बदल लूँ।

एक, दो, तीन... चाबुक मानो हवा के बवंडर में फंसकर ऊपर उठे, एक दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाते हुए, महल के ऊपर घूमते हुए, आपस में विलीन होते हुए—

पलक झपकते ही चुड़ैलें उज्जैन के आकाश में पहुँच गईं।

बंशी को देखते ही झील के चारों ओर ज़ोरदार जयकार मच गई। देखते ही देखते, जयकार की आवाज़ के साथ-साथ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और पैर पटकने की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं।

"आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो..."

शहर की अंधेरी गलियों से भागते हुए, शुक्राचार्य और इंद्र चौंककर ऊपर देखने लगे, उनके चेहरे पर घबराहट की जगह आतंक के भाव उभर आए...

"आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो..."

उज्जैन में गर्जना जंगल की आग की तरह फैल गई, क्योंकि चुड़ैलें राज्य के शत्रुओं के पीछे चीखते हुए दौड़ पड़ीं, तीन प्रतिशोधी आत्माएं अग्निमय न्याय दिलाने के मिशन पर थीं।

आगे बढ़ो... आगे बढ़ो... आगे बढ़ो..."

विक्रमादित्य ने महल में प्रवेश करने के लिए दरवाजा धक्का देकर खोला। वह अत्यधिक थका हुआ महसूस कर रहा था। वह लेटना चाहता था... लेटना... लेटना... वह फिसल गया, लेकिन किसी ने उसे पकड़ लिया और गिरने से रोक दिया।

...नीचे... नीचे... नीचे... उसकी आँखें बंद हो गईं।

"विक्रम।"

उन्होंने आँखें खोलीं।

उसने उस चेहरे की ओर देखा जिसे वह उस रात से देखने के लिए बेताब था जब अतुल्यतेजा ने उसे खबर दी थी। ऐसा लगता है कि वह तुम्हें बुला रही है, सम्राट।

“विक्रम,” विशाखा ने मुस्कुराते हुए फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। “तुम वापस आ गए।”

विक्रमादित्य को अहसास हुआ कि वह फर्श पर लेटा हुआ है और उसका सिर विशाखा की गोद में है। उसने देखा कि आचार्य उसे देख रहे हैं और उसने धनवंतरी को प्रकट होते और उसके बगल में घुटने टेकते हुए देखा।

सम्राट ने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ रानी की ओर देखा। उन्होंने रानी के चेहरे की ओर हाथ बढ़ाया, और रानी ने उनका हाथ पकड़कर अपने नम गाल से लगा लिया। "आप सीमा से लौट आए हैं," उन्होंने दोहराया।

Vikramaditya sighed.

"मैं मौत के मुंह से भी वापस आ जाता, सिर्फ इसलिए कि मैं तुम्हारा नाम तुम्हारे होठों से सुन सकूं, मेरी जान।"

उपसंहार

वरारुची ढाल के पीछे दुबक कर बैठा था, एक पैर नीचे झुकाए, दूसरा पैर आगे बढ़ाया हुआ था, केवल उसकी आँखें ढाल के किनारे से ऊपर दिखाई दे रही थीं, मानो वह सचेत और सतर्क हो। उसका दाहिना हाथ, कोहनी से तेज़ी से मुड़ा हुआ, एक कटारी पकड़े हुए था, जिसकी नोक स्थिर थी क्योंकि वह अपने लक्ष्य का आकलन कर रहा था। फुर्ती से हवा में उछलकर, सलाहकार ने अपने काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी पर कटारी से वार किया, अपनी ढाल से एक वार को रोका, एक चक्कर

लगाया और दूसरी बार नीचे वार किया, फिर वापस दुबक कर बैठ गया, ढाल को अपनी छाती से लगाए हुए।

सूरज अभी उगा नहीं था, और कीचड़ के गड्ढे में हल्की-हल्की धुंधली रोशनी थी। पार्षद धीरे-धीरे उठा, उसके दुबले-पतले, तेल लगे शरीर से पसीना बह रहा था। उसने अपने कंधों की मांसपेशियों को कसते हुए और गर्दन की अकड़न को दूर करते हुए, एक तरफ रखे हथियारों की कतार की ओर कदम बढ़ाया। कटारी को नीचे रखकर, उसकी उंगलियां कई तरह की तलवारों पर फिरने लगीं, यह तय करने के लिए कि कौन सी चुनें। अंत में, पार्षद ने घुमावदार धार वाली एक पतली, लंबी तलवार चुनी।

"यह वाला क्यों नहीं?" एक आवाज ने पुकारा।

वररुचि ने मुड़कर देखा तो पाया कि कालिदास कीचड़ के गड्ढे के प्रवेश द्वार पर हाथ में तलवार लिए खड़े थे। जैसे ही वह गड्ढे में दाखिल हुए, उस विशालकाय ने वररुचि की ओर तलवार बढ़ा दी।

"तुम चाहते थे कि मैं इसे सौंप दूं," कालिदास ने वरारुचि को तलवार की मूठ देते हुए कहा। "मैं उस समय ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि मुझे अभी और युद्ध लड़ने थे। लेकिन अब..." उन्होंने इशारा करते हुए दूसरे सलाहकार को तलवार लेने के लिए कहा।

राजा का भाई उस विशालकाय व्यक्ति की ओर ऊपर देखता रहा और उसके माथे पर बने निशान का ध्यानपूर्वक अध्ययन करता रहा।

"यह वही तलवार है जिसने इंद्र के महल में प्रवेश को रोका था," उन्होंने कहा। तलवार की मूठ पर हाथ रखते हुए उन्होंने धार को दूर धकेल दिया। "इसे उसी के हाथों में छोड़ देना बेहतर है जिसने अवंती के लिए इसे इतने प्रभावी ढंग से चलाया था।"

कालिदास ने एक क्षण के लिए संकोच किया, फिर सिर हिलाया।

वररुचि के होठों पर एक तरफा मुस्कान आ गई जब उसने हूण के बारे में सोचा। "मुझे विक्रम के प्रति तुम्हारी वफादारी पर कभी शक नहीं करना चाहिए था। मुझे खेद है।"

"नहीं।" तलवार को म्यान में रखते हुए, कालिदास राजा के भाई के करीब आए और उन्हें कंधों से पकड़ लिया। "अगर यहाँ क्षमा मांगने की गुंजाइश है, तो वह क्षमा

मेरी होनी चाहिए। मैंने आपके साथ घोर अन्याय किया है, लेकिन उन सभी आरोपों के पीछे मेरा उद्देश्य यह नहीं था कि—”

“मुझे पता है, मुझे पता है,” वरारुचि ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “विक्रम ने मुझे सब कुछ बता दिया है। आपको सफाई देने या माफी मांगने की जरूरत नहीं है। आपने अवंती के हित को ध्यान में रखते हुए काम किया; आपने जो कुछ भी किया, वह अवंती की भलाई के लिए ही था।”

“मैंने लगभग अपने भाइयों को ही दुश्मन बना लिया था,” उस दैत्य ने अपने हाथ बगल में लटका लिए और अफसोस से अपना सिर हिलाया।

“फिर भी, दो रात पहले हम तीनों ही वहाँ खड़े थे, इंद्र से लड़ रहे थे और महल की रक्षा कर रहे थे।” वरारुचि ने कालिदास के हाथ को तसल्ली भरे अंदाज़ में दबाया। “हम अटूट हैं।”

कुछ देर सोचने के बाद, उस दैत्य ने मुस्कुराते हुए अपनी तलवार निकाली। "अभ्यास?" उसने पूछा।

“ज़रूर।” कृपाण पर नज़र डालते हुए, वरारुची ने अपनी तलवार को एक चौड़ी और भारी तलवार से बदल दिया।

कीचड़ के गड्ढे के अंत तक चलते हुए, वरारुचि कालिदास की ओर मुड़ा। विशालकाय कालिदास युद्ध मुद्रा में झुक गया, लेकिन राजा का भाई गंभीर भाव से अपने प्रतिद्वंद्वी को घूरता रहा, उसके हाथ में तलवार बेजान पड़ी थी।

उन्होंने कहा, "मुझे खेद है।"

“किसलिए?” कालिदास ने दूसरी तरफ से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। धीरे-धीरे वह सीधा खड़ा हो गया।

“उस दोपहर लावा की चौकी में जो कुछ हुआ, उसके लिए।” वरारुची ने अपनी नज़रें झुका लीं। “तुम्हारे पिता, तुम्हारी बहन... तुम्हारा परिवार।” उसने उस विशालकाय व्यक्ति की ओर देखा। “यह युद्ध था, लेकिन यह गलत भी था।”

कालिदास ने दूसरे सलाहकार को काफी देर तक घूर कर देखा। कीचड़ के गड्ढे के चारों ओर लगे पेड़ों की शाखाओं से सूरज की किरणें छनकर आ रही थीं।

“यह गलत था, लेकिन युद्ध था,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कहा। “यह बहुत पहले की बात है, और हम सबको आगे बढ़ना चाहिए।” वह मुस्कुराया। “उस दिन मैंने एक परिवार खो दिया, लेकिन मुझे अवंती में एक नया परिवार मिल गया। मुझे

शिकायत करने के लिए कुछ नहीं है।" वह नीचे झुका और अपनी तलवार को कसकर पकड़ लिया।

"चलो, अभ्यास करते हैं।"

राजा के भाई ने सिर हिलाया। दो कदम आगे बढ़कर वे एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे।

***

"मेरे राज्य की सहायता के लिए आप सभी का धन्यवाद करने की मेरी शुरुआत कैसे हो सकती है?"

"आप ऐसा नहीं कर सकते, सम्राट विक्रमादित्य," कुबेर ने सिर हिलाते हुए कहा। "कृपया कम से कम मुझे धन्यवाद न दें। मेरे यक्ष ने रानी के साथ जो किया, उसके बाद यह मेरा कर्तव्य था। अफसोस की बात यह है कि मैंने इंद्र के इरादे को समझे बिना, या आपके बारे में जरा भी जाने बिना, उस हमले को मंजूरी दे दी।" उन्होंने शर्म से अपना सिर झुका लिया। "मेरी मूर्खता की भरपाई नहीं हो सकती, जिसके लिए मैं बहुत क्षमा चाहता हूँ, लेकिन आपकी मदद करना चीजों को सुधारने का एक छोटा सा प्रयास था।" वे सम्राट को गंभीरता से देखने के लिए रुके। "देवताओं और असुरों की इच्छा को जानते हुए और यह देखते हुए कि वे अपनी बात मनवाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थे, हम यक्षों ने आपकी सहायता करने का निर्णय लिया।"

यक्ष के बगल में आराम से बैठे शालिवाहन ने सिर हिलाया। "मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ," उसने अपनी बूढ़ी, थकी हुई आवाज़ में कहा, उसके दागदार चेहरे पर शायद ही कोई भाव झलक रहा था।

राजा ने जोर देकर कहा, "व्यालों और अही से इस शहर को बचाना कोई छोटा काम नहीं था।"

"व्याला, हाँ... लेकिन पूरी ईमानदारी से कहूँ तो, अही को रोकने में हमारी कोई भूमिका नहीं थी, हालाँकि जब हमने शहर के द्वार छोड़े थे तो हमारा यही इरादा था," कुबेरा ने कहा।

विक्रमादित्य ने यक्ष को असमंजस भरी निगाहों से देखा। "मैं आपकी बात नहीं समझ पा रहा हूँ। मैंने सोचा था—"

कुबेर ने खेद से भरा चेहरा बनाया। "शुक्राचार्य के पुत्रों तक पहुँचने से पहले ही हम होलिका के वश में आ गए," उन्होंने कहा, उनका चेहरा लाल हो गया था। "हम... असहाय हो गए थे। होलिका के युद्ध से भाग जाने के बाद ही हम होश में आए, जिससे हम उसके जादू के प्रभाव से मुक्त हुए।"

"मैंने उसके जादू-टोने के बारे में सुना है," राजा ने कहा। "मेरे सलाहकारों ने कुछ भयानक चीजें देखीं... जैसे मरे हुए लोग..." उसने कुबेरा की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा।

"कुछ ऐसा ही," यक्ष ने बुदबुदाते हुए कहा और असहज होकर अपनी सीट पर हिलने-डुलने लगा।

"चुड़ैल रानी की शक्तियां वाकई प्रभावशाली हैं," शालिवाहना ने सहमति जताई।

"यह सौभाग्य की बात है कि उन शक्तियों का आप दानवों पर कोई असर नहीं हुआ," सम्राट ने राहत भरी मुस्कान के साथ कहा। "अमरा सिंह ने मुझे बताया कि आपके आने से ही युद्ध का रुख हमारी तरफ़ मुड़ा। कौन जानता है कि अगर आप हमारी मदद के लिए न आते तो वह युद्ध—हलाहला की रक्षा का यह पूरा अभियान—किस मोड़ पर पहुँच जाता?"

"आपके सलाहकार शंकुबाला काफी दृढ़ थे," दानव की काई लगी दाढ़ी हल्की मुस्कान के साथ खुल गई। "मुझे खुशी है कि हम आए, क्योंकि मुझे न केवल आपसे, बल्कि कुबेरा से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और..." वह कुबेरा के बाईं ओर बैठे खाशी दुर की ओर देखने के लिए झुका, "...हुना जनजाति के वीर सरदार से भी। ऐसा हर दिन नहीं होता कि हलाहला की रक्षा में योगदान देने वाले सभी लोग एक ही स्थान पर बैठे हों। मैं यहाँ आकर सम्मानित महसूस कर रहा हूँ।"

विक्रमादित्य मुस्कुराए और उस हवादार कक्ष को निहारा जहाँ वे बैठे थे, जहाँ से झील का नज़ारा दिखता था। सुबह की पहली किरणें जालीदार पर्दों से छनकर सफेद संगमरमर के फर्श पर पड़ रही थीं। उज्जैनी संघर्ष के बाद की थकान में डूबी हुई थी, जिसमें एक ओर कष्ट सहने की राहत, दूसरी ओर हुए नुकसान का दुःख और तीसरी ओर आशा और व्यवस्था के धीरे-धीरे फिर से पनपने की भावना थी।

"और तुम, मेरे मित्र," राजा ने खाशी दुर पर अपनी दृष्टि टिकाते हुए कहा। "तुम मेरे लिए इस महान रेगिस्तान से इतनी दूर चलकर युद्ध लड़ने आए, इसके लिए मैं तुम्हारा क्या धन्यवाद करूँ? और ड्रोइबा... मुझे बॉर्डरवर्ल्ड में प्रवेश करने के लिए

उसकी सहायता की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि आचार्य लौट आए थे, लेकिन ड्रोइबा के बिना हम बेताल को बॉर्डरवर्ल्ड से कभी नहीं बचा सकते थे।"

"आप मुझे 'मित्र' कहकर संबोधित करें। इतना ही काफी है," शर्मीले 'ओर ने सहजता से हाथ हिलाया।

विक्रमादित्य ने सोच-समझकर सिर हिलाया। "मैं शीघ्र ही सिंधुवर्त के राजाओं से परामर्श करूँगा। तब तक आप और मेरे साथ आए हुए लोग अवंती में ठहर सकते हैं। वररुचि और राजगुरु यह सुनिश्चित करेंगे कि आपको जो भूमि दी जाए वह उपजाऊ और रहने योग्य हो।"

जब मुखिया ने अपना सिर झुकाया, तो सम्राट ने यक्ष और दानव की ओर देखा। "भाग्य हमें अकल्पनीय स्थानों पर ले आता है। हमें देखो। कुछ समय पहले तक, मैं दानवों को केवल कहानियों में ही देखता था। विशाखा के साथ जो हुआ था, उसके कारण मैं यक्षों से घृणा करता था। और हम," उन्होंने खशी दुर की ओर इशारा करते हुए कहा, "एक दूसरे के कट्टर शत्रु थे। फिर भी, दानवों, यक्षों और हूणों ने सर्वज्ञानी ईश्वर के प्रति अपने वचन को निभाने में मेरी सहायता की है..."

"सम्राट, ये नियति नहीं बल्कि कर्म है जो हमें अविश्वसनीय स्थानों पर ले आता है," कुबेरा ने कहा। "ये आपके कर्म ही हैं जो हम सबको इस मुकाम तक लाए हैं। आपका साहस, आपका दृढ़ संकल्प, हर मुश्किल का सामना करने की आपकी इच्छाशक्ति। आपने हमें आपकी मदद के लिए प्रेरित किया और हम सब स्वेच्छा से आए।"

शालिवाहन और हूण प्रमुख ने सहमति में सिर हिलाया, जिसके जवाब में विक्रमादित्य ने झुककर अभिवादन किया।

"मुझे लगता है कि तुम वापस जाना चाहते हो," उसने कुबेरा से कहा।

यक्ष ने सिर हिलाया। "आपका नगर सुंदर है, लेकिन मुझे अपनी अलका की बहुत याद आ रही है।" उसने सम्राट की ओर देखा। "क्यों न आप मेरे साथ चलें और स्वयं इसकी सुंदरता देखें?"

"मेरा शहर तबाह हो गया है और उसे फिर से बनाने की ज़रूरत है," राजा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "लेकिन मैं जल्द ही आऊंगा।"

"आप तीनों का जनस्थान में स्वागत है," शालिवाहन ने कहा। उनके होंठों पर मुस्कान आ गई। "मैं वादा करता हूँ कि आपका स्वागत शंकुबला और उसके

आदमियों से कहीं बेहतर तरीके से किया जाएगा।”

जैसे ही सब लोग खड़े हुए, खाशी दुर ने आँखों में शरारत भरी चमक के साथ कहा, "मैं आपको महान रेगिस्तान में आमंत्रित कर सकता हूँ, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि आप उस निर्दयी जगह पर आना चाहेंगे।"

विक्रमादित्य सरदार के पास गए और उन्हें कंधों से पकड़कर बोले, “मैं कभी भी किसी मित्र के घर के निमंत्रण को ठुकराता नहीं।” थोड़ी देर रुककर उन्होंने कहा, “हर चीज के लिए धन्यवाद।”

दरवाजे पर कदमों की आहट सुनाई दी। सम्राट ने मुड़कर महल के हाथ की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा।

“माननीय महोदय,” उस व्यक्ति ने कहा। “पार्षद धनवंतरी ने मुझे यह सूचित करने के लिए भेजा है कि राजकुमार घटाकरपारा को होश आ गया है।”

***

“मुझे लगा था कि अहि को नियंत्रित करने का काम यक्षों का है।” वेताल भट्ट ने तकिये से ऊपर देखते हुए घटकरपारा के पीले चेहरे को आश्चर्य से देखा। “क्या यह तुम थे?”

“शायद वास्तव में वे ही थे,” राजकुमार ने उत्तर दिया। “मुझे लगा कि मैं ही था—”

“नहीं,” विक्रमादित्य ने कहा। “कुबेर ने अभी-अभी स्वीकार किया है कि यक्ष सर्प को रोकने में कुछ भी नहीं कर पाए।” राजा ने गर्व से कहा, “अहि से अकेले लड़ना आपकी बहादुरी थी।”

“तुमने यह कैसे किया?” वराहमिहिर ने उत्सुकता से अपनी बैसाखी पर झुकते हुए पूछा।

“लड़के को आराम करना चाहिए,” धनवंतरी ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की, लेकिन वराहमिहिर ने उसे अनसुना कर दिया।

"बताओ, हमें बताओ।"

“कासावती से लौटते समय अमरा सिंह ने मुझे अही के बारे में बताया था,” घटाकरपारा ने उत्तर दिया। “उन्होंने कहा था कि वह साँप पानी का बना है, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे कोशिश करके देखना चाहिए कि क्या मैं उसे वश में कर सकता

हूँ।" उन्होंने गहरी साँस लेने के लिए थोड़ा रुककर कहा, "यह आसान नहीं था। लेकिन मैंने बेहोश होने तक पूरी कोशिश की।"

"तुमने बहुत अच्छा किया," वराहमिहिर ने कहा। "तुमने उस चीज़ को पूरी तरह नष्ट कर दिया।"

राजकुमार मुस्कुराया।

"इसे बिखरते और गायब होते देखना कितना सुखद था," वराहमिहिर ने उस क्षण को याद करते हुए सिर हिलाया। "यह वररुचि और मुझे लगभग अपनी चपेट में ले ही रहा था कि चांदनी में पिघलकर गायब हो गया।"

"ठीक है, अभी के लिए इतना ही काफी है," धनवंतरी ने हाथ हिलाते हुए जोर देकर कहा। "हम बाद में बात कर सकते हैं—"

"रुको," राजकुमार ने एक हाथ उठाते हुए कहा। "तुमने कहा था कि चांदनी थी?"

वराहमिहिर रुकते हैं। "हाँ।"

"Can't be," said Ghatakarpara, puzzled.

"हाँ, बिल्कुल था। मैं अकेला नहीं था। वरारुची भी वहाँ था, साथ ही एक दर्जन से अधिक महल के रक्षक भी थे। हम सभी ने चाँदनी में साँप को गायब होते देखा।"

"लेकिन," राजकुमार रुका, "जब मैं बेहोश हुआ तब सूरज डूब रहा था, और आकाश में चाँद नहीं था। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।"

सम्राट और अन्य पार्षदों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"मेरा एक सवाल है," अमारा सिंह ने आगे बढ़ते हुए कहा, "और इसका अही से कोई लेना-देना नहीं है।" उन्होंने राजकुमार की ओर भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, "तुम उज्जैन की गलियों में क्या कर रहे थे? तुम्हें तो उदयपुरी के आसपास होना चाहिए था?"

घटकरपारा ने अपराधबोध से अपनी निगाहें झुका लीं।

विक्रमादित्य ने विनम्र लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, "हम सभी जानना चाहते हैं।"

राजकुमार ने अपने चाचा से अमरा सिंह की ओर देखा। "मुझे खेद है कि मैंने आपको निराश किया," उसने कहा। "मैं उस समय ठीक से सोच नहीं पा रहा था। लेकिन रास्ते में मुझे एहसास हुआ कि मैंने आपको निराश किया है। इसलिए, मैं वापस मुड़ गया और महल की ओर चल पड़ा। मैं महल की ओर ही जा रहा था कि आकाश में एक सांप प्रकट हुआ, और मैंने उसे रोकने का फैसला किया।"

अमरा सिंह ने सिर हिलाया। इससे पहले कि धनवंतरी उन्हें जाने के लिए कहते, आचार्य बोले, “हमें अब लड़के को आराम करने देना चाहिए। आइए...”

घटकरपारा को एक कनिष्ठ चिकित्सक की देखरेख में छोड़कर, सभी लोग कमरे से बाहर निकल गए। दीर्घा में, सम्राट ने धनवंतरी की ओर मुड़कर कहा, "वह थका हुआ लग रहा है।"

“वह ठीक हो जाएगा,” चिकित्सक ने उत्तर दिया। “चिंता मत करो।”

वे गलियारे से नीचे चले गए। वराहमिहिर ने मौन भंग करते हुए, कुछ-कुछ स्वयं से कहा, “सूर्य अस्त होने के बहुत बाद तक भी सांप विष उगलता रहा।”

“जब कुबेर और मैंने असुर बंधुओं को पाया,” अमर सिंह ने कहा, “यह स्पष्ट था कि उन्होंने अहि पर अपना नियंत्रण खो दिया था। नाग आकाश में कहीं भी नहीं था।”

“यदि घटकरपारा अचेतन था, और न तो यक्षों और न ही असुरों का अहि पर कोई नियंत्रण था, तो सर्प के गायब होने का कारण क्या था?” वेताल भट्ट ने आश्चर्य व्यक्त किया।

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। उन्होंने कहा, “संभावनाएं अनंत हैं। हो सकता है कि हम कभी भी सर्प के रहस्यमय ढंग से गायब होने के पीछे की सच्चाई न जान पाएं।”

***

विक्रमादित्य ने कहा, "यह मेरे बचपन का सबसे पुराना दोस्त है... और साथ ही मेरा सबसे नया दोस्त भी।"

विशाखा ने हिचकिचाते हुए एक कदम आगे बढ़ाया और मशालों की रोशनी में बेताल के झुर्रीदार चेहरे को ध्यान से देखा। उस पिशाच के जलते हुए बाल नीचे तक लटक रहे थे और उसके चेहरे पर सुलगते हुए गुच्छों की तरह दिख रहे थे, इसलिए रानी को बेहतर ढंग से देखने के लिए उसे अपनी हड्डियों वाली उंगलियों से उन्हें हटाना पड़ा।

"और यह अवश्य ही रानी विशाखा होंगी," उन्होंने झुकते हुए अपनी बूढ़ी, फटी हुई आवाज में कहा।

विशाखा ने कुछ पल के लिए घोलमास्टर की काली, खाली आँखों में देखा, फिर झुककर प्रणाम किया। "मुझे खेद है," उसने कहा, "लेकिन मुझे भी आप याद नहीं हैं।"

"ऐसा इसलिए है क्योंकि हम पहले कभी नहीं मिले हैं, मेरी रानी।"

“ओह,” विशाखा ने राजा की ओर हैरानी से देखा।

“मकसद आप दोनों का एक-दूसरे से परिचय कराना था,” विक्रमादित्य ने समझाया। बेताल को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, “मेरे मित्र, तुम्हारा कंधा कैसा है?”

उस पिशाच ने बिना किसी तकलीफ के अपना दाहिना कंधा ऊपर-नीचे हिलाया। "आपका चिकित्सक तो वाकई भाग्यशाली है। उसने मुझे पल भर में ठीक कर दिया।"

“जी हां,” सम्राट ने स्वीकार किया, उनका हाथ अपने पेट पर बंधी पट्टी पर चला गया। घाव लगभग भर चुका था, और दर्द भी लगभग गायब हो गया था। “उनका स्पर्श उज्जैन में बहुतों को राहत दे रहा है।” उन्होंने चारों ओर फैले अंधेरे की ओर देखा। “क्या आप इस भूलभुलैया में आराम से हैं? यह एकमात्र ऐसी जगह है जहां सूरज की रोशनी नहीं पहुंचती, इसलिए...”

“यहाँ मेरे पास करने को कुछ नहीं है, इसके अलावा मैं ठीक हूँ,” बेताल ने उत्तर दिया। “हाँ, सूरज ढलने के बाद मैं जहाँ चाहूँ जा सकता हूँ, और इसके लिए मैं आभारी हूँ। लेकिन दिन भर मैं बस यहाँ बैठा रहता हूँ और कुछ नहीं करता।” वह रुका। “उबाऊपन मुझे मार रहा है, जैसा कि मुझे आशंका थी, हे बुद्धिमान राजा।”

“आप हमारी मदद क्यों नहीं करते?” विक्रमादित्य ने कुछ देर सोचने के बाद कहा।

"किस तरह से?"

“आप लगभग प्राचीन देवताओं के बराबर ही पुराने हैं। आपने बहुत कुछ देखा और अनुभव किया है, जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखा है। क्यों न आप अपने ज्ञान को कहानियों के माध्यम से साझा करें? हम मनुष्य आपसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।”

“कहानियाँ...” घोलमास्टर ने अपने मन में इस विचार को घुमाया। “मैं लिखने के लिए बहुत थका हुआ हूँ।”

“आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। आप उन्हें किसी को सुना दीजिए, वे इसे लिख लेंगे। मैं अपने दरबार से किसी को यह काम करने के लिए कहूँगा।”

“नहीं, नहीं...” बेताल ने ज़ोर देकर कहा। “मैं ये करूंगा... मैं तुम्हें कहानियां सुनाऊंगा, और तुम उनके साथ जो चाहो कर सकते हो। इस तरह मुझे तुमसे कभी-

कभार मिलने का मौका मिल जाएगा।"

"ठीक है," सम्राट ने मुस्कुराते हुए कहा। "हमारा सौदा पक्का हो गया।"

"और अंदाज़ा लगाओ क्या?" बेताल ने अपनी चतुराई पर हाथ मलते हुए कहा। "मैं इन कहानियों को दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण बनाऊंगा... जो आपके ज्ञान के योग्य होंगी।"

भूलभुलैया से लौटते समय विक्रमादित्य और विशाखा महल के स्नानघर के पास से गुज़रे। हाथ में हाथ डाले चलते हुए राजा ने स्नानघर की ओर देखा... और रुककर अपना सिर हिलाया।

"क्या?" विशाखा ने चिंता भरी नजरों से पूछा।

"मुझे याद आया..." विक्रमादित्य ने विशाखा का हाथ और कसकर पकड़ लिया। "मुझे तुम्हें कुछ देना है।"

उनके कक्ष में प्रवेश करते हुए, राजा एक संदूक के पास गए और उसमें से लोहे की लकड़ी से बना एक छोटा सा डिब्बा निकाला। उन्होंने वह डिब्बा विशाखा के पास लाकर धीरे-धीरे खोला।

"मेरी अंगूठी।"

प्रसन्नता से चमकते चेहरे के साथ, रानी ने डिब्बे से जेड रत्न निकाला। प्रकाश में घुमाकर, उन्होंने हरे रंग की सतह पर कलात्मक रूप से खुदे हुए अपने नाम को देखा। "मैंने इसे एक बार महल के स्नानघर में खो दिया था, और आपने इसे मेरे लिए ढूंढ निकाला। मुझे लगा कि मैंने इसे फिर से खो दिया है।" उन्होंने अंगूठी अपनी उंगली में पहन ली।

"दूसरी बार गिरने के बाद मैंने इसे तुमसे ले लिया था। मैंने सोचा था कि ठीक होने पर मैं इसे तुम्हें दे दूंगा... पहली बार भी मैंने यही किया था।" सम्राट ने नज़रें फेर लीं। "कई बार तो मुझे डर लगने लगा था कि यह अंगूठी कभी अपने डिब्बे से बाहर ही नहीं निकलेगी।"

विशाखा ने हाथ उठाकर विक्रमादित्य के गाल को हल्के से सहलाया। उसकी आँखें नम थीं।

"इसे सुरक्षित रखने के लिए धन्यवाद।" उसने अंगूठी को दोबारा देखने के लिए अपना हाथ नीचे किया। "यह अंगूठी मेरे लिए बहुत खास है। यह मुझे उपहार में मिली थी।"

"किससे?" सम्राट ने पूछा।

"मां की ओर से।"

विशाखा अपने ही शब्दों पर आश्चर्यचकित होकर रुक गई। उसने विक्रमादित्य की ओर देखा, जो उसे उत्साह से घूर रहा था।

"तुम्हें वो याद है?"

"हां... थोड़ा-बहुत," रानी ने कुछ देर सोचने के बाद जवाब दिया। उनका चेहरा खिल उठा। "मुझे धीरे-धीरे सब याद आ रहा है। मुझे पिताजी भी याद हैं, और... मेरी छोटी बहन भी।"

राजा ने उसे कंधों से पकड़कर उसके चेहरे की ओर देखा। "बहन?"

Vishakha nodded. "Kshapanaka."

उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से विक्रमादित्य की ओर देखा। "वह क्षपणक?"

मुस्कुराते हुए और विशाखा का हाथ पकड़कर सम्राट उसे कमरे से बाहर ले गए और कुछ गलियारों से होते हुए एक भारी दरवाजे तक पहुंचे। राजा ने दरवाजा खटखटाया।

क्षपणका ने दरवाजा खोला, उसके चेहरे पर हैरानी के भाव थे। "मुझे आपकी उम्मीद नहीं थी..." उसने कहना शुरू किया, फिर विक्रमादित्य के चेहरे के भाव देखकर रुक गई। "क्या बात है?"

सम्राट की मुस्कान और चौड़ी हो गई। उन्होंने विशाखा की ओर देखा और पार्षद की ओर इशारा किया।

"क्षपणक..." रानी ने विस्मय भरी आवाज में कहा। "तुम कितने छोटे थे..."

पार्षद की आंखें आंसुओं से भीगी हुई थीं, फिर भी वह मुस्कुराई और अपनी बहन को गले लगा लिया। कांपते होंठों से फुसफुसाते हुए उसने कहा, "तुम्हें याद आ गया है।"

विशाखा क्षपणक के आलिंगन में समा गई। छोटी बहन की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने खुशी से रोते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं, फिर विक्रमादित्य को देखने के लिए आँखें खोलीं।

"उसे मैं याद हूँ," उसने कांपती हुई सिसकियों के बीच कृतज्ञता से कहा। "उसे याद है।"

***

मुझे बताया गया है कि प्रालुपी आज सुबह वत्सा के लिए रवाना हो गई है।

Vikramaditya nodded.

वररुची ने कहा, "मुझे लगता है कि उसने आपको अलविदा कहने की जहमत नहीं उठाई।"

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। "उसने कल शाम माँ को बताया था कि वह जा रही है।"

भाई चुपचाप आगे बढ़ते रहे। उनके दाहिनी ओर, मजदूर तीन जले हुए भवनों के खाली ढाँचे तोड़ रहे थे। शहर के चारों ओर से दीवारें टूटने और इमारतें ढहाने की आवाजें आ रही थीं, क्योंकि उज्जैनी का पुनर्निर्माण पूरी लगन से शुरू हो गया था। जिन नागरिकों के पास अभी भी घर थे, वे धीरे-धीरे फाटकों से अंदर आ रहे थे, और कुछ बाजार खुल गए थे, जिनमें आस-पास के खेतों से उपज बेची जा रही थी। लकड़ी और पत्थर के गोदाम बन गए थे, और जमाखोरी और मुनाफाखोरी को रोकने के लिए दोनों वस्तुओं की कीमतों पर सीमा लगाने का एक शाही फरमान जारी किया गया था। इस बीच, मानव, किन्नर, नाग, देव, असुर और कुछ यक्षों के शवों को लगातार शहर से बाहर ले जाकर जलाया जा रहा था, इसलिए जब पश्चिम और दक्षिण से हवा चलती थी तो हवा में धुएँ और जले हुए मांस की गंध आती थी।

"हमें उसे बहुत पहले ही जाने के लिए कह देना चाहिए था," वरारुची ने टिप्पणी की। "उसकी जगह उसके पति के घर में है।" पार्षद थोड़ी देर रुका और अपने भाई की ओर एक अजीब सी नज़र डाली।

"यह महल उसका भी है," सम्राट ने उसे याद दिलाया। "उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे जाने के लिए कहना गलत होता।" यदि राजा ने वरारुचि के हावभाव में छिपे अर्थ को समझ भी लिया था, तो भी उसने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया।

"वह तुम्हारे खिलाफ साजिशें रचती है, तुम्हारा जीवन दुखमय बना देती है," वरारुचि ने आश्चर्य से सिर हिलाया। "तुम उसके जैसी किसी के साथ इतना धैर्य कैसे रख सकते हो और उसे दंडित होते देखना नहीं चाहते?"

“मेरे पास क्या विकल्प है? वह अब भी मेरी बहन है, हमारी बहन है।” विक्रमादित्य ने अपने घोड़े को एक संकरी गली में मोड़ दिया। “और उसके जैसी लोगों के लिए, जीवन भर जिस चीज़ की चाहत रही हो, उससे वंचित किए जाने से बड़ी कोई सज़ा नहीं होती।”

"वह घटाकरपारा के फैसले से जरूर नाराज होगी," वरारुचि अपने भाई के पीछे-पीछे अंदर गया।

“उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन घटाकरपारा के महल से चले जाने के बाद, उसे आखिरकार यह एहसास हो गया होगा कि उसने अपनी चाल चल दी है और हार गई है,” राजा ने उत्तर दिया।

"क्या उसने आपसे आखिरी बार हस्तक्षेप करने के लिए नहीं कहा?"

विक्रमादित्य ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैंने उसे यह स्पष्ट कर दिया था कि मैं उसे जाने से नहीं रोकूंगा।"

वररुचि एक पल के लिए चुप रहे। “आपने घातक्परा को नहीं बताया, है ना?” उन्होंने सम्राट की ओर देखा। “यशोभावी के बारे में...?”

विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। “यह एक अफवाह है जिसे मैं न तो साबित कर सकता हूँ और न ही खंडन कर सकता हूँ। अगर घातकपर को यशोभावी के बारे में जानना है, तो उसे अपनी माँ से ही जानना होगा।”

“शायद यही बेहतर होगा कि यह सब कुछ सामने न आए,” पार्षद ने सोचा। कुछ याद आने पर वह राजा की ओर मुड़ा। “क्या आपने मगध से ताज़ा खबर सुनी है?”

“हम्म... शूरासेना पर हत्या का आरोप लगाया गया है, और कपिला को ताम्रलिप्ति में गिरफ्तार कर लिया गया है—”

“ये तो पुरानी बात है,” वरारुचि मुस्कुराया। “चूंकि मगध में अब सिंहासन पर बैठने के लिए शाही वंश का कोई प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी नहीं है, इसलिए वे राज्य को गणतंत्र में बदलने की संभावना पर विचार कर रहे हैं।”

“वंगा की तरह?” विक्रमादित्य ने सिर हिलाया और मुस्कुराया। “कितनी विडंबना है।”

वररुचि मुस्कुराया। चारों ओर देखते हुए उसने पाया कि वे एक ऐसी सड़क पर आ गए थे जो पुराने पशु बाजार के किनारे से होकर गुजरती थी। "शरामाना को तो जानते ही हो ना," उसने अचानक विषय बदलते हुए कहा।

विक्रमादित्य ने पलकें झपकाईं। "कौन?"

"कमांडर शरमाना। मुसिली के गैरीसन प्रमुख।"

"ओह," राजा ने सिर हिलाया।

"जब से उसने सुना है कि आपने उसके परिवार को आधे घोड़ों से बचाने के लिए कितनी जान जोखिम में डाली, तब से वह बहुत शर्मिंदा है। वह सिंहासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए क्षमा मांगना चाहता है...। केवल वही नहीं, सेनापति सुहासा और अजन्य भी आपसे क्षमा मांगते हैं। पुल्यामा भी यही चाहता है।" वरारुचि ने सम्राट की ओर विनती भरी निगाहों से देखा। "आप उन्हें क्षमा कर देंगे, है ना? उनकी कोई गलती नहीं है। अगर किसी की गलती है, तो वह मेरी है। मैंने ही उन्हें उकसाया था।"

"उन्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है," विक्रमादित्य ने उन्हें आश्वासन दिया।

वररुची ने राहत की सांस ली। कुछ देर रुककर उसने पूछा, "लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया?"

"क्या करना है?"

"शरामना के परिवार की मदद करूँ? शरामना ने तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह किया था, उसके परिवार ने तुम्हारे आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया था... यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें अवंती का राजा मानने से भी इनकार कर दिया था।" वरारुचि ने सिर हिलाया। "तुम्हारी जगह मैं होता तो यह निर्णय लेता कि वे बचाव के लायक नहीं हैं।"

सम्राट मुस्कुराए। "पिताजी ने एक बार मुझसे कहा था कि राजत्व का मूल नियम यह है कि प्रजा चाहे तो अपने राजा को त्याग सकती है, लेकिन राजा कभी अपनी प्रजा को नहीं त्याग सकता। राजा होने के नाते, मेरा अपने सभी प्रजाजनों के प्रति कर्तव्य है—मैं उनका समर्थन करने वालों और न करने वालों, या मुझसे प्रेम करने वालों और न करने वालों के बीच भेदभाव नहीं कर सकता। यदि शरमाना का परिवार संकट में था, तो उनकी रक्षा करना मेरा दायित्व था। जब तक मैं राजा हूँ, वे मेरी प्रजा हैं। यह एक ऐसा दायित्व है जिसे हर राजा और हर माता-पिता को उठाना पड़ता है।"

वररुचि ने कुछ समय तक विक्रमादित्य का अध्ययन किया।

अंत में उसने प्रशंसा में सिर हिलाते हुए कहा, "पिताजी सही थे जब उन्होंने कहा था कि तुम राजा बनने के लिए पैदा हुए हो।"

***

"तुम कभी राजा नहीं बन पाओगे। क्या तुम्हें यह बात समझ नहीं आती?"

"मैं माँ नहीं बनना चाहती।"

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसा कहने की?" प्रलूपी ने उसे घूरते हुए कहा। "मैं तुम्हारे लिए बस यही चाहती थी।"

"नहीं, माँ। यह सब तो आप हमेशा से चाहती थीं, और इसी वजह से आपको इतना दुख हो रहा है।"

"तुम्हें इस तरह पलटकर जवाब देना कहाँ से आया?" उसने गुस्से से कहा। जब उसने कोई जवाब नहीं दिया, तो उसने कहा, "अगर तुम जाओगे तो सब कुछ खो दोगे। परिषद में तुम्हारा स्थान, तुम्हारी राजसत्ता, सब कुछ। यह महल तुम्हें त्याग देगा, तुम्हें बाहर फेंक देगा—"

"सम्राट ने कहा कि मैं जब तक चाहूँ उनकी परिषद में रह सकता हूँ, और महल में मेरा हमेशा स्वागत रहेगा।"

प्रलूपी को झुंझलाहट से सिर हिलाते देख उसका इरादा और भी मजबूत हो गया। "माँ, भले ही चाचाजी ने ये सब न कहा होता, मैं जाता ही। न जाने से तो मैं निश्चित रूप से सब कुछ खो दूँगा।"

सीमावर्ती इलाके की तेज़ धूप में घटाकरपारा ने आँखें सिकोड़ते हुए छोटी पहाड़ी की ढलान पर बसे बलिपुरा गाँव के जर्जर मकानों के समूह का जायज़ा लिया। दोपहर के कुछ ही पल बीते थे और सभी मकानों के शटर बंद थे, खिड़कियाँ दिन की गर्मी को अंदर आने से रोकने के लिए बंद थीं। कहीं भी कोई हलचल नहीं थी, ज़मीन पूरब की ओर समतल और खुली थी, पश्चिम की ओर बंजर अर्बुद पर्वतमाला फैली हुई थी।

राजकुमार ने अपने घोड़े को एड़ी मारी और कुछ ही मिनटों में वह पहले समूह के घरों के पास पहुँच गया। आगे बढ़ने से पहले उसने हवा को ध्यान से सूंघा और बलिपुरा की मुख्य सड़क, चौड़ी, मिट्टी से बनी पक्की गली पर सवार हो गया। वह

धीरे-धीरे चलता रहा और लगातार सूंघता रहा, जब तक कि उसकी नाक को अगरू की हल्की सुगंध नहीं मिल गई।

उन्हें याद था कि अपारूपा ने एक बार उनसे कहा था, "मेरे दादाजी पूरे मलावा में सबसे अच्छी अगरबत्ती बनाते हैं।"

घटाकरपारा एक बड़े घर के सामने आकर रुक गया, जहाँ से गोपरास और चंदन की सुगंध अगुरु की सुगंध के साथ मिलकर दोपहर की शांत हवा में घुल रही थी। घर बाहर से दीवार से घिरा हुआ था, एकमात्र दिखाई देने वाला प्रवेश द्वार भारी लकड़ी का बना एक पुराना दरवाजा था। दरवाजा अंदर से बंद था।

घोड़े से उतरकर राजकुमार दरवाजे तक गया और उसे धक्का दिया। दरवाजा मुश्किल से हिला। उसने दरवाजा खटखटाया।

कोई जवाब नहीं मिला।

उसने फिर से दस्तक दी, इस बार और जोर से। फिर उसने दरवाजे को बार-बार धक्का दिया, जिससे अंदर की कुंडी खड़खड़ाने लगी।

"कौन है भाई?"

घटाकरपारा की दुनिया थम सी गई। इतनी थम गई कि वह अपने सीने में अपने दिल की धड़कन सुन सकता था।

“अपरूपा?” उसने दबी हुई, अविश्वास भरी आवाज में पुकारा।

“कौन है?” आवाज ने अनिश्चितता भरे स्वर में दोहराया।

"यह मैं हूं।"

मौन।

“अपरूपा... मैं तुम्हारे लिए आया हूँ।”

मौन।

"दरवाजा खोलो, अपरूपा...कृपया।"

मौन।

मैंने सब कुछ छोड़ दिया है और यहाँ रहने आया हूँ—

"आपने मुझसे झूठ बोला।"

घटाकरपारा हताशा में दरवाजे पर झुक गया, मुट्ठियां भींचकर विनती करने लगा।

“मुझे हर बात के लिए खेद है, अपारूपा, लेकिन मैं समझा सकता हूँ—”

"दूर जाओ।"

"कृपया मेरी बात सुनें-"

दरवाजा बंद होने की आवाज। भारी, निर्णायक और स्थायी।

"अपरूपा, कृपया... मेरी बात सुनो..." घटाकरपारा ने दरवाजा खटखटाया। "मैं तुम्हारे लिए आया हूँ। मैं महल वापस नहीं जा रहा... तुम ही मेरे लिए सब कुछ हो..."

लड़के को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह कितनी देर तक उस दरवाजे पर खड़ा रहा, उसके पीछे की खामोशी को मनाने की कोशिश करता रहा। जब आखिरकार वह उदास और निराश मन से वहां से हटा, तो उसकी परछाईं अब पैरों के नीचे ठूंठ जैसी नहीं थी; बल्कि, वह दीवार के सहारे एक टेढ़े कोण पर झुकी हुई थी, छत की कोणीय परछाइयों के बीच एक अकेली मानवीय परछाईं।

आगे क्या करना है, यह तय न कर पाने के कारण, पीछे हटने की अनिच्छा के साथ, इस उम्मीद में कि अपारूपा मान जाएगी और उसके लिए दरवाजा अचानक खुल जाएगा, वह वहीं खड़ा देखता रहा—

"आआआआ।"

घटाकरपारा ने पीछे मुड़कर देखा तो सड़क पर द्विज खड़ा था। उसकी आँखें चमक रही थीं और वह राजकुमार को देखकर प्रसन्न प्रतीत हो रहा था।

"उउउह... आआआई..." उसने मुस्कुराते हुए कहा। "आआ..."

"द्विज," राजकुमार ने व्यथित होकर उस व्यक्ति की ओर देखा। "अपरूपा मुझसे मिलना नहीं चाहती।"

"आआआ... उउउउ...?" द्विज ने राजकुमार की ओर देखा, उसका चेहरा चिंता से सिकुड़ गया था।

लड़के ने सिर हिलाया, मानो उसके सीने पर दुनिया भर का बोझ हो। "वह मेरी बात सुनने को तैयार नहीं है; वह दरवाजा तक नहीं खोल रही।" उसने निराशा से अपना सिर झुका लिया।

"ऊऊऊ... उह..." द्विज ने राजकुमार को बांहों से पकड़कर हिलाया। "ऐ... आआआ..." उसने हाथ हिलाते हुए इशारा किया और घर के एक तरफ बढ़ने लगा। "आआआ..." उसने पीछे मुड़कर पुकारा, यह सुनिश्चित करते हुए कि घटाकरपारा उसके पीछे आ रहा है।

एक मोड़ मुड़कर, वे दीवार के सहारे चलते हुए घर के पीछे बने एक छोटे से पत्थर के कुएँ तक पहुँचे। कुएँ के बगल वाली दीवार में एक संकरा दरवाज़ा बना

हुआ था। झुककर, द्विज ने दरवाज़े से अंदर प्रवेश किया और राजकुमार को भी ऐसा ही करने का इशारा किया।

परिसर के अंदर पहुँचने के बाद, द्विजा एक तरफ के दरवाजे की ओर आगे बढ़ी, जो कि बंद था।

"Aaai..." he called. "Aaa... uh..."

पदचिन्हों।

दरवाजा खुला और अपारूपा अर्ध-छाया के एक आयताकार घेरे में आ गई। उसने द्विज की ओर देखा और फिर घटाकरपारा की ओर। उसकी आँखें रोने के कारण लाल थीं और उसके होंठ क्रोध से काँप रहे थे। "वह तुम्हारे साथ क्यों है?" उसने पूछा।

"अपरूपा—" राजकुमार ने कहना शुरू किया, लेकिन लड़की ने उसे बीच में ही रोक दिया और द्विज पर झल्लाते हुए बोली।

"उसे तुरंत चले जाने के लिए कहो।" वह मुड़ी और घर के अंदर चली गई।

द्विज ने घटाकरपारा की ओर मुड़कर लड़के को हाथ से इशारा किया कि वह रुक जाए। "आह... उउउउ..." अपनी ओर इशारा करते हुए उसने अंदर जाने का संकेत दिया। "आउ... उउउ... आई?"

राजकुमार ने सिर हिलाया।

द्विज अंदर चला गया और उसने दरवाजा बंद कर दिया। घटकरपारा धूप में खड़ा रहा, गर्मी की परवाह किए बिना वह अंदर से आने वाली आवाज़ों को सुनने की कोशिश कर रहा था। उसे लगा कि उसने अपारूपा की गुस्से भरी आवाज़ एक-दो बार सुनी, लेकिन वह निश्चित नहीं था, हालांकि उसने ऊपरी मंजिल की खिड़की से एक बार द्विज की आवाज़ सुनी थी।

समय बीतता गया और राजकुमार थकने लगा। वह एक पैर से दूसरे पैर पर उछल रहा था, उस जगह को छोड़ने से डर रहा था, तभी उसने फिर से पास आते कदमों की आहट सुनी।

दरवाजा खुला और अपारूपा और द्विजा दोनों अंदर खड़ी होकर राजकुमार को देख रही थीं। घटाकरपारा ने लड़की की तूफानी आँखों को देखा और महसूस किया कि वह दुनिया में कहीं और तैरने के बजाय उनमें डूब जाना पसंद करेगा।

"मैं तुम्हें ढूंढते हुए उदयपुरी गया था," उसने कहा। "किसी को नहीं पता था कि तुम कहाँ हो, इसलिए मैंने जोखिम उठाया और आ गया—"

अपारूपा घर से बाहर भागी और राजकुमार को गले लगा लिया, उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया और उसकी छाती पर सिर रखकर फूट-फूटकर रोने लगी।

***

क्या तुम जीवन भर वह भद्दा कपड़ा पहने रहोगे?

विनम्रता से मुस्कुराते हुए, कालिदास ने पालकी उठाने वालों पर एक नजर डाली और देखा कि वे चारों किस तरह अपना चेहरा सीधा रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे, मानो उन्होंने देवी ओरेकल की एक भी बात न सुनी हो।

"तुम इतने सुंदर चेहरे पर ऐसा क्यों करोगे?" बूढ़ी औरत ने आनंद लेते हुए कहा। महल से पालकी निकलते ही वह अपने पुराने रंग में आ गई थी, और अब जब वे खुले मैदान में थे, तो उसे रोकना लगभग नामुमकिन था।

"माँ, मैं बस... हूण परंपरा का पालन कर रहा था," कालिदास ने शर्मिंदा होकर उत्तर दिया, उनका हाथ अनजाने में ही घाव को छू गया। घाव के आसपास की त्वचा गुलाबी और सिकुड़ी हुई थी।

"यह किसी भी तरह से बिच्छू जैसा नहीं दिखता।" महिला पालकी से बाहर झुकी और अपने बगल में बैठे विशालकाय व्यक्ति को ऊपर देखते हुए बोली, "क्या आप जानते हैं कि बिच्छू कैसा दिखता है?"

"दादी, वो कवि हैं, कलाकार नहीं," शंकु ने हंसते हुए कहा। "उन्हें चिढ़ाना बंद करो।"

"ठीक है। मुझे उम्मीद है कि उसने सबक सीख लिया होगा और अब कविता पर ही ध्यान देगा," भविष्यवक्ता ने खिलखिलाते हुए अपनी सीट पर वापस बैठते हुए कहा।

कालिदास ने सौम्य भाव से अपनी आँखें घुमाईं और शंकु की ओर देखा, जिसने मुस्कुराकर जवाब दिया।

"क्या यह इतना बुरा है?" उस विशालकाय व्यक्ति ने धीमी आवाज़ में पूछा, जिसका इशारा हरिज़ की ओर था।

लड़की ने उस पर एक नज़र डाली और कंधे उचका दिए। "इसकी आदत पड़ने में थोड़ा समय लगेगा।" कालिदास का चेहरा देखकर वह फिर हंस पड़ी। "कोई बात नहीं। तुम्हें पता है दादी माँ बढ़ा-चढ़ाकर बोल रही हैं।"

किसी को पता चले बिना, दोनों पार्षदों ने अपनी गति धीमी कर दी, जिससे छोटे काफिले को आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया। वे उज्जैन के उत्तर-पूर्व में थे, जो शहर पहले ही हल्की बारिश की धुंध में पीछे छूट गया था, और उस स्थान की ओर बढ़ रहे थे जहाँ घुमंतू जनजाति ने अभी-अभी अपना डेरा डाला था। दोपहर की हवा ठंडी थी, आसमान में बादल छाए हुए थे।

"मुझे एक बात बताओ," कालिदास ने कहा। "जब मैंने उज्जैन छोड़ा, तो ऐसा लग रहा था कि सभी को यकीन हो गया था कि मैंने अवंती से सारे संबंध तोड़ लिए हैं। यहाँ तक कि विक्रमादित्य भी कुछ हद तक यही मानते थे।" उन्होंने अपने गले में लटके सूर्य-चिह्न वाले पदक को छुआ, जो उन्हें एक दिन पहले ही वापस मिला था। "क्या आपको भी यही लगता था कि मैं हमेशा के लिए चला गया हूँ?"

शंकु ने इस बात पर इतना विचार किया कि ऐसा लगा मानो उसने प्रश्न सुना ही न हो।

"सच कहूँ तो, मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था," उसने आखिर में कहा। "सारे सबूत यही इशारा कर रहे थे कि तुम वापस नहीं आओगे, लेकिन जो भी तुम्हें जानता है वो समझ जाएगा कि तुम सम्राट से मुँह नहीं मोड़ोगे। इसलिए, सबकी बातों के बावजूद, मुझे लगा कि तुम लौट आओगे। इसीलिए मैंने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी।"

कालिदास ने सिर हिलाया। वे चुपचाप आगे बढ़े, घोड़ों के खुरों की हल्की-हल्की आवाज कीचड़ भरे रास्ते पर सुनाई दे रही थी।

"मैं कभी भी तुमसे मुंह नहीं मोड़ूंगा," उस विशालकाय व्यक्ति ने शर्माते हुए कहा। "तुम्हें यह बात पता होनी चाहिए।"

"हाँ, मुझे ऐसा लगता है। और यही एक कारण है कि मैंने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी।"

"तुम आलसी लोग क्या कर रहे हो?" देवी ओरेकल ने उन्हें पुकारा। "जल्दी करो। मैं यहाँ ऊब रही हूँ।"

"हे भगवान!" शंकु कराह उठा। सलाहकारों ने अपने घोड़ों को तेज़ी से दौड़ाया और पालकी के पास आ पहुँचे। "खुश हो?" शंकु ने पूछा।

“क्या तुम एक बुढ़िया के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकते?” भविष्यवक्ता ने उन्हें चतुराई से देखा। फिर उसने अपना सिर बाहर निकाला और लगभग पचास कदम आगे चल रहे ब्रिच्छा को पुकारा। “बुढ़िया, तुमने अपनी बेटी के भविष्य के बारे में क्या सोचा है? अगर तुमने ध्यान नहीं दिया हो, तो वह शादी की उम्र के करीब पहुँच रही है।”

"दादी माँ," शंकु ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए उस महिला को चुप कराने की कोशिश की।

बूढ़े वार्डन ने अपने घोड़े की लगाम खींची और मुड़कर कहा, "भविष्यवाणी करने में तो तुम माहिर हो, तो क्यों न तुम ही मुझे बताओ?" उसने बूढ़ी औरत की ओर शरारती मुस्कान के साथ देखा, अपनी बेटी की ओर देखकर मुस्कुराया और लगाम झटककर अपने घोड़े को फिर से दौड़ा दिया।

“मैं भविष्य की भविष्यवाणी नहीं करता,” भविष्यवक्ता ने बुदबुदाते हुए कहा। “यह मूर्ख कब समझेगा?”

"यह कैसा परिवार है!" कालिदास ने शंकु की ओर देखकर मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।

दल एक ऊँची पहाड़ी पर पहुँचा। उनके सामने एक हरी-भरी घाटी फैली हुई थी, और उसके केंद्र में, खिले हुए फूलों की तरह, पीले और लाल तम्बुओं की भरमार थी। भविष्यवक्ता ने दूसरी ओर झुककर इशारा किया, अपने लोगों के बीच वापस आकर वह बेहद उत्साहित थी। "क्या यह दुनिया का सबसे खूबसूरत नज़ारा नहीं है?" उसने ब्रिच्छा से पूछा, जिसने समझदारी से सिर हिलाकर जवाब दिया।

“भविष्य की बात करें तो,” शंकु ने कालिदास की ओर देखते हुए कहा, “क्या आप अब कविता लेखन में वापस नहीं लौटेंगे? आपने काफी समय से कुछ नहीं लिखा है।”

कालिदास ने धीरे से सिर हिलाया। “हाँ, लेकिन मैं कविता से कुछ समय के लिए विराम लेना चाहता हूँ। मैं नाटक लिखने की सोच रहा हूँ।”

“एक नाटक?” शंकु की भौंहें तन गईं। “क्या आपके मन में कोई कहानी है?”

मैं एक राजा और रानी की प्रेम कहानी के बारे में सोच रहा था, जिसमें रानी अपनी स्मृति खो देती है। राजा टूट जाता है और—”

"और?"

"शायद मैं भूमिकाओं को उलट दूं," कालिदास ने मन ही मन सोचा। "राजा रानी को भूल जाएगा, और कहानी रानी के उसके प्रेम को पुनः पाने के संघर्ष के बारे में होगी..."

"महिला का दृष्टिकोण?" शंकु ने सहमति जताते हुए मुस्कुराते हुए कहा। "कहीं बेहतर है।"

******* समाप्त *******

sjeet

"Flawlessly clubs fiction with Indian mythology" —DNA

Patience is a Drawn Bow.
Rage, its Relentless Arrow.

Shukracharya's plan to break the unity of Vikramaditya's Council has borne bitter fruit. Friends have become sworn enemies, and brother has turned against brother, setting Avanti on the path to self-destruction.

Even as Vikramaditya prepares to counter a Huna invasion, a rebellion brews within Ujjayini, while a devious conspiracy is hatched to humiliate him. With Indra's spies swarming the palace and Shukracharya making a bold bid to take the Halahala, the king is dangerously close to the brink of defeat.

Alone and abandoned by those dear to him, fighting to protect his people, trying his best to keep his promise to Shiva, will the samrat rise one last time to defend his love, his city and his honour?

As the asura and deva forces muster in a final, desperate gamble to claim the Halahala, *The Wrath of the Hellfires* brings an explosive conclusion to Vikramaditya's epic tale of action and adventure.

SHATRUJEET NATH is the creator of the runaway national bestseller series Vikramaditya Veergatha, a four-book mytho-fantasy arc which comprises *The Guardians of the Halahala*, *The Conspiracy at Meru*, *The Vengeance of Indra* and *The Wrath of the Hellfires*. Described as "a new face to Indian mythology" by *DNA*, Shatrujeet writes for movies and web shows as well. He is also the author of *The Karachi Deception*, an Indo-Pak spy thriller.

JAICO BOOKS
www.jaicobooks.com Fiction

Cover Illustration:
Paul Thomas & Rajesh Annookkaran

ISBN 978-93-90166-57-2
9 789390 166572
J-2971